मंत्र : दिव्य-लोक की कुंजी

पहला प्रवचन · दिनाक १८ अगस्त, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

जैसे सुबह सूरज निकले और कोई पक्षी आकाश मे उडने के पहले अपने घोसले के पास परो को तौले, सोचे, साहस जुटाए, या जैसे कोई नदी सागर मे गिरने के करीब हो, स्वय को खोने के निकट और पीछे लौटकर देखे, सोचे क्षण भर। ऐसा ही महावीर की वाणी मे प्रवेश के पहले दो क्षण सोच लेना जरूरी है।

जैसे, पर्वतो मे हिमालय है या शिखरो मे गौरीशकर, वैसे ही व्यक्तियो मे महावीर है। बडी है चढाई। जमीन पर खडे होकर भी गौरीशकर के हिमाच्छादित शिखर को देखा जा सकता है। लेकिन जिन्हे चढाई करनी हो और शिखर पर पहुच कर ही शिखर को देखना हो, उन्हे बडी तैयारी की जरूरत है। दूर से भी देख सकते है महावीर को, लेकिन दूर से जो परिचय होता है वह वास्तविक परिचय नही है। महावीर मे तो छलाग लगाकर ही वास्तविक परिचय पाया जा सकता है। उस छलाग के पहले जो जरूरी है वे कुछ बाते आपसे कहू।

बहुत बार ऐसा होता है कि हमारे हाथ मे निष्पत्तिया रह जाती है, कन्क्लूजन रह जाते हैं—प्रक्रियाए खो जाती है। मजिल रह जाती है—रास्ते खो जाते हैं। शिखर तो दिखाई पड़ता है, लेकिन वह पगडडी दिखाई नही पडती जो वहा तक पहुचाती है। ऐसा ही यह नमोकार मत्र भी है। यह निष्पत्ति है जिसे पच्चीस सौ वर्ष से लोग दोहराते चले आ रहे हैं। यह शिखर है, लेकिन पगडडी जो इस नमोकार मत्र तक पहुचा दे, वह न मालूम कब की खो गयी है।

इसके पहले कि हम मत्र पर बात करे, उस पगडडी पर थोडा-सा मार्ग साफ कर लेना उचित होगा। क्योकि जब तक प्रक्रिया न दिखाई पडे तब तक निष्पत्तिया व्यर्थ है। और जब तक मार्ग न दिखाई पडे, तब तक मजिल बेबूझ होती है। और जब तक सीढिया दिखाई न पडें, तब तक दूर दिखते हुए शिखरो का कोई भी

मूल्य नही—वे स्वप्नवत हो जाते है। वे है भी या नही इसका भी निर्णय नही किया जा सकता। कुछ दो-चार मार्गों से नमोकार के रास्ते को समझें।

१९३७ मे तिब्बत और चीन के बीच बोकान पर्वत की एक गुफा मे सात सौ सोलह पत्थर के रेकार्ड मिले—पत्थर के, और वे रेकार्ड है महावीर से दस हजार साल पुराने। यह आज से कोई साढे बारह हजार साल पुराने! बडे आश्चर्य के है, क्योकि वे रेकार्ड ठीक वैसे है, जैसे ग्रामोफोन का रेकार्ड होता है। ठीक उनके बीच मे एक छेद है, और पत्थर पर ग्रूव्ज है—जैसे कि ग्रामोफोन के रेकार्ड पर होते है। अब तक राज नही खोला जा सका है कि वे किस यत्र पर बजाए जा सकेंगे। लेकिन एक बात तय हो गयी है—रूस के एक बडे वैज्ञानिक डा० सर्जिएव ने वर्षों तक मेहनत करके यह प्रमाणित किया है कि वे है तो रेकार्ड ही। किस यत्र पर और किस सुई के माध्यम से वे पुनरुज्जीवित हो सकेंगे, यह अभी तय नही हो सका। अगर एकाध पत्थर का टुकडा होता तो सायोगिक भी हो सकता, सात सौ सोलह है—सब एक जैसे, जिनमे बीच मे छेद है। सब पर ग्रूव्ज है और उनकी पूरी तरह सफाई, धूल-धुवास जब अलग कर दी गयी और जब विद्युत यत्रो से उनकी परीक्षा की गयी तब बडी हैरानी हुई। उनसे प्रतिपल विद्युत की किरणें विकीर्णित हो रही है।

लेकिन क्या आदमी के पास आज से बारह हजार साल पहले ऐसी कोई व्यवस्था थी कि वह पत्थरो मे कुछ रेकार्ड कर सके? तब तो हमे सारा इतिहास और ढग से लिखना पडेगा।

जापान के एक पर्वत शिखर पर पच्चीस हजार वर्ष पुरानी मूर्तियो का एक समूह है। वे मूर्तिया 'डाबू' कहलाती हैं। उन मूर्तियो ने बहुत हैरानी खडी कर दी, क्योकि अब तक उन मूर्तियो को समझना सम्भव नही था—लेकिन अब सम्भव हुआ। जिस दिन हमारे यात्री अतरिक्ष मे गए, उसी दिन डाबू मूर्तियो का रहस्य खुल गया, क्योकि डाबू मूर्तिया उसी तरह के वस्त्र पहने हुए है जैसे अतरिक्ष का यात्री पहनता है। अतरिक्ष मे यात्रियो ने—रूसी या अमरीकी एस्ट्रोनाट्स ने—जिन वस्तुओ का उपयोग किया है, वे ही उन मूर्तियो के ऊपर है, पत्थर मे खुदे हुए हैं। वे मूर्तियां पच्चीस हजार साल पुरानी है। और अब इसके सिवाय कोई उपाय नही है मानने का कि पच्चीस हजार साल पहले आदमी ने अतरिक्ष की यात्रा की है या अतरिक्ष के किन्ही और ग्रहो से आदमी जमीन पर आता रहा है।

आदमी जो आज जानता है वह पहली बार जान रहा है, ऐसी भूल मे पडने का अब कोई कारण नही है। आदमी बहुत बार जान लेता है और भूल जाता है। बहुत बार शिखर छू लिए गए है और खो गए है। सभ्यताए उठती है और आकाश को छूती है लहरो की तरह और विलीन हो जाती है। जब भी कोई लहर आकाश को छूती है तो सोचती है उसके पहले किसी और लहर ने आकाश

नहीं हुआ होगा।

महावीर एक बहुत बड़ी संस्कृति के अंतिम व्यक्ति हैं, जिस संस्कृति का विस्तार कम-से-कम दस लाख वर्ष है। महावीर जैन विचार और परम्परा के अंतिम तीर्थंकर हैं—चौबीसवें। शिखर की, लहर की आखिरी ऊंचाई, और महावीर के बाद वह लहर और वह सभ्यता और वह संस्कृति सब बिखर गयी। आज उन सूत्रों को समझना इसीलिए कठिन है; क्योंकि वह पूरा का पूरा मिल्यू, वह वातावरण, जिसमें वे सूत्र सार्थक थे, आज कहीं भी नहीं है।

ऐसा समझें कि कल तीसरा महायुद्ध हो जाए, सारी सभ्यता बिखर जाए, फिर भी लोगों के पास याददाश्त रह जाएगी कि लोग हवाई जहाजों में उड़ते थे। हवाई जहाज तो बिखर जाएंगे, याददाश्त रह जाएगी। वह याददाश्त हजारों साल तक चलेगी और बच्चे हंसेंगे। वे कहेंगे कि कहां हैं हवाई जहाज जिनकी तुम बात करते हो? ऐसा मालूम होता है कहानियां हैं, पुराण कथाएं हैं, मिथ हैं।

जैन चौबीस तीर्थंकरों की ऊंचाई—शरीर की ऊंचाई—बहुत काल्पनिक मालूम पड़ती है। उनमें महावीर भर की ऊंचाई आदमी की ऊंचाई है। बाकी तेईस तीर्थंकर बहुत ऊंचे हैं। इतनी ऊंचाई नहीं हो सकती—ऐसा ही वैज्ञानिकों का अब तक ख्याल था, लेकिन अब नहीं है। क्योंकि वैज्ञानिक कहते हैं—जैसे-जैसे जमीन सिकुड़ती गयी है, वैसे-वैसे जमीन पर ग्रेविटेशन, गुरुत्वाकर्षण भारी होता गया

कभी भी नष्ट नही होती—उस अनंत आकाश मे संग्रहीत होती चली जाती है। ऐसा समझें कि जैसे आकाश भी रेकार्ड करता है, आकाश पर भी किसी सूक्ष्म तल पर गूंज बन जाते है। उस पर रूस मे इधर पन्द्रह वर्षो मे बहुत काम हुआ है। उस काम पर दो-तीन बातें ध्यान मे ले लेंगे तो आसानी हो जाएगी।

(अगर एक सद्भाव से भरा हुआ व्यक्ति, मंगल कामना से भरा हुआ व्यक्ति आंख बन्द करके अपने हाथ में जल से भरी हुई एक मटकी ले ले और कुछ क्षण सद्भावो से भरा हुआ उस जल की मटकी को हाथ मे लिए रहे—तो रूसी वैज्ञानिक कामेनिएव और अमरीकी वैज्ञानिक डा० रुडाल्फ किर, इन दो व्यक्तियो ने बहुत से प्रयोग करके यह प्रमाणित किया है कि वह जल गुणात्मक रूप मे परिवर्तित हो जाता है। केमिकली कोई फर्क नही होता। उस भली-भावनाओं से भरे हुए, मंगल-आकाक्षाओ से भरे हुए व्यक्ति के हाथ मे जल का स्पर्श, जल मे कोई केमिकल, कोई रासायनिक परिवर्तन नही करता लेकिन उस जल मे फिर भी कोई गुणात्मक परिवर्तन हो जाता है।) और वह जल अगर बीजो पर छिड़का जाए तो वे जल्दी अंकुरित होते है, साधारण जल की बजाय। उनमे बड़े फूल आते है, बड़े फल लगते है। वे पौधे ज्यादा स्वस्थ होते है, साधारण जल की बजाय।

कामेनिएव ने साधारण जल भी उन्ही बीजो पर वैसी ही भूमि मे छिड़का है और यह विशेष जल भी। और रुग्ण, विक्षिप्त, निगेटिव इमोशंस से भरे हुए व्यक्ति, निषेधात्मक भाव से भरे हुए व्यक्ति, हत्या का विचार करने वाले, दूसरे को नुकसान पहुंचाने का विचार करने वाले, अमंगल की भावनाओ से भरे हुए व्यक्ति के हाथ मे दिया गया जल भी बीजो पर छिड़का है। या तो वे बीज अंकुरित ही नही होते, या अंकुरित होते है तो रुग्ण अंकुरित होते हैं।

पन्द्रह वर्ष, हजारो प्रयोगो के बाद यह निष्पत्ति ली जा सकी कि जल मे अब तक हम सोचते थे कि कैमिस्ट्री ही सब कुछ है, लेकिन कैमिकली तो कोई फर्क नही होता, रासायनिक रूप से तीनो जलो मे कोई फर्क नही होता। फिर भी कोई फर्क होता है। वह फर्क क्या है? और वह फर्क जल मे कहां से प्रवेश करता है? निश्चित ही वह फर्क, अब तक जो भी हमारे पास उपकरण है, उनसे नही जांचा जा सकता। लेकिन वह फर्क होता है, यह परिणाम से सिद्ध होता है। क्योकि तीनो जलो का आत्मिक रूप बदल जाता है। केमिकल रूप तो नही बदलता, लेकिन तीनो जलो की आत्मा मे कुछ रूपांतरण हो जाता है। (अगर जल मे यह रूपांतरण हो सकता है तो हमारे चारों ओर फैले हुए आकाश मे भी हो सकता है, मंत्र की प्राथमिक आधारशिला यही है।) मंगल भावनाओ से भरा हुआ मन, हमारे चारो ओर के आकाश मे गुणात्मक अंतर पैदा करता है, क्वालिटेटिव ट्रांसफार्मेशन करता है। और उस मंत्र से भरा हुआ व्यक्ति जब आपके पास से भी गुजरता है, तब भी वह अलग तरह के आकाश से गुजरता है। उसके चारो तरफ शरीर के आसपास

एक भिन्न तरह का आकाश, ए डिफरेंट क्वालिटी आफ स्पेस, पैदा हो जाती है।

एक दूसरे रूसी वैज्ञानिक किरलियान ने हाई फ्रिक्वेंसी फोटोग्राफी विकसित की है। वह शायद आने वाले भविष्य मे सबसे अनूठा प्रयोग सिद्ध होगा। अगर मेरे हाथ का चित्र लिया जाए, हाई फ्रिक्वेंसी फोटोग्राफी से; जो कि बहुत सवेदनशील प्लेट्स पर होती है, तो मेरे हाथ का ही चित्र सिर्फ नही आता, मेरे हाथ के आस-पास जो किरणे मेरे हाथ से निकल रही है, उनका चित्र भी आता है। और आश्चर्य की बात तो यह है कि अगर मैं निषेधात्मक विचारो से भरा हुआ हू तो मेरे हाथ के आसपास जो विद्युत-पैटर्न जो विद्युत की जाल का चित्र आता है, वह रुग्ण, बीमार, अस्वस्थ और केआटिक, अराजक होता है—विक्षिप्त होता है। जैसे किसी पागल आदमी ने लकीरें खीची हों। अगर मैं शुभ भावनाओ से मगल भावनाओ से भरा हुआ हू, आनदित हू, पाजिटिव हूं प्रफुल्लित हू, प्रभु के प्रति अनुग्रह से भरा हुआ हू तो मेरे हाथ के आसपास जो किरणो का चित्र आता है किरलियान की फोटोग्राफी से, वह रिद्‌मिक, लयबद्ध, सुन्दर, सिमिट्रिकल, सानुपातिक, और एक-एक और ही व्यवस्था मे निर्मित होता है।

किरलियान का कहना है—और किरलियान का प्रयोग तीस वर्षो की मेहनत है—किरलियान का कहना है कि बीमारी के आने के छः महीने पहले शीघ्र ही हम बताने मे समर्थ हो जायेंगे कि यह आदमी बीमार होने वाला है। क्योकि इसके पहले कि शरीर पर बीमारी उतरे, वह जो विद्युत का वर्तुल है उस पर बीमारी उतर जाती है। मरने के पहले, इसके पहले कि आदमी मरे, वह विद्युत का वर्तुल सिकुडना शुरू हो जाता है और मरना शुरू हो जाता है। इसके पहले कि कोई आदमी हत्या करे किसी की, उस विद्युत के वर्तुल मे हत्या के लक्षण शुरू हो जाते है। इसके पहले कि कोई आदमी किसी के प्रति करुणा से भरे, उस विद्युत के वर्तुल मे करुणा प्रवाहित होने के लक्षण दिखाई पडने लगते है।

किरलियान का कहना है कि कैंसर पर हम तभी विजय पा सकेंगे, जब शरीर को पकडने के पहले हम कैंसर को पकड लें। और यह पकडा जा सकेगा। इसमे कोई विधि की भूल अब नही रह गयी है। सिर्फ प्रयोगो के और फैलाव की जरूरत है। प्रत्येक मनुष्य अपने आसपास एक आभामडल लेकर, एक औरा लेकर चलता है। आप अकेले ही नही चलते, आपके आसपास एक विद्युत-वर्तुल, एक इलेक्ट्रो-डायनेमिक-फील्ड प्रत्येक व्यक्ति के आसपास चलता है। व्यक्ति के आसपास ही नही, पशुओ के आसपास भी, पौधो के आसपास भी।

असल मे रूसी वैज्ञानिको का कहना है कि जीव और अजीव मे एक ही फर्क किया जा सकता है। जिसके आसपास आभामडल है वह जीवित है और जिसके पास आभामडल नही है वह मृत है। जब आदमी मरता है तो मरने के साथ ही आभामडल क्षीण होना शुरू हो जाता है। बहुत चकित और सयोग की बात है कि

जब भी कोई आदमी मरता है तो तीन दिन लगते हैं उसके आभामडल के विसर्जित होने मे। हजारो साल से सारी दुनिया मे मरने के वाद तीसरे दिन का वडा मूल्य रहा है। जिन लोगो ने उस तीसरे दिन को—तीसरे को इतना मूल्य दिया था, उन्हे किसी न किसी तरह इस बात का अनुभव होना ही चाहिए, क्योंकि वास्तविक मृत्यु तीसरे दिन घटित होती है। इन तीन दिनो के बीच किसी भी दिन वैज्ञानिक उपाय खोज लेंगे तो आदमी को पुनरुज्जीवित किया जा सकता है। जब तक आभामडल नही खो गया तब तक जीवन अभी शेप है। हृदय की धडकन वन्द हो जाने से जीवन समाप्त नही होता। इसलिए पिछले महायुद्ध मे रूस मे छ व्यक्तियो को हृदय की धडकन बद हो जाने के वाद पुनरुज्जीवित किया जा सका।

जब तक आभामडल चारो तरफ है, तब तक व्यक्ति सूक्ष्म तल पर अभी भी जीवन मे वापस लौट सकता है। अभी सेतु कायम है, अभी रास्ता बना है वापस लौटने का। जो व्यक्ति जितना जीवत होता है, उसके आसपास उतना बडा आभामडल होता है। हम महावीर की मूर्ति के आसपास एक आभामडल निर्मित करते हैं—या कृष्ण, या राम, या क्राइस्ट के आसपास—तो वह सिर्फ कल्पना नही है। वह आभामडल देखा जा सकता है। और अब तक तो केवल वे ही देख सकते थे जिनके पास थोडी गहरी और सूक्ष्म-दृष्टि हो—मिस्टिक्स, सत। लेकिन १९३० मे एक अग्रेज वैज्ञानिक ने अब तो केमिकल, रासायनिक प्रक्रिया निर्मित कर दी है जिससे प्रत्येक व्यक्ति—कोई भी—उस माध्यम से, उस यत्र के माध्यम से दूसरे के आभामडल को देख सकता है।

आप सब यहा बैठे हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपना निजी आभामडल है। जैसे आपके अगूठे की छाप निजी-निजी है, वैसे ही आपका आभामडल भी निजी है। और आपका आभामडल आपके सम्बन्ध मे वह सब कुछ कहता है जो आप भी नही जानते। आपका आभामडल आपके सम्बन्ध मे वे बातें भी कहता है जो भविष्य मे घटित होगी। आपका आभामडल वे बातें भी कहता है जो अभी आपके गहन अचेतन मे निर्मित हो रही है, बीज की भाति, कल खिलेगी और प्रगट होगी।

मत्र आभामडल को बदलने की आमूल प्रक्रिया है। आपके आसपास की स्पेस, और आपके आसपास का इलेक्ट्रोडायनेमिक-फील्ड बदलने की प्रक्रिया है। और प्रत्येक धर्म के पास एक महामत्र है।

जैन परम्परा के पास नमोकार है। आश्चर्यजनक घोषणा—एसो पच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। सब पाप का नाश कर दे, ऐसा महामत्र है नमोकार। ठीक नही लगता। नमोकार से कैसे पाप नष्ट हो जाएगा। नमोकार से सीधा पाप नष्ट नही होता, लेकिन नमोकार से आपके आसपास इलेक्ट्रोडायनेमिक-फील्ड रूपातरित होता है और पाप करना असम्भव हो जाता है। क्योंकि पाप करने के लिए आपके पास एक खास तरह का आभामडल चाहिए। अगर इस मत्र को सीधा

ही सुनेंगे तो लगेगा कैसे हो सकता है। एक चोर यह मत्र पढ लेगा तो क्या होगा ? एक हत्यारा यह मत्र पढ लेगा तो क्या होगा ? कैसे पाप नष्ट हो जाएगा ? पाप नष्ट होता है इसलिए कि आप पाप करते है, उसके पहले आपके पास एक विशेष तरह का पाप का आभामडल चाहिए। उसके विना आप पाप नही कर सकते। वह आभामडल अगर रूपातरित हो जाए तो असम्भव हो जाएगा—पाप करना असम्भव हो जाएगा।

यह नमोकार कैसे उस आभामडल को वदलता होगा ? यह नमस्कार, यह नमन का भाव है। नमन का अर्थ है समर्पण—यह शाब्दिक नही है। यह नमो अरिहताण अरिहतो को नमस्कार करता हू, यह शाब्दिक नही है, ये शब्द नही है, यह भाव है। अगर प्राणो मे यह भाव सघन हो जाए कि अरिहतो को नमस्कार करता हू, तो इसका अर्थ क्या होता है ? इसका अर्थ होता है—जो जानते है उनके चरणो मे सिर रखता हू। जो पहुच गए है, उनके चरणो मे समर्पित करता हू। जो पा गए है, उनके द्वार पर मैं भिखारी वनकर खडा होने को तैयार हू।

किरलियान की फोटोग्राफी ने यह भी वताने की कोशिश की है कि आपके भीतर जव भाव वदलते हैं तो आपके आसपास का विद्युत्-मडल वदलता है। और अव तो यह फोटोग्राफ उपलब्ध है। अगर आप अपने भीतर विचार कर रहे है चोरी करने का, तो आपका आभामडल और तरह का हो जाता है—उदास, रुग्ण, खूनी रगो से भर जाता है। आप किसी को, गिर गए को, उठाने जा रहे है—आपके आभामडल के रग तत्काल वदल जाते है।

रूस मे एक महिला है, नेल्या माइखलोवा। इस महिला ने पिछले पन्द्रह वर्षों मे आमूल क्राति खडी कर दी है। और यह जानकर हैरानी होगी कि मैं रूस के इन वैज्ञानिको के नाम क्यो ले रहा हू। कुछ कारण हैं। आज से चालीस साल पहले अमरीका के एक वहुत वडे प्रोफेट एडगर केयसी ने, जिसको अमरीका का 'स्लीपिंग प्रोफेट' कहा जाता है, जो कि सो जाता था गहरी तद्रा मे, जिसे हम समाधि कहे, और उसमे वह जो भविष्यवाणिया करता था वह अव तक सभी सही निकली है। उसने थोडी भविष्यवाणिया नही की, दस हजार भविष्यवाणिया की। उसकी एक भविष्यवाणी चालीस साल पहले की है, उस वक्त तो सव लोग हैरान हुए थे।

उसने यह भविष्यवाणी की थी कि आज से चालीस साल वाद धर्म का एक नवीन वैज्ञानिक आविर्भाव रूस से प्रारभ होगा। रूस से ? और एडगर केयसी चालीस साल पहले कहे, जवकि रूस मे तो धर्म नष्ट किया जा रहा था, चर्च गिराए जा रहे थे, मन्दिर हटाए जा रहे थे, पादरी-पुरोहित साइवेरिया भेजे जा रहे थे। उन क्षणो मे कल्पना भी नही की जा सकती कि रूस मे जन्म होगा। रूस अकेली भूमि थी उस जमीन पर जहा धर्म पहली दफे व्यवस्थित रूप से नष्ट किया

जा रहा था। जहा पहली दफा नास्तिको के हाथ मे सत्ता थी। पूरे मनुष्य जाति के इतिहास मे जहा पहली वार नास्तिको ने एक सगठित प्रयास किया था, आस्तिको के सगठित प्रयास तो होते रहे है। और केयमी की यह घोपणा कि चालीस साल बाद रूस से ही जन्म होगा—

असल मे जैसे ही रूस पर नास्तिकता अति आग्रहपूर्ण हो गयी, तो जीवन का एक नियम है कि जीवन एक तरह का सतुलन निर्मित करता है। जिस देश मे वडे नास्तिक पैदा होने बन्द हो जाते है उस देश मे वडे आस्तिक भी पैदा होने बन्द हो जाते है। जीवन एक सतुलन है। और जब रूस मे इतनी प्रगाढ नास्तिकता थी तो अण्डरग्राउड, छिपे मार्गों से आस्तिकता ने पुन आविष्कार करना शुरू कर दिया। स्टैलिन के मरने तक सारी खोज-बीन छिपकर चलती थी। स्टैलिन के मरने के बाद वह खोज-बीन प्रगट हो गयी। स्टैलिन खुद भी वहुत हैरान था। वह मै बात आपसे कहूगा।

यह माइखलोवा पन्द्रह वर्ष से रूस मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व है। क्योकि माइखलोवा सिर्फ ध्यान से किसी भी वस्तु को गतिमान कर पाती है। हाथ से नहीं शरीर के किसी प्रयोग से नही। वहा दूर, छ फीट दूर रखी हुई कोई भी चीज माइखलोवा सिर्फ उस पर एकाग्र चित्त होकर गति—या तो अपने पास खीच पाती है, वस्तु चलना शुरू कर देती है, या अपने से दूर हटा पाती है। या मैगनेटिक नीडल लगी हो तो उसे घुमा पाती है, या घडी हो तो उसके काटे को तेजी से चक्कर दे पाती है, या घडी हो तो वन्द कर पाती है। सैकडो प्रयोग। लेकिन एक वहुत हैरानी की बात है कि अगर माइखलोवा प्रयोग कर रही हो और आसपास सन्देहशील लोग हो, तो उसे पाच घटे लग जाते है, तव वह हिला पाती है। अगर आसपास मित्र हो, सहानुभूतिपूर्ण हो तो वह आधे घटे मे हिला पाती है। अगर आसपास श्रद्धा से भरे हुए लोग हो तो पाच मिनट मे। और एक मजे की बात है कि अब उसे पाच घटे लगते है किसी वस्तु को हिलाने मे, तो उसका कोई दस पौड वजन कम हो जाता है। जब उसे आधा घटा लगता है तो तीन पौंड वजन कम होता है। और जब पाच मिनट लगते है तो उसका कोई वजन कम नही होता है।

यह पन्द्रह सालो के वडे वैज्ञानिक प्रयोग किये गये है। दो नोवल प्राइज विनर वैज्ञानिक डा० वसीलिएव और कामेनिएव और चालीस और चोटी के वैज्ञानिको ने हजारो प्रयोग करके इस बात की घोपणा की है कि माइखलोवा जो कर रही है, वह तथ्य है। और अब उन्होंने यन्त्र विकसित किये हैं जिनके द्वारा माइखलोवा के आसपास क्या घटित होता है, वह रिकार्ड हो जाता है। तीन बातें रिकार्ड होती है। एक तो जैसे ही माइखलोवा ध्यान एकाग्र करती है उसके आसपास का आभामडल सिकुडकर एक धारा मे वहने लगता है—जिस वस्तु के ऊपर वह ध्यान करती है,

जैसे लेसर रे की तरह—एक विद्युत की किरण की तरह सग्रहीत हो जाता है। और उसके चारो तरफ किरलियान फोटोग्राफी से, जैसे की समुद्र मे लहरे उठती हैं, ऐसा उसका आभामडल तरगित होने लगता है। और वे तरंगें चारों तरफ फैलने लगती हैं। उन्ही तरगो के धक्के से वस्तुए हटती है या पास खीची जाती है। सिर्फ भाव मात्र, उसका भाव कि वस्तु मेरे पास आ जाये, वस्तु पास आ जाती है। उसका भाव कि दूर हट जाए, वस्तु दूर चली जाती है।

इससे भी हैरानी की बात जो तीसरी है वह यह है कि रूसी वैज्ञानिको का ख्याल है कि यह जो इनर्जी है, यह चारो तरफ जो ऊर्जा फैलती है, इसे सग्रहीत किया जा सकता है। इसे यन्त्रो मे सग्रहीत किया जा सकता है। निश्चित ही जब इनर्जी है तो सग्रहीत की जा सकती है। कोई भी ऊर्जा सग्रहीत की जा सकती है। और इस प्राण ऊर्जा का, जिसको योग 'प्राण' कहता है, यह ऊर्जा अगर यन्त्रो मे सग्रहीत हो जाए, तो उस समय जो मूलभाव था व्यक्ति का, वह गुण उस सग्रहीत शक्ति मे भी बना रहता है।

जैसे माइखलोवा अगर किसी वस्तु को अपनी तरफ खीच रही है, उस समय उसके शरीर से जो ऊर्जा गिर रही है—जिसमे कि उसका तीन पौड या दस पौंड वजन कम हो जाएगा—वह ऊर्जा सग्रहीत की जा सकती है। ऐसे रिसेप्टिव यन्त्र तैयार किए हैं कि वह ऊर्जा उन यन्त्रो मे प्रविष्ट हो जाती है और सग्रहीत हो जाती है। फिर यदि उस यन्त्र को इस कमरे मे रख दिया जाए और आप कमरे के भीतर आए तो वह यन्त्र आपको अपनी तरफ खीचेगा। आपका मन होगा उसके पास जाए—यन्त्र के। आदमी वहा नही है। और अगर माइखलोवा किसी वस्तु को हटा रही थी और शक्ति सग्रहीत की है तो आप इस कमरे मे आएगे और तत्काल बाहर भागने का मन होगा। क्या भाव शक्ति मे इस भाति प्रविष्ट हो जाते है?

मन्त्र की यही मूल आधारशिला है। शब्द मे, विचार मे, तरग मे भाव सग्रहीत और समाविष्ट हो जाता है। जब कोई व्यक्ति कहता है—'नमो अरिहताणं' मैं उन सबको जिन्होने जीता और जाना, अपने को उनकी शरण मे छोडता हू, तब उसका अहकार तत्काल विगलित होता है। और जिन-जिन लोगो ने इस जगत मे अरिहंतो की शरण मे अपने को छोडा है, उस महाधारा मे उसकी शक्ति सम्मिलित होती है। उस गगा मे वह भी एक हिस्सा हो जाता है। और इस चारो तरफ आकाश मे इस अरिहंत के भाव के आसपास जो थ्रूव्ज निर्मित हुए हैं, जो स्पेस मे, आकाश मे जो तरगें सग्रहीत हुई हैं, उन सग्रहीत तरगो मे आपकी तरग भी चोट करती है। आपके चारो तरफ एक वर्षा हो जाती है जो आपको दिखाई नही पडती। आपके चारो ओर एक और दिव्यता का, भगवत्ता का लोक निर्मित हो जाता है। इस लोक के साथ—इस भाव लोक के साथ आप दूसरे तरह के व्यक्ति हो जाते है।

महामंत्र स्वय के आसपास के आकाश को स्वय के आसपास के आभामंडल को

वदलने की किमिया है। और अगर कोई व्यक्ति दिन-रात जब भी उसे स्मरण मिले, तभी नमोकार मे डूबता रहे तो वह व्यक्ति दूसरा ही व्यक्ति हो जाएगा। वह वही व्यक्ति नही रह सकता, जो होता है।

पाच नमस्कार नही हैं—अरिहत को नमस्कार। अरिहत का अर्थ होता है जिसके सारे शत्रु विनष्ट हो गये, जिसके भीतर अब कुछ ऐसा नही रहा जिससे उसे लडना पडेगा। लडाई समाप्त हो गयी। भीतर अब क्रोध नही जिससे लडना पडे—भीतर अब काम नही, जिससे लडना पडे—भीतर अब लोभ नही जिससे लडना पडे—अहकार नही जिससे लडना पडे—अज्ञान नही। वे सब समाप्त हो गये जिनसे लडाई थी।

अव एक नान-कानफ्लिक्ट, एक निर्द्वन्द्व अस्तित्व शुरू हुआ। अरिहत शिखर है, जिसके आगे यात्रा नही है। अरिहत मजिल है, जिसके आगे फिर कोई यात्रा नही है। कुछ करने को न बचा जहा, कुछ पाने को न बचा जहा, कुछ छोडने को भी न बचा जहा। जहा सब समाप्त हो गया। जहा शुद्ध अस्तित्व रह गया, प्योर एक्जिस्टेंस जहा रह गया, जहा ब्रह्म मात्र रह गया, जहा होना मात्र रह गया। उसे कहते है अरिहत।

अद्भुत है यह वात भी कि इस महामत्र मे किसी व्यक्ति का नाम नही है—महावीर का नही, पार्श्वनाथ का नही, किसी का नाम नही है। जैन परम्परा का भी कोई नाम नही है क्योकि जैन परम्परा यह स्वीकार करती है कि अरिहत जैन परम्परा मे ही नही हुए और सब परम्पराओ मे भी हुए हैं। इसलिए अरिहतो को नमस्कार है, किसी अरिहत को नही। यह नमस्कार वडा विराट है सम्भवत—विश्व के किसी धर्म मे ऐसा महामत्र, इतना सर्वांगीण, इतना सर्वस्पर्शी विकसित नही किया है। व्यक्ति पर जैसे ख्याल ही नही है, शक्ति पर ख्याल है। रूप पर ध्यान ही नही है, वह जो अरूप सत्ता है, उसी का ख्याल है। अरिहतो को नमस्कार।

महावीर को जो प्रेम करता है, कहना चाहिए महावीर को नमस्कार। बुद्ध को जो प्रेम करता है, कहना चाहिए बुद्ध को नमस्कार। राम को जो प्रेम करता है, कहना चाहिए राम को नमस्कार। पर यह मत्र बहुत अनूठा है। यह बेजोड है। और किसी परम्परा मे ऐसा मत्र नही है, जो सिर्फ इतना कहता है—अरिहतो को नमस्कार। सबको नमस्कार जिनकी मजिल आ गयी है। असल मे मजिल को नमस्कार। वे जो पहुच गए उनको नमस्कार।

लेकिन अरिहत शब्द निगेटिव है, नकारात्मक है। उसका अर्थ है—जिनके शत्रु समाप्त हो गए। वह पाजिटिव नही है, वह विधायक नही है। असल मे इस जगत मे जो श्रेष्ठतम अवस्था है उसको निषेध से ही प्रगट किया जा सकता है, 'नेति-नेति' से, उसको विधायक शब्द नही दिया जा सकता। उसके कारण है। सभी विधायक

शब्दो मे सीमा आ जाती है, निषेध मे सीमा नही होती। अगर मैं कहता हू—'ऐसा है', तो एक सीमा निर्मित होती है। अगर मैं कहता हू—'ऐसा नही है', तो कोई सीमा नही। नही की कोई सीमा नही है, 'है' की तो सीमा है। तो 'है' तो बडा छोटा शब्द है। 'नही' है बहुत विराट। इसलिए परम शिखर पर रखा है अरिहत को। सिर्फ इतना ही कहा है कि जिनके शत्रु समाप्त हो गए, जिनके अतर्द्वन्द्व विलीन हो गए, नकारात्मक। जिनमे लोभ नही, मोह नही, काम नही। 'क्या है', यह नही कहा—'क्या नही है जिनमे', वह कहा।

इसलिए अरिहत बहुत मानवीय, बहुत ऐवस्ट्रैक्ट शब्द है और शायद पकड मे न आए। इसलिए ठीक दूसरे शब्द मे पाजिटिव का उपयोग किया है—'नमो सिद्धाण'। सिद्ध का अर्थ होता है वे जिन्होने पा लिया। अरिहत का अर्थ होता है वे जिन्होने कुछ छोड दिया। सिद्ध बहुत पाजिटिव शब्द है। सिद्धि, उपलब्धि, अचीवमेट, जिन्होने पा लिया। लेकिन ध्यान रहे, उनको ऊपर रखा है जिन्होने खो दिया। उनको नम्बर दो पर रखा है जिन्होने पा लिया। क्यो ? सिद्ध अरिहत से छोटा नही होता। सिद्ध वही पहुचता है जहा अरिहत पहुचता है। लेकिन भाषा मे पाजिटिव नम्बर दो पर रखा जाएगा। नही, 'शून्य' प्रथम है। होना द्वितीय है, इसलिए सिद्ध को दूसरे स्थल पर रखा है। लेकिन सिद्ध के सम्बन्ध मे भी सिर्फ इतनी ही सूचना है कि पहुच गए, और कुछ नही कहा है। कोई विशेषण नही जोडा। पर जो पहुंच गये, इतने से भी हमारी समझ नही आएगा। अरिहत भी हमे बहुत दूर लगता है—शून्य हो गए जो, निर्वाण को पा गये जो, मिट गए जो, नही रहे जो। सिद्ध भी बहुत दूर हैं। सिर्फ इतना ही कहा है, पा लिया जिन्होने। लेकिन क्या ? और पा लिया, तो हम कैसे जाने। क्योकि सिद्ध होना अनभिव्यक्ति भी हो सकता है, अनमेनिफेस्ट भी हो सकता है।

बुद्ध से कोई पूछता है कि आपके ये दस हजार भिक्षु हैं, आप बुद्धत्व को पा गए। इनमे से और कितनो ने बुद्धत्व को पा लिया है ? बुद्ध कहते हैं बहुतो ने। लेकिन वह पूछने वाला कहता है—दिखाई नही पडता। तो बुद्ध कहते हैं—मै प्रगट होता हू, वे अप्रगट हैं। वे अपने मे छिपे हैं, जैसे बीज मे वृक्ष छिपा हो। तो सिद्ध तो बीज जैसा है, पा लिया। और बहुत बार ऐसा होता है कि पाने की घटना घटती है और वह इतनी गहन होती है कि प्रगट करने की चेष्टा भी उससे पैदा नही होती। इसलिए सभी सिद्ध बोलते नही। सभी अरिहत बोलते नही। सभी सिद्ध, सिद्ध होने के बाद जीते भी नही। इतनी लीन भी हो सकती है चेतना उस उपलब्धि मे कि तत्क्षण शरीर छूट जाए। इसलिए हमारी पकड मे सिद्ध भी न आ सकेगा। और मन्त्र तो ऐसा चाहिए जो पहली सीढी से लेकर आखिरी शिखर तक जहा जिसकी पकड मे आ जाए, जो जहा खडा हो वहीं से यात्रा कर सके। इसलिए तीसरा सूत्र कहा है, 'आचार्यो को नमस्कार'।

आचार्य का अर्थ है वह जिसने पाया भी और आचरण से प्रगट भी किया। आचार्य का अर्थ है—जिसका ज्ञान और आचरण एक है। ऐसा नहीं कि सिद्ध का आचरण ज्ञान से भिन्न होता है। लेकिन शून्य हो सकता है। हो ही न, आचरण शून्य ही हो जाए। ऐसा भी नहीं कि अरिहंत का आचरण भिन्न होता है, लेकिन अरिहंत इतना निराकार हो जाता है कि आचरण हमारी पकड़ में न आएगा। हमें ऐसा चाहिए जिसमें पकड़ में आ जाए। आचार्य में शायद हमें निकटता मालूम पडेगी। उसका अर्थ है—जिसका ज्ञान आचरण है। क्योंकि हम ज्ञान को तो न पहचान पाएगे, आचरण को पहचान लेंगे।

इसमें खतरा भी हुआ, क्योंकि आचरण ऐसा भी हो सकता है जैसा ज्ञान न हो। एक आदमी अहिंसक न हो, अहिंसा का आचरण कर सकता है। एक आदमी अहिंसक हो तो हिंसा का आचरण नहीं कर सकता। वह तो असभव है। लेकिन एक आदमी अहिंसक न हो और अहिंसा का आचरण कर सकता है। एक आदमी लोभी हो और अलोभ का आचरण कर सकता है। उल्टा नहीं है। द वाइस वरसा इज नाट पासिवल। इससे एक खतरा भी पैदा हुआ। आचार्य हमारी पकड में आता है, लेकिन वहीं से खतरा शुरू होता है जहा से हमारी पकड शुरू होती है वहीं से खतरा शुरू होता है। तब खतरा यह है कि कोई आदमी आचरण ऐसा कर सकता है कि आचार्य मालूम पडे। तो मजबूरी है हमारी। जहा से सीमाए बननी शुरू होती है, वहीं से हमे दिखाई पडता है। और जहा से हमे दिखाई पडता है वहीं से हमारे अंधे होने का डर है।

पर मत्र का प्रयोजन यही है कि हम उनको नमस्कार करते हैं जिनका ज्ञान उनका आचरण है। यहा भी कोई विशेषण नहीं है। वे कौन? वे कोई भी हो।

एक ईसाई फकीर जापान गया था और जापान के एक जैन भिक्षु से मिलने गया। उसने पूछा जैन भिक्षु को कि जीसस के सम्बन्ध मे आपका क्या ख्याल है? तो उस भिक्षु ने कहा—मुझे जीसस का कुछ भी पता नहीं, तुम कुछ कहो ताकि मैं ख्याल बना सकू। तो उसने कहा—जीसस ने कहा है कि जो तुम्हारे गाल पर एक चाटा मारे, तुम दूसरा गाल उसके सामने कर देना। तो उस जैन फकीर ने कहा—आचार्य को नमस्कार। वह ईसाई फकीर कुछ समझ न सका। उसने कहा—जीसस ने कहा है कि जो अपने को मिटा देगा, वही पाएगा। उस जैन फकीर ने कहा—सिद्ध को नमस्कार। वह कुछ समझ न सका। उसने कहा—आप क्या कह रहे है? उस ईसाई फकीर ने कहा—जीसस ने अपने को सूली पर मिटा दिया, वे शून्य हो गए, मृत्यु को उन्होंने चुपचाप स्वीकार कर लिया। वे निराकार मे खो गए। उस जैन फकीर ने कहा—अरिहत को नमस्कार।

आचरण और ज्ञान एक है जहा, उसे हम 'आचार्य' कहते है। वह सिद्ध भी हो सकता है, वह अरिहत भी हो सकता है।

लेकिन हमारी पकड वह आचरण से आता है। पर जरूरी नही, क्योकि आचरण वडी सूक्ष्म वात है और हम वड़ी स्थूल बुद्धि के लोग है। आचरण वडी सूक्ष्म बात है। तय करना कठिन है कि जो आचरण है—अव जैसे कि महावीर का नग्न खडा हो जाना—निश्चित ही लोगो को अच्छा नही लगा। गाव-गाव से महावीर को खदेड कर भगाया गया। गाव-गाव महावीर पर पत्थर फेंके गए। हमी लोग थे, हमी सब यह करते रहे। ऐसा मत सोचना कोई और। महावीर की नग्नता लोगो को भारी पडी, क्योकि लोगो ने कहा यह तो आचरणहीनता है। यह कैसा आचरण ! आचरण वडा सूक्ष्म है। अव महावीर का नग्न हो जाना इतना निर्दोष आचरण है, जिसका कोई हिसाव लगाना कठिन है। हिम्मत अद्भुत है। महावीर इतने सरल हो गए कि छिपाने को कुछ न बचा। अव महावीर को इस चमडी और हड्डी की देह का वाध मिट गया और वह जो जिसको रूसी वैज्ञानिक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक-फील्ड कहते हैं, उस प्राण शरीर का वाध इतना सघन हो गया कि उस पर तो कोई कपडे डाले नही जा सकते। कपडे गिर गए। और ऐसा भी नही कि महावीर ने कपडे छोडे, कपडे गिर गए।

एक दिन गुजरते है एक राह से, चादर उलझ गयी है एक झाडी मे। झाडी के फूल न गिर जाए, पत्ते न टूट जाए, काटो को चोट न लग जाए, तो आधा चादर फाडकर वही छोड दिए। फिर आधी रह गयी शरीर पर, फिर वह भी गिर गयी। वह कब गिर गयी, उसका महावीर को पता न चला लोगो को पता चला कि महावीर नग्न खडे है। आचरण सहना मुश्किल हो गया।

आचरण के रास्ते सूक्ष्म है वहुत कठिन हैं। और हम सब के आचरण के सम्बन्ध मे वधे-बधाए ख्याल हैं। ऐसा करो—और जो ऐसा करने को राजी हो जाते है वे करीब-करीव मुर्दा लोग हैं। जो आपकी मानकर आचरण कर लेते है, उन मुर्दों को आप काफी पूजा देते हैं। इसमे कहा हे आचार्यों को नमस्कार! आप आचरण तय नही करेंगे उनका ज्ञान ही उनका आचरण तय करेगा।

और ज्ञान परम स्वतन्त्रता है। जो व्यक्ति आचार्य को नमस्कार कर रहा है, वह यह भाव कर रहा है कि मैं नही जानता क्या है ज्ञान, क्या है आचरण। लेकिन जिनका भी आचरण उनके ज्ञान से उपजता है और बहता है, उनको मै नमस्कार करता हू।

अभी भी वात सूक्ष्म है, इसलिए चौथे चरण मे उपाध्यायो को नमस्कार। उपाध्याय का अर्थ है—आचरण ही नही उपदेश भी। उपाध्याय का अर्थ है—ज्ञान ही नही, आचरण ही नही, उपदेश भी। वे जो जानते है, जानकर वैसा जीते हैं और जैसा वे जीते है और जानते हैं—वैसा वताते है। उपाध्याय का अर्थ है—वह जो वताता भी है। क्योकि हम मौन से न समझ पाए। आचार्य मौन हो सकता है। वह मान सकता है कि आचरण काफी है। और अगर तुम्हे आचरण दिखाई

आचार्य का अर्थ है वह जिसने पाया भी और आचरण से प्रगट भी किया। आचार्य का अर्थ है—जिसका ज्ञान और आचरण एक है। ऐसा नहीं कि सिद्ध का आचरण ज्ञान से भिन्न होता है। लेकिन शून्य हो सकता है। हो ही न, आचरण शून्य ही हो जाए। ऐसा भी नहीं कि अरिहंत का आचरण भिन्न होता है, लेकिन अरिहंत इतना निराकार हो जाता है कि आचरण हमारी पकड़ में न आएगा। हम फ्रेम चाहिए जिसमें पकड़ में आ जाए। आचार्य में शायद हमें निकटता मालूम पड़ेगी। उसका अर्थ है—जिसका ज्ञान आचरण है। क्योंकि हम ज्ञान को तो न पहचान पाएंगे, आचरण तो पहचान लेंगे।

इसमें खतरा भी हुआ, क्योंकि आचरण ऐसा भी हो सकता है जैसा ज्ञान न हो। एक आदमी अहिंसक न हो, अहिंसा का आचरण कर सकता है। एक आदमी अहिंसक हो तो हिंसा का आचरण नहीं कर सकता। वह तो असंभव है। लेकिन एक आदमी अहिंसक न हो और अहिंसा का आचरण कर सकता है। एक आदमी लोभी हो और अलोभ का आचरण कर सकता है। उल्टा नहीं है। द वाइस वरसा इज नाट पासिबल। इससे एक खतरा भी पैदा हुआ। आचार्य हमारी पकड़ में आता है, लेकिन वहीं से खतरा शुरू होता है जहां से हमारी पकड़ शुरू होती है वहीं से खतरा शुरू होता है। तब खतरा यह है कि कोई आदमी आचरण ऐसा कर सकता है कि आचार्य मालूम पड़े। तो मजबूरी है हमारी। जहां से सीमाएं बननी शुरू होती हैं, वहीं से हमें दिखाई पड़ता है। और जहां से हमें दिखाई पड़ता है वहीं से हमारे अंधे होने का डर है।

पर मंत्र का प्रयोजन यही है कि हम उनको नमस्कार करते हैं जिनका ज्ञान उनका आचरण है। यहां भी कोई विशेषण नहीं है। वे कौन? वे कोई भी हों।

एक ईसाई फकीर जापान गया था और जापान के एक जैन भिक्षु से मिलने गया। उसने पूछा जैन भिक्षु को कि जीसस के सम्बन्ध में आपका क्या ख्याल है? तो उस भिक्षु ने कहा—मुझे जीसस का कुछ भी पता नहीं, तुम कुछ कहो ताकि मैं ख्याल बना सकूं। तो उसने कहा—जीसस ने कहा है कि जो तुम्हारे गाल पर एक चांटा मारे, तुम दूसरा गाल उसके सामने कर देना। तो उस जैन फकीर ने कहा—आचार्य को नमस्कार। वह ईसाई फकीर कुछ समझ न सका। उसने कहा—जीसस ने कहा है कि जो अपने को मिटा देगा, वही पाएगा। उस जैन फकीर ने कहा—सिद्ध को नमस्कार। वह कुछ समझ न सका। उसने कहा—आप क्या कह रहे हैं? उस ईसाई फकीर ने कहा—जीसस ने अपने को सूली पर मिटा दिया, वे शून्य हो गए, मृत्यु को उन्होंने चुपचाप स्वीकार कर लिया। वे निराकार में खो गए। उस जैन फकीर ने कहा—अरिहंत को नमस्कार।

आचरण और ज्ञान एक हैं जहां, उसे हम 'आचार्य' कहते हैं। वह सिद्ध भी हो सकता है, वह अरिहंत भी हो सकता है।

लेकिन हमारी पकड वह आचरण से आता है। पर जरूरी नही, क्योकि आचरण बडी सूक्ष्म वात है और हम वड़ी स्थूल वुद्धि के लोग हे। आचरण बडी सूक्ष्म वात है। तय करना कठिन है कि जो आचरण है—अब जैसे कि महावीर का नग्न खडा हो जाना—निश्चित ही लोगो को अच्छा नही लगा। गाव-गाव से महावीर को खदेड कर भगाया गया। गाव-गाव महावीर पर पत्थर फेंके गए। हमी लोग थे, हमी सब यह करते रहे। ऐसा मत सोचना कोई और। महावीर की नग्नता लोगो को भारी पडी, क्योकि लोगो ने कहा यह तो आचरणहीनता है। यह कैसा आचरण! आचरण वडा सूक्ष्म है। अव महावीर का नग्न हो जाना इतना निर्दोप आचरण है, जिसका कोई हिसाव लगाना कठिन है। हिम्मत अद्भुत है। महावीर इतने सरल हो गए कि छिपाने को कुछ न वचा। अव महावीर को इस चमडी और हड्डी की देह का वाध मिट गया और वह जो जिसको रूसी वैज्ञानिक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक-फील्ड कहते हैं, उस प्राण शरीर का वाध इतना सघन हो गया कि उस पर तो कोई कपडे डाले नही जा सकते। कपडे गिर गए। और ऐसा भी नही कि महावीर ने कपडे छोडे, कपडे गिर गए।

एक दिन गुजरते हैं एक राह से, चादर उलझ गयी है एक झाडी मे। झाडी के फूल न गिर जाए, पत्ते न टूट जाए, काटो को चोट न लग जाए, तो आधा चादर फाडकर वहीं छोड दिए। फिर आधी रह गयी शरीर पर, फिर वह भी गिर गयी। वह कव गिर गयी, उसका महावीर को पता न चला लोगो को पता चला कि महावीर नग्न खडे है। आचरण सहना मुश्किल हो गया।

आचरण के रास्ते सूक्ष्म हैं बहुत कठिन है। और हम सब के आचरण के सम्बन्ध मे वधे-वधाए ख्याल हे। ऐसा करो—और जो ऐसा करने को राजी हो जाते है वे करीव-करीव मुर्दा लोग हैं। जो आपकी मानकर आचरण कर लेते है, उन मुर्दो को आप काफी पूजा देते है। इसमे कहा है आचार्यों को नमस्कार। आप आचरण तय नही करेंगे उनका ज्ञान ही उनका आचरण तय करेगा।

और ज्ञान परम स्वतन्त्रता ह। जो व्यक्ति आचार्य को नमस्कार कर रहा है, वह यह भाव कर रहा है कि मैं नही जानता क्या हे ज्ञान, क्या है आचरण। लेकिन जिनका भी आचरण उनके ज्ञान से उपजता है और वहता है, उनको मै नमस्कार करता हू।

अभी भी वात सूक्ष्म है, इसलिए चौथे चरण मे उपाध्यायो को नमस्कार। उपाध्याय का अर्थ है—आचरण ही नही उपदेश भी। उपाध्याय का अर्थ है—ज्ञान ही नही, आचरण ही नही, उपदेश भी। वे जो जानते हैं, जानकर वैसा जीते है और जैसा वे जीते है और जानते है—वैसा वताते है। उपाध्याय का अर्थ है—वह जो वताता भी हे। क्योकि हम मौन से न समझ पाए। आचार्य मौन हो सकता है। वह मान सकता है कि आचरण काफी हे। और अगर तुम्हे आचरण दिखाई

नही पडता तो तुम जानो। उपाध्याय आप पर और भी दया करता है। वह बोलता भी है, वह आपको कहकर भी बताता है।

ये चार सुस्पष्ट रेखाए हैं। लेकिन इन चार के बाहर भी जानने वाले छूट जाएगे। क्योकि जानने वालो को बाधा नही जा सकता कैटेगरीज मे। इसलिए मन्त्र बहुत हैरानी का है। इसलिए पाचवे चरण मे एक सामान्य नमस्कार है—'नमो लोए सव्वसाहूण' "लोक मे, जो भी साधु है, उन सबको नमस्कार। जगत् मे जो भी साधु है, उन सबको नमस्कार। जो उन चार मे कही भी छूट गए हो, उनके प्रति भी हमारा नमन न छूट जाए क्योकि उन चार मे बहुत लोग छूट सकते है। जीवन बहुत रहस्यपूर्ण है। कैटेगराइज नही किया जा सकता, खाचो मे नही बाटा जा सकता। इसलिए जो शेप रह जाएगे, उनको सिर्फ साधु कहा—वे जो सरल है। और साधु का एक अर्थ और भी है। इतना सरल भी हो सकता है कोई कि उपदेश देने मे भी सकोच करे। इतना सरल भी हो सकता है कोई कि आचरण को भी छिपाए। पर उसको भी हमारे नमस्कार पहुचने चाहिए।

सवाल यह है कि हमारे नमस्कार से उसको कुछ फायदा होगा, सवाल यह है कि हमारा नमस्कार हमे रूपातरित करता है। न अरिहतो को कोई फायदा होगा, न सिद्धो को, न आचार्यो को, न उपाध्यायो को—पर आपको फायदा होगा। यह बहुत मजे की बात है कि हम सोचते है कि शायद इस नमस्कार मे हम सिद्धो के लिए, अरिहतो के लिए कुछ कर रहे है, तो इस भूल मे मत पडना। आप उनके लिए कुछ भी न कर सकेंगे, या आप जो भी करेंगे, उसमे उपद्रव ही करेंगे। आपकी इतनी ही कृपा काफी है कि आप उनके लिए कुछ न करे। आप गलत ही कर सकते है।

नही, यह नमस्कार अरिहतो के लिए नही है। अरिहतो की तरफ है, लेकिन आपके लिए है। इसके जो परिणाम है, वह आप पर होने वाले है। जो फल है वह आप पर बरसेगा। अगर कोई व्यक्ति इस भाति नमन से भरा हो, तो क्या आप सोचते है उस व्यक्ति मे अहकार टिक सकेगा! असम्भव है।

लेकिन नही, हम बहुत अद्भुत लोग है। अगर अरिहत सामने खडा हो तो हम पहले इस बात का पता लगाएगे कि अरिहत है भी? महावीर के आसपास भी लोग यही पता लगाते-लगाते जीवन नष्ट किए—अरिहत है भी? तीर्थंकर है भी? आज आपको पता नही है। आप सोचते है कि बस, तय हो गया। महावीर के वक्त मे बात इतनी तय न थी। तब और भी भीडें थी, और भी लोग थे जो कह रहे थे—'ये अरिहत नही हैं, अरिहत और है। गोशालक है अरिहत। ये तीर्थंकर नही है, यह दावा झूठा है।'

महावीर का तो कोई दावा नही था। लेकिन जो महावीर को जानते थे, वे दावे से बच भी नही सकते थे। उनकी भी अपनी कठिनाई थी। पर महावीर

के समय पूरे चारो ओर यही विवाद था। लोग जाच करने आते कि महावीर अरिहत है या नही, वे तीर्थकर है या नही, वे भगवान है या नही। बडी आश्चर्य की बात है, आप जाच भी कर लेंगे और सिद्ध भी हो जाएगा कि महावीर भगवान नही है। आपको क्या मिलेगा! और महावीर भगवान न भी हो और आप अगर उनके चरणो मे सिर रखें और कह सके, 'नमो अरिहताण तो आपको मिलेगा। महावीर के भगवान होने से कोई फर्क नही पडता।

असली सवाल यह नही है कि महावीर भगवान है या नही। असली सवाल यह है कि कही भी आपको भगवान दिख सकते है या नही—कही भी—पत्थर मे, पहाड मे। कही भी आपको दिख सके तो आप नमन को उपलब्ध हो जाए। असली राज तो नमन मे है। असली राज तो झुक जाने मे है—असली राज तो झुक जाने मे है। वह जो झुक जाता है, उसके भीतर सब कुछ बदल जाता है। वह आदमी दूसरा हो जाता है। यह सवाल नही है कि कौन सिद्ध है और कौन सिद्ध नही है। और इसका कोई उपाय भी नही है कि किसी दिन यह तय हो सके। लेकिन यह बात ही इरेलेवेंट है, असगत है। इससे कोई सम्बन्ध ही नही है। न रहे हो महावीर, इससे क्या फर्क पडता है। लेकिन अगर आपके लिए, झुकने के लिए निमित्त बन सकते है तो बात पूरी हो गयी। महावीर सिद्ध है या नही, यह वे सोचे और समझें। वह अरिहत अभी हुए या नही, यह उनकी अपनी चिन्ता है। आपके लिए चिंतित होने का कोई भी तो कारण नही है। आपके लिए चिंतित होने का अगर कोई कारण है तो एक ही कारण है कि कही कोई कोना है इस अस्तित्व मे, जहा आपका सिर झुक जाए। अगर ऐसा कोई कोना है तो आप नए जीवन को उपलब्ध हो जाएगे।

यह नमोकार, अस्तित्व मे कोई कोना न बचे, इसकी चेष्टा है—सब कोने, जहा-जहा सिर झुकाया जा सके, अज्ञात, अनजान, अपरिचित। पता नही कौन साधु है, इसलिए नाम नही लिए। पता नही कौन अरिहत है। पर इस जगत् मे जहा अज्ञानी है वहा ज्ञानी भी है। क्योकि जहा अधेरा है, वहा प्रकाश भी है। जहा रात, सांझ होती है वहा सुबह भी होती है। जहा सूरज अस्त होता है वहा सूरज उगता भी है। यह अस्तित्व द्वद्व की व्यवस्था है। तो जहां इतना सघन अज्ञान है वहा इतना ही सघन ज्ञान भी होगा ही। यह श्रद्धा है। और इस श्रद्धा से भर कर जो ये पाच नमन कर पाता है वह एक दिन कह पाता है कि निश्चय ही मगलमय है यह सूत्र। इससे सारे पाप विनष्ट हो जाते हैं।

ध्यान ले लें मत्र आपके लिए है। मदिर मे जब मूर्ति के चरणो मे आप सिर रखते है तो सवाल यह नही हे कि वे चरण परमात्मा के है या नही। सवाल इतना ही है कि वह जो चरण के समक्ष झुकने वाला सिर है वह परमात्मा के समक्ष झुक रहा है या नही। वे चरण तो निमित्त है। उन चरणो का कोई प्रयोजन नही है।

वह तो आपको झुकने की कोई जगह बनाने के लिए व्यवस्था की है । लेकिन झुकने मे पीड़ा होती है । और इसलिए जो भी वैसी पीडा दे, उस पर क्रोध आता है । जीसस पर या महावीर पर या बुद्ध पर जो क्रोध आता है, वह भी स्वाभाविक मालूम पडता है । क्योंकि झुकने मे पीडा होती है । अगर महावीर आए और आपके चरण पर सिर रख दें तो चित्त बडा प्रसन्न होगा । फिर आप महावीर को पत्थर न मारेंगे, कि मारेंगे ? फिर आप महावीर के कानो मे कीलें न ठोकेंगे, कि ठोकेंगे ? लेकिन महावीर आपके चरणो मे सिर रख दें तो आपको कोई लाभ नही होता । नुकसान होता है । आपकी अकड और गहन हो जाएगी ।

महावीर ने अपने साधुओ को कहा है कि वह गैर साधुओ को नमस्कार न करे । बडी अजीब सी बात है ! साधु को तो विनम्र होना चाहिए । इतना निरहकारी होना चाहिए कि सभी के चरणों मे सिर रखे । तो साधु गैर साधु को, गृहस्थ को नमस्कार न करे—यह तो महावीर की बात अच्छी नही मालूम पड़ती । लेकिन प्रयोजन करुणा का है । क्योकि साधु निमित्त बनना चाहिए कि आपका नमस्कार पैदा हो । और साधु आपको नमस्कार करे तो निमित्त तो बनेगा नही, आपकी अस्मिता और अहकार को और मजबूत कर देगा । कई बार दिखती है बात कुछ और होती है कुछ और । हालाकि, जैन साधुओ ने इसका ऐसा प्रयोग किया है यह मैं नही कह रहा हू । असल मे साधु का तो लक्षण यही है कि जिसका सिर सबके चरणो पर है ।

साधु का लक्षण तो यही है कि जिसका सिर अब सबके चरणो पर है । फिर भी साधु आपको नमस्कार नही करता है । क्योकि निमित्त बनना चाहता है । लेकिन अगर साधु का सिर आप सबके चरणो पर न हो और फिर वह आपको अपने चरणो मे झुकाने की कोशिश करे, तो वह आत्महत्या मे लगा है । तो भी आपको चिंतित होने की कोई भी जरूरत नही है । क्योकि आत्महत्या का प्रत्येक को हक है । अगर वह अपने नर्क का रास्ता तय कर रहा है तो उसे करने दें । लेकिन नर्क जाता हुआ आदमी भी अगर आपको स्वर्ग के इशारे के लिए निमित्त बनता हो तो अपना निमित्त लें, अपने मार्ग पर बढ जाए । पर नहीं, हमे इसकी चिंता कम है कि हम कहा जा रहे है । हमे इसकी चिंता ज्यादा है कि दूसरा कहा जा रहा है ।

नमोकार नमन का सूत्र है । यह पाच चरणो मे समस्त जगत् मे, जिन्होने भी कुछ पाया है, जिन्होने भी कुछ जाना है, जिन्होने भी कुछ जिया है, जो जीवन के अन्तर्तम गूढ रहस्य से परिचित हुए है, जिन्होंने मृत्यु पर विजय पायी है, जिन्होने शरीर के पार कुछ पहचाना है—उन सबके प्रति । समय और क्षेत्र दोनो मे । लोक दो अर्थ रखता है । लोक का अर्थ—विस्तार मे जो हैं वे स्पेस मे, आकाश मे, जो आज है वे । लेकिन, जो कल थे वे भी और जो कल होंगे वे भी । लोक— सब्व

लोए : सर्व लोक मे। सव्वसाहूण समस्त साधुओ को। समय के अतराल मे पीछे कभी जो हुए हो वे, भविष्य मे जो होगे वे, आज जो है वे, समय या क्षेत्र मे कही भी जव भी कही कोई ज्योति ज्ञान की जली हो, उस सबके लिए नमस्कार। इस नमस्कार के साथ ही आप तैयार होगे। फिर महावीर की वाणी को समझना आसान होगा। इस नमन के वाद ही, इस झुकने के वाद ही आपकी झोली फैलेगी और महावीर की सम्पदा उसमे गिर सकती है।

नमन है रिसेप्टिविटी, ग्राहकता। जैसे ही आप नमन करते है, वैसे ही आपका हृदय खुलता है और आप भीतर किसी को प्रवेश देने के लिए तैयार हो जाते है। क्योकि जिसके चरणो मे आपने सिर रखा उसको आप भीतर आने मे वाधा न डालेंगे, निमत्रण देंगे। जिसके प्रति आपने श्रद्धा प्रगट की है, उसके लिए आपका द्वार, आपका घर खुला हो जाएगा। वह आपके घर, आपका हिस्सा होकर जी सकता है। लेकिन ट्रस्ट नही है, भरोसा नही है, तो नमन असम्भव है। और नमन असम्भव है तो समझ असम्भव है। नमन के साथ ही अडरस्टैंडिंग है, नमन के साथ ही समझ का जन्म है।

इस ग्राहकता के सम्वन्ध मे एक आखिरी वात और आपसे कहू। मास्को यूनिवर्सिटी मे १९६६ तक एक अद्भुत व्यक्ति था डा० वासिलिएव। वह ग्राहकता पर प्रयोग कर रहा था। माइड की रिसेप्टिविटी, मन की ग्राहकता कितनी हो सकती है। करीव-करीव ऐसा हाल है जैसे कि एक वडा भवन हो और हमने उसमे एक छोटा-सा छेद कर रखा हो और उसी छेद से हम वाहर के जगत् को देखते हैं। यह भी हो सकता है कि भवन की सारी दीवारे गिरा दी जाए और हम खुले आकाश के नीचे समस्त रूप से ग्रहण करने वाले हो जाए। वासिलिएव ने एक वहुत हैरानी का प्रयोग किया और पहली दफा। उस तरह के वहुत से प्रयोग पूरव मे—विशेपकर भारत मे, और सर्वाधिक विशेपकर महावीर ने किए थे। लेकिन उनका डायमेशन, उनका आयाम अलग था। महावीर ने जाति-स्मरण के प्रयोग किए थे कि प्रत्येक व्यक्ति को आगे अगर ठीक यात्रा करनी हो तो उसे अपने पिछले जन्मो को स्मरण और कर लेना चाहिए। उसको पिछले जन्म याद आ जाएं, स्मरण आ जाए, तो आगे की यात्रा आसान हो जाएगी।

लेकिन वासिलिएव ने एक और अनूठा प्रयोग किया। उस प्रयोग को वे कहते हैं आर्टिफिशियल रीइनकारनेशन'। आर्टिफिशियल रीइनकारनेशन, कृत्रिम पुनर्जन्म या कृत्रिम पुनर्ज्जीवन—यह क्या है ? वासिलिएव और उसके साथी एक व्यक्ति को वेहोश करेंगे, तीस दिन तक निरन्तर सम्मोहित करके उसको गहरी वेहोशी मे ले जाएंगे। और जव वह गहरी वेहोशी मे जाने लगेगा, और अव यह यत्र है—ई० ई० जी० नाम का यत्र है, जिससे जांच की जा सकती है कि नींद की कितनी गहराई है। अल्फा नाम की वेव्स पैदा होनी शुरू हो जाती हैं, जव व्यक्ति चेतन

मन से गिरकर अचेतन मे चला जाता है । तो यंत्र पर, जैसे कि कार्डियोग्राम पर ग्राफ बन जाता है, ऐसा ई० ई० जी० भी ग्राफ बना देता है । कि यह व्यक्ति अब सपना देख रहा है, अब सपने भी बन्द हो गए, अब यह नींद मे है, अब यह गहरी नींद मे है, अब यह अतल गहराई मे डूब गया । जैसे ही कोई व्यक्ति अतल गहराई मे डूब जाता है, उसे सुझाव देता है वासिलिएव । समझ लें कि यह एक चित्रकार है, छोटा-मोटा चित्रकार है, या चित्रकला का विद्यार्थी है, तो वासिलिएव उसको समझाएगा कि तू माइकल एंजिलो है, पिछले जन्म का । या नाटककार है । या कवि है तो वह समझाएगा कि तू शेक्सपीयर है, या कोई और है । और तीस दिन तक निरन्तर गहरी अल्फा वेव्स की हालत मे उसको सुझाव दिया जाएगा कि वह कोई और है, पिछले जन्म का । तीस दिन मे उसका चित्त इसको ग्रहण कर लेगा ।

तीस दिन के बाद बडी हैरानी के अनुभव हुए, कि वह व्यक्ति जो साधारण-सा चित्रकार था, जब उसे भीतर भरोसा हो गया कि मैं माइकल एंजिलो हू तब वह विशेष चित्रकार हो गया तत्काल । वह साधारण-सा तुकबन्द था, जब उसे भरोसा हो गया कि मैं शेक्सपीयर हू तब शेक्सपीयर की हैसियत की कविताए उस व्यक्ति मे पैदा होने लगी ।

हुआ क्या ? वासिलिएव तो कहता था—यह आर्टिफिशियल रीइनकारनेशन है । वासिलिएव कहता था कि हमारा चित्त तो बहुत बडी चीज है । छोटी-सी खिडकी खुली है, जो हमने अपने को समझ रखा है कि हम यह है । जितना ही खुला है, उसी को मानकर हम जीते है । अगर हमे भरोसा दिया जाए कि हम और बडे है, तो खिडकी बडी हो जाती है । हमारी चेतना उतना काम करने लगती है ।

वासिलिएव का कहना है कि आने वाले भविष्य मे, हम जीनियस निर्मित कर सकेंगे । कोई कारण नही है कि जीनियस पैदा ही हो । सच तो यह है कि वासिलिएव कहता है, सौ मे से कम-से कम नब्बे प्रतिशत बच्चे प्रतिभा की, जीनियस की क्षमता लेकर पैदा होते है । हम उनकी खिडकी छोटी कर देते हैं । मा-बाप, स्कूल, शिक्षक सब मिल-जुलकर उनकी खिडकी छोटी करते जाते है । बीस-पच्चीस साल तक हम एक साधारण आदमी खडा कर देते हैं, जो कि क्षमता बडी लेकर आया था लेकिन हम उसका द्वार छोटा करते जाते है, छोटा करते जाते है । वासिलिएव कहता है सभी बच्चे जीनियस की तरह पैदा होते है । कुछ जो हमारी तरकीबो से बच जाते है वह जीनियस बन जाते है, बाकी नष्ट हो जाते हैं । और वासिलिएव का कहना है—असली सूत्र है रिसेप्टिविटी । इतना ग्राहक हो जाना चाहिए चित्त कि जो उसे कहा जाए, वह उसके भीतर गहनता मे प्रवेश कर जाए ।

इस नमोकार मन्त्र के साथ हम शुरू करते है महावीर की वाणी पर चर्चा। क्योकि गहन होगा मार्ग, सूक्ष्म होगी बातें। अगर आप ग्राहक हैं—नमन से भरे, श्रद्धा से भरे—तो आपके उस अतल गहराई मे बिना किसी यन्त्र की सहायता के (यह भी यन्त्र है, इस अर्थ मे, नमोकार) बिना किसी यन्त्र की सहायता के आप मे अल्फा वेव्स पैदा हो जाती है। जब कोई श्रद्धा से भरता है तो अल्फा वेव्स पैदा हो जाती है यह आप हैरान होगे जानकर कि गहन सम्मोहन मे, गहरी निद्रा मे, ध्यान मे या श्रद्धा मे ई० ई० जी० की जो मशीन है वह एक-सा ग्राफ बनाती है। श्रद्धा से भरा हुआ चित्त उसी शाति की अवस्था मे होता है जिस शाति की अवस्था मे गहन ध्यान मे होता है। या उसी शाति की अवस्था मे होता है, जैसा गहन निद्रा मे होता है। या उसी शाति की अवस्था मे होता है जैसा कि कभी भी आप जब बहुत रिलैक्स्ड और बहुत शात होते हैं।

जिस व्यक्ति पर वासिलिएव काम करता था, वह है निकोलिएव नाम का युवक, जिस पर उसने वर्षों काम किया। निकोलिएव को, दो हजार मील दूर से भी भेजे गये विचारो को पकडने की क्षमता आ गयी। सैकडो प्रयोग किए गये है जिसमे वह दो हजार मील दूर तक के विचारो को पकड पाता है। उससे जब पूछा जाता है कि उसकी तरकीब क्या है तब वह कहता है—तरकीब यह है कि मैं आधा घण्टा पूर्ण रिलैक्स, शिथिल होकर पड जाता हू और एक्टिविटी सब छोड देता हू, भीतर सब सक्रियता छोड देता हू, पैसिव हो जाता हू। पुरुष की तरह नही, स्त्री की तरह हो जाता हू। कुछ भेजता नही, कुछ आता हो तो लेने को राजी हो जाता हू। और आधा घण्टे मे ई० ई० जी० की मशीन जब बता देती है कि अल्फा वेव्स शुरू हो गयी, तब वह दो हजार मील दूर से भेजे गये विचारो को पकडने मे समर्थ हो जाता है। लेकिन जब तक वह इतना रिसेप्टिव नही होता, तब तक यह नही हो पाता।

वासिलिएव और दो कदम आगे गया। उसने कहा—आदमी ने तो बहुत तरह से अपने को विकृत किया है। अगर आदमी मे यह क्षमता है तो पशुओ मे और भी शुद्ध होगी। और इस सदी का अनूठे-से-अनूठा प्रयोग वासिलिएव ने किया कि एक मादा चूहे को, चुहिया को ऊपर रखा और उसके आठ बच्चो को पानी के भीतर, पनडुब्बी के भीतर हजारो फीट नीचे सागर मे भेजा। पनडुब्बी का इसलिए उपयोग किया कि पनडुब्बी पानी के भीतर से कोई रेडियो-वेव्स बाहर नही आती, न बाहर से भीतर जाती है। अब तक जानी गयी जितनी वेव्स वैज्ञानिको को पता है, जितनी तरगें, वे कोई भी पानी के भीतर इतनी गहराई तक प्रवेश नही करती। एक गहराई के बाद सूर्य की किरण भी पानी मे प्रवेश नही करती।

तो उस गहराई के नीचे पनडुब्बी को भेज दिया गया, और इस चुहिया की खोपडी पर सब तरफ इलेक्ट्रोड्स लगा कर ई० ई० जी० से जोड दिये गए—मशीन

से जो चुहिया के मस्तिष्क मे जो वेव्स चलती है उनको रिकार्ड करेगी। और बडी अद्‌भुत बात हुई। हजारो फीट नीचे पानी के भीतर एक-एक उसके बच्चे को मारा गया। एक खास मूवमेंट ऊपर नोट किया गया। जैसे ही वहा बच्चा मरता, वैसे ही यहा उसकी ई० ई० जी० की वेव्स बदल जाती। दुर्घटना घटित हो गयी। ठीक छ घण्टे मे उसके बच्चे मारे गये—खास-खास समय पर, नियत समय पर। उस नियत समय का ऊपर कोई पता नही है। नीचे जो वैज्ञानिक है उसको छोड दिया गया कि इतने समय के बीच वह कभी-भी, पर नोट कर ले मिनट और सैकण्ड। जिन मिनट और सैकण्ड पर नीचे चुहिया के बच्चे मारे गये, उस मा ने उसके मस्तिष्क मे उस वक्त धक्के अनुभव किए। वामिलिएव का कहना है कि जानवरो के लिए टैलिपैथी सहज-सी घटना है। आदमी भूल गया है, लेकिन जानवर अभी-भी टैलिपैथिक जगत् मे जी रहे है।

मन्त्र का उपयोग है आपको वापस टैलिपैथिक जगत् मे प्रवेश—अगर आप अपने को छोड पायें हृदय से, उस गहराई से कह पायें जहा की आपकी अचेतना मे डूब जाता है सब—"नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाण, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाण, नमो लोए सव्वसाहूण।" यह भीतर उतर जाए तो आप अपने अनुभव से कह पायेंगे 'सव्वपावप्पणासणो'। यह सब पापो का नाश करने वाला महामन्त्र है।

आज इतनी ही बात। फिर अब इस महामन्त्र का हम उद्‌घोष करेंगे। इसमे आप सम्मिलित हो—नही, कोई जाएगा नही। कोई जाएगा नही। जिन मित्रो को खडे होकर सम्मिलित होना हो, वे कुर्सियो के किनारे खडे हो जाए। क्योंकि सन्यासी नाचेंगे और इस मन्त्र के उद्‌घोष मे डूबेंगे। इस मन्त्र को अपने प्राणो मे उतार कर ही यहा से जायें। जिनको बैठकर साथ देना हो वे बैठकर ताली बजायेंगे और उद्‌घोष करेंगे। सभी सम्मिलित हो, कोई खाली न बैठा रहे, कोई व्यर्थ न बैठा रहे।

अरिहता मगल ।
सिद्धा मगल ।
साहू मगल
केवलिपन्नत्तो धम्मो मगल ।।

अरिहता लोगुत्तमा ।
सिद्धा लोगुत्तमा ।
साहू लोगुत्तमा ।
केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।।

अरिहत मगल है ।
सिद्ध मगल है ।
साधु मगल है ।
केवलीप्ररूपित अर्थात् आत्मज्ञकथित धर्म मगल है ।

अरिहत लोकोत्तम है ।
सिद्ध लोकोत्तम हैं ।
साधु लोकोत्तम हैं ।
केवलीप्ररूपित अर्थात् आत्मज्ञकथित धर्म लोकोत्तम है ।

किसी को वीमार न पडने दे। और अगर कभी कोई वीमार पड़ जाता तो चिकित्सक को उल्टे उसे पैसे चुकाने पडते थे। तो हर व्यक्ति नियमित अपने चिकित्सक को पैसे देता था ताकि वह वीमार न पडे। और वीमार पड जाए तो चिकित्सक को उसे ठीक भी करना पडता और पैसे भी देने पडते। जव तक वह ठीक न हो जाता, तव तक वीमार को फीस मिलती चिकित्सक के द्वारा। यह जो चिकित्सा की पद्धति चीन मे थी उसका नाम है—ऐक्युपक्चर। इस चिकित्सा की पद्धति को नया वैज्ञानिक समर्थन मिलना शुरू हुआ है।

रूस मे वे इस पर वडे प्रयोग कर रहे है और उनकी दृष्टि है कि इस सदी के पूरे होते होते रूस मे चिकित्सक को वीमार को वीमार न पडने देने की तनख्वाह देनी शुरू कर दी जाएगी। और जव भी कोई वीमार पडेगा तो चिकित्सक जिम्मेवार और अपराधी होगा। ऐक्युपक्चर मानता है कि शरीर मे खून ही नही वहता, विद्युत ही नही वहती—एक और तीसरा प्रवाह है प्राण है ऊर्जा का, एलन वाइटल का। वह प्रवाह भी शरीर मे वहता है। सात सौ स्थान पर शरीर के अलग-अलग वह प्रवाह है, चमडी को स्पर्श करता है। इसलिए ऐक्युपक्चर मे चमडी पर जहा-जहा प्रवाह अव्यवस्थित हो गया है, वहा सुई चोभ कर उस प्रवाह को सतुलित करने की कोशिश की जाती है। वीमारी के आने के छ महीने पहले उस प्रवाह मे असतुलन शुरू हो जाता है। यह जानकर आपको हैरानी होगी कि नाडी की जानकारी भी वस्तुत खून के प्रवाह की जानकारी नही है। नाडी के द्वारा भी उसी जीवन प्रवाह को समझने की कोशिश की जाती रही है। और छ महीने पहले नाडी अस्त-व्यस्त होनी शुरू हो जाती है—वीमारी के आने के छ महीने पहले।

हमारे भीतर जो प्राण-शरीर है उसमे पहले वीज रूप मे चीजें पैदा होती हैं और फिर वृक्ष रूप मे हमारे भौतिक शरीर तक फैल जाती है। चाहे शुभ को जन्म देना हो, चाहे अशुभ को। चाहे स्वास्थ्य को जन्म देना हो, चाहे वीमारी को। सवसे पहले प्राण शरीर मे वीज आरोपित करने होते है। यह जो मगल की स्तुति है कि अरिहत मगल है, यह प्राण-शरीर मे वीज डालने का उपाय है। क्योकि जो मगल है उसकी कामना स्वाभाविक हो जाती है। हम वही चाहते हैं जो मगल है। जो अमगल हैं वह हम नही चाहते। इसमे चाह की तो वात ही नही की गयी है, सिर्फ मगल का भाव है।

अरिहत मगल है, सिद्ध मगल है, साहू मगल है। केवलीपन्नत्तो धम्मो मगल .. वह जिन्होने स्वय को जाना और पाया, उनके द्वारा विरूपित धर्म मगल है—सिर्फ मगल का भाव। यह जानकर हैरानी होगी कि मन का नियम है, जो भी मगल है, ऐसा भाव गहन हो जाए तो उसकी आकाक्षा शुरू हो जाती है। आकाक्षा को पैदा नही करना पडता। मगल की धारणा को पैदा करना पडता है। आकाक्षा मंगल की धारणा के पीछे छाया की भाति चली आती है।

धारणा पतजलि योग के आठ अगो मे कीमती अग है जहा से अन्तर्यात्रा शुरू होती है—धारणा, ध्यान, समाधि छठवा सूत्र है धारणा, सातवा ध्यान, आठवा समाधि। यह जो मगल की धारणा है यह पतजलि योग-सूत्र का छठवा सूत्र है, और महावीर के योग-सूत्र का पहला। क्योकि महावीर का मानना यह है कि धारणा से सब शुरू हो जाता है। धारणा जैसे ही हमारे भीतर गहन होती है, हमारी चेतना रूपातरित होती है। न केवल हमारी, हमारे पड़ोस मे जो बैठा है उसकी भी। यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि आप अपनी ही धारणाओ से प्रभावित नही होते, आपके निकट जो धारणाओ के प्रवाह बहते है उनसे भी प्रभावित होते है। इसलिए महावीर ने कहा है—अज्ञानी से दूर रहना मगल है, ज्ञानी के निकट रहना मगल है। चेतना जिसकी रुग्ण है उससे दूर रहना मगल है। चेतना जिसकी स्वस्थ है उसके निकट, सान्निध्य मे रहना मगल है। सत्सग का इतना ही अर्थ है कि जहा शुभ धारणाए हो, उस मिल्यू मे, उस वातावरण मे रहना मडल है।

रूस के एक विचारक, जो ऐक्युपंक्चर पर काम कर रहे है—डा० सिरोव, उन्होने यात्रिक आविष्कार किए है जिनसे पडौसी की धारणा आपको कब प्रभावित करती है और कैसे प्रभावित करती है, उसकी जाच की जा सकती है। आप पूरे समय पडौस की धारणाओ से इम्पोज किए जा रहे है। आपको पता ही नही कि आपको जो क्रोध आया है, जरूरी नही है कि आपका ही हो। वह आपके पडौसी का भी हो सकता है। भीड मे बहुत मौको पर आपको ख्याल नही है। भीड मे एक आदमी जम्हाई लेता है और दस आदमी, उसी क्षण, अलग-अलग कोनो मे बैठे हुए जम्हाई लेने शुरू कर देते है। सिरोव का कहना है कि वह धारणा एक के मन मे जो पैदा हुई उसके वर्तुल आसपास चले गए और दूसरो को भी उसने पकड लिया। अब इसके लिए उसने यत्र निर्मित किए है, जो बताते है कि धारणा आपको कब पकडती है और कब आप मे प्रवेश कर जाती है। अपनी धारणा से तो व्यक्ति का प्राण-शरीर प्रभावित होता ही है, दूसरे की धारणा से भी प्रभावित होता है। कुछ घटनाए इस सम्बन्ध मे आपको कहू तो बहुत आसान होगा।

१९१० मे जर्मनी की एक ट्रेन मे एक पन्द्रह-सोलह वर्ष का युवक बेंच के नीचे छिपा पडा है। उसके पास टिकिट नही है। वह घर से भाग खडा हुआ है। उसके पास पैसा भी नही है। फिर तो बाद मे वह बहुत प्रसिद्ध आदमी हुआ और हिटलर ने उसके सिर पर दो लाख मार्क की घोषणा की कि जो उसका सिर काट लाए। वह तो फिर बहुत बडा आदमी हुआ और उसके बडे अद्भुत परिणाम हुए, और स्टैलिन और आइस्टीन और गाधी, सब उससे मिलकर आनदित और प्रभावित हुए। उस आदमी का बाद मे नाम हुआ—वुल्फ मैसिंग। उस दिन तो उसे कोई नही जानता था, १९१० मे।

वुल्फ मैंसिग ने अभी अपनी आत्मकथा लिखी है जो रूम मे प्रकाशित हुई है और वडा समर्थन मिला है । अपनी आत्मकथा उसने लिखी है—एवाउट माई सेल्फ । उसमे उसने लिखा है कि उस दिन मेरी जिन्दगी वदल गयी । उस ट्रेन मे, नीचे फर्श पर छिपा हुआ पडा था विना टिकिट के कारण । मैंसिग ने लिखा है कि वे शब्द मुझे कभी नही भूलते—टिकिट चेकर का कमरे मे प्रवेश, उसके जूतो की आवाज और मेरी श्वास का ठहर जाना और मेरी घवराहट और पसीने का छूट जाना, ठडी सुवह, और फिर उसका मेरे पास आकर पूछना—यग मैन, यौर टिकिट ?

मैंसिंग के पास तो टिकिट थी नही । लेकिन अचानक पास मे पडा हुआ एक कागज का टुकडा—अखवार की रद्दी का टुकडा मैंसिंग ने हाथ मे उठा लिया । आख वन्द की और सकल्प किया कि यह टिकिट है, और उसे उठाकर टिकिट चैकर को दे दिया । और मन मे सोचा कि हे परमात्मा, उसे टिकिट दिखाई पड जाए । उसने उस कागज को पक्चर किया, टिकिट वापस लौटायी और कहा—व्हैन यू हैव गाट दि टिकिट, हवाई यू आर लाइग अडर दि सीट ? पागल हो ! जव टिकिट तुम्हारे पास है तो नीचे क्यो पडे हो ? मैंसिंग को खुद भी भरोसा नही आया । लेकिन इस घटना ने उसकी पूरी जिन्दगी वदल दी । इस घटना के वाद पिछली आधी सदी मे पचास वर्षों मे जमीन पर सवसे महत्वपूर्ण आदमी था जिसे धारणा के सम्वन्ध मे सर्वाधिक अनुभव थे ।

मैंसिंग की परीक्षा दुनिया मे वडे-वडे लोगो ने ली । १६४० मे एक नाटक के मच पर जहा वह अपना प्रयोग दिखला रहा था—लोगो मे विचार सक्रमित करने का—अचानक पुलिस ने आकर मच का पर्दा गिरा दिया और लोगो से कहा कि यह कार्यक्रम समाप्त हो गया । क्योकि मैंसिंग गिरफ्तार कर लिया गया । मैंसिंग को तत्काल बन्द गाडी मे डाल कर क्रैमलिन ले जाया गया और स्टैलिन के सामने मौजूद किया गया । स्टैलिन ने कहा—मैं मान नही सकता कि कोई किसी दूसरे की धारणा को सिर्फ आन्तरिक धारणा से प्रभावित कर सके । क्योकि अगर ऐसा हो सकता है तो, फिर आदमी सिर्फ पदार्थ नही रह जाता । तो मैं तुम्हे इसलिए पकडकर बुलाया हू कि तुम मेरे सामने सिद्ध करो ।

मैंसिग ने कहा—आप जैसा भी चाहे । स्टैलिन ने कहा कि कल दो वजे तक तुम यहा बन्द रहो । दो बजे आदमी तुम्हे ले जाएगे मास्को के वडे वैक मे । तुम क्लर्क को एक लाख रुपया सिर्फ धारणा के द्वारा निकलवा कर ले आओ ।

पूरा वैक मिलिट्री से घेरा गया । दो आदमी पिस्तौलें लिए हुए मैंसिग के पीछे । ठीक दो वजे उसे वैक मे ले जाया गया । उसे कुछ पता नही था कि किस काउटर पर उसे ले जाया जाएगा । जाकर ट्रैजरर के सामने उसे खडा कर दिया गया । उसने एक कोरा कागज उन दो आदमियो के सामने निकाला । कोरे कागज को

दो क्षण देखा। ट्रैजरर को दिया, और एक लाख रूबल। ट्रैजरर ने कई वार उस कागज को देखा, चश्मा लगाया, वापस गौर से देखा और फिर एक लाख रुपया, एक लाख रूबल निकाल कर मैंसिग को दे दिए। मैंसिग ने बैग मे वे पैसे अन्दर रखे। स्टैलिन को जाकर रुपए दिए। हैरानी! वापस मैंसिग लौटा। जाकर क्लर्क के हाथ मे वह रुपए वापस दिए और कहा—मेरा कागज वापस लौटा दो। जब क्लर्क ने वापस कागज देखा तो वह खाली था। उसे हार्ट अटैक का दौरा पड गया और वह वही नीचे गिर पडा। वह बेहोश हो गया। उसकी समझ के बाहर हो गयी बात कि क्या हुआ।

लेकिन स्टैलिन इतने से राजी न हुआ। कोई जालसाजी हो सकती है। कोई क्लर्क और उसके बीच ताल-मेल हो सकता है। तो क्रेमलिन के एक कमरे मे उसे बन्द किया गया। हजारो सैनिको का पहरा लगाया गया और कहा कि ठीक बारह बजकर पाच मिनिट पर वह सैनिको के पहरे के बाहर हो जाये। वह ठीक बारह बजकर पाच मिनिट पर बाहर हो गया। सैनिक अपनी जगह खडे रहे, वह किसी को दिखाई नही पडा। वह स्टैलिन के सामने जाकर मौजूद हो गया।

इस पर भी स्टैलिन को भरोसा नही आया। और भरोसा आने जैसा नही था, क्योकि स्टैलिन की पूरी फिलासफी पूरा चिन्तन, पूरे कम्युनिज्म की धारणा, सब बिखरती है। यही एक आदमी कोई धोखा-धडी कर दे और सारा-का-सारा मार्क्स-चिन्तन का आधार गिर जाये। लेकिन स्टैलिन प्रभावित जरूर इतना हुआ कि उसने तीसरे प्रयोग के लिए और प्रार्थना की।

उसकी दृष्टि मे जो सर्वाधिक कठिन बात हो सकती थी, वह यह थी—उसने कहा कि कल रात बारह बजे मेरे कमरे मे तुम मौजूद हो जाओ, बिना किसी अनुमति पत्र के। यह सर्वाधिक कठिन बात थी। क्योकि स्टैलिन जितने गहन पहरे मे रहता था उतना पृथ्वी पर दूसरा कोई आदमी कभी नही रहा। पता भी नही होता था कि स्टैलिन किस कमरे मे है क्रेमलिन के। रोज कमरा बदल दिया जाता था ताकि कोई खतरा न हो, कोई बम न फेंका जा सके, कोई हमला न किया जा सके। सिपाहियो की पहली कतार जानती थी कि पाच नम्बर कमरे मे है, दूसरी कतार जानती थी कि छ नम्बर कमरे मे है, तीसरी कतार जानती थी कि आठ नम्बर कमरे मे है। अपने ही सिपाहियो से भी बचने की जरूरत थी स्टैलिन को। कोई पता नही होता था कि स्टैलिन किस कमरे मे है। स्टैलिन की खुद पत्नी भी स्टैलिन के कमरे का पता नही रख सकती थी। क्रेमलिन के सारे कमरे, जिनमे स्टैलिन अलग-अलग होता था, करीब-करीब एक जैसे थे, जिनमे वह कही भी, किसी भी क्षण हट सकता था। सारा इन्तजाम हर कमरे मे था।

ठीक रात बारह बजे पहरेदार पहरा देते रहे और मैंसिग जाकर स्टैलिन की मेज के सामने खडा हो गया, स्टैलिन भी कप गया। और स्टैलिन ने कहा—

तुमने यह किया कैसे ? यह असम्भव है ।

मैसिग ने कहा—मैं नही जानता। मैंने कुछ ज्यादा नही किया मैंने सिर्फ एक ही काम किया कि मैं दरवाजे पर आया और मैंने कहा कि आई ऐम बैरिया। बैरिया रूसी पुलिस का सबसे बडा आदमी था, स्टैलिन के बाद नम्बर दो की ताकत का आदमी था। बस मैंने सिर्फ इतना ही भाव किया कि मैं बैरिया हू, और तुम्हारे सैनिक मुझे सलाम बजाने लगे और मैं भीतर आ गया।

स्टैलिन ने सिर्फ मैसिग को आज्ञा दी कि वह रूस मे घूम सकता है। और प्रामाणिक है। १९४० के बाद रूस मे इस तरह के लोगो की हत्या नही की जा सकी तो वह सिर्फ मैसिग के कारण। १९४० तक रूस मे कई लोग मार डाले गये थे जिन्होने इस तरह के दावे किये थे। कार्ल आटोविम नाम के एक आदमी की १९३७ मे रूस मे हत्या की गई, स्टैलिन की आज्ञा से। क्योंकि वह भी जो करता था वह ऐसा था कि उससे कम्युनिज्म की जो मैटिरियलिस्ट भौतिकवादी धारणा है वह बिखर जाती है।

अगर धारणा इतनी महत्त्वपूर्ण हो सकती है, तो स्टैलिन ने आज्ञा दी अपने वैज्ञानिको को कि मैसिग की बात को पूरा समझने की कोशिश करो। क्योकि इसका युद्ध मे भी उपयोग हो सकता है। और जो आदमी मैसिग का अध्ययन करता रहा उस आदमी ने, नामोव ने कहा है कि जो अल्टीमेट वैपन है युद्ध का, आखिरी जो अस्त्र सिद्ध होगा, वह यह मैसिग के अध्ययन से निकलेगा। क्योकि जिस राष्ट्र के हाथ मे धारणा को प्रभावित करने के मौलिक सूत्र आ जायेंगे, उस राष्ट्र को अणु की शक्ति से हराया नही जा सकता। सच तो यह है कि जिनके हाथ मे अणु बम हो, उनको भी धारणा से प्रभावित किया जा सकता है कि वह अपने ऊपर ही फेक दें। एक हवाई जहाज बम फेंकने जा रहा हो उसके पायलट को प्रभावित किया जा सकता है कि वापस लौट जाए, अपनी ही राजधानी पर गिरा दे।

नामोव ने कहा है कि दि अल्टीमेट वैपन इन वार इज गोइग टु बी साइकिक पावर। यह धारणा की जो शक्ति है, यह आखिरी अस्त्र सिद्ध होगा। इस पर रोज काम बढता चला जाता है। स्टैलिन जैसे लोगो की उत्सुकता तो निश्चित ही विनाश की तरफ होगी। महावीर जैसे लोगो की उत्सुकता निर्माण और सृजन की ओर है। इसलिए मगल की धारणा, महावीर ने कहा है—भूलकर भी स्वप्न मे भी कोई बुरी धारणा मत करना, क्योंकि वह परिणाम ला सकती है।

आप राह से गुजर रहे है। आप सोचते है, मैंने कुछ किया भी नही। एक मन मे ख्याल भर आ गया कि इस आदमी की हत्या कर दू। आपने कुछ किया नही। कि इस दुकान से फला चीज चुरा लू, आप चोरी करने नही भी गए। लेकिन आप निश्चित हो सकते है कि राह पर किसी चोर ने आपकी धारणा न पकड ली

और यह एक दफा अशुभ की, तो भी विपावत हो जाता है सब, कट जाती है कामना ।

महावीर अपने साधुओ को कहते थे कि मगल की कामना मे डूबे रहो चौबीस घण्टे—उठते, बैठते, श्वास लेते, छोडते । स्वभावत मगल की कामना शिखर से शुरू करनी चाहिए इसलिए वे कहते है—'अरिहत मगल है' । वे जिनके आन्तरिक समस्त रोग समाप्त हो गए, वे मगल हैं । सिद्ध मगल है, साधु मगल है, और जाना जिन्होने—जैन परम्परा केवली उन्हे कहती है जो जानने की दिशा मे उस जगह पहुच गए जहा जानने वाला भी नहीं रह जाता, जानी जाने वाली वस्तु भी नही रह जाती, सिर्फ जानना रह जाता है, सिर्फ केवल ज्ञान मात्र रह जाता है—ओनली नोइग । केवली जैन परम्परा उसे कहती है जो केवल ज्ञान को उपलब्ध हो गया । मात्र ज्ञान रह गया है जहा । जहा कोई जानने वाला न बचा, जहा मैं का कोई भाव न बचा, जहा कोई ज्ञेय न बचा, जहा कोई तू न बचा । जहा सिर्फ जानने की शुद्ध क्षमता, प्योर कैपेसिटी टु नो ।

इसे ऐसा समझे कि हम एक कमरे मे दीया जलायें । दीये की बाती हे, तेल है, दीया है । फिर कमरे मे दीये का प्रकाश है और उस प्रकाश से प्रकाशित होती चीजे हैं—कुर्सी हे, फर्नीचर हे, दीवार है, आप हैं । अगर हम ऐसी कल्पना कर सकें कि कमरा शून्य हो गया—न दीवार है, न फर्नीचर हे, कुछ भी नही है । दीये मे तेल भी न रहा, दीये की देह भी न रही—सिर्फ ज्योति रह गयी, प्रकाश मात्र रह गया, न कोई दीया बचा और न प्रकाशित वस्तुए बची—मात्र प्रकाश रह गया । आलोक, स्रोत रहित, कोई तेल नहीं, कोई बाती, नही । और ऐसा आलोक जो किसी पर नही पड रहा है, शून्य मे फैल रहा है । ऐसी धारणा है जैन चिन्तन की केवली के सम्बन्ध में । जो परम ज्ञान को उपलब्ध होता है वहा ज्ञान अकारण हो जाता है, कोई सोर्स नही होता । क्योकि बात बहुत कीमती है। जैन परम्परा कहती है कि जिस चीज का भी सोर्स होता है वह कभी न कभी चुक जाती है । चुक ही जाएगी कितना ही बडा स्रोत क्यो न हो । सूर्य भी चुक जाएगा एक दिन—बडा हे स्रोत, अरबो वर्षों से रोशनी दे रहा है । वैज्ञानिक कहते है—अभी और अन्दाजन चार हजार, पाच हजार साल रोशनी देगा । लेकिन चुक जाएगा । कितना ही बडा स्रोत हो, स्रोत की सीमा है—चुक जाएगा ।

महावीर कहते है—यह जो चेतना है, यह अनन्त है, यह कभी चुक नही सकती । यह स्रोतरहित है । इसमे जो प्रकाश है वह किसी मार्ग से नही आता, वह बस 'है'—इट जस्ट इज । कही से आता नही, अन्यथा एक दिन चुक जाएगा । कितना ही बडा हो, चुक जाएगा । महासागर भी चम्मचो से उलीचकर चुकाए जा सकते है—कितना ही लम्बा समय लगे । महासागर भी चम्मचो से उलीचकर चुकाए जा सकते है । एक चम्मच थोडा तो कम कर ही जाती है । फिर और

ज्यादा कम होता जाएगा। महावीर कहते हैं—यह जो चेतना है, यह स्रोतरहित है। इसलिए महावीर ने ईश्वर को मानने से इन्कार कर दिया। क्योंकि अगर ईश्वर को मानें तो ईश्वर स्रोत हो जाता है। और हम सब उसी के स्रोत से जलने वाले दीये हो जाते हैं तो हम चूक जाएंगे।

सच यह है कि महावीर से ज्यादा प्रतिष्ठा आत्मा को इस पृथ्वी पर और किसी व्यक्ति ने कभी नही दी है। इतनी प्रतिष्ठा कि उन्होने कहा कि परमात्मा अलग नही, आत्मा ही परमात्मा है। इसका स्रोत अलग नही है, यह ज्योति ही स्वय स्रोत हे। यह जो भीतर जलने वाला जीवन है, यह कही से शक्ति नही पाता यह स्वय ही शक्तिवान है। यह किसी के द्वारा निर्मित नही है, नही तो किसी के द्वारा नष्ट हो जाएगा। यह किसी पर निर्भर नही है, नही तो मोहताज रहेगा। यह किसी से कुछ भी नही पाता, यह स्वय में समर्थ और सिद्ध है। जिस दिन ज्ञान इस सीमा पर पहुचता है, जहा हम स्रोत रहित प्रकाश को उपलब्ध होते हैं, सोर्सलेस—उसी दिन हम मूल को उपलब्ध होते हैं। जैन परम्परा ऐसे व्यक्ति को केवली कहती है। वह व्यक्ति कही भी पैदा हो—वे क्राइस्ट हो सकते है, वे बुद्ध हो सकते हैं, वे कृष्ण हो सकते है, वे लाओत्से हो सकते है। इसलिए इस सूत्र मे यह नही कहा गया—'महावीर मगल' कृष्ण मगल—ऐसा नही कहा गया। 'जैन धर्म मगल है', ऐसा नही कहा। 'हिन्दू धर्म मगल है', ऐसा नही कहा। 'केवली पन्नत्तो धम्मो मगल'। वे जो केवल-ज्ञान को उपलब्ध हो गए, उनके द्वारा जो भी प्ररूपित धर्म है, वह मगल है। वह कही भी हो, जिन्होने भी शुद्ध ज्ञान को पा लिया, उन्होने जो कहा है, वह मगल है।

यह मगल की धारणा गहन प्राणो के अतल मे बैठ जाए तो अमगल की सम्भावना कम होती चली जाती है। जैसी जो भावना करता हे, धीरे-धीरे वैसा ही हो जाता हे। जैसा हम सोचते हैं, वैसे ही हम हो जाते हैं। जो हम मागते हैं, वह मिल जाता है।

लेकिन हम सदा गलत मागते है, वही हमारा दुर्भाग्य है। हम उसी की तरफ आख उठाकर देखते है जो हम होना चाहते है। अगर आप एक राजनैतिक नेता के आसपास भीड लगाकर इकट्ठे हो जाते हैं, तो यह भीड सिर्फ इसकी ही सूचना नही है कि राजनैतिक नेता आया है। गहन रूप से इस बात की सूचना है कि आप कही राजनैतिक पद पर होना चाहते हैं। हम उसी को आदर देते हैं जो हम होना चाहते है, जो हमारे भविष्य का मॉडल मालूम पडता है। जिसमे हमे दिखाई पडता है कि काश, मैं हो जाऊ। हम उसी के आसपास इकट्ठे हो जाते हैं। अगर सिने-अभिनेता के पास भीड इकट्ठी हो जाती है तो वह आपकी भीतरी आकाक्षा की खबर देती है—आप भी वही हो जाना चाहते हैं।

अगर महावीर ने कहा है कि कहो—'अरिहता मगल, सिद्धा मगल, साहू मगल'

तो वे यह कह रहे है कि यह तुम कह ही तव पाओगे जव तुम अरिहत होना चाहोगे। या तुम जव यह कहना शुरू करोगे, तो तुम्हारे अरिहत होने की यात्रा शुरू हो जाएगी। और वडी-से-वडी यात्रा वडे छोटे-से कदम से शुरू होती है। और पहले कदम से कुछ भी पता नही चलता। धारणा पहला कदम है।

कभी आपने सोचा कि आप क्या होना चाहते है ? नही भी सोचा होगा सचेतन रूप से तो भी अचेतन मे चलता है कि आप क्या होना चाहते हैं। जो आप होना चाहते हैं उसी के प्रति आपके मन मे आदर पैदा होता है। न केवल आदर, जो आप होना चाहते हैं उसी के सम्वन्ध मे आपके मन मे चिन्तन के वर्तुल चलते हैं, वही आपके स्वप्नो मे उतर आता है, वही आपकी सासो मे समा जाता है, वही आपके खून मे प्रवेश कर जाता है। और जब मैं कहता हू—खून मे प्रवेश कर जाता है, तो मैं कोई साहित्यिक वात नही कह रहा हू—मै मेडिकल, मैं विल्कुल शारीरिक तथ्य की वात कह रहा हू।

इधर प्रयोग किए गए हैं और चकित करने वाले सूचन मिले है। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी मे डिलावार प्रयोगशाला मे विचार का खून पर क्या प्रभाव पडता है—दूसरे की धारणा का भी, आपकी धारणा तो छोड दें, आपकी धारणा का तो पडेगा ही—दूसरे की धारणा का भी, अप्रगट धारणा का भी आपके खून पर क्या प्रभाव पडता है ? अगर आप ऐसे व्यक्ति के पास जाते हैं जिसके हृदय से वहती करुणा और मगल की भावना है, जो आपके लिए शुभ के अतिरिक्त और कुछ नही सोच पाता—तो डिलावार लेवोरेटरी के प्रयोगो का दस वर्षों का निष्कर्ष यह है कि आपके खून मे—ऐसे व्यक्ति के पास जाते ही, जो आपके प्रति मगल की भावना रखता है—सफेद कण, पन्द्रह सौ की तादाद मे तत्काल वढ जाते है, इम्मीज्येटली। दरवाजे के वाहर आपके खून की परीक्षा की जाए और फिर आप भीतर आ जाए और मगल की कामना से भरे हुए व्यक्ति के पास बैठ जाए और फिर आपके खून की परीक्षा की जाए, आपके खून मे सफेद, व्हाइट ब्लड सैल्स—सफेद जो कोश हैं खून के—वह पन्द्रह सौ वढ जाते हैं। जो व्यक्ति आपके प्रति दुर्भाव रखता है उसके पास जाकर सौलह सौ कम हो जाते है—तत्काल इम्मीज्येटली।

और मेडिकल साइस कहती है कि आपके स्वास्थ्य की रक्षा का मूल आधार सफेद कणो की अधिकता है। वे जितने ज्यादा आपके शरीर मे होते है उतना आपका स्वास्थ्य सुरक्षित हैं। वे आपके पहरेदार है। आपने देखा होगा, ख्याल नही किया होगा, चोट लग जाती हे तो चोट लगकर जो आपको मवाद पड जाती है वह मवाद सिर्फ रक्षक है, आपके शरीर के खून के सफेद कण। वे भागकर फौरन एक पर्त पहरेदारी की खडी कर देते हैं। जिसको आप मवाद समझते है वह मवाद नही है, वे आपके दुश्मन नही है, वे खून के सफेद कण हैं जो तत्काल दौड-

कर घाव को चारो तरफ से घेर लेते हैं, जैसे कि पुलिस ने पहरा लगा दिया हो। क्योकि उनके पर्त को पार करके कोई भी कीटाणु शरीर मे प्रवेश नही कर सकता है। वे रक्षक हैं।

डिलावार प्रयोगशाला मे किए गए प्रयोगो ने चकित कर दिया हे वैज्ञानिको को कि क्या शुभ की भावना से भरे व्यक्ति का इतना परिणाम हो सकता है कि दूसरे के खून का अनुपात बदल जाए! आयतन बदल जाए! खून की गति बदल जाए! हृदय की गति बदल जाए! रक्तचाप बदल जाए! यह सम्भव है? अब तो इन्कार करना कठिन हे।

डा० जगदीशचन्द्र वसु के बाद दूसरा एक बडा नाम एक अमरीकन का है, क्लीव बैक्स्टर का। जगदीशचन्द्र ने तो कहा था कि पौधो मे प्राण हैं। बैक्स्टर ने सिद्ध किया है—सिद्ध हो गया है कि पौधो मे भावना भी है और पौधे अपने मित्रो को पहचानते है और शत्रुओ को भी। पौधा अपने मालिक को भी पहचानता है और अपने माली को भी। और अगर मालिक मर जाता है तो पौधे की प्राण-धारा क्षीण हो जाती है, वह बीमार हो जाता है। पौधो की स्मृति को भी बैक्स्टर ने सिद्ध किया है कि उनकी भी मैमोरी है।

और आप जब अपने गुलाब के पौधे के पास जाकर प्रेम से खडे हो जाते है तब वह कल फिर आपकी उसी समय प्रतीक्षा करता है। वह याद रखता है कि आज आप नही आए। या जब आप पौधे के पास प्रेम से भर कर खडे हो जाते है, फिर अचानक एक फूल तोड लेते हैं तो पौधे को वडी हैरानी होती है, बडा कफ्यूजन होता है। इस सबकी प्राणधाराओ को रिकार्ड करने वाले यन्त्र तैयार किए है बैक्स्टर ने कि पौधा एकदम कफ्यूज्ड हो जाता है, उसकी समझ मे नही आता कि जो आदमी इतने प्रेम से खडा था उसने फूल कैसे तोड लिया। वह ऐसे ही कफ्यूज्ड हो जाता है जैसे कोई बच्चा आपके पास खडा हो, प्रेम करते-करते गर्दन तोड लें कि चेहरा बहुत अच्छा लगता है। पौधे की समझ मे बिल्कुल नही आता कि यह हो क्या गया! उसके भीतर बडा कफ्यूजन पैदा होता है।

बैक्स्टर कहता है—हमने हजारो पौधो को कंफ्यूज किया, उनको हम बडी परेशानी मे डाले। वे समझ ही नही पाते कि यह हो क्या रहा है! जिसको मित्र की तरह अनुभव कर रहे थे वह एकदम शत्रु की तरह हो जाता है। बैक्स्टर का यह भी कहना है कि जिन पौधो को हम प्रेम करते है वे हमारी तरफ बड़ी पाजिटिव भावनाए छोडते है।

और बैक्स्टर ने सुझाव दिया है अमरीकन मेडिकल एसोसिएशन को कि शीघ्र ही हम विशेष तरह के मरीजो को विशेष पौधो के पास ले जाकर ठीक करने मे समर्थ हो जाएगे—अगर उन पौधो को हमने इतना प्राणवान कर दिया—प्रेम से, भाव से, संगीत से, प्रार्थना से, ध्यान मे। उनको इतना प्राण-शक्ति से भर दिया

को छोड दें, अयुक्त हो जाये, अलग हो जायें। इसलिए जैन परम्परा मे अयोग का वही मूल्य है जो हिन्दू परम्परा में योग का है। धर्म का बडा अनूठा अर्थ जैनो का है। महावीर कहते है कि वस्तु का जो स्वभाव हे वही धर्म है, 'नेचर'। 'धर्म' का महावीर का वही अर्थ हैं जो लाओत्से के 'ताओ' का।

व्यक्ति का जो स्वभाव है वह उसकी स्वय की अपनी परिणति है। अगर कोई व्यक्ति बिना किसी से प्रभावित हुए सहज वरण-चरण कर पाए तो धर्म को उपलब्ध हो जाता है—अगर कोई व्यक्ति बिना प्रभावित हुए। इसलिए प्रभाव महावीर अच्छी बात नही मानते। किसी से भी प्रभावित होना बधना हे। सब इम्प्रेशन बाधने वाले है पूर्णतया अप्रभावित हो जाना निज हो जाना हे, स्वय हो जाना है। इस निजता को, इस स्वय होने को वे धर्म कहते हैं। केवली प्ररूपित धर्म का अर्थ होता है, जब कोई व्यक्ति केवल ज्ञान मात्र रह जाता है, चेतना मात्र रह जाता है। तब वह जैसे जीता है वही धर्म हे। उसका जीवन, उमका उठना, उसका बैठना, उमका हलन-चलन, उसका सोना—वह जो भी करता है—उसकी आख की पलक का उठना और हिलना, उसकी समस्त अस्तित्व मे प्रकट होती हुई जो भी किरणे हैं—वही धर्म है।

जैसे अग्नि अपने शुद्ध रूप मे जलती हो तो धुआ पैदा नही होता। आप कहेगे—अग्नि तो जहा भी जलती है, वहा धुआ पैदा होता है। और तर्क की किताबो मे लिखा हुआ है—जहा-जहा धुआ, वहा-वहा अग्नि। इसलिए जहा धुआ दिखे, मान लेना कि अग्नि है। लेकिन धुआ अग्नि से पैदा नही होता, केवल ईधन के गीलेपन से पैदा होता है। अग्नि से उसका कोई लेना-देना नही है। अगर ईधन बिल्कुल गीला न हो तो धुआ पैदा नही होता। धुआ अग्नि का स्वभाव नही हे, ईधन का प्रभाव है—जब ईधन गीला होता है तब पैदा होता है। तो कहना चाहिए—वह पानी से पैदा होता है, वह अग्नि से पैदा नही होता—धुआ। अगर बिल्कुल सूखा ईधन है, जिसमे पानी जरा भी नही है तो धुआ पैदा नही होगा। और अगर पैदा होता है तो जानना कि थोडा बहुत ईधन गीला है। अग्नि जब अपने शुद्ध रूप मे होती है, जब उसमे कोई दूसरा विजातीय, फॉरिन ऐलिमैंट नही होता—तब उसमे कोई धुआ नही होता।

महावीर कहते है—जब अग्नि अपने धर्म मे हे, तब कोई धुआ नही है। जब चेतना बिल्कुल शुद्ध होती है और पदार्थ का कोई अभाव नही होता, शरीर का पता भी नही होता—जब चेतना इतनी शुद्ध होती हे कि शरीर का पता भी नही होता है। तब महावीर कहते हैं कि, जानना कि चेतना अपने धर्म मे है। इसलिए महावीर कहते हैं—प्रत्येक का अपना धर्म हे—अग्नि का अपना है, जल का अपना है, पदार्थ का अपना है, चेतना का अपना है। शुद्ध हो जाना अपने धर्म मे—आनन्द है, अशुद्ध रहना अपने धर्म मे दुख है। तो धर्म का यहां अर्थ है स्वभाव।

अपने स्वभाव मे चले जाना धार्मिक हो जाना है, और अपने स्वभाव के बाहर भटकते रहना अधार्मिक बने रहना है।

लोक मे इन चारो को उत्तम भी इस सूत्र मे कहा है। अरिहंत उत्तम है लोक मे, सिद्ध उत्तम है लोक मे, साधु उत्तम है लोक मे, केवली प्ररूपित धर्म उत्तम है लोक मे। मगल कह देने के बाद उत्तम कहने की क्या जरूरत है ? कारण है हमारे भीतर। ये सारे सूत्र हमारे मानस के ऊपर आधारित है। यह हमारे मन की गहराइयो के अध्ययन पर आधारित है। मगल कहने के बाद भी हम इतने नासमझ है कि जो उत्तम नही है उसे भी हम मगल मान सकते है। हमारी वासनाए ऐसी है कि जो निकृष्ट है लोक मे उसी की तरफ बहती है। ऐसा भी कह सकते है कि वासना का अर्थ ही यही होता है—नीचे की तरफ बहाव। जो निकृष्ट है उसी की तरफ।

रामकृष्ण कहा करते थे कि चील आकाश मे भी उडे तो तुम यह मत समझना कि उसका ध्यान आकाश मे होता है। वह आकाश मे उडती है, लेकिन उसकी नजर नीचे, कही कूडे-कबाड पर, किसी कचरे घर पर पडे हुए मास पर, किसी सडी मछली पर उस पर लगी रहती है। उडती आकाश मे है और उसकी दृष्टि तो नीचे कही किसी मास के टुकडे पर अटकी रहती है। तो रामकृष्ण कहते थे—भूल मे मत पड जाना कि चील आकाश मे उड रही है इसलिए आकाश मे ध्यान होगा। ध्यान तो उसका नीचे लगा है।

इसलिए दूसरे सूत्र मे महावीर का यह जो मगल सूत्र है, यह तत्काल जोडता है—'अरिहत लोगुत्तमा !' अरिहत उत्तम है। यह सिर्फ इशारे के लिए है। 'सिद्ध उत्तम है, साधु उत्तम है।' उत्तम का अर्थ है कि शिखर है जीवन के—श्रेष्ठ है, पाने योग्य है, चाहने योग्य है, होने योग्य है।

किसी ने पूछा है श्वीत्जर को—क्या है पाने योग्य ? क्या है आनन्द ? तो श्वीत्जर ने कहा—"टु बी मोर ऐण्ड मोर, टु बी डीप एण्ड डीप, टु बी इन ऐण्ड इन, ऐण्ड कास्टेंटली टर्निग इन टु समथिंग मोर ऐण्ड मोर।" कुछ ज्यादा मे रूपान्तरित होते रहना, कुछ श्रेष्ठ मे बदलते रहना, कुछ गहरे और गहरे जाते रहना, कुछ ज्यादा और ज्यादा होते रहना।

लेकिन हम ज्यादा तभी हो सकते है जब ज्यादा की, श्रेष्ठ की, उत्तम की धारणा हमारे निकट हो। शिखर दिखाई पडता हो तो यात्रा भी हो सकती है। शिखर ही न दिखाई पडता हो तो यात्रा कोई सवाल नही। भौतिकवाद कहता है—कोई आत्मा नही है। शिखर को तोड देता है। और जब कोई आत्मा नही है, ऐसा कोई मान लेता है—तो आत्मा को पाना है, इसका तो कोई सवाल ही नही रह जाता।

फ्रायड यदि कह देता है कि आदमी वासना के अतिरिक्त और कुछ भी नही

है—तो आदमी तो वासना है ही—वह तत्काल मान लेता है। फिर वह कहता है जब वासना के अतिरिक्त कुछ है ही नही तब बात खत्म हो गयी, बात समाप्त हो गयी।

एक व्यक्ति कह रहा था किसी को कि मैं बहुत परेशान था, क्योकि मेरी काशियस मुझे बहुत पीडा देती थी; मेरा अन्त करण बहुत पीडा देता था—झूठ बोलू तो, चोरी करू तो, किसी स्त्री की तरफ देखू तो—बडी पीडा होती थी। तो फिर मै मनोचिकित्सक के पास गया। और मैंने इलाज करवाया और दो साल मे मै बिल्कुल ठीक हो गया।

तो उसके मित्र ने पूछा—क्या अब चोरी का भाव नही उठता? स्त्री को देखकर वासना नही जगती? सुन्दर को देखकर पाने का भाव पैदा नही होता?

उसने कहा—नही-नही, तुम मुझे गलत समझे। दो साल मे मनोचिकित्सक ने मुझे मेरी काशियस से छुटकारा दिला दिया। अब पीडा नही होती, अब चिन्ता नही होती, अब अपराध अनुभव नही करता हू।

पिछले पचास सालो मे पश्चिम का मनोचिकित्सक लोगो को अपराध से मुक्त नही करवा रहा है, अपराध के भाव से मुक्त करवा रहा हे। वह कह रहा है—यह तो स्वाभाविक है, यह तो बिल्कुल स्वाभाविक है, यह तो होगा ही। अगर आज पश्चिम मे जीवन ऐसे नीचे तल पर सरक रहा है—चल रहा है कहना ठीक नही, सरक रहा है, जैसे साप सरकता है—तो उसका बडे से बडा जिम्मा पश्चिम के मनोवैज्ञानिक को है क्योकि वह निकृष्ट को कहता है कि यही स्वभाव है। और कठिनाई यह है कि निकृष्ट को स्वभाव मान लेना हमे आसपन है, क्योकि हम परिचित हैं, और वह दलील ठीक लगती है।

जब महावीर कहते है 'अरिहता लोगुत्तमा,' तो समझ मे नही पडता कि ऐसे लोग होते है। अरिहत को हम जानते नही, सिद्ध को हम जानते नही। कौन है ये? हमारे भीतर तो हमने सिद्ध जैसा कभी कोई क्षण अनुभव नही किया, अरिहत जैसी हमने कभी कोई लहर नही जानी, साधु जैसा हमने कभी कोई भाव नही जाना; केवली-प्ररूपित धर्म मे हमने कभी प्रवेश नही किया। क्या हवा की बातें हैं?

तो अगर हम मान भी लें तो मजबूरी मे मानते हैं और उस मजबूरी का नाम हमने धर्म रखा हुआ है। किसी घर मे पैदा हो गए, जैन, मजबूरी है आपका कोई कृत्य नही है। पर्युषण है तो मजबूरी है। तो आप जाते हैं मन्दिर मे, नमस्कार करते हैं। साधु को नमस्कार करते है, उपवास कर लेते है, व्रत कर लेते हैं—मजबूरी है। किसी का कसूर नही, आप पैदा हो गए जैन घर मे। इसमे किसी का कोई हाथ तो है नही। खोपडी मे बचपन से सुनाया जा रहा है वह भर गया हे, उसको निपटा लेते है। बाकी कही स्फुरणा नही है उसमे। कही कोई ऐसा सहज

भाव नहीं है।

जरा आपने ख्याल किया है कि मन्दिर जाते वक्त आपके पैर और सिनेमा गृह में जाते वक्त आपके पैर। मैं कविताओं की बात कह रहा हूँ—[illegible], उत्साहित। मन्दिर जैसे आप घसीटे जाते हैं, सिनेमा गृह जैसे आप जाते हैं। मन्दिर जैसे एक मजबूरी है, एक काम है। प्रसन्नता नहीं है जाने में, नृत्य नहीं है जाने में चाल सहज। किसी तरह पूरा कर देना है। लेकिन सिनेमा जीवन है। पूरा नहीं कर देना है।

सुना है कि मुल्ला नसरुद्दीन जिस दिन मरा, उस दिन पुरोहित उसे परमात्मा की प्रार्थना करवाने आए और कहा कि मुल्ला! पश्चात्ताप करो, रिपेन्ट। पश्चात्ताप करो उन पापों का, जो तुमने किए हैं। मुल्ला ने आंख खोली और कहा कि मैं दूसरा ही पश्चात्ताप कर रहा हूं। जो पाप मैं नहीं कर पाया, उनका पश्चात्ताप कर रहा हूं। अब मर रहा हूं, और कुछ पाप करने का मन था वे नहीं कर पाया।

वह पुरोहित फिर भी नही समझ पाया, क्योकि पुरोहितो से कम समझदार आदमी आज जमीन पर दूसरा नही है। उसने कहा—मुल्ला, यह क्या तुम कहते हो ? अगर तुम्हे दुबारा जन्म मिले तो क्या तुम वही पाप करोगे ? वैसा ही जियोगे, जैसा अभी जिये ?

मुल्ला ने कहा कि नही, बहुत फर्क करूगा। मैने इस जिन्दगी मे पाप बडी देर से शुरू किए, अगली जिन्दगी मे जरा जल्दी शुरू कर दूगा।

यह मुल्ला हम सब मनुष्यो के बाबत खबर दे रहा है। यह व्यग्य है, यह आदमी पूरा व्यग्य है हम सब पर। यह हमारी मनोदशा है। मरते वक्त हमे भी पश्चात्ताप होगा। पश्चात्ताप होगा उन औरतो का जो नही मिली। पश्चात्ताप होगा उस धन का जो नही पाया। पश्चात्ताप होगा उन पदो का जो चूक गए। पश्चात्ताप होगा उस सब का जो निकृष्ट था, जो पाने योग्य ही नही था। लेकिन क्या मरते वक्त पश्चात्ताप होगा कि अरिहत न मिले ? सिद्ध न मिले ? केवली-प्ररूपित धर्म मे प्रवेश न मिला ?

नही, हो सकता है नमोकार आपके आसपास पढा जा रहा होगा, लेकिन आपके भीतर उसका कोई प्रवेश नही हो पाएगा। क्योकि जिन्होने जीवन भर उसके प्रवेश की तैयारी नही की, वे अगर सोचते हो कि क्षण मे उसका प्रवेश हो जाएगा तो वे नासमझ हैं। जिन्होंने जीवन भर उस मेहमान के आने के लिए इन्तजाम नही किया, वे सोचते हैं—अचानक वह मेहमान भीतर आ जाएगा तो वे गलती पर हैं। वे दुराशाए कर रहे है, वे हताश होगे।

लेकिन जो व्यक्ति निरन्तर, 'अरिहत मगल है, लोक मे उत्तम है, श्रेष्ठ है', वही जीवन मे पाने का, ऐसा सूत्र ख्याल मे रखता है—और कभी-कभी न भी समझ मे आता

हो, फिर भी रिचुअल रिपीटीशन करता है, न भी समझ मे आता हो, न भी ख्याल मे आता हो, ऐसे ही दोहराए चला जाता है, तो भी तो गूञ्ज बनते हैं। ऐसे भी दोहराए चला जाता है तो भी चित पर निशान बनते हैं। वे निशान किसी भी क्षण, किसी प्रकाश के क्षण मे सक्रिय हो सकते हैं। जिसने निरन्तर कहा है कि अरिहत लोक मे उत्तम ह, उसने अपने भीतर एक धारा प्रवाहित की है—कितनी ही क्षीण। लेकिन अव वह अरिहत होने के विपरीत जाने लगेगा तो उसके भीतर कोई उससे कहेगा कि तुम जो कर रहे हो वह उत्तम नही है, वह लोक मे श्रेष्ठ नही है।

जिसने कहा है 'सिद्ध लोक मे श्रेष्ठ हैं,' जव वह अपने को खोने जा रहा होगा तव कोई उसके भीतर स्वर कहेगा कि सिद्ध तो अपने को पाते है, तुम अपने को खोते हो, बेचते हो। जिसने कहा है 'साधु लोकोत्तम है,' उसको किसी क्षण असाधु होते वक्त यह स्मरण रोकने वाला वन सकता है। जान कर, समझ कर किया गया, तव तो परिणामदायी है ही। न जान कर, न समझ कर किया हुआ भी परिणामदायी हो जाता है। क्योकि रिचुअल रिपीटीशन भी, सिर्फ पुनरुक्ति भी, हमारे चित्त मे रेखाए छोड जाती है—मृत लेकिन फिर भी छोड जाती है। और किसी भी क्षण वे सक्रिय हो सकती हैं। यह नियमित पाठ के लिए है, यह नियमित भाव के लिए है, यह नियमित धारणा के लिए है।

इसमे अन्तिम वात थोडा और ठीक से समझ लें। महावीर ने जिस परम्परा और जिस स्कूल, जिस धारा का उपयोग किया है उसमे श्रेष्ठतम जगह पर मनुष्य की ही शुद्ध आत्मा को रखा हैं। मनुष्य की हा शुद्र आत्मा परमात्मा मानी है। इसलिए महावीर के हिसाव से इस जगह मे जितने लोग हैं उतने भगवान हो सकते हैं। जितने लोग है—लोग ही नही, जितनी चेतनाए हे वे सभी भगवान हो सकती हैं। महावीर की दृष्टि मे भगवान का एक होने का जो ख्याल है वह नही है। अगर ठीक से समझे तो दुनिया के सारे धर्मो मे भगवान की जो धारणा है वह अरिस्टोक्रेटिक हे, एक की हे। सिर्फ महावीर के धर्म मे वह डेमोक्रेटिक हं, सव की है।

प्रत्येक व्यक्ति स्वभाव से भगवान है। वह जाने न जाने, वह पाए न पाए, वह जन्म-जन्म भटके, अनन्त जन्म भटके, फिर भी इससे कोई फर्क नही पडता, वह भगवान है। और किसी न किसी दिन वह जो उसमे छिपा है प्रकट होगा। और किसी न किसी दिन जो वीज है वह वृक्ष होगा। जो सम्भावना है वह सत्य वनेगा।

महावीर अनन्त भगवत्ताओ मे मानते हैं—अनन्त भगवत्ताओ मे, इनफिनिट डेटीज। एक-एक आदमी डिवाइन हैं। और जिस दिन सारा जगत् अरिहत तक पहुंच जाए, उस दिन जगत् मे अनन्त भगवान होगे।

महावीर का अर्थ 'भगवान' से है—जिसने अपने स्वभाव को पा लिया। स्वभाव भगवान है। भगवान की यह बहुत अनूठी धारणा है। जगत् को बनाने वाले का सवाल नही है भगवान से, जगत् को चलाने वाले का सवाल नही है भगवान से। महावीर कहते हैं—'कोई बनाने वाला नही है, क्योकि महावीर कहते हैं—'बनाने की धारणा ही बचकानी है।' और बचकानी इसलिए है कि उससे कुछ हल नही होता है। हम कहते है जगत् को भगवान ने बनाया। फिर सवाल खडा हो जाता है कि भगवान को किसने बनाया ? सवाल वही का वही बना रहता है। एक कदम और हट जाता है। जो कहता है 'भगवान ने जगत् को बनाया,' वह कहता है, 'भगवान को किसी ने नही बनाया।' महावीर कहते है—जब भगवान को किसी ने नही बनाया, ऐसा मानना ही पडता है कि कुछ है जो अनबना है, अनक्रिएटेड है। तो इस सारे जगत् को ही अनक्रिएटेड मानने मे कौन-सी अडचन है ? अडचन तो एक ही थी मन को कि बिना बनाए कोई चीज कैसे बनेगी ?

इसलिए यह समझ लेने जैसा है कि महावीर के पास नास्तिक के लिए जो उत्तर है वह तथाकथित ईश्वरवादी के पास नही है। क्योकि नास्तिक ईश्वरवादी से यही कहता है कि तुम्हारे भगवान ने क्यो बनाया ? बडी कठिनाई खडी होती है। और बडी कठिनाई यह खडी होती है कि ईश्वरवादी को मानना पडता है कि उसमे वासना उठी जगत् को बनाने की। जब भगवान तक मे वासना उठती है तो आदमी को वासना से मुक्त करने का फिर कोई उपाय नही है। भगवान ने चाहा, ही डिजायर्ड। जब भगवान भी कहता है, और भगवान भी बिना चाह के शात नही रह सकता, तो फिर आदमी को अचाह मे कैसे ले जाओगे ? क्या भगवान परेशान था, जगत् नही था तो ? कोई पीडा होती थी ? वैसी ही जैसे एक चित्रकार को चित्र न बने तो होती है ? एक कवि को कविता निर्मित न हो पाए तो होती है ? क्या ऐसा ही परेशान और चिन्तित होता है ? क्या उसमे भी चिन्ता और तनाव घर करते है ? ईश्वरवादी दिक्कत मे रहा है। उसको स्वीकार करना पडता है कि भगवान ने चाहा।

और तब बहुत बेहूदी बातें उसको स्वीकार करनी पडती है। उसे स्वीकार करना पडता है—ब्रह्मा ने स्त्री को जन्म दिया और फिर उसी को चाहा। क्योकि उस ब्रह्मा और चाह मे कोई ताल-मेल बिठाना पडेगा। तो एक बहुत एब्सर्ड घटना घटी। और वह यह कि ब्रह्मा ने जिसे पैदा किया वह तो उसका पिता हो गया। फिर उसने अपनी बेटी को चाहा। फिर वह सम्भोग के लिए आतुर हो गया, और फिर वह अपनी बेटी के पीछे भागने लगा। फिर बेटी उससे बचने के लिए गाय बन गयी, तो वह बैल हो गया। फिर बेटी उससे बचने के लिए कुछ और हो गयी, तो वह कुछ और हो गया। वह बेटी जो-जो होती चली गयी, वह ब्रह्मा फिर वही-वही जीवन का।नर होता चला गया। तो अगर ब्रह्मा भी ऐसा चाह

मे भाग रहा हो, तो आप जब सिनेमागृह जाते है तो विल्कुल ब्रह्म स्वरूप है। विल्कुल ठीक चले जा रहे है। आपको कोई अडचन नही होनी चाहिए। आप उचित ही कर रहे हैं। वह स्त्री फिल्म अभिनेत्री हो गयी तो आप फिल्म-दर्शक हो गए—आप चले जा रहे है। तब फिर सारा जगत् वासना का फैलाव हो जाता है।

महावीर ने इसे जड से काट दिया। महावीर ने कहा कि नही, अगर भगवत्ता की तरफ ले जाना है लोगो को तो भगवान को शून्य करो। वडी अजीब बात है। अगर लोगो को भगवान वनाना है तो यह भगवान की धारणा को अलग करो। वहुत अजीब, क्योकि महावीर ने कहा—भगवान मे ही चाह को रख दोगे पहले, डिजायर को रख दोगे पहले—क्योकि उसके बिना तो जगत का निर्माण न होगा। तो फिर आदमी से चाह को शून्य करने का कारण क्या वनेगा ? तो महावीर ने कहा—जगत् अनिर्मित है, अनक्रिएटेड है। किसी ने वनाया नही हे—'है'। और विज्ञान के लिए भी यही लाजिकल, तर्कयुक्त मालूम पडता हे। क्योकि इस जगत् मे कोई चीज वनायी हुई नही मालूम पडती—है ही। और न इस जगत् मे कोई चीज नष्ट होती मालूम पडती हे, न कोई चीज निर्मित होती मालूम पडती है—सिर्फ रूपान्तरित होती मालूम पडती है।

इसलिए महावीर ने जो परिभापा की है पदार्थ की, वह इस जगत् मे की गयी सर्वाधिक वैज्ञानिक परिभाषा है। अद्भुत शब्द महावीर ने खोजा है—पुद्गल—मैटर के लिए। और ऐसा शब्द जगत् की किसी भाषा मे नही हे। पदार्थ के लिए महावीर ने पदार्थ नही कहा, नया शब्द गढा—पुद्गल। पुद्गल का अर्थ है—जो वनता और मिटता रहता हे और फिर भी है। जो प्रतिपल वन रहा है और मिट रहा है और है। जैसे नदी प्रतिपल भागी जा रही है, चली जा रही है, हुई जा रही है और फिर भी है। फ्लोइंग ऐण्ड इज, वह रही है और है। महावीर ने कहा जो चीज वन रही है, मिट रही हे, न वन कर सृजन होता है उसका, न मिट कर समाप्त होती है—बिकमिंग। पुद्गल का अर्थ है—विकमिंग। नैवर वीइंग ऐण्ड आलवेज विकमिंग। कभी है की भी स्थिति मे नही आती पूरी कि ठहर जाए। बस होती रहती है। तो महावीर ने कहा—पुद्गल वह है जो प्रतिपल जन्म रहा, प्रतिपल मर रहा, फिर भी कभी निर्मित नही होता, फिर भी कभी समाप्त नही होता। चलता रहता है। गत्यात्मक।

पदार्थ—डैट कन्सेप्ट। अंग्रेजी का मैटर भी डैड वर्ड है, मरा हुआ शब्द है। अंग्रेजी के मैटर का कुल गतलब होता है जो नापा जा सके। वह मेजर से वना हुआ शब्द है। सस्कृत या हिन्दी के पदार्थ का अर्थ होता है—जो अर्थवान है, अस्तित्ववान है, है। पुद्गल का अर्थ होता है—जो हो रहा है, इन द प्रोसेस। प्रोसेस का नाम पुद्गल है, क्रिया का नाम पुद्गल है। जैसे आप चल रहे हैं। एक

कदम उठाया, दूसरा रखा। दोनो कभी आप ऊपर नही उठाते। एक उठता है तो दूसरा रख जाता है। इधर एक बिखरता है तो उधर दूसरा तत्काल निर्मित हो जाता है। प्रोसेस चलती रहती है। पदार्थ का एक कदम हमेशा बन रहा है, और एक कदम हमेशा मिट रहा है।

आप उस कुर्सी पर आप बैठे हैं, वह मिट रही है। नहीं तो पचास साल बाद राख कैसे हो जाएगी। जिस शरीर मे आप बैठे है, वह मिट रहा है। लेकिन बन भी रहा है। चौबीस घण्टे आप उसको खाना दे रहे हैं, वायु दे रहे हैं। वह निर्मित हो रहा है। निर्मित होता चला जा रहा है और बिखरता भी चला जा रहा है। लाइफ एण्ड डेथ बोथ साइमल्टेनियस, जीवन और मरण एक साथ दो पैर की तरह चल रहे हैं। महावीर ने कहा—यह जगत् पुद्गल है। इसमे सब चीजें सदा से हैं—बन रही हैं, मिट रही हैं। ट्रासफार्मेशन चलता रहना है। न कोई चीज कभी समाप्त होती है न कभी निर्मित होती है। इसलिए निर्माता का कोई सवाल नहीं है। इसलिए परमात्मा मे वासना की कोई जरूरत नहीं है।

सारे धर्म परमात्मा को जगत् के पहले रखते है। महावीर परमात्मा को जगत् के अन्त मे रखते हैं। इसका फर्क समझ ले। सारे धर्म परमात्मा को कहते हैं—काज, कारण है। महावीर कहते हैं—इफेक्ट, परिणाम। महावीर का अरिहत अन्तिम मजिल है। भगवान तब होता है व्यक्ति जब वह सब पा लिया। पहुच गया वहा जिसके आगे और कोई यात्रा नही। दूसरे धर्मो का भगवान बिगनिंग मे है, दुनिया जब शुरू होती है, वहा। जहा दुनिया समाप्त होती है, महावीर की भगवत्ता की धारणा वहा है। तो वे सब कहते है कि दुनिया को बनाने वाला भगवान है। महावीर कहते हैं—दुनिया को पार कर जाने वाला भगवान है। बन, टू गोज बियाड। महावीर प्रथम नही रखते, अन्तिम रखते हैं। काज नही इफेक्ट कारण नही कार्य।

दुनिया का भगवान बीज की तरह है, महावीर का भगवान फूल की तरह है। दुनिया कहती है—भगवान से सब पैदा होता है। महावीर कहते है—जहा जाकर सब खुल जाता है और प्रगट हो जाता है, खिल जाता है, वहा। तो महावीर के जो अरिहत की, सिद्ध की, भगवान की, भगवत्ता की धारणा है वह चेतना के पूरे खिल जाने की, फ्लावरिंग की है, जहा सब खिल जाता है। इस खिले हुए फूल से जो झरती है सुवास, केवलिपन्नत्तो धम्मो, उसको उन्होने कहा। इस खिले हुए फूल से जो झरती है सुवास, इस खिले हुए फूल से जो आनन्द प्रगट होता है, इस खिले हुए फूल का जो स्वभाव है वह केवली द्वारा प्ररूपित धर्म है। और उसे वे कहते है—वह लोक मे उत्तम है, वह जो फूल की तरह अन्त मे खिलता है—क्लाइमेक्स, शिखर।

शास्त्र मे लिखा हुआ धर्म लोक मे उत्तम है, ऐसा महावीर नही कहते। नही

तो वे कहते—शास्त्र प्ररूपित धर्म लोकोत्तम है। वेद को मानने वाला कहता है वेद मे जो प्ररूपित धर्म है वह लोक मे उत्तम है। वाइविल को मानने वाला कहता है वाइविल मे जो धर्म प्ररूपित है वह उत्तम है। कुरान को मानने वाला कहता है कुरान मे जो धर्म प्ररूपित है वह उत्तम है। गीता को मानने वाला कहता है गीता मे जो धर्म की प्ररूपना हुई है वह उत्तम है। महावीर कहते है—केवलि-पन्नत्तो धम्मो—नही, शास्त्र मे कहा हुआ नही—केवल ज्ञान के क्षण मे जो झरता है, वही, जीवन्त। लिखे हुए का क्या मूल्य है? लिखा हुआ पहले तो वहुत सिकुड जाता है। शब्द मे वाधना पडता है।

जीवत धर्म—अव इसके वहुत अर्थ होगे। लेकिन केवली प्ररूपित जो धर्म है वह शास्त्र मे लिख लिया गया है। तो जैन अव उस शास्त्र को सिर पर ढोए चले जाते है, वैसे ही जैसे कुरान को कोई ढोता है, गीता को कोई ढोता है। यह महावीर के साथ ज्यादती है। ज्यादती इसलिए है कि महावीर ने कभी कहा नही कि शास्त्र मे प्ररूपित धर्म। ऐसा भी नही कहा कि मेरे शास्त्र मे कहा हुआ। लेकिन वडी कठिनाई है। और महावीर ने खुद कोई शास्त्र निर्मित नही किया। महावीर ने कुछ लिखवाया भी नही। महावीर के मरने के सैकडो वर्ष वाद महावीर के वचन लिखे गए। महावीर ने लिखवाया नही, लिखा नही।

और भी कठिन वात है, और वह यह कि महावीर ने कहा नही वह जरा कठिन है। वह जरा कठिन है कि महावीर ने कहा नही। महावीर तो मौन रहे। महावीर तो बोले नही। तो महावीर की जो वाणी है, वह कही हुई नही, सुनी हुई है। महावीर का जो धर्म का प्ररूपण है वह मौन, टैलिपैथिक ट्रासमिशन है। और इसलिए वहुत पुराण जैसी लगती वात, आपसे कहू कथा जैसी, लेकिन जल्दी ही सही, वैज्ञानिक आधार उसको मिलते चले जाते है। महावीर जव बोलते, तो बोलते नही थे। वैठते। उनके अन्तर आकाश मे जरूर ध्वनि गूजती। ओठ का भी उपयोग न करते, कठ का भी उपयोग न करते।

अगर मैसिग, एक साधारण व्यक्ति, जो कोई अरिहत नही है—अगर एक कागज के टुकडे को सिर्फ अन्तर्वाणी के द्वारा कह सकता है—यह टिकिट है। वोला तो नही, कहा तो नही। लेकिन टिकिट कलेक्टर ने तो, चेकर ने तो जाना, सुना कि टिकिट है। अगर एक कोरे कागज पर लाख-लाख रुपया दिए जा सकते है, तो पढा तो गया, लिखा नही गया। ट्रेजरर ने पढा तो कि लाख रुपए देने है। तो महावीर ने टैलिपैथिक कम्युनिकेशन का गहन प्रयोग किया। बोले नही, सुने गए। ही वाज हुई। मौन वैठे, पास लोग वैठे, उन्होने सुना। और इसीलिए, जो जिस भाषा मे समझ सकता था उसने उस भाषा मे सुना। इसमे भी थोडा समझ लेना जरूरी है। क्योकि हम जो भाषा नहीं समझते उसमे कैसे सुनेगे? और जानवर भी इकट्ठे थे, पशु भी इकट्ठे थे और पौधे भी खडे थे, और कथा कहती है—

उन्होने भी सुना ।

तो अगर वैक्स्टर कहता है कि पौधो के भाव है, और वे समझते है आपकी भावनाए । आप जब दुखी होते है—पौधो को प्रेम करने वाला व्यक्ति जब दुखी होता है तब वे दुखी हो जाते है । जब घर मे उत्सव मनाया जाता है तो वे प्रफुल्लित हो जाते है । जब उनके पास खडे होते है तो उनमे आनन्द की धाराए बहती है । जब घर मे कोई मर जाता है तब वे भी मातम मनाते है । इसके जब अब वैज्ञानिक प्रमाण है तब क्या बहुत कठिनाई है कि महावीर के हृदय का सदेश पौधो की स्मृति तक पहुच जाए ।

अभी सारी दुनिया मे जो प्रयोग किए जा रहे है, अनकाशस पर, अचेतन पर, उनसे सिद्ध होता है कि हम अचेतन मे कोई भी भाषा समझ सकते है—कोई भी भाषा ।

जैसे आपको बेहोश किया जाए, हिप्नोटाइज किया जाए गहन । इतना बेहोश किया जाए कि आपको अपना कोई पता न रह जाए तो फिर आपसे किसी भी भाषा मे बोला जाए, आप समझेंगे ।

अभी एक चेक वैज्ञानिक डा० राज डेक इस पर काम करता है—भाषा और अचेतन पर । तो वह एक महिला पर, जो चेक भाषा नही जानती, उसको बेहोश करके बहुत दिन तक, उससे चेक भाषा मे बातें करता था, और वह समझती थी । जब वह बेहोश होती है, उससे वह चेक भाषा मे कहता है—उठ के वह पानी का गिलास ले आओ, तो वह ले आती है । बडी हैरानी की बात है । जब वह होश मे आती, तब उससे कहे तो वह नही सुनती, समझ मे नही आता । उसने उस महिला से पूछा कि बात क्या है ? जब तू बेहोश होती है तब तू पूरा समझती है, जब तू होश मे आती है तब तू कुछ भी नही समझती ।

उस महिला ने कहा—मुझे भी थोडा-थोडा ख्याल रहता है बेहोशी का, कि मैं समझती थी । लेकिन जैसे-जैसे मैं होश मे आती हू तो मुझे सुनाई पडता है, चा चा चा चा, और कुछ समझ मे नही आता । तुम जो बोलते हो, उसमे चा चा चा चा मालूम पडता है, और कुछ नही मालूम पडता । लेकिन बेहोशी मे मुझे भी थोडी स्मृति रहती है कि तुम जो बोलते हो, मैं समझती हू ।

राज डेक का कहना है कि आदमी की भाषा का अध्ययन उसके अचेतन के अध्ययन से यह खबर लाता है कि हम महासागर मे निकले हुए छोटे-छोटे द्वीपो की भाति है । ऊपर से अलग-अलग, नीचे उतर जाए तो जमीन से जुडे हुए । ऊपर हमारी सबकी भाषाए अलग-अलग, जितने गहरे उतर जाए उतनी एक । आदमी ही की नही, और गहरे उतर जाए तो पशु की भी एक । और गहरे उतर जाए तो पशु की ही नही, पौधो की भी एक । और कोई नही कह सकता कि और गहरे उतर जाए तो पत्थर की भी एक । जितने हम अपने नीचे गहरे उतरते है,

उतने हम जुडे हुए हैं—एक महा काटिनेंट से, एक महाद्वीप से जीवन के, और वहा हम समझते है।

तो महावीर का यह जो प्रयोग था—नि शब्द विचार-सचरण का, टैलिपैथी का, यह आने वाले बीस वर्षो मे विज्ञान कहेगा कि पुराण कथा नही है। इस पर काम तेजी से चलता है, और स्पष्ट होती जाती है बहुत-सी अंधेरी गलिया, बहुत से गलिहारे जो साफ नही थे। इसका अर्थ यह हुआ कि अगर हमे किसी व्यक्ति को दूसरी भाषा सिखानी हो तो राज डेक कहता है कि चेतन रूप से सिखाने मे व्यर्थ कठिनाई हम उठाते हैं। इसलिए राज डेक ने एक सस्था खोली है। और एक दूसरा वैज्ञानिक बल्गेरिया मे डा० लौजोनोव। उसने एक इस्टीट्यूट खोली है—लौजोनोव के इस्टीट्यूट का नाम है—इस्टीट्यूट आफ सजैस्टोलाजी। अगर हम उसे ठीक अनुवाद करें तो उसका अर्थ होगा—मन्त्र महाविद्यालय। सजैस्टोलाजी का अर्थ होता है मन्त्र। आप जानते हैं न! सलाह देने वालो को हम मन्त्री कहते हैं। सुझाव देने वाले को मन्त्री कहते है। मन्त्र का अर्थ है सुझाव, सजैशन। लौजोनोव की इस्टीट्यूट सरकार के द्वारा स्थापित है और बल्गेरियन सरकार कम्युनिस्ट है। इसमे तीस वैज्ञानिक लौजोनोव के साथ काम कर रहे हैं।

और लौजोनोव का कहना है कि दो साल का कोर्स हम बीस दिन मे पूरा करवा देते है, कोई भी दो साल का कोर्स। जो भाषा आप दो साल मे सीखेंगे चेतन रूप से, वह लौजोनोव आपको सम्मोहित रेस्ट हालत मे छोडकर बीस दिन मे सिखा देता है। और एक नयी शिक्षा की पद्धति लोजोनोव ने विकसित की है जो कि जल्दी सारी दुनिया को पकड लेगी और वह बिल्कुल उल्टी है जो अभी आप करवा रहे है। और उसके हिसाब से—और मैं मानता हू कि वह ठीक है—मेरे हिसाब से भी, हम जिसको शिक्षा कह रहे हे वह शिक्षा नही है, निपट नासमझी हे।

लौजोनोव ने जो स्कूल खोला है उस स्कूल मे बच्चो को बैठने के लिए आराम कुर्सिया हैं—कुर्सिया नही, आराम कुर्सिया है—जैसा कि हवाई जहाज मे होती है, जिन पर वे आराम से लेट जाते है। डिफ्यूज कर दिया जाता है प्रकाश, जैसा कि हवाई जहाज उडता है, तब कर दिया जाता है। तेज रोशनी नही। और विशेष सगीत कमरे मे बजता रहता है। कोई स्कूल रहा यह! मामला सब खराब हो गया। पूरे वक्त सगीत बजता रहता है। और विद्यार्थियो से कहा जाता है कि आख चाहे आधी बन्द कर लो चाहे पूरी बन्द कर लो, और सगीत पर ध्यान दो—संगीत पर। और शिक्षक पढा रहा है, उस पर ध्यान मत दो। डोंट गिव ऐनी अटेंशन टु द टीचर। शिक्षक पढा रहा है। उस पर भूल कर ध्यान मत देना, उसी से गडबड हो जाती है। तुम तो सगीत सुनते रहना, तुम शिक्षक को सुनना ही मत।

यह तो उल्टा हो गया। क्योंकि शिक्षक, यही तो बेचारा परेशान है कि हमको

सुन नही रहे है तो वह डडा वजा रहा है पूरे वक्त कि हमे सुनो । लडके कही वाहर देख रहे है, कही पक्षियो को सुन रहे है, कही कुछ और कर रहे है, और शिक्षक कह रहा है हमे सुनो । वह तो सारा, तीन हजार साल का शिक्षक और विद्यार्थी का झगडा है जो अव अपनी चरम सीमा पर पहुच गया है कि हमे सुनो। और लोजोनोव कहता है कि इसीलिए तो दो साल लग जाते है सिखाने मे। क्योकि जव कोई व्यक्ति सचेतन रूप से सुनता है, तो उसका ऊपरी मन सुनता है । तो वह कहता है, ऊपरी मन को तो लगा दो सगीत सुनने मे । तव उसका भीतरी मन का द्वार सुनता रहेगा । और दो साल का कोर्स वह वीस दिन मे पूरा कर देता है किसी भी भाषा का । और वीस दिन मे आदमी उतना कुशल हो जाता है दूसरी भाषा बोलने मे, जितना दो साल मे नही होता है ।

वात क्या है ? बात कुल इतनी ही है कि नीचे गहरे मे हमारी वडी क्षमताए छिपी है । आप अपने घर से यहा तक आए है । अगर आप पैदल चलकर आए है तो क्या आप वता सकते है कि रास्ते पर कितने विजली के खमे पडे थे ? आप कहेंगे कि मैं कोई पागल हू ! मैं उनकी कोई गिनती नही करता । लेकिन आपको वेहोश करके पूछा जाए तो आप सख्या वता सकते हैं, ठीक सख्या । आप जव चले आ रहे थे इधर, तव आपका ऊपरी मन तो इधर आने मे लगा था । हार्न वज रहा था, उसमे लगा था । कोई टकरा न जाए, उसमे लगा था । लेकिन आपके नीचे का मन सव कुछ रिकार्ड कर रहा है, रास्ते पर पडे हुए लैम्प पोस्ट भी, लोग निकले वह भी, हार्न वजा वह भी, कार का नम्वर दिखाई पड गया वह भी—वह सव नोट कर रहा है । वह सव आपको याद हो गया है। आपके चेतन को कोई पता नही है । कहना चाहिए आपको कोई पता नही । वह जो पानी के ऊपर निकला हुआ द्वीप, आईलैंड है उसको कुछ पता नही । लेकिन नीचे जो जुडी हुई भूमि का विस्तार है, वहा सव पता है ।

तो महावीर वोले नही चुपचाप बैठे है । और इसीलिए यही कारण है कि महावीर का धर्म वहुत व्यापक नही हो पाया । वहुत लोगो तक नही पहुच पाया । क्योकि महावीर बोलते तो सवकी समझ मे आता । महावीर नही बोले तो उनकी ही समझ मे आया जो उतने गहरे जाने को तैयार थे । इसलिए महावीर का वहुत सैलेक्टिव, वहुत चूजन फ्यू है । जो उस जगत् मे महावीर के वक्त श्रेष्ठतम लोग थे, वे ही महावीर को सुन पाए । वे श्रेष्ठतम चाहे पौधो मे हो और चाहे पशुओ मे और चाहे आदमियो मे । इससे कोई फर्क नही पडता । महावीर को सुनने के पहले वडे प्रशिक्षण से गुजरना पडता था । ध्यान की प्रक्रियाओ से गुजरना पडता, ताकि जव आप महावीर के सामने बैठें तव आपका जो वाचाल मन है, वह जो निरन्तर उपद्रव से ग्रस्त वीमार मन है वह शात हो जाए, और आपकी जो गहन आत्मा है, वह महावीर के सामने आ जाए । सवाद हो सके उस आत्मा से ।

इसलिए महावीर की वाणी को पाच सौ वर्ष तक फिर रिकार्ड नही किया गया। तब तक रिकार्ड नही किया गया, जब तक ऐसे लोग मौजूद थे जो महावीर के शरीर के गिर जाने के बाद भी महावीर से सदेश लेने मे समर्थ थे । जब ऐसे लोग भी समाप्त होने लगे, तब घबराहट फैली, और तब सग्रहीत करने की कोशिश की गयी । इसलिए जैनो का एक वर्ग दिगम्बर महावीर की किसी भी वाणी को आथेटिक नही मानता ।

उसका मानना है कि चूकि वह उन लोगो के द्वारा सग्रहीत की गयी है जो दुविधा मे पड गए थे और जिन्हे शक पैदा हो गया था कि महावीर से अब सम्बन्ध जोडना सम्भव है या नही, इसलिए वह प्रामाणिक नही कही जा सकती । इसलिए दिगम्बर जैनो के पास महावीर का कोई शास्त्र नही है—कोई शास्त्र ही नही है, वे कहते हैं सब खो गया । श्वेताम्बरो के भी पास जो शास्त्र है वह भी पूर्ण नही है । क्योकि जिन्होने सग्रहीत किया उन्होने कहा—हम थोडी-सी बातें भर प्रामाणिक लिख सकते हैं । बाकी और अग खो गए है । उनको जानने वाले अब कोई भी नही हैं इसलिए वह भी अधूरा हे ।

लेकिन महावीर की पूरी वाणी को कभी भी पुन पाया जा सकता है और उसके पाने का ढग यह नही होगा कि महावीर के ऊपर जो किताबे लिखी रखी हैं उनमे खोजा जाए। उसके पुन पाने का ढग यही होगा कि वैसा ग्रुप, वैसा स्कूल, वैसे थोडे-से लोग जो चेतना की उस गहराई तक जा सके जहा से महावीर से आज भी सम्बन्ध जोडा जा सकता हैं । इसलिए महावीर ने कहा—'केवलिपन्नत्तो धम्म' शास्त्र नही । वही धर्म उत्तम है जो तुम केवली से सम्बन्धित होकर जान सको, बीच मे शास्त्र से सम्बन्धित होकर नही । और केवली से कभी भी सम्बन्धित हुआ जा सकता है । लेकिन शास्त्र बाजार मे मिल जाते है । केवली से सम्बन्धित होना हो तो बडी गहरी कीमत चुकानी पडती है । फिर स्वय के भीतर बहुत कुछ रूपातरित करना पडता है। महावीर कहते थे—बिना कीमत चुकाए कुछ भी नही मिलता है। और जितनी बडी चीज पानी हो, उतनी बडी कीमत चुकानी चाहिए । इसलिए आखिरी बात—

जब वे बार-बार कहते हैं कि अरिहत उत्तम हैं, सिद्ध उत्तम हे, साधु उत्तम हैं, केवली-प्ररूपित धर्म उत्तम है, तब वे यह भी कह रहे है कि इतने उत्तम को पाने के लिए तैयारी रखना सब कुछ चुकाने की । क्योकि मूल्य हैं, मुफ्त नही मिल सकेगा । हम सब मुफ्त लेने के आदी हैं । हम कुछ भी चुकाने को तैयार नही हे । सडी-गली चीज को खरीदने के लिए हम सब कुछ चुकाने को तैयार हे । धर्म मुफ्त मिलना चाहिए । असल मे इससे पता चलता है—हम मुफ्त उसी चीज को लेने को तैयार होते हैं जिसको हम लेने को आग्रहशील नही हैं । जिसको हम कहते है कि मुफ्त देते हे तो दे दें वरना क्षमा करें । महावीर कहते हैं—जो इतना उत्तम

है, लोक मे जो सर्वश्रेष्ठ है, उसे चुकाने को सब कुछ खोना पड़ेगा, स्वय को। और जब भी कोई स्वय को खोने को तैयार है तो वह केवली प्ररूपित धर्म से सीधा, डायरेक्ट सम्बन्धित सयुक्त हो जाता है। वही धर्म, जो जानने वाले से सीधा मिलता हो, बिना मध्यस्थ के, वही श्रेष्ठ है।

आज इतना ही।

●

अरिहते सरण पवज्जामि ।
सिद्धे सरण पवज्जामि ।
साहू सरण पवज्जामि ।
केवलिपन्नत्त धम्म सरण पवज्जामि ।

अरिहंत की शरण स्वीकार करता हूं ।
सिद्धों की शरण स्वीकार करता हूं ।
साधुओं की शरण स्वीकार करता हूं ।
केवली दर्शित अर्थात् आत्मज्ञ-भाषित धर्म की शरण स्वीकार करता हूं ।

शरणागति : धर्म का मूल आधार

तीसरा प्रवचन ' दिनाक २० अगस्त, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

कृष्ण ने गीता मे कहा है—'सर्व धर्मान् परित्यज्य, मामेक शरणं व्रज'...अर्जुन, तू सब धर्मों को छोडकर मुझ एक की शरण मे आ।

कृष्ण जिस युग मे बोल रहे थे, वह युग अत्यन्त सरल, निर्दोष, श्रद्धा का युग था। किसी के मन मे ऐसा नही हुआ कि कृष्ण कैसे अहकार की बात कह रहे हैं कि तू सब छोडकर मेरी शरण मे आ। अगर कोई घोषणा अहकारग्रस्त मालूम हो सकती है तो इससे ज्यादा अहकारग्रस्त घोषणा दूसरी मालूम नही होगी। अर्जुन को यह कहना कि छोड दे सब और आ मेरी शरण मे। पर वह युग अत्यन्त श्रद्धा का युग रहा होगा, जब कृष्ण बेझिझक, सरलता से ऐसी बात कह सके और अर्जुन ने सवाल भी न उठाया कि क्या कहते है आप ? आपकी शरण मे और मैं आऊ ? अहकार से भरे हुए मालूम पडते है।

लेकिन बुद्ध और महावीर तक आदमी की चित्त दशा मे बहुत फर्क पडे। इसलिए जहा हिन्दू चिन्तन 'मामेक शरण व्रज' पर केन्द्र मानकर खडा है वहा बुद्ध और महावीर की दृष्टि मे आमूल परिवर्तन करना पडा। महावीर ने नही कहा कि तुम सब छोडकर मेरी शरण मे आ जाओ, न बुद्ध ने कहा। दूसरे छोर से पकडना पडा सूत्र को। तो बुद्ध का सूत्र है, वह साधक की तरफ से है। महावीर का सूत्र है वह भी साधक की तरफ से है, सिद्ध की तरफ से नही। अरिहत की शरण स्वीकार करता हू, सिद्ध की शरण स्वीकार करता हू, साधु की शरण स्वीकार करता हू, केवली प्ररूपित धर्म की शरण स्वीकार करता हू—यह दूसरा छोर है शरण और गति का। दो ही छोर हो सकते है। या तो सिद्ध कहे कि मेरी शरण मे आ जाओ, या साधक कहे कि मैं आपकी शरण मे आता हू।

हिन्दू और जैन विचार मे मौलिक भेद यही है। हिन्दू विचार मे सिद्ध कह रहा

है, आ जाओ मेरी शरण मे, जैन विचार मे साधक कहता है, मैं आपकी शरण मे आता हू। इससे बहुत बातो का पता चलता है। पहली तो यही बात पता चलती है कि कृष्ण जब बोल रहे थे तब बडा श्रद्धा का युग था और जब महावीर बोल रहे है तब बडे तर्क का युग है। महावीर कहे—मेरी शरण आ जाओ, तत्काल लोगो को लगेगा, बडे अहंकार की बात हो रही है।

दूसरे छोर से शुरू करना पडेगा। पर बुद्ध और महावीर बुद्ध के परम्परा मे भी सूत्र है—बुद्ध शरण गच्छामि, सघ शरण गच्छामि, धम्म शरण गच्छामि "बुद्ध की शरण जाता हू, सघ की शरण जाता हू, धर्म की शरण जाता हू। लेकिन महावीर और बुद्ध के सूत्र में भी थोडा-सा फर्क है, वह ख्याल मे लेना जरूरी है। ऊपर से देखें तो दोनों एक से मालूम पडते है—गच्छामि हो कि पवज्जामि हो, शरण जाता हू या शरण स्वीकार करता हू—एक से ही मालूम पडते हैं, पर उनमे भेद है। जब कोई कहता है—बुद्ध शरण गच्छामि. बुद्ध की शरण जाता हू—तो यह शरण जाने की शुरूआत है, पहला कदम है। और जब कोई कहता है—'अरिहत शरण पवज्जामि'—तब यह शरण जाने की अतिम स्थिति है। शरण स्वीकार करता हू। अब इसके आगे और कोई गति नही है। जब कोई कहता है—शरण जाता हू, तब वह पहला कदम उठाता है और जब कोई कहता है—शरण स्वीकार करता हू, तब वह अन्तिम कदम उठाता है। जब कोई कहता है—शरण जाता हू, तो बीच से लौट भी सकता है। और शरण तक न पहुचे, यह भी हो सकता है। यात्रा का आरम्भ है, यात्रा पूरी न हो, यात्रा के बीच मे व्यवधान आ जाए। यात्रा के मध्य मे ही तर्क समझाए और लौटा दे। क्योंकि तर्क शरण जाने के नितान्त विरोध मे है। बुद्धि शरण जाने के नितान्त विरोध मे है। बुद्धि कहती है—तुम! और किसी की शरण! बुद्धि कहती है—सबको अपनी शरण मे ले आओ। तुम और किसी की शरण मे जाओगे! तो अहकार को पीड़ा होती है।

महावीर का सूत्र है—अरिहत की शरण स्वीकार करता हू। इससे लौटना नही हो सकता। यह प्वाइंट आफ नो रिटर्न है। इसके पीछे लौटने का उपाय नही है। यह टोटल, यह समग्र छलाग है। शरण जाता हू, तो अभी काल का व्यवधान होगा, अभी समय लगेगा शरण तक पहुचते-पहुचते। अभी बीच मे समय व्यतीत होगा। और आज जो कहता है—शरण जाता हू, हो सकता है न-मालूम कितने जन्मो के बाद शरण मे पहुंच सके। अपनी-अपनी गति पर निर्भर होगा और अपनी-अपनी मति पर निर्भर होगा। लेकिन पवज्जामि के सूत्र की खूबी यह है कि वह सडन जम्प है। उसमे बीच मे फिर समय का व्यवधान नही है। स्वीकार करता हू। और जिसने शरण स्वीकार की, उसने स्वय को तत्काल अस्वीकार किया। ये दोनो बातें एक साथ नही हो सकती। तो अगर आप अपने को स्वीकार करते हैं तो शरण को स्वीकार न कर सकेंगे। अगर आप शरण को स्वीकार करते हैं, तो

अपने को अस्वीकार कर सकेंगे—करना ही होगा । ये एक ही सिक्के के दो पहलू है ।

शरण की स्वीकृति अहकार की हत्या है। धर्म का जो भी विकास है चेतना मे, वह अहकार के विसर्जन से शुरू होता है । चाहे सिद्ध कहे कि मेरी शरण आ जाओ—जब युग होते है श्रद्धा के तो सिद्ध कहता है मेरी शरण आ जाओ, और जब युग होते है अश्रद्धा के तो फिर साधक को ही कहना पडता है कि मै आपकी शरण स्वीकार करता हू । महावीर बिल्कुल चुप है । वे यह भी नही कहते कि तुममे जो मेरी शरण आए हो वह मैं तुम्हे अगीकार करता हू। वे यह भी नही कहते । क्योकि खतरा तर्क के युग मे यह है कि अगर महावीर इतना भी कहे, सिर भी हिला दें कि हा, स्वीकार करता हू तो वह दूसरे का अहकार फिर खडा हो जाता है। क्या यह अच्छा है ? यह तो अहकार हो गया । महावीर चुप रह जाते हैं । एकतरफा है, साधक की तरफ से ।

निश्चित ही बडी कठिनाई होगी । इसलिए जितना आसान कृष्ण के युग मे सत्य को उपलब्ध कर लेना है, उतना आसान महावीर के युग मे नही रह जाता । और हमारे युग मे तो अत्यधिक कठिनाई खडी हो जाती है । न सिद्ध कह सकता है, मेरी शरण आओ, न साधक कह सकता है कि मैं आपकी शरण आता हू । महावीर चुप रह गए । आज अगर साधक किसी सिद्ध की शरण मे जाए, और सिद्ध इन्कार न करे कि नही-नही, किसी की शरण मे जाने की जरूरत नही, तो साधक समझेगा अच्छा, तो मौन सम्मति का लक्षण है, तो आप शरण मे स्वीकार करते हैं ।

तर्क अब और भी रोगग्रस्त हुआ । आज महावीर अगर चुप भी बैठ जायें और आप जाकर कहे कि अरिहत की शरण जाता हू—और महावीर चुप रहे, तो आप घर लौटकर सोचेंगे कि यह आदमी चुप रह गया । इसका मतलब रास्ता देखता था कि मैं शरण जाऊ, प्रतीक्षा करता था । मौन तो सम्मति का लक्षण है । तो यह आदमी तो अहकारी है तो अरिहत कैसे होगा ? नही, अब एक कदम और नीचे उतरना पडता है और महावीर को कहना पडेगा कि नही, तुम किसी की शरण मत जाओ । महावीर जोर देकर इन्कार करें कि नही, शरण आने की जरूरत नही, तो ही वह साधक समझेगा कि अहकारी नही है । लेकिन उसे पता नही, इस अस्वीकार मे साधक के सब द्वार वन्द हो जाते हैं ।

कृष्णमूर्ति की अपील इस युग मे इसीलिए है । न वे कहते—सब धर्म छोडकर मेरी शरण आओ, न कोई साधक कहे उनसे कि मैं आता हू तुम्हारी शरण । वे इन्कार करते । वे कहते—मेरे पैर मे मत गिर जाना, दूर रहो । और तब अहकारी साधक बडा प्रसन्न होता है । पर उसकी अस्मिता घनी होती है और उसे सहयोग नही पहुंचाया जा सकता । हमारा युग आध्यात्मिक दृष्टि से किसी को सहयोग पहुंचाना हो तो बडी कठिनाई का युग है । बुलाकर सहयोग देना तो कठिन, जैसा

कृष्ण देते हैं, आये हुए को सहयोग देना भी कठिन, जैसा कि महावीर देते हैं। और कुछ आश्चर्य न होगा कि और थोडे दिनो वाद सिद्ध को कहना पडे साधक से, आपकी शरण मे आता हू, स्वीकार करें ! शायद तभी साधक मानें कि ठीक, यह आदमी ठीक है। यह आध्यात्मिक विकृति है । शरण का इतना मूल्य क्यो है—इसे हम दो-तीन दिशाओ से समझने की कोशिश करें।

पहले तो शरीर से ही समझने की कोशिश करें। मैं कल आपको वलोरियन डा० लौजोनोव के इस्टीट्यूट आफ सजॅस्टोलाजी की वात कर रहा था। यह जानकर आपको आश्चर्य अनुभव होगा कि लौजोनोव ने शिक्षा पर यह जो अनूठे प्रयोग किए है, उससे जव पिछले एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे पूछा गया कि तुम्हे इस अद्भुत क्रातिकारी शिक्षा के आयाम का कैसे स्मरण आया, किस दिशा से तुम्हे सकेत मिला ? तो लौजोनोव ने कहा कि मैं योग के—भारतीय योग के शवासन का प्रयोग करता था, उसी से मुझे यह दृष्टि मिली।

शवासन से ! शवासन की खूबी क्या है ? शवासन का अर्थ है—पूर्ण समर्पित शरीर की दशा, जव आपने शरीर को विल्कुल छोड दिया। पूरा रिलेक्स छोड दिया। जैसे ही आप शरीर को पूरा रिलेक्स छोड देते हैं—और शरीर को अगर पूरा रिलेक्स छोडना हो, तो जमीन पर जो भारतीयो की पुरानी पद्धति है साष्टाग प्रणाम की, उस स्थिति मे पडकर ही छोडा जा सकता है। वह शरणागति की स्थिति है शरीर के लिए। अगर आप भूमि पर सीधे पड जायें, सव हाथ पैर ढीले छोडकर सिर रख दें, सारे अग भूमि को छूने लगें तो यह सिर्फ नमस्कार की एक विधि नही है, यह वहुत ही अद्भुत वैज्ञानिक सत्यो से भरा हुआ प्रयोग है।

लौजोनोव कहता है कि रात निद्रा मे हमे जो विश्राम और शक्ति मिलती है, उसका मूल कारण हमारा पृथ्वी के साथ समतुल लेट जाना है। लौजोनोव कहता है—जव हम समतल पृथ्वी के साथ समानान्तर लेट जाते है तो जगत् की शक्तिया हममे सहज ही प्रवेश कर पाती हैं। जव हम खडे होते है तो शरीर ही खडा नही होता, भीतर अहकार भी उसके साथ खडा होता है। जव हम लेट जाते है तो शरीर ही नही लेटता—उसके साथ अहकार भी लेट जाता है। हमारे डिफैंस गिर जाते है, हमारे सुरक्षा के जो आयोजन है, जिनसे हम जगत् को रेजिस्ट कर रहे है, वे गिर जाते है।

चेक यूनिवर्सिटी, प्राग की एक व्यक्ति अनूठे प्रयोगो पर पिछले दस वर्षों से अनुसधान करता है। वह व्यक्ति है—रावर्ट पावलिटा। थके हुए आदमियो को पुनः शक्ति देने के उसने अनूठे प्रयोग किए है। आदमी थका है—आप विल्कुल थके टूटे पडे है तो आपको एक स्वस्थ गाय के नीचे लिटा देता है, जमीन पर। पाच मिनट आपसे कहता है—सव छोडकर पडे रहे और भाव करें कि स्वस्थ गाय से आपके ऊपर शक्ति गिर रही है। पाच मिनट मे यन्त्र वताना शुरू कर देते है कि उस

आदमी की थकान समाप्त हो गयी । वह ताजा होकर गाय के नीचे से बाहर आ गया। पावलिटा से बार-बार पूछा गया कि अगर हम गाय के नीचे बैठें तो ? पावलिटा ने कहा कि जो काम लेटकर क्षण भर मे होगा वह बैठकर घण्टो मे भी नही हो पायेगा । वृक्ष के नीचे लिटा देता है । पावलिटा कहता है—जैसे ही आप लेटते हैं, आपका जो रेजिस्टेंस है आपके चारो ओर, आपने अपने व्यक्तित्व की जो सुरक्षा की दीवारें खडी रखी है, वे गिर जाती है ।

वैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्य की बुद्धि विकसित हुई उसके खडे होने से । यह सच है । सभी पशु पृथ्वी के समानान्तर जीते हे । आदमी भर वर्टिकल खडा हो गया। सभी पशु पृथ्वी की धुरी से समानान्तर होते है । वैज्ञानिक कहते है कि आदमी का पैर पर खडा हो जाना ही उसकी तथाकथित बुद्धि का विकास है । लेकिन साथ ही—यह बुद्धि तो जरूर विकसित हो गयी, लेकिन साथ ही जीवन के अतरतम से कास्मिक, जागतिक शक्तियो से उसके और गहरे सब सम्बन्ध शिथिल और क्षीण हो गए। उसे वापस लेटकर वे सम्बन्ध पुर्नस्थापित करने पडते हे। इसलिए अगर मन्दिरो मे मूर्तियो के सामने, गिरिजाघरो मे, मस्जिदो मे, लोग अगर झुक कर जमीन मे लेटें जा रहे है तो उसका वैज्ञानिक अर्थ है। झुक कर लेटते ही डिफैन्स टूट जाते हैं ।

इसलिए फ्रायड ने जब पहली बार मनोचिकित्सा शुरू की तो उसने अनुभव किया कि अगर बीमार को बैठकर बात की जाये तो बीमारी अपने डिफेंस मेजर नही छोडता । इसलिए फ्रायड ने कोच विकसित की मरीज को एक कोच पर लिटा दिया जाता है । वह डिफेसलेस हो जाता हैं । फिर फ्रायड ने अनुभव किया कि अगर उसके सामने बैठा जाये तो लेटकर भी वह थोडा अकडा रहता हैं । एक पर्दा डालकर फ्रायड पर्दे के पीछे बैठ गया। कोई मौजूद नही रहा, मरीज लेटा हुआ है। वह पाच-सात मिनट मे अपने डिफेंस छोड देता है । वह ऐसी बातें बोलने लगता है जो बैठकर वह कभी नही बोल सकता था। वह अपने ऐसे अपराध स्वीकार करने लगता है जो खडे होकर उसने कभी भी स्वीकार न किए होते ।

अभी अमरीका के कुछ मनोवैज्ञानिक फ्रायड की कोच के खिलाफ आन्दोलन चला रहे है । वे यह आन्दोलन चला रहे है कि यह आदमी को बहुत असहाय अवस्था मे डालने की तरकीब है । उनका कहना ठीक है । आन्दोलन गलत है— उनका कहना ठीक है । आदमी असहाय अवस्था मे पड जाता है निश्चित ही लेट कर। असहाय इसलिए हो जाता हे कि उसने अपने तरफ सुरक्षा का जो इन्तजाम किया था वह गिर जाता हैं ।

पर शरणागत को हमने बहुत मूल्य दिया है । और अगर परमात्मा की तरफ, अरिहत की तरफ, सिद्ध की तरफ, भगवान की तरफ शरणागति हो तो वह तो सदा पर्दे के पीछे ही है एक अर्थ मे। अगर महावीर मौजूद भी हो तो महावीर का शरीर पर्दा बन जाता

है और महावीर की चेतना तो पर्दे के पीछे होती है। और कोई उनके समक्ष जब समर्पण कर देता है तो वह अपने को सब भांति छोड देता है, जैसे कोई नदी की धार मे अपने को छोड दे और धार बहाने लगे—तैर नही, बहाने लगे। शरणागति भाव है, फ्लोटिंग है, और जैसे ही कोई बहता है, वैसे ही चित्त के सब तनाव छूट जाते है।

एक फ्रेंच खोजी, इजिप्त के पिरामिडो मे दस वर्षो तक खोज करता रहा है। उस आदमी का नाम है—बोविस। वह एक वैज्ञानिक और इंजीनियर है। वह यह देखकर बहुत हैरान हुआ कि कभी-कभी पिरामिड मे कोई चूहा भूल से या बिल्ली घुस जाती है और फिर निकल नही पाती—भटक जाती और मर जाती है। पर पिरामिड के भीतर जब भी कोई चूहा या बिल्ली या कोई प्राणी मर जाता है तो सडता नही। सडता नही, उसमे से दुर्गंध नही आती। वह ममीफाइड हो जाता है—सूख जाता है, सडता नही।

यह हैरानी की घटना है और बहुत अद्भुत है। पिरामिड के भीतर इसके होने का कोई कारण नही है। और ऐसे पिरामिड के भीतर जो कि समुद्र के किनारे है, जहा कि ह्यूमिडिटी काफी है, जहा कि कोई भी चीज सडनी ही चाहिए, और जल्दी सड जानी चाहिए, उन पिरामिड के भीतर भी कोई मर जाए तो सडता नही। मास ले जाकर रख दिया जाए तो सूख जाता है, दुर्गन्ध नही देता। मछली डाल दी जाए तो सूख जाती है, सडती नही। तो बहुत चकित हो गया। इसका तो कोई कारण दिखाई नही पडता। बहुत खोज बीन की। आखिर यह ख्याल मे आना शुरू हुआ कि शायद पिरामिड का जो शेप है, वही कुछ कर रहा है।

लेकिन शेप, आकार कुछ कर सकता है! सब खोज के बाद कोई उपाय नही था। दस साल की खोज के बाद बोविस को ख्याल आया कि कही पिरामिड का जो शेप, जो आकृति है, वह तो कुछ नही करती! तो उसने एक छोटा पिरामिड माडल बनाया—छोटा-सा, तीन-चार फीट का बेस लेकर, और उसमे एक मरी हुई बिल्ली को रख दी। वह चकित हुआ, वह ममीफाइड हो गई, वह सडी नही। तब तो एक बहुत नये विज्ञान का जन्म हुआ, और वह नया विज्ञान कहता है—ज्यामिट्री की जो आकृतिया है उनका जीवन ऊर्जाओ से बहुत सम्बन्ध है। और अब बोविस की सलाह पर यह कोशिश की जा रही है कि सारी दुनिया के अस्पताल पिरामिड की शक्ल मे बनाए जाए। उनमे मरीज जल्दी स्वस्थ होगा।

आपने सर्कस के जोकर को, हसोडे को टोपी लगाए देखी है, वह फूल्स कैप कहलाती है। उसी की वजह से कागज—जितने कागज से वह टोपी बनती है वह फूल्स कैप कहलाती है। लेकिन बोविस का कहना है कि कभी दुनिया के बुद्धिमान आदमी वैसी टोपी लगाते थे। वह वाइज कैप, क्योकि वह टोपी पिरामिड के आकार की है। और अभी बोविस ने प्रयोग किए है, फूल्स कैप के ऊपर। और

उसका कहना है कि जिन लोगो को भी सिर दर्द होता है, वे पिरामिड के आकार की टोपी लगाए, तत्क्षण उनका सिर दर्द दूर हो सकता है। जिनको भी मानसिक विकार है वे पिरामिड के आकार की टोपी लगाए, उनके मानसिक विकार दूर हो सकते है। अनेक चिकित्सालयो मे जहा मानसिक चिकित्सा की जाती है बोविस की टोपी का प्रयोग किया जा रहा है, और प्रमाणित हो रहा है कि वह ठीक कहता है।

क्या टोपी के भीतर का आकार, आकृति इतना भेद ला दे सकती है ! अगर बाह्य आकृतिया इतना भेद ला सकती हैं, तो आन्तरिक आकृतियो मे कितना भेद पड सकेगा, वह मै आपसे कहना चाहता हू। शरणागति आन्तरिक आकृति को बदलने की चेष्टा है, इनर ज्यामेट्रिक। जब आप खडे होते है तो आपके भीतर की चित्त-आकृति और होती है, और जब आप पृथ्वी पर शरण मे लेट जाते हैं तो आपके भीतर की चित्त-आकृति और होती है। चित्त मे भी ज्यामेट्रिकल फिगर्स होते हैं। चित्त की आकृतियो मे दो विशेष आकृतिया है, आपके खडे होने का ख्याल जमीन से नब्बे का कोण बनाता है। और जब आप जमीन पर लेट जाते है तो आप जमीन से कोई कोण नही बनाते, पैरेलल, समानातर हो जाते है। अगर कोई परिपूर्ण भाव से कह सके कि मैं अरिहंत की शरण आता हू, सिद्ध की शरण आता हू, धर्म की शरण आता हू, तो यह भाव उसकी आन्तरिक आकृति को बदल देता हैं। और आन्तरिक आकृति बदलते ही, आपके जीवन मे रूपातरण शुरू हो जाते हैं। आपके अन्तर मे आकृतिया है। आपकी चेतना भी रूप लेती है। और आप जिस तरह का भाव करते है, चेतना उसी तरह का रूप लेती है।

चार साल पहले, सारे पश्चिम के वैज्ञानिक एक घटना से जितने धक्का खाए, उतना शायद पिछले दो सौ वर्षो मे किसी घटना से नही खाए। विनित्सी दोजोनोव नाम का एक चेक किसान जमीन से चार फीट ऊपर उठ जाता है और दस मिनट तक जमीन से चार फीट ऊपर, ग्रेवीटेशन के पार, गुरुत्वाकर्षण के पार दस मिनट तक रुका रह जाता है। सैकडो वैज्ञानिको के समक्ष अनेको बार यह प्रयोग विनित्सी कर चुका है। सब तरह की जाच-पडताल कर ली गयी है। कोई धोखा नही है, कोई तरकीब नही है।

विनित्सी से पूछा जाता है कि तेरे इस उठने का राज क्या है, तो वह दो बाते कहता है। वह कहता है—एक राज तो मेरा समर्पण भाव, कि मैं परमात्मा को कहता हू कि मैं तेरे हाथ मे अपने को सौपता हू। तेरी शरण आता हू। मैं अपनी ताकत से ऊपर नही उठता, उसकी ताकत से ऊपर उठता हू। जब तक मैं रहता हू, तब तक मैं ऊपर नही उठ पाता।

दो-तीन बार उसके प्रयोग असफल भी गए। पसीना-पसीना हो गया। सैकड़ो लोग देखने आए हैं दूर-दूर से, और वह ऊपर नही उठ पा रहा है। आखिर मे

उसने कहा कि क्षमा करें। लोगो ने कहा—क्यो ऊपर नही उठ पा रहे हो ? उसने कहा—नही उठ पा रहा इसलिए कि मैं अपने को भूल ही नही पा रहा हू। और जब तक मुझे मेरा ख्याल जरा-सा भी बना रहे तब तक ग्रेवीटेशन काम करता है, तब तक जमीन मुझे नीचे खीचे रहती है। जब मैं अपने को भूल जाता हू, मुझे याद ही नही रहता कि मैं हू, ऐसा ही याद रह जाता है कि परमात्मा है—तब तत्काल मैं ऊपर उठ जाता हू।

- शरणागति का अर्थ ही है समर्पण। क्या यह विनिती जो कह रहा है, क्या परमात्मा पर छोड देने पर जीवन के साधारण नियम भी अपना काम करना छोड देते हैं ? जमीन अपनी कशिश छोड देती है ! अगर जमीन अपनी कशिश छोड देती है तो क्या आश्चर्य होगा कि जो व्यक्ति अरिहत की शरण जाए, सेक्स की कशिश उसके भीतर छूट जाए ! जीवन का सामान्य नियम छूट जाए ! शरीर की जो माग है वह छूट जाए ! क्या यह हो सकता है शरीर भोजन मागना बन्द कर दे ! क्या यह हो सकता है कि शरीर बिना भोजन के, और वर्षो रह जाए ! अगर जमीन कशिश छोड सकती है तो कोई भी तो कारण नही। प्रकृति का अगर एक नियम भी टूट जाता है तो सब नियम टूट सकते है।

अब विनिती दूसरी बात यह कहता है कि जब मै ऊपर उठ जाता हू तब एक बात भर असम्भव है ऊपर उठ जाने के बाद—जब तक मैं नीचे न आ जाऊ, मेरे शरीर की जो आकृति होती है उसमे मैं जरा भी फर्क नही कर सकता। अगर मेरा हाथ घुटने पर रखा है, तो मैं उसे हिला नही सकता, उठा नही सकता। मेरा सिर जैसा है फिर उसको मैं आडा-तिरछा नही कर सकता। मेरा शरीर उस आकृति मे बिल्कुल बध जाता है। और न केवल मेरा शरीर, बल्कि मेरे भीतर चेतना भी उसी आकृति मे बध जाती है।

आपको ख्याल मे नही होगा—क्योंकि हमारे पास ख्याल जैसी चीज ही नही बची है। आपके विचार मे भी नही आया होगा कि सिद्धासन, पिरामिड की आकृति पैदा करना है शरीर मे। बुद्ध की, महावीर की सारी मूर्तिया जिस आसन मे है, वह पिरामिडिकल है। जमीन पर बेस बडी हो जाती है दोनो पैर की और ऊपर तक छोटा होता जाता है, सिर पर शिखर हो जाता है। एक ट्राएगल बन जाता है उस अवस्था मे ! उस आसन को सिद्धासन कहा है। क्यो ? क्योंकि उस आसन मे सरलता से प्रकृति के नियम अपना काम छोड देते है और प्रकृति के ऊपर जो परमात्मा के गहन, सूक्ष्म नियम है, वह काम करना शुरू कर देते है। यह आकृति महत्त्वपूर्ण है। विनिती कहता है—जमीन से उठ जाने के बाद फिर मैं आकृति नही बदल सकता, कोई उपाय नही है। मेरा कोई वश नही रह जाता। जमीन पर लौटकर ही आकृति बदल सकता हू।

यह शरणागति की अपनी आकृति है, अहकार की अपनी आकृति है। अहकार

को आप जमीन पर लेटा हुआ सोच सकते है ? कल्पना भी नही कर सकते । अहकार को सदा खडा हुआ ही सोच सकते है। बैठा हुआ अहकार, सोया हुआ अहकार कोई अर्थ नही रखता । अहकार सदा खडा हुआ होता है । तो शरण के भाव को आप खडा हुआ सोच सकते है ? शरण का भाव लेट जाने का भाव है। किसी विराटतर शक्ति के समक्ष अपने को छोड देने का भाव है। मै नही तू—वह भावना उसमे गहरी है ।

मैंने आपसे कहा कि प्रकृति के नियम काम करना छोड देते है, अगर हम परमात्मा के नियम मे अपने को समाविष्ट करने मे समर्थ हो जाए। इस सम्बन्ध मे कुछ बातें कहनी जरूरी है ।

महावीर के सम्बन्ध मे कहा जाता है—पच्चीस सौ साल मे महावीर के पीछे चलने वाला कोई भी व्यक्ति नही समझा पाया कि इसका राज क्या है। महावीर ने बारह वर्षो मे केवल ३६५ दिन भोजन किया । इसका अर्थ हुआ कि ग्यारह वर्ष भोजन नही किया । कभी तीन महीने बाद एक दिन किया, कभी महीने बाद एक दिन किया । बारह वर्ष के लम्बे समय मे, सब मिलाकर ३६५ दिन, एक वर्ष भोजन किया । अनुपात अगर ले तो बारह दिन मे एक दिन भोजन किया और ग्यारह दिन भूखे रहे । लेकिन महावीर से ज्यादा स्वस्थ शरीर खोजना मुश्किल है, शक्तिशाली शरीर खोजना मुश्किल है। बुद्ध या क्राइस्ट या कृष्ण या राम, सारे स्वास्थ्य की दृष्टि से महावीर के सामने कोई भी नही टिकते । हैरानी की बात है ! बहुत हैरानी की बात है ! और महावीर शरीर के साथ जैसे-जैसे नियम बाह्य काम कर रहे है, उसका कोई हिसाब लगाना मुश्किल है। बारह साल तक यह आदमी तीन सौ पैंसठ दिन भोजन करता है। इसके शरीर को तो गिर जाना चाहिए कभी का । लेकिन क्या हुआ है कि शरीर गिरता नही ।

मैंने अभी नाम लिया है—राबर्ट पावलिटा का कि इसकी प्रयोगशाला मे बहुत अनूठे प्रयोग किए जा रहे हैं। उनमे एक प्रयोग भोजन के बाहर सम्मोहन के द्वारा हो जाने का प्रयोग है। जो व्यक्ति इस प्रयोगशाला मे काम कर रहा है उसने चकित कर दिया है । पावलिटा की प्रयोगशाला मे कुछ लोगो को दस-दस साल के लिए सम्मोहित किया गया । वह दस साल तक सम्मोहन मे रहेंगे—उठेंगे, बैठेंगे, काम करेंगे, खाएगे, पिएगे, लेकिन उनका सम्मोहन नही तोडा जाएगा । वह गहरी सम्मोहन की अवस्था बनी रहेगी । और कुछ लोगो ने तो अपना पूरा जीवन सम्मोहन के लिए दिया है जो पूरे जीवन के लिए सम्मोहित किए गए है, उनका सम्मोहन जीवन भर नहीं तोडा जाएगा ।

उनमे एक व्यक्ति है बरफिलाव । उसको तीन सप्ताह के लिए पिछले वर्ष सम्मोहित किया गया और तीन सप्ताह पूरे समय उसे बेहोश, सम्मोहित रखा

गया। और उसे तीन सप्ताह मे वार-वार सम्मोहन मे झूठा भोजन दिया गया। जैसे उसे वेहोशी मे कहा गया कि तुझे एक वगीचे मे ले जाया जा रहा है। देख कितने सुगन्धित फूल है और कितने फल लगे हैं। सुगन्ध आ रही है। उस व्यक्ति ने जोर से श्वास खीची और कहा—अद्‌भुत सुगन्ध है। प्रतीत होता है सेव पक गए। पावलिटा ने उन झूठे, काल्पनिक, फैंटेसी के वगीचे मे फल तोडे; उस आदमी को दिए और कहा कि लो वहुत स्वादिष्ट है। उस आदमी ने शून्य मे शून्य से लिए गए शून्य सेवो को खाया। कुछ था नही वहा। स्वाद लिया, आनन्दित हुआ।

पन्द्रह दिन तक उसे इसी तरह का भोजन दिया गया—पानी भी नही, भोजन भी नही—झूठा पानी कहे, झूठा भोजन कहे। दस डाक्टर उसका अध्ययन करते थे। उन्होने कहा है—रोज उसका शरीर और भी स्वस्थ होता चला गया। उसको जो शारीरिक तकलीफें थी वे पाच दिन के वाद विलीन हो गयी। उसका शरीर अपने मैक्जिमम स्वास्थ्य की हालत मे आ गया, सातवें दिन के वाद। शरीर की सामान्य क्रियाए वन्द हो गयी। पेशाव या पाखाना, मल-मूत्र विसर्जन सव विदा हो गया। क्योकि उसके शरीर मे कुछ जा ही नही रहा है। तीन सप्ताह के वाद जो सवसे वडे चमत्कार की वात थी, वह यह कि वह परिपूर्ण स्वस्थ, अपनी वेहोशी के वाहर आया। वडे आश्चर्य की—जो आप कल्पना भी नही कर सकते, वह यह कि उसका वजन वढ गया।

यह असम्भव है। जो वैज्ञानिक वहा अध्ययन कर रहा था—डा० रेजलिव, उसने वक्तव्य दिया है—दिस इस साइंटिफिकली इम्पासिवल। पर उसने कहा—इम्पासिवल हो या न हो, असम्भव हो या न हो—लेकिन यह हुआ। मैं मौजूद था। और दस रात और दस दिन पूरे वक्त पहरा था कि उस आदमी को कुछ खिला न दिया जाए कोई तरकीव से, कोई इजेक्शन न लगा दिया जाए, कोई दवा न डाल दी जाए कुछ भी उसके शरीर मे नही डाला गया। वजन वढ गया। तो रेजलिव उस पर साल भर से काम कर रहा है और रेजलिव का कहना है कि यह मानना पडेगा कि देअर इज समथिंग लाइक ऐन अननोन एक्स-फोर्स। कोई एक शक्ति है अज्ञात एक्स नाम की, जो हमारी वैज्ञानिक रूप से जानी गयी किन्ही शक्तियो मे समाविष्ट नही होती—वही काम कर रही है। उसे हम भारत मे प्राण कहते रहे हैं।

इस प्रयोग के बाद महावीर को समझना आसान हो जाएगा। और इसलिए मैं कहता हू कि जिन लोगो को भी उपवास करना हो वे तथाकथित जैन साधुओ को सुन समझ कर उपवास करने के पागलपन मे न पडे। उन्हे कुछ भी पता नही है। वे सिर्फ भूखा मरवा रहे है। अनशन को उपवास कह रहे हैं। उपवास की तो पूरी, और ही वैज्ञानिक प्रक्रिया है। और अगर उस भाति प्रयोग किया जाए तो वजन

नही गिरेगा, वजन बढ भी सकता है।

पर महावीर का वह सूत्र खो गया। सम्भव हे, रेजलिव उस सूत्र को चेकोस्लोवाकिया मे फिर से पुन. पैदा करेगा, कर लेगा। यहा भी हो सकता है—लेकिन हम अभागे लोग है। हम व्यर्थ की बातो मे और विवादो मे इतना समय को नष्ट करते है, और करवाते है कि सार्थक को करने के लिए समय और सुविधा भी नही बचती। और हम ऐसी ही मूढताओ मे लीन होते है, जिन्होने विद्वता का आवरण ओढ रखा है। और हम बधी हुई अधी गलियो मे भटकते रहते है जहा रोशनी की कोई किरण भी नही है।

यह प्रकृति के नियम के बाहर जाने की महावीर की तरकीब क्या होगी ? क्योकि महावीर तो सम्मोहित या बेहोश नही थे। यह पावलिटा और रेजलिव का जो प्रयोग है, यह तो एक बेहोश और सम्मोहित आदमी पर है। महावीर तो पूर्ण जाग्रत पुरुष थे, वह तो बेहोश नही थे। वह तो उन-उन जाग्रत लोगो मे से थे जो कि निद्रा मे भी जाग्रत रहते, जो कि नीद मे भी सोते नही। जिन्हे नीद मे भी पूरा होश रहता है कि यह रही नीद। नीद भी जिनके आस पास ही होती है—अराउड द कार्नर—कभी भीतर नही होती। वह उसे जाचते है, जानते है कि यही रही नीद और · और वह सदा बीच मे जागे हुए होते है।

तो महावीर ने कैसे किया होगा ? फिर महावीर का सूत्र क्या है ? असल मे सम्मोहन मे और महावीर के सूत्र मे एक आन्तरिक सम्बन्ध है। वह ख्याल मे आ जाए। सम्मोहित व्यक्ति बेहोशी मे विवश होकर समर्पित हो जाता है। उसका अहकार खो जाता हे। और तो कुछ फर्क नही है। अपने-आप जानकर वह नही खोता, इसलिए उसे बेहोश करना पडता है। बेहोशी मे खो जाता है। महावीर जानकर उस अस्मिता को, उस अहकार को खो देते है और समर्पित हो जाते है। अगर आप होशपूर्वक भी, जागे हुए भी समर्पित हो सके, कह सकें—अरिहत शरण पवज्जामि, तो आप उसी रहस्य लोक मे प्रवेश कर जाते है जहा रेजलिव और पावलिटा का प्रयोग करता है। पर केवल बेहोशी मे प्रवेश कर पाते हे। होश मे आने पर तो उस आदमी को भी भरोसा नही आया कि यह हो सकता है। उसने कहा—कुछ न कुछ गडबड़ हुई होगी। मै नही मान सकता। होश मे आने के बाद तो वह एक दिन बिना भोजन के न रह सका। उसने कहा कि मर जाऊगा। अहकार वापस आ गया। अहकार अपने सुरक्षा-आयोजन को लेकर फिर खडा हो गया। उस आदमी को समझा रहे है डाक्टर कि नही मरेगा, क्योकि इक्कीस दिन तो हम देख चुके कि तेरा स्वास्थ्य और बढा है। पर उस आदमी ने कहा—मुझे तो कुछ पता नही। मुझे भोजन दें। भय लौट आया।

ध्यान रहे, मनुष्य के चित्त मे जब तक अहकार है, तब तक भय होता है। भय और अहकार एक ही ऊर्जा के नाम है। तो जितना भयभीत आदमी, उतना

अहकारी। जितना अहकारी, उतना भयभीत। आप सोचते होगे कि अहंकारी बहुत निर्भय होता है, तो आप बहुत गलती मे है। अहकारी अत्यन्त भयातुर होता है। यद्यपि अपने भय को प्रकट न होने देने के लिए वह निर्भयता के कवच ओढे रहता है। तलवारे लिए रहता है हाथ मे। फिर भी सभल के रहना। महावीर कहते है—अभय तो वही होता जो अहकारी नही होता। क्योकि फिर भय के लिए कोई कारण नही रहा। भयभीत होने वाला भी नही रहा। इसलिए महावीर कहते है कि जो निर्भय अपने को दिखा रहा है, वह तो भयभीत है ही। अभय अभय का अर्थ ? वही हो सकता है अभय, जो समर्पित, शरणगत, जिसने छोडा अपने को। अव कोई भय का कारण न रहा।

यह सूत्र शरणागति का है। इस सूत्र के साथ नमोकार पूरा होता है। नमस्कार से शुरू होकर शरणागति पर पूरा होता है। और इस अर्थ मे नमोकार पूरे धर्म की यात्रा वन जाता है। उस छोटे से सूत्र मे पहले से लेकर आखिरी कदम तक सव छोड दे कही किसी चरण मे छोड दें। यह वात प्रयोजनहीन है—कहा छोड दें। महत्वपूर्ण यही है कि छोड दें।

तो शरणागति का पहला तो सम्बन्ध है—आन्तरिक ज्यामिति से कि वह आपके भीतर की चेतना की आकृति बदलती है। दूसरा सम्बन्ध है—आपके प्रकृति के साधारण नियमो के बाहर ले जाती है। किसी गहन अर्थ मे आप दिव्य हो जाते हैं—शरण जाते ही। आप 'ट्रान्सैंण्ड' कर जाते है, अतिक्रमण कर जाते हैं—साधारण तथाकथित नियमो का—जो हमे बाधे हुए है। और तीसरी वात—शरणागति आपके जीवन द्वारो को परम ऊर्जा की तरफ खोल देती है जैसे कि कोई अपनी आख को सूरज की तरफ उठा ले।

सूरज की तरफ पीठ करने की भी हमे स्वतन्त्रता है। सूरज की तरफ पीठ करके भी हम खडे हो सकते है। सूरज की तरफ मुह करके भी आख वन्द रख सकते है। सूरज का अनन्त प्रकाश वरसता रहेगा और हम वचित रह जाएगे। लेकिन एक आदमी सूरज की तरफ घूम जाता है, जैसे कि सूरजमुखी का फूल घूम गया हो। आख खोल लेता है, द्वार खुले छोड देता हैं। सूरज का प्रकाश उसके रोए-रोए, रध्र-रध्र में पहुच जाता है। उसके हृदय के अधकारपूर्ण कक्षो तक भी प्रकाश की खवर पहुच जाती है। वह नया और ताजा, पुनरुज्जीवित हो जाता हैं। ठीक ऐसे ही विश्व-ऊर्जा के स्रोत है और उन विश्व-ऊर्जा की स्रोतो की तरफ स्वय को खोलना हो, तो शरण मे जाने के अतिरिक्त और कोई उपाय नही है।

इसलिए अहकारी व्यक्ति दीन से दीन व्यक्ति है, जिसने अपने को समस्त स्रोतो से तोड लिया ह। जो सिर्फ अपने पर ही भरोसा कर रहा है। वह ऐसा फूल है जिसने जडों मे अपने सम्बन्ध त्याग दिए। और जिसने सूरज की तरफ मुह फेरने से अकड दिखायी। वर्षा आती है तो अपनी पखुडिया वन्द कर लेता है। सडेगा,

उसका जीवन सिर्फ सडने का एक क्रम होगा। उसका जीवन मरने की एक प्रक्रिया होगी। उसका जीवन परम जीवन का मार्ग नही बनेगा। लेकिन फूल पाता है रस—जडो से, सूर्यों से, चाद-तारो से। अगर फूल समर्पित है तो प्रफुल्लित हो आता है। सव द्वार तोड कर रोशनी, प्रकाश, जीवन मिलता है।

शरणागति का तीसरा और गहनतम जो रूप है वह—प्रकाश, जीवन-ऊर्जा के जो परम स्रोत हैं, जो इनर्जी सोर्सेज है—उनकी तरफ अपने को खोलना है।

इस पावलिटा का मैंने नाम लिया, इसके नाम से एक यन्त्र वैज्ञानिक जगत् मे प्रसिद्ध है। वह कहलाता है पावलिटा जेनरेटर। वडे छोटे-छोटे उसने यन्त्र बनाए है। वहुत सवेदनशील पदार्थों से वहुत छोटी-छोटी चीजे बनायी है, और अभूतपूर्व काम उन यन्त्रो से पावलिटा कर रहा है। वह उन यन्त्रो पर कहता है कि आप सिर्फ अपनी आख गडा कर खडे हो जाए, पाच क्षण के लिए—कुछ न करें, सिर्फ आख गडा कर उन यन्त्रो के सामने खडे हो जाए। वह यन्त्र आपकी शक्ति को सगृहीत कर लेगा और तत्काल उस शक्ति का उपयोग किया जा सकता है। और जो काम आपका मन कर सकता था, बहुत दूर तक वही काम अव वह यन्त्र कर सकता है। पाच मिनट पहले उस यन्त्र को आप हाथ मे उठाते तो वह मुर्दा था। पाच मिनट वाद आप उसको हाथ मे उठाए तो आपके हाथ मे उस शक्ति का अनुभव होगा। पाच मिनट पहले आप जिसे प्रेम करते हैं, अगर आपने वह यन्त्र उसके हाथ मे दिया होता तो वह कहता ठीक है। यह व्यक्ति कहता या वह स्त्री कहती कि ठीक है। लेकिन पाच मिनट उसे आप गौर से देख ले और आपकी ध्यान ऊर्जा उससे सयुक्त हो जाए तो आप उस यन्त्र को अपने प्रेमी के हाथ मे दे दें। वह फौरन पहचानेगा कि आपकी प्रतिध्वनि उस यन्त्र से आ रही है। अगर क्रोध और घृणा से भरा हुआ व्यक्ति उस यन्त्र को देख ले तो आप उसको हाथ से अलग करना चाहेगे। अगर प्रेम और दया और सहानुभूति से भरा व्यक्ति देख ले तो आप उसे सभालकर रखना चाहेंगे।

पावलिटा ने तो एक वहुत अद्भुत घोषणा की है। उसने कहा—वहुत शीघ्र भीड को छाटने के लिए गोली और लाठी चलाने की जरूरत न होगी। हम ऐसे यन्त्र वना सकेंगे जो पन्द्रह मिनट मे वहा खड़े कर दिए जाए तो लोग भाग जाएगे। इतनी घृणा न विकीर्णित की जा सकेगी। उसने प्रयोग वताए है, लोगो को करके, और वे सफल हुए हैं। अव उसने नवीनतम जो यन्त्र बनाया है वह ऐसा है कि आपको देखने की भी जरूरत नही है। आप सिर्फ एक विशेष सीमा के भीतर उसके पास से गुजर जाए, वह आपको पकड लेगा।

मैंने कल कहा था कि स्टैलिन ने एक आदमी की हत्या करवा दी थी—रार्मं आटोविन झीलिग थी, १९३७ मे। वह आदमी १९३७ मे यही काम कर रहा था, जो पावलिटा अव कर पाया है। वीस साल, तीस साल व्यर्थ सिद्ध गयी

बात। क्षीलिंग अद्‌भुत व्यक्ति था। वह अण्डे को हाथ मे रखकर बता सकता था कि इस अण्डे से मुर्गी पैदा होगी या मुर्गा, और कभी गलती नही हुई। पर यह तो बडी बात नही, क्योकि अण्डे के आखिर भीतर जो प्राण है, स्त्री और पुरुष की विद्युत मे फर्क है, उनके विद्युत कपन मे फर्क है। वही उनके बीच आकर्षण है। वह निगेटिव-पाजिटिव का फर्क है। तो अण्डे के ऊपर अगर सवेदनशील व्यक्ति हाथ रखे तो जो ऊर्जा-कण निकलते रहते है, वह बता सकता है।

लेकिन क्षीलिंग—चित्र को ढक दें आप—वह चित्र, ढके हुए चित्र पर हाथ रखकर बता सकता था कि चित्र नीचे स्त्री का है कि पुरुष का। क्षीलिंग का कहना था कि जिसका चित्र लिया गया है, उसके विद्युतकण उस चित्र मे समाविष्ट हो जाते हैं, जितनी देर लिया जाता है। और इसलिए समाविष्ट हो जाते हैं कि जब किसी का चित्र लिया जाता है, तो कैमरा-काशस हो जाता, उसका ध्यान केंद्रित हो जाता और धारा प्रवाहित हो जाती। वह, जो पावलिटा कह रहा है कि एक तरफ देखने से आपकी ऊर्जा चली जाती है, आपके चित्र मे भी आपकी ऊर्जा चली जाती है।

पर यह तो कुछ भी नही हे। क्षीलिंग की सबसे अद्‌भुत बात जो थी, वह यह है कि किसी आइने पर हाथ रखकर वह बता सकता था कि आखिरी जो व्यक्ति, इस आइनें के सामने से निकला, वह स्त्री थी या पुरुष। क्योकि आइने के सामने भी आप मिरर-काशस हो जाते है। जब आप आइने के सामने होते है तब जितने एकाग्र होते है, शायद और कही नही होते। आपके बाथरूम मे लगा आइना आपके सम्बन्ध मे किसी दिन इतनी बातें कह सकेगा कि आपको अपना आइना बचाना पडेगा कि कोई ले न जाए उठाकर। वे सब रहस्य खुल जाएगे, जो आपने किसी को नही बताए। जो सिर्फ आपका बाथरूम और आपके बाथरूम का आइना जानता है। क्योकि जितने ध्यानमग्न होकर आप आइने को देखते है, शायद किसी चीज को नही देखते। आपकी ऊर्जा प्रविष्ट हो गयी हे।

अगर आपसे ऊर्जा प्रविष्ट होती है ध्यानमग्न होने से, तो क्या इससे विपरीत नही हो सकता ? वह विपरीत ही शरणागति का राज है। कि अगर आप ध्यान-मग्न होते है, बहुत छोटे-से ऊर्जा के केन्द्र है आप। और अगर आपसे भी ऊर्जा प्रभावित हो जाती है, तो क्या परम-शक्ति के प्रति आप समर्पित होकर, उसकी ऊर्जा को अपने मे समाविष्ट नही कर सकते ? ऊर्जा के प्रवाह हमेशा दोनो तरफ होते हैं। जो ऊर्जा आपसे बह सकती है, वह आपकी तरफ भी बह सकती है। और अगर गगाए सागर की तरफ बहती हैं तो क्या सागर गगा की तरफ नही बह सकता ? यह शरणागति, सागर को गगा की गगोत्री की तरफ बहाने की प्रक्रिया है।

हम तो सब बह-बहकर सागर मे गिर ही जाते है, लड-लडकर बचाने की

कोशिश मे है। जीसस ने कहा है—'जो भी अपने को बचाएगा, वह मिट जाएगा। और धन्य है वे, जो अपने को मिटा देते है, क्योकि उनको मिटाने की फिर किसी की सामर्थ्य नही है।' गगा तो लडती होगी, झगडती होगी, सागर मे गिरने के पहले-सभी जगह से और लडते है। भयभीत होती होगी, मिटी जाती होगी। मौत से हमारा डर यही तो है। मौत का मतलब, सागर के किनारे पहुंच गयी गगा। मरे, वचा रहे हैं। लडते-लडते गिर जाते हैं। तब गिरने का जो मजा था, उससे भी चूक जाते हैं और पीडा भी पाते हैं।

शरणागति कहती है, लडो ही मत। गिर ही जाओ, और तुम पाओगे कि जिसकी शरण मे तुम गिर गए हो, उसको तुमने कुछ नही खोया—पाया। सागर आया गगोत्री की तरफ। वह जो अमृत का स्रोत है, चारो तरफ, जीवन का रहस्य स्रोत। ये तो प्रतीक शब्द है—अरिहत, सिद्ध, साधु। ये हमारे पास आकृतिया है, उस अनन्त स्रोत की। ये हमारे निकट, इन्हे हम पहचान सकें। परमात्मा निराकार मे खडा है, उसे पहचानना बहुत मुश्किल होगा। जो पहचान सके, धन्यभागी है।

लेकिन आकार मे भी परमात्मा की छवि बहुत बार दिखाई पडती है—कभी किसी महावीर मे, कभी किसी बुद्ध मे, कभी किसी क्राइस्ट मे, कभी उस परमात्मा की, उस निराकार की छवि दिखाई पडती है। लेकिन हम उस निराकार को तब भी चूकते है, क्योकि हम आकृति मे कोई भूल निकाल लेते हैं। कहते है कि जीसस की नाक थोडी कम लम्बी हैं। यह परमात्मा की नही हो सकती। या महावीर को कहो, बीमारी पकडती है, ये परमात्मा कैसे हो सकते है ? कि वुद्ध भी तो मर जाते हैं, ये परमात्मा कैसे हो सकते हे ? आपको ख्याल नही कि यह आप आकृति की भूलें निकाल रहे हैं और आकृति के बीच जो मौजूद था, उससे चूके जा रहे है।

आप वैसे आदमी है, जो कि दीये की मिट्टी की भूले निकाल रहे है, तेल की भूले निकाल रहे है और वह जो ज्योति चमक रही है, उससे चूके जा रहे है। होगी दीये मे भूल। नही बना होगा पूरा सुघड। पर प्रयोजन क्या है ? तेल भर लेता है, काफी सुघड है। वह जो ज्योति बीच मे जल रही है, वह जो निराकार ज्योति हैं, स्रोत रहित—उसे तो देखना कठिन है। उसे भी देखा जा सकता है। लेकिन अभी तो प्रारम्भिक चरण मे उसे अरिहत मे, उसे सिद्ध मे, उसे साधु मे, उसे जाने हुए लोगो के द्वारा कहे गए धर्म मे देखने की कोशिश करनी चाहिए। लेकिन हम ऐसे लोग हैं कि अगर कृष्ण बोल रहे हो तो हम यह फिक्र कम करेंगे कि उन्होने क्या कहा। हम इसकी फिक्र करेंगे कि कोई व्याकरण की भूल तो नही है।

हम जिद्द किए बैठे हैं, चूकने की कि हम चूकते ही चले जाएगे। और जिनको हम बुद्धिमान कहते है, उनसे ज्यादा बुद्धिहीन खोजना मुश्किल हैं, क्योकि वे चूकने

मे सर्वाधिक कुशल होते है। वे महावीर के पास जाते है तो वे कहते हैं कि सब लक्षण पूरे हुए कि नही ? पहले लक्षण को शास्त्र मे लिखे हैं—वे पूरे होते है कि नही। वे दीयो की नाप-जोख कर रहे हैं, तेल का पता लगा रहे हैं! और तब तक ज्योति विदा हो जाएगी। और जब तक वे तय कर पाएगे कि दीया बिल्कुल ठीक है, तब तक ज्योति जा चुकी होगी। और तब दीये को हजारो साल तक पूजते रहेगे। इसलिए मरे हुए दीयो का हम बडा आदर करते है। क्योकि जब तक हम तय कर पाते है कि दीया ठीक है, या अपने को तय कर पाते हैं कि चलो ठीक है, तब तक ज्योति तो जा चुकी होती है।

इस जगत् मे, जिन्दा तीर्थंकर का उपयोग नही होता, सिर्फ मुर्दा तीर्थंकर का उपयोग होता है। क्योकि मुर्दा तीर्थंकर के साथ, भूल-चूक निकालने की सुविधा नही रह जाती। अगर महावीर के साथ आप रास्ते पर चलते हो, और देखें कि महावीर भी थककर और वृक्ष के नीचे विश्राम करते हैं, शक पकडेगा कि अरे! महावीर तो कहते थे *अनत ऊर्जा है, अनत शक्ति है, अनत वीर्य है*। कहा गयी अनत ऊर्जा ? यह तो थक गये। दस मील चले और पसीना निकल आया। साधारण आदमी ये। दीया थक रहा है। महावीर जिस अनत ऊर्जा की बात कर रहे हैं, वह ज्योति की बात है। दीये तो सभी के थक जायेंगे और गिर जाएगे।

लेकिन ये सारी बातें हम क्यो सोचते है ? यह हम सोचते है, इसलिए कि शरण से बच सकें। इसके सोचने का लाजिक है। इसके सोचने का तर्क है। इसके सोचने का रैशनलाइजेशन है। यह हम सोचते हैं इसलिए ताकि हमे कोई कारण मिल सके और कारण के द्वारा, हम अपने को रोक सकें—शरण जाने से। बुद्धिमान वह है जो कारण खोजता है शरण मे जाने के लिए। और बुद्धिमान वह है जो कारण खोजता है शरण से बचने के लिए। दोनो खोजे जा सकते है।

महावीर जिस गाव से गुजरते है सारा गाव उनका भक्त नही हो जाता। उस गाव मे भी उनके शत्रु होते ही है। जरूर वे भी अकारण नही होते होगे। उनको भी कारण मिल जाता है। वे भी खोज लेते है कि महावीर को कहते है कि जो ज्ञान को उपलब्ध हो जाता है वह सर्वज्ञ हो जाता है। और अगर महावीर सर्वज्ञ है तो वे उस घर के सामने भिक्षा क्यो मागते थे, जिसमे कोई है ही नही ? इन्हे तो पता होना ही चाहिए न कि घर मे कोई भी नही है! सर्वज्ञ ? ये खुद ही कहते हैं, जो ज्ञान को उपलब्ध हो जाता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है। और हमने इनको, ऐसे घर के सामने भीख मागते देखा, जिसमे पता चला कि घर खाली है। घर में कोई है ही नही। नही, सर्वज्ञ नही हैं। बात खत्म हो गयी। शरण से रुकने का उपाय हो गया।

क्योकि महावीर के लिए तो लोग कहते हैं, शास्त्र कहते हैं, तीर्थंकरो के लक्षण कहे गये है कि इतने-इतने दूरी तक, इतने-इतने फासले तक, जहा महावीर चलते

है—वहा घृणा का भाव नही रह जाता, वहा शत्रुता का भाव नही रह जाता। लेकिन फिर महावीर के कान मे ही कोई कीलें ठोक पाता है। तो ये तीर्थंकर नही हो सकते। क्योकि जब शत्रुता का भाव ही नही रह जाता—जहा महावीर चलते है, उनके मिल्यू मे, उनके वातावरण मे, कोई शत्रुता का भाव नही बचता—तब तो कोई इनके कान मे कीलें ठोक देता है, इतने पास आकर ? कान मे कीलें तो बहुत दूर से नही ठोकी जा सकती बहुत पास होना पडता है। इतने पास आकर भी शत्रुता का भाव बचा रहता है ! बात गडबड है। सदिग्ध है मामला, ये तीर्थंकर नही है।

मगर महावीर तीर्थंकर है या नही, इससे आप क्या पा लेगे ? हा एक कारण आप पा लेंगे कि एक आदमी उपलब्ध होता था तो उसकी शरण जाने से आप बच सकेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे आपके शरण जाने से महावीर को कुछ मिलने वाला था, जो आपने रोक लिया। भूल रहे है, शरण जाने से आपको ही कुछ मिल सकता था, जो आप ही चूक गए। ये बहाने है, और आदमी की बुद्धिहीनता इतनी प्रगाढ है कि वह बहाने खोजने मे बडा कुशल है। खोज लेता है बहाना।

बुद्ध के पास आकर लोग पूछते है—चमत्कार दिखाओ, अगर भगवान हो तो ? क्योकि कहा है कि भगवान् तो मुर्दे को जिला सकता है। तो मुर्दे को जिलाकर दिखा दो। जीसस को सूली दी जा रही थी तो लोग खडे होकर देख रहे थे कि सूली न लगे तो माने कुछ। सूली लग जाए और जीसस न मरे, हाथ-पैर कट जाए और जीसस जिन्दा रहे, तो माने कुछ। फिर जीसस मर गये। लोग बडे प्रसन्न लौटे। हम तो पहले ही कहते थे, लोगो ने कहा होगा आसपास कि यह आदमी धोखाधडी दे रहा है। यह कोई ईश्वर का पुत्र नही है। ईश्वर का पुत्र ऐसे मरता ? परीक्षा के लिए जीसस को सूली दी तो दो चोरो को भी दोनो तरफ लटकाया था। तीन आदमियो को इकट्ठी सूली दी। जैसे चोर मर गये, वैसे ही जीसस मर गए। तो फर्क क्या रहा ? कोई चमत्कार होना था। वह भी न हुआ।

मिलता है, अपने को छोडता और तोडता और मिटाता है। बचाता नही। एक दिन निश्चित ही उसकी गंगोत्री मे सागर गिरना शुरू हो जाता है। और जिस दिन सागर गिरता है, उसी दिन उसे पता चलता है कि शरणागति का पूरा रहस्य क्या था। इसकी पूरी कीमिया, इसका पूरा चमत्कार क्या था।

एक बात आखिरी—अगर जीसस सूली का चमत्कार दिखा दें और तब आप शरण जाए तो ध्यान रखना, वह शरणागति नही है ध्यान रखना, वह शरणागति नही है। अगर बुद्ध किसी मुर्दे को जिन्दा कर दें और आप उनके चरण पकड लें, तो समझना कि वह शरणागति नही है। क्योंकि उसमे कारण बुद्ध हैं, कारण आप नही हैं। वह सिर्फ चमत्कार को नमस्कार है। उसमे कोई शरणागति नही है। शरणागति तो तब है, जब कारण आप हैं, बुद्ध नही। इस फर्क को ठीक से समझ लें, नही तो सूत्र का राज चूक जाएगा। शरणागति, तो तब होती है जब आप शरण गए है। और शरणागति भी उसी मात्रा मे गहन होती है, जिस मात्रा मे शरणागति जाने का कोई कारण नही होता। जितना कारण होता है उतना तो बार्गेन हो जाता है, उतना तो सौदा हो जाता है। शरणागति नही रह जाती। बुद्ध, मुर्दे को उठा रहे है तो नमस्कार तो करना ही पडेगा। इसमे आपकी खूबी नही हैं। इसमे तो कोई भी नमस्कार कर लेगा। इसमे अगर कोई खूबी है तो बुद्ध की है। आपका इसमे कुछ भी नही हे। लेकिन अद्भुत लोग थे, इस दुनिया मे। एक वृक्ष को जाकर नमस्कार करते थे। एक पत्थर को। तब, तब खूबी आपकी होनी शुरू हो जाती है। अकारण जितनी अकारण होगी—शरण की भावना—उतनी गहरी होगी। जिननी सकारण होगी, उतनी उथली हो जायेगी। जब कारण बिल्कुल साफ होते है तब बिल्कुल तर्कयुक्त हो जाते हैं, उसमे कोई छलाग नही रह जाती। और जब बिल्कुल कारण नही होता, तभी छलाग घटित होती है।

तर्तूलियन ने, एक ईसाई फकीर ने कहा है कि मैं परमात्मा को मानता हू क्योकि उसके मानने का कोई भी कारण नही है, कोई प्रमाण नही हैं, कोई तर्क नही हैं। अगर तर्क होता, प्रमाण होता, कारण होता—तो जैसे आप कमरे मे रखी कुर्सी को मानते है, उससे ज्यादा मूल्य परमात्मा का भी नही होता।

मार्क्स मजाक मे कहा करता था कि 'मैं तब तक परमात्मा को न मानूगा, जब तक प्रयोगशाला मे, टेस्ट ट्यूब मे उसे पकड करके सिद्ध करने का कोई प्रमाण न मिल जाए। जब हम प्रयोगशाला मे उसकी जाच-परख कर लेंगे, थर्मामीटर लगाकर सब तरफ से नाप तौल कर लेंगे, मेजरमैंट ले लेंगे, तराजू पर रख कर नाप लेंगे, एक्स-रे से आप बाहर-भीतर सब उसको देख लेंगे, तब मैं मानूगा।' लेकिन ध्यान रखना, अगर हम परमात्मा के साथ यह सब कर सके, तो एक बात तय है कि वह परमात्मा नही रह गया—एक साधारण वस्तु हो जाएगी। क्योंकि, जो हम

वस्तु के साथ कर पाते है—वस्तुओ का तो पूरा प्रमाण है । यह दीवार पूरी तरह है।

लेकिन इससे क्या होगा ? महावीर के सामने खडे होकर शरीर तो पूरी तरह होता है । दिखाई पड रहा है, पूरे प्रमाण होते हैं। लेकिन वह जो भीतर जलती ज्योति है, वह उतनी पूरी तरह नही होती हैं । उसमे तो आपको छलाग लगानी पडती है—तर्क के बाहर, कारण के बाहर । और जिस मात्रा मे, वह आपको नही दिखाई पडती है और छलाग लगाने की आप सामर्थ्य जुटाते है, उसी मात्रा मे आप शरण जाते है । नही तो सौदे मे जाते हैं ।

एक आदमी आपके बीच आकर खडा हो जाए, मुर्दों को जिला दे, बीमारो को ठीक कर दे, इशारो से घटनाए घटने लगे तो आप सब उसके पैर पर गिर ही जाएगे । लेकिन वह शरणागति नही है । लेकिन महावीर जैसा आदमी खडा हो जाता है, कोई चमत्कार नही है । कुछ भी ऐसा नही है कि आप ध्यान दें । कुछ भी ऐसा नही है जिससे आपको तत्काल लाभ दिखाई पडे । कुछ भी ऐसा नही जो आपके सिर पर पत्थर की चोट पर, प्रमाण बन जाए । बहुत तरल अस्तित्व, बहुत अदृश्य अस्तित्व, और आप शरण चले जाते हैं । तो आपके भीतर क्रांति घटित होती है । आप अहकार से नीचे गिरते हैं। सब तर्क, सब प्रमाण, सब बुद्धिमत्ता की बातें अहकार के इर्द-गिर्द हैं । अतर्क्य, विचार के बाहर छलाग, अकारण समर्पण के इर्द-गिर्द है ।

बुद्ध के पास एक युवक आया था । चरणो मे उनके गिर गया । बुद्ध ने उससे पूछा कि मेरे चरण मे क्यो गिरते हो ? उस युवक ने कहा—क्योकि गिरने मे बडा राज है । आपके चरण मे नही गिरता, आपके चरण मात्र-बहाना है । मैं गिरता हू क्योकि खडे रहकर बहुत देख लिया, सिवाय पीडा के और दुख के, कुछ भी न पाया ।

तो बुद्ध ने अपने भिक्षुओ से कहा कि 'भिक्षु, देखो ! अगर तुम मुझे मानते हो कि मै भगवान हू, तब मेरे चरण मे गिरते हो, तब तुम्हे इतना लाभ न होगा, जितना लाभ यह युवक मुझे बिना भगवान माने उठाए लिए जा रहा है । यह कह रहा है, मै गिरता हू, क्योकि गिरने का बडा आनन्द है । और अभी मेरी इतनी सामर्थ्य नही है कि शून्य मे गिर पाऊं, इसलिए आपको निमित्त लिया है । किसी दिन जब मेरी सामर्थ्य आ जाएगी कि जब मैं शून्य मे गिर पाऊगा—उन चरणो मे, जो दिखाई भी नही पडते; उन चरणो मे, जिन्हे छुआ भी नही जा सकता । लेकिन जो चरण चारो तरफ मौजूद हैं—तब मै उस कास्मिक विराट अस्तित्व, निराकार को सीधा ही गिर पाऊंगा । पर जरा गिरने का मुझे आनन्द ले लेने दो। अगर इन दिखाई पडते हुए चरणो मे इतना आनन्द है, इसका मुझे थोडा स्वाद आ जाए, तो फिर मैं उस विराट मे गिर जाऊं ।'

इसलिए बुद्ध का जो सूत्र है—'बुद्ध शरण गच्छामि' वह बुद्ध से शुरू होता है, व्यक्ति से। 'संघ शरण गच्छामि'—समूह पर बढता। संघ का अर्थ है—उन सब साधुओ का, उन सब साधुओ के चरणो मे। और फिर धर्म पर—'धम्म शरण गच्छामि।' फिर वह समूह भी हट जाता है। फिर वह सिर्फ स्वभाव मे, फिर निराकार मे खो जाता है। वही, अरिहंत के चरण गिरता हू, स्वीकार करता हू, अरिहंत की शरण। सिद्ध की शरण, स्वीकार करता हू, साधु की शरण स्वीकार करता हू। और अन्त मे केवलिपन्नत्त धम्म शरण पवज्जामि—धर्म की, जाने हुए लोगो के द्वारा बताए गए ज्ञान की शरण स्वीकार करता हू। सारी बात इतनी है कि अपने को अस्वीकार करता हू। और जो अपने को अस्वीकार करता है वह स्वयं को पा लेता है और जो स्वयं को ही पकडकर बैठा रह जाता है वह सब तो खो देता है, अन्त मे स्वयं को भी नही पाता। स्वयं को पाने की यह प्रक्रिया बडी पैरेंडाक्सिकल, बडी विपरीत दिखाई पडेगी। स्वयं को पाना हो तो स्वयं को छोडना पडता है। और स्वयं को मिटाना हो तो स्वयं को खूब जोर से पकडे रखना पडता है।

दो सूत्र अब तक विकसित हुए है जैसा मैने कहा—एक, सिद्ध की तरफ से कि मेरी शरण आ जाओ। दो, साधक की तरफ से कि मैं तुम्हारी शरण आता हू। तीसरा कोई सूत्र नही है। लेकिन हम तीसरे की तरफ बढ रहे है। वह तीसरे की तरफ बढते हुए हमारे कदम जीवन मे जो भी शुभ है, जीवन मे जो भी सुन्दर है, जीवन मे जो भी सत्य है, उसे खोने की तरफ बढ रहे है।

समर्पण यानी श्रद्धा। समर्पण यानी शरणागति। समर्पण यानी अहंकार विसर्जन। नमोकार इस पर पूरा होता है।

कल से हम महावीर की वाणी मे प्रवेश करेंगे। लेकिन वे ही प्रवेश कर पाएंगे जो अपने भीतर शरण की आकृति निर्मित कर पाए। चौबीस घण्टे के लिए प्रयोग करना। जब भी खयाल आए तो मन मे कहना—'अरिहंते शरण पवज्जामि, सिद्धे शरण पवज्जामि, साहू शरण पवज्जामि, केवलिपन्नत्त धम्म शरण पवज्जामि।' इसे दोहराते रहना चौबीस घंटे। रात सोते समय इसे दोहरा कर सो जाना। रात नींद टूट जाए तो इसे दोहरा लेना। सुबह नींद खुले तो पहले इसे दोहरा लेना। कल यहा आते वक्त इसे दोहराकर आना। अगर वह शरण की आकृति भीतर बन जाए तो महावीर की वाणी मे हम किसी और ढंग से प्रवेश कर सकेंगे—जैसा पच्चीस सौ वर्ष मे सम्भव नही हुआ है।

आज इतना ही। अब हम यह शरण की आकृति और इसकी ध्वनि मे थोडा प्रवेश करें। कोई जाए न, बैठ जाए और सम्मिलित हो।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म में सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

है। देह मेरी गिर जाएगी तो भी जो नही गिरेगा, वही केवल मेरा है। रुग्ण हो जाएगा सब कुछ, दीन हो जाएगा सब कुछ नष्ट हो जाएगा सब कुछ—फिर भी जो नही म्लान होगा, वही मेरा है। गहन अधकार छा जाए, अमावस आ जाए जीवन मे चारो तरफ—फिर भी जो अधेरा नही होगा वही मेरा प्रकाश है।

लेकिन हम सब, जो मैं नही हू, वहा खोजते हैं स्वय को। वही से विफलता वही से फ्रस्ट्रेशन, वहीं से विषाद जन्मता है। जो भी हम चाहते हैं, वह स्वय को छोडकर सब हम चाहते हैं। हैरानी की बात है, इस जगत् मे बहुत कम लोग हैं जो स्वयं को चाहते हैं। शायद आपने इस भाति नही सोचा होगा कि आपने स्वय को कभी नही चाहा, सदा किसी और को चाहा।

वह और, कोई व्यक्ति भी हो सकता है, वस्तु भी हो सकती है, कोई पद भी हो सकता है, कोई स्थिति भी हो सकती है, लेकिन सदा कोई और है, अन्य है—दि अदर। स्वय को हममे से कोई भी कभी नही चाहता। और केवल एक ही जगत् मे सम्भावना है कि हम स्वय को पा सकते हैं, और कुछ पा नही सकते। सिर्फ दौड सकते हैं। जिसे हम पा नही सकते और केवल दौड सकते हैं, उससे दुख आएगा। उससे दुख इल्यूजनमेंट होगा, कही न कही भ्रम टूटेगा और ताश के पत्तो का घर गिर जाएगा। और कही न कही नाव डूबेगी, क्योकि वह कागज की थी। और कही न कही हमारे स्वप्न बिखरेंगे और आसू बन जाएगे। क्योकि वे स्वप्न थे।

सत्य केवल एक है, और वह यह कि मैं स्वय के अतिरिक्त इस जगत् के और कुछ भी नही पा सकता हू। हा, पाने की कोशिश कर सकता हू। पाने का श्रम कर सकता हू, पाने की आशा बाध सकता हू, पाने के स्वप्न देख सकता हू। और कभी-कभी ऐसा भी अपने को भरमा सकता हू कि पाने के बिल्कुल करीब पहुच गया हू। लेकिन कभी पहुचता नही, कभी पहुच नही सकता हू।

अधर्म का अर्थ है, स्वय को छोडकर और कुछ भी पाने का प्रयास। अधर्म का अर्थ है, स्वय को छोड कर पर दृष्टि। और हम सब 'दि अदर ओरिएटेड' हैं। हमारी दृष्टि सदा दूसरे पर लगी है। और कभी अगर हम अपनी शक्ल भी देखते हैं तो वह भी दूसरे के लिए। अगर आइने के सामने खडे होकर भी अपने को देखते हैं तो वह किसी के लिए—कोई जो हमे देखेगा—उसके लिए हम तैयारी करते हैं। स्वय को हम सीधा कभी नही चाहते। और धर्म तो स्वय को सीधे चाहने से उत्पन्न होता है। क्योकि धर्म का अर्थ है, स्वभाव, दि अल्टीमेट नेचर। वह जो अन्तत, अन्ततोगत्वा मेरा, मेरा होना है, जो मैं हू।

सार्त्र ने बहुत कीमती सूत्र कहा है। कहा है—दि अदर इज हैल। वह जो दूसरा है, वही नर्क है हमारा। सार्त्र ने किसी और अर्थ मे कहा है। लेकिन महावीर भी किसी और अर्थ मे राजी है। वे भी कहते हैं कि दि अदर इज हैल, बट दि

इम्फेसिस इज नाट आन दि अदर ऐज हैल, वट आन वनसेल्फ ऐज दि हैवन। दूसरा नर्क है, यह महावीर नही कहते है क्योकि इतना कहने मे भी दूसरे को चाहने की आकाक्षा और दूसरे से मिली विफलता छिपी है। महावीर कहते हैं—'स्वय होना मोक्ष है। धर्म है मगल।'

सार्त्र के इस वचन को थोडा समझ लें। सार्त्र का जोर है यह कहने मे कि दूसरा नर्क है। लेकिन दूसरा नर्क क्यो मालूम पडता है, यह शायद सार्त्र ने नही सोचा। दूसरा नर्क इसीलिए मालूम पडता है कि हमने दूसरे को स्वर्ग मानकर खोज की। हम दूसरे के पीछे गए, जैसे वहा स्वर्ग है। वह चाहे पत्नी हो, चाहे पति, चाहे बेटा हो, चाहे बेटी। चाहे मित्र, चाहे धन, चाहे यश। वह कुछ भी हो दूसरा, जो मुझसे अन्य है। सार्त्र को कहने मे आता है कि दूसरा नर्क है क्योकि दूसरे मे स्वर्ग खोजने की कोशिश की गई है। अगर स्वर्ग नही मिलता तो नर्क मालूम पडता है। महावीर नही कहते कि दूसरा नर्क है। महावीर कहते हैं—'धम्मो मगल मुक्किट्ठम्'—धर्म मगल है। अधर्म अमगल है, ऐसा भी नही कहते। कि यह 'दूसरा' नर्क है, ऐसा भी नही कहते हैं। स्वय को होना मुक्ति है, मोक्ष है, मंगल है, प्रेयस है।

इसमे फर्क है। इसमे फर्क यही है कि दूसरे नर्क है यह जानना दूसरे मे स्वर्ग को मानने से दिखाई पडता है। अगर मैंने दूसरे से कभी सुख नही चाहा तो मुझे दूसरे से कभी दुख नही मिल सकता। हमारी अपेक्षाए ही दुख बनती है। ऐक्स-पेक्टेशन इज इल्यूजन। अपेक्षाओं का भ्रम जब टूटता है तो विपरीत हाथ लगता है। दूसरा नर्क नही है। अगर महावीर को ठीक समझें तो सार्त्र से कहना पडेगा कि दूसरा नर्क नही है। लेकिन तुमने चूकि दूसरे को स्वर्ग माना इसलिए दूसरा नर्क हो जाता है। लेकिन तुम स्वय स्वर्ग हो।

और स्वय को स्वर्ग मानने की जरूरत नही है। स्वय का स्वर्ग होना स्वभाव है। दूसरे को स्वर्ग मानना पडता है और इसलिए फिर दूसरे को नर्क जानना पडता है। वह हमारे ही भाव है। जैसे कोई रेत से तेल निकालने मे लग गया हो, तो उसमे रेत का तो कोई कसूर नही है। और जैसे कोई दीवार को दरवाजा मान-कर निकलने की कोशिश करने लगे तो दीवार का तो कोई दोष नही। और अगर दीवार दरवाजा सिद्ध न हो और सिर टूट जाए और लहूलुहान हो जाए तो क्या आप नाराज होंगे? और कहेंगे कि दीवार दुष्ट है? सार्त्र वही कह रहा है। वह कह रहा है दूसरा नर्क है। इसमे दूसरे का कडेमनेशन, इसमे दूसरे की निन्दा है और दूसरे पर क्रोध छिपा है।

महावीर यह नही कहते। महावीर का वक्तव्य बहुत पाजिटिव है। महावीर कहते हैं—धर्म मगल है, स्वभाव मंगल है, स्वय का होना मोक्ष है और स्वय को मानने की जरूरत नही है कि मोक्ष है। ध्यान रहे, मानना हमे वही पडता है जहा

नही होना। समझना हमे वही पडता है जहा नही होना। कल्पनाए हमे वही करनी होती है जहा कि सत्य कुछ और है। स्वय को सत्य या स्वय को धर्म या स्वय को आनन्द मानने की जरूरत नही है। स्वय का होना आनन्द है। लेकिन हम जो दूसरे पर दृष्टि को बाधे जीते है, उन्हे पता भी कैसे चले कि स्वय कहा है ? हमे वही पता चलता है जहा हमारा ध्यान होगा। ध्यान की धारा, ध्यान का फोकस, ध्यान की रोशनी जहा पडती है वही प्रगट होता है। दूसरे पर हम दौडते है, दूसरे पर ध्यान की रोशनी पडती है, नर्क प्रगट होता है। स्वय पर ध्यान की रोशनी पडे तो स्वर्ग प्रगट होता है। दूसरे मे मानना पडता है और इसलिए एक दिन भ्रम टूटता है—टूटता ही है। कोई कितनी देर भ्रम को खीच सकता है यह उसकी अपने भ्रम को खीचने की क्षमता पर निर्भर है। बुद्धिमान है, क्षण भर मे टूट जाता है। बुद्धिहीन है, देर लगा देता है। और एक से छूटता है भ्रम हमारा तो तत्काल हम दूसरे की तलाश मे लग जाते है।

लेकिन यह ख्याल ही नही आता कि एक 'दूसरे' से टूटा हुआ भ्रम का यह अर्थ नही है कि दूसरे 'दूसरे' से मिल जाएगा स्वर्ग। जन्मो-जन्मो तक यही पुनरुक्ति होती है। स्वयं मे है मोक्ष, यह तब दिखाई पडना शुरू होता है जब ध्यान की धारा दूसरे से हट जाती है और स्वय पर लौट आती है। 'धर्म मगल है'—यह जानना हो तो जहा-जहा अमगल दिखाई पडे वहा से विपरीत ध्यान को ले जाना। दि आपोजिट इज दि डाइरेक्शन वह जो विपरीत है। धन मे अगर न दिखाई पडे, मित्र मे अगर न दिखाई पडे, पति-पत्नी मे यदि न दिखाई पडे, बाहर अगर दिखाई न पडे, दूसरे मे अगर दिखाई न पडे तो सब्स्टीट्यूट खोजने मत लग जाना। कि इस पत्नी मे नही मिलता है तो दूसरी पत्नी मे मिल सकेगा। इस मकान मे नही बनता स्वर्ग, तो दूसरे मकान मे बन सकेगा। इस वस्त्र मे नही मिलता तो दूसरे वस्त्र मे मिल सकेगा। इस पद पर नही मिलता, तो थोडी और दो सीढिया चढकर मिल सकेगा। ये सब्स्टीट्यूट है।

यह एक कागज की नाव डूबती नही है तो हम दूसरे कागज की नाव पर सवार होने की तैयारी करने लगते है, बिना यह सोचे हुए कि जो भ्रम का खण्डन हुआ है वह 'इस' नाव से नही हुआ, वह 'कागज' की नाव से हुआ है। वह इस पत्नी से नही हुआ, वह पत्नी-मात्र से हो गया है। वह इस पुरुष से नही हुआ, वह पुरुष-मात्र से हो गया है। वह इस पद से नही हुआ, वह पद-मात्र से हो गया है। महावीर की घोषणा कि धर्म मगल है, कोई हाइपोथिटिकल, कोई परिकल्पनात्मक सिद्धान्त नही है, और न ही यह घोषणा कोई फिलासफिक, कोई दार्शनिक वक्तव्य है। महावीर कोई दार्शनिक नही है। पश्चिम के अर्थ मे—जिस अर्थ मे हीगल या काट या बर्ट्रेन्ड रसैल दार्शनिक है, उस अर्थो मे महावीर दार्शनिक नही है। महावीर का यह वक्तव्य सिर्फ एक अनुभव, एक तथ्य की सूचना है। ऐसा महावीर

सोचते नही कि धर्म मंगल है, ऐसा महावीर जानते थे कि धर्म मगल है। इसलिए यह वक्तव्य विना कारण के दिया गया वक्तव्य है।

और जव पहली वार पूरव के मनुष्यो के विचार पश्चिम मे अनुदित हुए तो उन्हे वहुत हैरानी हुई क्योकि पश्चिम के सोचने का जो ढग था—अरस्तू से लेकर आज तक—अभी भी वही है। वह यह है कि तुम जो कहते हो, उसका कारण भी तो वताओ। इस वक्तव्य मे कहा है कि 'धम्मो मगल मुक्किट्ठम'—धर्म मगल है। अगर पश्चिम मे किसी दार्शनिक ने यह कहा होता तो दूसरा वक्तव्य होता—क्यो, ह्वाय ? लेकिन महावीर का दूसरा वक्तव्य ह्वाय नही है, ह्वाट है। महावीर कहते है, 'धर्म मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा सजमो तवो।' वे यह नही कहते, क्यो ? अगर पश्चिम मे अरस्तू ऐसा कहता तो अरस्तू तत्काल बताता कि क्यो मैं कहता हू कि धर्म मगल है। महावीर कहते हैं कि मैं कहता हू, धर्म मगल है। कौन-सा धर्म ? यह अहिंसा, सयम और तप वाला धर्म मगल है। कोई कारण नही दिया जा रहा है, कोई कारण नही बताया जा रहा है। कोई प्रमाण नही दिया जा रहा है। अनुभूति के लिए कोई प्रमाण नही होता, सिद्धान्तो के लिए प्रमाण होते है। सिद्धान्तो के लिए तर्क होते हैं, अनुभूति स्वय ही अपना तर्क है। अनुभूति को जानना हो कि वह सही है या गलत, तो अनुभूति मे उतरना पडता है। सिद्धान्त को जानना हो कि सही है या गलत, तो सिद्धान्त के सिलोलिज्म मे, सिद्धान्त की जो तर्क सरणी है, उसमे उतरना पडता है। और हो सकता है, तर्क सरणी बिल्कुल सही हो और सिद्धान्त बिल्कुल गलत हो। और हो सकता है, प्रमाण विल्कुल ठीक मालूम पडे, और जिसके लिए दिए गए है, वह विल्कुल ठीक न हो। गलत वातो के लिए भी ठीक प्रमाण दिए जा सकते है। सच तो यह है कि गलत बातो के लिए ही हमे ठीक प्रमाण खोजने पडते है। क्योकि गलत वातें अपने पैर से खडी नही हो सकती। उनके लिए ठीक प्रमाणो की सहायता की जरूरत पडती है।

महावीर जैसे लोग प्रमाण नही देते, सिर्फ वक्तव्य देते है। वे कहते है—ऐसा है। उनके वक्तव्य वैसे ही वक्तव्य हैं जैसे कि किसी आइस्टीन के या किसी और वैज्ञानिक के। आइस्टीन से अगर हम पूछे कि पानी हाइड्रोजन और आक्सीजन से क्यो मिलकर वना है, तो आइस्टीन कहेगा, क्यो का कोई सवाल नही है—वना है। इट इज सो। यह हम नही जानते कि क्यो वना है। हम इतना ही कह सकते है कि ऐसा है। और जिस भांति आईस्टीन कह सकता है कि पानी का अर्थ है, एच टू ओ—हाइड्रोजन के दो अणु और आक्सीजन का एक अणु इनका जोड़ पानी है। वैसे महावीर कहते है कि धर्म—अहिंसा, सयम, तप—इनका जोड है। यह 'अहिंसा सजमो तवो,' यह वैसा ही सूत्र है जैसे एच टू ओ। यह ठीक वैसा ही वक्तव्य है, वैज्ञानिक का। विज्ञान दूसरे के, पर के सम्वन्ध मे वक्तव्य देता है,

धर्म स्वयं के सम्बन्ध से वक्तव्य देता है। इसलिए अगर वैज्ञानिक के वक्तव्य को जाचना हो तो तर्क से नही जाना जा सकता, उसकी प्रयोगशाला मे जाना पडा। स्वभावत उसकी प्रयोगशाला बाहर है क्योकि उसके वक्तव्य पर के सम्बन्ध मे है। और अगर महावीर जैसे व्यक्ति का वक्तव्य जाचना हो तो भी प्रयोगशाला मे जाना पडे। निश्चित ही महावीर की प्रयोगशाला बाहर नही है, वह प्रत्येक व्यक्ति के अपने भीतर है। लेकिन थोडा बहुत हम जानते है कि महावीर जो कहते होंगे, ठीक कहते होगे। हमे यह तो पता नही है कि धर्म मगल है, लेकिन हमे यह भलीभाति पता है कि अधर्म अमगल है—कम-से-कम इतना हमे पता है। यह भी कुछ कम पता नही है। और अगर बुद्धिमान आदमी हो तो इतने ज्ञान से परमज्ञान तक पहुच सकता है। हमे यह तो पता नही है कि धर्म मगल है, लेकिन हमे यह पूरी तरह पता है कि अधर्म अमगल है। क्योकि अधर्म हमने किया है। अधर्म को हम जानते है।

इसे थोडा सोचे। क्या आपको पता है, जब भी आपके जीवन मे कोई दुख आता है तो दूसरे के द्वारा आता है? दूसरे के द्वारा आता हो या न आता हो, आपके लिए सदा दूसरे के द्वारा आता मालूम पडता है। क्या आपके जीवन मे जब कोई चिन्ता आती है तो कभी आपने ख्याल किया है कि चिन्ता भीतर से नहीं, बाहर से आती मालूम पडती है। क्या कभी आप भीतर से चिंतित हुए है? सदा बाहर से चिंतित हुए है। सदा चिन्ता का केन्द्र कुछ और रहा है, आपको छोडकर। वह धन हो, वह बीमार मित्र हो, वह डूबती हुई दुकान हो, वह खोता हुआ चुनाव हो, वह कुछ भी हो,—सदा दूसरा है। कुछ और, आपको छोडकर आपके दुख का कारण बनता है।

लेकिन एक भ्राति हमारे मन मे है जो टूट जानी जरूरी है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि दूसरा सुख का भी कारण बनता है। उसी से सब उपद्रव जारी रहता है। ऐसा तो लगता है कि दूसरा दुख का कारण बनता है, लेकिन ऐसा भी लगता है कि दूसरा सुख का कारण बनता है। चिन्ता तो दूसरे से आती है, दुख भी दूसरे से आता है, लेकिन सुख भी दूसरे से आता हुआ मालूम पडता है। ध्यान रखें, वह जो दूसरे से दुख आता है वह इसीलिए आता है कि आप इस भ्राति में जीते है कि दूसरे से सुख आ सकता है। ये सयुक्त बाते है। और अगर आप आधे पर ही समझते रहे कि दूसरे से दुख आता है और यह मानते चले गए कि दूसरे से सुख आता है तो दूसरे से दुख आता चला जाएगा। दूसरे से दुख आता ही इसलिए है कि दूसरे से हमने एक भ्राति का सम्बन्ध बना रखा है कि सुख आ सकता है। आता कभी नही। आ सकता है, इसकी सम्भावना हमारे आसपास खडी रहती है। आ सकता है, सदा भविष्य मे होता है। इसे भी थोडा खोजें तो आपके अनुभव मे कारण मिल जाएगे।

कभी किसी क्षण मे आपने जाना कि दूसरे से सुख आ रहा है—सदा ऐसा लगता है, आएगा। आता कभी नही। जिस मकान को आप सोचते है, मिल जाने से सुख आएगा, वह जब तक नही मिला है तब तक 'आएगा' है। वह जिस दिन मिल जाएगा उसी दिन आप पाएगे कि उस मकान की अपनी चिन्ताए है, अपने दुख है, वे आ गए। और सुख अभी नही आया। और थोडे दिन मे आप पाएगे कि आप भूल ही गए यह बात कि इस मकान से कितना सुख सोचा था कि आएगा, वह बिल्कुल नही आया।

लेकिन मन बहुत चालाक है, वह लौटकर नही देखता। वह रिट्रोस्पेक्टिकली कभी नही सोचता कि जिन-जिन चीजो से हमने सोचा था कि सुख आएगा, उनमे से कुछ आ गयी, लेकिन सुख नही आया। इसलिए, अगर किसी दिन पृथ्वी पर ऐसा हो सका कि आप जो-जो सुख चाहते है, आपको तत्काल मिल जाए तो पृथ्वी जितनी दुखी हो जाएगी, उतनी उसके पहले कभी नही थी। इसलिए जिस मुल्क मे जितने सुख की सुविधा बढती जाती है उसमे उतना दुख बढता जाता है। गरीब मुल्क कम दुखी होते है, अमीर मुल्क ज्यादा दुखी होते है। गरीब आदमी कम दुखी होता है, जब मैं यह कहता हू तो आपको थोडी हैरानी होगी क्योकि हम सब मानते है कि गरीब बहुत दुखी होता है। पर मैं आपसे कहता हू, गरीब कम दुखी होता है। क्योकि अभी उसकी आशाओ का पूरा का पूरा जाल जीवित है। अभी वह आशाओ मे जी सकता है। अभी वह सपने देख सकता है। अभी कल्पना नष्ट नही हुई है, अभी कल्पना उसे सभाले रखती है। लेकिन जब उसे सब मिल जाए, जो-जो उसने चाहा था, तो सब आशाओ के सेतु टूट गए। भविष्य नष्ट हुआ।

और वर्तमान मे सदा दुख है, दूसरे के साथ। दूसरे के साथ सिर्फ भविष्य मे सुख होता है। तो अगर सारा भविष्य नष्ट हो जाए, जो-जो भविष्य मे मिलना चाहिए वह आपको अभी मिल जाए, इसी क्षण, तो आप सिवाय आत्महत्या करने के और कुछ भी नही कर सकेगे। इसलिए जितना सुख बढता है उतनी आत्म-हत्याए बढती है। जितना सुख बढता है उतनी विक्षिप्तता बढती है जितना सुख बढता है—बडी उल्टी बात है क्योकि सब वैज्ञानिक कहते है कि साधन बढ जाएगे तो आदमी बहुत सुखी हो जाएगा। लेकिन अनुभव नही कहता। आज अमेरिका जितना दुखी है, उतना कोई भी देश दुखी नही है। और महावीर अपने घर मे जितने दुखी हो गए, महावीर के घर के सामने जो रोज भीख माग कर चला जाता भिखारी होगा, वह भी उतना दुखी नही था। महावीर का दुख पैदा हुआ है इस बात से कि जो भी उस युग मे मिल सकता था, वह मिला हुआ था। महावीर के लिए कोई भविष्य न बचा, नो फ्यूचर। और जब भविष्य न बचे तो सपने कहा खडे करिएगा? जब भविष्य न बचे तो कागज की नाव किस सागर

मे चलाइएगा ? भविष्य के सागर मे ही चलती है कागज की नाव। अगर भविष्य न बचे तो किस भूमि पर ताशो का भवन बनाइएगा ? अगर ताशों का भवन बनाना हो तो भविष्य की नीव चाहिए। तो महावीर का जो त्याग है, वह त्याग असल मे भविष्य की समाप्ति से पैदा होता है। नो फ्यूचर, कोई भविष्य नही है। तो महावीर अब कहा जाए, किस पद पर चढें जहा सुख मिलेगा ? किस स्त्री को खोजें जहा सुख मिलेगा ? किस धन की राशि पर खडे हो जाए जहा सुख होगा ? वह सब है।

महावीर के फ्रस्टेशन को, महावीर के विषाद को हम सोच सकते हैं। और हम उन नासमझो की बात भी सोच सकते है जो महावीर के पीछे दूर तक गाव के बाहर गए और समझाते रहे कि इतना सुख छोडकर कहा जा रहे हो ? ये वे लोग थे जिनका भविष्य है। वे कह रहे थे कि पागल हो गए हो ! जिस महल के लिए हम दीवाने है और सोचते है, किस दिन मिल जाएगा तो मोक्ष मिल जाएगा—उसे छोडकर जा रहे हो ! दिमाग तो खराब नही हो गया है ! सभी सयाने लोगो ने महावीर को समझाया, मत जाओ छोडकर। लेकिन महावीर और उनके बीच भाषा का सम्बन्ध टूट गया। वे दोनो एक ही भाषा अब नही बोल सकते है, क्योंकि उनका भविष्य अभी बाकी है और महावीर का कोई भविष्य न रहा।

हमे भी अनुभव है, लेकिन हम पीछे लौटकर नही देखते है। हम आगे ही देखे चले जाते हैं। जो आदमी आगे ही देखे चला जाता है, वह कभी धार्मिक नही हो सकेगा। क्योंकि अनुभव से वह कभी लाभ नही ले सकेगा। भविष्य में कोई अनुभव नही है, अनुभव तो अतीत मे है। जो आदमी पीछे लौट कर देखेगा...लेकिन पीछे लौटकर देखने में भी हम यह भूल जाते है कि हमने, पीछे जब हम खडे थे उन स्थानो पर, तब क्या सोचा था ? वह भी हम भूल जाते हैं। आदमी की स्मृति भी बहुत अद्भुत है। आपको ख्याल ही नही रहता कि जो कपडा आज आप पहने हुए हैं, कल वह कपडा आपके पास नही था और रात आपकी नीद खराब हो गयी—किसी और के पास था, या किसी दुकान पर था या किसी शो-विन्डो मे था और आप रात भर नही सो सके थे। और न मालूम कितनी गुदगुदी मालूम पडी थी भीतर कि कल जब यह कपडा आपके शरीर पर होगा तो न मालूम दुनिया मे कौन-सी क्राति घटित हो जाएगी ! और कौन-सा स्वर्ग उतर आएगा ! आप भूल ही गए है बिल्कुल। अब वह कपडा आपके शरीर पर है। कोई स्वर्ग नही उतरा है, कोई क्राति घटित नही हुई। आप उतने के उतने दुखी हैं। हा, अब दूसरे दुकान की शो-विन्डो मे आपका सुख लटका हुआ है। अभी भी वही है। कही किसी दूसरी दुकान की शो-विन्डो अब आपकी नीद खराब कर रही है।

पीछे लौटकर अगर देखें तो आप पाएगे, जिन-जिन सुखो को सोचा था, सुख

सिद्ध होंगे—वे सभी दुख सिद्ध हो गए। आप एक भी ऐसा सुख न बता सकेंगे जो आपने सोचा था कि सुख सिद्ध होगा और सुख सिद्ध हुआ। फिर भी आश्चर्य कि आदमी फिर भी वही पुनरुक्त किए चला जाता है। और कल के लिए फिर योजनाए बनाता है। कल की बीती सब योजनाए गिर गयी, लेकिन कल के लिए फिर वही योजनाए बनाता है। अगर महावीर ऐसे व्यक्तियो को मूढ कहे तो तथ्य की ही बात कहते है। तो मूढ ही...मूढता और क्या होगी? कि मैं जिस गड्ढे मे कल गिरा था, आज फिर उसी गड्ढे की तलाश करता हू किसी दूसरे रास्ते पर। और ऐसा नही कि कल ही गिरा था, रोज-रोज गिरा हू। फिर भी वही!

सुना है मैंने कि मुल्ला नसरुद्दीन एक रात ज्यादा शराब पीकर घर लौटा। टटोलता था रास्ता घर का, मिलता नही था। एक भले आदमी ने, देखकर कि बेचारा राह नही खोज पा रहा है, हाथ पकडा। पूछा कि इसी मकान मे रहते हो?

मुल्ला ने कहा—हा।

'किस मजिल पर रहते हो?'

उसने कहा—दूसरी मजिल पर।

उस भले आदमी ने बामुश्किल करीब-करीब बेहोश आदमी को किसी तरह सीढियो मे घसीटते-घसीटते दूसरी मजिल तक ले गया। फिर यह सोचकर कि कही मुल्ला की पत्नी का सामना न करना पडे, नही वह सोचे कि तुम भी सगी-साथी हो, कही खतरा न हो, पूछा—यही तेरा दरवाजा है?

मुल्ला ने कहा—हा।

उसने दरवाजे के भीतर धक्का दिया और सीढियो से नीचे उतर गया। नीचे जाकर बहुत हैरान हुआ कि ठीक वैसा ही आदमी, थोडी और बुरी हालत मे, फिर दरवाजा टटोलता है। ठीक वैसा ही आदमी! थोडा चकित हुआ। अपनी ही आखो पर हाथ फेरा कि मैं तो कोई नशा नही किए हू। थोडी बुरी हालत मे ठीक वैसा ही आदमी। सो जाकर पूछा कि क्या भाई तुम भी ज्यादा पी गए हो?

उस आदमी ने कहा—हा।

'इसी मकान मे रहते हो?'

उसने कहा—हा। 'किस मजिल पर रहते हो?'

उसने कहा—दूसरी पर। (हैरानी!)

पूछा—जाना चाहते हो? बामुश्किल, इस बार और कठिनाई हुई क्योंकि वह आदमी और भी मस्त-पस्त था। उसे ऊपर लाकर, पहुचाकर पूछा—इसी दरवाजे से जाते हो? उसने कहा—हा।

वह आदमी बहुत हैरान हुआ कि क्या [illegible] के साथ थोडी-सी देर मे मैं भी [illegible] मे हू? फिर धक्का दिया और नीचे उतर कर आया। देखा कि तीसरा

आदमी और भी थोडी बुरी हालत मे है । सडक के किनारे पडा रास्ता खोज रहा है । लेकिन ठीक वैसा ही । उसे डर भी लगा कि भाग जाना चाहिए । यह झझट की बात मालूम पडती है । यह कब तक चलेगा ? यह आदमी वही मालूम पडता है । वही कपडे है, ढग वही है । थोडा और परेशान । पूछा कि भाई इसी मकान मे रहते हो ?

उसने कहा—हा ।

'किस मजिल पर ?'

'दूसरी मजिल पर ।'

'ऊपर जाना चाहते हो ?'

उसने कहा—हा ।

उसने कहा—बडी मुसीबत है । अब उसको और पहुचा दें । ले जाकर दरवाजे पर धक्का दिया । भाग कर नीचे आया कि चौथा न मिल जाए, लेकिन चौथा आदमी नीचे मौजूद था । अब उसमें हिलने-चलने की भी गति नही थी । लेकिन जैसे ही उसे पास आकर देखा, वह आदमी चिल्लाया कि—'मुझे बचाओ । यह आदमी मुझे मार डालेगा ।'

'मै तुझे मार डालने की कोशिश नही कर रहा हू । तू है कौन ?'

उसने कहा—तू मुझे बार-बार जाकर लिफ्ट के दरवाजे से धक्का देकर नीचे पटक रहा था ।

उस आदमी ने पूछा—'भला आदमी ! तीन बार पटक चुका, तुमने कहा क्यो नही ?' उसने सोचा कि शायद अब की बार न पटके, यह सोचकर । नसरुद्दीन ने कहा—कौन जाने, अब की बार न पटके ।

लेकिन दूसरा पटकता हो तो हम इतना हस रहे है । हम अपने को ही पटकते चले जाते है । वही का वही आदमी, दूसरी बार और थोडी बुरी हालत होती है । और कुछ नही होता है । जिन्दगी भर ऐसा चलता है । आखिर मे दुख के भाव के अतिरिक्त हमारी कोई उपलब्धि नही होती । घाव-ही-घाव रह जाते है, पीडा-ही-पीडा रह जाती है ।

इतना हम जानते है कि अधर्म अमगल है । और अधर्म से मतलब समझ लेना—अधर्म से मतलब है, दूसरे मे सुख को खोजने की आकाक्षा । यह दुख, यह अमगल है, और कोई अमगल नही है । जब भी दुख आपको मिले तो जानना कि आपने दूसरे से कही सुख पाना चाहा । अगर मैं अपने शरीर से भी सुख पाना चाहता हू तो भी मै दूसरे से सुख पाना चाहता हू । मुझे दुख मिलेगा । कल बीमारी आएगी, कल शरीर रुग्ण होगा, कल बूढा होगा, परसो मरेगा । अगर मैने इस शरीर से, जो इतना निकट मालूम होता है, फिर भी पराया है । महावीर से अगर हम पूछने जाए तो वे कहेगे कि जिससे भी दुख मिल सकता है, जानना कि वह

और है। उसे क्राइटेरियन, उसे मापदण्ड समझ लेना कि जिससे भी दुख मिल सके, जानना कि वह और है, वह तुम नही हो। तो जहा-जहा दुख मिले, वहा-वहा जानना कि 'मैं' नही हू।

सुख अपरिचित है क्योकि हमारा सारा परिचय 'पर' से है, 'दूसरे' से है। सुख सिर्फ कल्पना मे है, दुख अनुभव है। लेकिन दुख, जो कि अनुभव है, उसे हम भुलाए चले जाते है। और सुख जो कि कल्पना मे है, उसके लिए हम दौडे चले जाते है। महावीर का यह सूत्र इस पूरी बात को बदल देना चाहता है। वे कहते है—धम्मो मगल मुक्किट्ठ। धर्म मगल है। आनन्द की तलाश स्वभाव मे है। कभी-कभी अगर आपके जीवन में आनन्द की कोई किरण छोटी-मोटी उतरी होगी, तो वह तभी उतरती है जब आप अनजाने, जाने किसी भाति एक क्षण को स्वय के सम्बन्ध मे पहुच जाते है। कभी भी। लेकिन हम ऐसे भ्रात है कि वहा भी हम दूसरे को ही कारण समझते है।

सागर के तट पर बैठे है। साझ हो गयी है, सूर्यास्त होता है। ढलते सूरज मे, सागर की लहरो की आवाजो मे एकान्त मे अकेले तट पर बैठे है। एक क्षण को लगता है जैसे सुख की कोई किरण कही उतरी। तो मन होता है कि शायद इस सागर, इस डूबते सूरज मे सुख है। कल फिर आकर बैठेगे। फिर उतनी नही उतरेगी। परसो फिर आकर बैठेंगे। अगर रोज आकर बैठते रहे तो सागर का शोरगुल सुनायी पडना बन्द हो जाएगा। सूरज का डूबना दिखायी न पडेगा।

वह जो पहले दिन अनुभव हमे आया था वह सागर और सूरज की वजह से नही था। वह तो केवल एक अजनबी स्थिति मे, आप पराए से ठीक से सम्बन्धित न हो सके और थोडी देर को अपने से सम्बन्धित हो गए। इसे थोडा ठीक से समझ लें। इसीलिए परिवर्तन अच्छा लगता है एक क्षण को। क्योकि परिवर्तन का, एक सक्रमण का क्षण, जो ट्राजिशन का क्षण है, उस क्षण मे आप दूसरे से सम्बन्धित होने के पहले और पिछले से टूटने के पहले बीच मे थोडे से अतराल मे अपने से गुजरते हैं। एक मकान को बदल कर दूसरे मकान पर जा रहे है। इस मकान को बदलने में और दूसरे मकान मे एडजेस्ट होने के बीच एक क्षण को अव्यवस्थित हो जाएगे। न यह मकान होगा, न वह मकान होगा। और बीच मे क्षण भर को उस मकान मे पहुच जाएगे जो आपके भीतर है। वह क्षण भर को उस बीच जो थोडी-सी सुख की झलक मिलेगी।

वह शायद आप सोचेंगे, इस नए मकान मे आने से मिली है, इस पहाड़ पर आने से मिली है, इस एकात मे आने से मिली है, इस सगीत की कडी को सुनने से मिली है, इस नाटक को देखने से मिली है। आप भ्राति मे हैं। अगर इस नाटक को देखने से वह मिला है तो फिर रोज इस नाटक को देखें, जल्दी ही पता चल जाएगा। कल नहीं मिलेगा, क्योकि कल आप एडजस्ट हो चुके होगे, नाटक

परिचित हो चुका होगा। फिर वो नाटक तकलीफ देने लगेगा। और दो-चार दिन देखते गए तो ऐसा लगेगा, अपने साथ हिंसा कर रहे हैं। एक पत्नी को बदल कर दूसरी पत्नी के साथ जो क्षण भर को सुख दिखायी पड रहा है, वह सिर्फ बदलाहट का है। और बदलाहट भी सिर्फ इसलिए कि दो चीजो के बीच मे क्षण भर को आपको अपने भीतर से गुजरना पडता है। बस, और कोई कारण नही है।

अनिवार्य है, जब मैं एक से टूटू और दूसरे से जुडू तो एक क्षण को मैं कहा रहूगा ? टूटने और जुडने के बीच मे जो गैप है, अतराल है, उसे मैं अपने मे रहूगा। वही अपने मे रहने का क्षण प्रतिफलित होगा और लगेगा कि दूसरे मे सुख मिला। सभी बदलाहट अच्छी लगती है। बस बदलाहट, चेंज का सुख है। वह अपने मे क्षण भर को अचानक गुजर जाने का सुख है। इसलिए आदमी शहर से जगल भागता है। जगल का आदमी शहर आता है। भारत का आदमी यूरोप जाता है, यूरोप का आदमी भारत आता है। दोनो को वही क्षण परिवर्तन का भारतीय को हैरानी होती है, पश्चिमी को देखकर अपने बीच मे, कि इधर आए हो सुख की तलाश मे ! इधर हम जैसा सुख पा रहे है, हम ही जानते हैं। पाश्चात्य को, भारतीय को वहा देखकर हैरानी होती है कि तुम यहा आए हो, सुख की तलाश मे ! यहा जो सुख मिल रहा है, उससे हम किस तरह बचें, हम इसकी चेष्टा मे लगे है। पर कारण है दोनो को क्षण भर को सुख मिलता है। वैज्ञानिक कहते है कि नयी कोई भी चीज से व्यवस्थित होने मे थोडा अतराल पडता है। एक रिदम है हमारे जीवन की।

गोकलिन ने एक किताब लिखी है, 'दि काजमिक क्लाक'। लिखा है कि सारा अस्तित्व एक घडी की तरह चलता है। अद्भुत किताब है, वैज्ञानिक आधारो पर। और मनुष्य का व्यक्तित्व भी एक घडी की तरह चलता है। जब भी कोई परिवर्तन होता है तो घडी डगमगा जाती है। अगर आप पूरब से पश्चिम की तरफ यात्रा कर रहे हैं तो आपके व्यक्तित्व की पूरी घडी गडबडा जाती है। क्योकि सब बदलता है। सूरज का उगने का समय बदल जाता है, सूरज के डूबने का समय बदल जाता है। वह इतनी तेजी से बदलता है कि आपके शरीर को पता ही नही चलता। इसलिए भीतर एक अराजकता का क्षण उपस्थित हो जाता है। सभी बदलाहटें आपके भीतर एक ऐसी स्थिति ला देती है कि आपको अनिवार्यरूपेण कुछ देर को अपने भीतर से गुजरना पडता है। उसका ही रिफ्लेक्शन, उसका ही प्रतिबिम्ब आपको सुख मालूम पडता है। और जब क्षण-भर को अनजाने गुजर कर भी सुख मालूम पडता है, तो जो सदा अपने भीतर जीने लगते है। अगर महावीर कहते है, वे मगल को, परम मगल को, आनन्द को उपलब्ध हो जाते है—तो हम नाप सकते हैं, हम अनुमान कर सकते है।

यह हमारा अनुभव अगर प्रगाढ होता चला जाए कि जिसे हमने जीवन समझा है वह दुख है, जिस चीज के पीछे हम दौड रहे है वह सिर्फ नर्क मे उतार जाती है। अगर यह हमे स्पष्ट हो जाए तो हमे महावीर की वाणी का आधा हिस्सा हमारे अनुभव से स्पष्ट हो जाएगा। और ध्यान रहे, कोई भी सत्य आधा सत्य नही होता ··कोई भी सत्य आधा सत्य नही होता। सत्य तो पूरा ही सत्य होता है। अगर उसमे आधा भी सत्य दिखाई पड जाए, तो शेष आधा आज नही, कल दिखाई पड जाएगा और अनुभव मे आ जाएगा।

आधा सत्य हमारे पास है कि 'दूसरा' दुख है। कामना दुख है, वासना दुख है क्योकि कामना और वासना सदा दूसरे की तरफ दौडने वाले चित्त का नाम है। वासना का अर्थ है दूसरे की तरफ दौडती हुई चेतन धारा। वासना का अर्थ है, भविष्य की ओर उन्मुख जीवन की नौका। अगर 'दूसरा' दुख है, तो दूसरे की तरफ ले जाने वाला जो सेतु है वह नर्क का सेतु है। उसको 'वासना', महावीर कहते है। उसको बुद्ध 'तृष्णा' कहते हैं। उसे हम कोई भी नाम दें। दूसरे को चाहने की जो हमारे भीतर दौड है, हमारी ऊर्जा का जो वर्तन है दूसरे की तरफ, उसका नाम वासना है, वह दुख है।

और मगल, जो आनन्द, जो धर्म है वह स्वभाव है। निश्चित ही वह उस क्षण में मिलेगा जब हमारी वासना कही भी न दौड रही होगी। वासना का न दौडना आत्मा का हो जाना है। वासना का दौडना आत्मा का खो जाना है। आत्मा उस शक्ति का नाम है जो नही दौड रही है, अपने मे खडी है। वासना उस आत्मा का नाम है जो दौड रही है अपने से बाहर, किसी और के लिए। इसलिए इसी सूत्र के दूसरे हिस्से मे महावीर कहते हैं—कौन-सा धर्म? अहिसा, सयम और तप। यह अहिसा सयम और तप दौडती हुई ऊर्जा को ठहराने की विधियो के नाम है। वह जो वासना दौडती है दूसरे की तरफ वह कैसे रुक जाए, न दौडे दूसरे की तरफ? और जब रुक जाएगी, न दौडेगी दूसरे की तरफ—तो स्वय मे रमेगी, स्वय मे ठहरेगी, स्थिर होगी। जैसे कोई ज्योति हवा के कप मे कपे न, वैसी। उसका उपाय महावीर कहते है।

तो धर्म स्वभाव है, एक अर्थ। धर्म विधि है, स्वभाव तक पहुचने की, दूसरा अर्थ। तो धर्म के दो रूप है—धर्म का आत्यतिक जो रूप है वह है स्वभाव, स्व-धर्म। और धर्म तक, इस स्वभाव तक। क्योकि हम इस स्वभाव से भटक गए हैं, अन्यथा कहने की कोई जरूरत न थी। स्वस्थ व्यक्ति तो नही पूछता चिकित्सक को कि मैं स्वस्थ हू या नही। अगर स्वस्थ व्यक्ति भी पूछता है कि मैं स्वस्थ हू या नही, तो वह बीमार हो चुका है। असल मे, बीमारी न आ जाए तो स्वास्थ्य का ख्याल ही नही आता।

लाओत्से के पास कफ्यूशियस गया था और उसने कहा—धर्म को लाने का कोई

उपाय करें। तो कफ्यूशियस से लाओत्से ने कहा—धर्म को लाने का उपाय तभी करना होता है जब अधर्म आ चुका होता है। तुम कृपा करके अधर्म को छोड़ने का उपाय करो, धर्म आ जाएगा। तुम धर्म को लाने का उपाय मत करो। इसलिए स्वास्थ्य को लाने का कोई उपाय नहीं किया जा सकता है, सिर्फ़ केवल बीमारियों को छोड़ने का उपाय किया जा सकता है। जब बीमारियां छूट जाती हैं तो जो शेष रह जाता है, दि रिमेनिंग।

तो धर्म का आखिरी सूत्र तो यही है, परम सूत्र तो यही है कि स्वभाव। लेकिन वह स्वभाव तो चूक गया है। वह तो हमने खो दिया है। तो हमारे धर्म का दूसरा अर्थ महावीर कहते हैं—जो प्रयोगात्मक है, प्रक्रिया का है, साधन का है। पहली परिभाषा साध्य की, अन्त की, दूसरी परिभाषा साधन की, मीन्स की। तो महावीर कहते हैं—कौन-सा धर्म? 'अहिंसा, संजमो, तवो।' इतना छोटा सूत्र शायद ही जगत् में किसी और ने कहा हो जिसमें सारा धर्म आ जाए। अहिंसा, संयम, तप—इन तीन की पहले हम व्यवस्था समझ लें, फिर तीन के भीतर हमें प्रवेश करना पड़ेगा।

अहिंसा धर्म की आत्मा है, कहें केन्द्र है धर्म का, सेंटर है। तप धर्म की परिधि है, सरकम्फ्रेंस है और संयम केन्द्र और परिधि को जोड़ने वाला बीच का सेतु है। ऐसा समझ लें, अहिंसा आत्मा है, तप शरीर है और संयम प्राण है। वह दोनों को जोड़ता है। श्वास है। श्वास टूट जाए तो शरीर भी होगा, आत्मा भी होगी, लेकिन आप न होंगे। संयम टूट जाए, तो तप भी हो सकता है, अहिंसा भी हो सकती है—लेकिन धर्म नहीं हो सकता। वह व्यक्तित्व बिखर जाएगा। श्वास की तरह संयम है। इसे थोड़ा सोचना पड़ेगा। इसकी पहले हम व्यवस्था को समझ लें, फिर एक-एक की गहराई में उतरना आसान होगा।

अहिंसा आत्मा है महावीर की दृष्टि से। अगर महावीर से हम पूछें कि एक ही शब्द में कह दें कि धर्म क्या है? तो वे कहेंगे अहिंसा। कहा है उन्होंने—अहिंसा परम धर्म है। अहिंसा पर क्यों महावीर इतना जोर देते हैं? किसी ने नहीं कहा, ऐसा अहिंसा को। कोई कहेगा, परमात्मा, कोई कहेगा, आत्मा। कोई कहेगा, सेवा, कोई कहेगा ध्यान। कोई कहेगा, समाधि, कोई कहेगा, योग। कोई कहेगा, प्रार्थना, कोई कहेगा, पूजा। महावीर से अगर हम पूछें, उनके अन्तरतम में एक ही शब्द बसता है और वह है अहिंसा। क्यों? तो जिसको महावीर को मानने वाले अहिंसा कहते हैं, अगर इतनी ही अहिंसा है तो महावीर गलती में है। तब बहुत क्षुद्र बात कही जा रही है। महावीर को मानने वाला अहिंसा से जैसा मतलब समझता है, उससे ज्यादा बचकाना, चाइल्डिश कोई मतलब नहीं हो सकता। उससे वह मतलब समझता है—दूसरे को दुख मत दो। महावीर का यह अर्थ नहीं है। क्योंकि धर्म की परिभाषा में दूसरा आए, —

महावीर बर्दाश्त न करेंगे। इसे थोडा समझे।

धर्म की परिभाषा स्वभाव है, और धर्म की परिभाषा दूसरे से करनी पडे कि दूसरे को दुख मत दो, यही धर्म है तो यह धर्म भी दूसरे पर ही निर्भर और दूसरे पर ही केन्द्रित हो गया है। महावीर यह भी न कहेंगे कि दूसरे को सुख दो, यही धर्म है। क्योकि फिर वह दूसरा तो खडा ही रहा। महावीर कहते हैं—धर्म तो वहां है, जहा दूसरा है ही नही। इसलिए दूसरे की व्याख्या से नही बनेगा। दूसरे को दुख मत दो—यह महावीर की परिभाषा इसलिए भी नही हो सकती, क्योकि महावीर मानते नही कि तुम दूसरे को दुख दे सकते हो, जब तक दूसरा लेना न चाहे। इसे थोडा समझना। यह भ्राति है कि मैं दूसरे को दुख दे सकता हू। और यह भ्राति इसी पर खडी है कि मैं दूसरे से दुख पा सकता हू, मैं दूसरे से सुख पा सकता हू, मैं दूसरे को सुख दे सकता हू। ये सब भ्रातिया एक ही आधार पर खडी है। अगर आप दूसरे को दुख दे सकते है तो क्या आप सोचते है, आप महावीर को दुख दे सकते है? और अगर आप महावीर को दुख दे सकते हैं तो फिर बात खत्म हो गयी।

नही, आप महावीर को दुख नही दे सकते। क्योकि महावीर दुख लेने को तैयार ही नही है। आप उसी को दुख दे सकते है जो दुख लेने को तैयार है। और आप हैरान होगे कि हम इतने उत्सुक हैं दुख लेने को, जिसका कोई हिसाब नही। आतुर है, प्रार्थना कर रहे है कि कोई दुख दे। दिखाई नही पडता...दिखाई नही पडता। लेकिन खोजे अपने को। अगर एक आदमी आपकी चौबीस घटे प्रशसा करे, तो आपको सुख न मिलेगा, और एक गाली दे दे तो जन्म भर के के लिए दुख मिल जाएगा। एक आदमी आपकी वर्षों सेवा करे, आपको सुख न मिलेगा और एक दिन आपके खिलाफ एक शब्द बोल दे और आपको इतना दुख मिल जाएगा कि वह सब सुख व्यर्थ हो गया। इससे क्या सिद्ध होता है?

इससे यह सिद्ध होता है कि आप सुख लेने को इतने आतुर नही दिखाई पडते है जितना दुख लेने को आतुर दिखाई पडते है। यानी आपकी उत्सुकता जितनी दुख लेने मे है उतनी ही सुख लेने मे नही है। अगर मुझे किसी ने उन्नीस बार नमस्कार किया और एक बार नमस्कार नही किया, तो उन्नीस बार नमस्कार से मैंने जितना सुख नही लिया है, एक बार नमस्कार न करने से उतना दुख ले लूगा। आश्चर्य है! मुझे कहना चाहिए था, कोई बात नही है, हिसाब अभी भी बहुत बडा है। कम-से-कम बीस बार न करे तब बराबर होगा। मगर वह नही होता है। तब भी बराबर होगा, तब भी दुख लेने का कोई कारण नही है, मामला तब तराजू मे तुल जाएगा। लेकिन नही, जरा-सी बात दुख दे जाती है।

हम इतने सेंसिटिव हैं दुख के लिए, उसका कारण क्या है? उसका कारण यही है कि हम दूसरे से सुख चाहते है इतना ज्यादा कि वही चाहें, उससे हमे दुख

मिलने का द्वार बन जाती है, और तब दूसरे से सुख तो मिलता नही—मिल नही सकता। फिर दुख मिल सकता है, उसको हम लेते चले जाते है। महावीर नही कह सकते कि अहिंसा का अर्थ है दूसरे को दुख न देना। दूसरे को कौन दुख दे सकता है, अगर दूसरा लेना न चाहे। और जो लेना चाहता है उसको कोई भी न दे तो वह ले लेगा। यह भी मैं आपसे कह देना चाहता हू। वह आपके लिए रुका नही रहेगा कि आपने नही दिया तो दुख कैसे लें। लोग आसमान से दुख ले रहे है। जिन्हे दुख लेना है, वे बडे इन्वेंटिव है वे इस-इस ढग से दुख लेते है, इतना आविष्कार करते है कि जिसका हिसाब नही है। वे आपके उठने से दुख ले लेंगे, आपके बैठने से दुख ले लेंगे, आपके चलने से दुख ले लेंगे, किसी चीज से दुख ले लेंगे। अगर आप बोलेंगे तो दुख ले लेंगे, अगर आप चुप बैठेंगे तो दुख ले लेंगे कि आप चुप क्यो बैठे हैं, इसका क्या मतलब ?

एक महिला मुझ से पूछती थी कि मैं क्या करू, मेरे पति के लिए। अगर बोलती हू तो कोई विवाद, उपद्रव खडा होता है। अगर नही बोलती हू तो वह पूछते हैं, क्या बात है ? न बोलने से विवाद खडा होता है। अगर न बोलू तो वह समझते हैं कि नाराज हू। अगर बोलू तो नाराजगी थोडी देर मे आने ही वाली है, वह कुछ न कुछ निकल आयेगा। तो मैं क्या करू ? बोलू कि न बोलू ? अब मैं उसको क्या सलाह दू ?

जितने दुख आपको मिल रहे है उसमे से निन्यानबे प्रतिशत आपके आविष्कार हैं। निन्यानबे प्रतिशत ! जरा खोजें कि किस-किस तरह आप आविष्कार करते हैं, दुख का। कौन-कौन सी तरकीबें आपने बिठा रखी है ! असल मे बिना दुखी हुए आप रह नही सकते। क्योकि दो ही उपाय है, या तो आदमी सुखी हो तो रह सकता है, या दुखी हो तो रह सकता है। अगर दोनो न रह जाए तो जी नही सकता। दुख भी जीने के लिए काफी बहाना है। दुखी लोग देखते हैं आप, कितने रस से जीते है ? इसको जरा देखना पडेगा। दुखी लोग कितने रस से जीते हैं ? वह अपने दुख की कथा कितने रस से कहते हैं ! दुखी आदमी की कथा सुनें, कैसा रस लेता है। और कथा को कैसा मैग्निफाई करता है, उसको कितना बडा करता है। सुई लग जाए तो तलवार से कम नही लगती है उसे।

कभी आपने ख्याल किया है कि आज किसी डाक्टर के पास जाए और वह आपसे कह दे कि नही, आज बिल्कुल बीमार नही हैं, तो कैसा दुख होता है ! यह डाक्टर ठीक नही मालूम पडता। किसी और बडे एक्सपर्ट को खोजना पडता है, इससे काम नही चलेगा। यह कोई डाक्टर है ! आप जैसे बडे आदमी, और आपको कोई बीमारी ही नही है। या कोई छोटी-मोटी बीमारी बता दे, कि कह दे, गर्म पानी पी लेना और ठीक हो जाओगे। तो भी मन को तृप्ति नही मिलती। इसलिए डाक्टरो को विचारो को अपनी दवाइयो के नाम लैटिन मे रखने पडते हैं,

चाहे उसका मतलब होता हो अजवाइन का सत। लेकिन लैटिन मे जब नाम होता है, तब मरीज अकड कर घर लौटता है, प्रिस्क्रिप्शन लेकर। जिएगे कैसे, अगर दुख न हो तो जिएगे कैसे ! या तो जीने की वजह होती है। आनन्द न हो तो दुख तो हो।

मार्क ट्वेन ने कहा है, और अनुभवी था आदमी और मन के गहरे मे उतरने की क्षमता और दृष्टि थी। उसने कहा है, तुम चाहे मेरी प्रशसा करो, या चाहे मेरा अपमान करो, लेकिन तटस्थ मत रहना। उससे बहुत पीडा होती है। तुम चाहो तो गाली ही दे देना, उससे भी तुम मुझे मानते हो कि मैं कुछ हू। लेकिन तुम मुझे बिना देखे ही निकल जाओ, तुम न मुझे गाली दो, न तुम मेरा सम्मान करो, तब तुम मुझे ऐसी चोट पहुचाते हो संघातक कि मै उसका बदला लेकर रहूगा। उपेक्षा का बदला लोग जितना लेते हैं उतना दुख का नही लेते। आपने भी अपने पर ख्याल करेंगे तो आपको पता चल जायेगा कि आपको सबसे ज्यादा पीडा वह आदमी पहुचाता है जो आपकी उपेक्षा करता है, इनडिफरेंट। इसलिए अगर महावीर या जीसस जैसे लोगो को हमने बहुत सताया तो उसका एक कारण उसका इनडिफरेंट था, बहुत गहरा कारण। वे इनडिफरेंस थे। आज उनको पत्थर भी मार गये तो वे ऐसे खडे रहे कि चलो कोई बात नही। तो उससे बहुत दुख होता है, उससे बहुत पीडा होती है।

नीत्शे ने, जो कि मनुष्य के इतिहास मे बहुत थोडे-से लोग आदमी के भीतर जितनी गहराई मे उतरते है, वैसा आदमी, नीत्शे ने कहा है कि जीसस, मैं तुमसे कहता हू कि अगर कोई तुम्हारे गाल पर एक चाटा मारे तो तुम दूसरा उसके सामने मत करना, उससे उसको बहुत चोट लगेगी। जब कोई आदमी तुम्हारे गाल पर एक चाटा मारे, जीसस तो मैं तुमसे कहता हू कि तुम दूसरा गाल उसके सामने मत करना। तुम उसे एक करारा चाटा देना। उससे उसे इज्जत मिलेगी। जब तुम दूसरा गाल उसके सामने कर दोगे, वह कीडा-मकोडा जैसा हो जायेगा। इतना अपमान मत करना। इसे हम न सह सकेंगे। इसीलिए तुम्हे सूली पर लटकाया गया।

यह कभी हम सोच नही सकते, लेकिन है यह सच। और सच ऐसे स्ट्रेंज होते है कि हम कल्पना भी न कर पाए, इतने विचित्र होते है। अगर कोई आपकी उपेक्षा करे तो वह शत्रु से भी ज्यादा मालूम पडता है। क्योकि शत्रु आपकी उपेक्षा नही करता। वह आपको काफी मान्यता देता है।

हम दुख के लिए भी उत्सुक है—कम-से-कम दुख तो दो, अगर सुख न दे सको। कुछ तो दो, दुख भी दोगे तो चलेगा, लेकिन दो। इसलिए हम आतुर है चारो तरफ, और सवेदनशील है। हम अपनी सारी इन्द्रियो को चारो तरफ सजग रखते है, एक ही काम के लिए कि कही से दुख आ रहा हो तो चूक न जाए। तो

उसे जल्दी से ले ले। कही और कोई न ले ले। कही अवसर न खो जाए। यह दुख हमारे रहने की वजह है, जीने की वजह है।

तो महावीर की अहिंसा का यह अर्थ है कि दूसरे को दुख मत देना, क्योकि महावीर तो कहते ही यह है कि दूसरे को न कोई दुख दे सकता और न कोई सुख दे सकता। महावीर की अहिंसा का यह भी अर्थ नही है कि दूसरे को मारना मत, मार मत डालना। क्योकि महावीर भली भाति जानते है कि इस जगत् मे कौन किसको मार सकता है, मार डाल सकता है। महावीर से ज्यादा बेहतर और कौन जानता होगा यह कि मृत्यु असम्भव है। मरता नही कुछ। तो महावीर का यह मतलब तो कतई नही हो सकता कि मारना मत, मार मत डालना किसी को। क्योकि महावीर तो भली भाति जानते है। और अगर इतना भी नही जानते तो महावीर के महावीर होने का कोई अर्थ नही रह जाता।

लेकिन महावीर के पीछे चलने वाले बहुत साधारण ..साधारण परिभाषाओ का ढेर इकट्ठा कर दिए है। कहते हैं, अहिंसा का अर्थ यह है कि मुह पर पट्टी बाध लेना। कि अहिंसा का अर्थ यह है कि सभल कर चलना कि कोई कीडा न मर जाए, कि—रात पानी मत पी लेना, कि कही कोई हिंसा न हो जाए। यह सब ठीक है। मुह पर पट्टी बाधना कोई हर्जा नही है, पानी छानकर पी लेना बहुत अच्छा है। पैर सभाल कर रखना, यह भी बहुत अच्छा है, लेकिन इस भ्रम मे नही कि आप किसी को मार सकते है। इस भ्रम मे नही। मत देना किसी को दुख, बहुत अच्छा है। लेकिन इस भ्रम मे नही कि आप किसी को दुख दे सकते है।

मेरे फर्क को आज समझ लेना। मैं यह नही कह रहा हू कि आप जाना और मारना और काटना क्योकि मार तो कोई सकते ही नही। यह मैं नही कह रहा हू। महावीर की अहिंसा का अर्थ ऐसा नही है, महावीर की अहिंसा का अर्थ ठीक वैसा है जैसे बुद्ध की तथाता का। इसे थोडा समझ लें। महावीर की अहिंसा का अर्थ वैसा है जैसे बुद्ध की तथाता का। तथाता का अर्थ होता टोटल एक्सैप्टेबिलिटी, जो जैसा है वैसा ही हमे स्वीकार है। हम कुछ हेर-फेर न करेंगे।

अब एक चीटी चल रही है रास्ते पर, हम कौन है जो उसके रास्ते मे किसी तरह का हेर-फेर करने जाए ? अगर मेरा पैर भी पड जाए तो मैं उसके मार्ग पर हेर-फेर करने का कारण और निमित तो बन जाता हू। और मार्ग बहुत है। वह चीटी अभी जाती थी अपने बच्चो के लिए शायद भोजन जुटाने जा रही हो। पता नही उसकी अपनी योजनाओ का जगत् है। मैं उसके बीच मे न जाऊ। ऐसा नही है कि न आने से मैं बच पाऊगा, फिर भी आ सकता हू। लेकिन महावीर कहते हैं, मैं अपनी तरफ से बीच मे न आऊ। जरूरी नही है कि मैं ही चीटी पर पैर रखू तब वह मरे। चीटी खुद मेरे पैर के नीचे आकर मर सकती है। वह चीटी जाने, वह

उसकी योजना जाने। महावीर जानते है कि यह जीवन के पथ पर प्रत्येक अपनी योजना मे सलग्न है। वह योजना छोटी नही है। वह योजना बडी है, जन्मो-जन्मो की है। वह कर्मो का बडा विस्तार है। उसका। उसके अपने कर्मों की, फलो की लम्बी यात्रा है। मैं किसी की यात्रा पर किसी भी कारण से बाधा न बनू। मैं चुपचाप अपनी पगडडी पर चलता रहू। मेरे कारण निमित्त के लिए भी किसी के मार्ग पर कोई व्यवधान खडा न हो। मैं ऐसा हो जाऊ, जैसे हू ही नही।

अहिंसा का महावीर का अर्थ है कि ऐसा हो जाऊ, जैसे मैं हू ही नही। यह चीटी यहा से ऐसी ही गुजर जाती है जैसे कि मैं इस रास्ते पर चला ही नही था, और ये पक्षी इन वृक्षो पर ऐसे ही बैठे रहते हैं जैसे कि मैं इन वृक्षो के नीचे बैठा ही नही था। ये लोग, इस गाव के, ऐसे ही जीते रहते जैसे मैं इस गाव से गुजरा ही नही था। जैसे मै नही हू। महावीर का गहनतम जो अहिंसा का अर्थ है वह है एब्सेंस, जैसे मैं नही हू। मेरी प्रजैन्सी कही अनुभव न हो, मेरी उपस्थिति कही प्रगाढ न हो जाए, मेरा होना कही किसी के होने मे जरा-सा भी अडचन, व्यवधान न बने। मैं ऐसे हो जाऊ जैसे नही हू। मैं जीते जी मर जाऊ .मै जीते जी मर जाऊ।

हमारी सब की चेष्टा क्या है? अब इसे थोडा समझें तो हमे ख्याल मे आसनी से आ जाएगा, पर बहुत आयाम से समझना पडेगा। हम सबकी चेष्टा क्या है? कि हमारी उपस्थिति अनुभव हो, दूसरा जाने कि मैं हू, मौजूद हू। हमारे सारे उपाय हमारी उपस्थिति प्रतीत हो। इसलिए राजनीति इतनी प्रभावी हो जाती है। क्योकि राजनीतिक ढग से आपकी उपस्थिति जितनी प्रतीत हो सकती है और किसी ढग से नही हो सकती है। इसलिए राजनीति पूरे जीवन पर छा जाती है। अगर हम राजनीति का ठीक-ठीक अर्थ करे तो उसका अर्थ है, इस बात की चेष्टा कि मेरी उपस्थिति अनुभव हो। मैं कुछ हू, मैं ना-कुछ नही हू। लोग जाने मैं चुभू, मेरे काटे जगह-जगह अनुभव हो, लोग ऐसे न गुजर जाए कि 'जैसे' मैं नही था। और महावीर कहते हैं कि मैं ऐसे गुजर जाऊ कि पता चले कि मैं नही था, था ही नही।

अब अगर हम इसे ठीक से समझें—उपस्थिति अनुभव करवाने की कोशिश का नाम हिंसा है, बायलैंस है। और जब भी हम किसी को कोशिश करवाते हैं अनुभव करवाने की कि मै हूं, तभी हिंसा होती है। चाहे पति अपनी पत्नी को बतला रहा हो कि समझ ले कि मैं हू, चाहे पत्नी समझा रही हो कि क्या तुम समझ रहे हो कि कमरे मे अखबार पढ रहे हो तो तुम अकेले हो। मैं यहा हू। पत्नी अखबार की दुश्मन हो सकती है क्योकि अखबार आड बन सकता है, उसकी अनुपस्थिति हो जाती है। अखबार को फाडकर फेंक सकती है। किताबें हटा सकती है। रेडियो बन्द कर सकती है। और पति बेचारा इसलिए रेडियो खोले है, अखबार आडा किए हुए है कि कृपा करके तुम्हारी उपस्थिति अनुभव न हो। हम सब इस

चेष्टा मे लगे है कि मेरी उपस्थिति दूसरे को अनुभव हो और दूसरे की उपस्थिति मुझे अनुभव न हो। यही हिंसा है। और यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जब मैं चाहूगा कि मेरी उपस्थिति आपको पता चले, तो मैं यह भी चाहूगा कि आपकी उपस्थिति मुझे पता न चले क्योकि दोनो एक साथ नहीं हो सकता। मेरी उपस्थिति आपको पता चले, वह तभी पता चल सकती है जब आपकी उपस्थिति को मैं ऐसा मिटा दू, जैसे है ही नही। हम सबकी कोशिश यह है कि दूसरे की उपस्थिति मिट जाए और हमारी उपस्थिति सघन, कडिस्ड हो जाए। यही हिंसा है।

अहिंसा इसके विपरीत है। दूसरा उपस्थित हो और इतनी तरह उपस्थित हो कि मेरी उपस्थिति मे कोई बाधा न पडे। मैं ऐसे गुजर जाऊ भीड से कि किसी को पता भी न चले कि मैं था। अहिंसा का गहन अर्थ यही है—अनुपस्थित व्यक्तित्व। इसे हम ऐसा कह सकते हैं और महावीर ने ऐसा कहा है—अहकार हिंसा है और निरहकारिता अहिंसा है। मतलब वही है। वह दूसरे को अपनी उपस्थिति प्रतीत करवाने की जो चेष्टा है। कितनी कोशिश मे हम लगे हैं, शायद सारी कोशिश यही है। ढग कोई भी हो। चाहे हम हीरे का हार पहनकर खडे हो गए हो और चाहे हमने लाखो के वस्त्र डाल रखे हो और चाहे हम नग्न खडे हो गए हो। कोशिश यही है क्या कि दूसरा अनुभव करे कि मैं हू। मैं चैन से न बैठने दूगा। तुम्हे मानना ही पडेगा कि मैं हू।

छोटे-छोटे बच्चे इस हिंसा मे निष्णात होना शुरू हो जाते हैं। कभी आपने ख्याल किया होगा कि छोटे-छोटे बच्चे अगर घर मे मेहमान हो तो ज्यादा गडबड शुरू करते है। घर मे कोई न हो तो अपने बैठे रहते हैं। क्यो ? आपको हैरानी होती है कि बच्चा ऐसे तो शान्त बैठा था, घर मे कोई आ गया तो वह पच्चीस सवाल उठाता है, बार-बार उठकर आता है, कोई चीज गिराता है। वह कर क्या रहा है ? वह सिर्फ अटेंशन प्रह्वोक कर रहा है। वह कह रहा है, हम भी हैं यहा। मैं भी हू। और आप उससे कह रहे है, शान्त बैठो। आप यह कोशिश कर रहे है कि तुम नही हो। वह बूढा भी वही कर रहा है, बच्चा भी वही कर रहा है। आप कहते है, शान्त बैठो। वह बच्चा भी हैरान होता है कि जब घर मे कोई नहीं होता है तो बाप नही कहता कि शान्त बैठो। अभी कुछ नही कहता, कितने चिल्लाओ, घूमो, फिरो, चुप बैठा रहता है। घर मे कोई मेहमान आते है तभी यह कहता है शान्त बैठो। क्या' बात क्या है ? घर मे जब मेहमान आते है तभी तो वक्त है शान्त न बैठने का।

दोनो के बीच जो सघर्ष है वह इस बात का है कि बच्चा असर्ट करना चाहता है। वह भी घोषणा करना चाहता है कि मैं भी यहा हू। महाशय, यहा मैं भी हू। इसलिए कभी-कभी बच्चा मेहमानो के सामने ऐसी जिद्द पकड जाता है कि मा-बाप हैरान होते हैं कि ऐसी जिद्द उसने कभी नही पकडी थी। उनके सामने वह

दिखाना चाहता है कि इस घर मे मालिक कौन है, किसकी चलती है, आखिर मे कौन निर्णायक है। छोटे-छोटे बच्चे भी पालिटिक्स भलीभाति सीखने लगते है। उसका कारण है कि हमारा पूरा का पूरा आयोजन, हमारा पूरा समाज, हमारी पूरी सस्कृति अहकार की सस्कृति है, अधर्म की। सारी दुनिया मे वही है। आदमी अब तक धर्म की सस्कृति विकसित ही नही कर पाया। अब तक हम यह कोशिश ही जाहिर न कर पाए, और हम सुनते नही महावीर वगैरह की, जो कि इस तरह की सस्कृति के स्रोत बन सकते थे। वे कहते है कि नही उपस्थिति तुम्हारी जितनी पता न चले, उतना ही मगल है। तुम्हारे लिए भी, दूसरे के लिए भी। तुम ऐसे हो जाओ जैसे हो ही नही।

महावीर घर छोडकर जाना चाहते थे तो मा ने कहा—'मत जाओ, मुझे दुख होगा।' महावीर नही गए, क्योकि इतनी भी जाने की जिद से होने का पता चलता है। आग्रह था कि नही जाऊगा। अगर महावीर की जगह कोई भी होता तो उसका त्याग और जोश मारता—क्या कहते है गुजराती मे आप, जुस्सा। उसका जोश और बढता। वह कहता, कौन मा, कौन पिता ? सब सम्बन्ध बेकार है। यह सब ससार है। जितना समझाते, उतना वे शिखर पर चढते। अधिक सन्यासी, अधिक त्यागी आपके समझाने की वजह से हो गए हैं। भूल के मत समझाना। कोई कहे जाते हो, कहना नमस्कार। तो वह आदमी जाने के पहले पच्चीस दफे सोचेगा कि जाना कि नही जाना। आप घेरा बाध कर खडे हो गए, आपने अटेंशन देनी शुरू कर दिया। आपने कहा कि उनको जाना महत्वपूर्ण हो गया। जरूरी हो गया। अब यह व्यक्तित्व की लडाई हो गई। अब सिद्ध करना पडेगा। इतने त्यागी न हो दुनिया मे, अगर आसपास के लोग इतना आग्रह न करे—तो त्यागी एकदम कम हो जाएगे। इसमे नब्बे प्रतिशत तो बिल्कुल ही न हो और तब दुनिया का हित हो। क्योकि जो दस प्रतिशत बचे उनके त्याग की एक गरिमा हो। उनका एक अर्थ हो। लेकिन आप रोकते हैं, वही कारण बन जाता है।

महावीर रुक गए, मा भी थोडी चकित हुई होगी, ऐसा कैसा त्याग ! फिर महावीर ने दुबारा न कहा कि एक दफा और निवेदन करता हू कि जाने दो। बात ही छोड दी। मा के मरने तक फिर बोले ही नही। कहा ही नही कुछ। मा ने भी सोचा होगा, जरूर सोचा होगा कि यह कैसा त्याग ! क्योकि त्यागी तो एकदम जिद्द बाधकर खडा हो जाता है। मा मर गयी। घर लौटते वक्त अपने बडे भाई को महावीर ने कहा—कब्रिस्तान से लौटते वक्त, मरघट से, कि अब मैं जा सकता हू ? क्योकि वह मा कहती थी, उसे दुख हो गया। तो बात समाप्त हो गई, अब वह है ही नही।

भाई ने कहा, तू आदमी कैसा है ! इधर इतना बडा दुख का पहाड टूट पड़ा हमारे ऊपर, कि मा मर गई, और तू अभी छोडकर जाने की बात करता है !

भूल कर ऐसी बात मत करना ।

महावीर चुप हो गए। फिर दो वर्ष तक भाई भी हैरान हुआ कि यह त्याग करेंगा। क्योंकि वे तो अब चुप ही हो गए। उन्होंने फिर दोबारा बात न कही। इतनी उपस्थिति को हटा लेने का नाम अहिंसा है।

दो वर्ष में घर के लोगो को खुद चिन्ता होने लगी कि कही हम ज्यादती तो नही करते हैं। भाई को पीडा होने लगी, क्योंकि देखा, कि महावीर घर मे है तो, लेकिन करीब-करीब ऐसे जैसे न हो—एक घोस्ट एक्जिस्टेंस रह गया, शैडो ऐग्जिस्टेंस। कमरे से ऐसे गुजरते हैं कि पैर की आवाज न हो। घर मे किसी को कुछ कहते नही कि किसी को पता चले कि मैं भी हू। कोई सलाह नही देते, कोई उपदेश नही देते। बैठे देखते रहते है, जो हो रहा है, हो रहा है। उसमे वह उसके साक्षी हो गए है। कई-कई दिनो तक घर के लोगो को ख्याल ही न आता कि महावीर कहा है। बडा महल था। फिर खोज-बीन करते कि महावीर कहा है, तो पता चलता। खोज-बीन करने से पता चलता।

तो भाई ने और सबने बैठकर सोचा कि हम कही ज्यादती तो नही कर रहे है, कही हम भूल तो नही कर रहे। हम सोचते है कि हम रोकते हैं इसलिए रुक जाता है। लेकिन हमे ऐसा लगता है कि इसलिए रुक जाता है कि नाहक, इतनी भी उपस्थिति हमे क्यो अनुभव हो, हमे इतनी भी पीडा क्यो हो कि हमारी बात तोडकर गया है। लेकिन लगता हमे ऐसा है कि वह जा चुका है, अब वह घर मे है नही। उन सबने मिलकर कहा—यह पृथ्वी पर घटी हुई अकेली घटना है—उन सबने, घर के लोगो ने मिलकर कहा कि आप तो जा ही चुके है एक अर्थ मे। अब ऐसा लगता है कि पार्थिव देह पडी रह गई है, आप इस घर मे नही है। तो हम आपके मार्ग से हट जाते है क्योंकि हम अकारण आपको रोकने का कारण न बने। महावीर उठे और चल पडे।

यह अहिंसा है। अहिंसा का अर्थ है, गहनतम अनुपस्थिति। इसलिए मैंने कहा कि बुद्ध का जो तथाता का भाव है, वही महावीर की अहिंसा का भाव है। तथाता का अर्थ है—जैसा है, स्वीकार। अहिंसा का भी यही अर्थ है कि हम परिवर्तन के लिए जरा भी चेष्टा न करेगे। जो हो रहा है ठीक है, जो हो जाए ठीक है। जीवन रहे तो ठीक है, मृत्यु आ जाए तो ठीक है। हमारी हिंसा किस बात से पैदा होती है? जो हो रहा है वह नहीं, जो हम चाहते है वह हो। तो हिंसा पैदा होती है। हिंसा है क्या? इसलिए युग मे जितना ज्यादा परिवर्तन की आकाक्षा भरती है लोग उतने ही हिंसक होते चल जाते है। आदमी जितना चाहता है, ऐसा हो, उतनी हिंसा बढ जाएगी।

महावीर की अहिंसा का अर्थ अगर हम गहरे मे खोले·· गहरे मे, उघाडें उसकी हृदय मे, तो उसका अर्थ यह है कि जो है उसके लिए हम राजी है। हिंसा का कोई

सवाल नही है, कोई बदलाहट नही करनी है। आपने चाटा मार दिया, ठीक है। हम राजी हैं, हमे अब और कुछ भी नही करना है, बात समाप्त हो गई। हमारा कोई प्रत्युत्तर नही। इतना भी नही जितना जीसस का हैं। जीसस कहते है, दूसरा गाल सामने कर दो। महावीर इतना भी नही कहते कि जो चाटा मारे, तुम दूसरा गाल उसके सामने करना, क्योकि यह भी एक उत्तर है। एक 'शॉर्ट आफ आन्सर।' है तो उत्तर—चाटा मारना भी एक उत्तर है, दूसरा गाल कर देना भी एक उत्तर है। लेकिन तुम राजी न रहे, बात जितनी थी उतने से तुमने कुछ न कुछ किया।

महावीर कहते हैं—करना ही हिंसा है, कर्म की हिंसा है। अकर्म अहिंसा है। चाटा मार दिया है, ठीक हैं जैसे एक वृक्ष से सूखा पत्ता गिर गया है। ठीक है, आप अपनी राह चले गए। एक आदमी ने चाटा मार दिया, आप अपनी राह चले गए। एक आदमी ने गाली दी, आपने सुनी और आगे बढ गए। क्षमा भी करने का सवाल नही है क्योकि वह भी कृत्य है। कुछ करने का सवाल नही हैं। पानी मे उठी लहर और अपने आप बिखर जाती हैं। ऐसा ही चारो तरफ लहरें उठती रहेंगी कर्म की, बिखरती रहेंगी। तुम कुछ मत करना। तुम चुपचाप गुजरते जाना। पानी मे लहर उठती है, मिटानी तो नहीं पडती, अपने से मिट जाती है।

इस जगत् मे जो तुम्हारे चारो तरफ हो रहा है, उसे होते रहने देना ह, वह अपने से उठेगा और गिर जाएगा। उसके उठने के नियम है, उसके गिरने के नियम हैं, तुम व्यर्थ बीच मे मत आना। तुम चुपचाप दूर ही रह जाना। तुम तटस्थ ही रह जाना। तुम ऐसा ही जानना कि तुम नही थे। जब कोई चाटा मारे तब तुम ऐसा हो जाना कि तुम नहीं हो, तो उत्तर कौन देगा। गाल भी कौन करेगा, गाली कौन देगा, क्षमा कौन करेगा ? तुम ऐसा जानना कि तुम नही हो। तुम्हारी ऐब्सेंस मे, तुम्हारी अनुपस्थिति मे जो भी कर्म की धारा उठेगी वह अपने से पानी मे उसकी लहर की तरह खो जाएगी। तुम उसे छूने भी मत जाना। हिंसा का अर्थ है, मैं चाहता हू, जगत् ऐसा हो।

उमर खैयाम ने कहा है—मेरा वश चले और प्रभु तू मुझे शक्ति दे तो तेरी सारी दुनिया को तोडकर दूसरी बना दू। अगर आपका भी वश चले तो दुनिया को आप ऐसी ही रहने देंगे जैसी है ? दुनिया ! दुनिया तो बहुत बडी चीज है, कुछ आप ऐसा न रहने देंगे, छोटा-मोटा भी जैसा हैं। उमर खैयाम के इस वक्तव्य मे सारे मनुष्यो की कामना तो प्रगट हुई ही हैं, और हिंसा भी। अगर महावीर से कहा जाए, अगर आपको पूरी शक्ति दे दी जाए कि यह दुनिया कैसी हो, तो महावीर कहेंगे, जैसी है, वैसी हो। ऐज इट इज। मैं कुछ भी न करूगा।

लाओत्से ने कहा है—श्रेष्ठतम सम्राट् वह है जिसका प्रजा को पता ही नही चलता श्रेष्ठतम सम्राट् वह है जिसका प्रजा को पता ही नही चलता, वह है भी

या नही। महावीर की अहिंसा का अर्थ है कि ऐसे हो जाओ कि तुम्हारा पता ही न चले और हमारी सारी चेष्टा ऐसी है कि हम इस भांति कैसे हो जाए कि कोई न बचे जिसे हमारा पता न हो कोई न बचे, जिसे हमारा पता न हो। सारी अटेंशन हम पर फोकस हो जाए। सारी दुनिया हमे देखे, हम हो आखो के बीच मे, सब आखे हम पर मुड जाए। यही हिंसा है। और यही हिंसा है कि हम पूरे वक्त चाहते रहे कि ऐसा हो, ऐसा न हो। हम पूरे वक्त चाह रहे है। क्यो चाह रहे है? चाहने का कारण है। वह जो धर्म की परिभाषा मे मैने आपसे कहा—दौड रहे है, वह मकान मिले, वह धन मिले, वह पद मिले, तो हिंसा मे गुजरना पडेगा। वासना हिंसा के बिना नही हो सकती। किसी वासना की दौड हिंसा के बिना नही हो सकती। हम ऐसा समझ सकते है कि वासना के लिए जिस ऊर्जा की जरूरत पडती है वह हिंसा का रूप लेती है। इसलिए जितना वासनाग्रस्त आदमी, उतना वायलेंट, उतना हिंसक होगा। जितना वासनामुक्त आदमी है उतना अहिंसक होगा।

इसलिए जो लोग समझते है कि महावीर कहते है कि अहिंसा इसलिए है कि तुम मोक्ष पा लोगे वे गलत समझते है। क्योकि अगर मोक्ष पाने की वासना है तो आपकी अहिंसा भी हिंसक हो जाएगी। और बहुत से लोगो की अहिंसा हिंसक है। अहिंसा भी हिंसक हो सकती है। आप इतने जोर से अहिंसा के पीछे पड सकते है कि आपका पडना बिल्कुल हिंसक हो जाए। लेकिन जो मोक्ष की वासना से अहिंसा के पीछे जाएगा उसकी अहिंसा हिंसक हो जाएगी। इसलिए तथाकथित अहिंसक साधको को अहिंसक साधको को अहिंसक नही कहा जा सकता। वे इतने जोर से लगे है उसके पीछे, पाकर ही रहेगे। सब दाव पर लगा देंगे, लेकिन पाकर रहेगे। वह जो पाकर रहने का भाव है उसमे बहुत गहरी हिंसा है।

महावीर कहते है, पाने को कुछ भी नही है जो पाने योग्य है वह पाया ही हुआ है। बदलने को कुछ भी नही है क्योकि यह जगत् अपने ही नियम से बदलता रहता है। क्राति करने का कोई कारण नही, क्राति होती ही रहती है। कोई क्राति-भ्राति करता नही, क्राति होती रहती है। लेकिन क्रातिकारी को ऐसा लग रहा है, वह क्राति कर रहा है। उसका लगना वैसा ही है जैसे सागर मे एक बडी लहर उठे और एक बहता हुआ तिनका लहर के मौके पर पड जाए और ऊपर चढ जाए और ऊपर चढकर कहे कि लहर मैंने ही उठायी है। बस वैसा है।

सुना है मैंने कि जगन्नाथ का रथ निकलता था, तो एक बार एक कुत्ता रथ के आगे हो लिया। बडे फूल बरसते थे, बडी नमस्कार होती थी। लोग लोट-लोटकर जमीन पर प्रणाम करते थे। और कुत्ते की अकड बढती गयी। उसने कहा आश्चर्य! न केवल लोग नमस्कार कर रहे है, बल्कि मेरे पीछे स्वर्ण रथ भी चलाया जा रहा है। मैं ऐसा हू ही, इसमे कोई कारण भी नही है। हम सबका चित्त भी ऐसा ही है।

रूस मे चीजैव्स्की को स्टैलिन ने कारागृह मे डलवा दिया और मरवा डाला। क्योकि उसने यह कहा कि क्रातिया आदमियो के किए नही होती, सूरज के प्रभाव से होती है। और उसके कहने का कारण ज्योतिष का वैज्ञानिक अध्ययन था। उसने हजारो साल की क्रातियो के सारे के सारे व्योरे की जाच पडताल की और सूरज के ऊपर होने वाले परिवर्तनो की जाच पडताल की। उसने कहा—हर साढे ग्यारह वर्ष मे सूरज पर इतना वडा परिवर्तन होता है वैद्युतिक कि उसके परिणाम पर पृथ्वी पर रूपातर होते हैं। और हर नव्वे वर्ष मे सूरज पर इतना बडा परिवर्तन होता है कि उसके परिणाम मे पृथ्वी पर क्रातिया घटित होती है। उसने सारी क्रातिया, सारे उपद्रव, सारे युद्ध सूरज पर होने वाले काज्मिक परिणामो से सिद्ध किए।

और सारी दुनिया के वैज्ञानिक मानते है कि चीजैव्स्की ठीक कह रहा था। लेकिन स्टैलिन कैसे माने। अगर चीजैव्स्की ठीक कह रहा था तो १६१७ की क्राति सूरज पर हुई किरणो के फर्क से हुई है, तो फिर लेनिन और स्टैलिन और ट्राट्स्की, इनका क्या होगा? चीजैव्स्की को मरवा डालने जैसी वात थी। लेकिन स्टैलिन के मरने के वाद चीजैव्स्की का फिर रूस मे काम शुरू हो गया। और रूस के ज्योतिप विज्ञानी कह रहे हैं कि वह ठीक कहता है। पृथ्वी पर जो रूपातरण होते है, उनके कारण कास्मिक हैं। उनके कारण जागतिक है। सारे जगत् मे जो रूपातरण होते है, उनके कारण जागतिक है।

आप जानकर हैरान होगे कि एक वहुत वडी प्रयोगशाला प्राग मे, चेक गवर्नमेट ने बनायी है, जो ऐस्ट्रोनामिकल वर्थ कण्ट्रोल पर काम कर रही है और उनके परिणाम ६८ प्रतिशत सही आए। और जो आदमी मेहनत कर रहा है वहा, उस आदमी का दावा है कि आने वाले पन्द्रह वर्षो मे किसी तरह की गोली, किसी तरह की और कृत्रिम साधन की वर्थ कण्ट्रोल के लिए जरूरत नही रहेगी, गर्भ-निरोध के लिए। स्त्री जिस दिन पैदा हुई है और जिस दिन उसका स्वय का गर्भ धारण हुआ था, इसकी तारीखे, और सूर्य पर और चाद-तारो पर होने वाले परिवर्तनो के हिसाब से वह तय कर लेता है कि यह स्त्री किन-किन दिनो मे गर्भधारण कर सकती है। वे दिन छोड दिए जाए सभोग के लिए तो पूरे जीवन मे कभी गर्भ-धारण नही होगा। अठानवे प्रतिशत दस हजार स्त्रियो पर किए गए प्रयोग मे सफल हुआ है। वह यह भी कहता है कि स्त्री अगर चाहे कि वच्चा, लडका पैदा हो या लडकी तो उसकी भी तारीखे तय की जा सकती हैं क्योकि वह भी कास्मिक प्रभावो से होता है, वह भी आपसे नही हो रहा है। ज्योतिप के वडे जोर से वापस लौट आने की सम्भावना है।

महावीर कहते हैं—घटनाए घट रही हैं, तुम नाहक उनको घटाने वाले मत बनो। तुम यह मत सोचो कि मैं यह करके रहूगा। तुम इतना ही करो तो काफी

है कि तुम न करने वाले हो जाओ।

अहिंसा का अर्थ है—अकर्म। अहिंसा का अर्थ है—मैं कुछ न बदलूंगा, मैं कुछ न चाहूंगा। मैं अनुपस्थित हो जाऊंगा। अहिंसा पर थोड़ी और बात करनी पड़े, कल।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ।।१।।

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म । जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते है ।

अहिंसा : जीवेषणा की मृत्यु

पाचवा प्रवचन दिनाक २२ अगस्त, १६७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

धर्म मगल हे। कौन-सा धर्म ? अहिंसा, संयम और तप । अहिंसा धर्म की आत्मा है । कल अहिसा पर थोडी बाते मैने आपसे कही, थोडे और आयामो से अहिंसा को ममझ लेना जरूरी है।

हिंसा पैदा ही क्यो होती हे ? हिंसा जन्म के साथ ही क्यो जुडी हे ? हिसा जीवन की पर्त-पर्त पर क्यो फैली है ? जिसे हम जीवन कहते हैं, वह हिसा का ही तो विस्तार है। ऐसा क्यो हे ?

पहली वात और अत्यधिक आधारभूत—वह है जीवेपणा । जीने की जो आकाक्षा है, उससे ही हिंसा जन्मती है। और जीने को हम सब आतुर हैं। अकारण ही जीने को आतुर है। जीवन से कुछ फलित भी न होता हो, तो भी जीना चाहते है । जीवन से कुछ न भी मिलता हो, तो भी जीवन को खीचना चाहते हैं। सिर्फ राख ही हाथ लगे जीवन मे, तो भी हम जीवन को दोहराना चाहते है ।

विन्सेट वानगाग के जीवन पर एक वहुत अद्भुत किताव लिखी गयी है। और किताव का नाम है—लस्ट फार लाइफ, जीवेपणा । अगर महावीर के जीवन पर कोई किताव लिखनी हो तो लिखना पडेगा, 'नो लस्ट फार लाइफ' । जीवेपणा नही। जीने का एक पागल, अत्यन्त विक्षिप्त भाव ह हमारे मन मे । मरने के आखिरी क्षण तक भी हम जीना ही चाहते हैं। और यह जो जीने की कोशिश है, यह जितनी विक्षिप्त होती है उतना ही हम दूसरे के जीवन के मूल्य पर भी जीना चाहते हैं। अगर ऐसा विकल्प आ जाए कि सारे जगत् को मिटाकर जिऊ, मुझे वचने की सुविधा हो तो मैं राजी हो जाऊगा। सबको विनाश कर दू, फिर भी मैं बच सकता हू तो मै सबके विनाश के लिए तैयार हो जाऊगा। जीवेपणा की इस

विक्षिप्तता से ही हिंसा के सब रूप जन्मते हैं। मरने की आखिरी घड़ी तक भी आदमी जीवन को जोर से पकड़े रहना चाहता है। बिना यह पूछे हुए कि किसलिए ? जी कर भी क्या होगा ? जीकर भी क्या मिलेगा ?

मुल्ला नसरुद्दीन को फासी की सजा हो गयी थी। जब उसे फासी के तख्ते के पास ले जाया गया तो उसने तख्ते पर चढने से इन्कार कर दिया। सिपाही बहुत चकित हुए। उन्होंने कहा कि क्या बात है ?

उसने कहा कि सीढिया बहुत कमजोर मालूम पडती है। अगर गिर जाऊ तो तुम्हारे हाथ पैर टूटेंगे कि मेरे ! फासी के तख्ते पर चढना है। सीढिया कमजोर है, मैं इन सीढियो पर नही चढ सकता। नयी सीढिया लाओ।

उन सिपाहियो ने कहा—'पागल हो गए हो ! मरने वाले आदमी को क्या प्रयोजन है ?'

नसरुद्दीन ने कहा—'अगले क्षण का क्या भरोसा ! शायद बच जाऊ, तो लगडा होकर मैं नही बचना चाहता हू। और एक बात पक्की है कि जब तक मैं मर ही नही गया हू, तब तक मैं जीने की कोशिश करूगा। सीढिया नयी चाहिए।'

नयी सीढिया लगायी गयी, तब वह चढा। फिर भी बहुत सभल कर चढा। जब उसके गले में फदा ही लगा दिया गया, और मजिस्ट्रेट ने कहा—'नसरुद्दीन, तुझे कोई आखिरी बात तो नही कहनी है ?'

नसरुद्दीन ने कहा, 'येस, आइ हैव टु से समथिग। दिस इज गोइग टु बी ए लैसन टु मी।' यह जो फासी लगायी जा रही है, यह मेरे लिए एक शिक्षा सिद्ध होगी।

मजिस्ट्रेट समझा नही। उसने कहा कि अब शिक्षा से भी क्या फायदा होगा ?

नसरुद्दीन ने कहा कि अगर दोबारा जीवन मिला, तो जिस वजह से फासी लग रही है, वह काम जरा मैं सभल कर करूगा। दिस इज गोइग टु बी ए लैसन टु मी। गले मे फदा लगा हो तो भी आदमी दूसरे जीवन के बाबत सोच रहा होता है। दूसरा जीवन मिले तो इस बार जिस भूल-चूक से पकडे गए है और फासी लग रही है वह भूल-चूक नही करनी है—ऐसा नही—सभल कर करनी है। दिस इज गोइग टु बी ए लैसन टु मी।

ऐसा ही हमारा मन है। किसी भी कीमत पर जीना है। महावीर यही पूछते है कि जीना क्यो है ? बडा गहन सवाल उठाते है। शायद जिन्होने पूछा है, जगत् क्यो है ? जिन्होने पूछा है, सृष्टि किसने रची ? जिन्होने पूछा है, मोक्ष कहा है ? ये सवाल इतने गहरे नही है। ये सवाल बहुत ऊपरी हैं। महावीर पूछते है, जीना ही क्यो है ? व्हाइ दिस लस्ट फार लाइफ ? और इसी प्रश्न से महावीर का सारा चिन्तन और सारी साधना निकलती है।

तो महावीर कहते हैं, यह जीने की बात ही पागलपन है। यह जीने की आकाक्षा

ही पागलपन है । और इस जीने की आकांक्षा से जीवन बचता हो, ऐसा नहीं है, केवल दूसरे के जीवन को नष्ट करने की दौड़ पैदा होती है । बच जाता तो भी ठीक था । बचता भी नहीं है । कितना भी चाहो कि जिऊँ, मौत खड़ी है और आ जाती है । कितने लोग इस जमीन पर हमसे पहले जीने की कोशिश कर चुके हैं । आखिर अंतत मौत ही हाथ लगती है । तो महावीर कहते हैं, जीवन का इतना पागलपन कि हम दूसरे को विनष्ट करने को तैयार हैं और अन्त में मौत ही हाथ लगती है । महावीर कहते हैं—ऐसे जीवन के पागलपन को मैं छोड़ता हूँ जिससे दूसरे के जीवन को नष्ट करने के लिए मैं तैयार होता और अपने को बचा भी नहीं पाता । जो व्यक्ति जीवेषणा छोड़ देता है वही अहिंसक है । क्योंकि जब मुझे कोई आग्रह ही नहीं है कि जिऊँ ही, तब मैं किसी का विनाश करने के लिए तैयार नहीं हो सकता । इसलिए महावीर की अहिंसा के प्राण में प्रवेश करना हो, तो वह प्राण है—'जीवेषणा का त्याग' । इसका यह अर्थ नहीं है कि महावीर मरने की आकांक्षा रखते हैं । यह भ्रांति हो सकती है ।

फ्रायड ने इस सदी में मनुष्य के भीतर दो आकांक्षाओं को पकड़ा है । एक तो जीवेषणा और एक मृत्यु-एषणा । एक को वह कहता है, इरोज, जीवन की इच्छा । और एक को कहता है थानाटोस, मृत्यु की इच्छा । वह कहता है कि जब जीवन की इच्छा क्षीण हो जाती है तो मृत्यु की इच्छा में बदल जाती है । यह बात ठीक है । लोग आत्महत्या भी तो करते हैं । तो क्या महावीर राजी होंगे ? आत्म-हत्या करने वाले को कहेंगे कि ठीक है तू ! अगर जीवेषणा गलत है तो फिर मृत्यु की आकांक्षा और मृत्यु को लाने की कोशिश ठीक होनी चाहिए ? फ्रायड कहता है—जिन लोगों की जीवेषणा क्षीण हो जाती है, वे फिर मृत्यु-एषणा से भर जाते हैं । फिर वे अपने को मारने में लग जाते हैं । आदमी आत्महत्या करता हुआ दिखाई तो पड़ता है । लेकिन फ्रायड की उतनी गहरी समझ नहीं है जितनी महावीर की है । महावीर कहते हैं—आत्महत्या करने वाला भी जीवेषणा से ही पीड़ित है । इसे थोड़ा समझना पड़ेगा ।

कभी आपने किसी आदमी को इस भांति आत्महत्या करते देखा है, जिसकी जीवेषणा नष्ट हो गयी हो ? नहीं । मैं चाहता हूँ एक स्त्री मुझे मिले और नहीं मिलती तो आत्महत्या के लिए तैयार हो जाता हूँ । अगर वह मुझे मिल जाए तो मैं आत्महत्या के लिए तैयार नहीं हूँ । मैं चाहता था कि एक [illegible] और [illegible] और इज्जत के साथ जिऊँ । मेरी इज्जत खो जाती है, मेरी प्रतिष्ठा गिर जाती है—मैं आत्महत्या करने को तैयार हो जाता हूँ । मुझे अगर प्रतिष्ठा वापस मिल जाती है, मुझे [illegible] फिर मिल जाती है तो मैं आखिरी दिनों के [illegible] तक [illegible] । [illegible] जाता है [illegible] इसका अर्थ क्या है ?

महावीर कहते है—यह मृत्यु एषणा नही है। यह केवल जीवन का इतना प्रवल आग्रह है कि मैं कहता हू—मैं इस ढग मे ही जिऊगा। अगर यह ढग मुझे नही मिलता तो मैं मर जाऊगा' अगर यह ढग मुझे नही मिलता तो मर जाऊगा। इसे थोडा ठीक से समझे। मैं कहता हूं, मैं इस स्त्री के साथ ही जिऊगा। यह जीने की आकाक्षा इतनी आग्रहपूर्ण है कि इस स्त्री के विना मैं नही जिऊगा। मैं उस धन, मैं उस भवन, मैं उस पद के साथ ही जिऊगा। अगर वह पद और धन नही है तो मैं नही जिऊगा। यह जीने की आकाक्षा ने एक विशिष्ट आग्रह पकड लिया। यह आग्रह इतना गहरा है कि वह अपने से विपरीत भी जा सकता है। यह आग्रह इतना गहरा है कि अपने से विपरीत वह मरने तक को भी तैयार हो सकता है, लेकिन गहरे में जीवन की ही आकाक्षा है।

इसलिए महावीर इस जगत् मे अकेले चितक है, जिन्होने कहा कि मैं तुम्हे मरने की आज्ञा भी दूगा अगर तुममे जीवेषणा विल्कुल न हो'। सिर्फ अकेले विचारक है सारी पृथ्वी पर और सिर्फ अकेले धार्मिक चिन्तक है जिन्होने कहा कि मैं तुम्हे मरने की भी आज्ञा दूगा; अगर तुममे जीवन की आकाक्षा बिल्कुल न हो। लेकिन जिसमे जीवन की आकाक्षा नही है वह मरना तो चाहेगा। मरने की चाह के पीछे भी जीवन की आकाक्षा ही होगी। उल्टे लक्षणो से बीमारिया नही वदल जाती हैं, जरूरी नही है।

आज से सौ साल पहले चिकित्सा शास्त्रो मे ऐलोपैथी के एक बीमारी का नाम था, वह सौ साल मे खो गया है। उसका नाम था ड्राप्सी। अव उस बीमारी का नाम मेडिकल कितावो मे नही है। हालाकि उस बीमारी के मरीज अव भी अस्पतालो मे है वे नही खो गए। मरीज तो है, लेकिन वह बीमारी खो गयी है। वह बीमारी इसलिए खो गयी कि पाया गया कि वह बीमारी एक नही है, वह सिर्फ सिम्प्टोमैटिक है। ड्राप्सी उस बीमारी को कहते थे जिसमे मनुष्य के शरीर का तरल हिस्सा किसी एक अग मे इकट्ठा हो जाता। जैसे पैरो मे सारी तरलता इकट्ठी हो गयी या पेट मे सारा तरल द्रव्य इकट्ठा हो गया। सव पानी भर गया है, सब तरलता पेट मे इकट्ठी हो गयी है। सारा शरीर सूखने लगा और पेट वढने लगा और सारी तरलता पेट मे आ गयी। उसको ड्राप्सी कहते थे। अगर अस्पताल मे जाए और एक आदमी के दोनो पैरो मे तरल द्रव्य इकट्ठा हो गया और एक आदमी के ऐब्डॉमिन मे सारा तरल द्रव्य इकट्ठा हो गया, तो लक्षण एक है। सौ साल तक यही समझा जाता था, बीमारी एक है। लेकिन पीछे पता चला कि यह तरल द्रव्य इकट्ठे होने के अनेक कारण है। बीमारिया अलग-अलग हैं। यह हृदय की खराबी से भी इकट्ठा हो सकता है। यह किडनी की खराबी से भी इकट्ठा हो सकता है। और जव किडनी की खराबी से इकट्ठा होता है तो बीमारी दूसरी है और जव हृदय की खराबी से इकट्ठा होता है तो बीमारी दूसरी

है। इसलिए वह ड्राप्सी की बीमारी जो थी, नाम, वह समाप्त हो गया। अब पच्चीस बीमारिया हैं, उनके अलग-अलग नाम है। यह भी हो सकता है, लक्षण विल्कुल एक से हो और बीमारी एक न हो। और यह भी हो सकता है कि बीमारिया दो हो, और लक्षण विल्कुल एक हो। लक्षणो से बहुत गहरे नही जाया जा सकता।

महावीर ने 'सथारा' की आज्ञा दी। महावीर ने कहा है—किसी व्यक्ति के अगर जीवन की आकाक्षा शून्य हो गयी हो तो मैं कहता हू, वह मृत्यु मे प्रवेश कर सकता है। लेकिन उन्होने कहा है कि वह भोजन छोड दे, पानी छोड दे। भोजन और पानी छोडकर भी आदमी नव्बे दिन तक नही मरता—कम-से-कम नव्बे दिन जी सकता है, साधारण स्वस्थ आदमी हो तो। और जिस व्यक्ति की जीवन की आकाक्षा चली गयी हो, वह असाधारण रूप से स्वस्थ होता है। क्योकि हमारी सारी बीमारिया जीने की आकाक्षा से पैदा होती है। तो नव्बे दिन तक तो वह मर नही सकता। महावीर ने कहा—वह पानी छोड दे, भोजन छोड दे, लेट जाए, बैठा रहे। आत्महत्याए जितनी भी की जाती हैं क्षणो के आवेश म की जाती हैं। क्षण भी रुक जाए तो आत्महत्या नही हो सकती।

क्षण का एक आवेश होता है। उस आवेश मे आदमी इतना पागल होता है कि कूद पडता है नदी मे। आग लगा लेता है। शायद आग लगाकर जब शरीर जलता है तब पछताता है। लेकिन तब हाथ के बाहर हो गयी होती है बात। जहर पी लेता है। अगर जहर फैलने लगता है, तडफन होती हे, तब पछताता है। लेकिन तब शायद हाथ के बाहर हो गयी हे बात। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि अगर आत्महत्या करने वाले को हम क्षण भर के लिए रोक सके तो वह आत्महत्या नही कर पाएगा। क्योंकि उसकी मैडनेस की जो तीव्रता है वह तरल हो जाती है, विरल हो जाती है, क्षीण हो जाती है।

महावीर कहते है कि मैं आज्ञा देता हू ध्यानपूर्वक मर जाने की। तुम भोजन पानी छोड देना नव्बे दिन। अगर उस आदमी मे जरा-सी भी जीवेषणा होगी तो भाग खडा होगा, लौट आएगा। अगर जीवेषणा विल्कुल न होगी तो ही नव्बे दिन वह रुक पाएगा। नव्बे दिन लम्बा समय है। मन एक ही अवस्था मे नव्बे दिन रह जाए, यह आसान घटना नही है। नव्बे क्षण नही रह पाता। सुबह सोचते थे मर जाएगे, शाम को सोचते हैं कि दूसरे को मार डालें। मन नव्बे दिन··· इसलिए फ्रायड को मानने वाले मनोवैज्ञानिक कहेंगे कि महावीर मे कही-न-कही स्वीसाइडल तत्व है, कही-न-कही आत्महत्यावादी तत्व है। लेकिन मैं आपसे कहता हू—नहीं है। असल मे जिस व्यक्ति मे जीवेषणा ही नही है उसके मरने की या जीने की·· । मृत्यु की एषणा जीवनेषणा का दूसरा पहलू है—विरुद्ध नही है, उसी का अंग है···विरुद्ध नही है, उसी का अग है। इसलिए महावीर ने कोई मृत्यु की

चेष्टा नही की । जिसकी जीवन की चेष्टा ही न रही हो, उसकी मृत्यु की चेष्टा भी नही रह जाती महावीर कहते है कि एक हिस्से को हम फेंक दें, दूसरा हिस्सा साथ ही चला जाता है । सथारा का महावीर का अर्थ है—आत्महत्या नही, जीवेषणा का इतना खो जाना कि पता ही न चले और व्यक्ति शून्य मे लीन हो जाए। आत्महत्या की इच्छा नही, क्योकि जहा तक इच्छा है, वहा तक जीवन की ही इच्छा होगी ।

इसे ठीक से समझ लें । डिजायर इज आलवेज डिजायर फॉर दि लाइफ—आलवेज । मृत्यु की कोई इच्छा ही नही होती । मृत्यु की इच्छा मे ही जीवन की इच्छा भी छिपी होती है, जीवन का कोई आग्रह छिपा होता है । तो महावीर कोई आत्मघाती नही है । उतना वडा आत्मज्ञानी नही हुआ, आत्मघाती होने का सवाल नही है ।

लेकिन यह वात जरूर सच है कि महावीर के विचार मे वहुत से आत्मघाती उत्सुक हुए, वहुत से आत्मघाती महावीर से आकर्षित हुए । और उन आत्मघातियो ने महावीर के पीछे एक परम्परा खडी की जिसमे महावीर का कोई भी सम्बन्ध नही है । ऐसे लोग जरूर उत्सुक हुए महावीर के पीछे जिनको लगा कि ठीक है, मरने की इतनी सुगमता और कहा मिलेगी । और मरने का इतना सहयोग और कहा मिलेगा और मरने की इतनी सुविधा और कहा मिलेगी । महावीर के पीछे ऐसे लोग जरूर आए जिनका चित्त रुग्ण था, जो मरना चाहते थे । जीवन की आकाक्षा के त्याग से वे महावीर के करीव नही आए, मरने की आकाक्षा के कारण वे महावीर के करीव आ गए । लक्षण विल्कुल एक से है, लेकिन भीतर व्यक्ति विल्कुल अलग थे । और जो मरने की इच्छा से आए, वे महावीर की परम्परा मे वहुत अग्रणी हो गए । स्वभावत जो मरने को तैयार है उसको नेता होने मे कोई असुविधा नही होती । और क्या असुविधा हो सकती है । जो मरने को तैयार है वह पक्ति मे आगे कभी भी खडा हो सकता है, किसी भी पक्ति मे । और जो अपने को सताने को तैयार है वह लगा कि वडा त्यागी है ।

ध्यान रहे, इससे महावीर के विचार को आज की दुनिया मे पहुचने मे वडी कठिनाई हो रही है । क्योकि महावीर का विचार मालूम होता है, मैसोचिस्ट है, अपने को सताने वाला है, पीडक—आत्मपीडक है। लेकिन महावीर की देह को देखकर ऐसा नही लगता कि इस आदमी ने अपने को सताया होगा । महावीर की प्रफुल्लता देखकर ऐसा नहीं लगता कि इस आदमी ने अपने को सताया होगा । महावीर का खिला हुआ कमल देखकर ऐसा नही लगता कि इस आदमी ने अपनी जडो के साथ ज्यादती की होगी । मैं मानता हू कि महावीर रच-मात्र भी आत्म-पीडक नही हे । लेकिन महावीर के पीछे आत्मपीडको की परम्परा इकट्ठी हुई, यह जरूर सच है। जो अपने का सता सकते थे या सताने के लिए उत्सुक थे और

बहुत लोग उत्सुक हैं, ध्यान रखना आप।

इस जगत् में दो तरह की हिंसाएं हैं—दूसरे को सताने के लिए उत्सुक लोग और एक और तरह की हिंसा है, अपने को सताने के लिए उत्सुक लोग। अपने को सताने में भी कुछ लोगों को इतना ही मजा आता है जितना दूसरे को सताने में। बल्कि सच पूछा जाए तो दूसरे को सताने में आपको कभी इतना अधिकार नहीं होता, इतनी सुविधा और स्वतन्त्रता नहीं होती जितनी अपने को सताने में होती है। कोई विरोध ही करने वाला नहीं है। आप दूसरे को कांटे पर लिटायें तो वह अदालत में मुकदमा चला सकता है। आप खुद को कांटों पर लिटायें तो कोई मुकदमा नहीं चल सकता है, व सिर्फ न सम्मान मिल सकता है। आप दूसरों को भूखा मारें तो आप झंझट में पड सकते हैं, आप अपने को भूखा मारें तो जुलूस निकल सकता है, शोभा यात्रा निकल सकती है।

लेकिन ध्यान रखें, सताने का जो रस है वह एक ही है। और महावीर कहते हैं—जो अपने को सता रहा है, वह भी दूसरे को ही सता रहा है क्योंकि वह अपने में दो हिस्से कर लेता है। वह शरीर को सताने लगता है जो कि वस्तुत. दूसरा है। यह शरीर, जो मेरे आसपास है, उतना ही दूसरा है मेरे लिए जितना आपका शरीर जो जरा दूर है। इसमें भेद नहीं है। यह शरीर मेरे निकट है, इसलिए मैं नहीं हूं। और आपका शरीर जरा दूर है तो तू हो गया! मैं आपके शरीर को कांटे चुभाऊं तो लोग कहेंगे, यह आदमी दुष्ट है। और मैं अपने शरीर को कांटे चुभाऊं तो लोग कहेंगे, यह आदमी महात्यागी है।

लेकिन शरीर दोनों ही स्थिति में दूसरा है। यह मेरा शरीर उतना ही दूसरा है जितना आपका शरीर। सिर्फ फर्क इतना है कि मेरे शरीर को सताते वक्त कोई कानून बाधा नहीं बनेगा, कोई नैतिकता बाधा नहीं बनेगी। इसलिए जो होशियार हैं, कुशल हैं वे सताने का मजा एक ही शरीर को सता लेते हैं। लेकिन सताने का मजा एक ही है। क्या है मजा? जिसको हम सता पाते हैं, लगता है उसके हम मालिक हो गए हैं, उसके हम स्वामी हो गए हैं। जिसको हम सता पाते हैं, जिसकी हम गर्दन दबा पाते हैं, लगता है हम उसके स्वामी हो गए हैं। महावीर के पीछे मैसोचिस्ट इकट्ठे हो गए। उन्होंने महावीर की पूरी परम्परा को विषाक्त किया, जहर डाल दिया।

कारण तो था, क्योंकि महावीर का कारण कुछ और था, लेकिन उन्हें यह कारण अपील किया, जचा। कारण यह था कि महावीर कहते थे कि जब तक मैं जीवन के लिए पागल हूं तब तक मैं देख न पाऊंगा अंधेपन में कि दूसरे के जीवन को नष्ट करने के लिए भी आतुर हो गया हूं। और जीवन के लिए पागल होना व्यर्थ है क्योंकि असम्भव है। जीवन को बचाया नहीं जा सकता। जन्म के साथ ही मृत्यु प्रवेश कर जाती है। इसलिए जो इम्पासिबल है, उसके पीछे सिर्फ पागल-

पन है—जो असम्भव हे उसके पीछे सिर्फ पागलपन खडा होता है। मृत्यु होगी ही। वह उसी दिन तय हो गयी, जिस दिन जीवन हुआ। इसलिए महावीर कहते हैं, जीवन के लिए इतनी आकाक्षा ही हिंसा वन जाती है। इसे समझना है। इसे समझते ही जीवेपणा शून्य होने लगती है और जब जीवेपणा होने लगती हैं तो मृत्यु की इच्छा पैदा नही होती, मृत्यु का स्वीकार पैदा होता है। इनमे भेद है।

मृत्यु की इच्छा तो पैदा होती है जीवेपणा को चोट लगे तव, और मृत्यु का स्वीकार पैदा होता है जव जीवेपणा क्षीण हो तब, शात हो तव। महावीर मृत्यु को स्वीकार करते हैं। मृत्यु को स्वीकार करना अहिंसा है। मृत्यु को अस्वीकार करना हिंसा है। और जव मैं अपनी मृत्यु को अस्वीकार करता हू तो मैं दूसरे की मृत्यु को स्वीकार करता हू। और जब मैं अपने मृत्यु को स्वीकार करता हू तो मैं सवके जीवन को स्वीकार करता हू। यह एक सीधी गणित है। जव मैं अपने जीवन को स्वीकार करता हू तो मैं दूसरे के जीवन को इन्कार करने के लिए तैयार हू। और जव मैं अपनी मृत्यु को परिपूर्ण भाव से स्वीकार करता हू कि ठीक है, वह नियति है, तव मैं किसी जीवन को चोट पहुचाने के लिए जरा भी उत्सुक नही रह जाता। उसके जीवन को चोट पहुचाने को जरा भी उत्सुक नही रह जाता जो मेरे जीवन को चोट पहुचाए। क्योकि मेरे जीवन को चोट पहुचाकर ज्यादा-से-ज्यादा वह क्या कर सकता है? मृत्यु! जो कि होने ही वाली है। वह सिर्फ निमित्त वन सकता है। वह कारण नही है। महावीर कहते है कि अगर तुम्हारी कोई हत्या भी कर जाए तो वह सिर्फ निमित्त है, वह कारण नही है। कारण तो मृत्यु है, जो जीवन के भीतर ही छिपी है। इसलिए उस पर नाराज होने की भी कोई जरूरत नही है। ज्यादा-से-ज्यादा धन्यवाद दिया जा सकता है। जो होने ही वाला था, उसमे वह सहयोगी हो गया। वह होने ही वाला था। एक वार यह हमे ख्याल मे आ जाए कि जो होने ही वाला है, तो हम फिर किसी पर नाराज नही हो सकते।

महावीर कहते हैं, मृत्यु का अगीकार। और बडे मजे की बात है, मृत्यु का अगीकार इसलिए नही कि मृत्यु कोई महत्वपूर्ण चीज है। मृत्यु का अगीकार ही इसलिए कि मृत्यु बिल्कुल ही गैर-महत्वपूर्ण चीज है। जब जीवन ही गैर-महत्वपूर्ण है तो मृत्यु महत्वपूर्ण कैसे हो सकती है। जव जीवन तक गैर-महत्वपूर्ण है तो मृत्यु का क्या मूल्य हो सकता है। ध्यान रहे, मृत्यु का उतना ही आपके मन मे मूल्य होता है जितना जीवन का मूल्य होता है। मृत्यु को जो मूल्य मिलता है वह रिफ्लेक्टिड वैल्यू है। आप जीवन को जितना मूल्य देते है उतना मृत्यु को मूल्य देते हैं।

अगर आप कहते हे—जीना ही है किसी कीमत पर, तो आप कहेगे—मरना नही है किसी कीमत पर। यह साथ चलेगा। आप कहते हैं—चाहे कुछ भी हो

जाए, मैं जिऊगा ही तो फिर आप भी कह सकते हैं कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं मरूगा नही। आप जितना जीवन को मूल्य देते हैं उतना ही मूल्य मृत्यु मे स्थापित हो जाता है। और ध्यान रहे, जितना मूल्य मृत्यु मे स्थापित हो जाता है, उतना ही आप मुश्किल मे पड जाते है। महावीर कहते हैं—जीवन मे कोई मूल्य ही नही है तो मृत्यु का भी मूल्य समाप्त हो जाता है। और जिसके चित्त मे न जीवन का मूल्य है, और न मृत्यु का, क्या वह आपको मारने आएगा ? क्या वह आपको सताने मे रस लेगा ? क्या वह आपको समाप्त करने मे उत्सुक होगा ? हम कितना मूल्य किसी चीज को देते है, उस पर ही निर्भर करता है सब।

सुना है मैंने कि मुल्ला नसरूद्दीन एक अधेरी रात मे एक गाव के पास से गुजरता है। चार चोरो ने उस पर हमला कर दिया। वह जी तोड कर लडा वह इस बुरी तरह लडा कि अगर वह चार न होते तो एकाध हत्या हो जाती। वे चार थोडी ही देर मे अपने को बचाने मे लग गये, आक्रमण तो भूल गये। फिर भी चार थे। बा-मुश्किल घण्टो की लडाई के बाद किसी तरह मुल्ला पर कब्जा पा पाए। और जब उसकी जेब टटोली तो केवल एक पैसा मिला। वे बहुत हैरान हुए कि मुल्ला अगर एकाध आना तुम्हारे खीसे मे रहता तो हम चारो की जान की कोई खैरियत न थी। एक पैसे के लिए तुम इतना लडे! हद कर दी। हमने तुम जैसा आदमी नही देखा। चमत्कार हो तुम!

मुल्ला ने कहा कि उसका कारण है। पैसे का सवाल नही है। आइ डोंट वाट टु एक्सपोज माइ पर्सनल फाइनेंशियल पोजिशन टु क्वाइट स्ट्रेंजर्स। मैं बिल्कुल अजनबियो के सामने अपनी माली हालत प्रकट नही करना चाहता हू, और कोई कारण नही है। जान लगा देता। यह सवाल माली हालत के प्रकट करने का है, और तुम अजनबी। सवाल पैसे का नही है, सवाल पैसे के मूल्य का है। एक पैसा है कि करोड़, यह सवाल नही है। अगर पैसे मे मूल्य है तो एक मे भी मूल्य है। और करोड़ में भी मूल्य है। और अगर करोड मे मूल्य है तो एक मे भी मूल्य होगा।

सुना है मैंने कि मुल्ला एक अजनबी देश मे गया, एक अपरिचित देश मे गया। एक लिफ्ट मे सवार होकर जा रहा है। एक अकेली सुन्दर औरत उसके साथ है। उसने उस स्त्री से कहा कि क्या ख्याल है? सौ रुपये मे सौदा पट सकता है?

उस स्त्री ने चौंक कर देखा। उसने कहा कि ठीक है।

मुल्ला ने कहा—पाच रुपये का सवाल है?

उस स्त्री ने कहा—तुम मुझे समझते क्या हो ..तुम मुझे समझते क्या हो?

मुल्ला ने कहा—दैट वी हैव डिमाइडेड। नाउ इज् दि क्वेश्चन आफ दि वैल्यू, प्राइज्। यह तो हमने तय कर लिया है कि कौन हो तुम, यह तो मैंने सौ रुपये पूछकर तय कर लिया, अब हम कीमत तय कर रहे हैं। अगर सौ रुपये मे स्त्री बिक सकती है तो अब यह सवाल है कि पाच रुपये में क्यों नही बिक

सकती ? वह तय हो गया कि तुम कौन हो। उसके बाबत कोई चर्चा करने की जरूरत नही है। अब हम तय कर लें, अब मैं अपनी जेब पर ख्याल कर रहा हू, मुल्ला ने कहा, कि अपने पास पैसे कितने है ?

यह हमारी. हमारी जिन्दगी मे जो भी मूल्य है, वह करोड का है या एक पैसे का, यह सवाल नहीं है। धन का मूल्य है तो फिर पैसे मे भी मूल्य है और करोड मे भी मूल्य है। मूल्य ही नही है, तो फिर पैसे मे भी नही है, और फिर करोड मे भी नही है। और अगर एक पैसे मे जितना मूल्य है, फिर उसके खोने मे उतनी ही पीडा है। वह पीडा भी उतनी ही मूल्यवान है। अगर जीवन ही निर्मूल्य है तो मृत्यु मे क्या मूल्य रह जाता है ! और अगर जीवन ही निर्मूल्य है तो जीवन से सम्बन्धित जो सारा विस्तार है, उसमे क्या मूल्य रह जाता है ! जिसके लिए जीवन ही निर्मूल्य है, उसके लिए महल का कोई मूल्य होगा ? क्योकि धन का सारा मूल्य ही जीवन की सुरक्षा के लिए है ! जिसके लिए जीवन ही निर्मूल्य है, उसके लिए महल का कोई मूल्य होगा ! क्योकि महल का सारा मूल्य ही जीवन की सुरक्षा के लिए है जिसके लिए जीवन का कोई मूल्य नही, उसके लिए पद का कोई मूल्य होगा ? क्योकि पद का सारा मूल्य ही जीवन के लिए है।

जीवन का मूल्य शून्य हुआ कि सारे विस्तार का मूल्य शून्य हो जाता है। सारी माया गिर जाती है। और जब जीवन का ही मूल्य न रहा तो मृत्यु का क्या मूल्य होगा ! क्योकि मृत्यु मे उतना ही मूल्य था, जितना जीवन मे हम डालते है। जितना लगता था कि जीवन को बचाऊ, उतनी मृत्यु से बचने का सवाल उठता था। जब जीवन को बचाने की कोई बात न रही तो मृत्यु हो या न हो, बराबर हो गया। जिस दिन मेरे जीवन का कोई मूल्य नही रह जाता उस दिन मेरी मृत्यु शून्य हो जाती है। और महावीर कहते है कि उसी दिन अमृत के द्वार खुलते है—महाजीवन के, परम जीवन के, जिसका कोई अन्त नही है।

इसलिए महावीर कहते है—अहिंसा धर्म का प्राण है। उसी से अमृत का द्वार खुलता है। उसी से, हम उसे जान पाते है जिसका कोई अत नही, जिसका कोई प्रारम्भ नही, जिस पर कभी कोई बीमारी नही आती और जिस पर कभी दुख और पीडा नही उतरती। जहा कोई सताप नही, जहा कोई मृत्यु कभी घटित नही होती, जहा अधकार के किरण की उतरने की कोई सुविधा नही, जहा प्रकाश ही प्रकाश है। तो महावीर को मृत्युवादी नही कहा जा सकता और उनसे बडा अमृत का तलाशी नही है कोई। लेकिन अमृत की तलाश मे उन्होने पाया है कि जीवेषणा सबसे बडी बाधा है।

क्यो पाया है ? जीवेषणा इसलिए बाधा है कि जीवेषणा के चक्कर मे आप वास्तविक जीवन की खोज से वचित रह जाते है। जीने की इच्छा और जीने की कोशिश मे आप पता ही नही लगा पाते कि जीवन क्या है।

मुल्ला भागा जा रहा है एक गाव मे। उसे व्याख्यान देना है। एक आदमी उससे रास्ते मे पूछता है कि मुल्ला, उस मस्जिद मे धर्म के सम्बन्ध मे बोलने जा रहे हो ईश्वर के सम्बन्ध मे ? एक आदमी उससे पूछता है कि मुल्ला, ईश्वर के सम्बन्ध मे तुम्हारा क्या विचार है ?

मुल्ला कहता है—अभी विचार करने की फुरसत नही, अभी मैं व्याख्यान देने जा रहा हू। आइ हैव नो टाइम टु थिंक नाऊ। अभी मैं व्याख्यान देने जा रहा हू। अभी बकवास मे मत डालो मुझे।

जीवन की फिक्र मे अक्सर आदमी सोचना भूल जाते है। दौडने के इन्तजाम मे अक्सर आदमी मंजिल भूल जाते है। कमाने की चिन्ता मे अक्सर आदमी भूल जाते है, किसलिए ? जीने की कोशिश मे ख्याल ही नही आता कि क्यो ? सोचते है कि पहले कोशिश तो कर ले, फिर क्यो की तलाश कर लेंगे। किस-लिए बचा रहे है, यह ख्याल ही मिट जाता है। जो बचा रहे है उसमे ही इतने मगन हो जाते है कि वही 'एण्ड अनटु इटसेल्फ', अपना अपने मे ही अन्त बन जाता है।

एक आदमी धन इकट्ठा करता चला जाता है। पहले वह शायद सोचता भी रहा होगा कि किसलिए ? फिर धन इकट्ठा करना ही लक्ष्य हो जाता है। फिर उसे याद ही नही रहता कि किसलिए। फिर वह मर जाता है इकट्ठा करता-करता। यह नही बता जाता कि किसलिए इकट्ठा कर रहा था। वह इतना ही कह सकता था कि अब इकट्ठा करने मे मजा आने लगा था।.. इकट्ठा करने मे मजा आने लगा था। अब जीने मे ही मजा आने लगा था। अब किसलिए जीना था ? क्यो जीना था, जीकर क्या था यह सब छूट जाता है।

हिंसा दूसरे को भयभीत करती है। आप अपने को बचाते हैं, दूसरे में भय पैदा करके। आप दूसरे को दूर रखते हैं फासले पर। आपके और दूसरे के बीच में अनेक तरह की तलवारें आप अटका रखते हैं। और जरा-सा ही किसी ने आपकी सीमा का अतिक्रमण किया कि आपकी तलवारें उसकी छाती में घुस जाती हैं। अतिक्रमण न भी किया हो, आप अगर शंकित हो गये और सोचा कि अतिक्रमण किया है, तो भी तलवारें घुस जाती हैं। व्यक्ति भी ऐसे ही जीते हैं, समाज भी ऐसे ही जीते हैं, राष्ट्र भी ऐसे ही जीते हैं। इसलिए सारा जगत् हिंसा में जीता है, भय में जीता है। महावीर कहते हैं—सिर्फ अहिंसक ही अभय को उपलब्ध हो सकता है। और जिसने अभय नहीं जाना है वह अमृत को कैसे जानेगा ? भय को जानने वाला मृत्यु को ही जान पाता है।

तो महावीर की अहिंसा का आधार है, जीवैषणा से मुक्ति। और जीवैषणा से मुक्ति मृत्यु की एषणा से भी मुक्ति हो जाती है। और इसके साथ ही जो घटित होता है चारों तरफ, हमने उसी को मूल्यवान समझ रखा है। महावीर एक चींटी पर पैर नहीं रखते हैं, इसलिए नहीं कि महावीर बहुत उत्सुक हैं चींटी को बचाने को। महावीर इसलिए चींटी पर पैर नहीं रखते—सांप पर भी पैर नहीं रखते, बिच्छू पर भी पैर नहीं रखते—क्योंकि महावीर अब अपने को बचाने को बहुत उत्सुक नहीं हैं। उत्सुक ही नहीं हैं। अब उनका किसी से कोई संघर्ष न रहा, क्योंकि सारा संघर्ष इसी बात में था कि मैं अपने को बचाऊं। अब वे तैयार हैं—जीवन तो जीवन, मृत्यु तो मृत्यु, उजाला तो उजाला, अंधेरा तो अंधेरा। अब वे तैयार हैं। अब कुछ भी आये वे तैयार हैं। उनकी स्वीकृति परम है।

इसलिए मैंने कहा बुद्ध ने जिसे तथाता कहा है, महावीर उसे ही अहिंसा कहते हैं। लाओत्से ने जिसे टोटल ऐक्सैप्टिबिलिटी कहा है कि मैं सब करता हूं स्वीकार, उसे ही महावीर ने अहिंसा कहा है। जिसे सब स्वीकार है, वह हिंसक कैसे हो सकेगा। हिंसक न होने का कोई निषेध कारण नहीं है, विधायक कारण है, क्योंकि सब स्वीकार है। इसलिए निषेध का कोई कारण नहीं है। किसी को मिटाने के लिए तैयारी करने का कोई कारण नहीं है। हां, अगर कोई मिटाने वाला आता है तो महावीर उसके लिए तैयार हैं। इस तैयारी में भी ध्यान रखें कि कोई प्रयत्न नहीं है महावीर का, कि वे संभल कर तैयार हो जाएंगे कि ठीक है मारो। इतना प्रयत्न भी भीतर जीवन का ही प्रश्न है। महावीर इतना संभल कर भी तैयार नहीं होंगे, वे खड़े ही रहेंगे जैसे वे थे ही नहीं, अनुपस्थित थे।

इसके एक हिस्से पर और ख्याल कर लेना जरूरी है। जितने जोर से हम अपने को बचाना चाहते हैं, हमारा वस्तुओं का बचाव उतना ही प्रगाढ़ हो जाता है। जीवैषणा 'मेरे' का फैलाव बनती है। यह मेरा है, ये पिता मेरे हैं, यह मां मेरी है, यह भाई मेरा है, यह पत्नी मेरी है, यह मकान मेरा है, यह धन मेरा है—

हम 'मेरे' का एक जाल खडा करते है अपने चारो तरफ। वह इसलिए खडा करते है कि उस पहरे के भीतर ही हमारा 'मै' बच सकता है। अगर मेरा कोई भी नही तो मैं निपट अकेला बहुत भयभीत हो जाऊगा। कोई मेरा है तो सहारा है, सेफ्टी है, सुरक्षा हे। इसलिए जितनी ज्यादा चीजे आप इकट्ठी कर लेते हैं, उतने आप अकडकर चलने लगते है। लगता है जैसे अब आपका कोई कुछ बिगाड न सकेगा। एक चीज भी आपके हाथ से छूटती हे, तो किसी गहरे अर्थ मे आपको मृत्यु का अनुभव होता है। अगर आपकी कार टूट जाती है तो सिर्फ कार नही टूटती, आपके भीतर भी कुछ टूटता है। आपकी पत्नी मरती है तो पत्नी नही मरती, पति के भीतर भी कुछ गहन मर जाता हे। खाली हो जाता है। असली पीडा पत्नी के मरने से नही होती है। असली पीडा 'मेरे' के फैलाव से के कम हो जाने से होती हे। एक जगह और टूट गयी। एक·· एक मोर्चा असुरक्षित हो गया, एक जगह पहरा कम हो गया, जहा से खतरा अब आ सकता है।

एक मित्र हैं मेरे। पत्नी मर गयी है उनकी। तो पत्नी की तस्वीरें सारे मकान मे, द्वार-दरवाजे पर सब जगह लगा रखी है। किसी से मिलते-जुलते नही, तस्वीरे ही देखते रहते हें। उनके किसी मित्र ने मुझसे ऐसा प्रेम पहले नही देखा। अद्‌भुत प्रेम है।

मैंने कहा—प्रेम नही है। वह आदमी अब डरा हुआ है। अब कोई भी दूसरी स्त्री उसके जीवन मे प्रवेश कर सकती है और ये तस्वीरें लगाकर अब वह पहरा लगा रहा है।

उन्होने कहा—आप कैसी बात करते है!

मैंने कहा—मै चलूगा, मै उन्हे जानता हू।

और जब मैने उन मित्र से कहा—सच बोलो, सोचकर बोलो, ठीक से विचार करके बोलो। अब तुम दूसरी स्त्रियो से भयभीत नही हो?

उन्होने कहा—आपको यह कैसे पता चला? यही डर है मेरे मन मे कि कही अपनी पत्नी के प्रति अब विश्वासघाती सिद्ध न हो जाऊ। इसलिए उसकी याद को चारो तरफ इकट्ठी करके बैठा हुआ हू। किसी स्त्री से मिलने मे भी डरता हू।

आदमी का मन बहुत जटिल है। और अब यह हवा भी चारो तरफ फैल गयी है कि पत्नी के प्रति इतना प्रेम है कि दो साल पहले पत्नी मर गयी, उसको वह जिलाये हुए है अपने मकान मे। यह हवा भी उनकी सुरक्षा का कारण बन गयी है। यह हवा भी उन्हे रोकेगी, यह प्रतिष्ठा भी रोकेगी।

पर मैंने उन मित्र के मित्र को कहा कि ज्यादा देर नही चलेगी सुरक्षा। जब असली पत्नी नही बच सकी, तो ये तस्वीरे कितने देर बचेंगी?

अभी मुझे निमत्रण पत्र आया है कि उनका विवाह हो रहा है। यह ज्यादा

दिन नही वच सकता। इतना भयभीत आदमी ज्यादा दिन नहीं वच सकता। इतना असुरक्षित आदमी ज्यादा दिन नहीं वच सकता।

वस्तुओ पर, व्यक्तियो पर जव हम 'मेरे' का फैलाव करते है, महावीर उसको भी हिसा कहते है। महावीर परिग्रह को हिसा कहते है। महावीर का वस्तुओ से कोई विरोध नही है, और न महावीर को इससे कोई प्रयोजन है कि आपके पास कोई वस्तु है या नही। महावीर को इससे जरूर प्रयोजन है कि आपका उससे कितना मोह है। कितना उसको आप पकडे हुए है, कितना आपने उस वस्तु को अपनी आत्मा वना लिया है।

यह मुल्ला नसरुद्दीन वडा प्यारा आदमी है। इसके जीवन मे वहुत-सी घटनाए है। एक होटल मे ठहरा हुआ है। छोड रहा है होटल, नीचे टैक्सी मे सव सामान रख आया है, तव उसे ख्याल आया कि छाता कमरे मे भूल आया है। सीढिया चढकर वापस आया, चार मजिल होटल। वापस पहुचा तो देखा कि कमरा तो किसी नव-विवाहित जोडे को दे दिया जा चुका है। दरवाजा वन्द है, अन्दर कुछ वात चलती है। छाता विना लिये नही जा सकता और अभी यह जो वात चलती है, उसको भी विना सुने नही जा सकता। की होल पर, चावी के छेद पर कान लगाकर सुना। युवक अपनी पत्नी से कह रहा है, तेरे ये सुन्दर वाल, ये आकाश मे घिरी हुई घटाओ की तरह वाल, ये किसके है, देवी ये वाल किसके है?

देवी ने कहा—तुम्हारे। और किसके?

'ये तेरी आखें, मछलियो की तरह चचल', उस पुरुष ने पूछा, 'यह किसकी है? देवी, ये आखे किसकी है?'

उस स्त्री ने कहा—तुम्हारी, और किसकी?

मुल्ला कुछ वेचैन हुआ। उसने कहा, ठहरो भाई! देवी मुझे पता नही भीतर कौन है, लेकिन जव छाते का नम्वर आये तो ख्याल रखना, मेरा है।

उसकी वेचैनी स्वाभाविक है। आएगा ही छाते का नम्वर।

सारी जिन्दगी, उठते-वैठते, कहा मेरा, इसकी फिक्र—कही कोई और तो उस 'मेरे' पर कव्जा नही कर रहा है? कही और कोई 'मेरे' का मालिक तो नही वन रहा है? सवाल यह वडा नही है कि यह वस्तु किसकी हो जाएगी। वस्तु किसी की नही होती है। महावीर कहते है—कि वस्तु किसी की नही होती है। उसे कभी पता नही चलता कि वह किसकी है। तुम लडते हो, मरते हो, समाप्त हो जाते हो, वस्तुए अपनी जगह पडी रह जाती है। वही जमीन का टुकडा, जिसको आप अपना कह रहे है, कितने लोग उसे अपना कह चुके है कभी हिसाव किया है कितने लोग उसके दावेदार हो चुके है और जमीन के टुकडे को जरा भी पता नही। दावेदार आते है और चले जाते है। जमीन का टुकडा अपनी जगह पडा

रहता है। दावे सब काल्पनिक हैं, इमैजिनरी हैं।

आप ही दावा करते है, आप ही दूसरे दावेदारो से लड लेते है, मुकदमे हो जाते है, सिर खुल जाते हैं, हत्याए हो जाती है। वह जमीन का टुकडा अपनी जगह पडा रहता है। जमीन के टुकडे को पता भी नही है। या अगर पता होगा तो पता दूसरे ढग से होगा। जमीन का टुकडा कहता होगा—यह आदमी मेरा है। जो आदमी कह रहा है यह जमीन मेरी है, अगर जमीन को कोई पता होगा तो जमीन का टुकडा कहता होगा यह आदमी मेरा है। कौन जाने, जमीनो मे मुकदमे चलते हो। आपस मे सघर्ष हो जाता हो कि यह आदमी मेरा है, तुमने कैसे कहा कि मेरा है। अगर कोई जमीन को पता होता होगा तो उसको अपनी मालकियत का पता होगा। ध्यान रहे, हम सबको अपनी मालकियत का पता है। और मालकियत के लिए हम इतने उत्सुक हैं कि अगर जिन्दा आदमी के हम मालिक न हो सके तो हम उसे मार कर भी मालिक होना चाहते है।

और हमारे जीवन की अधिक हिंसा इसीलिए है। जब एक पति एक स्त्री का मालिक होता है, उसे पत्नी बना लेता है तो उसमे स्त्री तो करीब-करीब नब्बे प्रतिशत मर ही जाती है। बिना मारे मालिक होना मुश्किल है। क्योकि दूसरा भी मालिक होना चाहता है। अगर वह जिन्दा रहेगा तो वह मालिक होने की कोशिश करेगा।

इसलिए ध्यान अब रखें, भविष्य मे स्त्री पर, पुरुषो पर मालकियत की सम्भावना कम होती जाती है। अगर स्त्रियो को समानता का हक दिया तो पत्नी बच नही सकती। पत्नी तभी बच सकती थी जब तक स्त्री का कोई हक नही था। उसको बिल्कुल मार डालते तो ही पत्नी बच सकती थी। वह बिल्कुल नकार हो जाती तो ही पति हो सकता है। जब उसे बराबर करेगे तो पति होने का उपाय नही। अब मित्र होने से ज्यादा की सम्भावना नही रह जायेगी। क्योकि दोनो अगर समान है तो मालकियत कैसे टिक सकती है? लेकिन समानता भी टिकानी बहुत मुश्किल है। डर तो यह है कि स्त्री ज्यादा दिन समान नही रहेगी। थोडे दिन मे पुरुष को आन्दोलन चलाना पडेगा कि हम स्त्रियो के समान है। यह ज्यादा दिन नही चलेगा। क्योकि स्त्री बहुत दिन असमान रह ली। यह तो पहला कदम है समान होने का। अब इसके ऊपर जाने का दूसरा कदम, वह उठना शुरू हो गया। बहुत जल्दी जगह-जगह पुरुष जुलूस निकाल रहे होगे, घेराव कर रहे होगे कि पुरुष स्त्रियो के समान है, कौन कहता है कि हम उनसे नीचे है।

समानता ज्यादा देर टिक नही सकती। क्योकि जहा मालिकयत और जहा हिंसा गहन है वहा किसी-न-किसी को असमान होना पडेगा, किसी-न-किसी को नीचे होना ही पडेगा। मजदूर लडेगा, पूजीपति को नीचे कर देगा। कल पायेगा कि कोई और ऊपर बैठ गया है। इससे कोई फर्क नही पडता। महावीर कहते है,

जव तक जगत् मे मालकियत की आकाक्षा है—यानी जीवनेपणा इतनी पागल है कि वह विना मालिक हुए राजी नही होती—तव तक दुनिया मे कोई समानता सम्भव नही है।

इसलिए महावीर समानता मे उत्सुक नही है, अहिंसा मे उत्सुक है। वे कहते है—अगर अहिंसा फैल जाये तो ही समानता सम्भव है। मालकियत का रस ही टूट जाए, तो ही दुनिया मे मालकियत मिटेगी, अन्यथा मालकियत नही मिट सकती है। सिर्फ मालिक वदल सकते हैं। मालिक वदलने से कोई फर्क नही पडता। वीमारी अपनी जगह वनी रहती है। उपद्रव अपनी जगह वने रहते है। हिंसा का जो हमारे जीवन मे क्रियमान रूप है, वह मालकियत है।

महावीर ने जव महल छोडा तो हमे लगता है—महल छोडा, धन छोडा, परिवार छोडा। महावीर ने सिर्फ हिंसा छोडी। अगर गहरे मे जाए तो महावीर ने सिर्फ हिंसा छोडी। यह सव हिंसा का फैलाव है। ये पहरेदार जो दरवाजे पर खडे थे, वे पत्थर की मजवूत दीवारें जो महल को घेरे थी, यह धन और ये तिजोरिया—ये सव आयोजन थे हिंसा के। यह मेरे और तेरे का भेद, यह सव आयोजन था हिंसा का। महावीर जिस दिन खुले आकाश के नीचे आकर नग्न खडे हो गए, उस दिन कहा कि अव मैं हिंसा को छोडता हू, इसलिए सव सुरक्षा को छोडता हू। इसलिए सव आक्रमण के उपाय छोडता हू। अव मैं निहत्था, निरस्त्र, शून्यवत भटकूगा इस खुले आकाश के नीचे। अव मेरी कोई सुरक्षा नही, अव मेरा कोई आक्रमण नही, अव मेरी कोई मालकियत कैसे हो सकती है? अहिंसक की कोई मालकियत नही हो सकती। अगर कोई अपनी लगोटी पर भी मालकियत वताता है तो वह न्यून है। इससे कोई फर्क नही पडता कि महल मेरा है, कि लगोटी मेरी है। वह मालकियत हिंसा है। इस लगोटी पर भी गर्दनें कट सकती हैं। और यह मालकियत वहुत सूक्ष्म होती चली जाती है—धन छोड देता है एक आदमी, लेकिन कहता है, धर्म, यह मेरा है।

मेरे एक मित्र अभी एक जैन साधु के पास गए होगे—अभी एक-दो दिन पहले। मैं महावीर के सम्वन्ध मे क्या कह रहा हू, मित्र ने उन्हे वताया होगा। उन साधु ने कहा कि वे कोई और महावीर होगे जो उनके होगे, वे हमारे महावीर नही है। वे जिस महावीर के सम्वन्ध मे वोल रहे है, वे हमारे महावीर नहीं है।

मालकियत वडी सूक्ष्म है। महावीर तक पर भी मालकियत है। हिंसा हम वहा तक नही छोडेगे—यह धर्म मेरा है, यह शास्त्र मेरा है, यह सिद्धान्त मेरा है—रस आता है, रस किसको आता है भीतर? जहा-जहा 'मेरा' है वहा-वहा हिंसा है। जो 'मेरे' को सव भाति छोड देता है—धन पर ही नही, धर्म पर भी, महावीर और कृष्ण और वुद्ध पर भी—जो कहता है कि मेरा कुछ भी नही है। और ध्यान रहे, जिस दिन कोई कह पाता है, मेरा कुछ भी नही, उसी दिन 'मैं

कौन हूं', उसे जान पाता है। इसके पहले नही जान पाता। इसके पहले मेरे के फैलाव मे उलझा रहता है, परिधि पर। इसलिए मैं के केन्द्र पर कोई पता नही चलता है।

इसे ऐसा समझ लें, अहिंसा मूल है आत्मा को जानने का। क्योकि मेरे का जब सारा भाव गिर जाता है तो फिर मैं ही बचता हू, कोई और तो कुछ बचता नही। निपट मैं, अकेला मैं। और तभी जान पाता हू, क्या हू, कौन हू, कहां से हू, कहा के लिए हू। तब सारे द्वार रहस्य के खुल जाते हैं।

महावीर ने अकारण ही अहिंसा को परम धर्म नही कह दिया है। परम धर्म कहा है इसलिए कि उस कुंजी से सारे द्वार खुल सकते है, जीवन के रहस्य के।

एक और तीसरी दृष्टि से अहिंसक को समझ लें तो अहिंसा का ख्याल हमारा स्पष्ट और पूरा हो जाए।

महावीर ने कहा है कि सब हिंसा आग्रह है। यह अति सूक्ष्म बात है। आग्रह हिंसा है, अनाग्रह अहिंसा है। और इसी कारण महावीर ने जिस विचार सरणी को जन्म दिया है, उसका नाम है अनेकान्त। वह अहिंसा का विचार के जगत् मे फैलाव है। अनेकान्त की दृष्टि जगत् मे कोई दूसरा व्यक्ति नही दे सका। क्योकि अहिंसा की दृष्टि को कोई दूसरा व्यक्ति इतनी गहनता मे समझ ही नही सका। समझा नही सका। अनेकान्त महावीर से पैदा हुआ। उसका कारण है कि महावीर की अहिंसा की दृष्टि को जब उन्होने विचार के जगत् पर लगाया, वस्तुओ के जगत् पर लगाया तो परिग्रह फलित हुआ। जीवन के जगत् पर लगाया तो मृत्यु का वरण फलित हुआ। और जब विचार के जगत् पर लगाया—जो कि हमारा बहुत सूक्ष्म सग्रह है विचार का जगत। धन बहुत स्थूल सग्रह है, चोर उसे ले जा सकते हैं। विचार बहुत सूक्ष्म सग्रह है, चोर उसे नही चुरा सकते। फिलहाल अभी तक तो नही चुरा सकते। यह सदी पूरे होते-होते चोर आपके विचार चुरा सकेंगे। क्योकि आपके मस्तिष्क को आपके बिना जाने पढ़ा जा सकेगा। और क्योकि आपके मस्तिष्क मे कुछ हिस्से भी निकाले जा सकते है, जिनका आपको पता ही नही। और आपके मस्तिष्क के भीतर भी इलैक्ट्राड रखे जा सकते है, और आपसे ऐसे विचार करवाए जा सकते है जो आप नही कर रहे, लेकिन आपको लगे कि मैं कर रहा हू।

अभी अमरीका मे डा० ग्रीन और दूसरे लोगो ने जानवरो की खोपड़ी मे इलैक्ट्रोड रखकर जो प्रयोग किए है वे सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। एक घोड़े की या एक साड की खोपड़ी मे इलैक्ट्रोड रख दिया है। वह इलैक्ट्रोड रखने के बाद वायरलैस से उसकी खोपड़ी के भीतर के स्नायुओ को सचालित किया जा सकता है, जैसा साड़। और डा० ग्रीन के ऊपर हमला करता है यह साड। वे लाल छतरी लेकर उसके सामने खड़े है और हाथ मे उनके ट्रांजिस्टर है छोटा-सा, जिससे उनकी

खोपडी को सचालित करेंगे। वह दौडता है पागल की तरह। लगता है कि हत्या कर डालेगा। सैकडो लोग घेरा लगाकर खडे है। वह बिल्कुल आ जाता है—वह सामने आ जाता है। और वह बटन दबाता है अपने ट्रांजिस्टर की। वह ठडा हो जाता है, वह वापस लौट जाता है।

यह आदमी के साथ भी हो सकेगा। इसमे कोई बाधा नही रह गयी है। वैज्ञानिक काम पूरा हो गया है। कुछ कहा नही जा सकता कि तानाशाही सरकारे हर बच्चे की खोपडी मे बचपन मे ही रख दें। फिर कभी उपद्रव नही। एक बटन दबायी जाए, पूरा मुल्क एकदम जय-जयकार करने लगे। मिनिस्ट्री के दिमाग मे तो यह रखा ही जाएगा। बटन दबा दी और लाखो लोग मर जाएगे बिना भयभीत हुए, कूद जाएगे आग मे बिना चिन्ता किए। और उनको लगेगा कि वे ही कर रहे हैं। हालाकि यह पहले से भी किया जा रहा है, लेकिन करने के ढग पुराने थे, मुश्किल के थे।

एक आदमी को समझाना पडता है कि अगर तू देश के लिए मरेगा तो स्वर्ग जाएगा। इसको बहुत समझाना पडता है, तब उसकी खोपडी मे घुमता है। हालाकि यह भी घुमाना है। इसमे कोई मतलब नही है। इसको भी बचपन से गाथाए सुना-सुना कर राष्ट्रभक्ति की और जमाने भर के पागलपन की, इसके दिमाग को तैयार किया जाता है। फिर एक दिन वर्दी पहना कर इससे कवायद करवायी जाती है दो-चार साल तक। इसकी खोपडी मे डालने का यह उपाय भी इलेक्ट्रोड ही है, लेकिन यह पुराना है, बैलगाडी के ढग से चलता है। फिर एक दिन यह आदमी जाता है और मर जाता है युद्ध के मैदान मे छाती खोल कर और सोचता है कि यह मै कर रहा हू, और सोचता है कि यह बलिदान मैं दे रहा हू, और सोचता है, ये विचार मेरे हैं। यह देश मेरा और यह झडा मेरा है। और ये सब बातें इसके दिमाग मे किन्ही और ने रखी है। जिन्होने रखी हैं वे राजधानियो मे बैठे हुए हैं। वे कभी किसी युद्ध पर नही जाते। ठीक है, इतनी परेशानी करने की क्या जरूरत है, अब इलेक्ट्रोड रखने से आसानी से काम हो जाएगा। अडचन कम होगी, भूल-चूक कम होगी। बहुत जल्दी विचार की सम्पदा पर भी चोर पहुच जाएगे। खतरे वहा हो जाएगे। लेकिन अब तक कम-से-कम विचार की सम्पदा सूक्ष्म रही है। महावीर कहते हैं कि विचार की सम्पदा को भी मेरा मानना हिंसा है। क्योकि जब भी मैं किसी विचार को कहता हू, 'मेरा', तभी मैं सत्य से च्युत हो जाता हू। और जब भी मै कहता हू यह मेरा विचार है, इस-लिए ठीक है—और हम सभी यह कहते हैं, चाहे हम कहते हो प्रगट, चाहे न कहते हो।

जब हम कहते है कि यही सत्य है, तो हम यह नही कहते कि जो मैं कह रहा हू वह सत्य है, तब हम यह कहते है कि जो कह रहा है वह सत्य है। मैं सत्य

हू तो मेरा विचार तो सत्य होगा ही—मैं सत्य हू, तो मेरा विचार सत्य होगा। जितने विवाद है इस जगत् मे वे सत्य के विवाद नही है। जितने विवाद है वे सब 'मैं' के विवाद हैं। जब आप किसी के विवाद मे पड जाते है और कोई बात चलती है और आप कहते हैं यह ठीक है, और दूसरा कहता है यह ठीक नही है, तब जरा भीतर झाक कर देखना कि थोडी देर मे ही आपको पक्का पता चल जायेगा कि अब सवाल विचार का नही है। अब सवाल यह है कि मैं ठीक हू कि तुम ठीक हो। महावीर ने कहा कि यह बहुत सूक्ष्म हिंसा है। इसलिए महावीर ने अनेकान्त को जन्म दिया है।

महावीर से अगर कोई आकर बिल्कुल महावीर के विपरीत भी बात कहे तो महावीर कहते थे—यह भी ठीक हो सकता है। बहुत हैरानी की बात है, यह आदमी अकेला था इस लिहाज से, पूरी पृथ्वी पर। ज्ञात इतिहास के पास यह अकेला आदमी है जो अपने विरोधी से भी कहेगा—यह भी ठीक हो सकता है। ठीक उससे, जो बिल्कुल विपरीत बात कह रहा है। महावीर कहते है कि आत्मा है, और जो आदमी आकर कहेगा—आत्मा नही है, कोई चार्वाक की विचार सरणी को मानने वाला आकर महावीर को कहेगा—आत्मा नही है तो महावीर यह नहीं कहते है कि गलत है। महावीर कहते है—यह भी हो सकता है, यह भी सही हो सकता है। इसमे भी सत्य होगा।

क्योकि महावीर कहते है कि ऐसी तो कोई भी चीज नही हो सकती कि जिसमे सत्य का कोई अश न हो, नही तो वह होती ही कैसे। वह है। स्वप्न भी सही है क्योकि स्वप्न होता तो है, इतना सत्य तो है ही। स्वप्न मे क्या होता है, वह सत्य न हो, लेकिन स्वप्न होता है, इतना तो सत्य है ही, उसका अस्तित्व तो है ही। असत्य का तो कोई अस्तित्व नही हो सकता। महावीर कहते है, जब एक आदमी कह रहा है कि आत्मा नही है, तो इस न होने मे भी कुछ सत्य तो होगा।

इसलिए महावीर ने किसी का विरोध नही किया—किसी का। इसका अर्थ यह नही था कि महावीर को कुछ पता नही था। कि महावीर को यह पता नही था। कि सत्य क्या है। महावीर को सत्य पता था। लेकिन महावीर का इतना अनाग्रहपूर्ण चित्त था कि महावीर अपने सत्य मे विपरीत सत्य को भी समाविष्ट कर पाते थे। महावीर कहते थे; सत्य इतनी बडी घटना है कि यह अपने से विपरीत को भी समाविष्ट कर सकता है। सत्य इतना बडा, सिर्फ असत्य छोटे-छोटे होते हैं। महावीर कहते थे, असत्य छोटे-छोटे होते है। उनकी सीमा होती है। सत्य इतना बडा है, इतना असीम कि अपने से विपरीत को भी समाविष्ट कर लेता है। यही वजह है कि महावीर का विचार बहुत ज्यादा दूर तक, ज्यादा लोगो तक नही पहुच सका क्योकि सभी लोग निश्चित वक्तव्य चाहते है—डागमैटिक। सभी

लोग यही चाहते है, क्योकि सोचना कोई नही चाहता है। सोचने मे तकलीफ, अडचन होती है। सब लोग उधार चाहते है। कोई तीर्थकर खडे होकर कह दे कि जो मै कहता हू वह सत्य है, तो जो सोचने से बचना चाहते है वे कहेगे—बिल्कुल ठीक है, मिल गया सत्य, अब झझट मिटी।

महावीर इतनी निश्चिन्तता किसी को भी नही देते। महावीर के पास जो बैठा रहेगा वह सुबह जितना कफ्यूज्ड था, शाम तक और ज्यादा कफ्यूज्ड हो जाएगा। वह जितना परेशान आया था, साझ तक और परेशान होकर लौटेगा क्योकि महावीर को दिन मे वह ऐसी बातें कहता सुनेगा ऐसे-ऐसे लोगो को हा भरते सुनेगा कि उससे सारे के सारे जो-जो निश्चित आधार थे, सब डगमगा जाएगे। उसकी सारी भवन की रूप-रेखा गिर जाएगी। और महावीर कहते थे—अगर सत्य तक तुम्हे पहुचना है तो तुम्हारे विचारो के समस्त आग्रह गिर जाए तभी। तुम हिसा करते हो जब तुम कहते हो, यही सत्य है। तब तुम सत्य तक पर मालकियत कर लेते हो। तब तुम सत्य तक भी सिकोड देते हो और अपने तक बाध लेते हो। तब तुम सत्य तक का परिग्रह कर देते हो। इसलिए महावीर कहते थे कि दूसरा क्या कहता है, वह भी सत्य हो सकता है। और तुम जल्दी मत करना कि दूसरा गलत है।

मुल्ला नसरूद्दीन को उस मुल्क के सम्राट् ने बुलाया, और लोगो ने खबर की है कि अजीब आदमी है। आप बोलो न, उसके पहले खण्डन शुरू कर देता है।

सम्राट् ने कहा—यह तो ज्यादती है। दूसरे को मौका मिलना चाहिए। सम्राट् ने नसरूद्दीन को बुलाया और कहा कि मैंने सुना है कि तुम दूसरे को सुनते ही नही और बिना जाने कि वह क्या सोचता है, तुम बोलना शुरू कर देते हो!

मुल्ला नसरूद्दीन ने कहा कि ठीक सुना है।

सम्राट् ने कहा—मेरे विचारो के सम्बन्ध मे क्या ख्याल है? अभी उसने कुछ विचार बताया नही।

मुल्ला ने कहा—सरासर गलत है।

सम्राट् ने कहा—लेकिन तुमने सुने भी नही।

मुल्ला ने कहा—'यह सवाल नही है, तुम्हारे है, इसलिए गलत। क्योकि मेरे ठीक होते है। इरेलेवट है यह बात कि तुम क्या सोचते हो। इससे कोई सगति ही नही है। तुम सोचते हो, काफी है गलत होने के लिए। मैं सोचता हू, काफी है सही होने के लिए।'

हम सब ऐसे ही है। आप इतने हिम्मतवर नही है कि दूसरे को बिना सुने गलत कहे लेकिन जब आप सुनकर भी गलत कहते है तब आप पहले से ही जानते थे कि यह गलत है। तो सुनकर आप भी नही कहते—ध्यान रखना, सुनकर आप भी नही कहते। आप पहले से जानते थे कि यह गलत है। सिर्फ धीरज, सकोच,

शिष्टता, आपको रोकती है कि कम-से-कम सुन तो लो, गलत तो है ही। मुल्ला नसरूद्दीन आपसे ज्यादा ईमानदार आदमी है। वह कहता है—सुनने के लिए समय क्यो खराब करना। हम जानते ही है कि तुम गलत हो, क्योकि सभी गलत हैं, सिर्फ मैं ठीक हूं।

सारे विवाद जगत् के यही है। सम्राट् मुल्ला से बहुत प्रसन्न हो गया और उसने कहा कि तुम रहो, हमारे दरबार मे ही रह जाओ। मुल्ला को जिस दिन से तनख्वाह मिलने लगी, सम्राट् बहुत हैरान हुआ। सम्राट् जो भी कहता, मुल्ला कहता—बिल्कुल ठीक, एकदम सही, यही सही है। सम्राट् के साथ खाने पर बैठा था। कोई सब्जी बनी थी।

सम्राट् ने कहा—मुल्ला सब्जी बहुत स्वादिष्ट है।

मुल्ला ने कहा—यह अमृत है, स्वादिष्ट होगा ही। मुल्ला ने बहुत बखान किया उस सब्जी का। जब इतना बखान किया कि सम्राट् ने दूसरे दिन भी बनवा ली। लेकिन दूसरे दिन उतनी अच्छी नही लगी।

तीसरे दिन रसोइए ने देखा कि इतनी अमृत जैसी चीज, तो उसने तीसरे दिन भी बना दी। सम्राट् ने हाथ मारकर थाली नीचे गिरा दी और कहा कि क्या बदतमीजी है, रोज-रोज वही सब्जी।

मुल्ला ने कहा—जहर है।

सम्राट् ने कहा—लेकिन मुल्ला, तुम तीन दिन पहले कहे थे कि अमृत है।

मुल्ला ने कहा—मैं आपका नौकर हू, सब्जी का नही। तनख्वाह तुम देते हो कि सब्जी देती है ?

सम्राट् ने कहा—लेकिन इसके पहले जब तुम आए थे मुझसे मिलने, तब तुम अपने को ही सही कहते थे।

मुल्ला ने कहा—तब तक मैं बिन-बिका था। तब तक तुम कोई तनख्वाह नही देते थे। और जिस दिन तुम तनख्वाह नही दोगे, याद रखना, सही तो मैं ही हू यह तो सिर्फ तनख्वाह की वजह से मैं कहे चला जा रहा हू।

यह हमारा जो मन है, हमारी जो अस्मिता है. महावीर कहते हैं—दूसरा भी सही है, दूसरा भी सही हो सकता है। तुमसे विरोधी भी सत्य को लिए है। आग्रह मत करो, अनाग्रह हो जाओ। आग्रह ही मत करो। इसलिए महावीर ने कोई सिद्धांत का आग्रह नही किया। और महावीर ने जितनी तरल बातें कही है उतनी तरल बातें किसी दूसरे व्यक्ति ने नही कही है। इसलिए महावीर अपने हर वक्तव्य के सामने स्यात् लगाते थे, वे कहते थे, परहैप्स। अभी आपका तो विचार उन्हे पता भी नही है, लेकिन अगर आप उनसे पूछते कि आत्मा है ? तो महावीर कहते, स्यात्, परहैप्स। क्योकि वे कहते, हो सकता है, कोई इसके विपरीत हो उसे चोट पहुच जाए। आप पूछते—मोक्ष है ? तो महावीर कहते,

स्यात् ।

ऐसा नही कि महावीर को पता नही है। महावीर को पता है कि मोक्ष है। लेकिन महावीर को यह भी पता है कि अहिंसक वक्तव्य स्यात् के साथ ही हो सकता है—नानवायलेंट असत्य—यह भी पता है और महावीर को यह भी पता है कि स्यात् कहने से शायद आप समझने को ज्यादा आसानी से तैयार हो जाए। जब महावीर कहे कि हा, मोक्ष है, तो महावीर जितने अकड के कहेगे मोक्ष है, तत्काल आपके भीतर अकड प्रतिध्वनित होगी। वह कहती, कौन कहता है? नही है। सघर्ष 'मैं' का शुरू हो जाता है। पूरे विवाद 'मैं' के विवाद है। महावीर अनाग्रह वक्तव्य दिए है—सब वक्तव्य अनाग्रह से भरे है। इसलिए पथ बनाना बहुत मुश्किल हुआ। अगर कोई गौशालक के पास जाता, महावीर के प्रतिद्वद्वी के पास, तो गौशालक कहता—महावीर गलत है, मैं सही हू। वही आदमी महावीर के पास आता तो महावीर कहते—गौशालक सही हो सकता है। अगर आप भी होते तो आप गौशालक के पीछे जाते कि महावीर के? आप गौशालक के पीछे जाते कि यह आदमी कम-से-कम निश्चित तो है, साफ तो है, उसे पता तो है। यह महावीर कहता है—गौशालक भी शायद सही हो। अभी उनको खुद ही पक्का नही है। खुद ही साफ नही है। इनके पीछे अपनी नाव क्यो बाधनी और डुबानी! ये कहा जा रहे है, शायद जा रहे है कि नही जा रहे है! शायद पहुचेगे कि नही पहुचेंगे!

इसलिए महावीर के पास अत्यन्त बुद्धिमान वर्ग ही आ सका—बुद्धिमान मैं कहता हू उन व्यक्तियो को, जो सत्य के सम्बन्ध मे अनाग्रहपूर्ण है। जिन्होने समझा महावीर के साहस को। जिन्होने देखा कि यह बहुत साहस की बात है, वे ही महावीर के पास आ सके। लेकिन, जैसे-जैसे समय बीतता है, जो लोग पीछे आते है वे सोच कर नही आते वे जैन की वजह से पीछे आते हैं। वे आग्रहपूर्ण हो जाते है। और उनके आग्रह खतरनाक हो जाते है।

एक बहुत बडे जैन पडित मुझसे मिलने आए थे। उन्होने स्यादवाद किताब लिखी है, इस अनेकात पर किताब लिखी है। मैं उनसे बात कर रहा था। मै उनसे बात करता रहा। मैने उनसे कहा कि स्यादवाद का तो अर्थ ही होता है कि शायद ठीक हो, शायद ठीक न हो।

उन्होने कहा—हा।

फिर थोडी बातचीत आगे बढी। जब वे भूल गए तो मैंने उनसे पूछा लेकिन स्यादवाद तो पूर्ण रूप से ठीक है या नहीं एब्सल्यूटली?

उन्होने कहा—एब्सल्यूटली ठीक है, पूर्ण रूप से ठीक है। स्यादवाद पर किताब लिखने वाला आदमी भी कहता है कि स्यादवाद पूर्ण रूप से ठीक है। इसमे कोई गलती नही है, इसमे भूल हो ही नही सकती। यह सर्वज्ञ की वाणी है। महावीर

को मानने वाला कहता है—सर्वज्ञ की वाणी है, इसमे कोई भूल-चूक है नही, यह बिल्कुल ठीक है—एब्सल्यूटली, पूर्णरूपेण निरपेक्ष।

और महावीर जिन्दगी भर कहते रहे कि पूर्ण सत्य की अभिव्यक्ति हो ही नही सकती। जव भी हम सत्य को वोलते हैं, तभी वे अपूर्ण हो जाते हे—बोलते ही अपूर्ण हो जाते ह। वक्तव्य देते ही अपूर्ण हो जाता है। कोई वक्तव्य पूर्ण नही हो सकता। क्योकि वक्तव्य की सीमाए है—भापा है, तर्क है, वोलने वाला है, सुनने वाला है—ये सब सीमाए है। जरूरी नही है कि जो मै बोलू, वही आप सुनें। जरूरी नही है कि जो मै जानू वही मै वोल पाऊ, और जरूरी नही है कि जो मै वोल पाऊ वह वही हो जो मैं वोलने की कोशिश कर रहा हू। यह जरूरी नही है। तत्काल सीमाए लगनी शुरू हो जाती है क्योकि वक्तव्य समय की धारा मे प्रवेश करता है और सत्य समय की धारा के वाहर है।

ऐसे ही जैसे हम एक लकडी को पानी मे डाले तो वह तिरछी दिखाई पडने लगे, वाहर निकालें तो सीधी हो जाए। महावीर कहते है ठीक जैसे ही हम भाषा मे किसी सत्य को डालते है, वह तिरछा होना शुरू हो जाता है। भापा के वाहर निकालते है, शुद्ध, शून्य मे ले जाते है वह पूर्ण हो जाता है। लेकिन जैसे ही वक्तव्य देते है वैसे ही—इसलिए महावीर कहते हैं—कोई भी वक्तव्य स्यात् के विना न दिया जाए। कहा जाए कि शायद सही हे।

यह अनिश्चय नही है, यह केवल अनाग्रह है। यह अनसर्टेनिटी नही है। यह कोई ऐसा नही है कि महावीर को पता नही है। महावीर को पता है लेकिन इतना ज्यादा पता है, इतना साफ पता है कि यह भी उन्हे पता चलता है कि वक्तव्य धुधले हो जाते हैं। महावीर की अहिंसा का जो अतिम प्रयोग है, वह अनाग्रहपूर्ण विचार है। विचार भी मेरा नही है, कभी अनाग्रहपूर्ण हो जाएगा। जिस विचार के साथ आप लगा देंगे मेरा, उसमे आग्रह जुड जाएगा। न धन मेरा है, न मित्र मेरे हे, न परिवार मेरा है, न विचार मेरा, न यह शरीर मेरा, न यह जीवन। जिसे हम कहते है यह मेरा है—यह कुछ भी मेरा नही हे। जव इन सब 'मेरे' से हमारा फासला पैदा हो जाता है, गिर जाते हैं ये 'मेरे' तव मैं ही वच रह जाता हू—अलोन, अकेला। और जो वह अकेला मैं का वच जाना है, उसकी प्रक्रिया है अहिंसा। अहिंसा प्राण है, सयम सेतु है और तप आचरण है।

कल हम सयम पर वात करेगे।

आज इतना ही, लेकिन अभी कोई जाए न। सन्यासी महावीर के स्मरण मे धुन करते हैं, उसमे सम्मिलित हो।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है । (कौन-सा धर्म ?) अहिसा, सयम और तपरूप धर्म । जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं ।

संयम : मध्य में रुकना

छठवा प्रवचन   दिनाक २३ अगस्त, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

एक मित्र ने पूछा है कि महावीर रास्ते से गुजरते हो और किसी प्राणी की हत्या हो रही हो तो महावीर क्या करेंगे ? किसी स्त्री के साथ बलात्कार की घटना घट रही हो तो महावीर क्या करेगे ? क्या वे अनुपस्थित हैं, ऐसा व्यवहार करेंगे ? और कोई असह्य पीडा से कराह रहा हो, तो महावीर क्या करेंगे ?

इस सम्बन्ध मे थोडी-सी बाते समझ लेनी उपयोगी है। एक तो महावीर गुजरते हुए रास्ते से, और किसी की हत्या हो रही हो, तो हत्या मे जो हम देख पाते है, वह महावीर को नही दिखाई पडेगा। जो महावीर को दिखाई पडेगा वह हमे कभी दिखाई नही पडता है। पहले तो इस भेद को समझ लेना चाहिए। जब भी हम किसी की हत्या होते देखते है तो हम समझते है, कोई मारा जा रहा है। महावीर को यह नही दिखाई पडेगा कि कोई मारा जा रहा है। क्योकि महावीर जानते हे कि जो भी जीवन का तत्व है, वह मारा नही जा सकता, वह अमृत है। दूसरी बात, जब भी हम देखते है कि कोई मारा जा रहा है तो हम सोचते हैं मारने वाला ही जिम्मेवार है। महावीर को इसमे फर्क दिखाई पडेगा। जो मारा जाता है, वह भी बहुत गहरे अर्थों मे जिम्मेवार है। और हो सकता है केवल अपने ही किए गए किसी कर्म का प्रतिफल पाता हैं।

जब भी हम देखेंगे तो मारने वाला जिम्मेवार और मारा जाने वाला हमेशा निर्दोष मालूम पडेगा। हमारी दया और हमारी करुणा उसकी तरफ बहेगी, जो मारा जा रहा है। महावीर के लिए ऐसा जरूरी नही होगा, क्योकि महावीर का देखना और गहरा है। हो सकता है कि जो मार रहा हो वह केवल एक प्रतिकर्म पूरा कर रहा हो। क्योकि इस जगत् मे कोई अकारण नही मारा जाता है। जब कोई मारा जाता है तो वह उसके ही कर्मों के फल ही शृखला का हिस्सा होता

है। इसका यह अर्थ नही है कि जो मार रहा है वह जिम्मेवार नही। लेकिन हमारे और महावीर के देखने मे फर्क पडेगा। जब भी हम देखते है, कोई मारा जा रहा है तो हम सोचते है निश्चित ही पाप हो रहा है, निश्चित ही बुरा हो रहा है। क्योकि हमारी दृष्टि बहुत सीमित है। महावीर इतना सीमित नही देख सकते। महावीर देखते है जीवन की अनत शृखला को। यहा कोई भी कर्म अपने मे पूरा नही है—वह पीछे से जुडा है, और आगे से भी।

हो सकता है कि अगर हिटलर को किसी आदमी ने मार डाला होता १६३० के पहले, तो वह आदमी हत्यारा सिद्ध होता। हम नही देख पाते कि एक ऐसा आदमी मारा जा रहा है जो कि एक करोड लोगो की हत्या करेगा। महावीर ऐसा भी देख पाते है। और तब तय करना मुश्किल है कि हिटलर का हत्यारा सचमुच बुरा कर रहा था या अच्छा कर रहा था। क्योकि हिटलर अगर मरे तो करोड लोग बच सकते है। फिर भी इसका अर्थ नही है कि हिटलर को जो मार रहा था वह अच्छा ही कर रहा था। सच तो यह है कि महावीर जैसे लोग जानते है कि इस पृथ्वी पर अच्छा और बुरा ऐसा चुनाव नही है, कम बुरा और ज्यादा बुरा, ऐसा ही चुनाव है। लेसर ईविल का चुनाव है। हम आमतौर से दो हिस्सो मे तोड लेते है—यह अच्छा और यह बुरा। हम जिन्दगी को अधेरे और प्रकाश मे तोड लेते है। महावीर जानते हैं कि जिन्दगी मे ऐसा तोड नही है। यहा जब भी आप कुछ कर रहे है तो ज्यादा-से-ज्यादा इतना ही कहा जा सकता है कि जो सबसे कम-से-कम बुरा विकल्प था वह आप कर रहे है। वह आदमी भी बुरा कर रहा है जो हिटलर को मार रहा है, लेकिन जो सम्भव हो सकता है हिटलर से वह इतना बुरा है कि इस आदमी को बुरा कहे ?

तो पहली बात मैं यह कहना चाहता हू कि जैसा आप देखते हैं वैसा महावीर नही देखेंगे। इस देखने मे यह बात भी जोड लेनी जरूरी है कि महावीर जानते है कि इस जीवन मे चौबीस घण्टे अनेक तरह की हत्या हो ही रही है। आपको कभी-कभी दिखाई पडती है। जब आप चलते है तब किसी की आप हत्या कर रहे है। जब आप श्वास लेते है तब आप किसी की हत्या कर रहे हैं। अगर आप भोजन करते है तब किसी हत्या कर रहे हैं। आपकी आख की पलक भी झपती है तो हत्या हो रही है। हमे तो जब कभी कोई किसी की छाती मे छुरा भोकता है, तभी हत्या दिखाई पडती है।

महावीर देखते है कि जीवन की जो व्यवस्था है वह हिंसा पर ही खडी है। यहा चौबीस घण्टे प्रतिपल हत्या ही हो रही है। एक मित्र मेरे पास आए थे, वे कह रहे थे कि महावीर जहा चलते थे, वहा अनेक-अनेक मीलो तक अगर लोग बीमार होते तो वे तत्काल ठीक हो जाते थे। मेरा मन हुआ उनसे कहू कि शायद उन्हे बीमारी के पूरे रहस्यो का पता नही है। क्योकि जब आप बीमार होते है तो आप तो

बीमार होते हैं, लेकिन अनेक कीटाणु आपके भीतर जीवन पाते है। अगर महावीर के आने से आप ठीक हो जाएगे तो अन्य कीटाणु मर जाएगे तत्काल। तो महावीर इस झझट मे न पडेंगे, ध्यान रखना। क्योकि आप कुछ विशिष्ट है, ऐसा महावीर नही मानते। यहा प्रत्येक प्राण का मूल्य बराबर है। प्राण का मूल्य है। और आप अकेले बीमार होते है तब करोडो जीवन आपके भीतर पनपते है और स्वस्थ होते है। आप अगर सोचते हो कि महावीर कृपा करके और आपको ठीक कर दें, तो ऐसी कृपा महावीर को करनी बहुत मुश्किल होगी, क्योकि आपके ठीक होने मे करोडो का नष्ट होना निहित है। और आप इतने मूल्यवान नही है जितना आप सोचते है। क्योकि वह जो करोडो आपके भीतर जी रहे है, वे भी प्रत्येक अपने को इतना ही मूल्यवान समझते है। आपका उनको पता भी नही है। आपके शरीर मे जब कोई रोग के कीटाणु पलते हैं तो उनको पता भी नही हैं कि आप भी हे। आप सिर्फ उनका भोजन है।

तो जैसा हम देखते हैं हत्या को, उतना सरल सवाल महावीर के लिए नही है, जटिल है ज्यादा महावीर के लिए जीवेषणा ही हिंसा है, हत्या है। वह किसकी जीवेषणा है, इसका कोई सवाल नही उठता। कौन जीना चाहता है, वह हत्या करेगा। ऐसा भी नही है कि जो जीवेषणा छोड देता है, उससे हत्या बन्द हो जाएगी। जब तक वह जिएगा तब तक हत्या उससे भी चलेगी। इतना महावीर कहते हैं—उसका सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया, जीवेषणा के कारण उसका सम्बन्ध था।

महावीर भी ज्ञान के बाद चालीस वर्ष जीवित रहे। इन चालीस वर्षो मे महावीर भी चलेंगे तो कोई मरेगा। उठेंगे तो कोई मरेगा। यद्यपि महावीर इतने सयम मे जीते है कि न्यूनतम जो सम्भव हो, तो रात एक ही करवट सोते हैं, दूसरी करवट नही लेते। इससे कम करना मुश्किल है। एक ही करवट रात को गुजार देते हैं क्योकि दूसरी करवट लेते हैं तो फिर कुछ जीवन मरेंगे। धीमे श्वास लेते है, कम-से-कम जीवन का ह्रास हो। लेकिन श्वास तो लेनी ही पडेगी। हम कह सकते है, कूदकर मर क्यो नही जाते है? अपने को समाप्त कर दे। लेकिन अगर अपने को समाप्त करेंगे तो एक आदमी के शरीर मे सात करोड जीवन पलते हैं—साधारण स्वस्थ आदमी के, अस्वस्थ के तो और ज्यादा। तो महावीर एक पहाड से अपने को कूद कर मारते है तो सात करोड को साथ मारते हैं। जहर पी ले, तो भी सात करोड को साथ मारते हे। महावीर जब देखते हैं हिंसा को, तब जटिल हैं सवाल। इतना आसान नही हे, जितना आपकी आखे देखती हैं।

क्या है हत्या? कौन-सी चीज हत्या है? महावीर के देखें तो जीवन को जीने की कोशिश मे ही हत्या हे और जीवन को जीने मे हत्या है। हत्या प्रतिपल चल रही है। और प्रत्येक जीना चाहता है इसलिए जब उस पर हमला होता है तब उसे

लगता है हत्या हो रही है। बाकी समय हत्या नही होती है। अगर जगल मे आप जाकर शेर का शिकार करते हैं, तो वह खेल ह, और शिकार शेर आपका करे तब शिकार नही कहलाता वह, तब वह हत्या है। तब वह जगली जानवर है, और आप बहुत सभ्य जानवर है।

और मजा यह है कि शेर आपको कभी नही मारेगा जब तक उसको भूख नही लगी हो और आप तभी उसको मारेंगे जब आपको भूख न लगी हो, पेट भरा हो। कोई भूखे आदमी जगल मे शिकार करने नही जाते है। जिनको ज्यादा भोजन मिल गया है, जिनको अब पचाने का उपाय नही दिखाई पडता है, वे शिकार करने चले जाते है। शेर तो तभी मारता है जब भूखा हो, अनिवार्यता हो।

मैंने सुना है कि एक सकेत मे एक नया उन्होने एक नया प्रदर्शन शुरू किया था। एक भेड और एक शेर को एक ही कटघरे मे रखने का, मैत्री का। लोग बडे खुश होते थे, देखकर चमत्कृत होते ये कि शेर और भेड गले मिलाकर बैठे हुए है। जैनी देखते तो बहुत ही खुश होते। वे भी अपने चित्र बनाए बैठे हुए है, शेर और गाय को बिठलाया है। लेकिन एक आदमी थोडा चकित हुआ कि यह बडा कठिन मामला है। तो उसने जाकर मैनेजर से पूछा कि है तो प्रदर्शन बहुत अद्भुत, लेकिन इसमे कभी झझट नही आती ?

उसने कहा—कोई ज्यादा झझट नही होती।

फिर भी उसने कहा कि शेर और भेड का साथ-साथ रहना ! क्या कभी उपद्रव नही होता ?

उस मैनेजर ने कहा—कभी उपद्रव नही होता। सिर्फ हमे रोज एक नयी भेड बदलनी पडती है। और कोई दिक्कत नही है, बाकी सब ठीक है। और जब शेर भूखा नही रहता तब दोस्ती ठीक है, फिर कोई झझट नही है। फिर वह दोस्ती चलती है। जब भूखा होता है, तब वह खा जाता है। दूसरे दिन हम दूसरी बदल देते है। यह प्रदर्शन मे कोई इससे बाधा नही पडती।

शेर भी भेड पर हमला नही करता जब भूखा न हो। गैर अनिवार्य हिंसा कोई जानवर नही करता, सिवाए आदमी को छोडकर। लेकिन हमारी हिंसा हमे हिंसा नही मालूम पडती है। हम उसे नए-नए नाम और अच्छे-अच्छे नाम दे देते है। आदमी की हिंसा न हो। फिर आदमी के साथ भी सवाल नही है। इसमे भी हम विभाजन करते है। हमारे निकट जो जितना पडता है, उसकी हत्या हमे उतनी ज्यादा मालूम पडती है। अगर पाकिस्तानी मर रहा हो तो ठीक, हिन्दुस्तानी मर रहा हो तो तकलीफ होती है। फिर हिन्दुस्तानी मे अगर हिन्दू मर रहा हो तो मुसलमान को तकलीफ नही होती है। मुसलमान मर रहा हो तो जैनो को तकलीफ नही होती है, जैनी मर रहा हो तो हिन्दू को तकलीफ नही होती।

और भी निकट हम खीचते चले आए है। दिगम्बर मर रहा हो तो श्वेताम्बर

को कोई तकलीफ नही होती। श्वेताम्बर मर रहा हो तो दिगम्बर को कोई तकलीफ नही होती। फिर और हम नीचे निकल आते है—फिर और कुछ फिर आपके परिवार का कोई मर रहा हो तो तकलीफ होती है। और दूसरे परिवार का कोई मर रहा हो तो सहानुभूति दिखाई जाती है, होती तक नही। फिर वहा भी, अगर आपके ऊपर सवाल आ जाए कि आप बचे कि आपके पिता बचे ? तो पिता को मरना पडेगा। भाई बचे कि आप बचे तो फिर भाई को मरना पडेगा। फिर इसमे भी हिसाब हे। अगर आपका सिर बचे कि पैर बचे, तो पैर को कटना पडेगा।

मुल्ला नसरूद्दीन के गाव मे एक सैनिक आया हुआ है। वह बहुत अपनी बहादुरी की बातें कर रहा है, काफी हाउस मे बैठकर। वह कह रहा है कि मैंने इतने सिर काट दिए, इतने सिर काट दिए।

मुल्ला बहुत देर सुनता रहा। उसने कहा कि दिस इज नथिंग। यह कुछ भी नही है। एक दफा मै भी गया था युद्ध मे, मैंने न मालूम कितने लोगो के पैर काट दिए।

उस योद्धा ने कहा कि महाशय, अच्छा हुआ होता कि आप सिर काटते।

मुल्ला नसरूद्दीन ने कहा कि सिर कोई पहले ही काट चुका था। न मालूम कितनो के पैर काटकर हम घर आ गए, कोई जरा-सी खरोच भी नही लगी। तुम तो काफी पिटे-पिटे मालूम होते हो। तो आपको इकॉनामी वहा भी करनी पडेगी, सिर और पैर का सवाल आपके कटने का हो तो पैर को कटवा डालिएगा, और क्या करिएगा।

मैं हू केन्द्र, सारे जगत् का। अपने को बचाने के लिए सारे जगत् को दाव पर लगा सकता हू। यही हिंसा है, यही हत्या है। महावीर इतना व्यापक देखते है, उस पर्सपेक्टिव मे, उस परिप्रेक्ष्य मे, आपको जो हत्या दिखाई पड गयी है, वह महावीर को दिखाई पडेगी, ऐसी ही दिखाई पडेगी ? इतना तो तय हे कि ऐसी दिखाई नही पडेगी। और यह तो साफ ही हे कि आपको वैसी नही दिखाई पड सकती है जैसी महावीर को दिखाई पडेगी। इसलिए महावीर के लिए यह प्रश्न बहुत जटिल है। किसको आप बलात्कार कहते है ? रास्ते पर बलात्कार हो रहा है, किसको आप बलात्कार कहते है ? पृथ्वी पर सौ मे निन्यानवे मौके पर बलात्कार ही हो रहा है। लेकिन किसको आप बलात्कार कहते है ? पति करता है तो बलात्कार नही होता, लेकिन अगर पत्नी की इच्छा न हो तो पति का किया हुआ भी बलात्कार हे। और कितनी पत्नियो की इच्छा है, कभी पतियो ने पूछा है ?

बलात्कार का अर्थ क्या है ? कानून ने सुविधा दे दी कि यह बलात्कार नही है तो बलात्कार नही है। समाज ने सैंक्शन दे दिया तो फिर बलात्कार नही हे। बलात्कार है क्या ? दूसरे की इच्छा के बिना कुछ करना ही बलात्कार है। हम

सब दूसरे की इच्छा के बिना वहुत-कुछ कर रहे हैं। सच तो यह हे कि दूसरे की इच्छा को तोडने की ही चेष्टा मे सारा मजा हें। इसलिए जिस पुरुप ने कभी वलात्कार कर लिया किसी स्त्री से, वह किसी स्त्री से प्रेम करने मे और सहज प्रेम करने मे आनन्द न पाएगा। क्योकि जद्दोजहद से, जबंदस्ती से वह जो अहकार की तृप्ति होती है, वह सहज नही होती है।

अगर आप किसी आदमी से कुश्ती लड रहे हो, वह अपने-आप गिरकर लेट जाए और कहे—बैठ जाओ मेरी छाती पर, हम हार गए—तो मजा चला गया। जव आप उसको गिराते है तो वडी मुश्किल से गिराते है। जितनी मुश्किल पडती हे उसे गिराने मे, उसकी छाती पर बैठ जाने मे, उतना ही रस पाते हें। रस किस बात का है। रस विजय का है। इसलिए तो पत्नी मे उतना रस नही आता जितना दूसरे की पत्नी मे रस आता है। क्योकि दूसरे की पत्नी को अभी भी जीतने का मार्ग है। अपनी पत्नी जीती जा चुकी हे—टेकन फार ग्रांटेड। अब उसमे कुछ मतलब है नही। रस क्या है? रस इस बात का हे कि मैं कितने विजय के झडे गाढ दू, चाहे वह कोई भी आयाम हो—चाहे काम वासना हो, चाहे धन हो, चाहे पद हो। जहा जितना मुश्किल है, वहा उतना अहकार को जीतने का उपाय है। वहा अहकार उतना विजेता होकर वाहर निकलता है।

अगर महावीर से हम पूछे, गहरे मे हम समझें, तो जहा-जहा अहकार चेष्टा करता है वही-वही बलात्कार हो जाता हे। यह वलात्कार अनेक रूपो मे है। लेकिन फिर भी हम जो देखेगे, हम सदा ऐसा ही देखेगे कि अगर एक व्यक्ति किसी स्त्री के साथ रास्ते पर बलात्कार कर रहा हो, तो सदा बलात्कार करने वाला ही जिम्मेवार मालूम पडेगा। लेकिन हमे ख्याल नही है कि स्त्री बलात्कार करवाने के किए कितनी चेष्टाए कर सकती है। क्योकि अगर पुरुप को इसमे रस आता है कि वह स्त्री को जीत ले तो स्त्री को भी इसमे रस आता हे कि वह किसी को इस हालत मे ला दे।

कीर्कगार्ड ने अपनी एक अद्भुत किताब लिखी हे—डायरी आफ ए सिड्यूसर, एक व्यभिचारी की डायरी। उसमे कीर्कगार्ड ने सिखा ह कि वह जो व्यभिचारी है, जो डायरी लिख रहा है, एक काल्पनिक कथा है। वह व्यभिचारी जीवन के अत मे यह लिखता है कि मैं वडी भूल मे रहा, मैं समझता था, मैं स्त्रियो को व्यभिचार के लिए राजी कर रहा हू। आखिर मे मुझे पता चला कि वे मुझसे ज्यादा होशियार हैं कि उन्होने ही मेरे साथ व्यभिचार करवा लिया। दे सिड्यूस्ड मी। दैट टेकनीक वाज निगेटिव। इसलिए मुझे भ्रम वना रहा। कोई स्त्री कभी प्रस्ताव नही करती किसी पुरुप से विवाह करने का। प्रस्ताव करवा लेती है पुरुप से ही। इतजाम सब करती है कि वह प्रस्ताव करे। प्रस्ताव करती नही है। यह स्त्री और पुरुष के मन का भेद है।

स्त्री के मन का भेद बहुत सूक्ष्म है। आप देखते है कि अगर एक आदमी जा रहा है एक स्त्री को धक्का मारने, तो फौरन हमे लगता है कि गलती इसने किया। और वह स्त्री घर से पूरा इतजाम करके चली है कि अगर कोई धक्का न मारे तो उदास लौटेगी। धक्का मारे तो भी चिल्ला सकती है। लेकिन चिल्लाने का कारण जरूर नही है कि धक्का मारने पर नाराजगी है। चिल्लाने का सौ मे निन्यानवे कारण यह है कि विना चिल्लाए किसी को पता नही चलेगा कि धक्का मारा गया। पर यह बहुत गहरे मे उसको भी पता न हो, इसकी पूरी सम्भावना है। क्योकि स्त्री जितनी बन-ठनकर, जिस व्यवस्था से निकल रही है, वह धक्का मारने के लिए पूरा का पूरा निमत्रण है। उस निमत्रण मे हाथ उसका है। हमारे सोचने के जो ढग है वे एकदम हमेशा पक्षपाती है। हम हमेशा सोचते है, कुछ हो रहा है तो एक आदमी जिम्मेवार है। हमे ख्याल ही नही आता कि इस जगत् मे जिम्मेवारी इतनी आसान नही, ज्यादा उलझी हुई है। दूसरा भी जिम्मेवार हो सकता है। और दूसरे की जिम्मेवारी गहरी भी हो सकती है। कुशल भी हो सकती है। चालाक भी हो सकती है। सूक्ष्म भी हो सकती है। महावीर जब देखेंगे तो तो पूरा देखेगे। और उस पूरे देखने मे, हमारे देखने मे फर्क पडेगा। महावीर का जो 'विजन' है, वह टोटल होगा।

अब दूसरी बात यह है कि महावीर कुछ करेगे कि नही ! भले अलग देखेंगे, यह भी समझ लिया जाए। कुछ करेंगे कि नही ? तो मैं आपसे कहना चाहता हू कि महावीर कुछ न करेंगे, जो होगा उसे हो जाने देंगे। इस फर्क को समझ लें। आप रास्ते से गुजर रहे है और किसी की हत्या हो रही है तो आप खडे होकर सोचेंगे कि क्या करू ? करू कि न करू ? आदमी ताकतवर है कि कमजोर दिखता है ? करूगा तो फल क्या होगे ? किसी मिनिस्टर का रिश्तेदार तो नही है ? करके उल्टा मैं तो न फसूगा ? आप पच्चीस बातें सोचेंगे, तब करेंगे। महावीर मे कुछ होगा, सोचेंगे वे नही। सोचना व्यर्थ ''बीते' 'जा चुका। जिस दिन सोचना गया, उसी दिन वे महावीर हुए। विचार अब नही चलता। विचार हमेशा पार्शियल होता है, टोटल विजन होता है। विचार हमेशा पक्षपाती होता है, दृष्टि, दर्शन, पूर्ण होता है। महावीर को एक स्थिति दर्शन मे दिखाई पडेगी। फिर जो होगा अब वह होगा। महावीर लौटकर भी नही सोचेंगे कि मैंने क्या किया ? क्योकि उन्होने कुछ किया नही। इसलिए महावीर कहते है—पूर्ण कृत्य, कर्म का बधन नही बनता। टोटल एक्ट कोई बधन नही लाता। कुछ उनसे होगा कि नही होगा, लेकिन उसे हम प्रिडिक्ट नही कर सकते, उसे हम कह नही सकते कि वे क्या करेंगे। महावीर भी नही कह सकते पहले से कि मैं क्या करूंगा। उन सिचुएशन मे, उस स्थिति मे महावीर से क्या होगा, इसके लिए कोई प्रिडिक्शन, कोई ज्योतिषी नही बता सकता।

हमारे बाबत भविष्यवाणी हो सकती है, हमें थोड़ा समय देना चाहिए। जितनी हम सजग हों, उतने हम प्रेडिक्टेबल होते हैं। जितनी हमारी नासमझी होगी, उतनी हमारे बाबत आसानी से कहा जा सकता है कि हम क्या करेंगे। मशीन के बाबत हम पूरे प्रेडिक्टेबल हो सकते हैं। आदमी के बाबत थोड़ी दिक्कत होती है, लेकिन फिर भी करीब-करीब हम कह सकते हैं कि आप कल सुबह उठकर क्या करेंगे कि नहीं कर सकते? बिल्कुल कह सकते। कभी-कभी भूल-चूक हो सकती है, क्योंकि आप पूरे मशीन नहीं हैं। लेकिन करीब क्या करेंगे, यह तो हम जानते हैं। जैसे-जैसे जीवन ज्यादा विकसित होता है वैसे-वैसे अनप्रेडिक्टे-बिलिटी बढ़ती है। साधारण आदमी के बाबत कहा जा सकता है कि वह कल सुबह क्या करेगा। महावीर या बुद्ध जैसे व्यक्तियों के बाबत नहीं कहा जा सकता कि वे क्या करेंगे। उनसे क्या होगा, यह बहुत अज्ञात और रहस्यपूर्ण है। क्योंकि उनके होश के क्षण में, उनकी पूर्ण दृष्टि में क्या दिखाई पड़ेगा, और उस दिखाई पड़ने को वे छोड़कर कुछ करने नहीं जाएंगे। जो दिखाई पड़ेगा, वही कृत्य घटित हो जाएगा। वे दर्शक भी रहेंगे। जो घटना चारों तरफ घट रही होगी वह उनमें प्रतिफलित हो जाएगी, परिलक्षित हो जाएगी, रिफ्लेक्ट हो जाएगी। और उसका जिम्मा महावीर पर बिल्कुल नहीं है।

अगर महावीर ने किसी की हत्या होते देखा, या किसी पर व्यभिचार होते देखा, तो महावीर कभी किसी से कहेंगे नहीं कि मैंने किसी पर व्यभिचार होते रोका था। महावीर कहेंगे कि मैंने देखा था कि व्यभिचार हो रहा और मैंने यह भी देखा था कि इस शरीर ने बाधा डाली। आई वाज ए विटनेस। महावीर गहरे में साक्षी ही बने रहेंगे, व्यभिचार के भी और व्यभिचार के रोके जाने के भी। तभी वे बाहर होंगे कर्म के, अन्यथा कर्म के बाहर नहीं हो सकते। विचार से, वासना से, इच्छा से, अभिप्राय से, प्रयोजन से किया गया कर्म फल लाता है। महावीर के ज्ञान के बाद अब जो भी वे कर रहे हैं—वह प्रयोजन रहित, लक्ष्य रहित, फल रहित, विचार रहित, शून्य से निकला हुआ कर्म है। शून्य से जब कर्म निकलता है तब वह भविष्यवाणी के बाहर होता है। मैं नहीं कह सकता कि महावीर क्या करेंगे। और अगर आपने महावीर से पूछा होता तो महावीर भी नहीं कह सकते थे कि मैं क्या करूंगा। महावीर कहते कि तुम भी देखोगे कि क्या होता है, और मैं भी देखूंगा कि क्या होता है। करना मैंने छोड़ दिया है। इसलिए महावीर या लाओत्से या बुद्ध या कृष्ण जैसे लोगों के कर्म को समझना इस जगत में सर्वाधिक दुरूह पहेली है।

हम क्या करते हैं, और हम पूछना क्यों चाहते हैं? हम पूछना इसलिए चाहते हैं कि अगर हमें पक्का पता चल जाए कि महावीर क्या करेंगे, तो वही हम भी कर सकते हैं। ध्यान रहे, महावीर हुए बिना आप वही नहीं कर सकते। हां,

विल्कुल वही करते हुए मालूम पड सकते है, लेकिन वह वही नही होगा। यही तो उपद्रव हुआ है। महावीर के पीछे ढाई हजार साल से लोग चल रहे हैं। और उन्होने महावीर को विशेष स्थितियो मे जो-जो करते देखा है, उसकी नकल कर रहे है। वह नकल है। उससे आत्मा का कोई अनुभव उपजता नही हे। महावीर के लिए वह सहज कृत्य था, इनके लिए प्रयास सिद्ध है। महावीर के लिए दृष्टि से निष्पन्न हुआ था, इनके लिए सिर्फ केवल एक वनायी गयी आदत हे। अगर महावीर किसी दिन उपवास से रह गए थे तो महावीर के लिए वह उपवास और ही अर्थ रखता था। उसके निहितार्थ अलग थे। हो सकता हे उस दिन वे इतने आत्म-लीन थे कि उन्हे शरीर का स्मरण ही न आया हो। लेकिन आज उनके पीछे जो उपवास कर रहा हे, वह जव भोजन करता है तव उसे शरीर का स्मरण नही आता और जव वह उपवास करता है तव चौवीस घण्टे शरीर का स्मरण आता है। अच्छा था कि भोजन ही कर लेता क्योकि वह महावीर के ज्यादा निकट होता, शरीर के स्मरण न आने मे। और भोजन न करके चौवीस घण्टे शरीर का स्मरण ही नही रहा तो भूख का किसे पता चले, कौन भोजन की तलाश मे जाए ?

महावीर जैसे व्यक्तियो की अनुकृति नही वना जा सकता। कोई नही वन सकता। और सभी परम्पराए वही काम करती हैं। यही काम विनष्ट कर देता हे। देख लेते है कि महावीर क्या कर रहे है। और इसी से दुनिया मे सारे धर्मों के झगडे खडे होते है। क्योकि कृष्ण ने कुछ और किया, बुद्ध ने कुछ और किया, क्राइस्ट ने कुछ और किया, सवकी स्थितिया अलग थी। महावीर ने कुछ और किया। तो महावीर का अनुसरण करने वाला कहता है कि कृष्ण गलत कर रहे है क्योकि महावीर ने ऐसा कभी नही किया। वुद्ध गलत कर रहे हैं क्योकि महावीर ने ऐसा कभी नही किया। वुद्ध का मानने वाला कहता है कि वुद्ध ठीक कर रहे है। और ऐसी स्थिति मे महावीर ने ऐसा नही किया इससे सिद्ध होता है कि उन्हे ज्ञान नही हुआ था।

हम कर्मों से ज्ञान को नापते है, यही भूल हो जाती है। कर्म ज्ञान से पैदा होते है और ज्ञान कर्म से वहुत वडी घटना है। जैसे लहर होती है सागर मे पैदा, लेकिन लहरो से सागर को नही नापा जाता है। और अगर हिन्द महासागर मे और तरह की लहर पैदा होती है और प्रशात महासागर मे और तरह की लहर, क्योकि और तरह की हवाए वहती हैं, और दिशाओ मे वहती है, तो आप यह मत समझना कि हिन्द महासागर है और प्रशात महासागर नही है, क्योकि वैसी लहर वहा कहा पैदा हो रही है! न पानी का वैसा रग हे।

महावीर की स्थितियो मे महावीर क्या करते है, वही हम जानते हैं। बुद्ध की स्थितियो ने वुद्ध क्या करते है, वही हम जानते है। फिर पीछे परम्परा जड हो जाती हे। फिर हम पकड कर वैठ जाते है। फिर शास्त्रो मे खोजते रहते है कि

इस स्थिति मे महावीर ने क्या किया था वही हम करें । न तो स्थिति है वही, और अगर स्थिति भी वही है तो एक बात पक्की है, आप महावीर नही हैं। क्योकि महावीर ने कभी नही लौटकर देखा कि किसने क्या किया था, वैसा मैं करू । महावीर से जो हुआ—इसलिए ठीक मे समझें, तो महावीर जो कह रहे हैं वह कृत्य नही है, एक्ट नही है, हैपनिंग है, बस घटना है। वैसा हो रहा है । वह कोई नियमबद्ध बात नही है । वह नियममुक्त चेतना से घटी हुई घटना है। वह स्वतन्त्र घटना है। इसीलिए कर्म का उसमे बंधन नही है। महावीर से जरूर बहुत कुछ होगा। क्या होगा, नही कहा जा सकता। कर्म उसका नाम नही है, होगा। हैपनिंग होगी। इसलिए मैं कोई उत्तर नही दे सकता कि महावीर क्या करेंगे।

प्रतिपल जीवन बदल रहा है । जिंदगी स्टिल फोटोग्राफ की तरह नही है। जैसा कि जड फोटोग्राफ होता है, वैसी नही है। जिंदगी चलचित्र की भाति है—भागती हुई फिल्म की भाति, डाइनैमिक। वहा सब बदल रहा है, सब पूरे समय बदल रहा है। सारा जगत् बदला जा रहा है। सब बदला जा रहा है। हर बार नयी स्थिति है । और हर बार नयी स्थिति मे महावीर हर-बार नये ढंग से होंगे प्रगट।

अगर महावीर आज हो, तो जैनो को जितनी कठिनाई होगी उतनी किसी और को नही होगी। क्योकि उनको बडी दिक्कत होगी। वे सिद्ध करेंगे कि यह आदमी गलत है क्योकि वह महावीर की पच्चीस सौ साल पहले वाली जिंदगी उठाकर जाच करेंगे कि वह आदमी वैसे ही कर रहा है कि नही कर रहा है। और एक बात पक्की है कि महावीर वैसा नही कर सकते, क्योकि वैसी कोई स्थिति नही है । सब बदल गया है·· सब बदल गया है। और जब वह कुछ और करेंगे—वे और करेंगे ही—तो जिसने जड बाध रखी है वह बडी दिक्कत मे पडेगा । वह कहेगा—यह नही हो सकता है। यह आदमी गलत है। सही आदमी तो वही था जो पच्चीस सौ साल पहले था। इसलिए महावीर को जैन भर स्वीकार नही कर सकेंगे । हा, और कोई मिल जाए नये लोग स्वीकार करने वाले, तो अलग बात है। यही बुद्ध के साथ होगा, यही कृष्ण के साथ होगा। होने का कारण है क्योकि हम कर्मों को पकड कर बैठ जाते है।

कर्म तो राख की तरह है, धूल की तरह है। टूट गये पत्ते है वृक्षो के—सूख गये पत्ते हैं वृक्षो के। उनसे वृक्ष नही नापे जाते। वृक्ष मे तो प्रतिपल नये अकुर आ रहे है। वही उसका जीवन है। सूखे पत्ते उसका जीवन नही है। सूखे पत्ते तो बताते यही हैं कि अब वे वृक्ष के लिए व्यर्थ होकर बाहर गिर गये हैं। सब कर्म आपके सूखे पत्ते हैं। वे बाहर गिरे जाते हैं। भीतर तो प्रतिपल जीवन नया और हरा होता चला जाता है। वह डाइनैमिक है। हम सूखे पत्तो को इकट्ठा कर लेते है और सोचते हैं वृक्ष को जान लिया। सूखे पत्तो से वृक्षो का क्या लेना-देना

है ! वृक्ष का सम्बन्ध तो सतत् धारा से हे प्राण की, जहा नये पत्ते प्रतिपल अकुरित हो रहे है। नये पत्ते कैसे अकुरित होगे, नही कहा जा सकता। क्योकि वृक्ष सोच-सोच कर पत्ते नही निकालते। वृक्ष से पत्ते निकलते है। सूरज कैसा होगा, हवाए कैसी होगी, वर्षा कैसी होगी, चाद-तारे कैसे होगे, इस सब पर निर्भर करेगा। उस सबसे पत्ते निकलेंगे। टोटल से निकलेगा सब, समग्र से निकलेगा सब। महावीर जैसे लोग कास्मिक मे जीते है, समग्र मे जीते हैं। कुछ नही कहा जा सकता कि वह क्या करेंगे। हो सकता है जिस पर बलात्कार हो रहा हे, उसको डाटे-डपटे। कुछ कहा नही जा सकता। नही तो भूल हो जाती है।

मुल्ला नसरुद्दीन गुजर रहा है गाव से। देखा कि एक छोटे-से आदमी को एक बहुत-बडा, तगडा आदमी अच्छी पिटाई कर रहा है। उसकी छाती पर बैठा हुआ है। मुल्ला को बहुत गुस्सा आ गया। मुल्ला दौडा और तगडे आदमी पर टूट पडा। बामुश्किल—तगडा आदमी काफी तगडा था, मुल्ला उसके लिए और भी काफी पड रहा था—किसी तरह उसको नीचे गिरा पाया। दोनो ने मिल कर उसकी अच्छी मरम्मत की।

जैसे ही वह छोटा आदमी छूटा, वह निकल भागा। वह बडा आदमी बहुत देर से कह रहा था, मेरी सुन भी, लेकिन मुल्ला इतने गुस्से मे था कि सुने कैसे। जब वह निकल भागा तब मुल्ला ने कहा—तू क्या कहता है ?

वह बोला कि वह मेरी जेब काट कर भाग गया। वह मेरी जेब काट रहा था, उसी मे तो झगडा हुआ। और तूने उल्टे मेरी कुटाई कर दिया और उसको निकाल दिया।

मुल्ला ने कहा—यह तो बहुत बुरी बात है। लेकिन तूने पहले क्यो नही कहा ?

उस आदमी ने कहा—मैं बार-बार कह रहा हू, लेकिन तू सुने तब ! तू तो एकदम पिटाई मे लग गया।

जिदगी बहुत जटिल है। वहा कौन पिट रहा है, जरूरी नही कि वह पिटने के योग्य न हो। कौन पीट रहा है, यह जरूरी नही कि वह बिचारा गलत ही कर रहा है। मुल्ला ने कहा—उस आदमी को मै ढूढूगा। ढूढा भी। लेकिन जो छोटा-सा आदमी इतने बडे आदमी से जेब काटकर निकल भागा हो—वह मुल्ला को मिल गया और उसने फौरन मनी बेग जो चुराया था, मुल्ला को दे दिया। 'इसे सभाल, असली मालिक तू ही है। क्योकि मैं तो पिट गया था।'

जिदगी जटिल है। महावीर जैसे व्यक्ति उसको उसकी पूरी जटिलता मे देखते है, और जब वह उसकी पूरी जटिलता मे दिखाई पडती है तो क्या होगा उनसे, कहना आसान नही है। और प्रत्येक घटना मे जटिलता बदलती चली जाती है। डाइनैमिक बहाव है।

सयम पर आज कुछ समझ लें। क्योकि महावीर उसे धर्म का दूसरा महत्वपूर्ण

मूल कहते हैं। अहिंसा आत्मा है, संयम जैसे श्वास और तप जैसे देह। महावीर ने शुरू किया, कहा—पहले अहिंसा संजमो तवो। तप आखिर में कहा, संयम बीच में कहा, अहिंसा पहले कहा। हम जब भी देखते हैं, तप हमें पहले दिखाई पड़ता है···तप हमें पहले दिखाई पड़ता है। संयम पीछे दिखाई पड़ता है। अहिंसा तो शायद ही दिखाई पड़ती है, बहुत मुश्किल है देखना।

महावीर भीतर से बाहर की तरफ चलते हैं, हम बाहर से भीतर की तरफ चलते हैं। इसलिए हम तपस्वी की जितनी पूजा करते हैं उतनी अहिंसक की न कर पाएंगे। क्योंकि तप हमें दिखाई पड़ता है, वह देह जैसा बाहर है। अहिंसा गहरे में है। वह दिखाई नहीं पड़ती, वह अदृश्य है। संयम का हम अनुमान लगाते हैं। जब हमें कोई तपस्वी दिखाई पड़ता है तो हम समझते हैं, संयमी है। क्योंकि यह तप कैसे करेगा! जब कोई हमें भोगी दिखाई पड़ता है तो हम समझते हैं, असंयमी है, नहीं भोग कैसे करेगा! जरूरी नहीं है यह। तपस्वी भी असंयमी हो सकता है और ऊपर से दिखाई पड़ने वाला भोगी भी संयमी हो सकता है। इसलिए हम संयम का सिर्फ अनुमान लगाते हैं, वह इनोसेंट है। तप हमें दिखाई पड जाता है, वह साफ है। संयम का हम अनुमान लगाते हैं, वह साफ नहीं है। वह अनुमान हमारा ऐसा ही है जैसे रास्ते पर गिरा हुआ पानी देखकर हम सोचें कि वर्षा हुई होगी। म्युनिसिपल की मोटर भी पानी गिरा जा सकती है। पुराने तर्कशास्त्रों की किताबों में लिखा है कि जहां-जहां पानी गिरा दिखाई पड़े, समझना कि वर्षा हुई होगी, क्योंकि उस वक्त म्युनिसिपल की मोटर नहीं थी।

संयम·· हम अनुमान लगाते हैं कि जो आदमी तप कर रहा है, वह संयमी है। जरूरी नहीं। तप करने वाला असंयमी हो सकता है, यद्यपि संयमी के जीवन में होता है लेकिन तपस्वी के जीवन में संयम का होना आवश्यक नहीं है। महावीर भीतर से चलते हैं क्योंकि वही प्राण है और वहीं से चलना उचित है। क्षुद्र से विराट की तरफ जाने में सदा भूलें होती हैं। विराट से क्षुद्र की तरफ आने में कभी भूल नहीं होती। क्योंकि क्षुद्र से जो विराट की तरफ चलता है वह क्षुद्र की धारणाओं को विराट तक ले जाता है। इससे भूल होती है। उसकी संकीर्ण दृष्टि को वह खींचता है। उससे भूल होती है।

तो संयम का पहले तो हम अर्थ समझ लें। संयम से जो समझा जाता रहा है, वह महावीर का प्रयोजन नहीं है। जो आमतौर से समझा जाता है, उसका अर्थ है—निरोध, विरोध, दमन, नियंत्रण, कंट्रोल। ऐसा भाव हमारे मन में बैठ गया है संयम से। कोई आदमी अपने को दबाता है, रोकता है, वृत्तियों को बांधता है, नियंत्रण रखता है तो हम कहते हैं संयमी है। संयम की हमारी परिभाषा बड़ी निषेधात्मक है, बड़ी निगेटिव है। उसका कोई विधायक रूप हमारे ख्याल में नहीं है। एक आदमी कम खाना खाता है, तो हम कहते हैं कि संयमी है। एक आदमी

कम सोता है तो हम कहते है कि सयमी है। एक आदमी विवाह नही करता है तो हम कहते है, सयमी है। एक आदमी कम कपडे पहनता है तो हम कहते है, सयमी है। सीमा बनाता है तो हम कहते हैं, सयमी है। जितना निषेध करता है, जितनी सीमा बनाता है, जितना नियन्त्रण करता है, जितना बाधता है अपने को, हम कहते है उतना सयमी है।

लेकिन मैं आपसे कहता हू कि महावीर जैसे व्यक्ति जीवन को निषेध की परिभाषाए नही देते। क्योकि जीवन निषेध से नही चलता है। जीवन चलता है विधेय से, पाजिटिव से। जीवन की सारी ऊर्जा विधेय से चलती है। तो महावीर की यह परिभाषा नही हो सकती। महावीर की परिभाषा तो सयम के लिए बडी विधेय की होगी, बडी विधायक होगी। सशक्त होगी, जीवत होगी। इतनी मुर्दा नही हो सकती जितनी हमारी परिभाषा है।

इसीलिए हमारी परिभाषा मानकर जो सयम मे जाता है उसके जीवन का तेज बढता हुआ दिखाई नही पडता, और क्षीण होता हुआ मालूम पडता है। मगर हम कभी फिक्र नही करते, हम कभी ख्याल नही करते कि महावीर ने जो सयम की बात कही है उससे तो जीवन की महिमा बढनी चाहिए, उससे तो प्रतिभा और आभामडित होनी चाहिए। लेकिन जिनको हम तपस्वी कहते है उनकी आइ० क्यू० की कभी जाच करवायी कि उनकी बुद्धि का कितना अक बढा? उनकी बुद्धि का अक और कम होगा। लेकिन हमे प्रयोजन नही कि इनकी प्रतिभा नीचे गिर रही है। हमे प्रयोजन है कि रोटी कितनी खा रहे हैं, कपडा कितना पहन रहे हैं। बुद्धिहीन से बुद्धिहीन टिक सकता हे, अगर वह रोटी बना ले—अगर दो रोटी पर राजी हो जाए, अगर एक वार भोजन को तैयार हो जाए।

एक साधु मेरे पास आये थे। वे मुझसे कहने लगे कि आपकी बात मुझे ठीक लगती है। मैं छोड देना चाहता हू यह परम्परागत साधुता। लेकिन मैं बडी मुश्किल मे पडूगा। अभी करोडपति मेरे पैर छूता है। कल वह मुझे पहरेदार की नौकरी भी देने को तैयार नही हो सकता, वही आदमी। कभी सोचा है आपने कि जिसके आप पैर छूते है अगर वह घर मे बर्तन मलने के लिए आपके पास आए तो आप कहेगे, सर्टिफिकेट है? कहा करते थे नौकरी, पहले? कहा तक पढे हो? चोरी-चपाटी तो नही करते? लेकिन पैर छूने मे किसी प्रमाण-पत्र की कोई जरूरत नही है। इतना प्रमाण-पत्र काफी होता है कि आपकी बुद्धि की समझ मे आ जाए कि यह सयमी है। सयम का जैसे अपने मे हमने कोई मूल्य समझ रखा है कि जो अपने को रोक लेता है तो सयमी है। रोक लेने मे जैसे अपना कोई गुण है। नही, जीवन के सारे गुण फैलाव के है। जीवन के सारे गुण विस्तार के हैं। जीवन के सारे गुण विधायक उपलब्धि के है, निषेध के नही हैं। महावीर के लिये सयम और है। उसकी हम बात करें, लेकिन हम जिसे सयम

समझते है उसका भी हम ख्याल ले लें।

हमारे लिए सयम का अर्थ है—अपने से लडता हुआ आदमी, महावीर के लिए सयम का अर्थ है—अपने साथ से राजी हुआ आदमी। हमारे लिए सयम का अर्थ है—अपनी वृत्तियो को सभालता हुआ आदमी, महावीर के लिए सयम का अर्थ है—अपनी वृत्तियो का मालिक हो गया जो। सभालता वही है, जो मालिक नही है। सभालना पडता ही इसलिए है कि वृत्तिया अपनी मालकियत रखती है। लडना पडता इसीलिए है कि आप वृत्तियो से कमजोर है। अगर आप वृत्तियो से ज्यादा शक्तिशाली है तो लडने की जरूरत नही रहती। वृत्तिया अपने से गिर जाती है। महावीर के लिए सयम का अर्थ है—आत्मवान्, इतना आत्मवान् कि वृत्तिया उसके सामने खडी भी नही हो पाती, आवाज भी नही दे पाती। उसका इशारा पर्याप्त है। ऐसा नही है कि उसे क्रोध को दवाना पडता है, ताकत लगाकर। क्योकि जिसे ताकत लगाकर दवाना पडे, उससे हम कमजोर है। और जिसे हमने ताकत लगाकर दवाया है, उसे हम कितना ही दवाये, हम दवा न पाएगे। वह आज नही कल टूटता ही रहेगा, फूटता ही रहेगा, वहता ही रहेगा। महावीर कहते है, सयम का अर्थ है—आत्मवान्—इतना आत्मवान् है व्यक्ति, कि क्रोध क्षमता नही जुटा सकता कि उसके सामने आ जाए।

एक कालेज मे मैं था। वहा एक वहुत मजेदार घटना घटी। उस कालेज के प्रिसिपल वहुत शक्तिशाली आदमी थे। बहुत दिन से प्रिसिपल थे। उम्र भी हो गयी रिटायर होने की, लेकिन वे रिटायर नही होते। प्राइवेट कालेज था। कमेटी के लोग उनसे डरते थे, प्रोफेसर उनसे डरते थे। फिर दस-पाच प्रोफेसरो ने इकट्ठा होकर कुछ ताकत जुटायी। और उनमे से जो सवसे ताकतवर प्रोफेसर था, उसको आगे वढाने की कोशिश की और कहा कि तुम सवसे ज्यादा पुराने भी हो, सीनियर-मोस्ट भी हो, तुम्हे प्रिसिपल होना चाहिए और इस आदमी को अब हटना चाहिए। सारे प्रोफेसरो ने ताकत लगाकर मैंने उनसे कहा भी कि देखो, तुम झझट मे पडोगे, क्योकि मैं जानता हू कि तुम सव कमजोर हो। और जिस आदमी को तुम आगे वढा रहे हो, वह आदमी विल्कुल कमजोर है। फिर भी वे नही माने। उन्होने कहा—सव सगठित है, सगठन मे शक्ति है। सारे प्रोफेसर प्रिसिपल के खिलाफ इकट्ठे हो गये और एक दिन उन्होने कालेज पर कब्जा भी कर लिया। और जिन सज्जन को चुना था, उनको प्रिसिपल की कुर्सी पर विठा दिया।

मैं देखने पहुचा कि वहा क्या होने वाला है। जो प्रिसिपल थे उन्हे ठीक वक्त पर उनके घर खबर कर दी गयी कि ऐसा-ऐसा हुआ है। उन्होने कहा, हो जाने दो। वे ठीक वक्त पर ११ वजे, जैसा रोज आते थे, आये दफ्तर मे। वे दफ्तर मे आये, तो जिसको विठाला था उस आदमी ने उठकर नमस्कार किया और

कहा—आइये बैठिये । वह तत्काल हट गया वहा से । उस प्रिंसिपल ने पुलिस को खबर नही की । उन लोगो ने खबर कर रखी थी कि कोई गडबड हो तो । मैने उनसे पूछा, कि आपने पुलिम को खबर नही की ? उन्होने कहा—इन लोगो के लिए पुलिस को खबर ! इनको जो करना हे करने दो ।

शक्ति जब स्वय के भीतर होती है तो वृत्तियो से लडना नही पडता । वृत्तिया आत्मवान् व्यक्ति के सामने सिर झुकाकर खडी हो जाती हैं, वे तो कमजोर आत्मा के सामने ही सिर उठाती है । इसलिए जो हमने आमतौर से सुन रखी है परिभाषा सयम की—कि जैसे कोई सारथी रथ मे बधे हुए घोडे की लगामे पकडे बैठा हुआ है—ऐसा अर्थ सयम का नही हे । वह दमन का हे, और गलत है ।

सयम का महावीर के लिए तो अर्थ है—जैसे कोई शक्तिवान अपनी शक्ति मे प्रतिष्ठित है । उसकी शक्ति मे प्रतिष्ठित होना ही, उराका अपनी ऊर्जा मे होना ही वृत्तियो का निर्बल और नपुसक हो जाना है, इम्पोटेट हो जाना है । महावीर अपनी कामवासना पर वश पाकर ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य को उपलब्ध नही होते । ब्रह्मचर्य की इतनी ऊर्जा है कि कामवासना सिर नही उठा पाती । यह विधायक अर्थ है । महावीर अपनी हिंसा से लडकर अहिंसक नही बनते । अहिंसक है, इसलिए हिंसा सिर नही उठा पाती । महावीर अपने क्रोध से लडकर क्षमा नही करते । क्षमा की इतनी शक्ति है कि क्रोध को उठने का अवसर कहा है ! महावीर के लिए अर्थ है—स्वय की शक्ति से परिचित हो जाना सयम है ।

सयम इसे क्यो नाम दिया है ? सयम नाम बहुत अर्थपूर्ण है और सयम का, शब्द का अर्थ भी बहुत महत्वपूर्ण है । अग्रेजी मे जितनी भी किताबें लिखी गयी है और सयम के बाबत जिन्होने भी लिखा है, उन्होने उसका अनुवाद कन्ट्रोल किया है जो कि गलत है । अग्रेजी मे सिर्फ एक शब्द हे जो सयम का अनुवाद बन सकता है, लेकिन भाषाशास्त्री को ख्याल मे नही आएगा । क्योकि भाषा की दृष्टि से वह ठीक नही है । अग्रेजी मे जो शब्द हे ट्रैंक्विलिटी, वह सयम का अर्थ हो सकता है । सयम का अर्थ है—इतना शान्त कि विचलित नही होता जो । सयम का अर्थ है—अविचलित, निष्कप । सयम का अर्थ है—ठहरा हुआ । गीता मे कृष्ण ने जिसे स्थितप्रज्ञ कहा हे, महावीर के लिए वही सयम हे । सयम का अर्थ है—ठहरा हुआ, अविचलित, निष्कप, डांवाडोल नही होता जो । जो यहा-वहा नही डोलता रहता, जो कंपित नही होता रहता, जो अपने मे ठहरा हुआ है । जो पैर जमाकर अपने मे ठहरा हुआ है ।

इसे हम और दिशा से समझे तो ख्याल मे आ जाएगा । अगर संयम का ऐसा अर्थ हे तो असयम का अर्थ हुआ कपन, वेवरिंग, ट्रैम्बलिंग । यह जो कंपता हुआ मन है, और कपते हुए मन का नियम है कि वह एक अति से दूसरी अति पर चला जाता है । अगर कामवासना मे जाएगा तो अति पर चला जाएगा । फिर

ऊबेगा, परेशान होगा—क्योकि किसी भी वासना मे होना सम्भव नही है सदा के लिए। सब वासनाए ऊबा देती है, सब वासनाए घबरा देती हैं क्योकि उनसे मिलता कुछ भी नही है। मिलने के जितने सपने थे, वे और टूट जाते है। सिवाय विफलता और विषाद के कुछ हाथ नही लगता। तो वासना घिरा मन अति पर जाता है, फिर वासना से ऊब जाता है, घबरा जाता है, फिर दूसरी अति पर चला जाता है। फिर वह वासना के विपरीत खडा हो जाता है। कल तक ज्यादा खाता था, फिर एकदम अनशन करने लगता है।

इसलिए ध्यान रखना, अनशन की धारणा सिर्फ ज्यादा भोजन उपलब्ध समाजो मे होती है। अगर जैनियो को उपवास और अनशन अपील करता है तो उसका कारण यह नही है कि महावीर को वे समझ गये है कि उनका क्या मतलब है। उसका कुल मतलब इतना है कि वह ओवर-फैड समाज है। ज्यादा उनको खाने को मिला हुआ है, और कोई कारण नही है। कभी आपने देखा है, गरीब का जो धार्मिक दिन होता है, उस दिन वह अच्छा खाना बनाता है। और अमीर का जो धार्मिक दिन होता है, उस दिन वह उपवास करता है। अजीब मजा है। तो जितने गरीब धर्म है दुनिया मे, उनका उत्सव का दिन ज्यादा भोजन का दिन है। जितने अमीर धर्म है दुनिया मे, उनके उत्सव का दिन उपवास का दिन है। जहा-जहा भोजन बढेगा वहा-वहा उपवास का कल्ट बढता है। जब अमरीका मे जितने उपवास का कल्ट है, आज दुनिया मे कही भी नही है। अमरीका मे जितने लोग आज उपवास की चर्चा करते हैं और फास्टिंग की सलाह देते है, नैचुरोपैथी पर लोग उत्सुक होते है, उतने दुनिया मे कही भी नही। उसका कारण है। लेकिन इसका यह अर्थ नही है कि आप महावीर को समझकर उत्सुक हो रहे हैं। आप ज्यादा खा गए है, इसलिए उत्सुक हो रहे है। दूसरी अति पर चले जाएगे। पर्युषण आएगा, आठ दिन, दस दिन आप कम खा लेंगे और दस दिन योजनाए बनाएगे खाने की, आगे। और दस दिन के बाद पागल की तरह टूटेंगे और ज्यादा खा जायेंगे और बीमार पडेंगे। फिर अगले वर्ष यही होगा।

सच तो यह है कि ज्यादा खाने वाला जब उपवास करता है तो उससे कुछ उपलब्ध नही होता, सिवाय इसके कि उसको भोजन करने का रस फिर से उपलब्ध हो, रीओरिएटेशन हो जाता है। आठ-दस दिन भूखे रह लिए, स्वाद जीभ मे फिर आ जाता है। और महावीर कहते है—उपवास मे रस से मुक्ति होनी चाहिए, उनका रस और प्रगाढ हो जाता है। उपवास मे सिवाय रस के बाबत आदमी और कुछ नही सोचता, रस चिंतन चलता है और योजना बनती है। भूख लगती है, और कुछ नही होता। मर गयी भूख, स्टिल हो गयी भूख, फिर सजीव हो जाती है। दस दिन के बाद आदमी टूट पडता है, भोजन पर। अति पर जाता है मन। असयम है एक अति से दूसरी अति, अति पर डोलते रहना। फ्राम वन एक्स्ट्रीम

टु दि अदर। सयम का अर्थ है—मध्य मे हो जाना। अनति—नो एक्सट्रीम।

अगर हम समझते हो कि ज्यादा भोजन असयम है, तो मै आपसे कहता हू कि कम भोजन भी असयम है, दूसरी अति पर। सम्यक आहार सयम है, सम्यक आहार बडी मुश्किल चीज है। ज्यादा भोजन करना बहुत आसान है। बिल्कुल भोजन न करना बहुत आसान है। ज्यादा खा लेना आसान, कम खा लेना आसान—सम्यक् आहार अति कठिन है। क्योकि मन जो है, वह सम्यक् पर रुकता ही नही। और महावीर की शब्दावली मे अगर कोई शब्द सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है तो वह सम्यक् है। सम्यक् का अर्थ है—इन दि मिडल, नेवर टु दि एक्सट्रीम। कभी अति पर नही, सम। जहाँ सब चीजें सम हो जाती हो, अति का कोई तनाव नही रह जाता, जहा सब चीजें ट्रैक्विलिटी को उपलब्ध हो जाती है। जहा न इस तरफ खीचे जाते, न उस तरफ। जहा दोनो के मध्य मे खडे हो जाते है। वह जो सम-स्वर है जीवन का, सभी दिशाओ मे···सभी दिशाओ मे, उस सम-स्वरता को पा लेना सयम है। हम उसे कभी न पा सकेंगे। क्योकि हम निषेध करते है। निषेध मे हम दूसरी अति पर होते है। निषेध के लिए दूसरी अति पर जाना जरूरी होता है।

सुना है मैंने कि मुल्ला नसरुद्दीन एक चुनाव मे खडा हो गया। दौरा कर रहा था अपने कास्टिट्युएंसी का, अपने चुनाव-क्षेत्र का। बडे नगर मे आया, जो केन्द्र था चुनाव-क्षेत्र का। मित्रो से मिला। एक मित्र ने कहा कि फला आदमी तुम्हारे खिलाफ ऐसा-ऐसा बोलता था। तो मुल्ला जितनी गाली जानता था, उसने सब दी।

उसने कहा—'वह आदमी कोई आदमी है, शैतान की औलाद है। और एक दफा मुझे चुन जाने दो, उसे नर्क भिजवा के रहूगा।'

उस मित्र ने कहा कि मैंने तो सिर्फ सुना था कि मुल्ला, तुम बहुत अच्छी गालिया दे सकते हो, इसलिए मैने यह कहा। वह आदमी तुम्हारा बडा प्रशसक है।

मुल्ला ने कहा कि मैं पहले से ही जानता हू, वह देवता है। एक दफा मुझे चुन जाने दो, देखना, मैं उसकी पूजा करवा दूगा, मन्दिरो मे बिठा दूगा। वह आदमी देवता है।

उस आदमी ने कहा—मुल्ला, इतनी जल्दी तुम बदल जाते हो?

मुल्ला ने कहा—कौन नही बदल जाता? सभी बदल जाते हैं। मन ऐसा ही बदलता है। जो आज रूप की देवी मालूम पडती है, कल वही साक्षात कुरूपता मालूम पडती है।

मन तत्काल एक अति से दूसरी अति पर चला जाता है। जिसे आज आप शिखरों पर बिठाते है, कल उसे आप घाटियो मे उतार देते हैं। मन

बीच मे नही रुकता। क्योकि मन का अर्थ है—तनाव, टेंशन। बीच मे रुकेंगे तो तनाव तो होगा नही। जब तक अति पर न हो तब तक तनाव नही होता। इसलिए एक अति से दूसरी अति पर मन डोलता रहता है। मन जी ही सकता ह अति मे। सयम मे तो मन समाप्त हो जाता है। इसलिए जब आप कहते है—फला आदमी के पास बहुत 'सयमी मन' है तब आप बिल्कुल गलत कहते है। सयमी के पास मन होता ही नही। इसलिए जैन, बौद्धो मे जो फकीर है वे कहते है—सयम तभी उपलब्ध होता है जब 'नो-माइड' उपलब्ध होता है, जब मन नही रह जाता है। कबीर ने कहा है—जब अ-मन अवस्था आती है, नो-माइड की, अ-मन, मन नही रह जाता, तभी सयम उपलब्ध होता है। अगर हम ऐसा कहे कि मन ही असयम है, तो कुछ अतिशयोक्ति न होगी। ठीक ही होगा यही। मन ही असयम है। मन का नियम है—तनाव, खिचे रहो, इसके लिए जरूरी है कि अति पर रहो, नहीं तो खिचे नही रहोगे। अति पर रहो, तो खिचाव बना रहेगा, तनाव बना रहेगा, चित्त तना रहेगा। और हम सब ऐसे लोग है कि जितना चित्त तना रहे, उतना ही हमे लगता हे कि हम जीवित है। अगर चित्त मे कोई तनाव न हो तो हमे लगता है—मरे, मर न जाए, खो न जाए।

जो लोग ध्यान मे गहरा उतरते है मुझे आकर कहने लगते हैं कि अब तो बहुत डर लगता है। ऐसा लगता है, कही मर न जाऊ। मरने का कोई सवाल ही नही है ध्यान मे, लेकिन डर लगने का सवाल हे। डर इसलिए लगता है कि जैसे-जैसे ध्यान गहरा होता है, मन शून्य होता है। और जब मन शून्य होता है, तो हमने तो अपने को मन ही समझा हुआ है, तो लगता ह हम मरे। मिट न जाएगे! अगर अतीत छोड देंगे तो समाप्त न हो जाएगे! गति कहा रहेगी, फिर हम ही हो जाएगे।

डा० ग्रीन ने अमरीका मे एक यन्त्र बनाया हुआ है—फीड-बैक यन्त्र है, और कीमती है। और आज नही कल, सभी मन्दिरो मे लग जाना चाहिए, सभी गिरजाघरो में, सभी चर्चों मे। एक यन्त्र है जिसकी कुर्सी पर आदमी बैठ जाता है और सामने उसकी कुर्सी पर पर्दा लगा रहता है। उस पर्दे पर थर्मामीटर की तरह प्रकाश घटने बढने लगते है। दो रेखाओ मे प्रकाश ऊपर बढता है, जैसे थर्मामीटर का पारा ऊपर बढता है। आपके मस्तिष्क मे दोनो तरफ खोपडी पर तार बाध दिये जाते है। ये तार उन प्रकाशो से जुडे होते है। और आपका मन जब अतियो मे चलता है तो एक रेखा बिल्कुल आसमान छूने लगती है, दूसरी जीरो पर हो जाती हे। बहुत अद्भूत महत्त्वपूर्ण है वह। जब आप सोच रहे होते हैं कामवासना के सम्बन्ध मे, तब एक रेखा आपकी आसमान छूने लगती है, दूसरी शून्य हो जाती है। सामने पास मे ग्रीन खडा है, वह आपको तस्वीरें दिखाता है, नगी औरतो की, और आपके मन मे कामवासना को जगाता है। साथ

मे सगीत बजता है जो आपके भीतर कामवासना को जगाता है। एक रेखा आसमान छूने लगती है, दूसरी शून्य हो जाती है। फिर तस्वीरें हटा ली जाती है। फिर बुद्ध और महावीर और क्राइस्ट के चित्र दिखाए जाते है। फिर सगीत वदल दिया जाता है। ब्रह्मचर्य का कोई सूत्र आदमी के सामने रख दिया जाता है और उससे कहा जाता है, ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध मे चिंतन करो। तो एक रेखा नीचे गिरने लगती है, दूसरी रेखा ऊपर चढने लगती है। और वह तब तक नही रुकता आदमी, जब तक कि पहली शून्य न हो जाए और दूसरी पूर्ण न हो जाए। ग्रीन कहता है—यह चित्त की अवस्था है।

फिर ग्रीन तीसरा प्रयोग करता है। वह कहता है—तुम कुछ मत सोचो। न तुम ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध मे सोचो, न तुम कामवासना के सम्बन्ध मे सोचो। तुम तो सामने देखो और सिर्फ इतना ही ख्याल करो कि यह शात मेरा मन हो जाए और ये दोनो रेखाए समतुल हो जाए। वह आदमी देखता है, एक रेखा नीचे गिरने लगी, दूसरी ऊपर वढने लगी। इसको फीड-वैक कहता है, ग्रीन। इससे उसकी हिम्मत वढती है कि कुछ हो रहा है।

इसलिए मै कहता हू कि ध्यान के लिए सारे मन्दिरो मे वह यत्र लग जाना चाहिए। क्योकि आपको पता नही चलता कि कुछ हो रहा है कि नही हो रहा है। पता चले कि हो रहा है तो आपकी हिम्मत वढती है, उतनी जल्दी उसकी रेखाए करीव आने लगती है। जितनी करीव आने लगती है, वह फीड-वैक मैकेनिज्म हो गया। वह देखता है, उसे लगता है हो रहा है मन शात। वह और शात होता है, और शात होता है। यंत्र मे दिखाई पडता है, और शात हो रहा है, और शात होने की हिम्मत वढती है। वहुत शीघ्र—पन्द्रह मिनट, बीस मिनट, तीस मिनट मे दोनो रेखाए साथ, समान आ जाती है। और जब दोनो रेखाए समान आती है तव वह आदमी कहता है—आह! ऐसी शाति कभी नही जानी। ऐसा कभी जाना ही नही। इसको ग्रीन को एक नया ही शब्द देना पडा है क्योकि कोई शब्द नही कि इसको कौन-सा अनुभव कहे। तो वह कहता है—'अहा ऐक्सपीरिएस।' जब वह दोनो रेखाए शात हो जाती है तब आदमी कहता है—अहा!

और एक दफा यह अनुभव मे आ जाए तो सयम का ख्याल आ सकता है, अन्यथा सयम का ख्याल नही आ सकता है। सयम का अर्थ है—चित्त जहा कोई भी अति मे न हो, और अहा ऐक्सपीरिएंस मे आ जाए। एक अहो भाव भर रह जाए, एक शात मुद्रा रह जाए, तो सयम है। और यह सयम वडी पाजिटिव वात है।

जव दोनो अतिया साथ खडी हो जाती है तब दोनो एक दूसरे को काट देती है आदमी मुक्त हो जाता है। लोभ और त्याग दोनो सम हो गए, तो फिर आदमी त्यागी भी नही होता, लोभी भी नही होता। और जहा तक लोभ होता

है वहा तक वेचैनी होती है और जहा तक त्याग होता है वहा तक भी वेचैनी होती है। क्योकि त्याग उल्टा खडा हुआ लोभ ही है, और कुछ भी नही हे। शीर्पासिन करता हुआ लोभ है।

जव तक कामवासना मन को पकडती ह तव तक भी वेचैनी होती है और जव तक ब्रह्मचर्य आकर्षण देता है तव तक वेचैनी होती है क्योकि ब्रह्मचर्य है क्या? उल्टा खडा हुआ काम है, शीर्पासन करता हुआ काम। वास्तविक ब्रह्मचर्य तो उस दिन उपलब्ध होता है कि जिस दिन ब्रह्मचर्य का भी पता नही रह जाता। वास्तविक त्याग तो उस दिन उपलब्ध होता है जिस दिन त्याग का वोध भी नहीं रह जाता। पता भी नही रहता, क्योकि पता कैसे रहेगा? जिसके मन मे लोभ ही न रहा, उसे त्याग का पता कैसे रहेगा? अगर त्याग का पता है तो लोभ कही-न-कही पीछे छिपा खडा है। वही तो पता करवाता है। कट्रास्ट चाहिए न पता होने को। काली रेखा चाहिए न, सफेद कागज पर! काले व्लैक वोर्ड पर सफेद चाक चाहिए न। नही तो दिखेगा कैसे? जव तक आपको दिखता है मैं त्यागी, तव तक आप जानना कि भीतर मैं लोभी मजवूती से खडा है। नही तो दिखेगा कैसे। जव तक आपको यह लगता है कि मैं ब्रह्मचारी! तव तक आप चोटी-वोटी वाधकर और तिलक-टीका लगाकर जोर से घोपणा करते फिरते है खडाऊ वजाकर, कि मैं ब्रह्मचारी! तव तक आप समझना कि पीछे उपद्रव छिपा है। आपकी चोटी देखकर लोगो को सावधान हो जाना चाहिए कि खतरनाक आदमी जा रहा है। खडाऊ वगैरह की आवाज सुनकर लोगो को सचेत हो जाना चाहिए। वह पीछे छिपा है जो ब्रह्मचर्य का दावा कर रहा है, वह कामवासना का ही रूप है।

सयम महावीर कहते हैं उस क्षण को, जहा न काम रहा, न ब्रह्मचर्य रहा। जहा न लोभ रहा, न त्याग रहा। जहा न यह अति पकडती है, न वह अति पकडती है। जहा आदमी अनति मे, मौन मे, शाति मे थिर हो गया। जहा दोनो विन्दु समान हो गए। जहा एक दूसरे की शक्ति न एक दूसरे को काट कर शून्य कर दिया। सयम, यानी शून्य। और इसलिए सयम सेतु है। इसलिए सयम के ही माध्यम से कोई व्यक्ति परमगति को उपलब्ध होता है।

इसलिए सयम को श्वास मैंने कहा। और कारणो से भी श्वास कहा है। क्योकि आपको शायद पता न हो, आप श्वास में भी असयमी होते है। या तो आप ज्यादा श्वास लेते होते हैं, या कम श्वास लेते है। पुरुष ज्यादा श्वास लेने से पीडित हैं, स्त्रिया कम श्वास लेने से पीडित है। जो आक्रमक है वे ज्यादा श्वास लेने से पीडित होते है, जो सुरक्षा के भाव मे पडे रहते हैं वे कम श्वास लेने से पीडित है। हममे से वहुत कम लोग है जिन्होने सच मे ही सयमित श्वास भी ली हो, और तो दूसरे काम करने मे वहुत कठिन है। श्वास तो आपको लेनी भी नही पडती, उसमे कोई लाभ-

हानि भी नही है। लेकिन वह भी हम सयमित नही लेते। हमारी श्वास भी तनाव के साथ चलती है। ख्याल करें आप, कामवासना मे आपकी श्वास तेज हो जाएगी। आप उतने ही समय मे, जितनी आप साधारण श्वास लेते है, दुगुनी और तिगुनी श्वास लेंगे। इसलिए पसीना आ जाएगा, शरीर थक जाएगा। अब अगर कोई आदमी ब्रह्मचर्य साधने की कोशिश करेगा तो साधने मे वह श्वास कम लेने लगेगा। ठीक विपरीत होगा। होगा ही।

असल मे ब्रह्मचारी जो है, वह एक अर्थ मे कजूस हे, सब मामलो मे। यही नही है कि वह वीर्य-शक्ति के मामले मे कजूस हे। जैसे वह कजूस होता है सब मामलो मे, वैसे वह श्वास के मामले मे भी कजूस होगा। अगर हम बायोलाजिकली समझने की कोशिश करें तो जो ब्रह्मचर्य की कोशिश है, वह एक तरह की कान्स्टि-पेशन की कोशिश है। कोष्ठबद्धता है वह। आदमी सब चीजो को भीतर रोक लेना चाहता है, कुछ निकल न जाए शरीर से उसके। तो, श्वास भी वह धीमी लेगा। सब चीजो को रोक लेगा। वह रुकाव उसके चारो तरफ व्यक्तित्व मे खडा हो जाएगा। वे अतियां है।

श्वास की सरलता उस क्षण मे उपलब्ध होती है, जब आपको पता ही नही चलता कि आप श्वास ले भी रहे है। ध्यान मे जो लोग भी गहरे जाते है उनको वह क्षण आ जाता है। वह मुझे आकर कहते है कि कही श्वास बन्द तो नही हो जाती! पता नही चलता, बन्द नही होती श्वास। श्वास चलती रहती है। लेकिन इतनी शात हो जाती है, इतनी समतुल हो जाती है, बाहर जाने वाली श्वास, भीतर आने वाली श्वास ऐसी समतुल हो जाती है कि दोनो तराजू बराबर खडे हो जाते हे। पता ही नही चलता। क्योकि पता चलाने के लिए थोडा बहुत हलन-चलन चाहिए। पता चलने के लिए थोडी बहुत डगमगाहट चाहिए। पता चलने के लिए थोडा मूवमेंट चाहिए। यह सब मूवमेंट एक अर्थ मे थिर है। ऐसा नही कि नही चलता। चलता है, लेकिन दोनो तुल जाते है। जो व्यक्ति जितना सयमी होता है उतनी उसकी श्वास भी सयमित हो जाती हे। या जिस व्यक्ति की जितनी श्वास सयमित हो जाती है उतना उसके भीतर सयम की सुविधा बढ जाती है इसलिए श्वास पर बडे प्रयोग महावीर ने किए।

श्वास के सम्बन्ध मे भी अत्यन्त सतुलित, और जीवन के और सारे आयामो मे भी अत्यन्त सतुलित। महावीर कहते हैं—सम्यक् आहार, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् निद्रा, सम्यक्.. सभी कुछ सम्यक् हो। वे नही कहते है कि कम सोओ, वे नही कहते कि ज्यादा सोओ, वे कहते इतना ही सोओ जितना सम है। वे नही कहते कम खाओ, ज्यादा खाओ, वे कहते है उतना ही खाओ जितना सम पर ठहर जाता है। इतना खाओ कि भूख का भी पता न चले और भोजन का भी पता न चले। अगर खाने के बाद भूख का पता चलता है तो आपने कम खाया और अगर

खाने के बाद भोजन का पता लगने लगता है तो आपने ज्यादा खा लिया। इतना खाओ कि खाने के बाद भूख का भी पता न चले और पेट का भी पता न चले। लेकिन हम दोनो नही कर पाते हैं, या तो हमे भूख का पता चलता है और या हमे पेट का पता चलता है। भोजन के पहले भूख का पता चलता है और भोजन के बाद भोजन का पता चलता है, लेकिन पता चलना जारी रहता है।

महावीर कहते हैं—पता चलना बीमारी है। असल मे शरीर के उसी अग का पता नही चलता है जो बीमार होता है। स्वस्थ अग का पता नही चलता। सिर दर्द होता है तो सिर का पता चलता है, पैर मे काटा गडता है तो पैर का पता चलता है। महावीर कहते हैं—सम्यक् आहार पता भी न चले—भूख का भी नही, भोजन का भी नही। सोने का भी नही, जागने का भी नही। श्रम का भी नही, विश्राम का भी नही। मगर हम दो मे से कुछ एक को ही कर पाते हैं। या तो हम श्रम ज्यादा कर लेते है, या विश्राम ज्यादा कर लेते है।

कारण क्या है यह ज्यादा कर लेने मे ? कुछ भी ज्यादा कर लेने मे ? कारण यही है कि ज्यादा करने मे हमे पता चलता है कि हम है। हमे पता चलता है कि हम हैं और हम चाहते हैं कि हमे पता चलता रहे कि हम है। यही महावीर की अहिसा के बाबत मैंने आपसे कहा कि अहिसा का अर्थ है—हमे पता ही न चले। ऐब्सेंट हो जाए। अनुपस्थित। तब हमारा मन होता है, हमारा पता चले कि हम हैं। यही अहकार कि हमे पता चलता रहे कि हम हैं। न केवल हमे, बल्कि औरो को पता चलता रहे कि हम हैं। तो फिर हम असयम के सिवाए हमारे लिए कोई मार्ग नही रह जाता। इसलिए जितना असयमी आदमी हो, उतना ही उसका पता चलता है।

एमाइल जोला ने अपने सस्मरणो मे लिखा है कि अगर दुनिया मे सब अच्छे आदमी हो तो कथा लिखना बहुत मुश्किल हो जाए। कथानक न मिले। अच्छे आदमी की कोई जिन्दगी की कहानी होती है ? नही होती। क्या बताइएगा ? बुरे आदमी की जिन्दगी मे कहानी होती है। बुरे आदमी की जिन्दगी कहानी होती है। अच्छे आदमी की जिन्दगी अगर सच मे ही अच्छी है तो शून्य हो जाती हैं। कहानी कहा बचती है ! कुछ नही बचता है। जीसस की जिन्दगी का बहुत कम पता है। ईसाई बडे परेशान रहते हैं कि जिन्दगी का बहुत कम पता है। वे कोई उत्तर नही दे पाते। जीसस पैदा हुए, इसका पता है। फिर पाच साल की उम्र मे एक बार मदिर मे देखे गए, इसका पता है। फिर तीस साल की उम्र मे देखे गए, इसका पता है। फिर तैतीसवे साल मे सूली लग गई, इसका पता है। बस इतनी कहानी है। तीस साल की जिन्दगी का कोई पता नही है।

एक ईसाई फकीर मुझे मिलने आया था। वह कहने लगा—आप महावीर के सम्बन्ध मे कहते है, बुद्ध के सम्बन्ध मे कहते है, कभी आप क्राइस्ट के सम्बन्ध मे

कहे। और वह जो तीस साल, जो बिल्कुल पता नही है, उनके सम्बन्ध मे कहे। तो मैंने कहा—थोडा तो कहा जा सकता है। लेकिन, सच बात यह है कि पता न होने का कुल कारण इतना है कि जीसस की जिन्दगी मे कुछ भी नही था, नो इवेन्ट। और अगर लोग सूली न लगाते यह भी जीसस की जिन्दगी का इवेन्ट नही है, लोगो की जिन्दगी का है। लोगो ने सूली लगा दी। इसमे जीसस क्या करें! अगर लोग सूली न लगाते तो यह भी कथा न होती। लोग न माने तो लोगो ने सूली लगा दी। इसलिए कथा है, नही तो जीसस का पता ही नही चलता, इस जमीन पर। यह सूली लगाने वालो ने इनको टिका दिया। तो जीसस कोरे कागज की तरह आते और विदा हो जाते। बहुत लोग आए और इसी तरह विदा हो गए हैं।

अगर हम महावीर की जिन्दगी मे भी खोजें तो किस बात का पता है? कभी किसी ने कान मे कीले ठोक दिए, इसका पता है। लेकिन दिस इज नाट इवेंट इन दि महावीर लाइफ। यह महावीर की जिन्दगी की घटना नही है, यह तो कीलें ठोकने वाले की जिन्दगी की घटना है। महावीर का क्या है इसमे हाथ? कि कोई आया और महावीर के चरणो मे सिर रख दिया। यह भी महावीर की जिन्दगी की घटना नही है। यह तो सिर रखने वाले की जिन्दगी की घटना है। कि किसी ने चिल्लाकर महावीर को तीर्थंकर कह दिया, यह भी महावीर की जिन्दगी की घटना नही है। यह भी तो किसी के चिल्लाने की घटना है। अगर हम शुद्ध रूप से महावीर की जिन्दगी खोजने जाए तो कोरा कागज हो जाएगी। अच्छे आदमी की कोई जिन्दगी नही होती। आदमी की ही जिन्दगी होती है। इसलिए कहानी लिखनी हो या सिने कथा लिखनी हो बुरे आदमी को चुनना पडता है। इसके विना नही ·· इसके विना वहुत मुश्किल हो जाएगा।

रावण के विना हम रामायण की कल्पना नही कर सकते। राम के विना कर भी सकते है। राम की जगह कोई भी अ ब स द भी काम दे सकता है। लेकिन रावण अपरिहार्य है। उसके विना कहानी मे जान नही निकल पाएगी। वही असली कथा है। लोग समझते है, राम हैं कथा के केन्द्र, उसके नायक। मैं नही समझता। रावण है। हमेशा बुरा आदमी हीरो होता है। इसलिए हीरो वनने से जरा बचना। नायक होने के लिए बुरा होना बिल्कुल जरूरी है।

सयमी व्यक्ति के जीवन से सारी घटनाए विदा हो जाती है। और घटनाए विदा होते ही उसे 'मैं हू' यह कहने का भी उपाय नही रह जाता। और हम सब कहना चाहते है कि मैं हू। इसलिए असयम हमे जरूरी होता है। कभी ज्यादा खाकर हम जाहिर करते है कि मैं हू, कभी उपवास करके जाहिर करते है कि मैं हू। कभी वेश्यालय मे जाहिर करते हैं कि मैं हू, कभी मदिर मे जाकर जाहिर करते हैं कि मैं हू। लेकिन हमारा जाहिर करना जारी रहता है। मदिर मे भी कोई देखने वाला

न आए तो हमारा जाने का मन नही होता।

हम वही करते हैं जिसे लोग देखते हैं और मानते हैं कि कुछ हो। मैं हूं, इसे बताना होता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं—जितने लोग इस जमीन पर बुरे हो जाते है, अगर हम ऐसा समाज बना सकें कि जितना बुरे आदमी को नाम मिलता है—लोग उसे बदनाम करते हैं, अगर उतना अच्छे आदमी को नाम मिलने लगे तो कोई आदमी बुरा न हो। वह अच्छा ही हो। बुरा आदमी भी अस्मिता की, अहकार की खोज मे ही बुरा होता है। आप इसको देखते ही नही, आप इसकी तरफ ध्यान ही नही देते, आप मानते ही नही कि तुम हो। उसे कुछ न कुछ करना पडता है। उसे कुछ करके दिखाना पडता है। अखबार किसी ध्यान करने वाले की खबर नही छापते, किसी की छाती मे छुरा भोकने वाले की खबर छापते हैं। अखबार इसकी खबर नही छापते कि एक स्त्री अपने पति के प्रति जीवन भर निष्ठावान रही। अखबार इसकी खबर छापते हैं कि कौन स्त्री भाग गई।

मुल्ला नसरूद्दीन को उसके गाव के लोगो ने मजिस्ट्रेट बना दिया था, बुढापे मे। पहले ही दिन अदालत मे कोई मुकदमा नही आया। दोपहर हो गयी, मुशी बेचैन होने लगा—मुल्ला का मुशी जो था वह बेचैन होने लगा, उदास होने लगा। मक्खी उडती हैं वहा।

मुल्ला ने कहा—बेचैन मत हो, घबरा मत। हैव फेथ आन ह्यूमन नेचर। आदमी के स्वभाव पर भरोसा रखो। शाम तक कुछ न कुछ होकर रहेगा। तू घबरा मत, इतना बेचैन मत हो। कोई-न-कोई हत्या होगी, कोई-न-कोई स्त्री भाग जाएगी, कोई-न-कोई उपद्रव होकर रहेगा। हैव फेथ आन ह्यूमन नेचर। आदमी के स्वभाव पर भरोसा रख। आदमी बिना कुछ किए नही रहेगा। आदमी के स्वभाव पर भरोसा ''सब अखबार उसी भरोसे पर चलते है, नही तो कोई अखबार नही चल पाता। लेकिन कल घटनाए घटेगी, अखबार मे जगह नही बचेगी। पक्का पता है, आदमी के स्वभाव पर भरोसा है। कोई स्त्री भागेगी, कोई हत्या करेगा, कोई चोरी करेगा, कोई गबन करेगा, कोई मिनिस्टर कुछ करेगा, कोई कुछ करेगा। कही युद्ध होगा, कही उपद्रव होगा, कही सेना भेजी जाएगी, कही क्रान्ति होगी। आदमी के स्वभाव पर भरोसा है, नही तो अखबार सब मुश्किल मे पड जाएगे। भले आदमी की दुनिया मे अखबार बहुत मुश्किल मे होगे। इसलिए मैंने सुना है स्वर्ग मे कोई अखबार नही है, नर्क मे सब है। स्वर्ग मे कोई घटना नही घटती, नो इवेन्ट। खबर भी क्या छापिएगा? अगर छापिएगा तो, छपते-छपते, बस अन्त मे कुछ छपेगा नही।

भले आदमी की जिन्दगी मे कोई घटना नही है और हम चाहते है कि हम हो। घटनाओ के जोड के बिना हम नही हो सकते। और अगर घटनाए चाहिए तो आपको तनाव मे जीना पडेगा, अतियो पर डोलना पडेगा। क्रोध करना पडेगा, क्षमा करना पडेगा। भोग करना पडेगा, त्याग करना पडेगा। दुश्मनी करनी

पड़ेगी, दोस्ती करनी पड़ेगी। सयमी का अर्थ है—जो द्वन्द्व मे कुछ भी नही करता है, जो द्वन्द्व के बाहर सरक जाता है। जो कहता है—न दोस्ती करेंगे, न दुश्मनी करेंगे। महावीर किसी से मित्रता नहीं करते हैं क्योकि महावीर जानते है मित्रता एक अति है। महावीर किसी से शत्रुता भी नही करते क्योकि महावीर जानते हैं शत्रुता अति है। लेकिन हम ! हम उल्टा सोचते है। हम सोचते है कि अगर दुनिया मिटानी हो तो सबसे मित्रता करनी चाहिए। आप गलती मे है। मित्रता एक अति है, उससे शत्रुता पैदा होती है। उधर आप मित्रता करते है, ठीक उतनी ही बैलैंसिंग आपको किसी से शत्रुता करनी पडेगी। उतना ही सन्तुलन बनाना पडेगा।

मुसलमान फकीर हुआ है हसन। बैठा है अपनी झोपडी मे। साधक कुछ पास बैठे है। एक अजनबी सूफी फकीर भीतर प्रवेश करता है, चरणो मे गिर जाता है हसन के और कहता है—तुम भगवान हो, तुम साक्षात अवतार हो, तुम ज्ञान के साकार रूप हो। बडी प्रशसा करता है। हसन बैठा, सुनता रहा। जब वह फकीर सब प्रशसा कर चुकता है तो एक और फकीर वहा बैठा हुआ है—बायजीद वहा बैठा हुआ है। वह हसन जैसी ही कीमत का आदमी है। जब वह फकीर प्रशसा करके जा चुका होता है चरण छू कर, तो बायजीद एकदम से हसन को गाली देना शुरू कर देता है। सभी लोग चौक जाते है। बायजीद, और हसन को गालिया दे ! पीडा भी अनुभव करते है, लेकिन बायजीद भी कीमती फकीर है। कुछ कोई बोल तो सकता नही। हसन बैठा सुनता रहा। बायजीद गालिया देकर चला जाता है। बायजीद के जाते ही शिष्यो मे से कोई पूछता है हसन से कि हमारी समझ मे नही आया कि बायजीद ने इस तरह का अभद्र व्यवहार क्यो किया ? हसन ने कहा—कुछ नही, जस्ट बैलैंसिंग। कोई अभद्र व्यवहार नही किया। वह एक आदमी देखते हो पहले, भगवान कह गया। इतनी प्रशसा कर गया। तो किसी को तो बैलेंस करना ही पडेगा। कोई तो सन्तुलन करेगा ही। नाउ एवरी थिंग इज बैलेन्स्ड। अब हम वही है जहा इन दोनो आदमियो के पहले थे। अपना काम शुरू कर।

जिन्दगी मे आप इधर मित्रता बनाते हैं, उधर शत्रुता निर्मित हो जाती है। इधर आप किसी को प्रेम करते हैं, उधर किसी को घृणा करना शुरू हो जाता है। जिन्दगी मे जब भी आप किसी द्वन्द्व को चुनते है, तो दूसरे द्वन्द्व मे भी ताकत पहुचनी शुरू हो जाती है। आप चाहे, न चाहे, यह सवाल नही है। जीवन का नियम यह है। इसलिए महावीर किसी को मित्र नही बनाते। और जब वे कहते है कि सबसे मेरी मैत्री है, तो उसका मतलब मित्र से नहीं है। उसका मतलब है कि मेरी किसी से कोई शत्रुता नही, मित्रता नही। जो बच रहता है, उसको मैत्री कहते है। कुछ बच नही रहता है, एक निराकार भाव बच रहता है। कोई सम्बन्ध बच नही रहता। एक असम्बन्धित स्थिति बच रहती है। कोई पक्ष नही बच रहता,

एक तटस्थ दशा बच रहती है।

जब वे कहते हैं—सबसे मेरी मैत्री है, तो उसका मतलब सिर्फ इतना ही है। उसमें हम भूल में न पड़ें कि यह हमारे जैसी मित्रता है। हमारी मित्रता तो बिना शत्रुता के हो ही नहीं सकती। जब वे कहते हैं—सबसे मुझे प्रेम है, तो हम इस भ्रम में न पड़ें कि हमारे जैसा प्रेम है। हमारा प्रेम बिना घृणा के नहीं हो सकता, बिना ईर्ष्या के नहीं हो सकता। इसलिए महावीर जैसे लोगों को समझने की जो सबसे बड़ी कठिनाई है, वह यह है कि शब्द वे वही उपयोग करते हैं जो हम। और कोई उपाय भी नहीं है—वही शब्द हैं, उपयोग करने के लिए। और हमारे भाव उन शब्दों से बहुत और हैं, हमारे अर्थ बहुत और हैं, और महावीर के अर्थ बहुत और हैं।

संयम का विधायक अर्थ है—स्वयं में इतना ठहर जाना कि मन की किसी अति पर कोई हलन-चलन न हो।

आज इतना ही। फिर हम कल बात करेंगे। अभी जाएं न। थोड़ी देर बैठें। धुन संन्यासी करते हैं, उसमें सम्मिलित हों।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते है।

संयम की विधायक दृष्टि

सातवा प्रवचन : दिनाक २४ अगस्त, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

सूर्यास्त के समय, जैसे कोई फूल अपनी पखुडियो को बन्द कर ले—सयम ऐसा नही है। वरन् सूर्योदय के समय जैसे कोई कली अपनी पखुडियो को खोल ले—सयम ऐसा है। सयम मृत्यु के भय मे सिकुड गए चित्त की रुग्ण दशा नही है। सयम अमृत की वर्षा मे प्रफुल्लित हो गए नृत्य करते चित्त की दशा है। सयम किसी भय मे किया गया सकोच नही है। सयम किसी प्रलोभन से आरोपित की गयी आदत नही है। सयम किसी अभय मे चित्त का फैलाव और विस्तार है। और सयम किसी आनन्द की उपलब्धि मे अन्तर्वीणा पर पैदा हुआ सगीत है। सयम निषेध नही है, विधेय है। निगेटिव नही है, पाजिटिव है। लेकिन परम्परा निषेध को मानकर चलती है। क्योकि निषेध आसान है और विधेय अति दुष्कर। मरना बहुत आसान है, जीना बहुत कठिन है। हमे लगता है कि नही जीना बहुत आसान है, मरना बहुत कठिन। लेकिन जिसे हम जीना कहते हैं, वह सिर्फ मरना ही है और कुछ भी नही है।

सिकुड जाने से ज्यादा आसान कुछ भी नही है। खिलने से ज्यादा कठिन कुछ भी नही है। क्योकि खिलने के लिए अतर-ऊर्जा का जागरण चाहिए। सिकुडने के लिए तो किसी जागरण की, किसी नयी शक्ति की जरूरत नही है। पुरानी शक्ति भी छूट जाए तो सिकुडना हो जाता है। नयी शक्ति का उद्भव हो तो फैलाव होता है। महावीर तो फूल जैसे खिले हुए व्यक्तित्व है। लेकिन महावीर के पीछे जो परम्परा बनती है, उसमे तो सिकुड गये लोगो की धारा की श्रृखला बन जाती है। और फिर पीछे के युगो मे इन पीछे चलने वाले सिकुडे हुए लोगो को देखकर ही हम महावीर के सम्बन्ध मे भी निर्णय लेते है। स्वभावत अनुयायियो को देखकर हम अनुमान करते है उनका, जिनका वे अनुगमन करते हैं।

लेकिन अक्सर भूल हो जाती है। और भूल इसलिए हो जाती है कि अनुयायी बाहर से पकड़ता है, और बाहर से निषेध ही ख्याल में आते है। महावीर या बुद्ध या कृष्ण भीतर मे जीते है और भीतर मे जीने पर विधेय ही होता है। अगर किसी को परम आनंद उपलब्ध हो, तो उसके जीवन से, जिन्हे हम कल तक सुख कहते थे, वे छूट जाएगे। इसलिए नही कि वे उन्हे छोड रहे है बल्कि इसलिए कि अब जो उसे मिला है, उसके लिए जगह बनानी जरूरी है। हाथ मे कंकड-पत्थर थे, वे गिर जाएगे क्योंकि जिसे हीरे जीवन मे आ गए हो, अब कंकड-पत्थरो को रखने के लिए न सुविधा है, न शक्ति, न कारण है। लेकिन वे हीरे तो आएगे अन्तर के आकाश मे। वे हमे दिखाई नही पडेगे और हाथो मे जो पत्थर थे वे छूटेंगे वे हमे दिखाई पडेगे। स्वभावत हम सोचेंगे कि पत्थर छोडना सयम है। यह एक बहुत अनिवार्य पॉलिसी है जो समस्त जाग्रत पुरुषो के आसपास इकट्ठी होती है। यह स्वाभाविक है, लेकिन बडी खतरनाक है। क्योंकि तब हम जो भी सोचते है वह सब गलत हो जाता है। लगता है महावीर कुछ छोड रहे है, यही सयम है। नही लगता कि महावीर कुछ पा रहे है, वही सयम है। और ध्यान रखें, पाए बिना छोडना असम्भव है। या जो पाए बिना छोडेगा, वह रुग्ण हो जाएगा। बीमार हो जाएगा। अस्वस्थ होता है, सिकुडता है और मरता है। पाए बिना छोडना असम्भव है।

जब मैं कहता हू कि *त्याग* की बहुत दूसरी *धारणा* है और सयम का बहुत दूसरा रूप और आयाम प्रगट होता । मैं कहता हू महावीर जैसे लोग कुछ पा लेते है, वह पाना इतना विराट है कि उसकी तुलना मे जो उनके हाथ मे कल तक था वह व्यर्थ और मूल्यहीन हो जाता है। और ध्यान रहे, मूल्यहीनता रिलेटिव है, तुलनात्मक है, सापेक्ष है। जब तक आपको श्रेष्ठतर नही मिला है, तब तक जो आपके हाथ मे है, वही श्रेष्ठतर है। चाहे आप कितना ही कहे कि वह श्रेष्ठतर नही है, लेकिन आपका चित्त कहे जाएगा वही श्रेष्ठतर है। क्योंकि उससे श्रेष्ठतर को आपने नही जाना है। जब श्रेष्ठतर का जन्म होता है तभी वह निकृष्ट होता है। और मजे की बात यह है कि निकृष्ट को छोडना नही पडता और श्रेष्ठ को पकडना नही पडता। श्रेष्ठ पकड ही लिया जाता है और निकृष्ट छोड ही दिया जाता है। जब तक निकृष्ट को छोडना पडे तब तक जानना कि श्रेष्ठ का कोई पता नही है। और जब तक श्रेष्ठ को पकडना पडे तब तक जानना कि श्रेष्ठ अभी मिला नही है। श्रेष्ठ का स्वभाव ही यही है कि वह पकड ले, निकृष्ट का स्वभाव यही है कि वह छूट जाए।

लेकिन निकृष्ट हमसे छूटता नही और श्रेष्ठ हमारी पकड मे नही आता। तो हम निकृष्ट को छोडने की जबर्दस्त चेष्टा करते हैं। उसी चेष्टा को हम सयम कहते हैं। और श्रेष्ठ को अधेरे मे टटोलने की, पकडने की कोशिश करते है। वह हमारी इस तरह पकड मे नही आ सकता। इसलिए सयम के *विधायक आयाम*

को ठीक से समझ लेना जरूरी है। अन्यथा सयम व्यक्ति को धार्मिक नही बनाता केवल अधार्मिक होने से रोकता है। और जो अधर्म बाहर प्रगट होने से रुक जाता है, वह भीतर जहर बनकर फैल जाता है।

निषेधात्मक सयम फूलो को नही पैदा कर पाता है, केवल काटो को प्रगट होने से रोकता हे। लेकिन जो काटे वाहर आकाश मे प्रगट होने से रुक जाते है वे भीतर आत्मा मे छिप जाते है। इसलिए जिसे हम सयमी कहते है वह आनदित नही दिखाई पड़ता है। वह पीडित दिखाई पडता हे। वह किसी पत्थर के नीचे दवा हुआ मालूम पडता है, किसी पहाड को ढोता हुआ मालूम पडता है। उसके पैरो मे नर्तक की स्थिति नही होती। उसके पैरो मे कैदी की जजीरे मालूम पडती है। ऐसा नही लगता कि बच्चो जैसा सरल उडने को तत्पर हो गया है। वह बहुत वोझिल और भारी हो गया है।

जिसे हम सयमी कहते है वह हसने मे असमर्थ हो गया होता है, उसके चारो तरफ आसुओ की धारा इकट्ठी हो जाती है। और जो सयमी हस न सके परिपूर्ण चित्त से, वह अभी सयमी नही है। जिसका जीवन मुस्कुराहट न वन जाए, वह अभी सयमी नही है। निषेध का रास्ता यह है कि जहा-जहा मन जाता हे, वहा-मन को न जाने दो। जहा-जहा मन खिचता है वहा-वहा मन को न खिचने दो, उसके विपरीत खीचो। तो निषेध एक अतर सघर्ष है, इनर काफ्लिक्ट है जिसमे शक्ति व्यय होती है उपलब्ध नही होती हे। सभी सघर्ष मे शक्ति व्यय होती है। जहा-जहा मन खिचता है, वहा-वहा से उसे वापस खीचो, लौटाओ। कौन लौटाएगा, किसको लौटाएगा? आप ही खीचते है, आप ही आकर्षित होते है, आप ही विपरीत जाते है। आप अपने भीतर विभाजित हो जाते हे। खडो मे टूट जाते है। जिसको मनोचिकित्सक सीजोफ्रेनिया कहते है, वह आपके भीतर घटित होता है। आप खडित हो जाते है। आप दोहरे-तेहरे हो जाते हे। आपके भीतर अनेक लोग हो जाते है। आप अपने को ही वाटकर लडना शुरू कर देते है। इससे जीत कभी नही होगी। और महावीर का सारा रास्ता जीत का रास्ता है। जो अपने से लडेगा, वह कभी जीतेगा नही।

उल्टा लगता है वह सूत्र, क्योकि हमे लगता है कि लडे बिना जीत कैसे हो सकती है। जो अपने से लडेगा वह कभी जीतेगा नही क्योकि अपने से लडना अपने ही दोनो हाथो को लडाने जैसा है। न वाया जीत सकता है, न दाया। क्योकि दोनो के पीछे मेरी ही ताकत लगती है, मेरी ही शक्ति लगती है। चाहू तो मैं वाये को जिता लू, तव भी वाया जीतता नही। चाहू तो मैं दाये को जिता लू, तव भी दाया जीतता नही। क्योकि दोनो के पीछे मैं ही होता हू। और यह जो व्यक्तितत्व मे खडन हो जाता है, डिसइटिग्रेशन हो जाता है, यह आदमी को विक्षिप्तता की तरफ ले जाने लगता हे। आदमी ऐसा लगता है कि उसके ही

भीतर उसका दुश्मन खडा है, वही है वह। आधा अपने को बाट लिया। अपनी छाया से लडने जैसा पागलपन है। नही, महावीर इतना गहरा जानते है कि सीजोफ्रेनिक, खडित व्यक्तित्व की तरफ वे सलाह नही दे सकते। वे सलाह देंगे, अखड व्यक्तित्व की तरफ। इटिग्रेटेड इकट्ठा, एकजुट। सयम का अर्थ है—जुडा हुआ, इकट्ठा इटिग्रेटेड।

यह बहुत मजे की बात है अगर आप असत्य बोलें, तो आप कभी भी इटिग्रेटेड नही हो सकते। अगर आप झूठ बोलें तो आपके भीतर एक हिस्सा सदा ही मौजूद रहेगा जो कहेगा कि नही बोलना था, झूठ बोले। झूठ के साथ पूरी तरहराजी हो जाना असम्भव है। अगर आप चोरी करें, तो आप कभी भी अखड नही हो सकते। आपके भीतर एक हिस्सा चोरी के विपरीत खडा ही रहेगा। लेकिन आप सत्य बोलें तो अखड हो सकते हैं। महावीर ने उन्ही-उन्ही बातो को पुण्य कहा है जिनसे हम अखड हो सकते है। और उन्ही-उन्ही बातो को पाप कहा है जिनसे हम खडित हो जाते हैं। एक ही पाप है—आदमी का टुकडो मे टूट जाना, और एक ही पुण्य है—आदमी का जुड जाना, इकट्ठा हो जाना, टु बी वन होल।

तो महावीर लडने को नही कह सकते हैं। महावीर जीतने को जरूर कहते है, लडने को नही कहते। फिर जीतने का रास्ता और है। जीतने का रास्ता यह नही है कि मैं अपनी इद्रियो से लडने लगूं, जीतने का रास्ता यह है कि मैं अपने अतीन्द्रिय स्वरूप की खोज मे सलग्न हो जाऊ। जीतने का रास्ता यह है कि मेरे भीतर जो छिपे हुए और खजाने हैं, मैं उनकी खोज मे सलग्न हो जाऊ। जैसे-जैसे वे खजाने प्रगट होते जाते हैं, वैसे-वैसे कल तक जो महत्वपूर्ण था, वह गैर महत्वपूर्ण होने लगता है। कल तक जो खीचता था अब वह नही खीचता है। कल तक बाहर की तरफ चित्त जाता था, अब भीतर की तरफ आता है।

एक आदमी है' 'थोडा उदाहरण लेकर समझें। एक आदमी है, भोजन के लिए आतुर है, परेशान है, बहुत रस है। क्या करे सयम के लिए वह ? रस का निग्रह करे, यही हमे दिखाई पडता है। आज यह रस न ले, कल वह रस न ले, परसो वह रस न ले। यह भोजन छोड दे, वह भोजन छोड दे। लेकिन क्या भोजन के परित्याग से रस का परित्याग हो जाएगा ? सम्भावना यही है कि भोजन के परित्याग से पहले तो रस बढेगा। अगर वह जिद्द मे अडा रहे तो रस कुठित हो जायेगा, मुक्त नही होगा। लेकिन कुठित रस व्यक्तित्व को भी कुठा से भर जाता है।

जो भोजन करने तक मे भयभीत हो जाता है, वह अभय को उपलब्ध होगा ? भोजन करने तक मे जो भयभीत हो जाता है, वह अभय को उपलब्ध होगा ? नही, महावीर इसे सयम नही कहते। यद्यपि महावीर जिसे सयम कहते हैं, वैसा व्यक्ति रस के पागलपन से मुक्त हो जाता है। महावीर और एक भीतरी रस खोज लेते हैं—एक और रस जो भोजन से नही मिलता। एक और रस भी है

जो भीतर सम्बन्धित होने से मिल जाता है। हमारे बाहर जितनी इद्रिया है, अगर हम ठीक से समझें तो वे सिर्फ कनेक्टिंग लिंक्स है, जोडने वाले सेतु हैं। स्वाद की इद्रिय भोजन से जोड देती हे, आख की इद्रिय दृश्य से जोड देती है, कान की इद्रिय ध्वनि से जोड देती है। अगर महावीर की आतरिक प्रक्रिया को समझना हो तो महावीर यह कहते है कि जो इद्रिय बाहर जोड देती है वही इद्रिय भीतर के जगत् से भी जोड सकती है। बाहर ध्वनियो का एक जगत् है। कान उससे जोडता है। भीतर भी ध्वनियो का एक अद्‌भुत जगत् है, कान उससे भी जोड सकता है। जीभ बाहर के रस से जोडती है। बाहर रस का एक जगत् है। अति दीन, क्योकि हमे भीतर के रस पता नही, इसलिए वही सम्राट् मालूम होता है। जीभ भीतर के रस से भी जोड देती है।

हमने सुना है, आप सबने भी सुना होगा, लेकिन प्रतीक कभी-कभी कैसी विक्षिप्तता मे ले जाते है। हम सबने सुना है कि साधक, योगी अपनी जीभ को उल्टा कर लेते है। लेकिन वह केवल सिम्बालिक है। लेकिन कुछ पागल अपनी जीभ के नीचे के हिस्से को काटकर उल्टा करने मे लगे रहते है। यह सिर्फ सिम्बालिक है, यह सिर्फ प्रतीक है। साधक अपनी जीभ को उल्टा कर लेता है, उसका अर्थ यह है कि जीभ का जो रस बाहर पदार्थों से जुडता था, उसे वह भीतर आत्मा से जोड लेता है। साधक अपनी आख उल्टी चढा लेता है, उसका कुल अर्थ इतना ही है कि वह जो देखता था बाहर, अब वह भीतर देखने लगता है। और एक बार भीतर का स्वाद आ जाए तो बाहर के सब स्वाद बेस्वाद हो जाते है। करने नही पडते, करने से तो कभी नही होते, करने से तो उनका स्वाद और बढता है। या जिद्द की जाए तो कुठित हो जाता है, रस ही मर जाता है। लेकिन इद्रिय बाहर की तरफ ही पडी रहती हे। इद्रियो को भीतर की तरफ मोडना सयम की प्रक्रिया है।

कैसे मोडेंगे? कभी छोटे-से प्रयोग करें तो ख्याल मे आना शुरू हो जाएगा। बैठे है घर मे, सुनना शुरू करें बाहर की आवाजो को .. सुनना शुरू करें बाहर की आवाजो को। बहुत जागरूक होकर सुने कि कान क्या-क्या सुन रहा है। सभी चीजो के प्रति जागरूक हो जाए। रास्ते पर गाडिया चल रही है, हार्न बज रहे हैं, आकाश से हवाई जहाज गुजरता है, लोग बात कर रहे है, बच्चे खेल रहे है, सडक से लोग गुजर रहे है, जुलूस निकल रहा है—सारी आवाजें हैं, उसके प्रति पूरी तरह जाग जाए। और जब सारी आवाजो के प्रति पूरी तरह जागे हो तब एक बार यह भी ख्याल करें कि कोई ऐसी भी आवाज है, जो बाहर से न आ रही हो, भीतर पैदा हो रही हो। और तब आप एक अलग ही सन्नाटे को सुनना शुरू कर देंगे। इस बाजार की भीड मे भी एक आवाज है, जो भीतर भी पूरे समय गूंज रही है।

लेकिन हम बाहर की भीड की आवाज मे इस बुरी तरह से सलग्न है कि वह भीतर का सन्नाटा हमे सुनाई नही पडता। सारी आवाजो को सुनते रहे, लडें मत, हटे मत, सुनते रहे। सिर्फ एक खोज और भीतर शुरू करें कि क्या इन आवाजो को, जो बाहर से आ रही हैं, कोई इन आवाजो मे एक ऐसी आवाज भी है जो बाहर से न आ रही हो, भीतर से पैदा हो रही हो ? और आप बहुत शीघ्र सन्नाटे की आवाज, जैसी कभी-कभी निर्जन वन मे सुनाई पडती है, ठेठ बाजार मे, सडक पर भी सुनने मे समर्थ हो जाएगे। सच तो यह है कि जगल मे जो आपको सन्नाटा सुनाई पडता है, वह जगल का कम बाहर की आवाजो के हट जाने के कारण आपके भीतर की आवाज का प्रतिफलन ज्यादा होता है। वह सुना जा सकता है। जगल मे जाने की जरूरत नहीं है। दोनों कान भी हाथ से बन्द कर लें, तो वही आवाज बाहर की बद हो जाएगी तो भीतर जैसे झीगुर बोल रहे हो, वैसा सन्नाटा भीतर गूजने लगेगा। यह पहली प्रतीति है भीतर के आवाज की।

और इसकी प्रतीति जैसे ही होगी वैसे ही बाहर की आवाजें कम रसपूर्ण मालूम पडने लगेंगी। यह भीतर का सगीत आपके रस को पकडना शुरू हो जाएगा। थोडे ही दिनो मे यह भीतर जो सन्नाटे की तरह मालूम होता था, वह सघन होने लगेगा और रूप लेने लगेगा। यही सन्नाटा सोऽह जैसा धीरे-धीरे प्रतीत होने लगता है। जिस दिन यह सोऽह जैसा प्रतीत होने लगता है, उस दिन कोई सगीत, जो बाहर के वाद्यो से पैदा होता है, उसका मुकाबला नही कर सकता। यह अतर की वीणा का सगीत आपकी पकड मे आना शुरू हो गया। अब आपको अपने कान के रस को रोकना न पडेगा। आपको यह न कहना पडेगा कि मैं अब सितार न सुनूगा। मैं सितार का त्याग करता हू। नही, अब छोडने की कोई जरूरत न रहेगी। आप अचानक पाएगे कि और भी विराट्, और भी श्रेष्ठतर, और भी गहन सगीत उपलब्ध हो गया। और तब आप सितार के सुनने मे भी इस सगीत को सुन पाएगे। तब कोई विपरीत, कोई विरोध, कोई कट्राडिक्शन नही रह जाएगा। तब बाहर का सगीत अतर के सगीत की फीकी प्रतिध्वनि रह जाएगा। दुश्मनी नही रह जाएगी, फीकी प्रतिध्वनि रह जाएगी। और तब आपके भीतर अखण्ड व्यक्तित्व खडा होगा जो बाहर और भीतर का फासला भी नही करेगा।

एक घडी आती है ऐसी कि जैसे-जैसे हम भीतर जाते हैं, बाहर और भीतर का फासला गिरता चला जाता है। एक घडी आती है कि न कुछ बाहर रह जाता है, न कुछ भीतर। एक ही रह जाता है जो बाहर है और भीतर है जिस दिन यह घडी घटती है कि जो बाहर है वही भीतर है, जो भीतर है वही बाहर है, उस दिन आप सयम को उस ईक्विलिब्रिअम को उपलब्ध हो गए जहा सब सम हो जाता है, जहा सब ठहर जाता है, जहा सब मौन होता है, जहा कोई हलन-चलन नही होती है, जहा कोई भाग-दौड नही होती, जहा कोई कपन नही

होता ।

किसी भी इद्रिय से शुरू करे और भीतर की तरफ वढते चले जाए, फौरन ही वह इद्रिय आपको भीतर से भी जोडने का कारण वन जाएगी । आख से देखना शुरू करें, फिर आख बद कर ले । वाहर के दृश्य देखे, देखते रहे, लडे मत । और धीरे-धीरे-धीरे उसके प्रति जागे जो वाहर से आया हुआ दृश्य न हो । वहुत शीघ्र आपको वाहर के दो दृश्यो के वीच मे भीतर के दृश्यो की झलके आनी शुरू हो जाएगी । कभी ऐसा प्रकाश भीतर भर जाएगा जो वाहर सूर्य भी देने मे असमर्थ है । कभी भीतर ऐसे रग फैल जाएगे जो कि इद्रधनुषो मे नही है । कभी भीतर ऐसे फूल खिल जाएगे जो पृथ्वी पर कभी भी नही खिले हैं । और जब आप पहचानने लगेंगे कि यह वाहर का फूल नही है, यह वाहर का रग नही है, यह वाहर का प्रकाश नही है, तव आपको पहली दफे तुलना मिलेगी कि वाहर जो प्रकाश है, अव उसको प्रकाश कहे या भीतर की तुलना मे उसे भी अधेरा कहे । वाहर जो फूल खिलते है, अव उन्हे फूल कहे या भीतर की तुलना मे केवल फूलो की प्रतिध्वनिया कहे । रेजोनेंसिव, फीके स्वर । अव वाहर जो इद्रधनुषो से रग छा जाते हैं, वे रग हैं ! वहुत कठिन होगा, क्योकि जव भीतर कोई रग को जानता है तो रग मे एक लिविंग क्वालिटी, एक जीवत गुण आ जाता है जो वाहर के रगो मे नही है । वाहर के रगो मे कितनी ही चमक हो, वाहर के रग जड हैं । भीतर जव रग दिखाई पडता है तो रग पहली दफे जीवन्त हो जाता है ।

अव हम सोच भी नही सकते कि रग के जीवन्त होने का क्या अर्थ होता है । रग और जीवित ! जानें तो ही ख्याल मे आ सकता है कि रग जीवित हो सकता है, रग प्राणवान हो सकता है । और जिस दिन भीतर का रग प्राणवान होकर दिखाई पडने लगता है, वाहर के रगो का आकर्षण खो जाता है । छोडना नही पडता, वस खो जाता है ।

प्रत्येक इद्रिय भीतर ले जाने का द्वार वन सकती है । स्पर्श किया है वहुत, स्पर्श का अनुभव है वहुत । वैठ जाए, आख वद कर ले, स्पर्श पर ध्यान करे । सुन्दर शरीर छुए होगे, सुन्दर वस्तुए छुई होगी, फूल छुए होगे । कभी सुवह घास पर जम गयी ओस को छुआ होगा । कभी सर्द सुवह मे आग के पास वैठकर उष्णता का स्पर्श लिया होगा, कभी किसी चाद-तारो की दुनिया मे लेटकर उनकी चादनी को छुआ होगा । वे सव स्पर्श खडे हो जाने दें अपने चारो ओर । और फिर खोजना शुरू करे कि क्या कोई ऐसा स्पर्श भी है जो वाहर से न आया हो ? और थोडे ही श्रम से, थोडे ही संकल्प से आपको ऐसा स्पर्श प्रतीत होने लगेगा जो वाहर से नही आया है । जो चाद-तारो से नही मिल सकता, जो फूलो से नही, ओस से नही, जो सूर्य की ऊष्मा से नही, जो सुवह की ठडी हवाओ के स्पर्श से नही । और जिस दिन आपको उस स्पर्श का वोध होगा, उसी दिन आपने भीतर का स्पर्श

पाया । उसी दिन वाहर के स्पर्श व्यर्थ हो जाएगे । फिर प्रत्येक व्यक्ति को वही इद्रिय पकड लेनी चाहिए जो उसकी सर्वाधिक तीव्र और सजग हो ।

यहा भी आपको मैं यह कह दू कि जो इद्रिय आपकी सवसे ज्यादा तीव्र है, उसे आप दुश्मन वना लेते हैं, अगर आपने सयम का निषेधात्मक रूप समझा । अगर आपने विधायक रूप समझा तो जो इद्रिय आपकी सर्वाधिक सक्रिय है, वही आपकी मित्र है । क्योकि आप उसी के द्वारा भीतर पहुच सकेगे । अव जिस आदमी को रगो मे कोई रस नही है, जिसने अभी वाहर के रगो को नही जिया, और जाना उसे भीतर के रग तक पहुचने मे वडी कठिनाई होगी । जिस आदमी को सगीत मे कुछ प्रयोजन नही मालूम होता, सिर्फ मालूम होता है शोरगुल—ज्यादा-से-ज्यादा व्यवस्थित शोरगुल, आवाजे, ध्वनिया, ज्यादा-से-ज्यादा । कम-से-कम परेशान करने वाली ध्वनिया । उस आदमी को अन्तर-ध्वनि की तरफ जाने मे कठिनाई होगी । उसे मुश्किल होगी, उसे अडचन होगी । नही, जो इद्रिय आपकी सर्वाधिक आपको परेशान करती मालूम पडती है, जिससे निषेध वाला लड़ना शुरू कर देता है, वह आपकी मित्र है । क्योकि वही इद्रिय आपकी सवसे पहले भीतर की तरफ मोडी जा सकती है । जो अपनी इंद्रिय को खोज लें ।

गुरजिएफ के पास कोई जाता था तो वह कहता था—'तेरी सवसे वडी कमजोरी क्या है ? पहले तू मुझे अपनी सवसे वडी कमजोरी वता दे, तो मैं उसे ही तेरी सवसे वडी शक्ति मे रूपान्तरित कर दूगा ।' वह ठीक कहता था । यही है शक्ति । आपकी सवसे वडी कमजोरी क्या है ? क्या रूप आपको आकर्षित करता है ? तो भयभीत न हो, रूप ही आपका द्वार वन जाएगा । क्या स्पर्श आपको वुलाता है ? भयभीत न हो, स्पर्श ही आपका मार्ग है । क्या स्वाद आपको खींचता है और आपके स्वप्नो मे प्रवेश कर जाता है ? तो स्वाद को धन्यवाद दें । वही आपका सेतु वनेगा । जो इद्रिय आपकी सर्वाधिक सवेदनशील है उससे अगर आप लडे तो कुठित हो जाएगी । आपने अपने ही हाथ अपना सेतु तोड लिया । अगर विधायक सयम की धारणा से चले तो आप उसी इद्रिय को मार्ग वना लेंगे, उसी पर आप पीछे लौट आएगे ।

और ध्यान रहे, जिस रास्ते पर हम जाते हैं, वाहर, उसी रास्ते से भीतर आते है । रास्ता वही होता है; सिर्फ दिशा वदल जाती है । चेहरा वदल जाता है । आप यहा आए है, इस भवन तक, जिस रास्ते से आए है, उसी से वापस लौटेंगे । सिर्फ रुख और हो जाएगा । मुह अभी भवन की तरफ था, अव अपने घर की तरफ होगा । लेकिन भूलकर भी अगर आपने ऐसा सोचा कि जो रास्ता मुझे अपने घर से इतनी दूर ले आया वह मेरा दुश्मन है । इस पर मैं नही चलूगा, तो आप पक्का समझ लें, आप अपने घर अव कभी भी नही पहुच पाएगे । कोई रास्ता दुश्मन नही है और सभी रास्ते दोनो दिशाओ मे खुले है ।

जोडती हैं तो पदार्थ से जोडती हैं, भीतर जब जोडती हैं तब चेतना से जोडती हैं।

तो इद्रियो का बहुत स्थूल रूप ही बाहर प्रगट होता है। क्योकि जो हाथ आत्मा से जोड सकता है, जिसकी इतनी क्षमता है, वह बाहर केवल शरीर से जोड पाता है। बाहर उसकी क्षमता बहुत दीन हो जाती है। क्षमता तो जरूर उसमे आत्मा से भी जोडने की है, अन्यथा वह मुझसे कैसे जुडे। और जब मैं कहता हू, मेरे हाथ ऊपर उठ, तो वह ऊपर उठ जाता है। मेरा सकल्प मेरे हाथ को कही न कही जुडा हुआ है। जब मैं अपने हाथ को इन्कार कर देता हू ऊपर उठाने से तो हाथ ऊपर नही उठ पाता। मेरा सकल्प मेरे हाथ से कही जुडा हुआ है।

अब बहुत हैरानी की बात है कि शरीर तो है पदार्थ, सकल्प है चेतना। चेतना और पदार्थ कैसे जुडते होगे, कहा जुडते होगे! बहुत अदृश्य होगा वह जोड! लेकिन बाहर मेरा हाथ तो सिर्फ पदार्थ से ही जोड सकता है। लेकिन इसलिए हाथ पर नाराज हो जाने की जरूरत नही है। यह हाथ भीतर आत्मा से भी जोडता है। अगर मैं इस हाथ से अपनी चेतना को बाहर की तरफ प्रवाहित करू तो यह दूसरे के शरीर पर जाकर अटक जाती है। अगर इसी चेतना को मै अपने साथ वापस लौट आऊ, गगोत्री की तरफ लौट आऊ, सागर की तरफ नही, तो यह मेरी आत्मा मे लीन हो जाती है। हाथ मे बढती हुई ऊर्जा बाहर की तरफ बहिर आत्मा का रूप है। हाथ मे बहती हुई ऊर्जा भीतर की तरफ एक अन्तरात्मा का रूप है। ऊर्जा बहती ही नही जहा, वहा परमात्मा है। परमात्मा तक पहुचना हो तो अन्तरात्मा से गुजरना पडेगा। बहिर आत्मा हमारी आज की स्थिति है, मौजूदा। परमात्मा हमारी सम्भावना है—हमारा भविष्य, हमारी नियति। अन्तरात्मा हमारा यात्रा पथ है। उससे हमे गुजरना पडेगा। गुजरने के रास्ते वही है जो बाहर जाने के रास्ते है। एक बात दूसरी बात—बाहर इद्रिया स्थूल से जोडती है, भीतर सूक्ष्म से। इसलिए इद्रियो के रूप है—एक, जिसको हम ऐंद्रिक शक्ति कहते है, और एक जिसको अतीद्रिय शक्ति कहते हैं।

पैरासाइकॉलॉजी अध्ययन करती है उसका—परामनोविज्ञान। और चकित होते है। योग ने बहुत दिन अध्ययन किया है उसका। उसको योग ने सिद्धिया कहा है, विभूति कहा है। रूस मे आज वे उसे एक नया नाम दे रहे है। वे उसे कहते हैं—साइकोट्रानिक्स। कहते हैं कि जैसे, मनोऊर्जा का जगत्, जैसे मनोशक्ति का जगत्। यह जो भीतर हमारा अतींद्रिय रूप है, सयम वैसे-वैसे बढता जाता है जैसे-जैसे हम अपने अतीद्रिय रूप को अनुभव करते चले जाते है। किसी भी इद्रिय को पकड कर अतीद्रिय रूप को अनुभव करना शुरू करें। चकित हो जायेंगे।

पिछले दस वर्ष पहले, १९६१ मे रूस मे एक अधी लडकी ने हाथ से पढना शुरू किया। हैरानी की बात थी। बहुत परीक्षण किए गए। पाच वर्ष तक

निरतर वैज्ञानिक परीक्षण किए गए। और फिर रूस की जो सबसे वडी वैज्ञानिक सस्था है, ऐकैडैमी, उसने घोपणा की, पाच वर्प के निरन्तर अध्ययन के वाद कि लडकी ठीक कहती है। वह अध्ययन करती है। और हैरानी की वात है कि हाथ आख से भी ज्यादा ग्रहणशील होकर अध्ययन कर रहे हैं। अगर लिखे हुए कागज पर—ब्रैल मे नही, अधो की भाषा मे नही, आपकी भाषा मे लिखे हुए कागज पर—वह हाथ फेरती है तो पढ लेती है। आपके लिखे हुए कागज पर कपडा ढाक दिया गया है और उस कपडे पर हाथ रखती है तो पढ लेती है। लोहे की चादर ढाक दी गयी, उस चादर पर हाथ फेरती है तो पढ लेती है। तो यह तो आख भी नही कर पाती है। यह तो जो वैज्ञानिक प्रयोग कर रहे हैं, वे भी नही पढ पाते है सामने कि नीचे क्या होगा।

लेकिन वासिलिएव, जो उस लडकी पर मेहनत कर रहा था, उसको ऐसा ख्याल आया कि जो एक व्यक्ति के भीतर सम्भव है वह किसी न किसी मार्ग से किसी न किसी रूप मे सबकी सम्भावना होनी चाहिए। तो उसने सोचा, क्या हम दूसरे वच्चो को भी ट्रेंड कर सकते हैं? उसने अधो के एक स्कूल मे वीस वच्चो पर प्रयोग शुरू किया और चकित रह गया कि वीस मे से सत्रह वच्चे दो वर्प के प्रयोग के वाद हाथ से अध्ययन करने मे समर्थ हो गए। और तव तो वासिलिएव ने कहा कि नाइन्टी सैवन परसैंट आदमियो की सम्भावना है कि वे हाथ से पढ सकें—९७ प्रतिशत। वाकी जो तीन है, मानना चाहिए हाथ के लिहाज से अधे हैं। वाकी और कोई कारण नही है। कुछ हाथ के यत्र मे खरावी होगी। वासिलिएव के प्रयोगो का परिणाम यह हुआ, अखवारो मे जव खवरे निकली तो कई अधे वच्चो ने अपने-अपने घरो पर प्रयोग करने शुरू किए। और सैंकडो खबरें आयी, मास्को यूनिवर्सिटी के पास गावो से कि फला वच्चा भी पढ पाता है, फला वच्चा भी पढ पाता है।

वडी हैरानी की वात थी क्योकि हाथ कैसे पढ पाएगा। हाथ के पास तो आख नही हैं। हाथ से कोई सम्वन्ध नही जुडता हुआ मालूम पडता है। हाथ स्पर्श कर सकता है। लेकिन अब चादर ढाक दी गयी तो स्पर्श भी नही कर सकता। जसे-जैसे प्रयोगो को और गहन किया गया, वैसे-वैसे साफ हुआ सवाल हाथ का नही है, यह सवाल अतीद्रिय है, पैरासाइकिक है। उस लडकी को फिर पैर से भी पढने के लिए कोशिश करवायी गयी। दो महीने मे वह पैर से भी पढने लगी। फिर उसको विना स्पर्श किए पढने की कोशिश करवाई गई। वह दीवार के उस तरफ रखा हुआ बोर्ड भी पढ लेती थी। फिर उसे मीलो के फासले पर रखी हुई किताव खोली जाएगी और वह यहा से पढ सकेगी। तब स्पर्श से कोई सम्वन्ध न रहा। वासिलिएव ने कहा है—हम जितनी शक्तियो के सम्वन्ध मे जानते हैं निश्चित ही उनसे कोई अन्य शक्ति काम कर रही है।

योग निरन्तर उस अन्य शक्ति की बात करता रहा है। महावीर की सयम की जो प्रक्रिया है उसमे उस अन्य शक्ति को जगाना ही आधार है। जैसे-जैसे वह अन्य शक्ति जगती है वैसे-वैसे इन्द्रिया फीकी हो जाती है। ठीक यह वैसे फीकी हो जाती हैं जैसे कि आप किताब पढ रहे है—एक उपन्यास पढ रहे है और फिर आपके सामने टेलिविजन पर वह उपन्यास खोला जा रहा है तो आप किताब बन्द कर देगे। किताब एकदम फीकी हो गयी। कथा वही हैं, लेकिन अब ज्यादा जीवत मीडिया है आपके सामने। बहुत दिन तक किताब चलेगी नही, बहुत दिन तक किताब नही चलेगी। किताब खो जाएगी। टेलिविजन और सिनेमा इसको पी जाएगा। जो भी शिक्षा टेलिविजन से दी जा सकती है वह किताब से आगे नही दी जा सकेगी। उसका कोई अर्थ नही रह गया क्योकि किताब बहुत मुर्दा है, बहुत फीकी हो जाती हैं।

अब अगर आपको कोई कहे कि उपन्यास किताब मे पढ लो, और यह कथा फिल्म पर देख लो, दो मे से चुन लो जो तुम्हे चुनना हो, तो आप किताब हटा दें, तो जिन्हे टेलिविजन का कोई पता नही है वे समझेगे कि किताब का त्याग किया। त्याग आपने नही किया है, आपने सिर्फ श्रेष्ठतम माध्यम को चुन लिया है। सदा ही आदमी चुन लेता है, जो श्रेष्ठतम है उसे। अगर आपको अपनी इद्रियो का अतीद्रिय रूप प्रगट होना शुरू हो जाए तो निश्चित ही आप इद्रियो का रस छोड देंगे और एक नए रस मे आप प्रवेश कर जाएगे। बाहर जो अभी इद्रियो मे ही जीते है, जिनकी समझ की सीमा इद्रियो के बाहर नही—वे कहेगे, महात्यागी हैं आप। लेकिन आप केवल भोग की ओर गहनतम, और अन्तरतम दिशा मे आगे बढ गए है। आप उस रस को पाने लगे है जो इद्रियो मे जीने वाली किसी आदमी को कभी पता ही नही चलता। सयम की यह विधायक दृष्टि अतीद्रिय सम्भावनाओ के बढाने से शुरू होती है।

और महावीर ने बहुत ही गहन प्रयोग किए है अतीद्रिय सम्भावनाओ को बढाने के लिए। महावीर की सारी की सारी साधना को इस बात से ही समझना शुरू करें तो बहुत कुछ आगे प्रगट हो सकेगा। महावीर अगर बिना भोजन के रह जाते हैं वर्षों तक तो उसका कारण ? उसका कारण है उन्होने भीतर एक भोजन पाना शुरू कर दिया है। अगर महावीर पत्थर पर लेट जाते है और गद्दे की कोई जरूरत नही रह जाती तो उन्होने भीतर के एक नए स्पर्श का जगत् शुरू कर दिया है। महावीर अगर कैसा भी भोजन स्वीकार कर लेते है—असल मे उन्होने एक भीतर का स्वाद जन्मा लिया है। अब बाहर की चीजें उतनी महत्वपूर्ण नही हैं। भीतर की चीजें ही बाहर की चीजो पर इम्पोज हो जाती हैं और छा जाती हैं। उसे घेर लेती है। इसलिए महावीर सिकुडे हुए मालूम नही पडते, फैले हुए मालूम पडते हैं। उनके व्यक्तित्व मे कोई कही सकोच नही मालूम पडता

है। वे आनंदित है। वे तथाकथित तपस्वियो जैसे दुखी नही है।

बुद्ध से यह नही हो सका। यह विचारो मे ले लेना बहुत कीमती होगा और समझना आसान होगा। टाइम अलग था। बुद्ध से यह नही हो सका। बुद्ध ने भी यही सब साधना शुरू की जो महावीर ने की है। लेकिन बुद्ध को हर साधना के बाद ऐसा लगा कि इससे तो मैं और दीन-हीन हो रहा हू। कही कुछ पा तो नही रहा हू। इसलिए छ वर्ष के बाद बुद्ध ने सारी तपश्चर्या छोड दी। स्वभावत. बुद्ध ने निष्कर्ष किया कि तपश्चर्या व्यर्थ है। बुद्ध बुद्धिमान थे और ईमानदार थे। नासमझ होते तो यह निष्कर्ष ही न लेते। अनेक नासमझ लगे चले जाते है उन दिशाओ मे जो उनके लिए नही है। उन दिशाओ मे, जिनकी उनकी क्षमता नही है। जो उनके व्यक्तित्व से तालमेल नही खाती और अपने को समझाए चले जाते हैं कि शायद पिछले जन्मो के कर्मों के कारण ऐसा हो रहा है; शायद किए हुए पापो के कारण ऐसा हो रहा है। या शायद मैं पूरा प्रयास नही कर पा रहा हू इसलिए ऐसा हो रहा है और ध्यान रहे, जो आपकी दिशा नही है, उसमे आप पूरा प्रयास कभी भी न कर पाएगे इसलिए यह भ्रम बना ही रहेगा कि मैं पूरा प्रयास नही कर पा रहा हू।

बुद्ध ने छ वर्ष तक वही किया जो महावीर कर रहे थे। लेकिन बुद्ध को जो निष्पत्ति मिली उसे करने से, वह वह नही थी जो महावीर को मिली। महावीर आनन्द को उपलब्ध हो गए, बुद्ध बहुत पीडा को उपलब्ध हो गए। महावीर महाशक्ति को उपलब्ध हो गए, बुद्ध केवल निर्बल हो गए। निरंजना नदी को पार करते वक्त एक दिन वे इतने कमजोर थे उपवास के कारण कि किनारे को पकडकर चढने की शक्ति मालूम न पडी। एक जड को पकडकर वृक्ष की, सोचने लगे कि इस उपवास से क्या मिलेगा जिससे मैं नदी भी पार करने की शक्ति खो चुका, उससे इस भवसागर को कैसे पार कर पाऊगा। पागलपन है, यह नही होगा। कृश हो गए फिर, हड्डिया सब निकल आयी। बुद्ध को बहुत प्रसिद्ध चित्र जो उस समय का है वह ठीक तथाकथित तपस्वी जैसी मुसीबत मे पडेगा उसका चित्र है। एक ताम्र प्रतिमा उपलब्ध है, बहुत पुरानी—जिसमे बुद्ध का उस समय का चित्र है, जब वे छ महीने तक निराहार रहे थे। सारी हड्डिया छाती के बाहर निकल आयी है, पेट पीठ से लग गया है। आखे भर जीवित दिखाई पड़ती है, बाकी सारा शरीर सूख गया है। खून ने जैसे बहना बन्द कर दिया हो, चमडी जैसे सिकुडकर जुड गयी हो। सारा शरीर मुर्दे का हो गया। वैसे ही क्षण मे वह निरजना नदी को पार करते वक्त उन्हे ख्याल आया कि नही, यह सब व्यर्थ है। और यह सब बुद्ध के लिए व्यर्थ था। लेकिन इसी सबसे महावीर महाशक्ति को उपलब्ध हुए। असल मे बुद्ध ने जिनसे यह बात सुनी और सीखी वह सब निषेध था···वह सब निषेध था। यह-यह छोडो, यह-यह

छोडो, वह छोडते गए। जिसने जैसा कहा, वह करते चले गए। जिस गुरु ने जो बताया वह उन्होने किया। सब छोडकर उन्होने पाया कि सब तो छूट गया, मिला कुछ भी नही। 'और मैं केवल दीन-हीन और दुर्बल हो गया हू।' बुद्ध के लिए वह मार्ग न था। बुद्ध के व्यक्तित्व का टाइप भिन्न था, ढाचा और था। फिर बुद्ध ने सब त्याग का त्याग कर दिया ''सब त्याग का त्याग कर दिया। भोग को त्याग करके देख लिया था, उससे कुछ पाया नही। फिर सब त्याग का त्याग कर दिया। और जब सब त्याग का भी त्याग कर दिया, तब बुद्ध ने पाया।

महावीर की प्रक्रिया मे और बुद्ध की प्रक्रिया मे बडा उल्टा भाव है। इसलिए एक ही समय पैदा होकर भी दोनो की परम्परा बडी विपरीत है। बुद्ध ने भी पाया, वहीं पहुचे वे जहा कोई पहुचता है, महावीर पहुचते है। लेकिन त्याग से न पाया। क्योकि त्याग की जो धारणा बुद्ध के मन मे प्रवेश कर गयी, वह निषेध की थी। वही भूल हो गयी। महावीर की तो धारणा विधेय की थी। जब भी कोई त्याग मे निषेध से चलेगा तो भटकेगा और परेशान होगा और दुर्बल होगा। कही पहुचेगा नही। आत्मबल तो मिलेगा ही नही, शरीर बल और खो जाएगा। अतीद्रिय का तो जगत् खुलेगा ही नही, इन्द्रियो का जगत् रुग्ण, बीमार होकर सिकुड जाएगा। अन्तर-ध्वनि सुनाई न पडेगी, कान बहरे हो जायेंगे। अन्तर्दृश्य तो दिखाई न पडेंगे, आख धुधली हो जाएगी। अन्तर-स्पर्श तो पता न चलेगा, हाथ जड हो जाएगे और बाहर भी स्पर्श न कर पाएगे।

निषेध से वह भूल होती है। और परम्परा केवल निषेध दे सकती है। क्योकि हम जो पकडते हैं, उनको वही दिखाई पडता है जो छोडा है। उन्हे वह नही दिखाई पडता जो पाया। तो महावीर को अगर ठीक समझना हो, उनके गरिमा-शाली सयम को अगर समझना हो, उनके स्वस्थ, विधायक सयम को यदि समझना हो तो अतीद्रिय को जगाने के प्रयोग मे प्रवेश करना चाहिए। और प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई इन्द्रिय तत्काल अतीद्रिय जगत् मे प्रवेश करने को तैयार खडी है। थोडे-से प्रयोग करने की जरूरत है और आपको पता चल जाएगा कि आपकी अतीद्रिय क्षमता क्या है। दो-चार-पाच छोटे प्रयोग करें और आपको एहसास होने लगेगा कि आपकी दिशा क्या है, आपका द्वार क्या है ? उसी द्वार से आगे बढ जायेंगे।

कैसे पता चले, कैसे जाने कोई कि उसकी अतीद्रिय क्षमता क्या हो सकती है ?

हम सबको कई बार मौके मिलते है लेकिन हम चूक जाते है। क्योकि हम कभी उस दिशा मे सोचते नही। कभी आप बैठें, अचानक आपको ख्याल आता है किसी मित्र का और आप चेहरा उठाते है और देखते है वह द्वार पर खडा है। आप सोचते है सयोग है। चूक गए मौके को। कभी आप सोचते है, कितने बजे है,

ख्याल आता है नौ। घडी मे देखते है ठीक नौ बजे हैं। आप सोचते है सयोग है। चूक गए। एक अतीद्रिय झलक मिली थी। अगर ऐसी कोई झलक आपको मिलती है तो इसके प्रयोग करे, इसको सयोग मत कहे। बहुत जल्दी आपको पता चल जाएगा। इस पर प्रयोग करे। अगर घडी पर आपने सोचा नौ बजे है और घड़ी मे नौ बजे है, तो फिर अब इस पर प्रयोग करना शुरू कर दे। कभी भी घडी पहले मत देखें—पहले सोचे, फिर घडी देखें। और शीघ्र ही आपको पता चलेगा, यह सयोग नही है। क्योकि यह इतने बार घटने लगेगा, और यह घटने की घटना बढने लगेगी सख्या मे कि सयोग न रह जाएगा।

आधी रात को उठ आयें। पहले सोचें कि कितना बजा है। सोचें कहना ठीक नही, क्योकि सोचने मे भूल हो सकती है। ख्याल करे एकदम मे कि कितना बजा है और जो पहला ख्याल हो, उसको ही घडी से मिलायें, दूसरे मे मत मिलायें। दूसरा गडबड होगा। पहला जो हो, अगर आपको द्वार पर आये मित्र का ख्याल आ गया तो फिर जरा इस पर प्रयोग करे। जब भी द्वार पर आहट सुनाई पडे, दरवाजे की घण्टी बजे, जल्दी दरवाजा मत खोले। पहले आख बन्द करें और पहले जो चित्र आए उसको ख्याल मे ले लें, फिर दरवाजा खोलें। थोड़े ही दिन मे आप पाएगे कि यह सयोग नही था। यह आपकी क्षमता की झलक थी जिसको आप सयोग कह कर चूक रहे थे। और एकाध दिशा मे भी अगर आपका अतीद्रिय रूप खुलना शुरू हो जाए तो आपकी इन्द्रिया तत्काल फीकी पडनी शुरू हो जाएगी और आपके लिए सयम का विधायक मार्ग साफ होने लगेगा।

हम पूरे जीवन न मालूम कितने अवसरो को चूक जाते है...न मालूम। और चूक जाने का हमारा एक तर्क है कि हम हर चीज को सयोग कहकर छोड देते है कि ऐसा हो गया होगा। ऐसा नही है कि सयोग नही होते, संयोग होते हैं। लेकिन बिना परीक्षा किए मत कहे कि सयोग है। परीक्षा कर ले। हो सकता है सयोग न हो। और अगर सयोग नही है तो आपकी शक्ति का आपको अनुमान होना शुरू हो जाएगा। एक बार आपको ख्याल मे आ जाए आपकी शक्ति का सूत्र तो आप उसको फिर विकसित कर सकते है। उसको प्रशिक्षित कर सकते है। सयम उसका प्रशिक्षण है।

एक दिन आपने उपवास किया और आपको भोजन की बिल्कुल याद न आए, उस दिन अपने को भुलाने की कोशिश मे मत लगना जैसा उपवास करने वाले लगते है। एक दिन उपवास किया तो आदमी मन्दिर मे जाकर बैठ जाता है। भजन कीर्तन, धुन मे लगा रहता है। शास्त्र पढता रहता है, साधु को सुनता रहता है। यह सब इसलिए कि भोजन की याद न आए। वह चूक रहा है। जिस दिन भोजन नही किया, उस दिन कुछ न करें, फिर खाली बैठ जाएं और देखें,

अगर चौवीस घण्टे मे आपको भोजन की याद न आए, तो उपवास आपके लिए मार्ग हो सकता है। तो आप महावीर जितने लम्बे उपवासो की दुनिया मे प्रवेश कर सकते है। वह आपका द्वार बन सकता है। अगर आपको भोजन-भोजन की ही याद आने लगे तो आप जानना कि वह आपका रास्ता नही है। आपके लिए वह ठीक नही होगा।

किसी भी दिशा मे—पच्चीस दिशाए चौवीस घण्टे खुलती है। जो जानते हैं वे तो कहते है—हर क्षण हम चौराहे पर होते हैं, जहा मे दिशाए खुलती हैं—हर क्षण। अपनी दिशा को खोज लेना साधक के लिए बहुत जरूरी है नही तो वह भटक सकता है। और दूसरे को आरोपित मत करना, अपने को ही खोजना और अपने टाइप को खोजना, अपने ढाचे को, अपने व्यक्तित्व के रूप को, नही तो भूल हो जाती है। महावीर को मानने वाले घर मे पैदा हो गए है इसलिए आप महावीर के मार्ग पर जा सकेंगे, यह अनिवार्य नही है। कोई नही कह सकता कि आपके लिए मुहम्मद का मार्ग ठीक होगा। और कोई नहीं कह सकता कि कृष्ण का मार्ग ठीक नही होगा। जरूरी नहीं है कि आप कृष्ण को मानने वाले घर मे पैदा हो गए है, इसलिए वासुरी मे आपको कोई रस आ जाए, यह जरूरी नही है। हो सकता, महावीर आपके लिए सार्थक हो, जिनसे वासुरी को कही भी जोडा नही जा सकता। अगर महावीर के पास बासुरी रखो तो या तो महावीर को हटाना पडे या वासुरी को हटाना पडे। उन दोनो का कही कोई तालमेल नही पडेगा। कृष्ण के हाथ से वासुरी हटा लो तो कृष्ण ९० प्रतिशत हट गए, वहा कुछ बचे ही नही। कृष्ण के हाथ मे वासुरी न हो तो कृष्ण को पहचानना मुश्किल है। अगर वासुरी अकेली रखी हो तो कृष्ण का ख्याल आ भी सकता है। व्यक्तित्व के टाइप हैं। और अभी, जैसा कि हमने कभी इस मुल्क मे चार वर्णो को बाटा था, यह बहुत मजे की बात है कि वे चार वर्ण हमारे चार टाइप थे जो मूल आदमी के चार रूप हो सकते है।

कभी-कभी चकित करने वाली घटनाए घटती है। अभी रूस के वैज्ञानिक फिर आदमी को इलैक्ट्रिसिटी के आधार पर चार हिस्सो मे बाटने शुरू किए है। वे कहते है—फोर टाइप्स। आधार उनका है कि व्यक्ति के शरीर की विद्युत का जो प्रवाह है, वह उसके टाइप को बताता है और वह विद्युत का प्रवाह है जो शरीर का, वह सब का अलग-अलग है। मैं मानता हू कि महावीर का वह विद्युत का प्रवाह पौजिटिव था। इसलिए वे किसी भी सक्रिय साधना मे कूद सके। बुद्ध की वह इलैक्ट्रिक प्रभाव निगेटिव था इसलिए वे किसी सक्रिय साधना से कुछ भी न पा सके। उन्हे एक दिन विल्कुल ही निष्क्रिय और शून्य हो जाना पडा। वही से उनकी उपलब्धि का द्वार खुला। वह व्यक्तित्व का भेद है, यह सिद्धान्त का भेद नही है।

अब तक मनुष्य जाति बहुत उपद्रव मे रही है क्योकि हम व्यक्तित्व के भेद को सिद्धान्तो का भेद मानकर व्यर्थ के विवादो मे पडे रहे है। अपने व्यक्तित्व को खोज लें। अपनी विशिष्ट-इन्द्रिय को खोज ले। अपनी क्षमता का थोडा-सा आकन कर लें और फिर सयम की दिशा मे गति करना आसान ..रोज-रोज आसान पाएगे। लेकिन अगर आपने अपनी क्षमता को बिना आके किसी और की क्षमता के अनुकरण मे चलने की कोशिश की तो आप अपने को रोज-रोज झझट मे पा सकते है। क्योकि वह आपका मार्ग नही हैं, आपका द्वार नही है।

इसलिए बहुत दुर्भाग्य जो जगत् मे घटा है वह यह है कि अपने धर्म को जन्म से तय करते हैं। इससे बड़ी कोई दुर्भाग्य की घटना पृथ्वी पर नही है। क्योकि इस कारण सिर्फ उपद्रव पैदा होता है, और कुछ भी नही होता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म सचेतन रूप से खोजना चाहिए। वह जीवन का को परम लक्ष्य है, वह जन्म के होने से नही होता तय, वह आपको खोजना पडेगा। वह बडी मुश्किल से साफ होगा। लेकिन जिस दिन वह साफ हो जाएगा, उस दिन आपके लिए सब सुगम हो जाएगा।

दुनिया से धर्म के नष्ट होने के बुनियादी कारणो मे एक यह है कि हम धर्म को जन्म से जोडे है। धर्म हमारी खोज नही है और इसलिए यह भी होता है कि महावीर के वक्त मे महावीर का विचार जितने लोगो के जीवन मे क्राति ला पाया, फिर पच्चीस सौ साल मे भी उतने लोगो की जिन्दगी मे नही ला पाया। इसका कुल कारण इतना है कि महावीर के पास जो लोग आते हैं वह उनकी काशस च्वाइस है, वह जन्म नही है। महावीर के पास जो आएगा वह चुनकर आ रहा है। उसका बेटा जन्म से जैन हो जाएगा। वह खुद चुनकर आया था। उसका चुनाव था। उसके व्यक्तित्व और महावीर के व्यक्तित्व मे कोई कशिश, कोई मैंगनिटिज्म था, जिसने उसे खीचा था, वह उनके पास आ गया। लेकिन उसका बेटा ? उसका बेटा सिर्फ पैदा होने से महावीर के पास जाएगा, वह कभी पास नही पहुंचेगा। इसलिए महावीर या बुद्ध या कृष्ण या क्राइस्ट, इनके जीवन के क्षणो मे इनके पास जो लोग आते हैं, उनके जीवन मे आमूल रूपातरण हो जाता है। फिर यह दुबारा घटना नही घटती। और हर पीढी धीरे-धीरे औपचारिक हो जाती है। धर्म औपचारिक, फार्मल हो जाता है। क्योकि हम इस घर मे पैदा हुए हैं, इसलिए इस मन्दिर मे जाते हैं। घर और मन्दिर का कोई सम्बन्ध है ? मेरा व्यक्तित्व क्या है, मेरी दिशा, मेरा आयाम क्या है। कौन-सा चुम्बक मुझे नही खीच सकता है, या किस चुम्बक से मेरे सम्बन्ध जुड सकते हैं, वह प्रत्येक व्यक्ति को स्वय खोजना चाहिए।

हम एक धार्मिक दुनिया बनाने मे तभी सफल हो पाएगे जब हम प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म चुनने की सहज स्वतन्त्रता दे दें। अन्यथा दुनिया मे धर्म न हो

पाएगा । अधर्म होगा । और धार्मिक लोग औपचारिक होगे और अधार्मिक वास्तविक होगे । क्योकि बडे मजे की बात है । कोई आदमी कभी भी नास्तिकता को काग़सली चुनता है चुनना पडता है । वह कहता है 'नही है ईश्वर', तो यह उसका चुनाव होता है। और जो कहता है, 'ईश्वर है', यह उसके बाप दादो का चुनाव है । इसलिए नास्तिक के सामने आस्तिक हार जाते है । उसका कारण है । क्योकि आपका तो वह चुनाव ही नही है । आप आस्तिक है पैदाइश। वह आदमी नास्तिक है चुनाव से । उसकी नास्तिकता मे एक बल, एक तेजी, एक गति, एक प्राण का स्वर होता है । आपकी आस्तिकता सिर्फ फार्मल है। हाथ मे एक कागज का टुकडा है, जिस पर लिखा है, आप किस घर मे पैदा हुए हैं । वही होता है । नास्तिक से हार जाता है आस्तिक, लेकिन ज्यादा दिन यह नही चलेगा । अब तक ऐसा हुआ था । अब नास्तिकता भी धर्म बन गयी है ।

१९१७ की रूसी क्राति के बाद नास्तिकता भी धर्म है । इसलिए रूस मे अब नास्तिक बिल्कुल कमजोर है । रूस के नास्तिक पैदाइश से नास्तिक है । उसका बाप नास्तिक था इसलिए वह नास्तिक हे । इसलिए अब नास्तिकता भी निर्बल, नपुसक हो गयी है । उसमे भी वह बल नही रह जाएगा । निश्चित ही बल होता है अपने चुनाव मे । मैं अगर मरने के लिए भी गड्ढे मे कूदने जाऊ, और वह मेरा चुनाव है तो मेरी मृत्यु मे भी जीवन की आभा होगी । और अगर मुझे स्वर्ग भी मिल जाए धक्के देकर, फार्मल, कोई मुझे पहुचा दे स्वर्ग मे, तो मैं उदास-उदास स्वर्ग की गलियो मे भटकने लगूगा । वह मेरे लिए नर्क हो जाएगा । उससे मेरी आत्मा का कही तालमेल नही होने वाला है ।

सयम को चुनें । अपने को खोजें । सिद्धान्त का बहुत आग्रह न रखें, अपने को खोजें। अपनी इन्द्रियो को खोजें । अपने बहाव देखे कि मेरी ऊर्जा किस तरह बहती है, उससे लडें मत, वही आपका मार्ग बनेगा । उससे ही पीछे लौटें और विधायक रूप से अतीद्रिय का अनुभव थोडा शुरू करे। और प्रत्येक व्यक्ति के पास अतीद्रिय क्षमता है—उसे पता हो, न पता हो। और प्रत्येक व्यक्ति चमत्कारी रूप से अतीद्रिय प्रतिभा से भरा हुआ है। जरा कही द्वार खटखटाने की जरूरत है और खजाने खुलने शुरू हो जाते हैं । और जैसे ही यह होता है वैसे ही इन्द्रियो का जगत् फीका हो जाता है।

एक दो-तीन बाते सयम के सम्बन्ध मे और, क्योकि कल हम तप की बात शुरू करेंगे। आदमी भूलें भी नयी-नयी नही करता है, पुरानी ही करता है—भूले भी। जडता का इससे बडा और क्या प्रमाण होगा ? अगर आप जिन्दगी मे लौट कर देखें तो एक दर्जन भूल से ज्यादा भूलें आप न गिना पाएगे । हा, उन्ही-उन्ही को कई बार किया । ऐसा लगता है कि अनुभव से हम कुछ सीखते ही नही । और जो अनुभव से नही सीखता वह सयम मे नही जा सकेगा । सयम मे जाने का अर्थ

ही यह है कि अनुभव ने बताया कि असयम गलत था; कि अनुभव ने बताया कि असयम दुख था, कि अनुभव ने बताया कि असयम सिर्फ पीडा थी और नर्क था। लेकिन हम तो अनुभव से सीखते ही नही। अच्छा हो कि मैं मुल्ला की बात आपसे कहू।

साठ वर्ष का हो गया है मुल्ला। काफी हाउस मे मित्रो के पास बैठ कर गपशप कर रहा है एक साझ। गपशप का रूप अनेक बातो से घूमता इस बात पर आ गया कि एक बूढे मित्र ने पूछा—सभी बूढे, साठ साल का नसरूद्दीन है, उसके मित्र है—एक बूढे ने पूछा कि नसरूद्दीन, तुम्हारी जिन्दगी मे कोई ऐसा मौका आया, तुम्हे ख्याल आता है कि जब तुम बडी परेशानी मे पड गए होगे—बहुत आकवर्ड मूवमेट ? नसरूद्दीन ने कहा—सभी की जिन्दगी मे आता है। लेकिन तुम अपनी जिन्दगी का कहो तो हम भी कहे।

तो सभी बूढो ने अपनी-अपनी जिन्दगी के वे क्षण बताए जब वे बडी मुश्किल मे पड गए है जहा कुछ निकलने का रास्ता न रहा। कभी किसी ने कोई चोरी की और रगे हाथो पकड गया। कभी कोई झूठ बोला और झूठ नग्नता से प्रगट हो गया और कोई उपाय न रहा उसको बचाने का।

नसरूद्दीन ने कहा कि मुझे भी याद है। घर की नौकरानी स्नान कर रही है और मै ताली के छेद से उसको देख रहा था। मेरी मा ने मुझे पकड लिया। उस वक्त मेरी बुरी हालत हुई।

बाकी बूढे हसे। आखें मिचकाई। उन्होने कहा—'नही, इसमे कोई इतने परेशान मत होओ। सभी की जिन्दगी मे, बचपन मे ऐसे मौके आ जाते है।'

नसरूद्दीन ने कहा—'ह्वाट आर यू सेइग ? दिस इज अबाउट यस्टर्डे। कह रहे हो, बचपन ! यह कल की ही बात है।'

बचपन और बुढापे मे चालाकी भला बढ जाती हो, भूले नही बदलती। वही भूले है। हा, बूढा जरा होशियार हो जाता है और पकड मे कम आता है, यह दूसरी बात है। लेकिन इससे बच्चा कम होशियार है, पकड मे जल्दी आ जाता है। अभी उसके पास उपाय चालाकी के ज्यादा नही है। या यह भी हो सकता है कि बच्चे को पकडने वाले लोग है, बूढे को पकडने वाले लोग नही है। बाकी कही अनुभव मे कुछ भेद पडता हो, ऐसा दिखाई नही पडता।

नसरूद्दीन मरा। स्वर्ग के द्वार पर पहुचा। सौ वर्ष के ऊपर होकर मरा। काफी जिया। कथा है कि सेंट पीटर ने, जो स्वर्ग के दरवाजे पर पहरा देते है, उन्होने नसरूद्दीन से पूछा—काफी दिन रहे, बहुत रहे, लम्बा समय रहे, कौन-कौन-से पाप किए पृथ्वी पर ?

नसरूद्दीन ने कहा—पाप ! किए ही नही।

सेंट पीटर ने समझा कि शायद पाप बहुत जनरलाइज बात है, ख्याल मे न

आती हो। बूढा आदमी है।

कहा—'चोरी की कभी' ?

नसरूद्दीन ने कहा—'नही'।

'कभी झूठ बोले ?'

'नही'

'कभी शराब पी ?'

नसरूद्दीन ने कहा—नही।

'कभी स्त्रियो के पीछे पागल होकर भटके ?'

नसरूद्दीन ने कहा—नही।

सेंट पीटर बहुत चौंका। उसने कहा—दैन ह्वाट यू हैव बीन डूइग देयर फार सो लोग ए टाइम ? सौ साल तक तुम कर क्या रहे थे वहा ? कैसे गुजारे इतने दिन ?

नसरूद्दीन ने कहा—अब तुमने मुझे पकडा। यह तो झझट का सवाल है। यह झझट का सवाल है। लेकिन इसका जवाब मैं तुमसे एक सवाल पूछकर देना चाहता हू। ह्वाट हैव यू बीन डूइग हियर ? तुम क्या कर रहे हो यहा ? हम तो सौ साल से, तुम्हारा तो सुनते हैं अनन्तकाल से तुम यहा हो ?

पाप न हो तो आदमी को लगता ही नही कि जिए कैसे। असयम न हो तो आदमी को लगता ही नही कि जिए कैसे। अब महावीर जैसे लोग हमारी समझ के बाहर पडते है, इसका कारण है। इसका कारण एक्जिस्टेंशियल है। इटेलेक्चुअल नही। उसका कारण बौद्धिक नही है कि वह हमारी समझ मे नही आता। बुद्धि मे बिल्कुल समझ मे आते है। फर्क हमारे जीने के ढग का है। हमारी समझ मे यह नही आता कि सयम, तो फिर जिएगे क्या ? न कोई स्वाद मे रस रह जाएगा, न कोई सगीत मे रस रह जाएगा, न कोई रूप आकर्पित करेगा, न भोजन पुकारेगा, न वस्त्र बुलाएगे, महत्वाकाक्षा न रह जाएगी। तो फिर हम जिएगे कैसे ?

मेरे पास लोग आते है, वे कहते है कि अगर महत्वाकाक्षा न रही, अगर बडा मकान बनाने का ख्याल मिट गया, अगर और सुन्दर होने का ख्याल मिट गया तो जिएगे कैसे। अगर और धन पाने का ख्याल मिट गया तो जिएगे कैसे ? हमे लगता ही यह है कि पाप ही जीवन की विधि है, असयम ही जीवन का ढग है। इसलिए हम सुन लेते है कि सयम की बात अच्छी है, लेकिन वह कही हमे छू नही पाती। हमारे अनुभव से उसको कोई मेल नही है। और वह हमारा सवाल ठीक ही है क्योकि जब भी हमे सयम का ख्याल उठता है तो लगता है, निपेध—यह छोडो, वह छोडो। यह छोडो। यही तो हमारा जीवन है। सब छोड दे ! तो फिर जीवन कहा है ! यह निपेधात्मक होने की वजह से हमारी तकलीफ है। मैं

नही कहता कि यह छोडो, यह छोडो, यह छोडो । मै कहता हू, यह भी पाया जा सकता है, यह भी पाया जा सकता है, यह भी पाया जा सकता है। इसे पाओ। हा, इस पाने मे कुछ छूट जाएगा, निश्चित । लेकिन तब खाली जगह नही छूटेगी । तब भीतर एक नया फुलफिलमेंट, एक नया भराव होगा ।

और हमारी सभी इन्द्रिया एक पैटर्न मे, एक व्यवस्था मे जीती है। अगर आपको अतीद्रिया दृश्य दिखाई पडने शुरू हो जाए तो ऐसा नही कि सिर्फ आख से छुटकारा मिलेगा। नही, जिस दिन आख से छुटकारा मिलता है उस दिन अचानक कान से भी छुटकारा मिलना शुरू हो जाता है। क्योकि अनुभव का एक नया रूप जब आपके ख्याल मे आता है कि आख के जगत् मे भी भीतर का दर्शन है, तो फिर कान के जगत् मे भी भीतर की ध्वनि होगी, भीतर का नाद होगा। फिर स्पर्श के जगत् मे भी भीतर के जगत् का स्पर्श होगा। फिर सभोग के जगत् मे भी भीतर की समाधि होगी। वह तत्काल ख्याल मे आना शुरू हो जाता है। जब एक जगह से ढाचा टूट जाए, असयम का तो सब जगत् से दीवार गिरनी शुरू हो जाती है। प्रत्येक चीज एक ढाचे मे जीती है। एक ईंट खीच लें, सब गिर जाता है।

जन-गणना हो रही है और नसरूद्दीन के घर अधिकारी गए हुए हैं, उससे पूछने उसके घर के बाबत। अकेला बैठा है उदास। तो अधिकारी ने पूछा कि कुछ अपने परिवार का ब्यौरा दो, जन-गणना लिखने आया हू। तो नसरूद्दीन ने कहा कि मेरे पिता जेलखाने मे बन्द हैं। अपराध की मत पूछो, क्योकि बडी लम्बी सख्या है। मेरी पत्नी किसी के साथ भाग गयी है। किसके साथ भाग गयी है, इसका हिसाब लगाना बेकार है। क्योकि किसी के भी साथ भाग सकती थी। मेरी बडी लडकी पागलखाने मे है। दिमाग का इलाज चलता है। यह मत पूछो कि कौन-सी बीमारी है, यह पूछो कि कौन-सी बीमारी नही है ?

थोडा बेचैन होने लगा अधिकारी कि बडी मुसीबत का मामला है, कहा, कैसे भागे। किस तरह सहानुभूति इसको बताए और निकले यहा से ? तभी नसरूद्दीन ने कहा—और मेरा छोटा लडका बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी मे है। तो अधिकारी को जरा प्रसन्नता हुई। उसने कहा—बहुत अच्छा। प्रतिभाशाली मालूम पडता है। क्या अध्ययन कर रहा है ?

नसरूद्दीन ने कहा—'गलती मत समझो। हमारे घर मे कोई अध्ययन करेगा ? हमारे घर मे कोई प्रतिभा पैदा होगी ? न तो प्रतिभाशाली है, न अध्ययन कर रहा है। बनारस विश्वविद्यालय के लोग उसका अध्ययन कर रहे है। दे आर स्टडीइग हिम।' नसरूद्दीन ने कहा—'हमारे घर के बाबत कुछ तो समझो, जो पूरा ढाचा है उसमे—और रही मेरी बात, तो तुम न पूछो तो अच्छा है।' लेकिन जब तक वह यह कह रहा था तब तक तो अधिकारी भाग चुका था। उसने यह

कहा तो वह था नही मौजूद, वह जा चुका था।

ढाचे मे चीजो का अस्तित्व होता है। अभी मनोवैज्ञानिक कहते है कि अगर आपके घर मे एक आदमी पागल होता है तो किसी न किसी रूप मे आपके परिवार मे ढाचा होगा इसलिए है। नया मनोविज्ञान कहता है—एक पागल चिकित्सा नही की जा सकती है जब तक उसके परिवार की चिकित्सा न जाए। परिवार की चिकित्सा, फैमिली थैरेपी नयी विकसित हो रही है। और ज और सोचते हैं वे कहते है कि परिवार से भी क्या फर्क पडेगा? क्योकि परिवार और परिवारो के ढाचे मे जीता है। तो जब तक पूरी सोसाइटी की चिकित्सा न हो जाए, जब तक पूरे समाज की चिकित्सा न हो जाए, तब तक एक पागल को ठीक करना मुश्किल है। वे ग्रुप थैरेपी की बात करते हैं। वे कहते हैं—पूरा ग्रुप, वह जो समूह है पूरा, वह समूह के ढाचे मे एक आदमी पागल होता है। चीजे सयुक्त हैं।

लेकिन एक बात उनके ख्याल मे नही है, जो मैं कहना चाहता हू। कभी ख्याल मे आएगी, लेकिन अभी उनको सौ साल लग सकते है। यह बात जरूर सच है कि अगर एक घर मे एक आदमी पागल है, तो किसी न किसी रूप मे उसके पागलपन मे पूरे घर के लोग कट्रीब्यूट किए, उन सब ने कुछ न कुछ सहयोग दिया है। अन्यथा वह पागल कैसे हो जाता। और यह भी सच है कि जब तक उस घर के सारे लोग ठीक न हो जाए तब तक यह आदमी ठीक नही हो सकता। यह भी सच है कि एक परिवार तो बडे समूह का हिस्सा है और पूरा समूह उस परिवार को पागल करने मे कुछ हाथ बटाता है। जब तक पूरा समूह ठीक न होगा। लेकिन इससे उल्टी बात भी सच है। अगर घर मे एक आदमी स्वस्थ हो जाए तो पूरे घर के पागलपन का ढाचा टूटना शुरू हो जाता है। यह बात अभी उनके ख्याल मे नही है। यह उनके ख्याल मे कभी न कभी आ जाएगी। लेकिन भारत के ख्याल मे यह बात बहुत पुरानी है। और अगर एक आदमी ठीक हो जाए तो पूरे समूह का ढाचा टूटना शुरू हो जाता है।

इसे हम ऐसा भी समझें कि अगर आपके भीतर एक इद्रिय मे ठीक दिशा शुरू हो जाए तो आपकी सारी इद्रियो का पुराना ढाचा टूटना शुरू हो जाता है। आपकी एक वृत्ति सयम की तरफ जाने लगे तो आपकी बाकी वृत्तिया असयम की तरफ जाने मे असमर्थ हो जाती हैं। मुश्किल पड़ जाती है। जरा-सा इच भर का फर्क और सारा का सारा जो रूप है—सारा का सारा रूप बदलना शुरू हो जाता है।

कही से भी शुरू करें, कुछ भी एक बिन्दु मात्र आपके भीतर सयम का प्रगट होने लगे तो आपके असयम का अधेरा गिरने लगेगा। और ध्यान रहे श्रेष्ठतर सदा शक्तिशाली हैं। तो मैं मानता हू कि अगर एक व्यक्ति एक घर मे ठीक हो

जाए तो वह उस घर को पूरा ठीक कर सकता है क्योकि श्रेष्ठतर शक्तिशाली है। आपके भीतर एक विचार भी ठीक हो जाए, एक वृत्ति भी ठीक हो जाए अगर एक व्यक्ति एक समूह मे ठीक हो जाए तो पूरे समूह के ठीक होने के सचारण उसके आसपास से होने लगते हैं क्योकि श्रेष्ठ शक्तिशाली है। अगर तो आपकी सारी वृत्तियो का ढाचा टूटने और बदलने लगता है। विखरने लगता है। फिर आप वही नही हो सकते जो आप थे। इसलिए पूरे सयम की चेष्टा मे मत पडना। पूरा सयम सम्भव नही है। आज सम्भव नही है, इसी वक्त सम्भव नही है। लेकिन किसी एक वृत्ति को तो आप इसी वक्त, आज और अभी रूपातरित कर सकते हैं। और ध्यान रखना, उस एक का बदलना आपकी और वदलाहट के लिए दिशा वन जाएगी। और आपकी जिन्दगी मे प्रकाश की एक किरण उतर आए, तो अधेरा कितना ही पुराना हो, कितना ही हो, कोई भय का कारण नही है। प्रकाश की एक किरण अनत गुने अधेरे से भी ज्यादा शक्तिशाली है। सयम का एक छोटा-सा सूत्र, असयम की जिन्दगिया-अनन्त जिन्दगियो को मिट्टी मे गिरा देता है।

लेकिन वह एक सूत्र शुरू हो, और शुरू अगर करना हो तो विधायक दृष्टि रखना, शुरू अगर करना हो तो उसी इद्रिय से काम शुरू करना जो सबसे ज्यादा शक्तिशाली हो। शुरू अगर करना हो तो मार्ग मत तोडना। उसी मार्ग से पीछे लौटना है जिससे हम बाहर गए हैं। शुरू अगर करना हो तो अधानुकरण मत करना कि किस घर मे पैदा हुए हैं। अपने व्यक्तित्व की समझ को ध्यान मे लेना। और फिर जहा भी मार्ग मिले, वहा से चले जाना। महावीर जहा पहुचते हैं, वही मुहम्मद पहुच जाते हैं। जहा बुद्ध पहुचते, वही कृष्ण पहुच जाते है। जहा लाओत्से पहुचता है, वही क्राइस्ट पहुच जाते हैं।

नही मालूम आपको किस जगह से द्वार मिलेगा। आप पहुचने की फिक्र करना, द्वार की जिद्द मत करना कि मैं इसी दरवाजे से प्रवेश करूगा। हो सकता है वह दरवाजा आपके लिए दीवार सिद्ध हो, लेकिन हम सब इस जिद्द मे हैं कि अगर जाएगे तो जिनेन्द्र के मार्ग से जाएगे, कि जाएगे तो हम तो विष्णु को मानने वाले हैं, हम तो राम को मानने वाले है तो हम राम के मार्ग से जाएगे। आप किसको मानने वाले हैं, यह उस दिन सिद्ध होगा जिस दिन आप पहुचेगे। उसके पहले सिद्ध नही होगा। आप किस द्वार से निकलेगे, यह उसी दिन सिद्ध होगा जिस दिन आप निकल चुके होगे, उसके पहले सिद्ध नही होता है। लेकिन आप पहले से यह तय किए बैठे है कि मै इस द्वार से ही निकलूगा। ऐसा मालूम पडता है, द्वार का बहुत मूल्य है, पहुचने का कोई मूल्य नही है। जिद्द यह है कि इस सीढी पर चढेगे। चढने से कोई मतलब नही है, न भी चढें तो चलेगा। लेकिन सीढी यही होनी चाहिए।

यह पागलपन है और इससे पूरी पृथ्वी पागल हुई है । धर्म के नाम पर जो पागलपन खडा हुआ है वह इसलिए कि आपको मजिल का कोई भी ध्यान नहीं है। साधनो का अति आग्रह है कि वस यही । इस पर थोडा ढीला होगे, मुक्त होगे तो आप बहुत शीघ्र सयम की विधायक दृष्टि पर, न केवल समझने मे बल्कि जीने मे समर्थ हो सकते हैं ।

आज इतना ही; कल तप पर हम वात करेंगे । वैठे, अभी जाए मत—एक पाच मिनिट ।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ।।१।।

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

तप : ऊर्जा का दिशा-परिवर्तन

आठवा प्रवचन दिनाक २५ अगस्त, १६७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

अहिंसा है आत्मा, सयम है प्राण, तप है शरीर। स्वभावत अहिंसा के सम्बन्ध मे भूले हुई है, गलत व्याख्याए हुई है। लेकिन वे भूलें और व्याख्याए अपरिचय की भूले है। संयम के सम्बन्ध मे भी भूलें हुई है, गलत व्याख्याए हुई है, लेकिन वे भूलें भी अपरिचय की ही भूलें हैं। और ज्यादा भूले होनी कठिन है। जिससे हम अपरिचित हो, उसकी गलत व्याख्या करनी भी कठिन होती है। गलत व्याख्या के लिए भी परिचय जरूरी है। और हमारा सर्वाधिक परिचय तप से है क्योकि वह सबसे बाह्य रूप-रेखा है। वह शरीर है।

तप के सम्बन्ध मे सर्वाधिक भूले हुई है, सर्वाधिक गलत व्याख्याए हुई है। और उन गलत व्याख्याओ से जितना अहित हुआ है, उतना किसी और चीज से नही। एक फर्क है कि तप के सम्बन्ध मे जो गलत व्याख्याए हुई है, वे हमारे परिचय की भूले है। तप से हम परिचित है और तप से हम परिचित आसानी से हो जाते है। असल मे तप तक जाने के लिए हमे अपने को बदलना ही नही पडता। हम जैसे है, तप मे हम वैसे ही प्रवेश कर जाते है। चूकि तप द्वार है, और इसलिए हम जैसे है वैसे ही अगर तप मे चले जाए तो तप हमें नही बदल पाता, हम तप को बदल डालते है।

तो तप की पहले तो गलत व्याख्या जो निरन्तर होती है, वह हमे समझ लेनी चाहिए, तो हम ठीक व्याख्या की तरफ कदम उठा सकते है। हम भोग से परिचित है—भोग यानी सुख की आकाक्षा से। सभी सुख की आकाक्षाए दुख मे ले जाती है। सभी सुख की आकाक्षाए अतत दुख मे छोड जाती है—उदास, खिन्न, उखडे हुए। इससे स्वभावत. एक भूल पैदा होती है। और वह यह कि यदि सुख की माग करके दुख मे पहुच जाते है तो क्या दुख की माग करके सुख मे नही

पहुच सकते ? यदि सुख की आकाक्षा करते हैं और दुख मिलता है, तो क्यो न हम दुख की आकाक्षा करें और सुख को पा लें ! इसलिए तप की जो पहली भूल है वह भोगी चित्त मे निकलती है। भोगी चित्त का अनुभव यही है कि सुख दुख मे ले जाता है। विपरीत हम करें तो हम सुख मे पहुंच सकते हैं। तो सभी अपने को सुख देने की कोशिश करते है, हम अपने को दुख देने की कोशिश करें। यदि सुख की कोशिश दुख लाती है तो दुख की कोशिश सुख ला सकेगी, ऐसा सीधा गणित मालूम पडता है। लेकिन जिन्दगी इतनी सीधी नही है। और जिन्दगी का गणित इतना साफ नही है। जिन्दगी बहुत उलझाव है । उसके रास्ते इतने सीधे होते तो सभी कुछ हल हो जाता।

सुना है मैंने कि रूस के एक बडे मनोवैज्ञानिक पावलक के पास, जिसने कडीशन रिफलैक्स के सिद्धात को जन्म दिया, जिसने कहा कि अनुभव सयुक्त हो जाते हैं। एक बूढे आदमी को लाया गया जो कि शराब पीने की आदत से इतना परेशान हो गया है कि चिकित्सक कहते हैं कि उसके खून मे शराब फैल गयी है। उसका जीना मुश्किल है, बचना मुश्किल है अगर शराब बद न कर दी जाए। लेकिन वह कोई तीस साल से शराब पी रहा है। इतना लम्बा अभ्यास है। चिकित्सक डरते हैं कि अगर तोडा जाए तो भी मौत हो सकती है। तो पावलक के पास लाया गया। पावलक ने अपने एक निष्णात शिष्य को सौंपा और कहा कि इस व्यक्ति को शराब पिलाओ और जब यह शराब की प्याली हाथ मे ले, तभी इसे बिजली का शाक दो। ऐसा निरतर करने से शराब पीना और बिजली का धक्का और पीडा सयुक्त हो जाएगी। शराब पीडा-युक्त हो जाएगी, कडीशनिंग हो जाएगी। पीडा को कोई भी नही चाहता है। पीडा को छोडना शराब को छोडना बन जाएगा । और एक बार यह भाव मन मे बैठ जाए गहरे कि शराब पीडा देती है, दुख लाती है, तो शराब को छोडना कठिन नही होगा।

एक महीना प्रयोग जारी रखा गया। एक महीना पावलक की प्रयोगशाला मे वह आदमी रुका था। वह दिन भर शराब पीता था, जब भी वह शराब का प्याला हाथ मे लेता, तभी उसकी कुर्सी उसको शाक देती। वह सामने बैठा हुआ मनोवैज्ञानिक बटन दबाता रहता। कभी उसका हाथ छलक जाता, कभी हाथ से प्याली गिर जाती।

महीने भर बाद पावलक ने अपने युवक शिष्य को बुला कर पूछा—'कुछ हुआ ?' युवक शिष्य ने कहा—'हुआ बहुत कुछ।' पावलक खुश हुआ। उसने कहा—'मैंने कहा था कि निश्चित ही कडीशनिंग से सब कुछ हो जाता है।' पर उसके शिष्य ने कहा—'ज्यादा खुश न हो, क्योकि करीब-करीब उल्टा हुआ।'

पावलक ने कहा—'उल्टा ! क्या अर्थ है तुम्हारा ?'

युवक ने कहा—'ऐसा हो गया है, वह इतना कडीशड हो गया है कि अब शराब

पीता है तो पहले जो भी पास मे साकेट होता है उसमे उगली डाल लेता है। कडीशड हो गया। लेकिन अब विना शाक के शराब नही पी सकता है। शराब तो नही छूटी, शाक पकड गया। अब कृपा करके, शराब छूटे या न छूटे, शाक छुडवाइए। क्योकि शराव जव मारेगी, मारेगी, यह शाक का धधा खतरनाक है, यह अभी भी मार सकता है। अव वह पी ही नही सकता है। इधर एक हाथ मे प्याली लेता है तो दूसरा हाथ साकेट मे डालता है।

जिन्दगी इतनी उलझी हुई है। जिन्दगी इतनी आसान नही है। एक तो जिन्दगी की गणित साफ नही है कि जैसा आप सोचते हैं वैसा हो जाएगा। दुख की आकाक्षा सुख नही ले आएगी। क्यो? क्योकि अगर हम गहरे मे देखें तो पहली तो वात यह है कि आपने सुख की आकाक्षा की, दुख पाया। अब आप सोचते है दुख की आकाक्षा करें तो सुख मिलेगा। लेकिन गहरे मे देखें तो अभी भी आप सुख की आकाक्षा कर रहे हैं। दुख चाहे तो सुख मिलेगा इसलिए दुख चाह रहे हैं। आकाक्षा सुख की है। और सुख की कोई आकाक्षा सुख नही ला सकती। ऊपर से दिखाई पडता है कि आदमी अपने को दुख दे रहा है, लेकिन वह दुख इसीलिए दे रहा है कि सुख मिले। पहले सुख दे रहा था ताकि सुख मिले, दुख पाया। अव दुख दे रहा है ताकि सुख मिले, दुख ही पाएगा। क्योकि आकाक्षा का सूत्र तो अब भी गहरे मे वही है। ऊपर सब वदल गया, भीतर आदमी वही है।

सच वात यह है दुख चाहा ही नही जा सकता। यू कैन नाट डिजायर इट। इम्पासिवल है, असम्भव है। अगर हम ऐसा कहे कि सुख ही चाह है और दुख की तो अचाह ही होती है, चाह नही होती है। हा, अगर कभी कोई दुख चाहता है तो सुख के लिए ही, लेकिन वह चाह सुख की ही है। दुख चाहा ही नही जा सकता। यह असम्भव है। तव हम ऐसा कह सकते हैं कि जो भी चाहा जाता है वह सुख है, और जो नही चाहा जाता है, वह दुख है। इसलिए दुख के साथ चाह को नही जोडा जा सकता। और जो भी आदमी दुख के साथ चाह को जोड कर तप वनाता है, दुख + चाह = तप, ऐसी हमारी व्याख्या है, जो भी आदमी दुख के साथ चाह को जोडता है और तप वनाता है वह तप को समझ ही नही पाएगा। दुख की तो चाह ही नही हो सकती। सुख ही पीछे दौडता है। आकांक्षा मात्र सुख की है। चाह मात्र सुख की है। एक ही रास्ता है कि आपको दुख मे भी सुख मालूम पडने लगे तो आप दुख को चाह सकते हैं। दुख मे भी सुख मालूम पड सकता है। इसलिए दूसरी गलत व्याख्या समझ लें। दुख में भी सुख मालूम पड सकता है, ऐसोसिएशन से, कडीशनिंग से। जो मैंने पावलक की वात आपको कही, उसी ढग से, आपको दुख मे सुख का भ्रम हो सकता है।

यूरोप मे ईसाई फकीरो का एक सम्प्रदाय था—कोडा मारने वाला स्वय को,

फ्लैजिलैण्ट्स। उस सम्प्रदाय की मान्यता थी कि जब भी काम वासना उठे तो अपने को कोड़े मारो। लेकिन बड़ी हैरानी का अनुभव हुआ। जो लोग जानते हैं, उन्हें पता है या जिन्होंने यह प्रयोग किया, उनको धीरे-धीरे अनुभव आया कि कोड़े, जब भी काम वासना उठे अपने को कोड़े मारो। आशा यह थी कि कोड़े मारकर काम वासना छूट जाए। लेकिन धीरे-धीरे कोड़े मारने वालों को पता चला कि कोड़े मारने से काम वासना का ही मजा आने लगा। और यहां तक हालत हो गयी कि जिन लोगों ने कोड़े मारने का अभ्यास किया काम वासना के लिए, फिर वे संभोग में आने को बिना कोड़े मारे नहीं जा सकते थे। पहले वे कोड़े मारेंगे, फिर संभोग में जाएंगे। जब तक कोड़े न पड़ें शरीर पर, तब तक काम वासना पूरे रस मग्न होकर उठेगी नहीं। ऐसा आदमी के मन का जाल है।

तो अब यह आदमी अपने को रोज सुबह कोड़े मार रहा है और पास-पड़ोस के लोग उसे नमस्कार करेंगे कि कितना महान त्यागी है। क्योंकि यह जो कोड़े मारने वाला सम्प्रदाय था, उसके लाखों लोग थे मध्य युग में, पूरे यूरोप में। और साधु की पहचान ही यह थी कि वह कितने कोड़े मारता है। जो जितने कोड़े मारता था वह उतना बड़ा साधु था। सुबह उठकर चौरस्तों पर अपने को कोड़े मारते थे। लहूलुहान हो जाते थे। लोग चकित होते थे कि कितनी बड़ी तपश्चर्या है। क्योंकि जब उनके शरीर से लहू बहता था तो उनके चेहरे पर ऐसा मग्न भाव होता था जो कि केवल संभोग रत जोड़ों में देखा जा सकता है। लोग चरण छूते थे कि अद्भुत है यह आदमी। लेकिन भीतर क्या घटित हो रहा है, वह उन्हें पता नहीं है। भीतर वह आदमी पूरी काम वासना में उतर गया है। अब उसे कोड़े मारने में रस आ रहा है। क्योंकि कोड़ा मारना काम वासना से संयुक्त हो गया। यह वही हुआ जो पावलफ के प्रयोग में हुआ।

और हम अपने दुख मे सुख की कोई आभा सयुक्त कर सकते है। और अगर दुख मे सुख की आभा सयुक्त हो जाए तो दुख को बडे मजे से अपने आसपास इकट्ठा कर ले सकते है। लेकिन, तप का यह अर्थ नही है। तप दुखवादी की दृष्टि नही है। यह दुखवाद गहरे मे तो सुख ही है। तप के आसपास यह जो जाल खडा है, अगर यह आपको दिखाई पडना शुरू हो जाए तो तपस्वियो की पर्त को तोडकर आप उनके भीतर देख पाएगे कि उनका रस क्या है। और एक बार आपको दिखाई पडना शुरू हो जाए तो आप समझ पाएगे कि जब भी कुछ चाहा जाता है तो सुख चाहा जाता है। अगर कोई दुख को चाह रहा है तो किसी न किसी कोने मे उसके मन मे सुख और दुख सयुक्त हो गए है। इसके अतिरिक्त दुख को कोई नही चाहता है। भूखे मरने मे भी मजा आ सकता है, काटे पर लेटने मे भी मजा आ सकता है, धूप मे खडे होने मे भी मजा आ सकता है—एक बार आपके भीतर की किसी वासना से कोई दुख सयुक्त हो जाये। और आदमी

अपने को दुख इसलिए देता है कि वह किसी वासना से मुक्त होना चाहता है। जिस वासना से मुक्त होना चाहता है, दुख उसी मे सयुक्त हो जाता है।

एक आदमी को अपने शरीर को सजाने मे बडा सुख है। वह शरीर से मुक्त होना चाहता है, शरीर की सजावट की इस कामना से मुक्त हो जाना चाहता है। वह नगा खडा हो जाता है या अपने शरीर पर राख लपेट लेता है, या अपने शरीर को कुरूप कर लेता है। लेकिन उसे पता नही है कि यह राख लपेटना भी, यह नग्न हो जाना भी, इस शरीर को कुरूप कर लेना भी शरीर से ही सम्बन्धित है। यह भी सजावट है। सजावट दिखाई नही पडती, यह भी सजावट है। आपको पता है, अगर आप कभी कुम्भ गए है, तो एक बात देखकर बहुत चकित होगे कि जो साधु राख लपेटे बैठे है, वे भी एक छोटा आईना अपने डिब्बे मे रखते है और सुबह स्नान करने के बाद जब वह राख लपेटते हैं, तो आइने मे देखते है। आदमी अद्‌भुत है। राख ही लपेट रहे है तो आइने का क्या प्रयोजन रह गया। लेकिन राख लपेटना भी सजावट है, शृगार है। शरीर को कुरूप करने वाला भी आइने मे देखेगा कि हो गया ठीक से कि नही ?

उल्टा दिखाई पडता है, उल्टा है नही। तपस्वी शरीर का दुश्मन नही हो जाता, जैसा कि भोगी शरीर का लोलुप मित्र है। तपस्वी भोगी के विपरीत हो जाता क्योकि विपरीत से भी भोग सयुक्त हो जाता है। विपरीत से भी भोग सयुक्त हो जाता हैं। शरीर को सुन्दर बनाने वाले के लिए ही आइने की जरूरत नही होती, शरीर को कुरूप बनाने वाले के लिए भी आइने की जरूरत पड जाती है। शरीर को सुन्दर बनाने वाला ही दूसरो की दृष्टि पर निर्भर नही रहता है कि कोई मुझे देखे, शरीर को कुरूप बनाने वाला भी दूसरो की दृष्टि पर निर्भर रहता है कि कोई मुझे देखे। सुन्दर वस्त्र पहनकर रास्ते पर निकलने वाला ही देखने वाले की प्रतीक्षा नही करता है, नग्न होकर निकलने वाला भी उतनी ही प्रतीक्षा करता है। विपरीत भी कही एक ही रोग की शाखाए हो सकते है, यह समझ लेना जरूरी है। आसान है लेकिन यही—शरीर के भोग से शरीर के तप पर जाना आसान है। शरीर को सुख देने की आकाक्षा का शरीर को दुख देने की आकाक्षा मे बदल जाना बडा सुगम और सरल है।

एक और बात ध्यान मे ले लेनी जरूरी है। जिस माध्यम से हम सुख चाहते है, अगर वह माध्यम हमे सुख न दे पाए तो हम उसके दुश्मन हो जाते है। अगर आप कलम मे लिख रहे है—सभी को अनुभव होगा जो लिखने-पढते है—अगर कलम ठीक न चले तो आप कलम को गाली देकर जमीन पर पटक कर तोड भी सकते है। अब कलम को गाली देना एकदम नासमझी है। इससे ज्यादा नासमझी और क्या होगी ! और कलम को तोड देने मे कलम का कुछ भी नही टूटता, आपका ही कुछ टूटता है। कलम का कोई नुकसान नही होता, आपका ही नुकसान

होता है। लेकिन जूतों को गाली देकर पटक देने वाले लोग हैं, दरवाजों को गाली देकर खोल देने वाले लोग हैं। ये ही लोग तपस्वी बन जाते हैं। शरीर सुख नहीं दे पाया, यह अनुभव शरीर को तोड़ने की शिक्षा में ले जाता है—तो शरीर को सताओ। लेकिन शरीर को सताने के पीछे वही फ्रस्ट्रेशन, वही विषाद काम कर रहा है कि शरीर से सुख चाहा था और नहीं मिला। अब जिस माध्यम से सुख चाहा था उसको दुख देकर बताएंगे।

लेकिन आप बदले नहीं, अभी भी। अभी भी आपकी दृष्टि शरीर पर लगी है, चाहे सुख चाहा हो, और चाहे अब दुख देना चाहते हो, पर आपके चित्त की जो दिशा है वह अभी भी शरीर के ही आसपास वर्तुल बनाकर घूमती है। आपकी चेतना अभी भी शरीर केन्द्रित है। अभी भी शरीर घूमता नहीं। अभी भी शरीर अपनी जगह खड़ा है और आप वहीं के वहीं हैं। ध्यान रखें, भोगी और तथाकथित तपस्वी के बीच शरीर के सम्बन्ध में कोई अन्तर नहीं पड़ता। शरीर के साथ सम्बन्ध वही रहता है।

क्या आप सोच सकते हैं, अगर हम भोगी से कहें कि तुम्हारा शरीर छीन लिया जाए तो तुम्हें कठिनाई होगी? भोगी कहेगा—कठिनाई! मैं बर्बाद हो जाऊंगा, क्योंकि शरीर ही तो मेरे भोग का माध्यम है। अगर हम तपस्वी से कहें कि तुम्हारा शरीर छीन लिया जाए, तुम्हें कोई कठिनाई होगी? वह भी कहेगा—मैं मुश्किल में पड़ जाऊंगा। क्योंकि मेरी तपश्चर्या का साधन तो शरीर-ही है। कर तो मैं शरीर के साथ ही कुछ रहा हूं। अगर शरीर ही न रहा तो तप कैसे होगा? अगर शरीर न रहा तो भोग कैसे होगा? इसलिए मैं कहता हूं—दोनों की दृष्टि शरीर पर है और दोनों शरीर के माध्यम से जी रहे हैं। जो तप शरीर के माध्यम से जी रहा है वह भोग का ही विकृत रूप है। जो तप शरीर-केन्द्रित है, वह भोग का ही दूसरा नाम है। वह विषाद को उपलब्ध हो गए भोग की प्रतिक्रिया है। वह विषाद को उपलब्ध हो गए भोग की शरीर के साथ बदला लेने की, रिवेंज लेने की आकांक्षा है।

इसे समझें तो फिर हम ठीक तप की दिशा में आंखें उठा सकेंगे। यह इन कारणों से तप जो है आत्महिंसा बन गया है। अपने को जो जितना सता सकता है उतना बड़ा तपस्वी हो जाता है। लेकिन सताने से तप का कोई सम्बन्ध है? टार्चर, पीडन, आत्म-पीडन, उससे तप का कोई सम्बन्ध है? और ध्यान रखें, जो अपने को सता सकता है वह दूसरे को सताने से बच नहीं सकता। क्योंकि जो अपने तक को सता सकता है, वह किसी को भी सता सकता है। हां, उसके सताने के ढंग बदल जाएंगे। निश्चित ही भोगी का सताने का ढंग सीधा होता है। त्यागी के सताने का ढंग परोक्ष हो जाता है, इनडायरेक्ट हो जाता है। अगर भोगी को आपको सताना है तो आप पर सीधा हमला बोलता है। त्यागी को

आपको सताना है तो बहुत पीछे से हमला बोलता है। लेकिन आपको ख्याल मे नही आता कि वह हमला बोल रहा है। अगर आप त्यागी के पास जाएं—तथाकथित त्यागी के पास, सो-काल्ड, जो आस्टेरिटी है, तपश्चर्या है—उसके पास आप जाए, अगर आपने अच्छे कपडे पहन रखे हैं और आपका त्यागी भभूत रमाए बैठा है तो आपके कपडो को ऐसे देखेगा जैसा दुश्मन देखता है। उसकी आख मे निन्दा होगी, आप कीडे-मकोडे मालूम पडेंगे। ऐसे कपडे पहने हुए है! उसकी आखो मे इशारा होगा नर्क का, तीर बना होगा नर्क की तरफ कि गए नर्क। वह आपको कहेगा—अभी तक सभले नही! अभी तक इन कपडो से उलझे हो, नर्क मे भटकोगे।

मैंने सुना है कि एक पादरी एक चर्च मे लोगो को समझा रहा था, डरा रहा था नर्क के बाबत कि कैसी-कैसी मुसीबते होगी। और जब कयामत का दिन आएगा इतनी भयकर सर्दी पडेगी पापियो के ऊपर कि दात खडखडाएगे। मुल्ला नसरूद्दीन भी उस सभा मे था, वह खडा हो गया। उसने कहा—लेकिन मेरे दात टूट गए है!

उस फकीर ने कहा—घबराओ मत, फाल्स टीथ विल बी प्रोवाइडेड। नकली दात दे दिए जाएगे, लेकिन खडखडाएगे।

साधु, तथाकथित तपस्वी आपको नर्क भेजने की योजना मे लगे है। उनका चित्त आपके लिए नर्क के सारे इतजाम कर रहा है। सच तो यह है कि नर्क मे कष्ट देने का जो इतजाम है, वह तथाकथित झूठे तपस्वी की कल्पना है, फैंटसि है। वह तथाकथित तपस्वी यह सोच ही नही सकता कि आपको भी सुख मिल सकता है! आप यहा काफी सुख ले रहे हैं। वह जानता है कि यह सुख है। वह यहा काफी दुख ले रहा है। कही तो बैलेंस करना पडेगा, कही सतुलन करना पडेगा। उसने यहा काफी दुख झेल लिया है। वह स्वर्ग मे सुख झेलेगा। आप यहा सुख भोग रहे हैं। आप नर्क मे सडेंगे और दुख भोगेंगे।

और बडे मजे की बात है—उसके स्वर्ग के सुख आपके ही सुखो का मैगनीफाइड रूप है। आप जो सुख यहा भोग रहे हैं, वही सुख और विस्तीर्ण होकर, बडे होकर वह स्वर्ग मे भोगेगा, और जो दुख वह यहा भोग रहा है "यह मजे की बात है कि तपस्वी अपने आसपास आग जलाकर बैठते रहे हैं" आपको नर्क मे आग मे सडाएगे वे। जो तपस्वी अपने आसपास आग जलाएगा उससे सावधान रहना, उसके नर्क मे आग आपके लिए तैयार रहेगी। भयकर आग होगी जिससे आप बच नही सकेंगे। कडाहो मे डाले जाएगे, चुडाए जाएगे और मर भी न सकेंगे क्योकि मर गए तो मजा ही खत्म हो जाएगा। अगर मारा और मर गए तो दुख कौन झेलेगा? इसलिए नर्क मे मरने का उपाय नही है। ध्यान रखना, नर्क मे तपस्वियो ने आत्महत्या की सुविधा नही दी है। आप मर नही सकते नर्क मे; आप कुछ भी करें। और कुछ भी करे, एक काम नर्क मे नही होता कि आप मर नही

सकते। क्योकि अगर आप मर सकते हैं तो दुख के वाहर हो सकते है। इसलिए वह सुविधा नही दी है।

कितनी कल्पना से निकलता है यह सारा ख्याल ? यह कौन सोचता है ये सारी वातें ? सच मे जो तपस्वी है वह तो सोच भी नही सकता, किसी के लिए दुख का कोई भी ख्याल नही सोच सकता। वह सोच ही नही सकता दुख का कोई ख्याल कि किसी को कोई दुख हो। कही भी, नर्क मे भी। लेकिन जो तथाकथित तपस्वी है वह वहुत रस लेता है। अगर आप शास्त्रो को पढें—सारी दुनिया के धर्मों के शास्त्रो को, तो एक वहुत अद्भुत घटना आपको दिखाई पडेगी। तपस्वियो ने जो-जो लिखा है—तथाकथित तपस्वियो ने—उसमे वे नर्को की जो-जो विवेचना और चित्रण करते है, वह वहुत परवर्टेड इमेजिनेशन मालूम पडती है, वहुत विकृत हो गयी कल्पना मालूम पडती है। ऐसा वे सोच पाते हैं, ऐसा वे कल्पना कर पाते है—यह उनके वावत वडी खवर लाती है।

दूसरी एक वात दिखाई पडेगी कि तपस्वी, आप जो-जो सुख भोगते है उनकी वडी निन्दा करते है और निन्दा मे वडा रस लेते है। वह रस वहुत प्रगट है। यह वहुत मजे की वात है कि वात्स्यायन ने अपने काम-सूत्रो मे स्त्री के अगो का ऐसा सुन्दर चित्रण नही किया है—इतना रसमुग्ध—जितना तपस्वियो ने स्त्री के अगो की निन्दा करने के लिए अपने शास्त्रो मे किया है। वात्स्यायन के पास इतना रस हो भी नही सकता था। क्योकि उतना रस पैदा करने के लिए विपरीत जाना जरूरी है। इसलिए मजे की वात है कि भोगियो के आसपास कभी नग्न अप्सराए आकर नही नाचती, वे सिर्फ तपस्वियो के आसपास आकर नाचती हैं। तपस्वी सोचते है, उनका तप भ्रष्ट करने के लिए वे आ रही हैं। लेकिन जिसको भी मनोविज्ञान का थोडा-सा वोध है, वह जानता है—कही इस जगत् मे अप्सराओ का कोई इतजाम नही है तपस्वियो को भ्रष्ट करने के लिए। अस्तित्व तपस्वियो को भ्रष्ट क्यो करना चाहेगा ? कोई कारण नही है। अगर परमात्मा है, तो परमात्मा भी तपस्वियो को भ्रष्ट करने मे क्यो रस लेगा ? और ये अप्सराए शाश्वत् रूप से एक ही धधा करेंगी, तपस्वियो को भ्रष्ट करने का ? इनके लिए और कोई काम, इनके जीवन का अपना कोई रस नही है ?

नही, मनसविद् कहते है कि तपस्वी इतना लडता है जिस रस से, वही रस प्रगाढ होकर प्रगट होना शुरू हो जाता है। और तपस्वी काम से लड रहा है तो आसपास कामवासना रूप लेकर खडी हो जाती है, वह उसे घेर लेती हैं। वह जिससे लड रहा है उसी को प्रोजेक्ट, उसी का प्रक्षेपण कर लेता है। वे अप्सराए किसी स्वर्ग से नही उतरती, वे तपस्वी के सघर्ष-रत मन से उतरती है। वे अप्सराए उसके मन मे जो छिपा है, उसे वाहर प्रगट करती है। वह जो चाहता है और जिसमे वच रहा है, वे अप्सराए उसका ही साकार रूप हैं। वह जो मागता भी है,

और जिससे लडता भी है, वह जिसे बुलाता भी है और जिसे हटाता भी है, वे अप्सराए केवल उसके उसी विपरीत चित्त की तृप्ति है। वे उसे भ्रष्ट करने कही और से नही आती है, उसके ही दमित चित्त से पैदा होती है।

तव विकृत हो तो दमन होता है। और दमन आदमी को रुग्ण करता है, स्वस्थ नही। इसलिए मै कहता हू—महावीर के तप मे दमन का कोई भी कारण नही है। और अगर महावीर ने कही दमन जैसे शब्दो का प्रयोग भी किया है तो मै आपको कह दू, पच्चीस सौ साल पहले दमन का अर्थ बहुत दूसरा था। वह अव नही है। दम का अर्थ था शान्त हो जाना। दम का अर्थ दवा देना नही था महावीर के वक्त में। दम का अर्थ था शान्त हो जाना। शान्त कर देना भी नही, शान्त हो जाना। भाषा रोज वदलती रहती है, क्योकि अर्थ रोज वदलते रहते है। इसलिए अगर कही महावीर की वाणी मे दमन शब्द मिल भी जाए तो आप ध्यान रखना, उसका अर्थ सप्रेशन नही है। उसका अर्थ दवाना नही है। उसका अर्थ शान्त हो जाना है। जिस चीज से आपको दुख उपलब्ध हुआ है, उसके विपरीत चले जाने से दमन पैदा होता है। जिस चीज से आपको दुख उपलब्ध हुआ है, उसकी समझ मे प्रतिष्ठित हो जाने से शान्ति उपलब्ध होती है। इस फर्क को ठीक से समझ लें।

कामवासना ने मुझे दुख दिया, तो मैं कामवासना के विपरीत चला जाऊ और लडने लगू कामवासना से, तो दमन होगा। कामवासना ने मुझे दुख दिया, यह वात मेरी समझ, मेरी प्रज्ञा मे इस भाति प्रविष्ट हो जाए कि कामवासना तो शान्त हो जाए और कामवासना के विपरीत मेरे मन मे कुछ भी न उठे। क्योकि जव तक विपरीत उठता है तव तक शान्त नही हुआ। विपरीत उठता ही इसीलिए है।

एक मित्र की पत्नी मुझे कहती थी कि मेरा पति से कोई भी प्रेम नही रह गया, लेकिन कलह जारी है। मैंने कहा—अगर प्रेम विल्कुल न रह गया हो, तो कलह जारी नही रह सकती। कलह के लिए भी प्रेम चाहिए। थोडा-वहुत होगा। मैंने उससे कहा कि थोडा-वहुत जरूर होगा। और कलह अगर वहुत चल रही है तो वहुत ज्यादा होगा।

उसने कहा—आप कैसी उल्टी वातें करते है? मै डाइवोर्स के लिए सोचती हू, कि तलाक दे दू।

मैंने कहा—हम तलाक उसी को देने के लिए सोचते है, जिससे हमारा कुछ वधन होता है। जिससे वंधन ही नही होता उसको तलाक भी क्या देंगे। वात ही खत्म हो जाती है, तलाक हो जाता है। यह दो वर्ष पहले की वात है।

फिर अभी एक दिन मैंने उससे पूछा कि क्या खवर है? उसने कहा—आप शायद ठीक कहते थे। अव तो कलह भी नही होती। आप शायद ठीक कहते थे, उस वक्त मेरी समझ मे नही आया। अव तो कलह भी नही होती। तलाक के

बाबत क्या ख्याल है ? उसने कहा—क्या लेना, क्या देना । बात ही शान्त हो गयी । दोनो के बीच सम्बन्ध ही नही रह गया । सम्बन्ध हो तो तोडा जा सकता है । सम्बन्ध ही न रह जाए तो क्या तोडिएगा ? अगर आप किसी वासना से लड रहे है तो आपका उस वासना में रस अभी कायम है । जिन्दगी ऐसी उलझी हुई है ।

लेकिन फ्रायड ने तो जीवन भर के पचास साल के अनुभव के बाद कहा—शायद यह आदमी अकेला था पृथ्वी पर जो मनुष्य के सम्बन्ध मे इस भाति गहरा उतरा—इस आदमी ने कहा कि जहा तक प्रेम है वहा तक कलह जारी रहेगी । अगर कलह से मुक्त होना है तो प्रेम से मुक्त होना पडेगा । अगर पति पत्नी मे प्रेम है, तो प्रेम का तो हमे पता नही चलता क्योंकि प्रेम उनका एकात मे प्रगट होता होगा । लेकिन कलह का हमे पता चलता है क्योकि कलह तो प्रगट मे भी प्रगट हो जाती है । अब कलह के लिए एकात तो नही खोजा जा सकता । कलह ऐसी चीज भी नही है कि उसके लिए कोई एकात का कष्ट उठाए । पर फ्रायड कहता है कि अगर प्रगट मे कलह जारी है तो हम मान सकते है, अप्रगट मे प्रेम जारी होगा । दिन मे जो पति-पत्नी लडे है, रात वे प्रेम मे पडेंगे । पूर्ति करनी पडती है, बैलेंस करना पडता है सन्तुलन करना पडता है ।

जिस दिन लडाई होती है उस दिन घर मे कोई भेट भी लाई जाती है । अगर पति लडकर बाजार गया है तो लौटकर कुछ पत्नी के लिए लेकर आएगा । अगर पति घर की तरफ फूल लिए आता हो तो यह मत समझ लेना कि पत्नी का जन्म-दिन है । समझना कि आज सुबह उपद्रव ज्यादा हुआ है । यह बैलेंसिंग है, अब वह उसको सन्तुलन करेगा । लेकिन फ्रायड तो कहता है—मैं काम वासना को एक कलह मानता हू । इसलिए फ्रायड सैक्स और वार को जोडता है । वह कहता है—युद्ध और काम एक ही चीज के रूप है और जब तक मन में काम वासना है, तब तक युद्ध की वृत्ति समाप्त नही हो सकती । यह इनसाइट, गहरी है, यह अन्तर्दृष्टि गहरी है । और इस अन्तर्दृष्टि को अगर हम समझें तो महावीर को समझना बहुत आसान हो जाएगा ।

महावीर कहते कि अगर जो बुरा है, तथाकथित बुरा मालूम पडता है, उससे छूटना है, तो जो तथाकथित भला है उससे भी छूट जाना पडेगा । अगर घृणा से मुक्त होना है तो राग से भी मुक्त हो जाना पडेगा । अगर शत्रु से बचना है तो मित्र से भी बच जाना पडेगा । अगर अधेरे मे जाने की आकाक्षा नही है तो प्रकाश से भी नमस्कार कर लेना पडेगा । यह उल्टा दिखाई पडता है, वह उल्टा नही है । क्योकि जिसके मन मे प्रकाश मे जाने की आकाक्षा है, वह बार-बार अधेरे मे गिरता रहेगा । जीवन द्वन्द्व है, और जीवन के सब रूप अपने विपरीत से बधे हुए है, अपने से उल्टे से बधे हुए हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि जो व्यक्ति जिस चीज से लडेगा,

विपरीत चलेगा, उससे ही वधा रहेगा। उससे वह कभी नही छूट सकता। अगर आप धन से लड रहे है और धन के विपरीत जा रहे है, तो धन आपके चित्त को सदा घेरे रहेगा। अगर आप अहकार से लड रहे है और अहकार के विपरीत जा रहे हैं तो आपका अहकार सूक्ष्म से सूक्ष्म होकर आपके भीतर सदा खडा रहेगा। लडना थोडा सभल कर। क्योकि जिससे हम लडते है, उससे हम वध जाते है।

तब इन्ही भूलो मे पडकर रुग्ण हो गया। और जिन्हे हम तपस्वी की भाति जानते है, उनमे से निन्यानवे प्रतिशत मानसिक चिकित्सा के लिए उम्मीदवार है। उनकी मानसिक चिकित्सा जरूरी है। और ध्यान रहे, कामवासना से छूटना आसान है, क्योकि कामवासना प्रकृति है। कामवासना के विपरीत जो कामवासना के विरोध से वध गया, उससे छूटना मुश्किल पडेगा। क्योकि वह प्रकृति से और एक कदम दूर निकल जाना है।

इसे हम तीन शब्दो मे समझ ले। एक को मै कहता हू प्रकृति, जिसे हमने कुछ नही किया, जो हमे मिली है। दि गिविंग। जो हमे मिली है वह प्रकृति है। अगर हम कुछ गलत करें तो जो हम कर लेंगे, उसका नाम है विकृति। और अगर हम कुछ करें और ठीक करें तो जो होगा, उसका नाम है सस्कृति। प्रकृति पर हम खडे होते है। जरा-सी भूल और विकृति मे चले जाते है। सस्कृति मे जाना वहुत कठिन है। क्योकि सस्कृति मे जाने के लिए विकृति से वचना पडेगा और प्रकृति के ऊपर उठना पडेगा। दो वातें—विकृति से वचना पडेगा और प्रकृति के ऊपर उठना पडेगा। अगर किसी ने सिर्फ प्रकृति से लडने की कोशिश की तो विकृति मे गिर जाएगा। और विकृति सस्कृति से और एक कदम दूर है। प्रकृति उतनी दूर नही, प्रकृति मध्य मे खडी है। विकृति, और आप हट गए। प्रकृति से दूर हट गए। इसलिए तो पशुओ मे ऐसी विकृतिया नही दिखाई पडती जैसी मनुष्यो मे दिखाई पडती है। क्योकि पशु प्रकृति से नही लडते, इसलिए विकृति नही दिखाई पड़ती। हम कल्पना भी नही कर सकते।

अभी न्यूयार्क के एक चौराहे पर और वाशिगटन मे और-और जगहो पर होमोसेक्सुअल्स ने जुलूस निकाले और उन्होने कहा है कि यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। और इस वर्ष · पिछले वर्ष कम-से-कम सौ होमोसेक्सुअल्स ने विवाह किए। जो कि कल्पना के वाहर मालूम पडता है—एक पुरुष, एक पुरुष के साथ विवाह कर रहा है या एक स्त्री, एक स्त्री के साथ विवाह कर रही है। समलिंगी विवाह। सौ विवाह की घटनाए दर्ज हुई है अमरीका मे इस वर्ष। और इन लोगो ने कहा है कि हम घोषणा करते हैं कि हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है कि हम जिसको प्रेम करना चाहते है करें, कोई सरकार हमे रोके क्यो? एक पुरुष-पुरुष को प्रेम करना चाहता है, उससे विवाह करना चाहता है, उनके काम-सम्बन्ध का अधिकार मागता है। कम-से-कम डेढ सौ क्लव पूरे अमेरिका मे है। और यूरोप मे, स्वीडन मे और

स्विट्जरलैंड मे—सब जगह वे क्लब फैलते चले गए है। कम-से-कम दो सौ पत्रिकाए आज जमीन पर निकलती है होमोसेक्सुअल्स की। पत्रिकाए, जिनमे वे खबरें देते है और घोषणाए देते है।

और आप हैरान होगे कि अभी उन्होने एक प्रदर्शन किया है, कैलिफोर्निया मे, जैसा कि ब्यूटी कपटिशन का होता है—जिनमे महिलाओ को, सुन्दर महिलाओ को हम नग्न खडा करते है। होमोसेक्सुअल ने पचास नग्न युवको को खडा करके प्रदर्शन किया कि हम इनमे ही सौन्दर्य देखते है, स्त्रियो मे नही। कोई पशुओ की हम कभी सोच सकते है कि पशु और होमोसेक्सुअल, नही! हा कभी-कभी ऐसा होता है, सर्कस के पशु होमोसेक्सुअल हो जाते है। या कभी-कभी अजायबघर के पशु होमोसेक्सुअल हो जाते है।

डैसमड मारिस ने एक किताब लिखी है—दि ह्यूमन जू। आदमियो का अजायबघर। और उसने लिखा है कि जो अजायबघर मे पशुओ के साथ होता है वह आदमियो के साथ समाज मे हो रहा है। अजायबघर है, यह कोई समाज नही है। जू है। क्योंकि कोई पशु पागल नही होता, जगल मे, अजायबघर मे पागल होता है। कोई पशु जगल मे आत्महत्या नही करता देखा गया आज तक। लेकिन अजायबघर मे कभी-कभी आत्महत्या कर लेता है। पशु विकृत नही होता क्योकि प्रकृति मे ठहरा रहता है। आदमी कोशिश करता है, आदमी दो कोशिश कर सकता है या तो प्रकृति से लडने की कोशिश करे, तो आज नही कल विकृति मे उतर जाएगा, और या फिर प्रकृति का अतिक्रमण करने की कोशिश करे, तो सस्कृति मे प्रवेश करेगा।

अतिक्रमण तप है। विरोध नही, निरोध नही, सघर्ष नही—अतिक्रमण, ट्रासेंडेंस। बुद्ध ने एक बहुत अच्छा शब्द प्रयोग किया है, वह शब्द है—पारमिता। वे कहते है—लडो मत। इस किनारे से उस किनारे चले जाओ, पार चले जाओ—लडो मत। लडो मत, इस किनारे, जहा तुम खडे हो, लडो मत। क्योकि लडोगे तो भी इसी किनारे पर खडे रहोगे। जिससे लडना हो, उसके पास रहना पडेगा। जिससे लडना हो, उससे दूर जाना खतरनाक है। दुश्मन आमने-सामने सगीनें लेकर खडे रहते है। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की बाउण्ड्री पर देखे—वे खडे है। हिन्दुस्तान-चीन की बाउण्ड्री पर देखें, वे सगीनें लिए खडे है। दुश्मन से दूर जाना खतरनाक है। दुश्मन के सामने सगीन लेकर खडे रहना पडता है। अगर इस तट से लडोगे—बुद्ध ने कहा है—अगर भोग के तट से लडोगे तो उस तट पर पहुचोगे कब? लडो मत, उस तट पर पहुच जाओ। यह तट छूट जाएगा, भूल जाएगा और विलीन हो जाएगा। तपश्चर्या अतिक्रमण है, ट्रासेंडेंस है—द्वन्द्व नही, सघर्ष नही।

इस अतिक्रमण के रूप पर हम थोडे गहरे जाएगे तो बहुत-सी बाते ख्याल हो सकेंगी। एक तो पहले ख्याल ले लें कि अतिक्रमण का क्या अर्थ होता है? आप

क घाटी मे खडे है अधेरा है वहुत। आप उस अधेरे से लडते नही, आप सिर्फ पहाड के शिखर पर चढना शुरू कर देते है। थोडी देर मे आप पाते है कि आप सूर्य से मडित शिखर के निकट पहुचने लगे। वहा कोई अधेरा नही हे। घाटी मे अधेरा, आप घाटी मे खडे ही न रहे, आपने सूर्य-मडित शिखर की तरफ वढना शुरू कर दिया। आपने धूप से नहाए हुए शिखर की तरफ वढना शुरू कर दिया। आप प्रकाश मे पहुच गए, अतिक्रमण हुआ, सघर्ष जरा भी नही।

जहा आप है, वहा दो चीजें है। आप भी है और आपके आसपास घिरा हुआ घाटी का अधेरा भी है। दो है वहा, आप भी हैं, घाटी का अधेरा भी है। अगर घाटी के अधेरे से आप लडते है तो आपको घाटी मे ही रहना पडेगा। अगर आप घाटी के अधेरे से लडते नही—अपने भीतर जो आप है, उसे ऊपर उठाते है, ऊर्ध्वगमन पर चलते है तो घाटी के अधेरे पर ध्यान देने की भी जरूरत नही है जहा हम खडे हैं, वहा चारो तरफ वृत्तिया है, भोग की—वे भी है, आप भी है। गलत त्यागी का ध्यान वृत्तियो पर होता है कि इस वृत्ति को मै कैसे मिटाऊ। सही त्यागी का ध्यान स्वय पर होता है कि मैं इस वृत्ति के ऊपर कैसे उठ जाऊ।

इस फर्क को ठीक से समझ लें, क्योकि इन दोनो की यात्रा अलग होगी। दोनो का नियम अलग होगा, दोनो की साधना अलग होगी, दोनो की दिशा अलग होगी, दोनो का ध्यान अलग होगा। वृत्ति से जो लड रहा है उसका ध्यान वृत्ति पर होगा। स्वय को जो ऊचा उठा रहा है, उसका ध्यान स्वयं पर होगा। जो वृत्तियो से लड रहा है उसका ध्यान वहिर्मुखी होगा। जो स्वय को ऊर्ध्वगमन की तरफ ले जा रहा हे उसका ध्यान अन्तर्मुखी होगा। और एक मजे की वात है कि ध्यान भोजन है। जिस चीज पर आप ध्यान देते है, उसको आप शक्ति देते है। जिस चीज को आप ध्यान देते है, उसको आप शक्ति देते है।

मैं पावलिटा की बात कर रहा था—चैक विचारक और वैज्ञानिक। छोटे-छोटे यत्र है उसके पास। वह कहता है—पाच मिनट आख गडा कर इस यत्र को देखते रहो, और वह यत्र आपकी शक्ति को सग्रहित कर लेता है। अमरीका मे एक वहुत अद्भुत आदमी था, जिसे दो साल की सजा अमरीका सरकार ने दी। ऐसा लगता है कि आदमी की वुद्धि वढती ही नही। वह दो हजार साल हो तो भी वही करता है, दो हजार साल वाद वही करता है। एक आदमी था, विलेहम रैक। इस सदी मे जिन लोगो के पास अतर्दृष्टि रही उनमे से एक आदमी है, उसको दो साल सजा भोगनी पड़ी और आखिर मे अमरीकी सरकार ने उसे पागलखाना—उसको पागल करार देकर, कानूनन उसको पागलखाने भेज दिया। उस पर मुकदमा चला एक वहुत अजीव वात पर। अव उसके मर जाने के वाद वैज्ञानिक कह रहे है कि शायद वह ठीक था।

उसने एक अद्भुत वाक्स, एक पेटी वनायी, जिसको वह आर्गन वाक्स कहता

था । वह कहता था—इसके भीतर कोई व्यक्ति लेट जाए और कामवासना का विचार करता रहे, तो उसकी कामवासना की शक्ति इस डिब्बे मे सग्रहित हो जाएगी। लेकिन अब इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण क्या हो कि सग्रहीत हो जाती है । वह कहता था—प्रमाण एक ही है कि आप किसी को भी उसके ऊपर लिटा दो, जिसको बिल्कुल पता नही है । वह एक मिनट के बाद कामवासना का विचार करना शुरू कर देता है । किसी को भी लिटा दो—वह कहता था—यही प्रमाण है । इसको तो वह हजारो लोगो को प्रमाण देता था । लेकिन उसको वैज्ञानिक कहते थे कि हम इसको कोई प्रमाण नही मानते । वह आदमी भ्रम मे हो सकता है, उस आदमी की आदत हो सकती है । इस डिब्बे के भीतर, वह कहता था—जो विचार आप करेंगे, जहा आपका ध्यान जाएगा, वही शक्ति सग्रहीत हो जाएगी । वह अनेक ऐसे लोगो को, जिनको मानसिक रूप से ख्याल पैदा हो गया है कि वे क्लीव हैं, इम्पोटेंट है, इन वाक्सो मे लिटाकर ठीक कर देता था । क्योकि वह कहता था—इनमे आर्गान इनर्जी इकट्ठी है । यह जो पावलिटा हैं, वह आपकी कोई भी शक्ति को आपके ध्यान से इकट्ठा कर लेता है ।

आपको ख्याल मे न होगा, जब आपकी तरफ लोग ध्यान देते है तब आप स्वस्थ अनुभव करते हैं, जब आपकी तरफ लोग नही देते तब आप अस्वस्थ अनुभव करते हैं । इसलिए एक बडी अद्भुत घटना घटती है कि जब आप चाहते हैं कि लोग ध्यान दें, आप बीमार पड जाते है । बच्चे तो बस ट्रिक को बहुत जल्दी समझ जाते हैं । आपकी सौ मे से नब्बे बीमारिया ध्यान की आकाक्षाओ से पैदा होती हैं, क्योकि बिना बीमार पडे घर मे आपका कोई ध्यान नही देता । पत्नी बीमार पड जाती है तो पति उसके सिर पर हाथ रखकर बैठता है । बीमार नही पडती तो उसकी तरफ देखता भी नही । पत्नी इस रहस्य को जानबूझ कर नही, अचेतन मे समझ जाती है कि जब उसे ध्यान चाहिए तो उसे बीमार होना पडेगा । इसलिए कोई स्त्री उतनी बीमार नही होती जितनी दिखाई पडती है । या जितना वह दिखावा करती है। या जब उसका पति कमरे मे होता है तो जितना वह कूलती-कराहती और आवाजें करती है, वह आवाजें उतनी नही हैं, जितना कि पति कमरे मे नही होता है तब वह करती है । तब भी नही करती है । इस पर थोडा ध्यान देने जैसा है। कारण क्या होगा ? बच्चे बहुत जल्दी सीख जाते है । जब वे बीमार होते हैं तो सारे घर के अटेंशन उनके ऊपर हो जाता है । एक दफा यह बात समझ मे आ गयी कि अटेंशन आकर्पित करने के लिए बीमार होना रस है तो जिंदगी भर के लिए बीमारी आधार बना लेती है ।

मनोवैज्ञानिक सलाह देते हैं, लेकिन बुद्धिमानी की सलाह बडी उल्टी मालूम पडती है । वे कहते हैं—जब कोई बीमार हो तब जानबूझ कर भी उस पर कम ध्यान देना, अन्यथा उसे बीमार होने के लिए तुम कारण बनोगे। जब कोई बीमार

हो तब तो ध्यान देना ही मत। सेवा कर देना, लेकिन ध्यान मत देना—बडे तटस्थ भाव से। बीमारी को कोई रस देना खतरनाक है, तो जिदगी मे वह आदमी कम बीमार पडेगा, ज्यादा स्वस्थ रहेगा। उसके लिए ध्यान और बीमारी जुडेगी नही।

लेकिन ध्यान से शक्ति मिलती है। इसीलिए तो इतनी सारी दुनिया मे ध्यान पाने की कोशिश चलती है। एक नेता को क्या रस आता होगा ? जूते खाए, गालिया खाए, उपद्रव सहे—रस क्या आता होगा ? लेकिन जब वह भीड मे खडा होता है तो सब आखें उसकी तरफ फिर जाती है। पावलिटा कहता है कि वह सबकी शक्ति से भोजन पाता है। कोई आश्चर्य नही कि नेहरू कुछ दिन और जिदा रह जाते, अगर चीन का हमला न होता। अचानक भोजन कम हो गया। ध्यान बिखर गया। कोई राजनीतिक नेता पद पर रहते हुए मुश्किल से मरता है, इसलिए कोई राजनीतिक नेता पद नही छोडना चाहता, नही तो मरना और पद छोडना करीब आ जाते है। मुश्किल से मरता है, कोई राजनीतिक नेता पद पर। मरना ही पडे आखिर मे, यह बात अलग है। अपनी पूरी कोशिश वह यह करना है कि जीते जी पद न छूट जाए। क्योकि पद छूटते ही उम्र कम हो जाती है। लोग रिटायर होकर जल्दी मर जाते है। अब जो पुलिस का आफिसर था, वह रिटायर हो गया, उसी दस साल कम-से-कम, उम्र कम हो जाती है।

अभी इस पर तो बहुत काम चलता है। और बहुत देर न लगेगी कि वे लोग रिटायर होने से इन्कार करने लगेंगे, जैसे ही उनको पता चल जाएगा कि गडबड क्या हो रही है। रिटायर जब तक आदमी नही होता, तब तक स्वस्थ मालूम पडता है। रिटायर होते ही बीमार पड जाता है। जो भोजन उसे मिल रहा था—दफ्तर मे जाता था, लोग खडे हो जाते थे, सडक पर निकलता था लोग नमस्कार करते थे। बच्चे भी डरते थे क्योकि बाप का कब्जा था पैसे पर। बैंक बैलेंस बाप के नाम था। पत्नी भी भयभीत होती थी। फिर अब रिटायर हो गया, हाथ से धीरे-धीरे सब सूत्र छूट गए। अब वह बैठा रहता है कोने मे। लोग ऐसे निकल जाते है जैसे वह है ही नही। तो वह खासता-खखारता है, आवाज देता है कि मैं भी यहा हू। वह हर चीज मे अडगेबाजी करता है—बूढो की आदत अडगेबाजी की और किसी कारण से नही है—हर चीज मे अडगेबाजी करता है। कोई ऐसी बात नही जिसमे वह अडगा न डाले। क्योकि अडगा डालकर अब वह बता सकता है कि मैं हू और थोडा ध्यान आकर्षित करता है। यह बहुत दीन अवस्था है, यह बहुत दयनीय अवस्था है। यह बहुत रुग्ण है, दुखद है—लेकिन है। वह घर मे कोई ऐसी चीज न चलने देगा जिसमे वह सलाह न दे। हालांकि उसकी कोई सलाह नही मानता है, यह वह जानता है। इसे वह दिन भर कहता है कि कोई मेरी नही मानता। लेकिन फिर दिन-भर देता क्यो है। वह दिन भर

कहता हूँ, कोई मेरी सुनता नही ।

गाधीजी कहते थे कि वह एक सौ पच्चीस वर्ष जिएगे। और जी सकते थे। अगर भारत आजाद न होता, वे एक सौ पच्चीस वर्ष जी सकते थे । भारत का आजाद होना उनके मरने का हिस्सा बन गया। क्योकि आजादी के बाद ही जो उनको सुनते थे उन्होने सुनना बन्द कर दिया, क्योकि वे खुद ही ताकतवर हो गए। वे खुद ही पदो पर पहुच गए। गाधी ने कहा—'मै खोटा सिक्का हो गया हू, मेरी अब कोई सुनता नही ।' लेकिन गाधीजी को पता नही होगा जब भी यह कहते थे कि मेरी कोई सुनता नही, मैं एक खोटा सिक्का हो गया हू । मैं बोलता रहता हू, कोई मेरी फिक्र नही करता । कोई मेरी सलाह नही मानता—हालाकि वे सलाह दिए जाते थे । मरने के पहले उन्होने कहना शुरू कर दिया था कि अब मेरी एक सौ पच्चीस वर्ष जीने की कोई आकाक्षा नही है । परमात्मा मुझे जल्दी उठा ले । क्यो ? क्योकि खोटे सिक्के हो गए । क्योकि कोई सुनता नही । क्योकि कोई ध्यान नही देता । जो ध्यान देते थे वे भी इसलिए ध्यान देते थे कि बिना गाधी पर ध्यान दिए उन पर कोई ध्यान नही देता था । अब वे खुद ही ध्यान पाने के अधिकारी हो गए थे, सीधा लोग उनको ध्यान दे रहे थे। अब वह गाधी पर काहे के लिए ध्यान देंगे । कोने मे पड गए थे । कोई नही कह सकता कि गोडसे की गोली को सामने देखकर उनके मन मे धन्यवाद नही उठा हो। कोई नही कह सकता है कि उन्होने सोचा हो कि आ गया भगवान का सदेशवाहक, झझट मिटी—विदा हो गए ।

ध्यान भोजन है, बहुत सटल फूड, बहुत सूक्ष्म भोजन है । अकेले ध्यान पर ही जी सकते है आप । इसलिए जब कोई प्रेम मे पडता है तो भूख कम हो जाती है । आपको पता है, अगर कोई आपको बहुत प्रेम करता है तो भूख एकदम कम हो जाती है । क्यो कम हो जाती है ? जब कोई प्रेम करता है, प्रेम का मतलब ही क्या है कि कोई आप पर ध्यान देता है । और मतलब क्या है ? और जब कोई आप पर ध्यान नही देता है । आपको पता है, मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि जब कोई ध्यान नही देता तब लोग ज्यादा भोजन करने लगते है । जब कोई ध्यान देता है तब कम भोजन करते हैं। क्योकि ध्यान भी कही गहरे मे भोजन का काम करता है । 'जिस चीज को हम ध्यान देते है, उसको शक्ति देते है', यह मैं कह रहा हू । और अब इसको कहने के वैज्ञानिक आधार है । अब इसको नापने के भी उपाय हैं ।

मैने पीछे आपसे निकोलिएव और कामिनिएव का नाम लिया था । ये दोनो व्यक्ति टैलिपैथिक कम्युनिकेशन मे इस समय पृथ्वी पर सबसे ज्यादा निष्णात लोग है । निकोलिएव विचार भेजता है, ब्राडकास्ट करता है और हजारो मील दूर कामिनिएव उस विचार को पकडता है । वैज्ञानिको ने यत्न लगाकर बडे चकित हो

गए कि जव निकोलिएव विचार भेजता है, तव उसकी शक्ति क्षीण होती है। उसके चारो तरफ यत्न वताते हैं कि उसकी शक्ति क्षीण हो रही है। और जव हजारो मील दूर कामिनिएव विचार को ग्रहण करता है, तब उसकी शक्ति, यत्न वताते हैं कि वढ गयी। आश्चर्यजनक! हजारो मील दूर। लेकिन जव निकोलिएव विचार भेजता है कामिनिएव को, तव उससे पूछा गया कि वह करता क्या है? वह कहता है—'मैं आख बन्द करके ध्यान करता हू कि कामिनिएव मेरे सामने उपस्थित है—वह दूर नही है, मेरे सामने उपस्थित है। मैं अपने सारे ध्यान को उस पर लगा देता हू। सव भूल जाता हू सिर्फ कामिनिएव रह जाता है। अगर कामिनिएव रह जाता है और मुझे प्रत्यक्ष दिखाई पडने लगता है कि वह सामने खडा है, तब मै उससे वोलता हू।'

ध्यान, वह अटेंशन दे रहा है। तो उसकी ऊर्जा हजारो मील दूर बैठे हुए व्यक्ति को उपलब्ध हो जाती है। जिस चीज पर हम ध्यान देते हैं वहा शक्ति सग्रहीत होती है और जहां से हम ध्यान देते है वहा से शक्ति हटती है और विसर्जित होती है। जिस वृत्ति पर आप ध्यान देते है उस पर शक्ति सग्रहित हो जाती है। जव आप कामवासना का विचार करते है तो आपके कामवासना का जो केन्द्र है वह शक्ति को इकट्ठा करने लगता है। जिस चीज पर आप ध्यान देते हैं वह वृत्ति का केन्द्र आपके भीतर शक्ति को इकट्ठा कर लेता है। आप ही शक्ति देते है ध्यान देकर। फिर वह केन्द्र शक्ति से भर जाता है तो वह शक्ति से से मुक्त होना चाहता है, क्योकि वोझिल हो जाता हे। यह जाल है आदमी के भीतर।

लेकिन, कामवासना पर ध्यान दो तरह से दिया जा सकता है। एक, कि आप कामवासना मे रस लें तो भी ध्यान दिया जा सकता है। प्रकृतिस्थ, नेचुरल कामवासना आप मे घनीभूत होगी, नैसर्गिक कामवासना आप मे शक्तिशाली हो जाएगी। एक विकृत ध्यान दिया जा सकता है। एक आदमी कामवासना पर ध्यान देता है कि मुझे कामवासना से लडना है, मुझे कामवासना को भीतर प्रविष्ट नही होने देना है—वह भी ध्यान दे रहा है। उसका भी काम का सेंटर, सैक्स सेंटर शक्ति को इकट्ठा कर लेता है। अव वडी मुश्किल होती है। क्योकि जो नैसर्गिक कामवासना को ध्यान देता है, वह तो नैसर्गिक रूप से शक्ति उसकी विसर्जित हो जाएगी। लेकिन जो विसर्जित नही करना चाहता और ध्यान देता है, इसका क्या होगा? इसकी शक्ति विकृत रूप लेना शुरू करेगी, वह विसर्जित हो नहीं सकती। यह शरीर के दूसरे अगो मे प्रवेश करेगी और उनको विकृत करने लगेगी। यह चित्त के दूसरे स्नायुओ मे प्रवेश करेगी और विकृत करने लगेगी। यह आदमी भीतर से उलझता जाएगा और जाल मे फसता जाएगा। अपनी ही···अपनी ही दी गयी शक्ति से।

ऐसा हुआ कि हम एक वृक्ष को पानी दिए जाते हैं और प्रार्थना किए जाते हैं कि वृक्ष बड़ा न हो। यह वृक्ष बड़ा न हो, प्रार्थना किए जाते हैं और पानी दिए जाते हैं। जिस वृत्ति को आप ध्यान देते हैं चाहे पक्ष में, चाहे विपक्ष में, आप उसको पानी और भोजन देते हैं। तप का मूल सूत्र यही है कि ध्यान कहीं और दो। जहां तुम शक्ति को इकट्ठा करना चाहते हो वहां मन दो। ध्यान ही उठाओ ऊपर। अगर कामवासना से मुक्त होना है तो कामवासना पर ध्यान ही मत दो—पक्ष में भी नहीं, विपक्ष में भी नहीं। लेकिन ध्यान आपको देना ही पड़ेगा क्योंकि ध्यान आपकी शक्ति है, वह काम मांगती है।

तो तप का मूल सूत्र यह है कि ध्यान के लिए नए केन्द्र निर्मित करो। नए केन्द्र आदमी के भीतर हैं, और उन केन्द्रों पर ध्यान को ले जाओ। जैसे ही ध्यान को नया केन्द्र मिल जाता है, वह नए केन्द्र में शक्ति को उंडेलने लगता है, वैसे ही पुराने केन्द्रों से मुक्त होने लगता है। पहाड़ पर चढ़ाई शुरू हो गयी है। काम वासना का केन्द्र हमारा सबसे नीचा केन्द्र है। वहां से हम प्रकृति से जुड़े हैं। सहस्रार हमारा सबसे ऊंचा केन्द्र है। वहां से हम परमात्मा ऊर्जा से जुड़े हैं—दिव्यता से, भव्यता से, भगवत्ता से जुड़े हैं। जब भी आप ध्यान देते हैं आपने ख्याल किया है कि आपके मस्तिष्क में विचार चलता है, कामवासना का, और आपका काम-केन्द्र तत्काल सक्रिय हो जाता है। यहां विचार चला—और विचार तो चलता है मस्तिष्क में और काम केन्द्र बहुत दूर है—वह तत्काल सक्रिय हो जाता है।

ठीक यही उपाय है। तपस्वी अपने सहस्रार की तरफ अपने ध्यान को लौटा के करता है। वह जैसे ही सहस्रार की तरफ ध्यान देता है वैसे ही सहस्रार सक्रिय होना शुरू हो जाता है। और जब शक्ति ऊपर की तरफ जाती है तो नीचे की तरफ नहीं जाती है। और जब शक्ति को मार्ग मिलने लगता है, शिखर पर चढ़ने का, तो घाटियां वह छोड़ने लगती है। अगर शक्ति को प्रकाश के जगत् में प्रवेश होने लगता है तो अंधेरे के जगत् से चुपचाप उठने लगती है। अंधेरे की निन्दा भी नहीं होती है उसके मन में, अंधेरे का विरोध भी नहीं होता है उसके मन में, अंधेरे का ख्याल भी नहीं होता है उसके मन में, अंधेरे पर ध्यान ही नहीं होता है। ध्यान का रूपान्तरण है, तप।

अब इसको अगर इस तरह समझेंगे तो तप का मैं दूसरा अर्थ आपको कह सकूंगा। तप का ऐसे अर्थ होता है—अग्नि। तप का अर्थ होता है—अग्नि। तप का अर्थ होता है—भीतर की अग्नि। मनुष्य के भीतर जो जीवन की अग्नि है, उस अग्नि को ऊर्ध्वगमन की तरफ ले जाना तपस्वी का काम है। उसे नीचे की ओर ले जाना भोगी का काम है। भोगी का अर्थ है—जो अग्नि को नीचे की ओर प्रवाहित कर रहा है जीवन में—अधोगमन की ओर। तपस्वी का अर्थ है—जो ऊपर की ओर प्रवाहित कर रहा है उस अग्नि को, परमात्मा की ओर, सिद्धावस्था की ओर।

यह अग्नि दोनो तरफ जा सकती है। और बडे मजे की बात यह है कि ऊपर की तरफ आसानी से जाती है, नीचे की तरफ बड़ी कठिनाई से जाती है, क्योकि अग्नि का स्वभाव है ऊपर की तरफ जाना। आपने ख्याल किया है ? आप आग जलाते हैं, वह ऊपर की तरफ जाने लगती है। इसीलिए इसे तप नाम दिया, इसे अग्नि नाम दिया, इसे यज्ञ नाम दिया, ताकि यह ख्याल मे रहे कि अग्नि का स्वभाव तो है ऊपर की तरफ जाना। नीचे की तरफ तो वडी चेष्टा करके ले जानी पडती है।

पानी नीचे की तरफ बहता है। अगर ऊपर की तरफ ले जाना हो तो वडी चेष्टा करनी पडती है। और आप चेष्टा छोड दें तो पानी फिर नीचे की तरफ बहने लगेगा। आपने पपिंग का इतजाम छोड दिया, तो पानी फिर नीचे बहने लगेगा। अगर ऊपर चढाना है तो पप करो, ताकत लगाओ, मेहनत करो। नीचे वहने के लिए पानी किसी की मेहनत नही मागता, खुद वहता है। वह उसका स्वभाव है।

अग्नि को अगर नीचे की तरफ ले जाना है तो इतजाम करना पडेगा। अपने से अग्नि ऊपर की तरफ उठती है—ऊर्ध्वगामी है। इसको तप कहने का कारण है क्योकि भीतर की जो अग्नि है, जो जीवन-अग्नि है, वह स्वभाव से ऊर्ध्वगामी है। एक बार आपको उसके ऊर्ध्वगमन का अनुभव हो जाए, फिर आपको प्रयास नही करना पडता है, उसको ऊपर ले जाने के लिए। वह जाती रहती है एक बार सहस्रार की तरफ तपस्वी का ध्यान मुड जाए तो फिर उसे चेष्टा नही करनी पडती है। फिर वह अग्नि अपने आप बढती रहती है। धीरे-धीरे वह भूल ही जाता है क्या नीचे, क्या ऊपर। भूल ही जाता है, क्योकि फिर तो अग्नि सहज ऊपर वहती रहती है। एक बार आग राह पकड ले तो ऊपर की तरफ जाना उसका स्वभाव है। नीचे की तरफ ले जाने के लिए वडा आयोजन करना पडता है। लेकिन हम नीचे की तरफ ले जाने के इतने लम्बे अभ्यस्त है कि जन्मो-जन्मो से हमारा अभ्यास है, नीचे की तरफ ले जाने का। इसलिए नीचे की तरफ ले जाना, जो कि वस्तुत कठिन है, वह हमे सरल मालूम पडता है। ऊपर की तरफ ले जाना जो कि वस्तुत सरल है, वह हमे कठिन मालूम पडता है।

कठिनाई हमारी आदत मे है। आदतें वडी कठिन हो जाती है। और कभी-कभी स्वभाव, जो कि हमारी आदत नही है, जो कि वस्तु का धर्म है—उसके ऊपर हमारी आदत इतनी सख्त होकर वैठ जाती है कि स्वभाव को दवा देती है। हम सवके स्वभाव दवे हुए है आदतो से। जिसको महावीर कर्म का क्रम कहते है वह हमारी आदतो का क्रम है। हमने आदतें बना रखी है, वे हमे दवाए हुए है। वह आदतें लम्बी हैं। पुरानी है, गहरी है। उनसे छूट जाना आज इसी वक्त सम्भव नही हो जाएगा। तो हम उनसे लडना शुरू करते है और उल्टी आदतें वनाते है।

लेकिन आदत फिर भी आदत होती है।

गलत तपस्वी सिर्फ आदत वनाता है तप की। ठीक तपस्वी स्वभाव को खोजता है, आदत नही वनाता। हैविट और नेचर का फर्क समझ लें। हम सव आदतें वनवाते है। हम वच्चे को कहते हैं—क्रोध न करो, क्रोध की आदत वुरी है। न क्रोध करने की आदत वनाओ।' वह न क्रोध करने की आदत तो वना लेता है, लेकिन उससे क्रोध नष्ट नही होता, क्रोध भीतर चलने लगता है। कामवासना पकडती है तो हम कहते है कि ब्रह्मचर्य की आदत वनाओ। वह आदत वन जाती है। लेकिन कामवासना भीतर सरकती रहती है, वह नीचे की तरफ वहती रहती है। इससे कोई फर्क नही पडता। तपस्वी खोजता है—स्वभाव के सूत्र को, ताओ को, धर्म को। वह क्या है जो मेरा स्वभाव है, उसे खोजता है। सव आदतो को हटाकर वह अपने स्वभाव का दर्शन करता है। लेकिन आदतो को हटाने का एक ही उपाय है—ध्यान मत दो, आदत पर ध्यान मत दो।

एक मित्र चार छ दिन पहले मेरे पास आए। उन्होने कहा कि आप कहते हैं कि वम्वई मे रहकर, और ध्यान हो सकता है! लेकिन सडक का क्या करें, भोपू का क्या करें? ट्रेन जा रही है, सीटी बज रही है, इसका क्या करें?

मैंने उनको कहा—ध्यान मत दो।

उन्होने कहा—कैसे ध्यान न दे! खोपडी पर भोपू वज रहा है, नीचे कोई हार्न वजाए चला जा रहा है, ध्यान कैसे न दें!

मैंने उनसे कहा—एक प्रयास करें। भोपू कोई नीचे वजा रहा है, उसे भोपू वजाने दे। तुम ऐसे वैठे रहो, कोई प्रतिक्रिया मत करो कि भोपू अच्छा है कि भोपू बुरा है, कि वजाने वाला दुश्मन है कि वजाने वाला मित्र है, कि इसका सिर तोड देंगे अगर आगे वजाया। कुछ प्रतिक्रिया मत करो। तुम वैठे रहो, सुनते रहो। सिर्फ सुनो। थोडी देर मे तुम पाओगे कि भोपू वजता भी हो तो भी तुम्हारे लिए वजना वन्द हो जाएगा। एक्सेप्ट इट, स्वीकार करो।

जिस आदत को वदलना हो उसे स्वीकार कर लो। उससे लडो मत। स्वीकार कर लो, जिसे हम स्वीकार लेते है उस पर ध्यान देना वन्द हो जाता है। क्या आपको पता है, किसी स्त्री के आप प्रेम मे हो, उस पर ध्यान आता है। विवाह करके उसको पत्नी वना लिया, फिर वह स्वीकृत हो गयी, फिर ध्यान वद हो जाता है। जिस चीज को हम स्वीकार कर लेते है ··। एक कार आपके पास नही है, वह सडक पर निकलती है चमकती हुई, ध्यान खीचती है। फिर आपको मिल गयी, फिर आप उसमे वैठते है। फिर थोडे दिन मे आपको ख्याल ही नही आता है कि वह कार भी है, चारो तरफ जो ध्यान को खीचती थी। वह स्वीकार हो गयी।

जो भी स्वीकृत हो जाती है उस पर ध्यान जाना वन्द हो जाता है। स्वीकार कर लो, जो है उसे स्वीकार कर लो। अपने वुरे-से-वुरे हिस्से को भी स्वीकार कर

लो। ध्यान देना वन्द कर दो, ध्यान ही मत करो। उसको ऊर्जा मिलनी वन्द हो जाएगी तो धीरे-धीरे अपने आप क्षीण होकर सिकुड जाएगी, टूट जाएगी और जो वचेगी ऊर्जा उसका प्रवाह अपने आप भीतर की तरफ वहना शुरू हो जाएगा।

गलत तपस्वी उन्ही चीजो पर ध्यान देता है जिन पर भोगी देता है। सही तपस्वी···ठीक तप की प्रक्रिया ध्यान का रूपातरण है। वह उन्ही चीजो पर ध्यान देता है, जिन पर भोगी ध्यान देता है, न तथाकथित त्यागी ध्यान देता है। वह ध्यान को ही वदल देगा। और ध्यान हमारा हमारे हाथ मे है। हम वही देते हैं जहा हम देना चाहते हे।

अभी यहा वैठे है आप, मुझे सुन रहे है। अभी यहा आग लग जाए मकान मे, आप एकदम भूल जाएगे कि सुन रहे है। कि कोई वोल रहा था, सव भूल जाएगे। आपका ध्यान दौड जाएगा, वाहर निकल जाएगे, भूल ही जाएगे कि कुछ सुन रहे थे। सुनने का कोई सवाल ही नही रह जाएगा। ध्यान प्रतिपल वदल सकता है, सिर्फ नए विन्दु उसको मिलने चाहिए। आग मिल गयी, वह ज्यादा जरूरी है जीवन को वचाने के लिए, तो तत्काल ध्यान वहा दौड जाएगा। आप के भीतर तप की प्रक्रिया मे उन नए विन्दुओ और केन्द्रो की तलाश करनी है जहा ध्यान दौड जाए और जहा नए केन्द्र सशक्त होने लगें। इसलिए तपस्वी कमजोर नही होता, शक्तिशाली होता है। गलत तपस्वी कमजोर होता है। गलत तपस्वी कमजोर होकर सोचता है कि हम जीत लेंगे, और भ्राति पैदा होती है जीतने की।

अगर एक आदमी को तीस दिन भोजन नही दिया जाए, तो कामवासना क्षीण हो जाती है। इसलिए नही कि कामवासना चली गयी, इसलिए कामवासना के योग्य रस नही वनता शरीर मे। फिर भोजन दिया जाए तो तीस दिन मे जो वासना नही थी वह तीन दिन मे वापस लौट आती हे। भोजन मिला, शरीर को रस मिला। फिर केन्द्र सक्रिय हो गया, फिर ध्यान दौडने लगा। इसलिए फिर जिसने भूखा रहकर कामवासना पर तथाकथित विजय पायी वह वेचारा फिर भूखा ही जीवन-भर रहने की कोशिश मे लगा रहता है, क्योकि वह डरता है कि इधर भोजन दिया तो उधर वासना उठी। मगर यह निपट पागलपन है। वासना के वाहर हुए नही, यह सिर्फ कमजोरी की वजह से वासना को शक्ति नही मिल रही है।

असल मे आदमी जितनी शक्ति पैदा करता है उसमे कुछ तो जरूरी होती है जो उसके रोज के काम मे समाप्त हो जाती है। एक खास मात्रा की कैलोरी उसके रोज के काम मे—उठने मे, बैठने मे, नहाने मे, खाने मे, पचाने मे, दुकान मे आने मे, जाने मे व्यय हो जाती है। सोने मे व्यय हो जाती है। इसके अतिरिक्त जो बचती है वह उस केन्द्र को मिल जाती है जिस पर आपका ध्यान है। जो सुपरफ्लुअस है, जो अतिरिक्त है। अगर समझ लें कि एक हजार कैलोरी, मान लें कि

आपके रोजमर्रा के काम मे खर्च होती है और आपके भोजन और आपकी व्यवस्था से आपको दो हजार कैलोरी शक्ति शरीर मे पैदा होती है। तो आपका ध्यान जिस केन्द्र पर होगा, एक हजार कैलोरी जो शेष बची है, उस केन्द्र पर दौड जाएगी। उसको कोई रास्ता नही है, ध्यान ही रास्ता है, ध्यान ही ऐरो है जिससे वह जाएगी। उसको और कुछ पता नही, कहा जाना है। आपका ध्यान उसको खबर देता है कि यहा जाना है, वह वहा चली जाती है।

अब अगर आपको झूठे तप मे उतरना है, तो आप भोजन इतना कर लें कि हजार कैलोरी से ज्यादा आपके भीतर पैदा न हो। फिर आपको ब्रह्मचर्य सधा हुआ मालूम पडेगा। क्योकि आपके पास अतिरिक्त शक्ति बचती नही जो कि सेक्स के केन्द्र को मिल जाए। हजार शक्ति पैदा होती है, हजार आप खर्च कर लेते हैं। इसलिए तपस्वी खाना कम कर देता है, पैदल चलने लगता है, श्रम ज्यादा करने लगता है और खाना कम करता चला जाता है। वह दोहरी प्रतिक्रियाए करता है, ताकि शरीर मे शक्ति कम हो और शक्ति व्यय ज्यादा हो। वह मिनिमम पर जीने लगता है। न होगी अतिरिक्त शक्ति, न वासना बनेगी।

मगर इससे वह वासना से मुक्त नही होगा। वासना अपनी जगह खडी है। वासना का केन्द्र प्रतीक्षा करेगा। अनत जन्मो तक प्रतीक्षा करेगा, कहेगा जितनी शक्ति ज्यादा हो, मैं तैयार हू। यह सिर्फ भय मे जीना है। इस जीने से कही कुछ उपलब्ध नही होता है। इससे प्रकृति तो चूक जाती है, सस्कृति नही मिलती। सिर्फ विकृति मिलती है और एक भयभीत चेतना रह जाती है।

नही, यह नही है मार्ग। ठीक पाजिटिव आस्टैरिटी का, ठीक विधायक तप का मार्ग है—शक्ति पैदा करो, ध्यान रूपातरित करो। ध्यान नए केन्द्रो तक ले जाओ। ताकि शक्ति वहा जाए। इसे हम धीरे-धीरे जब और गहरे उतरेंगे ध्यान के परिवर्तन के लिए, तो यह प्रक्रिया ख्याल मे आ सकेगी। लेकिन सबसे पहले तो यह ख्याल मे ले लेना चाहिए कि मेरी अतिरिक्त शक्ति किस केन्द्र से व्यय हो रही है। उसके विपरीत जो केन्द्र है, उस केन्द्र पर ध्यान को लगाना पडेगा।

एक छोटी-सी घटना, और आज की बात मैं पूरी करू। धर्म गुरुओ का एक सम्मेलन हुआ है। बडे धर्म-गुरु इस देश के एक नगर मे इकट्ठे हुए है। चार बडे धर्म है इस देश में, चारो के चार बडे धर्म-गुरु एक निजी वार्ता मे लीन हैं। सब सम्मेलन निपटने के करीब हो गया। वह व्यर्थ की बातें कर रहे हैं। ऊची बातें हो चुकी, नकली बाते हो चुकी। वे अब बैठकर गप-शप कर रहे है। पचहत्तर साल का बूढा धर्मगुरु कहता हे कि हो गयी वे बाते, सुन गए लोग। लेकिन तुम्हारे सामने मैं क्यो छिपाऊ, और मैं आशा करता हू कि तुम भी न छिपाओगे। अच्छा होगा कि हम बताए कि असली जिन्दगी हमारी क्या है। मैं तो एक ही चीज से परेशान रहा हू—वह धन। और दिन रात धन के विपरीत बोलता हू। धन पर

मेरी बडी पकड है। एक पैसा भी मेरा खो जाए तो रात भर मुझे नीद नही आती। या एक पैसा मिलने की आशा बध जाए तो रात भर एक्साइटमेट रहता है और नीद नही आती। बडी, धन ही मेरी कमजोरी है। बडी मुश्किल हैं। इसके पार मैं नही हो पा रहा हू। आप मे से कोई पार हो गया हो तो बताए।

किसी ने कहा—पार तो हम भी नहीं, हमारी अपनी-अपनी मुसीबते है।

एक ने कहा—मेरी मुसीबत तो यह अहकार है। इसके लिए ही जीता हू, इसी के लिए उठता हू, इसी के लिए बैठता हू। इसी के लिए अहकार के खिलाफ भी बोलता हू, पर है यही। इससे मैं बाहर नही हो पाता।

तीसरे ने कहा—मेरी कमजोरी तो यह कामवासना है। ये स्त्रिया मेरी कमजोरी है। दिन-रात समझाता हू, प्रवचन करता हू, ब्रह्मचर्य का व्याख्यान करता हू चर्च मे। लेकिन उस दिन बोलने मे मजा ही नही आता, जिस दिन स्त्रिया नही आती। मुझे खुद ही मजा नही आता बोलने मे। जिस दिन स्त्रिया आती है, उस दिन मेरा जोश देखने लायक होता है। उस दिन जब मैं बोलता हू तो बात ही और होती है। लेकिन अब मैं जानता हू भली-भाति कि वह भी कामवासना ही है। मैं उसके बाहर नही हो पाता हूँ।

चौथा आदमी मुल्ला नसरूद्दीन था। वह उठकर खडा हो गया और उसने कहा कि क्षमा करें, मैं जाता हू।

उन्होने कहा—लेकिन तुमने अपनी कमजोरी नही बतायी।

उसने कहा—मेरी सिर्फ एक कमजोरी है, वह है निन्दा। अब मैं नही रुक सकता एक भी क्षण। पूरा गाव मेरी राह देख रहा होगा। जो मैंने यहा सुना है, वह मुझे कहना होगा। क्षमा करें, मेरी एक ही कमजोरी है—अफवाह। अब मेरा रुकना मुश्किल है।

उन तीनो ने उसे पकड़ने की कोशिश की कि तू ठहर भाई, तेरी यह कमजोरी थी, इसे तूने पहले क्यो नही कहा, इतनी देर चुप क्यो रहा ?

हर आदमी की कोई न कोई कमजोरी है। उस कमजोरी को ठीक से पहचान लें। उसी मे आपकी ऊर्जा व्यय होती है।

मुल्ला ने कहा कि तब तक तो मैं बैठा रहा जब तक मैं पूरा न सुन पाया। लेकिन जब मैंने पूरा सुन लिया तो जग गयी मेरी शक्ति। अब इस रात सोना मेरे वश मे नही है, अब जब तक एक-एक पर खबर न पहुचा दू। शक्ति जग गयी मेरी। वह जो कमजोरी है हमारी, वही हमारी शक्ति का निष्कासन है। वही से हमारी शक्ति व्यय होती है। मुल्ला तब तक बिल्कुल सुस्त बैठा था, जैसे कोई प्राण ही न हो। अचानक ज्योति आ गयी, प्राण आए, चमक आ गयी।

मुल्ला ने कहा—गजब हो गया। कभी सोचा भी न था कि इस कान्फ्रेंस मे और ऐसा आनन्द आने वाला है।

हमारी कमजोरी हमारी शक्ति के व्यय का बिन्दु है। भोग हो या भोग के विपरीत त्याग हो, बिन्दु वही बना रहता है। ध्यान वहीं केन्द्रित रहता है, शक्ति वहीं से विसर्जित होती है, इवैपरेट होती है, वाष्पीभूत होती है। तब ध्यान के केन्द्र बदलने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया पर कल मैं बात करूंगा। शायद लम्बी इस पर बात करनी पड़े क्योंकि महावीर ने फिर तप के बारह हिस्से किए हैं, और एक-एक हिस्सा वैज्ञानिक प्रक्रिया है। तो कल वैज्ञानिक प्रक्रिया को हम समझ लें, फिर महावीर के एक-एक तप के हिस्से पर हम बात करेंगे।

अभी जाएंगे नहीं—हालांकि मन की कमजोरी कह रही होगी कि भागो। तो थोड़ा रुकेंगे। जो कीर्तन सन्यासी करते हैं, उतना धैर्य और।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिसा, सयम और तपरूप धर्म । जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते है ।

तप : ऊर्जा-शरीर का अनुभव

नौवा प्रवचन दिनाक २६ अगस्त, १६७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, वम्बई

तप के सम्बन्ध मे, मनुष्य की प्राण ऊर्जा को रूपान्तरण करने की प्रक्रिया के सम्वन्ध मे और थोडे-से वैज्ञानिक तथ्य समझ लेने आवश्यक हैं। धर्म भी विज्ञान है, या कहे परम विज्ञान है, सुप्रीम साइंस है। क्योकि विज्ञान केवल पदार्थ का स्पर्श कर पाता है, धर्म उस चैतन्य का भी जिसका स्पर्श करना असम्भव मालूम पडता है। विज्ञान केवल पदार्थ को वदल पाता है, नए रूप दे पाता है, धर्म उस चेतना को भी रूपान्तरित करता है जिसे देखा भी नही जा सकता और छुआ भी नही जा सकता। इसलिए परम विज्ञान है।

विज्ञान से अर्थ होता है—टु नो दि हाउ। किसी चीज को कैसे किया जा सकता है, इसे जानना। विज्ञान का अर्थ होता है—उस प्रक्रिया को जानना, उस पद्धति को जानना, उस व्यवस्था को जानना जिससे कुछ किया जा सकता है। वुद्ध कहते थे कि सत्य का अर्थ है—वह जिससे कुछ किया जा सके। अगर सत्य इम्पोटेंट है, नपुसक है, जिससे कुछ न हो सके, सिर्फ सिद्धान्त हो, तो व्यर्थ है। सत्य वही है जो कुछ कर सके—कोई वदलाहट, कोई क्रान्ति, कोई परिवर्तन। और धर्म ऐसा ही सत्य है। इसलिए धर्म चिंतन नही है, विचार नही है, धर्म आमूल रूपान्तरण है, म्यूटेशन है। तप धर्म का धर्म के रूपान्तरण की प्रक्रिया का प्राथमिक सूत्र है। तप किन आधारो पर खडा है, वह हम समझ ले। किन प्रक्रियाओ से आदमी को वदलता है, वह हम समझ लें।

सवसे पहली वात इस जगत् मे जो भी हमे दिखाई पडता है वह वैसा नही है जैसा दिखाई पडता है। क्योकि जो भी दिखाई पडता है वह मालूम होता है थिर पदार्थ है, ठहरा हुआ, जमा हुआ पदार्थ है। लेकिन अव विज्ञान कहता है—इस जगत् मे ठहरी हुई, जमी हुई कोई भी चीज नही है। जो कुछ है सभी गत्यां-

त्मक है, डायनैमिक है। जिस कुर्सी पर आप बैठे हैं, वह ठहरी हुई चीज नहीं है; वह पूरे समय नदी के प्रवाह की तरह गत्यात्मक है। जो दीवार आपके चारो तरफ दिखाई पडती है, वह दीवार ठोस नही है। विज्ञान कहता है—अब ठोस जैसी कोई चीज जगत् मे नही है। वह जो दीवार चारो तरफ खडी है, वह भी तरल और निर्झर है, बहाव है। लेकिन बहाव इतना तेज है कि आपकी आखें उस बहाव के बीच के अन्तराल को, खाइयो को नही पकड पाती। जैसे बिजली के पखे को हम जोर से चला दें, इतने जोर से चला दे तो फिर आप उसकी पंखुडियो को नही गिन पाते। अगर बहुत गति से चलता हो तो लगेगा कि एक गोल वर्तुल ही घूम रहा है। बीच की पखुडियो की जो खाली जगह है वह दिखाई नही पडती।

वैज्ञानिक कहते हैं—बिजली के पखे को इतनी तेजी से चलाया जा सकता है कि आप अगर गोली मारें तो बीच के स्थान मे नही निकल सकेगी, खाली जगह से नही निकल सकेगी, पखुडी को छेदकर निकलेगी। और इतने जोर से भी चलाया जा सकता है कि आप अगर पखे के, चलते पखे के ऊपर बैठ जाएं तो आप बीच के स्थान मे गिरेंगे नही। क्योकि गिरने मे जितना समय लगता है उतनी देर में दूसरी पखुडी आपके नीचे आ जाएगी। तब ''तब पखा ठोस मालूम पडेगा, चलता हुआ मालूम नही पडेगा।

अगर गति अधिक हो जाए तो चीजें ठहरी हुई मालूम पडती हैं। अधिक गति के कारण, ठहराव नही। जिस कुर्सी पर आप बैठे है उसकी गति बहुत है। उसका एक-एक परमाणु उतनी ही गति से दौड रहा है अपने केन्द्र पर जितनी गति से सूर्य की किरण चलती है—एक सैकड मे एक लाख छियासी हजार मील। इतनी तीव्र गति से चलने की वजह से आप गिर नही जाते कुर्सी से, नही तो आप कभी भी गिर जाए। तीव्र गति आपको सभाले हुए है।

फिर यह गति भी-बहुत आयामी है, मल्टी-डायमैंशनल है। जिस कुर्सी पर आप बैठे है उसकी पहली गति तो यह है कि उसके परमाणु अपने भीतर घूम रहे हैं। हर परमाणु अपने न्यूक्लियस पर, अपने केन्द्र पर चक्कर काट रहा है। फिर कुर्सी जिस पृथ्वी पर रखी है, वह पृथ्वी अपनी कील पर घूम रही है। उसके घूमने की वजह से भी कुर्सी मे दूसरी गति है। एक गति कुर्सी की आन्तरिक है कि उसके परमाणु घूम रहे है, दूसरी गति—पृथ्वी अपनी कील पर घूम रही है इसलिए कुर्सी भी पूरे समय पृथ्वी के साथ घूम रही है। तीसरी गति—पृथ्वी अपनी कील पर घूम रही है और साथ ही पूरे सूर्य के चारो ओर परिभ्रमण कर रही है, घूमते हुए अपनी कील पर सूर्य का चक्कर लगा रही है। वह तीसरी गति है। कुर्सी मे वह गति भी काम कर रही है। चौथी गति—सूर्य अपनी कील पर घूम रहा है, और उसके साथ उसका पूरा सौर परिवार घूम रहा है। और पाचवी गति—

सूर्य, वैज्ञानिक कहते है कि महासूर्य का चक्कर लगा रहा है। बडा चक्कर है वह कोई बीस करोड वर्ष मे एक चक्कर पूरा हो पाता है। तो वह पाचवी गति कुर्सी भी कर रही है। और वैज्ञानिक कहते है कि छठवी गति का भी हमे आभास मिलता है कि वह जिस महासूर्य का, यह हमारा सूर्य परिभ्रमण कर रहा है, वह महासूर्य भी ठहरा हुआ नही है। वह अपनी कील पर घूम रहा है। और सातवी गति का भी वैज्ञानिक अनुमान करते है कि वह जिस और महासूर्य का, जो अपनी कील पर घूम रहा है, वह दूसरे सौर परिवारो से प्रतिक्षण दूर हट रहा है। कोई और महासूर्य या कोई महाशून्य सातवी गति का इशारा करता है। वैज्ञानिक कहते हैं—ये सात गतिया पदार्थ की है।

आदमी मे एक आठवी गति भी है, प्राण मे, जीवन मे एक आठवी गति भी है। कुर्सी चल नही सकती, जीवन चल सकता है। आठवी गति शुरू हो जाती है। एक नौवी गति, धर्म कहता है मनुष्य मे है और वह यह है कि आदमी चल भी सकता है और उसके भीतर जो ऊर्जा है वह नीचे की तरफ जा सकती है या ऊपर की तरफ जा सकती है। उस नौवी गति से ही तप का सम्बन्ध है। आठ गतियो तक विज्ञान काम कर लेता है, उस नौवी गति पर, दि नाइन्थ, वह जो परम गति है चेतना के ऊपर नीचे जाने की उस पर ही धर्म की सारी प्रक्रिया है।

मनुष्य के भीतर जो ऊर्जा है, वह नीचे या ऊपर जा सकती है। जब आप कामवासना से भरे होते हैं तो वह ऊर्जा नीचे जाती है, जब आप आत्मा की खोज से भरे होते हैं तो वह ऊर्जा ऊपर की तरफ जाती है। जब आप जीवन से भरे होते है तो वह ऊर्जा भीतर की तरफ जाती है। और भीतर और ऊपर धर्म की दृष्टि मे एक ही दिशा के नाम है। और जब आप मरण से भरते है, मृत्यु निकट आती है तो वह ऊर्जा बाहर जाती है। दस वर्षों पहले तक, केवल दस वर्षों पहले तक वैज्ञानिक इस बात के लिए राजी नही थे कि मृत्यु मे कोई ऊर्जा मनुष्य के बाहर जाती है, लेकिन रूस के डेविडोविच किरलियान की फोटोग्राफी ने पूरी धारणा को बदल दिया है।

किरलियान की बात मैंने आपसे पीछे की है। उस सम्बन्ध मे जो एक बात आज काम की है और आपसे कहनी है। किरलियान ने जीवित व्यक्तियो के चित्र लिए हैं, तो उन चित्रो मे शरीर के आसपास ऊर्जा का वर्तुल, इनर्जी फील्ड चित्रो मे आता है। हायर सेंसिटिविटी फोटोग्राफी मे, बहुत सवेदनशील फोटोग्राफी मे आपके आसपास ऊर्जा का एक वर्तुल आता है। लेकिन अगर मरे आदमी का अभी मर गए आदमी का चित्र लेते है तो वर्तुल नही आता। ऊर्जा के गुच्छे आदमी से दूर जाते हुए, ऊर्जा के गुच्छे आदमी से दूर हटते हुए, भागते हुए आते हैं। और तीन दिन तक मरे हुए आदमी के शरीर से ऊर्जा के गुच्छे बाहर निकलते रहते हैं। पहले दिन ज्यादा, दूसरे दिन और कम, तीसरे दिन और कम।

जब ऊर्जा के गुच्छों का बहिर्गमन पूरी तरह समाप्त हो जाता है, तब आदमी पूरी तरह मरा। वैज्ञानिक कहते हैं कि जब तक ऊर्जा निकल रही है तब तक उसको पुनरुज्जीवित करने की कोई विधि आज नहीं कल खोजी जा सकेगी।

मृत्यु मे ऊर्जा आपके बाहर जा रही है, लेकिन शरीर का वजन कम नहीं होता है। निश्चित ही कोई ऐसी ऊर्जा है जिस पर ग्रैविटेशन का कोई असर नही होता। क्योंकि वजन का एक ही अर्थ होता है कि जमीन मे जो गुरुत्वाकर्षण है उसका खिचाव। आपका जितना वजन है, आप भूलकर यह मत समझना कि वह आपका वजन है। वह जमीन के खिचाव का वजन है। जमीन जितनी ताकत से आपको खीच रही हो, उस ताकत का माप है। अगर आप चाद पर जाएगे तो आपका वजन चार गुना कम हो जाएगा। क्योंकि चाद चार गुना कम ग्रैविटेशन रखता है। अगर आप सौ पौंड आपका वजन है तो पच्चीस पौंड चाद पर रह जाएगा। इसे आप ऐसा भी समझ सकते है कि अगर आप जमीन पर छः फीट ऊचे कूद सकते है तो चाद पर आप जाकर चौबीस फीट ऊचे कूद सकेंगे। और जब अतरिक्ष मे यात्री होता है, अपने यान मे, कैप्सूल मे—तब उसका कोई वजन नही रहता, नो वेट। क्योंकि वहा कोई ग्रैविटेशन नही होता। इसलिए यात्री को पट्टो मे बाधकर उसकी कुर्सी पर रखना पडता है। अगर पट्टा जरा छूट जाए तो वह जैसे गैस भरा गुब्बारा जाकर ऊपर टकराने लगे, ऐसा आदमी टकराने लगेगा क्योंकि उसमे कोई वजन नही है जो उसे नीचे खीच सके। वजन जो है वह जमीन के गुरुत्वाकर्षण से है। लेकिन किरलियान के प्रयोगो ने सिद्ध किया है कि आदमी से ऊर्जा तो निकलती है लेकिन वजन कम नही होता। निश्चित ही उस ऊर्जा पर जमीन के गुरुत्वाकर्षण का कोई प्रभाव न पडता होगा। योग के लेविटेशन मे जमीन से शरीर को उठाने के प्रयोग मे उसी ऊर्जा का उपयोग है।

अभी एक बहुत अद्भुत नृत्यकार था पश्चिम मे—निजिन्स्की। उसका नृत्य असाधारण था, शायद पृथ्वी पर वैसा नृत्यकार इसके पहले नही था। असाधारणता यह थी कि वह अपने नाच मे जमीन से इतने ऊपर उठ जाता था जितना कि साधारणता उठना बहुत मुश्किल है। और इससे भी ज्यादा आश्चर्यजनक यह था कि वह ऊपर से जमीन की तरफ आता था तो इतने स्लोली, इतने धीमे आता था कि जो बहुत हैरानी की बात है। क्योंकि इतने धीमे नही आया जा सकता। जमीन का जो खिचाव है वह उतने धीमे आने की आज्ञा नही देता। यह उसका चमत्कार-पूर्ण हिस्सा था। उसने विवाह किया, उसकी पत्नी ने जब उसका नृत्य देखा तो वह आश्चर्यचकित हो गयी। वह खुद भी नर्तकी थी।

उसने एक दिन निजिन्स्की को कहा—उसकी पत्नी ने आत्मकथा मे लिखा है, मैंने एक दिन अपने पति को कहा—ह्वाट इज शेम, दैट यू कैन नाट सी युअरसेल्फ डासिंग (कैसा दुख कि तुम अपने को नाचते हुए नहीं देख सकते।) निजिन्स्की ने

कहा—'हू सैड, आई कैन नाट सी। आइ डू आलवेज सी। आई एम आलवेज आउट। आई मेक माइसेल्फ डान्स फ्राम दि आउटसाइड। निजिन्स्की ने कहा—मैं देखता हूं सदा, क्योकि मैं सदा बाहर होता हू और बाहर से ही अपने को नाच करवाता हू। और अगर मैं बाहर नही रहता हू तो मै इतने ऊपर नही जा पाता हू और अगर मैं बाहर नही रहता हू तो इतने धीमे जमीन पर वापस नही लौट पाता हू। जब मैं भीतर होकर नाचता हू तो मुझ मे वजन होता है, और जब मैं बाहर होकर नाचता हू तो उसमे वजन खो जाता है।'

योग कहता है—अनाहत चक्र जब भी किसी व्यक्ति का सक्रिय हो जाए, तो जमीन का गुरुत्वाकर्षण उस पर प्रभाव कम देता है और विशेष नृत्यो का प्रभाव अनाहत चक्र पर पडता है। अनायास ही मालूम होता है। निजिन्स्की ने नाचते-नाचते अनाहत चक्र को सक्रिय कर लिया। और अनाहत चक्र की दूसरी खूबी है कि जिस व्यक्ति का अनाहत चक्र सक्रिय हो जाए वह आउट आफ बाडी ऐक्स-पीरिएंस, शरीर के बाहर के अनुभवो मे उतर जाता है। वह अपने शरीर के बाहर खडे होकर पाता है। लेकिन जब आप शरीर के बाहर होते है, तब जो शरीर के बाहर होता है, वही आपकी प्राण ऊर्जा है। वही वस्तुत. आप है। जो ऊर्जा है उसे ही महावीर ने जीवन-अग्नि कहा है। और उस ऊर्जा को जगाने को ही वैदिक सस्कृति ने यज्ञ कहा है।

उस ऊर्जा के जग जाने पर जीवन मे एक नयी ऊष्मा भर जाती है। एक नया उत्ताप, जो बहुत शीतल है। यह कठिनाई है समझने की, एक नया उत्ताप जो बहुत शीतल है। तो तपस्वी जितना शीतल होता है उतना कोई भी नही होता। यद्यपि हम उसे कहते है तपस्वी। तपस्वी का अर्थ हुआ कि वह ताप से भरा हुआ है। लेकिन तप जितनी जग जाती है यह अग्नि उतना केन्द्र शीतल हो जाती है। चारो ओर शक्ति जग जाती है, भीतर केन्द्र पर शीतलता आ जाती है।

वैज्ञानिक पहले सोचते थे कि यह जो सूर्य है हमारा, यह जलती हुई अग्नि है, है उबलती हुई अग्नि। लेकिन अब वैज्ञानिक कहते है कि सूर्य अपने केन्द्र पर बिल्कुल शीतल है, दि काल्डेस्ट स्पाट इन दि युनिवर्स यह बहुत हैरानी की बात है। चारो ओर अग्नि का इतना वर्तुल है, सूर्य अपने केन्द्र पर सर्वाधिक शीतल बिन्दु है। और उसका कारण अब ख्याल मे आना शुरू हुआ है। क्योकि जहा इतनी अग्नि हो, उसको सतुलित करने के लिए इतनी ही गहन शीतलता केन्द्र पर होनी चाहिए, नही तो सतुलन टूट जाएगा।

ठीक ऐसी ही घटना तपस्वी के जीवन मे घटती है। चारो ओर ऊर्जा उत्तप्त हो जाती है, लेकिन उस उत्तप्त ऊर्जा को सतुलित करने के लिए केन्द्र बिल्कुल शीतल हो जाता है। इसलिए तप से भरे व्यक्ति से ज्यादा शीतलता का बिन्दु इस जगत् मे दूसरा नही है, सूर्य भी नही। इस जगत् मे सतुलन अनिवार्य है।

असतुलन, चीजें बिगड़ जाती है ।

आपने कभी गर्मी के दिनो मे उठ गया बवडर देखा होगा, धूल का। जब बवडर चला जाए तब आप धूल के ऊपर जाना या रेत के पास जाना। तो आप एक बात देखेंगे कि बवडर चारो तरफ था, बवडर के निशान चारो तरफ बने है, लेकिन बीच मे एक बिन्दु है जहा कोई निशान नही है। वहा शून्य था। वह बवडर शून्य की धुरी पर ही घूम रहा था। बैलगाडी चलती है, उसका चाक चलता है, लेकिन उसकी कील खडी रहती है। अब यह बहुत मजे की बात है कि खडी हुई कील पर चलते हुए चाक को सहारा है। खडी हुई कील पर, ठहरी हुई कील पर, चलते हुए चाक को चलना पडता है। अगर कील भी चल जाए तो गाडी गिर जाए। विपरीत से सतुलन है। जीवन का सूत्र है—विपरीत से सतुलन ।

तो तपस्वी की चेष्टा यह है कि वह इतनी अग्नि पैदा कर ले अपने चारो ओर, ताकि उस अग्नि के अनुपात मे भीतर शीतलता का बिन्दु पैदा हो। वह अपने ओर इतनी डाइनैमिक फोर्सेज इतनी गत्यात्मक शक्ति को जन्मा ले कि भीतर शून्य का बिन्दु उपलब्ध हो जाए। वह अपने चारो ओर इतने तीव्र परिभ्रमण से भर जाए ऊर्जा से कि उसकी कील ठहर जाए, खडी हो जाए।

उल्टा दिखाई पडने वाला यह क्रम है, इससे बडी भूल हो जाती है। इससे लगता है कि तपस्वी शायद ताप मे उत्सुक है। तपस्वी शीतलता मे उत्सुक है। लेकिन शीतलता को पैदा करने की विधि अपने चारो ओर ताप को पैदा कर लेगी। और यह ताप बाह्य नही है। यह अपने शरीर के आसपास आग की अगीठी जला लेने से नही पैदा हो जाएगा। यह ताप आन्तरिक है। इसलिए महावीर ने, तपस्वी अपने चारो तरफ आग जलाए, इसका निषेध किया है। क्योकि वह ताप बाह्य है। उससे आतरिक शीतलता पैदा नही होगी, ध्यान रहे, आन्तरिक ताप होगा तो ही आतरिक शीतलता पैदा होगी बाह्य ताप होगा तो बाह्य शीतलता पैदा होगी। यात्रा करनी है अन्तर की तो बाहर के सब्स्टीटयूट्स नही खोजने चाहिए वे धोखे के है, खतरनाक है।

अन्तर मे क्या ताप पैदा हो सकता है? किरलियान ने ऐसे लोगो का अध्ययन किया है, फोटोग्राफी मे जो सिर्फ अपने ध्यान से हाथ से लपटें निकाल सकते है। एक व्यक्ति है स्विस, जो अपने हाथ मे पाच कैंडल का बल्ब रखकर जला सकता है, सिर्फ ध्यान से। सिर्फ वह ध्यान करता है भीतर कि उसकी जीवन अग्नि बहनी शुरू हो गयी हाथ से और थोडी ही देर मे बल्ब जल जाता है।

पिछले कोई पन्द्रह वर्ष हालैंड की एक अदालत ने एक तलाक स्वीकार किया। और वह तलाक इस बात से स्वीकार किया कि वह जो स्त्री थी, उसके भीतर कुछ दुर्घटना घट गयी थी। वह एक कार के एक्सीडेंट मे गिर गयी, पत्नी। और उसके बाद जो भी उसको छुए उसे बिजली के शाक लगने शुरू हो जाते। उसके पति

ने कहा—मैं मर जाऊंगा। इसे छूना ही असम्भव है।

यह पहला तलाक है क्योंकि इस कारण से पहले कभी कोई तलाक नही हुआ था। कानून मे कोई जगह न थी, क्योंकि कानून ने कभी सोचा न था। लेकिन यह तलाक स्वीकार करना पडा। उम स्त्री की अन्तर-ऊर्जा मे कही लीकेज पैदा हो गया।

आपके शरीर मे भी कण और धन विद्युत ऊर्जा का वर्तुल है। उसमे कही से भी टूट पैदा हो जाए तो आपके शरीर से भी दूसरे को शाक लगना शुरू हो जाएगा। और कभी आपको किसी अंग मे अचानक झटका लगता है, वह इसी आकस्मिक लीकेज का कारण है। आप आकस्मिक.. कभी आप रात लेटे है और एकदम झटका खा जाते हैं। उसका और कोई कारण नही है। सोते वक्त आपकी ऊर्जा को शात होना चाहिए आपकी निद्रा के साथ, वह नही हो पाती। व्यवधान पैदा हो जाता है। शाक खा सकते है आप।

यह जो अन्तर-ऊर्जा है हिप्नोसिस के प्रयोगो ने इम पर बहुत बडा काम किया है। सम्मोहन के द्वारा आपकी अन्तर-ऊर्जा को कितना ही घटाया और बढाया जा सकता है। जो लोग आग के अगारो पर चलते रहे हैं, मुसलमान फकीर, सूफी फकीर या और योगी—उनके चलने का कुल कारण, कुल रहस्य इतना है कि वह अपनी अन्तर-ऊर्जा को इतना जगा लेते है कि आग के अगारे की गर्मी उससे कम पडती है। और कोई कारण नही है। रिलेटिवली, सापेक्ष रूप से आपकी गर्मी कम हो जाती है इसलिए अगारे ठण्डे मालूम पडते है। उनके शरीर की गर्मी, अन्तर-ऊर्जा का प्रवाह इतना तीव्र होता है कि उस प्रवाह के कारण बाहर की गर्मी कम मालूम होती है।

गर्मी का अनुभव सापेक्ष है। अगर आप अपने दोनो हाथ एक हाथ को बर्फ पर रखकर ठण्डा कर लें और अपने एक हाथ को आग की सिगडी पर रख कर गर्म कर लें। फिर दोनो हाथ को एक बाल्टी मे डाल दें, पानी से भरी हुई, तो आपके दोनो हाथ अलग-अलग खबर देंगे। एक हाथ कहेगा—पानी बहुत ठण्डा है; एक हाथ कहेगा—पानी बहुत गर्म है। जो हाथ ठण्डा है वह कहेगा पानी गर्म है, जो हाथ गर्म है वह कहेगा पानी ठण्डा है। आप बडी मुश्किल मे पडेंगे कि वक्तव्य क्या दें। अगर अदालत मे गवाही देनी हो कि पानी ठण्डा है या गर्म ? क्योकि आप.. साधारणत हमारे शरीर का ताप एक होता है, इसलिए हम कह सकते है पानी ठण्डा है या गर्म। एक हाथ को गर्म कर लें, एक को ठण्डा, फिर एक ही बाल्टी मे डाल दे। आप मुश्किल मे पड जाएगे। और आपको महावीर का वक्तव्य देना पडेगा—शायद पानी गर्म है, शायद पानी ठण्डा है। परहेप्स। बायां हाथ कहता है, ठण्डा है दायां हाथ कहता है गर्म है। पानी क्या है फिर ? आपका वक्तव्य सापेक्ष है। आप जो कह रहे है, वह वक्तव्य पानी के सम्बन्ध मे नही, आपके हाथ के सम्बन्ध मे है।

अगर आपकी अन्तर-ऊर्जा इतनी जग गयी, तो आप अगारे पर चल सकते हैं। और अगारे ठण्डे मालूम पड़ेंगे। पैर पर फफोले नही आएगें। इसमें उल्टी घटना हिप्नोसिस मे घट जाती है। अगर मैं आपको हिप्नोटाइज करके बेहोश कर दू, जो कि बड़ी सरल-सी बात है, और आपके हाथ पर एक साधारण-सा ककड रख दूं और कहू कि अगारा रखा है, आपका हाथ फौरन जल जाएगा। आप ककड को फेंककर चीख मार देंगे। यहा तक ठीक है, आपके हाथ पर फफोला आ जाए। क्या, हुआ क्या? जैसे ही मैंने कहा कि अगारा रखा है, आपके हाथ की ऊर्जा घबराहट मे पीछे हट गयी। रिलेटिव गैप, जगह हो गयी। खाली जगह हो गयी, हाथ जल गया। अगारा नहीं जलाता, आपकी ऊर्जा हट जाती है, इसलिए आप जलते है। अगर अगारा भी रख जाए हिप्नोटाइज्ड आदमी के हाथ मे, और कहा जाए, ठण्डा ककड है—नही जलाता है। क्योंकि हाथ की ऊर्जा अपनी जगह खडी रहती है।

इसका अर्थ यह भी हुआ कि ऊर्जा आपके सकल्प से हटती या घटती या आगे या पीछे होती है। कभी ऐसे छोटे-मोटे प्रयोग करके देखें, तो आपके ख्याल मे आसान हो जाएगा। थर्मामीटर से अपना ताप नाप ले। फिर थर्मामीटर को नीचे रख लें। दस मिनट आख बन्द करके बैठ जाए और एक ही भाव करें कि तीव्र रूप गर्मी आपके शरीर मे पैदा हो रही है—सिर्फ भाव करें। और दस मिनट बाद आप फिर थर्मामीटर से नापे। आप चकित हो जाएगे कि आपने थर्मामीटर के पारे को ऊपर चढने के लिए बाध्य कर दिया—सिर्फ भाव मे। और अगर एक डिग्री चढ सकता है थर्मामीटर तो दस डिग्री क्यो नही चढ सकता है। फिर कोई कारण नही है, फिर आपके प्रयास की बात है, फिर आपके श्रम की बात है। और अगर दस डिग्री चढ सकता है तो दस डिग्री उतर क्यो नही सकता है।

तिब्बत मे हजारो वर्षों से साधक नग्न बर्फ की शिलाओ पर बैठा रहता है, ध्यान करने के लिए, घण्टो। कुल कारण है कि वह अपने आसपास, अपनी जीवन ऊर्जा के वर्तुल को सजग कर देता है भाव से। तिब्बत यूनिवर्सिटी, ल्हासा विश्व-विद्यालय अपने चिकित्सको को, तिब्बतन मैडिसिन मे जो लोग शिक्षा पाते थे, उनको तब तक डिग्री नही देता था—यह चीन के आक्रमण के पहले की बात है—तब तक डिग्री नही देता था, जब तक कि चिकित्सक बर्फ गिरती रात मे खडा होकर अपने शरीर से पसीना न निकाल पाए। तब तक डिग्री नही देता था। क्योंकि जिस चिकित्सक का अपनी जीवन-ऊर्जा पर इतना प्रभाव नही है वह दूसरे की जीवन-ऊर्जा को क्या प्रभावित करेगा। शिक्षा पूरी हो जाती थी, लेकिन डिग्री तो तभी मिलती थी। और आप चकित होगे कि करीब-करीब जो लोग भी चिकि-त्सक होते थे, वे सभी इसे करने मे समर्थ होते थे। कोई इस वर्ष, कोई अगले वर्ष किसी को छः महीने लगता, किसी को साल भर। और जो बहुत ही अग्रणी हो

जाते थे, जिन्हे पुरस्कार मिलते थे, गोल्ड मैडल मिलते थे—वे वे लोग होते थे जो कि रात मे, वर्फ गिरती रात मे एक वार नही, बीस-बीस वार शरीर से पसीना निकाल देते थे। और हर वार जब पसीना निकलता तो ठण्डे पानी से उनको नहला दिया जाता। वे फिर दोबारा पसीना निकाल देते, फिर तीसरी बार पसीना निकाल देते। सिर्फ ख्याल से, सिर्फ विचार से, सिर्फ सकल्प से।

किरलियान फोटोग्राफी मे जब कोई व्यक्ति सकल्प करता है ऊर्जा का तो वर्तुल बडा हो जाता है। फोटोग्राफी मे वर्तुल बडा आ जाता हे। जब आप घृणा से भरे होते है, जब आप क्रोध से भरे होते है तब आपके शरीर से उसी तरह की ऊर्जा के गुच्छे निकलते है, जैसे मृत्यु मे निकलते है। जब आप प्रेम से भरे होते हैं तव उल्टी घटना घटती है। जब आप करुणा से भरे होते है तव उल्टी घटना घटती है। इस विराट ब्रह्म से आपकी तरफ ऊर्जा के गुच्छे प्रवेश करने लगते है। अव आप हैरान होगे यह वात जानकर कि प्रेम मे आप कुछ पाते है, क्रोध मे कुछ देते है आमतौर से प्रेम मे हमे लगता है कि हम कुछ देते हैं और क्रोध मे लगता है हम कुछ छीनते हैं। प्रेम मे हमे लगता है कुछ हम देते है। लेकिन ध्यान रहे प्रेम मे आप पाते है, करुणा मे आप पाते है, दया मे आप पाते है। जीवन-ऊर्जा आपकी वढ जाती है। इसलिए क्रोध के वाद आप थक जाते है और करुणा के बाद आप और भी सशक्त, स्वच्छ, ताजे हो जाते है। इसलिए करुणावान कभी भी थकता नही। क्रोधी थका ही जीता है।

किरलियान फ़ोटोग्राफी के हिसाब से मृत्यु मे जो घटना घटती है, वही छोटे अंश मे क्रोध मे घटती है। वडे अश मे, मृत्यु मे घटती है, वहुत ऊर्जा वाहर निकलने लगती है। किरलियान ने एक फूल का चित्र लिया है जो अभी डाली से लगा है। उसके चारो तरफ ऊर्जा का जीवत वर्तुल है और विराट से, चारो ओर से ऊर्जा की किरणें फूल मे प्रवेश कर रही है। ये फोटोग्राफ अब उपलब्ध है, देखे जा सकते है। और अब तो किरलियान का कैमरा भी तैयार हो गया है, वह भी जल्दी उपलब्ध हो जाएगा। उसने फूल को डाली से तोड लिया फिर फोटो लिया। तव स्थिति बदल गई। वे जो किरणे प्रवेश कर रही थी वे वापस लौट रही हैं। एक सैकेंड का फासला, डाली से टूटा फूल। घटे भर मे ऊर्जा विखरती चली जाती है। जब आपकी पखुडिया सुस्त होकर ढल जाती है; वह वही क्षण है जब ऊर्जा निकलने के करीब पहुचकर पूरी शून्य होने लगती है।

इस फूल के साथ किरलियान ने और भी अनूठे प्रयोग किए जिससे वहुत कुछ दृष्टि मिलती है—तप के लिए। किरलियान ने आधे फूल को काट कर अलग कर दिया। छ पखुड़िया है तीन तोडकर फेंक दी। चित्र लिया है तीन पखुडियो का, लेकिन चकित हुआ—पंखुडिया तो तीन रही, लेकिन फूल के आसपास जो वर्तुल था वह अब भी पूरा रहा, जैसा कि छ पखुडियो के आसपास था। छ पखुडियो

के आसपास जो वर्तुल, आभामडल था, औरा था, तीन पखुडिया तोड दीं, वह आभामडल अब भी पूरा रहा। दो पखुडिया उसने और तोड दी, एक ही पखुडी रह गई। लेकिन आभामडल पूरा रहा। यद्यपि तीव्रता से विसर्जित होने लगा, लेकिन पूरा रहा।

इसीलिए, आप जब बेहोश कर दिए जाते है अनस्थीसिया से या हिप्नोसिस से—आपका हाथ काट डाला जाए, आपको पता नही चलता। उसका कुल कारण इतना है कि आपका वास्तविक अनुभव अपने शरीर का, ऊर्जा-शरीर से है। वह हाथ कट जाने पर भी पूरा ही रहता है। वह तो जब आप जगेंगे और हाथ कटा हुआ देखेंगे तब तकलीफ शुरू होगी। अगर आपको गहरी निद्रा मे मार भी डाला जाए तो भी आपको तकलीफ नही होगी। क्योकि गहरी निद्रा मे सम्मोहन मे या अनस्थीसिया मे आपका तादात्म्य इस शरीर से छूट जाता है और आपके ऊर्जा-शरीर से ही रह जाता है। आपका अनुभव पूरा ही बना रहता है। और इसीलिए अगर आप लगडे भी हो गए है पैर से, तब भी आपको ऐसा नही लगता कि आपके भीतर वस्तुत कोई चीज कम हो गयी है। बाहर तो तकलीफ हो जाती है। अडचन हो जाती है लेकिन भीतर नही लगता है कि कोई चीज कम हो गयी है। आप बूढे भी हो जाते है तो भी भीतर नही लगता कि आपके भीतर कोई चीज बढी हो गई है। क्योकि वह तो ऊर्जा-शरीर है, वह वैसा का वैसा ही काम करता रहता है।

अमरीकन मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक डा० ग्रीन ने आदमी के मस्तिष्क के बहुत से हिस्से काट कर देखे और वह चकित हुआ। मस्तिष्क के हिस्से कट जाने पर भी मन के काम मे कोई बाधा नही पडती। मन अपना काम वैसा ही जारी रखता है। इससे ग्रीन ने कहा कि यह परिपूर्ण रूप से सिद्ध हो जाता है कि मस्तिष्क केवल उपकरण है, वास्तविक मालिक कही कोई पीछे है। वह पूरा का पूरा ही काम करता रहता है। आपके शरीर के आसपास जो आभामडल निर्मित होता है, वह इस शरीर का रेडिएशन नही है, इस शरीर से विकीर्णन नही है, वरन्, किरलियान ने वक्तव्य दिया है कि आन दि कान्ट्रेरी दिस बाडी ओनली मिरर्स दि इनर बाडी वह जो भीतर का शरीर है, उसके लिए यह सिर्फ दर्पण की तरह बाहर प्रगट कर देती है। इस शरीर के द्वारा वे किरणें नही निकल रही है, वे किरण किसी और शरीर के द्वारा निकल रही हैं। इस शरीर से केवल प्रगट होती है।

जैसे हमने एक दीया जलाया हो, चारो तरफ एक ट्रासपैरेंट काच का घेरा लगा दिया हो। उस काच के घेरे के बाहर हमे किरणो का वर्तुल दिखाई पडेगा। हम शायद सोचें कि वह काच से निकल रहा है तो गलती है। वह काच से निकल रहा है, लेकिन काच से आ नही रहा है। वह आ रहा है भीतर के दीये से। हमारे शरीर से जो ऊर्जा निकलती है वह इस भौतिक शरीर की ऊर्जा नही है,

क्योंकि मरे हुए आदमी के शरीर मे समस्त भौतिक तत्व यही का यही होता है, लेकिन ऊर्जा का वर्तुल खो जाता हैं। उस ऊर्जा के वर्तुल को योग सूक्ष्म ,शरीर कहता रहा है। और तप के लिए उस सूक्ष्म शरीर पर ही काम करने पडते है। सारा काम उस सूक्ष्म शरीर पर है।

लेकिन आमतौर से जिन्हे हम तपस्वी समझते है, वे वे लोग हैं जो इस भौतिक शरीर को ही सताने मे लगे रहते है। इमसे कुछ लेना-देना नही है। असली काम इस शरीर के भीतर जो दूसरा छिया हुआ शरीर है—ऊर्जा-शरीर, इनर्जी-बाडी—उस पर काम का है। और योग ने जिन चक्रो की बात की है, वे इस शरीर मे कही भी नही है, वे उस ऊर्जा शरीर मे है। इसलिए वैज्ञानिक जब इस शरीर को काटते है, फिजियोलाजिस्ट, तो वे कहते है—तुम्हारे चक्र कही मिलते नही। कहा है अनाहत, कहा है स्वाधिष्ठान, कहा है मणिपुर—कही कुछ नही मिलता। पूरे शरीर को काट कर देख डालते है, वह चक्र कही मिलते नही। वे मिलेगे भी नही। वे उस ऊर्जा-शरीर के बिदु है। यद्यपि उन ऊर्जा-शरीर के बिन्दुओ को करस्पाड करने वाले, उनके ठीक समतुल इस शरीर मे स्थान है—लेकिन वे चक्र नही है।

जैसे, जब आप प्रेम से भरते हैं तो हृदय पर हाथ रख लेते है। जहा आप हाथ रखे हुए है, अगर वैज्ञानिक जाच-पडताल काट-पीट करेगा तो सिवाय फेफडे के कुछ नही है। हवा को पप करने का इन्तजाम भर है वहा, और कुछ भी नही है। उसी से धडकन चल रही है। पम्पिग सिस्टम है। इसको बदला जा सकता है। अब तो बदला जा सकता है ओर इसकी जगह पूरा प्लास्टिक फेंफडा रखा जा सकता है। वह भी इतना ही काम करता है, बल्कि वैज्ञानिक कहते है जल्दी ही इससे बेहतर काम करेगा। क्योकि न वह सड सकेगा, न गल सकेगा, कुछ भी नही। लेकिन एक मजे की बात है कि प्लास्टिक के फेंफडे मे भी हार्ट अटेक होगे, यह बहुत मजे की बात है। प्लास्टिक के फेफडे मे हार्ट अटैक नही होने चाहिए, क्योकि प्लास्टिक और हार्ट अटैक का क्या सम्बन्ध है! निश्चित ही हार्ट अटैक कही और गहरे से आता होगा, नही तो प्लास्टिक के फेंफडे मे हार्ट अटैक नही हो सकता। प्लास्टिक का फेफडा टूट जाए, फूट जाए, लेकिन···चोट खा जाए, यह सब हो सकता है—लेकिन एक प्रेमी मर जाए और हार्ट अटैक हो जाए, यह नहीं हो सकता क्योकि प्लास्टिक के फेंफडे को क्या पता चलेगा कि प्रेमी मर गया है। या मर भी जाए तो प्लास्टिक पर उसका क्या परिणाम हो सकता है? कोई भी परिणाम नही हो सकता है। अभी भी जो फेंफडा आपका धडक रहा है उस पर कोई परिणाम नही होता। उसके पीछे एक दूसरे शरीर मे जो हृदय का चक्र है, उस पर परिणाम होता है। लेकिन उसका परिणाम तत्काल इस शरीर पर मिरर होता है, दर्पण की तरह दिखाई पडता है।

योगी बहुत दिनों से हृदय की धड़कन को बन्द करने में समर्थ रहे हैं, फिर भी मर नहीं जाते। क्योंकि जीवन का स्रोत कहीं गहरे में है। इसलिए हृदय की धड़कन भी बन्द हो जाती है, तो भी जीवन धड़कता रहता है। हालांकि पकड़ा नही जा सकता। फिर कोई यंत्र नही पकड़ पाते कि जीवन कहां धड़क रहा है। यह शरीर जो हमारा है, सिर्फ उपकरण है। इस शरीर के भीतर छिपा हुआ और इस शरीर के बाहर भी चारो तरफ इसे घेरे हुए जो आभामंडल है, वह हमारा वास्तविक शरीर है। वही हमारा तप-शरीर है। उस पर जो केन्द्र हैं उन पर ही काम तप का, सारी की सारी पद्धति, टेक्नोलाजी, तकनीक उस शरीर के बिंदुओं पर काम करने की है।

मैंने आपसे पीछे कहा कि चाइनीज आक्युपंक्चर की विधि मानती है कि शरीर में कोई सात सौ बिन्दु हैं, जहां वह ऊर्जा-शरीर इस शरीर को स्पर्श कर रहा है—सात सौ बिन्दु। आपने कभी खयाल न किया होगा, लेकिन ख्याल करना मजेदार होगा। कभी बैठ जाएं उघाड़े होकर और किसी को कहें कि आपकी पीठ में पीछे कई जगह सुई चुभाए। आप बहुत चकित होंगे कुछ जगह वह सुई चुभायी जाएगी, आपको पता नही चलेगा। आपकी पीठ पर ब्लाइंड स्पाट्स हैं जहां सुई चुभाई जाएगी आपको पता नही चलेगा। और आपकी पीठ पर सेंसिटिव स्पाट हैं जहा सुई जरा-सी चुभायी जाएगी और आपको पता चलेगा। एक्युपक्चर पांच हजार साल पुरानी चिकित्सा विधि है। वह कहती है—जिन बिन्दुओं पर सुई चुभाने से पता नही चलता, वहा आपका ऊर्जा-शरीर स्पर्श नही कर रहा है। वह डैड स्पाट है। वहा से आपका जो भीतर का तपस्-शरीर है वह स्पर्श नही कर रहा है, इसलिए वहा पता कैसे चलेगा! पता तो उसका चलता है जो भीतर है। संवेदनशील जगह पर छुआ जाता है, उसका मतलब यह है कि वहा से ऊर्जा शरीर कांटेक्ट मे है। वहा से वहा तक चोट पहुच जाती है। जब आपको अनस्थीसिया दे दिया जाता है आपरेशन की टेबल पर तो आपके ऊर्जा शरीर का और इस शरीर का सम्बन्ध तोड दिया जाता है। जब लोकल अनस्थीसिया दिया जाता है कि मेरे हाथ को भर अनस्थीसिया दे दिया गया है कि मेरा हाथ सो जाए, तो सिर्फ मेरे हाथ के जो बिन्दु हैं, जिनसे मेरा तपस्-शरीर जुडा हुआ है, उनका सम्बन्ध टूट जाता है। फिर इस हाथ को काटो-पीटो मुझे पता नहीं चलता। क्योकि मुझे तभी पता चल सकता है जब मेरे ऊर्जा-शरीर से सम्बन्ध कुछ हो अन्यथा मुझे पता नही चलता।

इसलिए बहुत हैरानी की घटना घटती है, और आप भूल ऐसी न करना। कभी-कभी कुछ लोग सोते हुए मर जाते है। आप कभी भी सोते हुए मत मरना। सोते मे जब कोई मर जाता है तो उसको कई दिन लग जाते है यह अनुभव करने मे कि मैं मर गया। क्योकि गहरी नीद मे ऊर्जा-शरीर और इस शरीर के सम्बन्ध

शिथिल हो जाते है । अगर कोई गहरी नींद मे एकदम से मर जाता है तो उसकी समझ मे नही आता कि मै मर गया । क्योकि समझ मे तो तभी आ सकता है; जब इस शरीर से सम्बन्ध टूटते हुए अनुभव मे आए । वह अनुभव मे नही आते तो उसमे पता नही चलता ।

यह जो सारी दुनिया मे हम शरीर को गडाते है या जलाते है या कुछ करते है तत्काल, उसका कुल कारण इतना है, ताकि वह जो ऊर्जा-शरीर है उसे यह अनुभव मे आ जाए कि वह मर गया । इस जगत से उसका सम्बन्ध इस शरीर के साथ इसको नष्ट करता हुआ वह देख ले कि वह शरीर नष्ट हो गया है, जिसको मैं समझता था कि यह मेरा है । यह शरीर को जलाने के लिए मरघट और कब्रिस्तान और गडाने के लिए सारा इन्तजाम है, यह सिर्फ सफाई का इतजाम नही है कि एक आदमी मर गया—तो उसको समाप्त करना ही पडेगा, नही तो सडेगा, गलेगा । इसके गहरे मे जो चिन्ता है वह उस आदमी की चेतना को अनुभव कराने की है कि यह शरीर तेरा नही है, तेरा नही था । तू अब तक इसको अपना समझता रहा है । अब हम इसे जलाए देते हैं, ताकि पक्का तुझे भरोसा हो जाए ।

अगर हम शरीर को सुरक्षित रख सकें, तो उस चेतना को हो सकता है, ख्याल ही न आए कि वह मर गई है । वह इस शरीर के आसपास भटकती रह सकती है । उसके नए जन्म मे बाधा पड जाएगी, कठिनाई हो जाएगी । और अगर उसे भटकाना ही हो इस शरीर के आसपास, तो ईजिप्त मे जो ममीज बनाई गई हैं, वे इसीलिए बनायी गयी थी । शरीर को इस तरह से ट्रीट किया जाता था, इस तरह के रासायनिक द्रव्यो से निकाला जाता था कि वह सडे न—इस आशा मे किसी दिन पुनुरुज्जीवन, उस सम्राट् को फिर से जीवन मिल सकेगा । तो सात, साढे सात हजार वर्ष पुराने शरीर भी सुरक्षित पिरामिडो के नीचे पडे है । उस सम्राट् को जिसके शरीर को इस तरह रखा जाता था, उसकी पत्नियो को, चाहे वे जीवित क्यो न हो, उनको भी उसके साथ दफना दिया जाता था । एक दो नही, कभी-कभी सौ-सौ पत्निया भी होती थी । उस सम्राट् के सारे, जिन-जिन चीजो से उसे प्रेम था, वे सब उसकी ममी के आसपास रख दिए जाते थे, ताकि जब उसका पुनरुज्जीवन हो तो वह तत्काल पुराने माहौल को पाए । उसकी पत्नियो, उसके कपडे, उसकी गद्दिया, उसके प्याले, उसकी थालिया, वह सब वहा हो—ताकि तत्काल रीहैबिलिटेड, वह पुनर्स्थापित हो जाए अपने नए जीवन मे । इस आशा मे ममीज खडी की गयी थी । और इसमे कुछ आश्चर्य न होगा कि जिनकी ममीज रखी है, उनका पुनर्जन्म होना बहुत कठिन हो गया है । या न हो पाया हो । उनकी अनेक की आत्माए अपने पिरामिडो के आसपास अब भी भटकती हो ।

हिन्दुओ ने इस भूमि पर प्राण-ऊर्जा के सम्बन्ध मे सर्वाधिक गहरे अनुभव

कि आख पर कुछ स्पाट होगे विकृत, उनकी वजह से वह आकृतिया बाहर दिखाई पडती है । लेकिन विलहेम रैक की खोजो ने यह सिद्ध किया है कि वे आकृतिया प्राण-ऊर्जा की है । उन आकृतियो को अगर कोई पीना सीख जाए, तो वह महा-प्राणवान हो जाएगा । और वे आकृतिया हमसे ही निकल कर हमारे चारो तरफ फैल जाती हैं । उसको उसने आर्गानि इनर्जी कहा है, जीवन ऊर्जा कहा है ।

प्राण-योग, या प्राणायाम वस्तुतः मात्र वायु को भीतर ले जाने और बाहर ले जाने पर निर्भर नही है । गहरे मे जो कि साधारणत ख्याल मे नही आता कि एक आदमी प्राणायाम सीख रहा है तो वह सोचता है बस ब्रीदिंग की एक्सरसाइज है, वह सिर्फ वायु का कोई अभ्यास कर रहा है । लेकिन जो जानते है, और जानने वाले निश्चित ही बहुत कम हैं, वे जानते है कि असली सवाल वायु को बाहर और भीतर ले जाने का नही है । असली सवाल वायु के मार्ग से वह जो आर्गानि इनर्जी के गुच्छे चारो तरफ जीवन मे फैले हुए हैं, उनको भीतर ले जाने का है । अगर वे भीतर जाते है तो ही प्राण-योग है, अन्यथा वायु-योग है, प्राण-योग नही है । प्राणायाम नही है, अगर वे गुच्छे भीतर नही जाते । वे गुच्छे भीतर जाते हैं तो ही प्राण-योग है । उन गुच्छो से आयी हुई शक्ति का उपयोग तप मे किया जाता है । खुद ही शक्ति का, चारो तरफ जीवन की शक्ति का, पौधो की शक्ति का, पदार्थों की शक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

एक अनूठी बात आपको कहू । चकित होगे आप जानकर कि काफ्का, किरलियान, विलहेम रैक और अनेक वैज्ञानिको का अनुभव है कि सोना एक मात्र धातु है जो सर्वाधित रूप से प्राण ऊर्जा को अपनी तरफ आर्कपित करती है । और यही सोने का मूल्य है, अन्यथा कोई मूल्य नही है । इसलिए पुराने दिनो मे, कोई दस हजार साल पुराने रेकार्ड उपलब्ध है, जिनमे सम्राटो ने प्रजा को सोना पहनने की मनाही कर रखी थी । कोई आदमी दूसरा सोना नही पहन सकता था, सिर्फ सम्राट् पहन सकता था । उसका राज था कि वह सोना पहनकर, दूसरे लोगो को सोना पहनना रोक कर ज्यादा जी सकता था । लोगो की प्राण ऊर्जा को अनजाने अपनी तरफ आर्कषित कर रहा था । जब आप सोने को देखकर आर्कषित होते हैं, तो सोते को देखकर आर्कपित नही होते, आपकी प्राण ऊर्जा सोने की तरफ बहनी शुरू हो जाती है, इसलिए आर्कषित होते हैं । इसलिए सम्राटो ने सोने का बडा उपयोग किया और आम आदमी को सोना पहनने की मनाही कर दी गयी थी कि कोई आम आदमी सोना नही पहन सकेगा ।

सोना सर्वाधिक खीचता है प्राण ऊर्जा को । यही उसके मूल्य का राज है अन्यथा' 'अन्यथा कोई राज नही है । इस पर खोज चलती है सम्भावना है कि बहुत शीघ्र, जो प्रसेस स्टोन से, जो कीमती पत्थर है, उनके भीतर भी कुछ राज छिपे मिलेंगे । जो बता सकेंगे कि वे या तो प्राण ऊर्जा को खीचते है, या अपनी प्राण

पीपल का वृक्ष बोधि वृक्ष बन गया, उसके नीचे लोगो को बुद्धत्व मिला। उसका कारण है कि वह सर्वाधिक शक्ति दे पाता है। वह अपने चारो ओर से शक्ति आप पर जुटा देता है। लेकिन साधारण आदमी उतनी शक्ति नही झेल पाएगा। सिर्फ पीपल अकेला वृक्ष है सारी पृथ्वी की वनस्पतियो मे जो रात मे भी और दिन मे भी पूरे समय शक्ति दे रहा है। इसलिए उसको देवता कहा जाने लगा। उसका और कोई कारण नही है। सिर्फ देवता ही हो सकता है जो ले न और देता ही चला जाए। लेता नही, लेता ही नही, देता ही चला जाता है।

यह जो आपके भीतर प्राण-ऊर्जा है •इस प्राण-ऊर्जा को•••यही आप है। तो तप का पहला सूत्र आपसे कहता हू—इस शरीर से अपना तादात्म्य छोडें। यह मानना छोडे कि मैं यह शरीर हू जो दिखाई पडता है, जो छुआ जाता है। मैं यह शरीर हू, जिसमे भोजन जाता है। मैं यह शरीर हू जो पानी पीता है, जिसे भूख लगती है, जो थक जाता है, जो रात सोता है और सुबह उठता है। 'मैं यह शरीर हू' इस सूत्र को तोड डाले। इस सम्बन्ध को छोड दें तो ही तप के जगत् मे प्रवेश हो सकेगा। यही भोग है। सारा भोग इसी से फैलता है। यह तादात्म्य, यह आइडेंटिटी, यह इस भौतिक शरीर से स्वय को एक मान लेने की भ्राति आपके जीवन का भोग है। फिर इससे सब भोग पैदा होते हैं। जिस आदमी ने अपने को भौतिक शरीर समझा, वह दूसरे भौतिक शरीर को भोगने को आतुर हो जाता है। इससे सारी कामवासना पैदा होती है। जिस व्यक्ति ने अपने को यह भौतिक शरीर समझा वह भोजन मे बहुत रसातुर हो जाता है। क्योकि यह शरीर भोजन से ही निर्मित होता है। जिस व्यक्ति ने इस शरीर को अपना शरीर समझा वह आदमी सब तरह की इन्द्रियो के हाथ मे पड जाता है। क्योकि वे सब इन्द्रिया इस शरीर के परिपोषण के मार्ग है।

पहला सूत्र तप का—यह शरीर मैं नही हू। इस तादात्म्य को तोडे। इस तादात्म्य को कैसे तोडेंगे, यह हम कल बात करेंगे। इस तादात्म्य को कैसे तोडेंगे? तो महावीर ने छ उपाय कहे है, वह हम बात करेंगे। लेकिन इस तादात्म्य को तोडना है, यह सकल्प अनिवार्य है। इस सकल्प के बिना गति नही है। और सकल्प से ही तादात्म्य टूट जाता है क्योकि सकल्प से ही निर्मित है। यह जन्मो-जन्मो के संकल्प का ही परिणाम है कि मैं यह शरीर हू।

आप चकित होगे जानकर—आपने पुरानी कहानिया पढी हैं, बच्चो की कहानियो मे सब जगह उल्लेख है। अब नयी कहानियो मे बन्द हो गया है क्योकि कोई कारण नही मिलते थे। पुरानी कहानिया कहती है कि कोई सम्राट् है, उसका प्राण किसी तोते मे बन्द है। अगर उस तोते को मार डालो तो सम्राट् मर जाएगा। यह बच्चो के लिए ठीक है। हम समझते है कि ऐसा कैसे हो सकता है। लेकिन आप हैरान होगे, यह सम्भव है। वैज्ञानिक रूप से सम्भव है। और यह कहानी नही

ऊर्जा न खींची जा सके, इसके लिए कोई रैजिस्टेंस खडा करते है। आदमी की जानकारी अभी भी वहुत कम है। लेकिन जानकारी कम हो या ज्यादा, हजारो साल से जितनी जानकारी है उसके आधार पर वहुत काम किया जाता रहा है। और ऐसा भी प्रतीत होता है कि शायद वहुत-सी जानकारियां खो गई हैं।

लुकमान के जीवन मे उल्लेख है कि एक आदमी को उसने भारत भेजा आयुर्वेद की शिक्षा के लिए और उससे कहा कि तू बबूल के वृक्ष के नीचे सोता हुआ भारत पहुंच। और किसी वृक्ष के नीचे मत सोना—बबूल के वृक्ष के नीचे सोना रोज। वह आदमी जब तक भारत आया, क्षय रोग से पीडित हो गया। कश्मीर पहुच कर उसने पहले चिकित्सक को कहा कि मैं तो मरा जा रहा हू। मै तो सीखने आया था आयुर्वेद, अब सीखना नही है, सिर्फ मेरी चिकित्सा कर दे। मैं ठीक हो जाऊ तो अपने घर वापस लौटू। उस वैद्य ने उससे कहा—तू किसी विशेष वृक्ष के नीचे सोता हुआ तो नही आया ?

'मुझे गुरु ने आज्ञा दी थी कि तू बबूल के वृक्ष के नीचे सोता हुआ जाना।'

वह वैद्य हसा। उसने कहा—तू कुछ मत कर। तू अब नीम के वृक्ष के नीचे सोता हुआ वापस लौट जा।

वह नीम के वृक्ष के नीचे सोता हुआ वापस लौट गया। वह जैसा स्वस्थ चला था, वैसा स्वस्थ लुकमान के पास पहुच गया।

लुकमान ने पूछा—तू जिन्दा लौट आया ? तव आयुर्वेद मे जरूर कोई राज है।

उसने कहा—लेकिन मैंने कोई चिकित्सा नही की।

उसने कहा—इसका कोई सवाल नही है। क्योकि मैंने तुझे जिस वृक्ष के नीचे सोते हुए भेजा था, तू जिन्दा लौट नही सकता था। तू लौटा कैसे ? क्या किसी और वृक्ष के नीचे सोता हुआ लौटा ?

उसने कहा—मुझे आज्ञा दी कि अव बबूल भर से बचू और नीम के नीचे सोता हुआ लौट आऊ। तो लुकमान ने कहा कि वे भी जानते है।

असल मे बबूल सकअप करता है इनर्जी को। आपकी जो इनर्जी है, आपकी जो प्राण ऊर्जा है, उसे बबूल पीता है। बबूल के नीचे भूलकर मत सोना। और अगर बबूल की दातुन की जाती रही है तो उसका कुल कारण इतना है कि बबूल की दातुन मे सर्वाधिक जीवन इनर्जी होती है, वह आपके दातो को फायदा पहुचा देती है, क्योकि वह पीता रहता है। जो भी निकलेगा पास से वह उसकी इनर्जी पी लेता है। नीम आपकी इनर्जी नही पीती है, बल्कि अपनी इनर्जी आपको दे देती है, अपनी ऊर्जा आप मे उडेल देती है।

लेकिन पीपल के वृक्ष के नीचे भी मत सोना। क्योकि पीपल का वृक्ष इतनी ज्यादा इनर्जी उडेल देता है कि उसकी वजह से आप बीमार पड जाएगे। पीपल का वृक्ष सर्वाधिक शक्ति देने वाला वृक्ष है। इसलिए यह हैरानी की बात नही है कि

भोग का सूत्र है—यह शरीर मैं हू। तप का सूत्र है—यह शरीर मैं नही हू। लेकिन भोग का सूत्र पाजिटिव—यह शरीर मैं हू। और अगर तप का इतना ही सूत्र है कि यह शरीर मैं नही हू तो तप हार जाएगा, भोग जीत जाएगा। क्योकि तप का सूत्र निगेटिव है। तप का सूत्र नकारात्मक है कि यह मैं नहीं हू। नकार मे आप खडे नही हो सकते। शून्य मे खडे नहीं हो सकते। खडे होने के लिए जगह चाहिए। पाजिटिव। जब आप कहते हैं—'यह शरीर मैं हू' तब कुछ पकड मे आता है। जब आप कहते हैं—'यह शरीर मैं नही हू' तब कुछ पकड मे आता नही। इसलिए तप का दूसरा सूत्र है कि मैं ऊर्जा-शरीर हू। यह आधा हुआ, पहला हुआ कि यह शरीर मैं नही हू, तत्काल दूसरा सूत्र इसके पीछे खडा होना चाहिए कि मैं ऊर्जा-शरीर हू, इनर्जी बाडी हू। प्राण-शरीर हू। अगर यह दूसरा सूत्र खडा न हो तो आप सोचते रहेंगे कि यह शरीर मैं नही हू और इसी शरीर मे जीते रहेंगे। लोग रोज सुबह बैठकर कहते है कि यह शरीर मैं नही हू, यह शरीर तो पदार्थ हैं। और दिन भर उनका व्यवहार यही शरीर हैं। इतना काफी नही है। किसी पाजिटिव विल को, किसी विधायक सकल्प को नकारात्मक सकल्प से नही तोडा जा सकता। उससे भी ज्यादा विधायक सकल्प चाहिए। यह शरीर मैं नहीं हू, यह ठीक है। लेकिन आधा ठीक है। मैं प्राण-शरीर हू, इससे पूरा सत्य बनेगा।

तो दो काम करें। इस शरीर से तादात्म्य छोडें और प्राण-ऊर्जा के शरीर से तादात्म्य स्थापित करें—वी आइडैंटिफाइड विद इट। मैं यह नही हू और मैं यह हू, और जोर पाजिटिव पर रहे। इम्फैसिस इस बात पर रहे कि मैं ऊर्जा-शरीर हू। ऊर्जा-शरीर हू, इस पर जोर रहे—तो मैं यह भौतिक शरीर नही हू, यह उसका परिणाम मात्र होगा, छाया मात्र होगा। अगर आपका जोर इस बात पर रहा कि यह शरीर मैं नही हू तो गलती हो जाएगी। क्योकि वह मैं जो शरीर हू वह छाया नही बन सकता, वह मूल है। उसे भूल मे रखना पडेगा। इसलिए मैने आपको समझाया, क्योकि समझाने मे पहले यही समझाना जरूरी है कि यह शरीर मैं नही हू। लेकिन जब आप सकल्प करे तो सकल्प पर जोर दूसरे सूत्र पर रहे, अर्थात् दूसरा सूत्र सकल्प मे पहला सूत्र रहे और पहला सूत्र सकल्प मे दूसरा सूत्र। जोर कि मैं ऊर्जा-शरीर हू, इसलिए मैंने इतनी ऊर्जा-शरीर की आपसे बात की ताकि आपको ख्याल आ जाए। और यह भौतिक शरीर मैं नही हू, यह तप की भूमिका है। कल से हम तप के अगो पर चर्चा करेंगे।

महावीर ने तप के दो रूप—आन्तरिक तप, अन्तर-तप और बाह्य-तप कहे हैं। अन्तर-तप मे उन्होने छ हिस्से किए है, छ सूत्र, और बाह्य-तप मे भी छ हिस्से किए है। कल हम बाह्य-तप से बात शुरू करेंगे, फिर अन्तर-तप पर। और अगर तप की प्रक्रिया ख्याल मे आ जाए, संकल्प मे चली जाए तो जीवन उस यात्रा पर निकल जाता है जिस यात्रा पर निकले बिना अमृत का कोई अनुभव नही है।

है, इसके उपयोग किए जाते रहे हैं। अगर एक सम्राट् को बचाना है मृत्यु से तो उसे गहरे सम्मोहन मे ले जाकर यह भाव उसको जतलाना काफी है, बार-बार दोहराना उसके अन्तरतम मे कि तेरा प्राण तेरे इस शरीर मे नही, इस सामने बैठे तोते के शरीर मे है। यह भरोसा उसका पक्का हो जाए, यह सकल्प गहरा हो जाए तो वह युद्ध के मैदान पर निर्भय चला जाएगा, और वह जानता है कि उसे कोई भी नही मार सकता। उसके प्राण तो तोते मे बन्द हैं। और जब वह जानता है कि उसे कोई नही मार सकता तो इस पृथ्वी पर मारने का उपाय नही, यह पक्का ख्याल। लेकिन अगर उस सम्राट् के सामने आप उसके तोते की गर्दन मरोड दें तो वह उसी वक्त मर जाएगा। क्योकि ख्याल ही सारा जीवन है, विचार जीवन है, सकल्प जीवन है।

सम्मोहन ने इस पर बहुत प्रयोग किए है और यह सिद्ध हो गया है कि यह बात सच है। आपको कहा जाए सम्मोहित करके कि यह कागज आपके सामने रखा है, अगर हम इसे फाड़ देगे तो आप बीमार पड जाओगे, बिस्तर से न उठ सकोगे। इसको आपको सम्मोहित कर दिया जाए, कोई तीस दिन लगेंगे, तीस सिटिंग लेने पडेगे—तीस दिन पन्द्रह-पन्द्रह मिनट आपको बेहोश करके कहना पडेगा कि आपकी प्राण-ऊर्जा इस कागज मे है। और जिस दिन हम इसको फाडेंगे, तुम बिस्तर पर पड जाओगे, उठ न सकोगे। तीसवे दिन आपको होशपूर्वक आप बैठेंगे, वह कागज फ़ाड दिया जाए, आप वही गिर जाएगे, लकवा खा गए। उठ नही सकेंगे।

क्या हुआ ? सकल्प गहन हो गया। सकल्प ही सत्य बन जाता है। यह हमारा सकल्प है जन्मो-जन्मो का कि यह शरीर मै हू। यह सकल्प वैसे ही जैसे कागज मैं हू या तोता मैं हू। इसमे कोई फर्क नही है। यह एक ही बात है। इस सकल्प को तोडे बिना तप की यात्रा नही होगी। इस सकल्प के साथ भोग की यात्रा होगी। यह सकल्प हमने किया ही इसलिए है कि हम भोग की यात्रा कर सके। अगर यह सकल्प हम न करें तो भोग की यात्रा नही हो सकेगी।

अगर मुझे यह पता हो कि यह शरीर मैं नही हू तो इस हाथ मे कुछ रस न रह गया कि इस हाथ से मैं किसी सुन्दर शरीर को छुऊ। यह हाथ मै हू ही नही। यह तो ऐसा ही हुआ जैसा एक डडा हाथ मे ले लें और उस डडे से किसी का शरीर छुऊ, तो कोई मजा न आए। क्योकि डडे से क्या मतलब है ? हाथ से छूना चाहिए। लेकिन तपस्वी का हाथ भी डडे की भाति हो जाता है। जैसे वह सकल्प को खीच लेता है भीतर कि यह हाथ मैं नही हू, हाथ डडा हो गया। अब इस हाथ से किसी का सुन्दर चेहरा छुओ कि न छुओ, यह डडे से छूने जैसा है। इसका कोई मूल्य न रहा। इसका कोई अर्थ न रहा। भोग की सीमा गिरनी और टूटनी और सिकुडनी शुरू हो जाएगी।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते है।

हम जहा है वहा बार-बार मृत्यु का ही अनुभव होगा। क्योंकि जो हम नही है उससे हमने अपने को जोड रखा है। हम बार-बार टूटेंगे, मिटेंगे, नष्ट होगे और जितना टूटेंगे, जितना मिटेंगे उतना ही उसी से अपने को बार-बार जोडते चले जाएगे जो हम नही है। जो मैं नही हू, उससे अपने को जोडना मृत्यु के द्वार खोलना है।

तप अमृत के द्वार की सीढी है। बारह सीढिया है। कल से हम उनकी बात शुरू करेंगे। आज के लिए इतना ही।

बैठेंगे पाच मिनट, ध्वनि करेंगे सन्यासी, उसमे सम्मिलित हो।

होता कि अन्तर तप को महावीर पहले रखते, क्योंकि अन्तर ही पहले है। वह जो आन्तरिक है, वही प्राथमिक है। लेकिन महावीर ने अन्तर तप को पहले नही रखा है, पहले रखा है बाह्य तप को। क्योंकि महावीर दो ढग से बोल सकते हैं, और इस पृथ्वी पर दो ढग से बोलने वाले लोग हुए है। एक वे लोग जो वहा से बोलते हैं जहा वे खडे है। एक वे लोग जो वहां से बोलते हैं जहा सुनने वाला खडा है। महावीर की करुणा उन्हे कहती है कि वे वहीं से बोलें जहा सुनने वाला खडा है। महावीर के लिए आन्तरिक प्रथम है, लेकिन सुनने वाले के लिए आन्तरिक द्वितीय है, बाह्य प्रथम है।

तो महावीर जब बाह्य तप को पहला रखते हैं तो केवल इस कारण कि हम बाहर हैं। इससे सुविधा तो होती है समझने मे, लेकिन आचरण करने मे असुविधा भी हो जाती है। सभी सुविधाओ के साथ जुडी हुई असुविधाए हैं। महावीर ने चूकि बाह्य तप को पहले रखा है, इसलिए महावीर के अनुयायियो ने बाह्य-तप को प्राथमिक समझा। वहा भूल हुई है। और तब बाह्य-तप को करने मे ही लगे रहने की लम्बी धारा चली। और आज करीब-करीब स्थिति ऐसी आ गयी है कि बाह्य-तप ही पूरा नही हो पाता तो आन्तरिक तप तक जाने का सवाल नही उठता। बाह्य-तप ही जीवन को डुबा लेता है। और बाह्य तप कभी पूरा नही होगा जब तक कि आन्तरिक तप पूरा न हो। इसे भी ध्यान मे ले लें।

अन्तर और बाह्य एक ही चीज है। इसलिए कोई सोचता हो कि बाह्य तप पहले पूरा हो जाए तब मैं अन्तर तप मे प्रवेश करूगा, तो बाह्य-तप कभी पूरा नही होगा। क्योंकि बाह्य-तप स्वय आधा हिस्सा है, वह पूरा नही हो सकता। जैन साधना जहा भटक गयी वह यही जगह है, बाह्य-तप पहले पूरा हो जाए तो फिर आन्तरिक तप मे उतरेंगे। बाह्य-तप कभी पूरा नही हो सकता, क्योंकि बाह्य जो है वह अधूरा ही है। वह तो पूरा तभी होगा जब आन्तरिक तप भी पूरा हो। इसका यह अर्थ हुआ कि अगर ये दोनो तप साथ-साथ चलें तो ही पूरा हो पाते हैं, अन्यथा पूरा नही हो पाते है। लेकिन विभाजन ने हमे ऐसा समझा दिया कि पहले हम बाहर को तो पूरा कर लें, पहले हम बाहर को तो साध लें, फिर हम भीतर की यात्रा करेंगे। अभी जब बाहर का ही नही सध रहा है तो भीतर की यात्रा कैसे हो सकती है। ध्यान रहे तप एक ही है। बाह्य और भीतर सिर्फ काम चलाऊ विभाजन है।

अगर कोई अपने पैरो को स्वस्थ करना चाहे और सोचे कि पहले पैर स्वस्थ हो जाए, फिर सिर स्वस्थ कर लेगे, तो वह गलती मे है। शरीर एक है, और शरीर का स्वास्थ्य पूरा होता है। अभी तक वैज्ञानिक सोचते थे कि शरीर के अग बीमार पडते है, लोकल होती है बीमारी—हाथ बीमार होता है, पैर बीमार होता है। लेकिन अब धारणा बदलती चली जा रही है। अब वैज्ञानिक कहते हैं—

अनशन : मध्य के क्षण का अनुभव

दसवा प्रवचन · दिनाक २७ अगस्त, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

महावीर ने तप को दो रूपो मे विभाजित किया है। इसलिए नही कि तप दो रूपो मे विभाजित हो सकता है, बल्कि इसलिए कि हम उसे बिना विभाजित किए नही समझ सकते हैं। हम जहा खडे है हमारी समस्त यात्रा वही से प्रारम्भ होगी। और हम अपने बाहर खडे है। हम वहा खडे है जहा हमें नही होना चाहिए; हम वहा नही खडे है जहा हमे होना चाहिए। हम अपने को ही छोड-कर, अपने से ही च्युत होकर, अपने से ही दूर खडे है। हम दूसरो से अजनबी हैं—ऐसा नही, हम अपने से अजनबी है—स्ट्रेंजर्स टु अवरसेल्व्ज। दूसरो का तो शायद हमे थोडा बहुत पता भी हो, अपना उतना भी पता नही है। तप तो विभाजित नही हो सकता। लेकिन हम विभाजित मनुष्य है। हम अपने से ही विभाजित हो गए है, इसलिए हमारी समझ के बाहर होगा अविभाज्य तप।

महावीर उसे दो हिस्सो मे बाटते हैं हमारे कारण। इस बात को ठीक से पहले समझ ले। हमारे कारण ही दो हिस्सो मे बाटते है, अन्यथा महावीर जैसी चेतना को बाहर और भीतर का कोई अन्तर नही रह जाता। जहा तक अन्तर है वहा तक तो महावीर जैसी चेतना का जन्म नही होता। जहा भेद है, जहा फासले हैं, जहा खड है, वहा तक तो महावीर की अखड चेतना जन्मती नही। महावीर तो वहा है जहा सब अखड हो जाता है। जहा बाहर भीतर का ही एक छोर हो जाता है और जहा भीतर भी बाहर का ही एक छोर हो जाता है। जहा भीतर और बाहर एक ही लहर के दो अग हो जाते है; जहा भीतर और बाहर दो वस्तुए नही किसी एक ही वस्तु के दो पहलू हो जाते है इसलिए यह विभाजन हमारे लिए है।

महावीर ने बाह्य तप और अन्तर तप, दो हिस्से किए है। उचित होता, ठीक

जो भी समझा जाता है वह गलत है। अनशन के सम्बन्ध में जो छिपा हुआ सूत्र है, जो एसोटेरिक है वह मैं आपसे कहना चाहता हूँ। उसके बिना अनशन का कोई अर्थ नहीं है। जो गुह्य अनशन की प्रक्रिया है वह मैं आपसे कहना चाहता चाहता हूँ, उसे समझ कर आपको नयी दिशा का बोध होगा।

मनुष्य के शरीर मे दोहरे यन्त्र है, डबल मैकेनिजम है और दोहरा यंत्र इसलिए है ताकि इमर्जेन्सी मे, संकट के किसी क्षण मे एक यन्त्र काम न करे तो दूसरा कर सके। एक यंत्र तो जिससे हम परिचित है, हमारा शरीर। आप भोजन करते हैं, शरीर भोजन को पचाता है, खून बनाता है, हड्डिया बनाता है, मास-मज्जा बनाता है। ये साधारण यन्त्र है। लेकिन कभी कोई आदमी जगल मे भटक जाए या सागर मे नाव डूब जाए और कई दिनो तक किनारा न मिले तो भोजन नहीं मिलेगा। तब शरीर के पास एक इमर्जेन्सी अरेंजमेंट है, एक संकटकालीन व्यवस्था है तब शरीर को भोजन तो नहीं मिलेगा लेकिन भोजन की जरूरत तो जारी रहेगी। क्योकि श्वास भी लेना हो, हाथ भी हिलाना हो, जीना भी हो तो भोजन की जरूरत है। ईंधन की जरूरत है। आपको ईंधन न मिले तो आपके शरीर के पास एक ऐसी व्यवस्था चाहिए जो संकट की घडी मे आपके शरीर के भीतर इकट्ठा जो ईंधन है उसको ही उपयोग मे लाने लगे। शरीर के पास एक दूसरा इनर मैकेनिजम है। अगर आप सात दिन भूखे रहे तो शरीर अपने को ही पचाना शुरू कर देता है। भोजन आपको नही ले जाना पडता, आपके भीतर की चर्बी ही भोजन बननी शुरू हो जाती है। इसलिए उपवास मे आपका एक पौंड वजन रोज गिरता चला जाएगा। वह एक पौंड आपकी ही चर्बी आप पचा गए। कोई नब्बे दिन तक साधारण स्वस्थ आदमी मरेगा नही क्योकि इतना रिजर्वायर, इतना संग्रहीत तत्व शरीर के पास है कि कम-से-कम तीन महीने तक वह अपने को बिना भोजन के जिला सकता है। ये दो हिस्से हैं शरीर के—एक शरीर की व्यवस्था सामान्य है, देवयदिन है। असमय के लिए, सकट की घडी के लिए एक और व्यवस्था है, जब शरीर बाहर से भोजन न पा सके तो अपने भीतर संग्रहीत भोजन को पचाना शुरू कर दे।

अनशन की प्रक्रिया का राज यह है कि जब शरीर की एक व्यवस्था से दूसरी व्यवस्था पर सक्रमण होता है, आप बदलते हैं तब बीच मे कुछ क्षणो के लिए आप वहा पहुच जाते हैं जहा शरीर नही होता। वही उसका सीक्रेट है। जब भी आप एक चीज से दूसरे पर बदलाहट करते है, एक सीढी से दूसरी सीढी पर जाते हैं तो एक क्षण ऐसा होता है जब आप किसी भी सीढी पर नही होते हैं। जब आप एक स्थिति से दूसरी स्थिति में छलाग लगाते है तो बीच मे गैप, अतराल हो जाता है जब आप किसी भी स्थिति मे नही होते है, फिर भी होते हैं।

शरीर की एक व्यवस्था है सामान्य भोजन की अगर यह व्यवस्था बन्द कर

जब एक अग बीमार होता है तो वह इसीलिए बीमार होता है कि पूरा बीमार हो गया होता है। हां, एक अग मे बीमारी प्रगट होती है लेकिन वह एक अग की नही होती। मनुष्य का पूरा व्यक्तित्व ही बीमार हो जाता है। यद्यपि बीमारी उस अग से प्रगट होती है जो सर्वाधिक कमजोर है। लेकिन व्यक्तित्व पूरा बीमार हो जाता है।

इसलिए हैपोक्रेटीज ने, जिसने कि पश्चिम मे चिकित्सा को जन्म दिया, उसने कहा था—ट्रीट दि डिसीज। बीमारी का इलाज करो। लेकिन अभी पश्चिम के अनेक मेडिकल कालेजेज मे वह तख्ती हटा दी गयी है और वहा लिखा हुआ है—ट्रीट दी पेसेंट। बीमारी का इलाज मत करो, बीमार का इलाज करो, क्योंकि बीमारी लोकलाइज्ड होती है, बीमार तो फैला हुआ होता है। असली सवाल नही है बीमारी, असली सवाल है बीमार, पूरा व्यक्तित्व।

अन्तर और बाह्य पूरे व्यक्तित्व के हिस्से है। इन्हे साइमलटेनियसली, युगपत प्रारम्भ करना पडेगा। विवेचन जब हम करेंगे तो विवेचन हमेशा वन डायमेंशनल होता है। मैं पहले एक अग की बात करूगा, फिर दूसरे की, फिर तीसरे की, फिर चौथे की। स्वभावत चारो अगो की बात एक साथ कैसे की जा सकती है। भाषा वन डायमेशनल है। एक रेखा मे मुझे बात करनी पडेगी। पहले मैं आपके सिर की बात करूगा, फिर आपके हृदय की बात करूगा, फिर आपके पैर की बात करूगा। तीनो की बात एक साथ नही कर सकता हू। लेकिन इसका मतलब यह नही है कि तीनो एक साथ नही है। वह तीनो एक साथ है—आपका सिर, आपका हृदय, आपके पैर, वह सब युगपत, एक साथ हैं, अलग-अलग नही हैं। चर्चा करने मे बाट लेना पडता है लेकिन अस्तित्व मे वे इकट्ठे है।

तो यह जो चर्चा मै करूगा बारह हिस्सो की—छ. बाह्य और छ आन्तरिक। चर्चा के लिए क्रम होगा— एक, दो, तीन, चार, लेकिन जिन्हे साधना है, उनके लिए क्रम नही होगा। एक साथ उन्हे साधना होगा, तभी पूर्णता उपलब्ध होती है, अन्यथा पूर्णता उपलब्ध नही होती। भाषा से बडी भूले पैदा होती है, क्योंकि भाषा के पास एक साथ बोलने का कोई उपाय नही है।

मैं यहा हू, अगर मैं बाहर जाकर ब्योरा दू कि मेरी सामने की पक्ति मे कितने लोग बैठे थे तो मैं पहले, पहले का नाम लूगा, फिर दूसरे का, फिर तीसरे का, फिर चौथे का। मेरे बोलने मे क्रम होगा। लेकिन यहा जो लोग बैठे हैं उनके बैठने मे क्रम नही है, वे एक साथ ही यहा मौजूद है। अस्तित्व इकट्ठा है, एक साथ है। भाषा क्रम बना देती है। उनमे कोई आगे हो जाता है, कोई पीछे हो जाता है। लेकिन अस्तित्व मे कोई आगे पीछे नही होता है। इतनी बात ख्याल ले लें, फिर हम महावीर के बाह्य-तप से शुरू करें।

बाह्य-तप मे महावीर ने पहला तप कहा है—अनशन। अनशन के सम्बन्ध मे

जरूरत नही, क्योकि वह यत्र वही यत्र है जो उपवास मे प्रगट होता है। वह आपका इमर्जेसी मेजरमेट है। खतरे की स्थिति मे उसका उपयोग करना होता है। इसलिए आप जानकर हैरान होगे कि अगर बहुत खतरा पैदा हो जाए तो आदमी नीद मे चला जाता है। यह आप जानकर हैरान होगे। अगर इतना खतरा पैदा हो जाए कि आप अपने मस्तिष्क से उसका मुकावला न कर सकें तो आप नीद मे चले जाएगे। आप वेहोश हो जाते है, बहुत दुख हो जाएगा। उसका और कोई कारण नही है कि आपका जाग्रत मस्तिष्क उसको सहने मे असमर्थ है तो तत्काल शिफ्ट हो जाता है और गहरी तद्रा मे चला जाता है, वेहोश हो जाता है। वेहोशी दुख से बचने का उपाय है।

हम अक्सर कहते है—मुझे वडा असह्य दुख है। लेकिन ध्यान रहे, असह्य दुख कभी नही होता। असह्य होने के पहले वेहोश हो जाते है। जब तक सहनीय होता है तभी तक आप होश मे आते हैं। जैसे ही असहनीय हो जाता है आप वेहोश हो जाते है। इसलिए असह्य दुख को कोई आदमी कभी नही भोग पाता। भोग ही नही सकता। इतजाम ऐसा है कि असह्य दुख होने के पहले आप वेहोश हो जाए। इसलिए मरने के पहले अधिक लोग वेहोश हो जाते है। क्योकि मरने के पहले जिस यत्र से आप जी रहे थे, उसकी अब कोई जरूरत नही रह जाती। चेतना शिफ्ट हो जाती है उसी यत्र पर, जो इस यत्र के पीछे छिपा हैं। मरने से पहले आप दूसरे यत्र पर उतर जाते हैं।

मनुष्य के शरीर मे दोहरा शरीर है। एक शरीर है जो दैननदन्य काम का है—जागने का, उठने का, बैठने का, बात करने का, सोचने का, व्यवहार करने का; एक और यत्र है छिपा हुआ भीतर गुह्य, जो सकटकालीन है। अनशन का प्रयोग उस सकटकालीन यत्र मे प्रवेश का है। इस तरह के बहुत से प्रयोग हैं जिनसे मध्य का गैप, मध्य का जो अतराल है वह उपलब्ध होता है। सूफियो ने अनशन का उपयोग नही किया, सूफियो ने जागने का उपयोग किया है। एक ही बात है, उसमें फर्क नही है। प्रयोग अलग है, परिणाम एक है।

सूफियो ने रात मे जागने का प्रयोग किया है—सोओ मत, जागे रहो। इतने जागे रहो, जब नीद पकडे तो मत नीद मे जाओ, जागे ही रहो, जागे ही रहो, जागे ही रहो। अगर जागने की चेष्टा जारी रही, और जागने का यत्र थक गया और बद हो गया और एक क्षण को भी आप उस हालत मे रह गए जब जागना भी न रहा और नीद भी न रही, तो आप बीच के अतराल मे उतर जाएगे। इसलिए सूफियो ने नाइट विजिलेंस को, रात्रि जागरण को वडा मूल्य दिया। महावीर ने उसी प्रयोग को अनशन कहा है। वही प्रयोग है।

तत्र का एक अद्भुत ग्रथ है विज्ञान भैरव। उसमे शकर ने पार्वती को ऐसे सैकडो प्रयोग कहे हैं। हर प्रयोग दो पक्तियो का है। हर प्रयोग का परिणाम वही

दी जाए तो अचानक आपको दूसरी व्यवस्था पर रूपान्तरित होना पडता है, और इस बीच कुछ क्षण है जब आप आत्म-स्थिति मे होते हे । उन्ही क्षणो को पकडना अनशन का उपयोग है । इसलिए जो आदमी अनशन का अभ्यास करेगा वह अनशन का फायदा न उठा पाएगा । ख्याल रखें जो अनशन का अभ्यास करेगा वह अनशन का फायदा न उठा पाएगा । अनशन सडन प्रयोग हे, आकस्मिक, अचानक । जितना अचानक होगा, जितना आकस्मिक होगा, उतना ही अतराल का बोध होगा । अगर आप अभ्यासी है तो आप इतने कुशल हो जाएगे एक स्थिति से दूसरी स्थिति मे जाने मे कि बीच का अतराल आपको पता ही नही चलेगा । इसलिए अभ्यासियो को अनशन से कोई लाभ नही होता । और अभ्यास करने की जो प्रक्रिया है वह यही है कि आपको बीच का अतराल पता न चले । एक आदमी धीरे-धीरे अभ्यास करता रहे तो वह इतना कुशल हो जाता हे कि कब उसने स्थिति बदल ली, उसे पता नही चलता । हम रोज स्थिति बदलते है लेकिन अभ्यास के कारण पता नही चलता ।

रात आप सोते है—जागने के लिए शरीर दूसरे मैकेनिजम का उपयोग करता है, सोने के लिए दूसरे । दोनो के मैकेनिजम अलग है, दोनो का यन्त्र अलग है । आप उसी यन्त्र से नही जागते जिससे आप सोते है । इसीलिए तो अगर आपके जागने का यन्त्र बहुत ज्यादा सक्रिय हो तो आप सो नही पाते । उसका और कोई कारण नही है, आप दूसरी व्यवस्था मे प्रवेश नही कर पाते । पहली ही व्यवस्था मे अटके रह जाते हैं । अगर आप दुकान, धधे और काम की बात सोचे चले जा रहे हे तो आपके जागने का यन्त्र काम करता चला जाता है । जब तक वह काम करता है तब तक चेतना उससे नही हट सकती । चेतना तभी हटेगी जब वहा आपका काम बन्द हो जाए तो तत्काल शिफ्ट हो जाएगी । चेतना दूसरे यन्त्र पर चली जाएगी । जो निद्रा का है । लेकिन हमे इतना अभ्यास है कि हमे पता नही चलता बीच के गैप का । वह जो जागने और नीद के बीच जो क्षण आता है वह भी वही है जो भोजन छोडने और उपवास के बीच मे आता है । इसलिए तो आपको नीद मे भोजन की जरूरत नही पडती । आप दस घण्टे सोए रहे तो भी भोजन की जरूरत नही पडती है । दस घण्टे जागें तो भोजन की जरूरत पडती है ।

आपको पता है, ध्रुव प्रदेश मे पोलर बियर होता है, भालू होता है साइबेरिया में । छ. महीने जब बर्फ भयकर रूप से पडती है तो कोई भोजन नही मिलता । वह सो जाता है । बर्फ के नीचे दबकर सो जाता है । वह उसकी ट्रिक हे, वह उसकी तरकीब है । क्योकि नीद मे तो भूख नही लगती । वह छ महीने सोया रहता है । छ महीने के बाद वह तभी जगता है जब भोजन फिर मिलने की सुविधा शुरू हो जाती है । आपके भीतर जो निद्रा का यत्र है वहा आपको भोजन की कोई

यह तय करना मुश्किल हो जाएगा। और खतरनाक भी है। क्योकि विक्षिप्त होने का पूरा डर है।

आज माओ के अनुयायी चीन मे जो सबसे बडी पीडा दे रहे है अपने से विरोधियो को, वह न सोने देने की है। भूखा मारकर आप ज्यादा परेशान नही कर सकते क्योकि सात आठ दिन के बाद भूख बन्द हो जाती है। शरीर दूसरे यत्र पर चला जाता है। सात आठ दिन के बाद भूख नही लगती, भूख समाप्त हो जाती है। क्योकि शरीर नए ढग से भोजन पाना शुरू कर देता है, भीतर से भोजन पाना शुरू कर देता है। लेकिन नीद ? बहुत मुश्किल मामला है। सात दिन भी अगर आदमी को बिना सोए रख दिया जाए तो वह विक्षिप्त हो जाता है। और वर्लरेबल हो जाता है। सात दिन अगर किसी को न सोने दिया जाए तो उसकी बुद्धि इतनी ज्यादा डावाडोल हो जाती है कि उससे फिर आप कुछ भी कहें वह मानना शुरु कर देता है। इसलिए सात या नौ दिन चीन मे विरोधी को बिना सोया रखेगे और फिर कम्युनिज्म का प्रचार उसके सामने किया जाएगा। कम्युनिज्म की किताब पढी जाएगी, माओ का सदेश सुनाया जाएगा। और जब वह इस हालत मे नही होता कि रेसिस्ट कर सके कि तुम जो कह रहे हो वह गलत है। तर्क टूट जाता है। नीद के विकृत होने के साथ ही तर्क टूट जाता है। अब उसको मानना ही पडेगा, जो आप कह रहे है, ठीक कह रहे हैं।

नीद का प्रयोग महावीर ने नही किया, अनशन का प्रयोग किया। मनुष्य के हाथ मे जो सर्वाधिक सुविधापूर्ण सरलतम प्रयोग है—दो यत्रो के बीच मे ठहर जाने का, वह भोजन है। लेकिन आप अगर अभ्यास कर लें तो अर्थ नही रह जाएगा। ये प्रयोग आकस्मिक हैं—अचानक।

आपने भोजन नही लिया है, और जब आपने भोजन नही लिया है तब ध्यान रखे न तो भोजन का, न उपवास का—ध्यान रखें उस मध्य के बिन्दु का कि वह कब आता है। आख बन्द कर ले और अब भीतर ध्यान रखे कि शरीर का यत्र कब स्थिति बदलता है। तीन दिन मे, चार दिन मे, पाच दिन मे, सात दिन मे, कभी स्थिति बदली जाएगी। और जब स्थिति बदलती है तब आप बिल्कुल दूसरे लोक मे प्रवेश करते है। आपको पहली दफे पता चलता है कि आप शरीर नही है—न तो वह शरीर जो अब तक काम कर रहा था और न यह शरीर जो अब काम कर रहा है। दोनो के बीच मे एक क्षण का बोध भी कि मैं शरीर नही हू मनुष्य के जीवन मे अमृत का द्वार खोल देता है।

लेकिन महावीर के पीछे जो परम्परा चल रही है वह अनशन का अभ्यास कर रही है। अभ्यासी है, वर्ष-वर्ष अभ्यास कर रहे है, जीवन भर अभ्यास कर रहे है। वे इतने अभ्यासी हो गए है—जितने अभ्यासी, उतने अधे। अब उनको कुछ दिखाई नही पडेगा। जैसे आप अपने घर जिस रास्ते पर रोज-रोज आते है। उस

हे कि बीच का गैप आ जाए। शकर कहते हैं—श्वास भीतर जाती है, श्वास बाहर जाती है पार्वती, तू दोनो के बीच मे ठहर जाना तू स्वय को जान लेगी। जब श्वास बाहर भी न जा रही हो और भीतर भी न आ रही हो, तब तू ठहर जाना, बीच मे दोनो के। किसी से प्रेम होता है, किसी से घृणा होती है, वहा ठहर जाना जब प्रेम भी न होता और घृणा भी नही होती, दोनो के बीच मे ठहर जाना। तू स्वय को उपलब्ध हो जाएगी। दुख होता है, सुख होता हे, तू वहा ठहर जाना जहा न दुख है, न सुख, बीच मे, मध्य मे और तू ज्ञान को उपलब्ध हो जाएगी।

अनशन उसी का एक व्यवस्थित प्रयोग है। और महावीर ने अनशन क्यो चुना? मैं मानता हू दो श्वासो के बीच मे ठहरना बहुत कठिन मामला है। क्योकि श्वास जो है वह नानवालेंटरी है, वह आपकी इच्छा से नही चलती, वह आपकी बिना इच्छा के चलती रहती है। आपकी कोई जरूरत नही होती हे उसके लिए। आप रात सोए रहते है, तब भी चलती रहती है, भोजन नही चल सकता सोने मे। भोजन वालेंटरी हे। आप की इच्छा से रुक भी सकता है, चल भी सकता है। आप ज्यादा भी कर सकते हैं, कम भी कर सकते है। आप भूखे भी रह सकते है तीस दिन लेकिन बिना श्वास के नही रह सकते है। श्वास के तो थोडे-से क्षण भी बिना रह जाना मुश्किल हो जाएगा। और बिना श्वास के अगर थोडे-से क्षण रहे तो इतने बेचैन हो जाएगे कि उस बेचैनी मे वह जो बीच का गैप है, वह दिखाई नही पडेगा, बेचैनी ही रह जाएगी। इसलिए महावीर ने श्वास का प्रयोग नही कहा। महावीर ने एक वालेंटरी हिस्सा चुना, भोजन वायलेटरी हिस्सा है। नीद भी सूफियो ने जो चुना हे वह भी थोडा है क्योकि नीद भी नान- वालेंटरी है, आप अपनी कोशिश से नही ला सकते। आती है तब आ जाती है। नही आती तो लाख उपाय करो, नही आती। नीद भी आपके वश मे नही है। नीद भी आपके बाहर है। बहुत कठिन है नीद पर वश करना।

महावीर ने बहुत सरल-सा प्रयोग चुना, जिसे बहुत लोग कर सकें—भोजन। एक तो सुविधा यह है कि नव्वे दिन तक न भी करे तो कोई खतरा नही है। अगर नव्वे दिन तक बिना सोए रह जाए तो पागल हो जाएगे। नव्वे दिन तो बहुत दूर है, नौ दिन भी अगर बिना सोए रह जाए तो पागल हो जाएगे। सब ब्लर्ड हो जाएगा। पता नही चलेगा कि जो देख रहे है वह सपना है या सच है। अगर नौ दिन आप न सोए तो इस हाल मे जो लोग बैठे है वह सच मे बैठे है कि आप कोई सपना देख रहे हैं, यह फर्क न कर पाएगे। ब्लर्ड हो जाएगा। नीद और जागरण ऐसा कफ्यूज्ड हो जाएगा कि कुछ पक्का न रहेगा कि क्या हो रहा है। आप जो सुन रहे हैं वह वस्तुत वह बोला जा रहा है, या सिर्फ आप सुन रहे हैं,

जाऊगा। वह जिद करता था। कई लोग तो इस लिए भाग जाते थे कि उतना खाना खाने के लिए राजी नही हो सकते थे। रात दो बजे तक वह खाना खिलाता। वह इतना आग्रह करता—और गुरुजिएफ जैसा आदमी आपसे आग्रह करे, या महावीर आपके सामने थाली मे रखते चले जाए कुछ, तो आपको इन्कार करना भी मुश्किल होगा। और गुरजिएफ था कि कहता कि और, कि और—खिलाते ही चला जाता। वह उतना ओवर फिलो हो जाए भोजन, वह दस पाच दिन आपको इतना खिलाता है कि आप खिलाने के, खाने की व्यवस्था से इस बुरी तरह अरुचिकर हो जाता। ध्यान रहे, अनशन भोजन में रुचि पैदा कर सकता है। अत्यधिक भोजन अरुचि पैदा कर देता है। वह उतना खिलाता, इतना खिलाता, कि आप घवरा जाते, भागने को हो जाते। कहते कि मर जाएगे, यह क्या कर रहे हैं आप। पेट ही पेट का स्मरण रहता है चौवीस घटे। तव अचानक वह आपका अनशन करवा देता है। तव गैप वडा हो जाता। वहुत ज्यादा खाने से एकदम न खाने पर धक्का दे देता। तो वह जो वीच की जगह थोडी वडी हो जाती क्योकि एकदम वहुत खाना एक अति से एकदम दूसरी अति पर धक्का दे देता। दस दिन इतना खिलाया कि आप हाथ जोड रहे थे, रो रहे थे कि अव और न खिलाए। ग्यारहवें दिन सुवह उसने कहा कि खाना वद—गैप को वडा किया उसने। उस खाना वद मे आपको अभी तक भोजन का स्मरण था, अव भोजन एकदम वद।

गुरुजिएफ गर्म पानी मे नहलाता इतना कि आपको जलने लगे, और फिर ठडे फव्वारे के नीचे खडा कर देता और कहता—वी अवेयर आफ द गैप। वह जो गर्म पानी मे शरीर तप्त हो गया, पसीना-पसीना हो गया, फिर एकदम ठडे पानी मे डाल दिया वर्फीले। अक्सर वह ऐसा करता है कि आग की अगीठिया जलाकर विठा देता, वाहर वर्फ पड रही, पसीना-पसीना हो जाते हैं, आप चिल्लाने लगते हैं कि मैं मर जाऊगा, जल जाऊगा, मुझे वाहर निकालो, मगर वह न मानता। अचानक वह दरवाजा खोलता और कहता—भागो, सामने की झील मे वर्फीले मे कूद जाओ, और कहता कि वी अवेयर आफ द गैप। गर्म से एकदम ठडे मे जो अति है, उसके वीच मे जो सक्रमण का क्षण है, उसका ध्यान रखना, और न मालूम कितने लोगो को वह गैप दिखाई पडा। दिखाई पडेगा।

महावीर के अनशन मे भी वही प्रयोग है। मध्य का विन्दु ख्याल मे आ जाए तो जव एक शरीर से दूसरे शरीर पर वदलते है, वदलाहट करते हैं। जैसे एक नाव से कोई दूसरी नाव पर वदलाहट कर रहा हो, एक क्षण तो दोनो नाव छूट जाती है, एक क्षण तो वह वीच मे होता है, छलाग लगायी, अभी पहली नाव से हट गया और दूसरी नाव मे नही पहुचा। अभी झील के ऊपर है। ठीक वैसी ही छलाग भीतर अनशन मे लगती है। और इस छलाग के क्षण मे अगर आप होश

रास्ते पर आप अंधे होकर चलने लगते है, फिर आपको उस रास्ते पर कुछ दिखाई नही पडता। लेकिन जब कोई आदमी पहली दफा उस रास्ते पर आता है उसे सब दिखाई पडता हैं। अगर आप कश्मीर जाएगे तो डल झील पर आपको जितना दिखाई पडता है वह जो माझी आपको घुमा रहा है, उसको नही पडता। वह अंधा हो जाता है।

अभ्यास अंधा कर देता है। इसे थोडा समझ ले। वह इतनी वार देख चुका है कि देखने की कोई जरूरत नही रह जाती। वह बिना देखे चलता रहता है। इसलिए जिनके साथ हम रहते हैं उनके चेहरे हमे दिखाई नही पडते—जिनके साथ हम रहते हैं उनके चेहरे हमे दिखाई नही पडते। अगर ट्रेन मे आपको कोई अजनबी मिल गया है तो उसका चेहरा आपको अभी भी याद हो सकता है। लेकिन अपनी मा का या अपने पिता का चेहरा आप आख बद करके याद करेंगे तो ब्लर्ड हो जाएगा, याद नही आएगा। न याद करें तो आपको लगेगा मालूम है कि मेरे पिता का चेहरा कैसा है। आख बद करें और याद करे तो आप पाएगे कि खो गया। नही मिलाता कैसा है। पिता का चेहरा फिर भी दूर है, आप अपना चेहरा तो रोज आइने मे देखते हैं। आख बद करें और याद करें, खो जाएगा। नही मिलेगा। आप अंधे की तरह आइने के सामने देख लेते हैं। अभ्यास पक्का है।

अभ्यास अंधा कर देता हे। और जो सूक्ष्म चीजें हैं वे दिखाई नही पडती। और यह बहुत सूक्ष्म विन्दु है। भोजन और अनशन के बीच का जो सक्रमण है, ट्रासमिशन है, वह बहुत सूक्ष्म और बारीक है, बहुत डेलिकेट है, बहुत नाजुक है। जरा से अभ्यास से आप उसको चूक जाएगे, वह आपको ख्याल मे नही आएगा। इसलिए अनशन का भूलकर अभ्याम न करे। कभी अचानक उसका उपयोग बडा कीमती हे, बडा अद्भुत है। जैसे अचानक आप यहा सोए थे, इस कमरे मे, और आपकी नीद खुले, और आप पाए, आप डल झील पर है तो आपकी मौजूदगी जितनी सघन होगी इतनी आप यहा से यात्रा करके डल झील पर जाए तो नही होगी। आप अचानक आख खोले और पाए तो आप घबरा जाएगे, चौंक जाएगे कि मैं कहा सोया था और कहा हू, यह क्या हो गया। आप इतने काशस होगे, इतने सचेत होगे, जिसका कोई हिसाब नही।

गुरुजिएफ के पास जो लोग जाते थे साधना के लिए—यह आदमी इस पचास वर्षों मे बहुत कीमती आदमी था—तो गुरुजिएफ यही काम करता था, लेकिन बिल्कुल उल्टे ढग से। और कोई जैन न सोच सकेगा कि गुरुजिएफ और महावीर के बीच कोई भी नाता हो सकता हे। आप और गुरुजिएफ के पास जाते तो पहले तो वह आपको बहुत ज्यादा खाना खिलाना शुरू करता, इतना कि आपको लगे कि मर जाऊगा। इतना खाना खिलाना शुरू करता कि आपको लगे मैं मर

नही हू तो उस क्षण मे जानना आसान होगा जब आपके शरीर मे भोजन बिल्कुल नही है। जोडने वाला लिंक जब बिल्कुल नही है, तभी जानना आसान होगा कि मैं शरीर नही हू । जोडने वाली चीज जितनी ज्यादा शरीर मे मौजूद है, उतना ही जानना मुश्किल होगा । भोजन ही जोडता है, इसलिए भोजन के अभाव मे नव्वे दिन के बाद टूट जाएगा सम्बन्ध—आत्मा अलग हो जाएगी, शरीर अलग हो जाएगा । क्योकि बीच का जो जोडने वाला हिस्सा था वह अलग हो गया, वह बीच से गिर गया । तो महावीर कहते हैं—जब तक शरीर मे भोजन पडा है जब तक जोड है । उस स्थिति मे अपने को ले आओ जब शरीर मे भोजन बिल्कुल नही है तो तुम आसानी से जान सकोगे कि तुम शरीर से अलग हो, पृथक हो । आइडेंटिफिकेशन टूट सकेगा, तादात्म्य टूट सकेगा ।

यह सच है । इसलिए जितना ही ज्यादा शरीर मे भोजन होता है उतना ही शरीर के साथ तादात्म्य होता है—जितना ज्यादा शरीर मे भोजन होता है उतना शरीर के साथ तादात्म्य होता है। इसलिए भोजन के बाद नीद तत्काल आनी शुरू हो जाती है। शरीर के साथ तादात्म्य बढ जाता है तब मूर्च्छा बढ जाती है। शरीर के साथ तादात्म्य टूट जाता है तो होश बढता है । इसलिए उपवासे आदमी को नीद आना बडा मुश्किल होता है । बिना खाए रात नीद नही आती । नीद मुश्किल हो जाती है ।

इससे तीसरी बात ख्याल मे ले लें—महावीर का सारा का सारा प्रयोग जागरण का है, अमूर्च्छा का है, होश का, अवेयरनेस का है । तो महावीर कहते हैं—भोजन चूकि मूर्च्छा को बढाता है, तद्रा पैदा करता है, भोजन के बाद नीद अनिवार्य हो जाती है इसलिए भोजन न लिया गया हो, भोजन न किया गया हो, तो इससे उल्टा होगा । होश बढेगा, अवेयरनेस बढेगी, जागरण बढेगा । यह तो हम सब का अनुभव है । एक अनुभव तो हम सब का है कि भोजन के बाद नीद बढती है। रात अगर खाली पेट सोकर देखें तो पता चल जाएगा कि नीद मुश्किल हो जाती है । बार-बार टूट जाती है ।

पेट भरा हो तो नीद बढती है क्यो ? तो उसका वैज्ञानिक कारण है । शरीर के अस्तित्व के लिए भोजन सर्वाधिक महत्वपूर्ण चीज है—सर्वाधिक । आपकी बुद्धि से भी ज्यादा । एक दफा बिना बुद्धि के चल जाएगा ।

सुना है मैंने कि मुल्ला नसरुद्दीन को चोरो ने एकदफा घेर लिया । और उन्होंने कहा—जेब खाली करते हो नही तो खोपडी में पिस्तौल मार देंगे । मुल्ला ने कहा कि बिना खोपडी के चल जाएगा लेकिन खाली जेब के कैसे चलेगा ? मुल्ला ने कहा कि बिना खोपडी के चल जाएगा । बहुत से लोग मैंने देखे हैं, बिना खोपडी के चला रहे हैं, लेकिन खाली जेब नही चलेगा । तुम खोपडी मे गोली मार दो ।

चोर बहुत हैरान हुए होंगे, लेकिन मुल्ला ने ठीक कहा, हम भी यही जानते हैं।

से भर जाए, जाग्रत होकर देख ले तो आपको पहली बार एक क्षण भर के लिए एक जरा-सा अनुभव, एक दृष्टि, एक द्वार खुलता हुआ मालूम पड़ेगा। वही अनशन का उपयोग है। लेकिन जैन साधु है, वह अनशन का अभ्यास कर लेता है, उसे वह कभी नही मिलेगा। वह अभ्यास की बात नही है। वह आकस्मिक प्रयोग है। अभ्यास तो उसी बात को मार डालेगा जिस बात के लिए प्रयोग है। इसलिए भूलकर अनशन का अभ्यास मत करना। आकस्मिक अचानक, छलाग लगा लेना एक अति से दूसरी अति पर ताकि बीच का हिस्सा ख्याल मे आ जाए।

अगर आपको विश्राम मे जाना हो तो किताबे है जो आपको समझाती है कि बस लेट जाए, एड जस्ट रिलेक्स और विश्राम करे। आप कहेगे, कैसे ? अगर मालूम ही होता, जस्ट रिलेक्स इतना आसान होता तो हम पहले ही कर गए होते। आप कहते है कि बस लेट जाओ, रिलेक्स कर जाओ, विश्राम मे चले जाओ। कैसे चले जाए ? लेकिन झेन फकीर ऐसी सलाह नही देते जापान मे। जो आदमी नही सो पाता, विश्राम नही कर पाता वह उससे कहते है—पहले, बी टैंस ऐज मच ऐज यू कैन। हाथ पैरो को खीचो, जितने मस्तिष्क को खीच सकते हो खीचो, हाथ पैरो को जितना तनाव दे सकते हो दो, बिल्कुल पागल की तरह अपने शरीर के साथ व्यवहार करो। जितने तुम तन सकते हो तनो। रिलेक्स भर मत होना, तनो। बी टैंस। वे कहते है—मस्तिष्क को जितना सिकोड सकते हो, माथे की रेखाए जितनी पैदा कर सकते हो, करो। सारे अगो को ऐसे सिकोड लो कि जैसे कि आखिरी क्षण आ गया, सारी शक्ति को सिकोडकर खीच डालो, और जब एक शिखर आता है तनाव का, तब झेन फकीर कहता है—नाउ रिलेक्स, अब छोड़ दो। आप एक अति से ठीक दूसरी अति मे गिर जाते है। और जब आप एक अति से दूसरी अति मे गिरते है तो बीच मे वह क्षण आता है मध्य का, जहा स्वय का पहला स्वाद मिलता है।

इसके बहुत प्रयोग है, लेकिन सब प्रयोग एक अति से दूसरी अति मे जाने के है। कही से भी एक अति से दूसरी अति मे प्रवेश कर जाओ। अगर अभ्यास हो गया तो मध्य का बिन्दु छोटा हो जाता है। इतना छोटा हो जाता है कि पता भी नही चलता। उसका फिर कोई बोध नही होता।

अनशन की कुछ और दो तीन बातें ख्याल मे ले लेनी चाहिए कि महावीर का जोर अनशन पर बहुत ज्यादा था। कारण क्या होगे ? एक तो मैने यह कहा, यह तो उसका एसोटेरिक, उसका आतरिक हिस्सा है, उसका गुह्यतम हिस्सा है। उसका राज, उसका सीक्रेट तो इसमे है। लेकिन और क्या बातें थी ? महावीर जानते है और जो भी प्रयोग किए है इस दिशा मे वे भी जानते है कि शरीर से, इस शरीर से आपका जो सम्बन्ध है वह भोजन के द्वारा है। इस शरीर और आपके बीच जो सेतु है, वह भोजन है। अगर यह जानना हो कि मैं यह शरीर

भोजन तो हम सब्स्टीट्यूट पैदा करते हैं। ध्यान रहे, हमारे मन की गहरी से गहरी तरकीब सब्स्टीट्यूट क्रिएशन है, परिपूरक पैदा करना है। अगर आपको भोजन नही मिलेगा तो मन आपसे भोजन का चिंतन करवाएगा। और उसमे उतना ही रस लेने लगेगा जितना भोजन मे। बल्कि कभी-कभी ज्यादा रस लेगा, जितना भोजन मे भी नही मिलता है। ज्यादा लेना पडेगा, क्योकि जितना भोजन से मिलता है, उतना तो मिल नही सकता चिंतन से, इसलिए चिंतन मे इतना रस लेना पडेगा कि जो भोजन की कमी रह गयी है वह भी चिंतन के रस मे पूरी होती हुई मालूम पडे। इसलिए अगर कामवासना से बचिएगा तो मन कामवासना का चिंतन करने लगेगा। रात कभी आप सोए है और आपने सपना देखा है कि जाकर पानी पी रहे हैं। वह सपना सिर्फ सब्स्टीट्यूट है। आपको प्यास लगी होगी, प्यासे सो गए होगे। भीतर प्यास चल रही होगी और नीद टूटना नहीं चाहती, क्योकि अगर आपको पानी पीना पडेगा तो जागना पडेगा। नीद टूटना नही चाहती, तो नीद एक सपना पैदा करती है कि आप पहुच गए हैं पानी के फ्रीज के पास पानी पी रहे है। पानी पीकर मजे से फिर सो गए है। यह सपना पैदा किया।

यह सपना तरकीब है जिससे प्यास की जो पीडा है वह भूल जाए और नीद जारी रहे। आपके सब सपने बताते हैं कि आपने दिन मे क्या-क्या नही किया है। और कुछ नही बताते। आपके सपने के बिना आपकी जिंदगी को समझना मुश्किल है, इसलिए आज का मनोवैज्ञानिक आपसे नही पूछता कि दिन मे आपने क्या किया, वह पूछता है—रात मे आपने क्या सपना देखा ? अब सोचें थोडा, आपके बाबत जानकारी आपके दिन के काम से मनोवैज्ञानिक नही लेता। वह आपसे नही पूछता कि आपने कुछ भी किया हो, दुकान चलायी कि मन्दिर गए उससे कोई मूल्य नही है। वह पूछता है—सपने मे कहा गए ? वह कहता है—सपने मे आप आथेंटिक हो, प्रामाणिक हो, वहा से पता चलेगा कि आदमी कैसे हो ? आपके जागने से कुछ पता नही चलेगा, वहा तो बहुत धोखाधडी है। जाना था वेश्यालय मे, पहुच गये मन्दिर मे। जागने मे चल सकता है यह, सपने मे नही चल सकता। सपने मे यह धोखा आप नही कर सकते खडा, वेश्यालय मे चले जाएगे। सपने मे आप ज्यादा सरल हैं, सीधे-साफ हैं।

इसलिए मनोवैज्ञानिक को बेचारे को आपके सपने का पता लगाना पडता है, तभी आपके बाबत जानकारी मिलती है। आपसे आपके बाबत जानकारी नही मिलती। आपका जागना इतना झूठा है कि उससे कुछ पता नही चलता, आपकी नीद मे उतरना पडता है कि आप नीद मे क्या कर रहे हो। उससे पता चलेगा, आप आदमी कैसे हो, असली खोज क्या है आपकी ? तो अगर आप दिन में उपवास किए तो उससे पता चलेगा। रात सपने मे भोजन किए या नही, उससे

हैं। भीतर की ही तौल है, अतत आप तौले जाएगे, आपकी परिस्थितिया नही तोली जाएगी। यह नही पूछा जाएगा कि जब आप हत्या करना चाह रहे थे तो आपके पास बन्दूक नही थी इसलिए नही कर पाए। भाव पर्याप्त है, हत्या हो गयी।

अगर आपने भोजन का चिंतन किया, उपवास नष्ट हो गया। तब तो बड़ी कठिनाई है। इसका मतलब यह हुआ कि आप तब तक उपवास न कर पाएगे जब तक आपका चिंतन पर नियन्त्रण न हो, नही कर पाएगे। इसलिए मैंने कहा—चर्चा के लिए हमने नम्बर एक पर रखा है, लेकिन इसको आप अकेला न कर पाएगे जब तक चिंतन पर नियन्त्रण न हो, जब तक चिंतन आपके पीछे न चलता हो, जब तक जो आप चलाना चाहते हो चिंतन मे, वही न चलता हो। अभी तो हालत यह है कि चिंतन जो चलाना चाहता हैं वही आपको चलना पडता है। जहा ले जाता है मन, वही आपको जाना पडता है। नौकर मालिक हो गए हैं।

सुना है मैंने कि अमरीका का एक बहुत बडा करोडपति रथचाइल्ड, सुबह-सुबह जो भी भिखमगे उसके पास आते थे उन्हे कुछ न कुछ देता था। एक भिखमगा नियमित रूप से बीस वर्षों से आता था। वह रोज उसे एक डालर देता था और उसके बूढे बाप के लिए भी एक डालर देता था। बाप कभी आता था, कभी नही आता था, बहुत बूढा था, इसलिए बेटा ही ले जाता था। धीरे-धीरे वह भिखारी इतना आश्वस्त हो गया कि अगर दो-चार दिन न आ पाता तो चार दिन के बाद अपना पूरा बिल पेश कर देता कि पाच दिन हो गए हैं, मैं आ नही पाया चार दिन। वह चार डालर वसूल करता जो उसको मिलने चाहिए। फिर उसका बाप मर गया। रथचाइल्ड को पता चला कि उसका बाप मर गया है। लेकिन फिर भी उसने अपने बाप का भी डालर लेना जारी रखा। महीने भर तक रथचाइल्ड ने कुछ न कहा, क्योकि इसका बाप मरा है, और सदमा देना ठीक नही है। देता रहा। महीने भर बाद उसने कहा कि अब तो हद हो गयी। अब तुम्हारा बाप मर गया, उसका डालर क्यो लेते हो?

उसने कहा—क्या समझते हो? बाप की दौलत का मैं हकदार हू कि तुम? हू इज दि हेयर। मेरा बाप मरा कि तुम्हारा बाप मरा? बाप मेरा मरा है, उसकी सम्पत्ति का मालिक मैं हू।

रथचाइल्ड ने अपनी जीवनकथा मे लिखवाया है कि भिखारी भी मालिक हो जाते है अभ्यास से। चकित हो गया रथचाइल्ड, उसने कहा—ले जा भाई। तू दो डालर ले और अपने बेटे को वसीयत लिख जाना। जब तक हम है देते रहेगे, तेरे बेटे को भी देना पडेगा क्योकि यह वसीयत है।

चिंतन सिर्फ आपका नौकर है, लेकिन मालिक हो गया है। सभी इंद्रिया आपकी नौकर हैं, लेकिन मालिक हो गयी है। अभ्यास लम्बा है। आपने कभी

नही और हा मे बहुत फर्क नही है। आपके व्यक्तित्व मे हा और नही में बहुत फर्क नही है। आपका बेटा आपसे कहता है—यह खिलौना लेना है। आप कहते है—नही। बडी ताकत से कहते है, लेकिन बेटा वही पैर पटकता खडा रहता है, वह कहता है कि लेगे। दुबारा आप कहते है—मान जा, नही लेंगे। आपकी ताकत क्षीण हो गयी है। आपका नही हा की तरफ चल पडा। वह बेटा पैर पटकता ही रहता है। वह कहता, लेगे। आखिर आप लेते है। बेटा जानता है कि आपकी नही का कुल इतना मतलब है कि तीन चार दफे पैर पटकना पडेगा और हा हो जाएगी। और कुछ मतलब नही ज्यादा। छोटे से छोटे बच्चे भी जानते हैं कि आपके न की ताकत कितनी है। एड हाउ मच यू मीन बाई सेइग नो। बच्चे जानते है और आपके न को कैसे काटना है, यह भी वे जानते है। और काट देते है। आपकी न को हा मे बदल देते है। और जितने जोर से आप कहते है नही, उतने जोर से बच्चा जानता है कि यह कमजोरी की घोषणा है। यह आप डरवाने की कोशिश कर रहे है। डरे हुए अपने से ही है कि कही हा न निकल जाए। वह बच्चा समझ जाता है, जोर से बोले हैं, ठीक है, अभी थोडी देर मे ठीक हो जाएगे। नही, जो आदमी सच मे शक्तिशाली है वह जोर से नही नही कहता है, वह शान्ति से कह देता है, नही। और बात समाप्त हो गयी।

आपकी इन्द्रिया भी ठीक इसी तरह का टानट्रम सीख लेती है जैसा बच्चा सीख लेते है। आप कहते है—आज भोजन नहीं; तो आप हैरान होगे, अगर आप रोज ग्यारह बजे भोजन करते है तो आपको रोज ग्यारह बजे भूख लगती है। लेकिन अगर आपने कल रात तय किया कि कल उपवास करेंगे तो छ' बजे से भूख लगती है। यह बडे आश्चर्य की बात है। ग्यारह बजे रोज भूख लगती थी, छ बजे कभी नही लगती थी। हुआ क्या ? क्योंकि अभी आपने, अभी तो कुछ किया नही, अभी तो अनशन भी शुरू नही हुआ, वह ग्यारह बजे शुरू होगा। सिर्फ ख्याल, रात मे तय किया कि कल अनशन करना है, उपवास करना है, सुबह से भूख लगने लगी। सुबह से क्या रात से शुरू हो जाएगी। वह आपके पेट ने आपके न और हा मे बदलने की कोशिश उसी वक्त शुरू कर दी। उसने कहा तुम क्या समझते हो ? ग्यारह बजे तक वह नही रुकेगा। भूख इतने जोर से कभी नही लगती थी। रोज तो ऐसा था असल में कि ग्यारह बजे खाते थे इसलिए खाते थे। वह एक समय का बन्धन था। लेकिन आज भूख बडे जोर से लगेगी, और अभी ग्यारह नही बजे इसलिए वस्तुत तो कही कोई फर्क नही पडा है। रोज भी ग्यारह बजे तक भूखे रहते थे, कोई फर्क नही पडा है कही लेकिन चित्त मे फर्क पड गया और इन्द्रिया अपनी मालकियत कायम करने की कोशिश करेगी। वह कहेगी कि नही, बहुत जोर मे भूख लगी है, इतने जोर से कभी नही लगी थी, ऐसी भूख लगी है।

अपनी इन्द्रियो को कोई आज्ञा नही दी। आपकी इन्द्रियो ने आपको आज्ञा दी है।

तप का एक अर्थ आपको कहता हू—तप का अर्थ है—अपनी इन्द्रियो की मालकियत। उनको आज्ञा देने की सामर्थ्य। पेट कहता है भूख लगी है, आप कहते है ठीक है, लगी है, लेकिन मैं आज भोजन लेने को राजी नही हू। आप पेट से अलग हुए। मन कहता है कि आज भोजन का चिंतन करेंगे, और आप कहते हैं कि नही, जब भोजन ही नही किया तो चिन्तन क्या करेंगे ? चिन्तन नही करेंगे। तो ही आप अनशन कर पाएगे और उपवास कर पाएगे। अन्यथा कोई फर्क नही लगेगा। पेट कहता रहेगा भूख लगी है, मन चिन्तित करता रहेगा। आप और उलझ जाएगे, और परेशान हो जाएगे। और जैसा वह चार दिन के बाद अपना बिल लेकर हाजिर हो जाता था भिखारी, चार दिन के उपवास के बाद पेट अपना बिल लेकर हाजिर हो जाएगा कि चार दिन भोजन नही किया, अब ज्यादा कर डालो। तो पर्युषण के बाद दस दिन मे सब पूरा कर डालेंगे। दुगुने तरह से बदला ले लेंगे। जो-जो चूक गया, उसको ठीक से भरपूर कर लेंगे। अपनी जगह वापस खडे हो जाएगे।

उपवास हो सकता है तभी जब चिन्तन पर आपका वश हो। लेकिन चिन्तन पर आपका कोई भी वश नही है। आपने कभी कोई प्रयोग नही किया। हमे चिन्तन की तो ट्रेनिंग दी गई है, हमे विचार का तो प्रशिक्षण दिया गया है लेकिन विचार की मालकियत का कोई प्रशिक्षण नही है। आपको स्कूल मे, कालेज मे विचार करना सिखाया जा रहा है, दो और दो जोडना सिखाया जा रहा है—सब सिखाया जा रहा है। एक बात नही सिखायी जा रही है कि दो और दो जब जोडना हो तभी जोडना, जब न जोडना हो मत जोडना। लेकिन अगर मन दो और दो जोडना चाहे तो आप रोक नही सकते। आप कोशिश करके देख लें आज घर। कहे कि हम दो और दो न जोडेंगे और मन दो और दो जोडेगा, उसी वक्त जोडेगा। वह आपको डिफाई करेगा, वह कहेगा तुम हो क्या ? हम दो और दो जोडकर बताते हैं, तुम कहते हो नही जोड़ेगे, हम जोडकर बताते है, दो और दो चार होते है। आप आज कोशिश करना कि दो और दो हमे नही जोडना है, फौरन मन कहेगा, चार। आप कहना हमे जोडना नही है, वह कहेगा चार। वह आपको डिफाई करता है। और उसको डिफाई करना चाहिए। क्योकि उसकी मालकियत आप छीन रहे है। अब तक आपने उसको मालिक बनाकर रखा है। एक दिन मे यह नही हो जाएगा। लेकिन अगर इसके प्रति सजगता आ जाए और यह ख्याल आ जाए कि मैं अपनी ही इन्द्रियो का गुलाम हो गया हू तो शायद थोडी यात्रा करनी पडे—थोडी यात्रा करनी पडे इन्द्रियो के विपरीत। अनशन, वैसी ही यात्रा की शुरुआत है।

महावीर कहते है, ठीक। आज नही, बात समाप्त हो गयी। लेकिन आपके

से क्या होगा। बाहर का परिवर्तन करने तक की सामर्थ्य नहीं जुटती, भीतर के परिवर्तन के सपने देख रहे हैं। बाहर इतना बाहर नहीं है जितना आप सोचते हैं। वह आपके भीतर तक फैला हुआ है। भीतर इतना भीतर नहीं है जितना आप सोचते हैं, वह आपके कपड़ो तक आ गया है। वह सब तरफ फैला हुआ है।

अपने को धोखा देना बहुत आसान है। जो भूखा नहीं रह सकता वह कहेगा अनशन मे क्या होगा ? भूखे मरने मे क्या होगा ? कुछ नही होगा। जो नग्न खडा नही हो सकता, वह कहेगा नग्न खडे करने मे क्या होगा ? इससे क्या होने वाला है ? उपवास से कुछ भी नही होगा, तो क्या भोजन करने मे हो जाएगा ? नग्न खडे होने मे नही होगा, तो क्या कपडे पहनने से हो जाएगा ? तो गेरुवा वस्त्र पहनने से नहीं होगा तो दूसरे रग के वस्त्र पहनने से हो जाएगा ? क्योंकि दूसरे रग के वस्त्र पहनते वक्त उसने यह दलील कभी नहीं दी कि कपडो से क्या होगा, लेकिन गेरुवा वस्त्र पहनते वक्त वही आदमी दलील लेकर आ जाता है कि कपडे से क्या होगा ? हमारा मन, हमारी इन्द्रिया, हमारे कपडे, हमारी चीजें, सब दलीलें होती हैं और हम रेशनेलाइज करते है।

ध्यान रहे, रीजन और रेशनेलाइजेशन मे बहुत फर्क है। बुद्धिमत्ता मे और बुद्धिमत्ता का धोखा खडा करने मे बहुत फर्क है। और जब हाथ कहता है कि थक जाएगे, मर जाएगे। गुरजिएफ कहता है कि तुम नीचे मत करना, अगर हाथ थक जाएगा तो गिर जाएगा, तुम नीचे मत करना। गिर जाएगा तो गिर जाएगा, तुम करोगे क्या ? अगर हाथ सच मे ही थक जाएगा तो रुकेगा कैसे ? जब तक रुका है, तब तक तुम मत गिराना। तुम अपनी तरफ से मत गिराना। अगर हाथ गिरे तो तुम देख लेना कि गिर रहा है। पर तुम कोआप्रेट मत करना, तुम सहयोग मत देना। पर बारीक है बात। हम बडे धोखे से सहयोग दे सकते है। हम कह सकते हैं यह हाथ गिर रहा है, हम थोडे ही गिरा रहे है। यह हाथ गिर रहा है, और आप भली-भाति जानते हैं कि यह गिर नही रहा है, आप गिरा रहे है। इतने भीतर अपने को साफ-साफ देखना पडेगा अपनी बेईमानियो को, अपनी वचनाओ को, अपने डिसेप्सस को। और जो आदमी अपनी वचनाओ को नही देखता, उसके हा और न मे फर्क नहीं रह जाता। वह न कहता है और हा कर लेता है। हा कहता है और न कर लेता है।

मुल्ला नसरुद्दीन का लडका पैदा हुआ। बडा हुआ तो नसरुद्दीन ने सोचा कि क्या बनेगा, इसकी कुछ जाच कर लेनी चाहिए। उसने कुरान रख दी, पास एक शराब की बोतल रख दी, एक दस रुपए का नोट रख दिया और छोड दिया उसको कमरे मे और छिपकर खडा हो गया। लडका गया, उसने दस रुपये का नोट जेब मे रखा, कुरान बगल मे दबायी और शराब पीने लगा। नसरुद्दीन भागा, अपनी बीबी से बोला कि यह राजनीतिज्ञ हो जाएगा। कुरान पढता तो सोचते

निश्चित ही कोई भी अपनी मालकियत आसानी से नही छोड देता। एक बार मालकियत दे देना आसान है, वापस लेना थोडा कठिन पड़ता है। वही कठिनता तपश्चर्या है। लेकिन, अगर आप सुनिश्चित है और आपके न का मतलब न, और हा का मतलब हा होता है—सच मे होता है, तो इन्द्रिया बहुत जल्दी समझ जाती हैं। बहुत जल्दी समझ जाती है कि आपके न का मतलब न है और आपके हा का मतलब हा है।

इसलिए मैं आपसे कहता हू, सकल्प अगर करना है तो फिर तोडना मत, अन्यथा करना ही मत। क्योकि सकल्प करके तोडना आपको इतना दुर्बल कर जाता है कि जिसका कोई हिसाव नही। सकल्प करना ही मत, वह वेहतर है। क्योंकि सकल्प टूटेगा नही तो उतनी दुर्वलता नही आएगी। एक भरोसा तो रहेगा कि कभी करेंगे तो पूरा कर लेंगे। लेकिन सकल्प करके अगर आपने तोडा तो आप अपनी ही आखो मे, अपने ही सामने दीन-हीन हो जाएगे। और सदा के लिए वह दीनहीनता आपके पीछे रहेगी। और जब भी आप दुवारा सकल्प करेंगे, तव आप पहले से ही जानेगे कि यह टूटेगा। यह चल नही सकता। छोटे सकल्प से शुरु करें, वहुत छोटे सकल्प से शुरू करें।

गुरजिएफ वहुत छोटे सकल्प से शुरू करवाता था। वह कहता इस हाथ को ऊचा कर लो। अव इसको नीचे मत करना। जैसे ही तय किया कि नीचे मत करना, पूरा हाथ कहता है नीचे करो। अव इसको नीचे मत करो। अव चाहे कुछ भी हो जाए इसको नीचे मत करना। जव तक कहता था गुरजिएफ मैं न कहूं हाथ को नीचे मत करना। हाथ दलीलें करेगा। आप सोचेंगे, हाथ कैसे दलीलें करेगा? हाथ दलील करता है। वह आरगू करेगा। वह कहेगा—वहुत थक गया हूं, तू नीचे कर ले। वह कहेगा—गुरजिएफ यहा कहा देख रहा है, एक दफे ऊपर करके नीचे कर लो। उसकी तो पीठ है। और ध्यान रखें, गुरजिएफ जव भी ऐसी आज्ञा देता था तो पीठ करके बैठता था। हाथ पच्चीस आरगूमेंट खोजेगा। वह कहेगा—ऐसे मे कही लकवा न लग जाए। और फिर हाथ कहेगा इससे फायदा भी क्या, हाथ ऊचे करने से कोई भगवान मिलने वाला है? अरे हाथ तो शरीर का हिस्सा है, इससे आत्मा का क्या सम्बन्ध है?

मेरे पास लोग आते है। वे कहते हैं—कपडे वदलने मे क्या होगा? आत्मा वदलनी है। कपडा वदलने की हिम्मत नही है, आत्मा वदलनी है। वे कहते हैं—आत्मा वदलने से होगा। तो कपडे वदलने से क्या होगा? वे सोच रहे हैं यह दलील वे दे रहे हैं, यह उनके कपडे दे रहे हैं। यह दलील उनकी नहीं है, यह उनके कपडो की है। वह जो घर मे साडियो का ढेर लगा हुआ है, वे साडिया कह रही है कि कपड़े से क्या होगा? लेकिन वे सोच रहे हैं कि वहुत आत्मिक खोज कर लाए। वे कह रहे हैं कि भीतर का परिवर्तन चाहिए, वाहर के परिवर्तन

कर लिया था पहले दिन भोजन के छोडने के, वह पूरा नही होता, वे वापस लौट आते। क्योकि वे कहते कि जब नियति की ही इच्छा नही है तो हम क्यो इच्छा करें ? जब कॉस्मिक, जब जागतिक शक्ति कहती है कि नहीं आज भोजन, तो बात खत्म हो गयी। अब तुम जानो, तुम्हारा काम जाने, नियति जाने। वे वापस लौट आते। गाव भर रोता, गाव भर परेशान होता क्योकि गाव मे अनेक लोग खडे होते भोजन ले लेकर और अनेक इतजाम करके खडे होते।

अभी भी खडे होते हैं, लेकिन अब जैन दिगम्बर मुनि—वैसा प्रयोग करता है अभी भी—लेकिन वह सब जाहिर है कि वह क्या-क्या नियम लेता है। पाच-सात नियम जाहिर हैं, वह वही के वही लेता है, पाच-सात घरो मे वे नियम पूरे कर देते है। किसी घर के सामने केले लटके होगे। अब वह मालूम है। वे केले लटका लेते हैं सब लोग अपने घर के सामने। कोई स्त्री सफेद साडी पहनकर भोजन के लिए निमत्रण करेगी, वह मालूम है। अब पाच-सात नियम फिक्स्ड हो गए है। पाच-सात नियम पाच-सात घरो मे लोग खडे हो जाते हैं करके। अब जैन मुनि कभी बिना भोजन लिए नही लौटता। निश्चित ही वह महावीर से ज्यादा होशियार है। कभी नहीं लौटता खाली हाथ। तब तो उसको मिलता ही है इसलिए पक्का मामला है उसको और उसको बनाने वाले, भोजन बनाने वालो मे कोई न कोई साठगाठ है। भोजन बनाने वालो को पता है, उसको पता है। वह वही नियम लेता है वही भोजन बनाने वाले पूरा कर देते है। भोजन लेकर वह लौट जाता है। आदमी अपने को कितने धोखे दे सकता है !

महावीर की प्रक्रिया बहुत और है। वह यह थी—वे किसी को कहेंगे नही, वह उनके भीतर है बात। अब वह क्या है ? कभी-कभी तीन महीने महावीर को खाली बिना भोजन लिए गाव से लौट जाना पडा। बात खत्म हो गयी; पर इन-डेफिनिट है। और जब मन के लिए कोई सीमा नही होती तो मन को तोडना बहुत आसान हो जाता है; जब मन के लिए सीमा होती है तो खीचना बहुत आसान होता है। एक ही घटे की तो बात है, तो निकाल देंगे। चौबीस घटे की बात है, गुजार देंगे लेकिन इनडेफिनिट। महावीर का जो अनशन था, उसकी कोई सीमा न थी। वह कब पूरा होगा कि नही होगा, कि यह जीवन का अतिम होगा भोजन, इसके बाद नही होगा इसका भी कुछ पक्का पता नही। वह कल पर है, कल की बात है। कल गाव मे वे जाएगे—हो गया, हो गया, नही हुआ, नहीं हुआ, बस लौट आएगे, बात खत्म हो गयी।

इसलिए महावीर ने उपवास और अनशन पर जैसे गहरे प्रयोग किए इस पृथ्वी पर किसी ने कभी नही किए। मगर आश्चर्य की बात हे कि इतने कठिन प्रयोग करके भी महावीर को फिर भी भोजन तो कभी-कभी मिल ही जाता था। बारह वर्ष मे तीन सौ पैंसठ बार भोजन मिला। कभी पन्द्रह दिन बाद, कभी दो महीने

धार्मिक हो जाएगा, शराब पीता तो सोचते अधार्मिक हो जाएगा, रुपया जेब मे रखकर भाग गया होता तो सोचते व्यापारी हो जाएगा। यह पॉलिटिशियन हो जाएगा। यह कहेगा कुछ, करेगा कुछ, होगा कुछ। यह सब एक साथ करेगा।

हमारा चित्त ऐसा ही कर रहा है—धर्म भी कर रहा है, अधर्म भी सोच रहा है। जो कर रहा है, जो सोच रहा है, दोनो से कोई सम्बन्ध नही है, खुद कुछ और ही हे। और यह सब जाल एक साथ है। तपश्चर्या इस जाल को काटने का नाम है और व्यक्तित्व को एक प्रतिभा देने की प्रक्रिया है। इस बात की कोशिश है कि व्यक्तित्व मे एक स्पष्ट रूप निखर आए, एक आकार बन जाए। आप ऐसे विकृत कुछ भी आकार न रह जाए, आप मे एक आकार उभरे, आहिस्ता-आहिस्ता आप स्पष्ट होते जाए, एक क्लेरिटी हो। अगर आपको नही भोजन लेना है तो नही लेना है, या आपके पूरे व्यक्तित्व की आवाज हो जाए, बात खत्म हो गयी। अब यह बात नही उठेगी जब तक नही लेना है।

महावीर तो बहुत अनूठा प्रयोग करते थे क्योकि यह भी हो सकता है, उसको बचाव के लिए वह प्रयोग था। यह भी हो सकता है कि आपने तय कर लिया है कि चौबीस घंटे नही लेंगे भोजन और न सोचेंगे। तो मन कहता है—कोई हर्जा नही, चौबीस ही घटे की बात है न। चौबीस घटे बाद तो सोचेंगे, करेंगे। ठीक है कोई तरफ चौबीस घटे निकाल देंगे। मन इसके लिए भी राजी हो सकता है। क्योकि इनडेफिनिट नही है मामला, डेफिनिट है, निश्चित हे। चौबीस घटे के बाद तो कर ही लेना है, तो चौबीस ही घटे की बात है न! एक मजबूरी जैसा आप ढो लेगे। लेकिन तब आपको उपवास की प्रफुल्लता न मिलेगी, बोझ होगा। तब उपवास का आनन्द आपके भीतर न खिलेगा। वह इक्सटैसी, वह लहर आपके भीतर न आएगी जो इद्रियो के ऊपर मालकियत के होने से आती है। तब सिर्फ एक बोझ होगा कि चौबीस घटे ढो लेना है। गुजार देंगे चौबीस घटे। निकाल देगें चौबीस घटे। काट लेंगे समय को स्थानक मे, मदिर मे देरासर मे, कही बैठकर समय गुजार देगें, किसी तरह निपटा ही देगें।

लेकिन-तब, तब अनशन नही हुआ। महावीर निश्चित न करते थे कि कब भोजन लेंगे। और अनिश्चय पर छोडते थे, नियति पर। बहुत हेरानी का प्रयोग था, वह महावीर ने अकेले ही इस पृथ्वी पर किया। वे कहते थे कि भोजन मैं तब लूगा जब ऐसी घटना घटेगी। अब घटना अपने हाथ मे नही। रास्ते पर निकलूगा अगर किसी बैलगाडी के सामने कोई आदमी खडा होकर रो रहा होगा, अगर बैल काले रग के होगे, अगर उस आदमी की एक आख फूटी होगी और एक आख से आसू टपक रहा होगा, तो मै भोजन ले लूगा। और वह भी अगर वही कोई भोजन देने के लिए निमत्रण दे देगा। नही तो आगे बढ जाऊगा। अनेक दिन महावीर गाव मे जाते, वे जो तय करके जाते थे—जो तय उन्होने

उतने ही नियति पर अपने को छोडकर। जो मर्जी इस विराट की, इस अनत सत्ता की जो मर्जी, वही उसके लिए राजी। ऐसा भी नही कि पसीना आएगा तो वे परेशान होगे, कि नाराज ही होगे। पसीने के लिए राजी होगे, दुर्गन्ध आएगी, दुर्गन्ध के लिए राजी होगे। असल मे राजी होने से एक नयी तरह की सुगन्ध जीवन मे आनी शुरु होती है। एक्सेप्टविलिटी। जव हम सव स्वीकार कर लेते हैं तो एक अनूठी सुगन्ध से जीवन भरना शुरु हो जाता है। सव दुर्गन्ध अस्वीकार की दुर्गन्ध है। सव दुर्गन्ध अस्वीकार की दुर्गन्ध है और सव कुरूपता अस्वीकार की कुरूपता है। स्वीकार के साथ ही एक अनूठा सौन्दर्य है और स्वीकार के साथ ही एक अनूठी सुगन्ध से जीवन भर जाता है, एक सुवास से जीवन भर जाता है।

महावीर को पानी गिरे तो समझेंगे, स्नान कराना था वादलो को। इसको जव कथाओ मे लिखा गया तो हमने वडी भूलें कर दी। क्योकि कथाए तो कवि लिखते है और जव लिखते है तो फिर प्रतीक और सारा काव्य उसमे सयुक्त होता है, मिथ वन जाती है। कवियो ने जव इसी वात को कहा तो खराव हो गयी वात। मजा चला गया। कवियो ने कहा—जव देवताओ ने स्नान करवाया, सव वात खराव हो गई, उसका मजा चला गया। वह मजा ही चला गया, वात ही खत्म हो गई। अभिषेक देवताओ ने किया। महावीर खुद तो स्नान नही करते तो देवता वेचैन हो गए, वे आए और उन्होने स्नान करवाया। असल मे ऐसी वात नही है। वात कुल इतनी ही है कि महावीर ने समस्त पर स्वय को छोड दिया। जव वादल वरसे स्नान हो गया। लेकिन उन दिनो लोग वादलो को भी देवता कहते थे। इन्द्र था। तो कथा मे जव लिखा गया तो लिखा गया कि इन्द्र आया और उसने स्नान करवाए। ये सव प्रतीक हैं। वात कुल इतनी है कि महावीर ने छोड दिया नियति पर, प्रकृति पर सव, जो करना हो कर, मैं राजी!

यह राजी होना अहिंसा है। और इस राजी होने के लिए उन्होने अनशन को प्राथमिक सूत्र कहा है। क्यो? क्योकि आप राजी कैसे होगे जव तक आपकी सव इन्द्रिया आपसे राजी नही है तो आप प्रकृति से राजी कैसे होगे? इसे थोडा देख लें। यह डवल हिस्सा हे। आपकी इन्द्रिया ही आपसे राजी नही हैं—पेट कहता है भोजन दो; शरीर कहता है कपडे दो, पीठ कहती है विश्राम चाहिए। आपकी एक-एक इन्द्रिय आपसे वगावत किए हुए है। वह कहती है यह दो, नही तो तुम्हारी जिन्दगी वेकार है, अकारथ है। तुम वेकार जी रहे हो। मर जाओ, इससे तो वेहतर है अगर एक अच्छा विस्तर नही जुटा पा रहे हो—मर जाओ। आपकी इन्द्रिया आपसे नाराजी है, आपसे राजी नही हैं। और आपको खीच रही है, तो आप इस विराट से कैसे राजी हो पाएगे! इतने छोटे-से शरीर मे इतनी छोटी-सी इन्द्रिया आपसे राजी नही हो पाती, तो इस विराट शरीर मे, इस ब्रह्माड मे आप कैसे राजी हो पाएगे। और फिर जव तक आपका ध्यान इन्द्रियो से उलझा है

वाद, कभी तीन महीने वाद, कभी चार महीने वाद, पर भोजन मिला । तो महावीर कहते थे—जो मिलने वाला है वह मिल ही जाता है । और महावीर कहते थे—त्याग तो उसी का किया जा सकता है जो नही मिलने वाला हे । उसका तो त्याग भी कैसे हो सकता है जो मिलने वाला ही है । और तब महावीर कहते थे—जो नियति से मिला है, उसका कर्म-वधन मेरे ऊपर नही है । मेरा नही है कोई सम्बन्ध उससे । क्योकि मैंने किसी से मागा नही, मैंने किसी से कहा नही, छोड दिया अनत के ऊपर । कि होगी जगत् को कोई जरूरत मुझे चलाने की तो और चला लेगा । और नही होगी जरूरत तो बात खत्म हो गयी । मेरी अपनी कोई जरूरत नहीं है । ध्यान रहे महावीर की सारी प्रक्रिया जीवेपणा छोडने की प्रक्रिया है । महावीर कहते है—मैं जीवित रहने के लिए कोई एपणा नही करता हू । अगर इस अस्तित्व को ही, अगर इस होने को ही जरूरत हो मेरी कोई, इतजाम तुम जुटा लेना, वह मेरा इतजाम नहीं है । और तुम्हे कोई जरूरत न रह जाए तो मेरी तरफ से जरूरत पहले ही छोड चुका हू ।

लेकिन आश्चर्य तो यही है कि फिर भी महावीर जिये चालीस वर्ष—स्वस्थ जिये, आनद से जिये । इस भूख ने उन्हे मार न डाला । इस नियति पर छोड देने से वे दीन-हीन न हो गए । यह जीवेषणा को हटा देने से मौत न आ गयी । जरूर वहुत से राज पता चलते है । हमारी यह चेष्टा कि मैं ही मुझे जिला रहा हू, विक्षिप्तता है । और हमारा यह ख्याल कि जव तक मैं न मरूगा, कैसे मरूगा ? नासमझी है । वहुत कुछ हमारे हाथ के वाहर है, उसे भी हम समझते है कि हमारे हाथ के भीतर है । जो हमारे हाथ के बाहर हैं उसे हाथ के भीतर समझने से ही अहकार का जन्म होता है । जो हमारे हाथ के वाहर हे, उसे हाथ के बाहर ही समझने से अहकार विसर्जित हो जाता है ।

महावीर अपना भोजन भी पैदा नही करते । महावीर स्नान भी नही करते अपनी तरफ से । वर्षा का पानी जितना धुला देता है, धुला देता है । लेकिन वडी मजेदार वात हे कि महावीर के शरीर से पसीने की दुर्गंध नही आती थी । आनी चाहिए, वहुत ज्यादा आनी चाहिए, क्योकि महावीर स्नान नही करते हैं । पर आपने कभी ख्याल किया, सैकडो पशु पक्षी है, स्नान नही करते । वर्षा का पानी वस काफी है । उनके शरीर से दुर्गन्ध आती है । एक आदमी अकेला ऐसा जानवर है जो वहुत दुर्गन्धित है, डीओडरेट की जरूरत पडती है । रोज सुगन्ध छिडको, डीओडरेंट साबुनो से नहाओ, सव तरह का इतजाम करो, फिर भी पाच-सात मिनट किसी के पास बैठ जाओ तो असली खवर मिल जाती हे ।

आदमी अकेला जानवर है जो दुर्गन्ध देता हे । महावीर के जीवन मे जिन लोगो को जानकारी थी, जो उनके निकट थे वे वहुत चकित थे कि उनके शरीर से दुर्गन्ध नही आती । असल मे महावीर ऐसे जीते है, जैसे पशु पक्षी जीते है,

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

तब तक आपका ध्यान उस विराट पर जाएगा भी कैसे, यही क्षुद्र मे ही अटका रह जाता है। कभी पैर मे काटा गड जाता है, कभी सिर मे दर्द हो जाता है; कभी यह पसली दुखती है, कभी वह इन्द्रिय माग करती हे। इन्ही के पीछे दौडते-दौडते सब समय जाया हो जाता है।

तो महावीर कहते है—पहले इन इन्द्रियो को अपने से राजी करो। अनशन का वही अर्थ है कि पेट को अपने से राजी करो तुम पेट से राजी मत हो जाओ। जानो भलीभाति कि पेट तुम्हारे लिए है, तुम पेट के लिए नही हो। लेकिन बहुत कम लोग है जो हिम्मत से यह कह सके कि हम पेट के लिए नही है। भलीभाति वह जानते है कि हम पेट के लिए है, पेट हमारे लिए नही है। हम साधन है और पेट साध्य हो गया है। पेट का अर्थ, सभी इन्द्रिया साध्य हो गयी है। खीचती रहती है, बुलाती रहती है, हम दौडते रहते है।

मुल्ला नसरूद्दीन एक दिन अपने मकान पर बैठकर खप्पर ठीक कर रहा है। वर्षा आने के करीब है, वह अपने खपडे ठीक कर रहा है। एक भिखारी ने नीचे से आवाज दी कि नसरूद्दीन नीचे आओ। नसरूद्दीन ने कहा कि तुझे क्या कहना है, वही से कह दे। उसने कहा—माफ करो, नीचे आओ। नसरूद्दीन बेचारा सीढियो से नीचे उतरा, भिखारी के पास गया। भिखारी ने कहा कि कुछ खाने को मिल जाए। नसरूद्दीन ने कहा—नासमझ! यह तो तू नीचे से ही कह सकता था। इसके लिए मुझे नीचे बुलाने की जरूरत? उसने कहा—बडा सकोच लगता था, जोर से बोलूगा कोई सुन लेगा। नसरूद्दीन ने कहा—बिल्कुल ठीक। चल, ऊपर चल। भिखारी बडा मोटा तगडा था। बामुश्किल चढ पाया। जाकर नसरूद्दीन ऊपर अपने खपडे जमाने मे लग गया। थोडी देर भिखारी खडा रहा। उसने कहा कि भूल गए क्या? नसरूद्दीन ने कहा—भीख नही देनी है, यही कहने के लिए ऊपर लाया हू। उसने कहा—तू आदमी कैसा है, नीचे ही क्यो न कह दिया? नसरूद्दीन ने कहा—बडा सकोच लगा। कोई सुन लेगा। जब तू भिखारी होकर मुझे नीचे बुला सकता है तो मै मालिक होकर तुझे ऊपर नही बुला सकता?

पर सब इन्द्रिया हमे नीचे बुलाए चली जाती है, हम इन्द्रियो को ऊपर नही बुला पाते। अनशन का अर्थ है—इन्द्रियो को हम ऊपर बुलाएगे, हम इन्द्रियो के साथ नीचे नही जाएगे।

आज इतना ही—कल हम दूसरे तथ्य पर विचार करेगे। लेकिन पाच मिनट जाएगे नही, बैठे रहेगे।

भीतर एक बायोलॉजिकल क्लाक है, आदमी के भीतर एक जैविक घडी है। लेकिन आदमी के भीतर एक हैबिट क्लाक भी है, आदत की घडी भी है। और जीव विज्ञानी जिस घडी की बात करते है, जो हमारे गहरे मे है उसके ऊपर हमारी आदत की घडी है जो हमने अभ्यास मे निर्मित कर ली है। इस पृथ्वी पर ऐसे कबीले है, जो दिन मे एक ही बार भोजन करते है—हजारो वर्षों से। और जब उन्हे पहली बार पता चला कि ऐसे लोग भी हैं जो दिन मे दो बार भोजन करते है तो वे बहुत हैरान हुए। उनकी समझ मे नही आया कि दिन मे दो बार भोजन करने का क्या प्रयोजन होता है! इस पृथ्वी पर ऐसे कबीले है जो दिन मे दो बार भोजन कर रहे हैं हजारो वर्षों से। ऐसे भी कबीले हैं जो दिन मे पाच बार भी भोजन कर रहे है। इसका बायोलॉजिकल, जैविक जगत् से कोई सम्बन्ध नही है। हमारी आदतो की बात है। आदते हम निर्मित कर लेते है इसलिए आदतें हमारा दूसरा स्वभाव बन जाती हैं। और हमारा प्राथमिक स्वभाव आदतो के जाल के नीचे ढक जाता है।

झेन फकीर बोकोजू से किसी ने पूछा कि तुम्हारी साधना क्या है? उसने कहा—जब मुझे भूख लगती है तब मैं भोजन करता हू। और जब मुझे नीद आती है तब मैं सो जाता हू। और जब मेरी नीद टूटती है तब मै जग जाता हू। उस आदमी ने कहा—यह भी कोई साधना है, यह तो हम सभी करते है! बोकोजू ने कहा—काश, तुम सभी यह कर लो तो इस पृथ्वी पर बुद्धो की गिनती करना मुश्किल हो जाए। यह तुम नही करते हो। तुम्हे जब भूख नही लगती, तब भी तुम खाते हो। और जब तुम्हे भूख लगती है तब भी तुम हो सकता है न खाते हो। और जब तुम्हे नीद नही आती, तब तुम सो जाते हो। और यह भी हो सकता है कि जब तुम्हे नीद आती हो तब तुम न सोते हो। और जब तुम्हारी नीद नही टूटती तब तुम उसे तोड लेते हो, और जब टूटनी चाहिए तब तुम सोए रह जाते हो। यह विकृति हमारे भीतर दोहरी प्रक्रियाओ से हो जाती है। एक तो हमारा स्वभाव है, जैसा प्रकृति ने हमे निर्मित किया। प्रकृति सदा सन्तुलित है। प्रकृति उतना ही मागती है जितनी जरूरत है। आदतो का कोई अन्त नही है। आदते अभ्यास हैं, और अभ्यास से कितना ही मागा जा सकता है।

सुना है मैंने कि मुल्ला नसरूद्दीन के गाव मे एक प्रतियोगिता हुई कि कौन आदमी सबसे ज्यादा भोजन कर सकता है। मुल्ला ने सभी प्रतियोगियो को बहुत पीछे छोड दिया। कोई बीस रोटी पर रुक गया, कोई पच्चीस रोटी पर रुक गया, कोई तीस रोटी पर रुक गया। फिर लोग घबराने लगे क्योंकि मुल्ला पच्चीस रोटी पर चल रहा है, और लोग रुक गये थे। लोगो ने कहा—मुल्ला, अब तुम जीत ही गए हो। अब तुम अकारण परेशान मत करो, अब तुम रुको। मुल्ला ने कहा—मैं एक ही शर्त पर रुक सकता हू कि मेरे घर कोई खबर न

ऊणोदरी एवं वृत्ति-संक्षेप

ग्यारहवा प्रवचन   दिनाक २८ अगस्त, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

अनशन के बाद महावीर ने दूसरा बाह्य-तप ऊणोदरी कहा है। ऊणोदरी का का अर्थ होता है—अपूर्ण भोजन, अपूर्ण आहार। आश्चर्य होगा कि अनशन के बाद ऊणोदरी के लिए क्यो महावीर ने कहा है। अनशन का अर्थ तो है निराहार। अगर ऊणोदरी को कहना भी था तो अनशन के पहले कहना था—थोडा आहार। और आमतौर से जो लोग भी अनशन का अभ्यास करते हैं वे पहले ऊणोदरी का अभ्यास करते है। वे पहले आहार को कम करने की कोशिश करते है। जब आहार कम मे सुविधा हो जाती है, आदत हो जाती है तो ही वे अनशन का प्रयोग करते है और यह बिल्कुल ही गलत है। महावीर ने जानकर ही पहले अनशन कहा और फिर ऊणोदरी कहा। ऊणोदरी का अभ्यास आसान है। लेकिन एक बार ऊणोदरी का अभ्यास हो जाए तो अभ्यास हो जाने के बाद अनशन का कोई अर्थ, कोई प्रयोजन नही रह जाता। वह मैं आपसे कल कहा कि अनशन तो जितना आकस्मिक हो और जितना अभ्यासशून्य हो, जितना प्रयत्नरहित हो, जितना अव्यवस्थित और अराजक हो, उतनी ही बड़ी छलाग भीतर दिखाई पडती है।

ऊणोदरी को द्वितीय नम्बर महावीर ने दिया है, उसका कारण समझ लेना जरूरी है। ऊणोदरी शब्द का तो इतना ही अर्थ होता है कि जितना पेट मागे उतना नही देना। लेकिन आपको यह पता ही नही है कि पेट कितना मागता है। और अक्सर जितना मागता है वह पेट नही मागता है, वह आपकी आदत मागती है। और आदत मे और स्वभाव मे फर्क न हो तो अत्यन्त कठिन हो जाएगी बात। जब रोज आपको भूख लगती है, तो आप इस भ्रम मे मत रहना कि भूख लगती है। स्वाभाविक भूख तो बहुत मुश्किल से लगती है; नियम से बधी हुई भूख रोज लगती है। जीव विज्ञानी कहते है, बायोलॉजिस्ट कहते है कि आदमी के

गई क्योकि वह असली भूख न थी। दो चार दिन पुकार कर आवाज दे दी कि भूख लगी है, ठीक समय पर। फिर दो-चार दिन आप उसकी नही सुनेंगे, वह शात हो जाएगी। फिर आपके भीतर से स्वाभाविक भूख आवाज देगी। जब आप उसकी भी नही सुनेंगे तभी आपके भीतर का यन्त्र रूपातरित होगा और आप स्वय को पचाने के काम मे लगेंगे।

तो पहले आदत की भूख टूटेगी। वह तीन दिन मे टूट जाती है, चार दिन मे टूट जाती है, एक दो दिन किसी को आगे पीछे लगता है। फिर स्वाभाविक भूख की व्यवस्था टूटेगी और तब आप दूसरी व्यवस्था पर जाएगे। लेकिन अनशन मे आपको पता चल जाएगा कि झूठी आवाज क्या थी और सच्ची आवाज क्या थी। क्योकि झूठी आवाज मानसिक होगी। ध्यान रहे, सेरिब्रल होगी। जब आपको झूठी भूख लगेगी तो मन कहेगा कि भूख लगी है। और जब असली भूख लगेगी तो पूरे शरीर का रोया-रोया कहेगा कि भूख लगी है। अगर झूठी भूख लगी है, आप बारह बजे रोज दोपहर भोजन करते हैं तो ठीक बारह बजे लग जाएगी। लेकिन अगर किसी ने घड़ी एक घटा आगे पीछे कर दी हो तो घडी मे जब बारह बजेगे तब लग जाएगी। आपको पता नही होना चाहिए कि अब एक बज गया है, और घडी मे बारह ही बजे हो, तो आप एक बजे तक बिना भूख लगे रह जाएगे। क्योकि आदत की मन की भूख मानसिक है, शारीरिक नही है। वह बाहर की घडी देखती रहती है, बारह बज गए, भूख लग गई। ग्यारह ही बजे है लेकिन घडी मे बारह बजा दिए गए है तो आपकी भूख का क्रम तत्काल पैदा हो जाएगा कि भूख लग गयी। मानसिक भूख मानसिक है, झूठी भूख मानसिक है। वह मन से लगती है, शरीर से नही। तीन चार दिन के अनशन मे मानसिक भूख की व्यवस्था टूट जाती है। शारीरिक भूख शुरू होती हैं। आपको पहली दफा लगता है कि शरीर से भूख आ रही है। इसको हम और तरह देख सकते हैं।

मनुष्य को छोडकर सारे पशु और पक्षियो की यौन व्यवस्था सावधिक है। एक विशेष मौसम मे वे यौन पीडित होते है, कामातुर होते हैं, बाकी वर्ष भर नही होते। सिर्फ आदमी अकेला जानवर है जो वर्ष भर काम पीडित होता है। यह काम पीडा मानसिक हैं, मेटल है। अगर आदमी भी स्वाभाविक हो तो वह भी एक सीमा मे, एक समय पर कामातुर होगा, शेष समय कामातुरता नही होगी। लेकिन आदमी ने सभी स्वाभाविक व्यवस्था के ऊपर मानसिक व्यवस्था जड़ दी है। सभी चीजो के ऊपर उसने अपना इतजाम अलग मे कर लिया हैं। वह अलग इतजाम हमारे जीवन की विकृति है, हमारी विक्षिप्तता हैं। न तो आपको पता चलता हैं कि आप मे कामवासना जगी है वह स्वाभाविक है, बायोलॉजिकल हैं या साइकोलॉजिकल है। आपको पता नही चलता क्योंकि

पहुंचाए, नहीं तो मेरा सांझ का भोजन पत्नी नहीं देगी। यह खबर घर तक न जाए कि मैं पच्चीस रोटी खा गया, नहीं तो सांझ का भोजन गड़बड़ हो जाएगा।

आप इस पेट को अप्राकृतिक रूप से भी भर सकते हैं, विक्षिप्त रूप से भी भर सकते हैं। पेट को ही नहीं, यहां उदर केवल सांकेतिक है। हमारी प्रत्येक इंद्रिय का उदर है; हमारी प्रत्येक इंद्रिय का पेट है। और आप प्रत्येक इंद्रिय के उदर को जरूरत से ज्यादा भर सकते हैं। जितना देखने की जरूरत नहीं है उतना हम देखते हैं। जितना सुनने की जरूरत नहीं है उतना हम सुनते हैं। और इसका परिणाम बड़ा अद्भुत होता है। वह परिणाम यह होता है कि जितना ज्यादा हम सुनते हैं उतने ही सुनने की क्षमता और संवेदनशीलता कम हो जाती है, इसलिए तृप्ति भी नहीं मिलती है। और जब तृप्ति नहीं मिलती तो विसियस सर्किल पैदा हो जाता है। हम सोचते हैं और ज्यादा देखें तो तृप्ति मिलेगी। और ज्यादा खाएं तो तृप्ति मिलेगी। जितना ज्यादा खाते हैं उतना ही यह जो स्वभाव की भूख है, वह दबती और नष्ट होती है। और वही तृप्त हो सकती है। और जब वह दब जाती है, नष्ट हो जाती है, विस्मृत हो जाती है तो आपकी जो आदत की भूख है, वह कभी तृप्त नहीं होती; क्योंकि उसकी तृप्ति का कोई अंत नहीं है।

इसलिए हम सुनते हैं कि वासनाओं का कोई अंत नहीं है। लेकिन सच्चाई यह है कि स्वभाव में जो भी वासनाएं हैं, वे सब अंत की हैं। आदत से जो वासनाएं हम निर्मित करते हैं उनका कोई अंत नहीं है। इसलिए किसी जानवर को आप बीमारी में खाने के लिए राजी नहीं कर सकते। जो होशियार जानवर हैं वे तो अगर बीमार होंगे कि वॉमिट कर देंगे, जो पेट में है उसे बाहर फेंक देंगे। वे प्रकृति से जीते हैं, आदमी आदत से जीता है और आदत से जीने के कारण हम अपने को रोज-रोज अस्वाभाविक करते चले जाते हैं। यह अस्वाभाविक होना इतना ज्यादा हो जाता है कि हमें याद ही नहीं रहता है कि हमारी प्राकृतिक आकांक्षाएं क्या हैं।

गिराती। ऊपर जाना हो तो प्राकृतिक वासना से ऊपर उठना होता है। लेकिन अगर नीचे गिरना हो तो प्राकृतिक वासना के ऊपर अप्राकृतिक वासना स्थापित करनी होती है।

तो अनशन को महावीर ने पहले कहा था कि झूठी भूख टूट जाए, असली भूख का पता चल जाए, जब रोयां-रोयां पुकारने लगे। आपको प्यास लगती है। जरूरी नही है कि वह प्यास असली हो। हो सकता है अखबार मे कोके का ऐडवर्टाइजमेंट देखकर लगी हो। जरूरी नही है कि वह प्यास वास्तविक हो। अखबार मे देखकर भी, लिव्वा लिटिल हाट, लग गयी हो। वैज्ञानिक, विशेषकर विज्ञापन विशेषज्ञ भली-भांति जानते है कि आपको झूठी प्यासें पकडायी जा सकती है और वे आपको झूठी प्यासें पकडा रहे हैं। आज जमीन पर जितनी चीजें बिक रही हैं, उनकी कोई जरूरत नही है। आज करीब-करीब दुनिया की पचास प्रतिशत इंडस्ट्री उन जरूरतो को पूरा करने मे लगी है जो जरूरतें है ही नही। पर वे पैदा की जा सकती है। आदमी को राजी किया जा सकता है कि जरूरतें हैं। और एक दफा उसके मन मे ख्याल आ जाए कि जरूरत है, तो जरूरत बन जाती है।

प्यास तो आपको पता ही नही है, वह तो कभी रेगिस्तान मे कल्पना करें कि किसी रेगिस्तान मे भटक गए हैं आप। पानी का कोई पता नही है। तब आपको प्यास लगेगी, वह आपके रोए-रोए की प्यास होगी। वह आपके शरीर का कण-कण मांगेगा। वह मानसिक नही हो सकता, वह किसी अखबार के विज्ञापन को पढकर नही लगी होगी। तो अनशन आपके भीतर वास्तविक को उघाडने मे सहयोगी होगा। और जब वास्तविक उघड जाए तो महावीर कहते है ऊणोदरी। जब वास्तविक उघड जाए तो वास्तविक से कम लेना। जितनी वास्तविक—अवास्तविक भूख को तो पूरा करना ही मत, वह तो खतरनाक है। वास्तविक भूख का जब पता चल जाए तब वास्तविक भूख से भी थोडा कम लेना, थोडी जगह खाली रखना। इस खाली रखने मे क्या राज हो सकता है? आदमी के मन के नियम समझना जरूरी है।

हमारे मन के नियम ऐसे है कि हम जब भी कोई काम मे लगते है, या किसी वासना की तृप्ति मे या किसी भूख की तृप्ति मे लगते है, तब एक सीमा हम पार करते हैं। वहां तक भूख या वासना ऐच्छिक होती है, वालटरी होती है। उस सीमा के बाद नानवालटरी हो जाती है। जैसे हम पानी को गर्म करते हैं। पानी सौ डिग्री पर जाकर भाप बनता है। लेकिन अगर आप निन्यानबे डिग्री पर रुक जाए तो पानी वापस पानी ही ठण्डा हो जाएगा। लेकिन अगर आप सौ डिग्री के बाद रुकना चाहे तो फिर पानी वापस नही लौटेगा, वह भाप बन चुका होगा। एक डिग्री का फासला फिर लौटने नही देगा, नो रिटर्न प्वाइंट आ जाता है। अगर आप सौ डिग्री के पहले निन्यानबे डिग्री पर रुक गए तो पानी गर्म होकर

वायोलॉजिकल कामवासना को आपने जाना ही नही है । इसके पहले कि वह जगती, मानसिक कामवासना जग जाती है । छोटे-छोटे वच्चे जो कि चौदह वर्ष मे जाकर वायोलॉजिकली मेच्योर होंगे, जैविक अर्थो मे कामवासना के योग्य होंगे, लेकिन चौदह वर्ष के पहले ही मानसिक वासना के वे बहुत पहले योग्य और समर्थ हो गए होगे ।

सुना है मैंने कि एक बूढी औरत अपने नाती-पोतो को लेकर अजायव घर मे गयी । वहा स्टार्क नाम के पक्षी के वावत यूरोप मे कथा है, बच्चो को समझाने के लिए कि जब घर मे वच्चे पैदा होते हे तो वडे-बूढो से बच्चे पूछते है कि वच्चे कहा से आए ? तो वडे-वूढे कहते है—यह स्टार्क पक्षी ले आया । वहा अजायव घर मे स्टार्क पक्षी के पास वह वूढी गयी । उन वच्चो ने पूछा—यह कौन-सा पक्षी है ? वूढी ने कहा—यह वही पक्षी है जो वच्चो को लाता है । छोटे-छोटे वच्चे है, वे एक दूसरे की तरफ देखकर हसे, और एक वच्चे ने अपने पडौसी वच्चे से कहा कि क्या इस नासमझ बूढी को हम असली राज बता दें ? मे वी टेल हर दि रियल सीक्रेट दिस पुअर ओल्ड लेडी । अभी तक पता नही इस गरीव को, यह अभी स्टार्क पक्षी से समझ रही है कि वच्चे आते हे ।

चारो तरफ की हवा, चारो तरफ का वातावरण वहुत छोटे-छोटे वच्चो के मन मे एक मानसिक कामातुरता को जगा देता है । फिर यह मानसिक कामातुरता उनके ऊपर हावी हो जाती हैं और जीवन भर पीछा करती है । और उन्हे पता ही नही चलेगा कि जो वायोलॉजिकल अर्ज थी, वह जो जैविक वासना थी, वह उठ ही नही पायी, या जव उठी तव उन्हे पता नही चला । और तब एक अद्‌भुत घटना घटेगी, और वह अदभुत घटना यह है कि वे कभी तृप्त न होगे । क्योकि मानसिक कामवासना कभी तृप्त नही हो सकती, शारीरिक कामवासना तृप्त भी हो जाती है । जो वास्तविक है वह तृप्त हो सकता है, जो वास्तविक नही है वह तृप्त नही हो सकता । असली भूख तृप्त हो सकती है, झूठी भूख तृप्त नही हो सकती । इसलिए वासनाए तो तृप्त हो सकती हैं लेकिन हमारे द्वारा जो कल्टीवेटेड डिजायर्स हैं, हमने ही जो आयोजन कर ली है वासनाए, वे कभी तृप्त नही हो सकती ।

इसलिए पशु-पक्षी, वे भी वासनाओ मे जीते है, लेकिन हमारे जैसे तनावग्रस्त नही है । कोई तनाव नही दिखाई पडता उनमे । गाय की आख मे झाककर देखिए, वह कोई निर्वासना को उपलब्ध नही हो गयी है, कोई ऋषि-मुनि नहीं हो गई है, कोई तीर्थंकर नही हो गयी है, और उसकी आखो मे वही सरलता होती है जो तीर्थकर की आखो मे होती हैं । वात क्या है ? वह तो वासना मे जी रही है । लेकिन फिर भी उसकी वासना प्राकृतिक है । प्राकृतिक वासना तनाव नही लाती है । ऊपर नही ले जा सकती प्राकृतिक वासना, लेकिन नीचे भी नही

मुल्ला ने कहा—मेरे गाव के पास ही लूटे गए हो ? क्या-क्या तुम्हार लूट लिया गया है ?

उसने सब फेहरिश्त बताथी । मुल्ला ने कहा—लेकिन जहा तक मैं देख सकता हू, तुम अन्डरवियर पहने हुए हो ।

उसने कहा—हा, मैं अन्डरवियर पहने हुए हू ।

मुल्ला ने कहा—मेरी अदालत तुम्हारा मुकदमा लेने से इन्कार करती है । वी नैवर डू ऐनिथिंग हाफहार्टेडली एण्ड पार्शियली । हमारे गाव मे कोई आदमी आधा काम नही करता, न आधे हृदय से काम रहा हैं । अगर हमारे गाव मे लूटे गये थे तो अन्डरवियर भी निकाल लिया गया होता । तुम किसी और गाव के आदमियो के द्वारा लूटे गए हो । तुम्हारा मुकदमा लेने से मैं इन्कार करता हू । ऐसा कभी हमारे गाव मे हुआ ही नही । जब भी हम कोई काम करते हैं, हम पूरा ही करते है ।

जिस गाव मे हम रहते है—इच्छाओ के जिस गाव मे हम रहते हैं वहा भी हम पूरा ही काम करते है । वहा भी इच भर हम पहले नही लौटते । और चरम के बाद सिवाय विषाद के कुछ हाथ नही लगता । लेकिन जैसे ही हम किसी वासना मे बढना शुरू करते है, वासना खीचती है, और जितना हम आगे बढते है, उसके खीचने की शक्ति बढती जाती है और हम कमजोर होते चले जाते है ।

महावीर कहते हैं—चरम पर पहुचने के पहले रुक जाना । उसका मतलब यह है कि जब किसी को क्रोध इतना आ गया हो कि वह हाथ उठाकर आपको चोट ही मारने लगे—तब महावीर कहते हैं—हाथ दूसरे के करीब ही पहुच जाए तो तब रुक जाना । तब तुम्हारी मालकियत का तुम्हे अनुभव होगा । उस वक्त रोकना सर्वाधिक कठिन है । बहुत कठिन है । उस वक्त मन कहेगा—अब क्या रुकना ?

मुसलमान खलीफा अली के सम्बन्ध मे एक बहुत अद्भुत घटना है । युद्ध के मैदान मे लड रहा था वह । वर्षों से यह युद्ध चल रहा है । वह घडी आ गयी जब उसने अपने दुश्मन को नीचे गिरा लिया और उसकी छाती पर बैठ गया और उसने अपना भाला उठाया और उसकी छाती मे भोकने को । एक क्षण की और देर थी कि भाला दुश्मन की छाती मे आरपार हो जाता । उस दुश्मन की, जो वर्षों से परेशान किए हुए था और इसी क्षण की प्रतीक्षा थी अली को । लेकिन उस नीचे पडे दुश्मन ने, जैसे ही भाला अली ने भोकने के लिए उठाया, अली के मुह पर थूक दिया । अली ने अपना मुह पर पडा थूक पोछ लिया, भाला वापस अपने स्थान पर रख दिया, और उस आदमी से कहा कि कल अब हम फिर लडेंगे । और उस आदमी ने कहा—यह मौका अली तुम चूक रहे हो । मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं नही चूक सकता था । इसकी तुम वर्षों से प्रतीक्षा करते थे । मैं भी

फिर ठडा होकर पानी ही रह जाएगा । भाप नही बनेगा । आप रुक सकते है, अभी तक रुकने का उपाय है । सौ डिग्री के वाद अगर आप रुकते है तो पानी भाप बन चुका होगा । फिर पानी आपको मिलेगा नही । आपके हाथ के वाहर वात हो गयी ।

जब आप क्रोध के विचार से भरते है, तब भी एक डिग्री आती है, उसके पहले आप रुक सकते थे । उस डिग्री के वाद आप नही रुक सकेंगे क्योकि आपके भीतर वालटरी मेकेनिज्म जब अपनी वृत्ति को नानवालटरी मेकेनिज्म को सौप देता है, फिर आपके रुकने के वाहर वात हो जाती है । इसे ठीक से समझ लें । जब ऐच्छिक यन्त्र सबसे पहले आपके भीतर कोई भी चीज इच्छा की भाति शुरू होती है । एक सीमा है, अगर आप इच्छा को बढाए ही चले गए तो एक सीमा पर इच्छा का यन्त्र आपके भीतर जो आपकी इच्छा के बाहर चलने वाला यन्त्र है उसको सौप देता है । उसके हाथ मे जाने के वाद आप नही रोक सकते । अगर आप क्रोध एक सीमा के पहले रोक लिए तो रोक लिए, एक सीमा के वाद क्रोध नही रोका जा सकेगा, वह प्रगट होकर रहेगा । अगर आपने कामवासना को एक सीमा पर रोक लिया तो ठीक, अन्यथा एक सीमा के वाद कामवासना आपके ऐच्छिक यन्त्र के बाहर हो जाएगी । फिर आप उसको नही रोक सकते । फिर आप विक्षिप्त की तरह उसको पूरा करके ही रहेगे, फिर उसे रोकना मुश्किल है ।

ऊणोदरी का अर्थ है—ऐच्छिक यन्त्र से अनैच्छिक यन्त्र के हाथ मे जब जाती है कोई वात तो उसी सीमा पर रुक जाना । इसका मतलव इतना ही नही है केवल कि आप तीन रोटी रोज खाते है तो आज ढाई रोटी खा लेंगे तो ऊणोदरी हो जाएगी । नही, ऊणोदरी का अर्थ है—इच्छा के भीतर रुक जाना, आपकी सामर्थ्य के भीतर रुक जाना । अपनी सामर्थ्य के वाहर किसी वात को न जाने देना, क्योकि आपकी सामर्थ्य के वाहर जाते ही आप गुलाम हो जाते है । फिर आप मालिक नही रह जाते । लेकिन मन पूरी-पूरी कोशिश करेगा कि क्लाइमेक्स तक ले चलो, किसी भी चीज को उसके चरम तक ले चलो । क्योकि मन को तब तृप्ति नही मालूम पडती जब तक कोई चीज चरम पर न पहुच जावे । और मजा यह है कि चरम तक पहुच जाने के वाद सिवाय विषाद, फ्रस्ट्रेशन के कुछ हाथ नही लगता । तृप्ति हाथ नही लगती । अगर मन ने भोजन के सम्बन्ध मे सोचना शुरू किया तो वह उस सीमा तक खायेगा जहा तक खा सकता है । फिर दुखी, परेशान और पीडित होगा ।

मुल्ला नसरूद्दीन अपने बुढापे मे अपने गाव मे मजिस्ट्रेट हो गया । पहला जो मुकदमा उसके हाथ मे आया वह एक आदमी का था जो करीब-करीब नग्न, सिर्फ अन्डरवियर पहने अदालत मे आकर खड़ा हुआ । उसने कहा कि मै लूट लिया गया हू और तुम्हारे गाव के पास ही लूटा गया हू ।

और दो पन्ने रह गए है क्लाइमेक्स आ गया है और अब इन दो पन्नो मे ही सारा राज खुलने को है, और आप रुक जाए तो ऊणोदरी है। शायद मन बहुत जोर से कहेगा कि अब तो मौका ही आया था जानने का। इतनी देर तो हम केवल भटक रहे थे, अब राज खुलने के करीब था। क्लाइमेक्स आ गया था, अब तो राज खुलता। अभी रुक जाए और भूल जाए।

फिल्म देख रहे है, आखिरी क्षण आ गया है। अभी सब चीजें क्लाइमेक्स को छुएगी। उठ जाए और लौटकर याद भी न आए कि अन्त क्या हुआ होगा। किसी से पूछने को भी न जाए कि अत क्या हुआ। ऐसे चुपचाप उठकर चले जाए, जैसे अत हो गया। ऊणोदरी का अर्थ मैं आपको ख्याल मे दिलाना चाहता हूँ। ऐसे उठकर चले जाए जैसे अत होने के पहले, जैसे अत हो गया। तो आपको अपने मन पर एक नए ढग का काबू आना शुरू हो जाएगा। एक नई शक्ति आपको अनुभव होगी। आपकी सारी शक्ति की क्षीणता, आपकी शक्ति का खोना, डिस्टी-प्रेशन, आपकी शक्ति का रोज-रोज व्यर्थ नष्ट होना आपकी मन की इस आदत के कारण है जो हर चीज को पूर्ण पर ले जाने की कोशिश मे लगी है। महावीर कहते है—पूर्ण पर जाना ही मत। उसके एक क्षण पहले, एक डिग्री पहले रुक जाना। तो तुम्हारी शक्ति जो पूर्ण को, चरम को छूकर बिखरती है और खोती है वह नही बिखरेगी, नही खोएगी। तुम निन्यानबे डिग्री पर वापस लौट आओगे, भाप नही बन पाओगे। तुम्हारी शक्ति फिर सगृहित हो जाएगी। तुम्हारे हाथ मे होगी, और तुम धीरे-धीरे अपनी शक्ति के मालिक हो जाओगे।

इसे सब तरफ प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक इद्रिय का उदर है, प्रत्येक इद्रिय का अपना पेट है, और प्रत्येक इद्रिय माग करती है कि मेरी भूख को पूरा करो। कान कहते है सगीत सुनो; आख कहती है सौंदर्य देखो, हाथ कहते है कुछ स्पर्श करो। सब इद्रिया माग करती है कि हमे भरो। प्रत्येक इंद्रिय पर ऊण पर ठहर जाना इद्रिय विजय का मार्ग है। बिलकुल ठहर जाना आसान है, ध्यान रहे। किसी उपन्यास को बिल्कुल न पढना आसान है। नही पढा बात खत्म हो गयी। लेकिन किसी उपन्यास को अत के पहले तक पढकर रुक जाना ज्यादा कठिन है। इसलिए ऊणोदरी को नम्बर दो पर रखा है। किसी फिल्म को न देखने मे इतनी अडचन नही है; लेकिन किसी फिल्म को देखकर और अत के पहले ही उठ जाने मे ज्यादा अडचन है। किसी को प्रेम ही नही किया, इसमे ज्यादा अडचन नही है, लेकिन प्रेम अपनी चरम सीमा पर पहुचे, उसके पहले वापस लौट जाना अति कठिन है। उस वक्त आप विवश हो जाएगे, आपसड हो जाएगे, उस वक्त तो ऐसा लगेगा कि चीज को पूरा हो जाने दो। जो भी हो रहा है उसे पूरा हो जाने दो इस वृत्ति पर सयम मनुष्य की शक्तियो को बचाने की अत्यन्त वैज्ञानिक व्यवस्था है।

ऊणोदरी अनशन का ही प्रयोग है लेकिन थोडा कठिन है। आमतौर से आपने

प्रतीक्षा करता था। सयोग कि तुम ऊपर हो, मैं नीचे हू। प्रतीक्षा मेरी भी यही थी। अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो उठा हुआ भाला वापस नही लौट सकता था। इसी के लिए तो दो वर्प से परेशान है। तुम क्यो छोड के जा रहे हो ?

अली ने कहा—मुझे मुहम्मद की आज्ञा है कि अगर हिंसा भी करो तो क्रोध मे मत करना। हिंसा भी करो तो क्रोध मे मत करना। एक तो हिंसा करना मत और अगर हिंसा भी करो तो क्रोध मे मत करना। अभी तक मै शान्ति से लड रहा था। लेकिन तेरा मेरे ऊपर थूक देना, मेरे मन मे क्रोध उठ आया। अव कल हम फिर लडेंगे। अभी तक मैं शान्ति से लड रहा था, अभी तक कोई क्रोध की आग न थी। ठीक था, सब ठीक था। निपटारा करना था, कर रहा था। हल निकालना था, निकाल रहा था। लेकिन कोई क्रोध की लपट न थी। लेकिन तूने थूक कर क्रोध की लपट पैदा कर दी। अब अगर इस वक्त मैं तुझे मारता हू तो यह मारना व्यक्तिगत और निजी है। मै मार रहा हू अब। अब यह लडाई किसी सिद्धान्त की लडाई नही है। इसलिए अब कल फिर लडेंगे।

कल तो वह लडाई नही हुई क्योकि उस आदमी ने अली के पैर पकड लिए। उसने कहा—मै सोच भी नही सकता था कि वर्पो के दुश्मन की छाती के पार आया हुआ भाला किसी भी कारण से लौट सकता है, और ऐसे समय मे तो लौट ही नही सकता जब मैंने थूका था, तव तो और जोर मे चला गया होता।

मन के नियम है। ऊणोदरी का अर्थ है—जहा मन सर्वाधिक जोर मारे, उसी सीमा से वापस लौट जाए। जहा मन कहे कि एक और, और जहा सर्वाधिक जोर मारता हो। अब इस सन्तुलन को खोजना पडेगा। इसे रोज-रोज प्रयोग करके प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर खोज लेगा कि कब मन बहुत जोर मारता है, और कब इच्छा के बाहर बात हो जाती है। फिर ऐसा नही होता कि आप मार रहे हैं ऐसा होता है कि आपसे मारा जा रहा है। फिर ऐसा नही होता कि आपने चाटा मारा, फिर ऐसा होता है कि अब आप चाटा मारने से रुक ही न सकते थे। वही जगह लौट आने की है, वही पूर्ण की जगह है। वही से वापस लौट आने का नाम है अपूर्ण पर छूट जाना।

ऊणोदरी का अर्थ है—अपूर्ण रह जाए उदर, पूरा न भर पाए। तो आप चार रोटी खाते है, तीन खा ले तो उससे कुछ ऊणोदरी नही हो जाएगी। पहले वास्तविक भूख खोज लें, फिर वास्तविक भूख को खोज कर भोजन करने बैठे। किसी भी इंद्रिय का भोजन हो, यह सवाल नही है। फिल्म देखने आप गए है। नब्बे प्रतिशत फिल्म आपने देख ली ह, तभी असली वक्त आता है जब छोडना बहुत मुश्किल हो जाता है क्योकि अन्त क्या होगा! लोग उपन्यास पढते हैं, तो अधिक लोग पहले अन्त पढ लेते है कि अन्त क्या होगा! इतनी जिज्ञासा मन की होती है। पहले अन्त पढ ले, फिर शुरू करे। लेकिन उपन्यास पढ रहे है

काम पैर का है, वह सिर से करने की कोशिश करे। तो दोहरे दुष्परिणाम होंगे। जिस केन्द्र से आप दूसरे केन्द्र का काम ले रहे हैं, वह कर नहीं सकता है, एक। जो वह कर सकता था वह भी नहीं कर पाएगा। तो क्या उसको ऐसे काम मे लगा रहे हैं उसकी शक्ति उसमे व्यय हो? जो वह कर सकता था, नहीं कर पाएगा। और जिस केन्द्र से आपने काम छीन लिया है उस पर शक्ति इकट्ठी होती रहेगी। वह धीरे-धीरे विक्षिप्त होने लगेगा, क्योंकि उससे आप काम नहीं ले रहे हैं। आप पूरे के पूरे कनफ्यूज्ड हो जाएंगे। आप का व्यक्तित्व एक उलझाव हो जाएगा, सुलझाव नहीं।

गुरजिएफ कहता था—प्रत्येक केन्द्र को उसके काम पर सीमित कर दो। महावीर का वृत्ति-सक्षेप मे यही अर्थ है। प्रत्येक वृत्ति को उसके केन्द्र पर सक्षिप्त कर दो, उसके केन्द्र के आसपास मन फैलने दो, मत भटकने दो। तो व्यक्तित्व मे एक सुगढता आती है, स्पष्टता आती है और आप कुछ भी करने मे असमर्थ हो जाते हैं। अन्यथा हमारी सारी वृत्तिया करीब-करीब बुद्धि के आसपास इकट्ठी हो गयी हैं। तो बुद्धि जिस काम को कर सकती है वह नहीं कर पाती है, क्योंकि आप उससे दूसरे काम लेते हैं। और जो काम आप ले रहे हैं वह बुद्धि कर नहीं सकती क्योंकि वह उसकी प्रकृति के बाहर है, वह उसका काम नहीं है। इस दुनिया में जो इतनी बुद्धिहीनता है उसका कारण यह नहीं है कि इतने बुद्धिहीन आदमी पैदा होते हैं। इस दुनिया मे जो इतनी स्टूपिडिटी दिखाई पडती है, इतनी जडता दिखाई पडती है, उसका यह कारण नहीं है कि इतने बुद्धि रिक्त लोग पैदा होते हैं, उसका कुल कारण इतना है कि बुद्धि जो काम कर सकती है वह उससे आप लेते नहीं। जो नहीं कर सकती है वह आप उससे लेते हैं। बुद्धि धीरे-धीरे मद होती चली जाती है।

थोडा सोचें—कितने आदमी दुनिया मे लगडे हैं, या कितने आदमी दुनिया में अधे हैं, या कितने आदमी दुनिया मे बहरे हैं? अगर दुनिया मे बुद्धू भी होगे तो वही अनुपात होगा, उससे ज्यादा नही हो सकता। लेकिन बुद्धू बहुत दिखाई पडते हैं। बुद्धि नाममात्र को पता नही चलती। क्या कारण हो सकता है, इतनी बुद्धि की कमी का? इसकी कमी का कारण यह नही है कि बुद्धि कम है, इसकी कमी का कुल कारण इतना है कि बुद्धि से जो काम लेना था वह आपने लिया नही, जो नही लेना था वह आपने लिया है। इससे बुद्धि धीरे-धीरे जडता को उपलब्ध हो जाती है। मनसविद् कहते है—प्रत्येक व्यक्ति प्रतिभा लेकर पैदा होता है, और प्रत्येक व्यक्ति जड होकर मरता है। बच्चे प्रतिभाशाली पैदा होते है और बूढे प्रतिभा-हीन मरते है। होना उल्टा चाहिए कि जितनी प्रतिभा लेकर बच्चा पैदा हुआ था उसमे और निखार आता, अनुभव उसमे और रग जोडते। जीवन की यात्रा उसको और प्रगाढ करती। पर यह नही होता।

पिछले महायुद्ध मे दस लाख सैनिको की बुद्धि माप किया गया तो पाया गया

सुना और समझा होगा कि ऊणोदरी सरल प्रयोग है, जिससे अनशन नही वन सकता वह ऊणोदरी करे। मैं आपसे कहता हू—ऊणोदरी अनशन से कठिन प्रयोग है। जिससे अनशन बन सकता है, वही ऊणोदरी कर सकता है।

महावीर का तीसरा सूत्र हे वृत्ति-सक्षेप। वृत्ति-सक्षेप से परम्परागत जो अर्थ लिया जाता है वह यह है कि अपनी वृत्तियो और वासनाओ को सिकोडे। अगर दस कपडो से काम चल सकता है तो ग्यारह पास मे न रखना। अगर एक वार भोजन से काम चल सकता है तो दो बार भोजन न करना। ऐसा तो साधारण अर्थ है, लेकिन वह अर्थ केन्द्र से सम्वन्धित न होकर केवल परिधि से सम्बन्धित है। नही, महावीर का अर्थ गहरा है और दूसरा है। इसे थोडा गहरे मे समझना पडेगा।

वृत्ति-सक्षेप एक प्रक्रिया है। आपके भीतर प्रत्येक वृत्ति का केन्द्र है—जैसे, सेक्स का एक केन्द्र है, भूख का एक केन्द्र है, प्रेम का एक केन्द्र है, वुद्धि का एक केन्द्र है। लेकिन साधारणत हमारे सारे केन्द्र कफ्यूज्ड है क्योकि एक केन्द्र का काम दूसरे केन्द्र से हम लेते रहते है। दूसरे का तीसरे से लेते रहते हैं। काम भी नही हो पाता है, और केन्द्र की शक्ति भी व्यय और व्यर्थ नष्ट होती है। गुरुजिएफ कहा करता था—गुरुजिएफ ने वृत्ति-सक्षेप के प्रयोग को वहुत आधारभूत बनाया था अपनी साधना मे। गुरुजिएफ कहा करता था कि पहले तो तुम अपने प्रत्येक केन्द्र को स्पष्ट कर लो और प्रत्येक केन्द्र के काम को उसी को सौंप दो, दूसरे केन्द्र से काम मत लो। अव जैसे कामवासना है उसका अपना केन्द्र है प्रकृति में, लेकिन आप मन से उस केन्द्र का काम लेते है, सेरिब्रल हो जाता है सेक्स, मन मे ही सोचते रहते है। कभी-कभी तो इतना सेरिब्रल हो जाता है कि वास्तविक कामवासना उतना रस नही देती, जितनी कामवासना का चितन करते है। यह बहुत अजीब वात है। यह ऐसा हुआ है कि वास्तविक भोजन रस नही देता, जितना भोजन का चिन्तन रस देता है। यह ऐसे हुआ है कि पहाड पर जाने मे उतना मजा नही आता जितना घर बैठकर पहाड पर जाने के सम्बन्ध मे, सोचने मे, सपने देखने मे मजा आता है।

और हम प्रत्येक केन्द्र को ट्रासफर करते हे, दूसरे केन्द्र पर सरका देते हैं, इससे खतरे होते हैं। दो खतरे होते हे—एक खतरा तो यह होता है कि जिस केन्द्र का काम नही है, अगर उस पर हम कोई दूसरा काम डाल देते हे तो वह उसे पूरी तरह तो कर नही सकता, वह उसका काम नही है। वह कभी नही कर सकता। इसलिए सदा अतृप्त वना रहेगा, तृप्त कभी नही हो सकता है। कही वुद्धि से सोच सोचकर भूख तृप्त हो सकती है? कही कामवासना का चिंतन कामवासना को तृप्त कर सकता है? कैसे करेगा, वह उस केन्द्र का काम ही नही है। वह तो ऐसा है जैसे कोई आदमी सिर के बल चलने की कोशिश करे। तो

कोई काम नही रह जाएगा क्योकि मशीनें सभी काम ज्यादा बेहतर ढग से कर सकती है। और सबसे बडा सवाल जो उनके सामने हे वह यह है कि बीस साल बाद हम आदमी का क्या करेंगे और इससे क्या काम लेगे ? अगर यह बेकाम हो जाएगा तो उपद्रव करेगा। इससे कुछ न कुछ तो काम लेना ही पडेगा। हो सकता है काम ऐसे लेना पडे इस आदमी से जैसा घर-घर मे बच्चे उपद्रव करते है तब खिलौने पकडाकर काम लिया जाता है। बस इतना ही काम लेना पडेगा कि कुछ खिलोने आपको पकडाने पडे। जिनमे आप घुघरू वगैरह बजाते रहे। वह आपके लिए जरा बडे ढग के होगे खिलौने। बिल्कुल बच्चे जैसे नही होगे, क्योकि उसमे आप नाराज होगे।

बाकी मनोवैज्ञानिक कहते है कि बच्चो के खिलौनो मे और बडे आदमियो के खिलौनो मे सिर्फ कीमत का फर्क होता है, और कोई फर्क नही होता। वह गुडिया से खेलते रहते है, आप एक स्त्री से खेलते रहते हैं। जरा कीमत का फर्क होता है। यह जरा महगा खिलौना है। बाकी खेल वही है।

वृत्ति-सक्षेप का अर्थ है—दो कारणो से वृत्ति-सक्षेप पर महावीर का जोर है—एक तो प्रत्येक काम को, प्रत्येक वृत्ति को उसके केन्द्र पर कसट्रेट कर देना है। सबसे पहले तो जरूरत इसलिए है कि जो वृत्ति अपने केन्द्र पर सग्रहीत हो जाती है, कसट्रेट हो जाती है, एकाग्र हो जाती है, आपको उसके वास्तविक अनुभव मिलने शुरू होते है। और वास्तविक अनुभव से मुक्त हो जाना बहुत आसान है। यह वास्तविक अनुभव बहुत दुखद है। स्त्री की कल्पना से मुक्त होना बहुत कठिन है, स्त्री से मुक्त हो जाना बहुत आसान है। धन की कल्पना से मुक्त होना बहुत कठिन है, धन के ढेर से मुक्त हो जाना बहुत आसान है। कल्पना से मुक्त होना कठिन हे क्योकि कल्पना कही फ्रस्ट्रेट ही नही होती, कल्पना तो दौडती चली जाती है, कोई अत ही नही आता। कही ऐसा नही होता जहा कल्पना थक जाए, टूट जाए, हार जाए। वास्तविकता का तो हर जगह अत आ जाता है। हर चीज टूट जाती है। प्रत्येक वृत्ति अपने केन्द्र पर आ जाए तो इतनी सघन हो जाती है कि आपको वास्तविक, एक्चुअल अनुभव होने शुरू होते हैं। और जितना वास्तविक अनुभव हो उतनी ही जल्दी छुटकारा है, क्योकि उसमे कोई रस नही रह जाता। आपको पता चलता है, वह सिर्फ पागल मन की दौड थी, कुछ रस था नहीं। आपने सोचा था, कल्पना की थी, कोई रस था नही।

एक अनूठी घटना अमेरिका मे इधर पिछले दस वर्षों मे घटना शुरू हुई है। हिप्पी और बीटल और बीटनिक इनके कारण एक अनूठी घटना शुरू हुई है। वह यह है कि पहली दफे हिप्पियो ने कामवासना को मुक्त भाव से भोगने का प्रयोग किया—मुक्त भाव से। जिन्होने यह प्रयोग दस साल पहले शुरू किया था उन्होंने सोचा था, बडा आनन्द उपलब्ध होगा। क्योकि जितनी स्त्रिया चाहिए, या जितने

कि साढे तेरह वर्ष उनकी मानसिक आयु थी—मानसिक आयु साढे तेरह वर्ष थी। उनकी उम्र पचास साल होगी शरीर से, किसी की चालीस होगी, किसी की तीस होगी और तव वहुत हैरान करने वाला निष्कर्ष अनुभव मे आया कि शरीर तो वढता जाता है और वुद्धि मालूम होती है, तेरह-चौदह के करीब ठहर जाती है। उसके वाद नही वढती।

मगर यह औसत है। इस औसत मे वुद्धिमान सम्मिलित है। यह औसत वैसे ही है जैसे हिन्दुस्तान मे आम आदमी की औसत आमदनी का पता लगाया जाए तो उसमे विडला भी और डालमिया भी और साहू भी सव सम्मिलित होगे। और जो औसत निकलेगी वह आम आदमी की औसत नही है क्योकि उसमे धनपति भी सम्मिलित होगे। अगर हम धनपतियो को अलग कर दें और आम आदमी की औसत पता लगाए तो वहुत कम पाएगे, वह वहुत कम हो जाएगी। नेहरू और लोहिया के बीच वही विवाद वर्षों तक चलता रहा पार्लियामेंट मे। क्योकि नेहरु जितने वताते थे, लोहिया उससे वहुत कम वताते थे। लोहिया कहते थे—पाच-दस आदमियो को छोड दें, ये औसत आदमी नही है, इनका क्या हिसाव रखना है! फिर गाधी को मोच लें तो फिर गाधी के पास तो नए पैसे मे ही आमदनी रह जाती है। फिर कोई आमदनी नही रह जाती। लेकिन अगर सव की आमदनी वाट दी जाए तो ठीक है। सबके पास आमदनी दिखाई पडती है, वह है नही।

यह तो तेरह-साढे तेरह वर्ष उम्र है इसमे आइस्टीन भी सयुक्त हो जाता है, इसमे वर्ट्रेंड रसल भी सयुक्त हो जाता है। यह औसत है। इसमे वे सारे लोग सम्मिलित हो जाते है जो शिखर छूते है वुद्धि का। इसमे वुद्धिहीनो के पास मे औसत मे थोडा-सा हिस्सा आ जाता है। इसमे शिखर के लोगो को छोड दें। अगर जमीन पर सौ आदमियो को छोड दिया जाए किसी भी युग मे तो आम आदमी के पास वुद्धि की मात्रा इतनी कम रह जाती है कि उसको गणना करने की कोई भी जरूरत नही है। उससे कुछ नही होता। उससे इतना ही होता है, आप अपने घर से दफ्तर चले जाते है, दफ्तर से घर आ जाते है। उससे इतना ही होता है कि दफ्तर का आप ट्रिक सीख लेते है कि क्या-क्या करना है। उतना करके लौट आते है। घर मे भी आप ट्रिक सीख लेते है कि क्या-क्या वोलना, उतना वोलकर आप अपना काम चला लेते है। यह तो मशीन भी कर सकती है, और आपसे वेहतर ढग से कर सकती है। इसलिए जहा भी मशीन और आदमी मे कम्पटीशन होता है, आदमी हार जाता है। जहा भी मशीन से प्रतियोगिता हुई कि आप गए। मशीन से आप कही नही जीत सकते। जिस दिन आपकी जिस सीमा मे मशीन से प्रतियोगिता होती है, उसी दिन आप वेकार हो जाते है।

जव अमरीका के वैज्ञानिक कहते है कि वीस साल के भीतर आदमी के लिए

ढाक लो, आसपास जो वुद्धुओ की जमात हैं वह उघाडने को उत्सुक हो जाते हैं। उघाडने की कोशिश मे अर्थ आ जाता है। जितना उघाडने की कोशिश चलती है, उतनी ढाकने की कोशिश चलती है। इसलिए अर्थ वढता चला जाता है। चीजें अगर सीधी और साफ खुल जाए तो अर्थहीन हो जाती हैं।

अमरीका ने पहली दफा समाज पैदा किया है जो समाज सेक्स मे मुक्त एक अर्थ मे हो गया कि उसमे अर्थ नही दिखाई पड रहा। लेकिन इससे वडी परेशानी पैदा हुई है, और इसलिए अव नए अर्थ खोजे जा रहे हैं। एल० एस० डी० मे, मारिज्युआना मे, और तरह के ड्रग्स मे अर्थ खोजे जा रहे हैं। क्योकि अव सेक्स से तो कोई तृप्ति होती नही, सेक्स मे तो कुछ मतलव ही नही रहा। वह तो वेमानी वात हो गयी। अव हमे और कोई सेंसेशन और कोई अनुभूतिया चाहिए। और अमरीका लाख उपाय करे ड्रग्स नही रोके जा सकते, कोई विज्ञापन नही होता है एल० एस० डी० का। लेकिन घर-घर मे पहुचा जा रहा है। कोई विज्ञापन नही है, कोई अखवारो मे खवर नही है कि आप एल० एस० डी० जरूर पियो। लेकिन एक-एक यूनिवर्सिटी के कैम्पस पर एक-एक विद्यार्थी के पास पहुचा जा रहा है। अमरिका तव तक सफल नही होगा—कानून वना डाले, विरोध किया है, अदालतें मुकदमे चला रही हैं, सजाए दी गयी हैं—एल० एस० डी० के प्रचार के लिए जो सवसे वडा पुरोहित था वहा, तिमोथी लेरी, उसको सजा दे दी आजीवन की—लेकिन इससे रुकेगा नही, जव तक आप सेक्स का मीनिंग वापस नही लौटा लेंगे अमरीका मे, तव तक ड्रग्स नही रुक सकते। क्योकि आदमी विना मीनिंग के नही जी सकता। और या फिर कोई आत्मा का, परमात्मा का मीनिंग खडा करे। कोई नया अर्थ, जिसकी खोज मे आदमी निकल जाए। कोई नए शिखर, जिन पर वह चढ जाए।

एक शिखर है आदमी के पास सभोग का, वह उसकी तलाश मे भटकता रहता है। और वह इतना सुरक्षित और व्यवस्थित है कि वह कभी भी यह अनुभव नही कर पाता कि वह व्यर्थ है। अगर उसकी पत्नी व्यर्थ हो जाती है, पति व्यर्थ हो जाता है तो भी और स्त्रिया है जो सार्थक वनी रहती हैं। पर्दे पर फिल्म की स्त्रिया हैं, जो सार्थक वनी रहती हैं। कोई न कोई है जहा अर्थ वना रहता है, वह उस अर्थ की तलाश मे लगा रहता है, उस खोज मे लगा रहता है, जिन्दगी खो देता है।

महावीर कहते हैं—वृत्ति-सक्षेप—यह वडी वैज्ञानिक वात है। इसका एक अर्थ तो यह है कि प्रत्येक, प्रत्येक वृत्ति उसकी टोटल इटेंसिटी मे जीयी जा सकेगी। और जिस वृत्ति को भी आप उसकी समग्रता मे जीते हैं, वह व्यर्थ हो जाती है। और वृत्तियो का व्यर्थ हो जाना जरूरी है आत्मदर्शन के पूर्व। दूसरी वात—सारी वृत्तिया मन को घेर लेती हैं क्योकि आप मन मे ही सारा काम करते हैं। भोजन

चाहिए, जितने सम्बन्ध बनाने है उतने सम्बन्ध बनाने की स्वतन्त्रता है। कोई बाधा नही है, कोई कानून नही है, कोई अदालत नही है, कोई ऊपरी बाधा है, दो व्यक्तियो की निजी स्वतन्त्रता है। लेकिन दस साल मे जो सबसे हैरानी अनुभव हिप्पियो को हुआ है वह यह कि सेक्स बिल्कुल ही बेमानी मालूम पडने , मीनिंगलैस। उसमे कोई मतलब ही नही रहा।

दस हजार साल पति-पत्नियो वाली दुनिया मे सेक्स मीनिगफुल बना रहा, दस साल मे पति-पत्नी का हिसाब छोड दें, और सेक्स मीनिंगलैस हो जाता। बात क्या है? बहुत तरह के प्रयोग हिप्पियो ने किए और सब प्रयोग बेमानी जाते। ग्रुप मैरिज—कि आठ लडके और आठ लडकिया शादी कर लेते हैं— मैरिज, एक दूसरे ग्रुप से मैरिज कर रहा है, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से नही। अब इनमे से जो जिससे राजी होगा, जिस तरह राजी होगा, जिस तरह भी होगा— यह पति का ग्रुप है दस का या आठ का, या पत्नी का आठ का, ये दोनो ग्रुप इकट्ठे हो गए, अब यह एक फैमिली है। अब इसमे सब पति हैं, सब पत्निया हैं। ग्रुप सेक्स ने इस बुरी तरह अनुभव दिए कि अभी एक अनुभवी व्यक्ति का, जो इन सारे अनुभवो से गुजरा, सस्मरण पढ रहा था। तो उसने लिखा कि अगर सेक्स मे रस वापस लौटाना है तो पति-पत्नी वाली दुनिया बेहतर थी। सेक्स मे रस वापस लौटाने—आप सोचते होगे, ये अनैतिक है। आप सोचते होगे, यह सब अनीति चल रही है। लेकिन आप हैरान होगे कि जब भी कोई अनुभव पूरे रूप से मिलता है तो आप उसके बाहर हो जाते हैं। असल मे सेक्स मे रस बचाने के लिए परिवार और दाम्पत्य और विवाह की व्यवस्था है। ध्यान रहे, जिन मुल्को मे स्त्रिया बुर्के ओढती है, उस मुल्क मे जितनी स्त्रिया सुन्दर होती है उतनी उस मुल्क मे नही होती, जहा बुर्के नही ओढती।

नसरूद्दीन की जब शादी हुई और पत्नी का बुर्का उसने पहली दफे उघाडा तो वह घबरा गया। क्योकि बुर्के मे ही देखा था इसको। बडे सौन्दर्य की कल्पनाए की थी। और जैसे सभी बुर्के उघाडने से सौन्दर्य बिदा हो जाता है, ऐसा ही विदा हो गया। घबरा गया। मुसलमान रिवाज है कि पत्नी पति के घर आकर पहली बार यह पूछती है उससे कि मुझे तुम किन-किन के सामने बुर्का उघाडने की आज्ञा देते हो? पत्नी ने पूछा। नसरूद्दीन ने कहा—तू मेरे सामने न उघाड, और किसी के भी सामने उघाड। इतना ही ध्यान रखना कि अब दुबारा दर्शन मुझे मत देना।

जो चीजे उघड जाती हैं, अर्थहीन हो जाती है। जो चीजें ढकी रह जाती है, अर्थपूर्ण हो जाती हैं। आपने शरीर के जिन-जिन अगो को ढाक लिया है उनको अर्थ दिया है। ढाक-ढाक आप अर्थ दे रहे हैं। आप सोच रहे हैं, ढाक के आप बचा रहे हैं, लेकिन सत्य यह है कि ढाक के आप अर्थ दे रहे हैं—यू आर क्रिएटिंग मीनिंग। कोई चीज ढाक लो उसमे अर्थ पैदा हो जाता है। क्योकि कोई भी चीज

वुद्धि को कह दो—तू चुप रह। कितना वजा है, फिक्र छोड। पेट खवर देगा न कि भूख लगी है, तव हम सुन लेंगे। सोने का काम करना है तो वुद्धि को मत करने दो। नींद आएगी तो खुद ही खवर देगी, शरीर खवर देगा तव सो जाना। नीद तोडनी हो तो भी वुद्धि को काम मत दो कि वह अलार्म भर कर रख दे। जव नीद टूटेगी तव टूट जाएगी। उसको टूटने दो स्वय। नीद के यन्त्र को अपना काम करने दो; भोजन के यन्त्र को अपना काम करने दो, कामवासना के यन्त्र को अपना काम करने दो। शरीर के सारे काम स्पेशलाइज्ड हैं, उनको अपने-अपने मे चले जाने दो। उनको सवको इकट्ठा मत करो, अन्यथा वे सब विकृत हो जाएगे और उनको सम्भालना कठिन हो जाएगा।

और मजे की बात यह है कि जिस केन्द्र पर काम पहुच जाता है, वुद्धि का इतना काम है कि वह केन्द्र अपना काम समग्रता से करे, ताकि उसका केन्द्र का काम किसी दूसरे केन्द्र पर न फैलने पाए। वुद्धि इतना देखे तो पर्याप्त है, तो वुद्धि नियता हो जाती है। वह कट्रोलर हो जाती है। वह मध्य मे बैठ जाती है और मालिक हो जाती है, उसकी नजर सव इद्रियो पर हो जाती है। और प्रत्येक इद्रिय अपना काम करे, यही उसकी दृष्टि हो जाती है। जैसे ही कोई इद्रिय अपना काम करती है, वुद्धि देख पाती कि उस काम मे कुछ रस मिलता है या नही मिलता है, तो जो व्यर्थ काम हैं वे वन्द होने शुरू हो जाते हैं। जो सार्थक काम है वे बढने शुरू हो जाते हैं। वहुत शीघ्र वह वक्त आ जाता है—जब आपके जीवन से व्यर्थ गिर जाता है और गिराना नही पडता है। और सार्थक वच रहता है, वचाना नही पडता। आपके जीवन से काटे गिर जाते है, फूल वच जाते है। इसके लिए कुछ करना नही पडता है। वुद्धि का सिर्फ देखना ही पर्याप्त होता है। उसका साक्षी होना पर्याप्त होता है। साक्षी होना ही वुद्धि का स्वभाव है। वही उसका काम है। वुद्धि किसी की मीन्स नही है, किसी का साधन नही है। वह स्वय साध्य है। सभी इद्रिया अपने अनुभव को वुद्धि को दे दे, लेकिन कोई इद्रिय अपने काम को वुद्धि से न ले पाए, यह वृत्ति-सक्षेप का अर्थ है।

निश्चित ही इसका परिणाम होगा। इसका परिणाम होगा कि जव प्रत्येक केन्द्र अपना काम करेगा तो आपके वहुत से काम जो बाहर के जगत् मे फैलाव लाते थे, वे गिरने शुरू हो जाएगे, वे सिकुडने शुरू हो जाएगे, विना आपके प्रयत्न के। आपको धन की दौड छोडनी नही पडेगी, आप अचानक पाएगे, उसमे जो-जो व्यर्थ है वह छूट गया। आपको वडा मकान वनाने का पागलपन छोडना नही पडेगा, आपको दिख जाएगा कि कितना मकान आपके लिए जरूरी है। उससे ज्यादा व्यर्थ हो गया। आपको कपडो का ढेर लगाने का पागलपन नही हो जाएगा, आप्सेशन नही हो जाएगा, आप गिनती करके मजा न लेने लगेंगे कि अव तीन सौ साडी पूरी हो गयी, अव चार सौ साडी पूरी हुई है, अव पाच

भी मन से करना पडता है; सभोग भी मन से करना पडता है; कपडे भी मन से पहनने पडते हैं, कार भी मन से चलानी पडती है, दफ्तर भी मन से—सारा काम बुद्धि को घेर लेता है इसलिए बुद्धि निर्बल और निर्वीर्य हो जाती है। इतना काम उस पर हो जाता है। इतना बाहरी काम हो जाता है।

मुल्ला नसरूद्दीन की पत्नी ने उससे कहा है कि अपने मालिक से कहो कि कुछ तनख्वाह बढाए। बहुत दिन हो गए, कोई तनख्वाह नही बढी। मुल्ला ने कहा—मैं कहता हू, लेकिन वह सुनकर टाल देता है। उसकी पत्नी ने कहा—तुम जाकर बताओ, उसको कि तुम्हारी मा बीमार है, उसके इलाज की जरूरत है। तुम्हारे पिता को लकवा लग गया है, उनकी सेवा की जरूरत है। तुम्हारी सास भी तुम्हारे पास रहती है। तुम्हारे इतने बच्चे है, इनकी शिक्षा का सवाल है। तुम्हारे पास अपना मकान नही है, तुम्हे मकान बनाना है। ऐसी उसने बडी फेहरिश्त बतायी।

मुल्ला दूसरे दिन बडा प्रसन्न लौटा दफ्तर से। उसकी पत्नी ने कहा—क्या तनख्वाह बढ गयी है? मुल्ला ने कहा—नही, मेरे मालिक ने कहा—यू हैव टू मच आउटसाइड एक्टिविटीज। नौकरी खत्म कर दी। तुम दफ्तर का काम कब करोगे? जब इतना तुम्हारा सब काम है—सास भी घर मे है तो दफ्तर का काम कब करोगे? उसने छुट्टी दे दी।

बुद्धि के ऊपर इतना ज्यादा काम है कि बुद्धि अपना काम कब करेगी? उसको सब तरफ से बोझिल किए हुए हैं, वह अपना काम कब करेगी? तो आप बुद्धि-मत्ता का कोई काम जीवन मे नही कर पाते। बुद्धि से आप नीद का ही काम लेते है। कभी धन कमाने का काम करते है, कभी शादी करने का काम करते हैं, कभी रेडियो सुनने का काम करते है। लेकिन बुद्धि की बुद्धिमत्ता, बुद्धि का अपना निजी काम क्या है? बुद्धि का निजी काम ध्यान है। जब बुद्धि अपने मे ठहरती है, जब बुद्धि अपने मे रुकती है, तो विसडम, बुद्धिमत्ता आती है और पहली दफे जीवन को आप और ढग से देख पाते हैं, एक बुद्धिमान की आखो से। लेकिन वह मौका नही आ पाता। बहुत ज्यादा काम है। वह उसी मे दबी-दबी नष्ट हो जाती है। जो आपके पास श्रेष्ठतम बिन्दु है काम का, उससे आप बहुत निकृष्ट काम ले रहे है। जो आपके पास श्रेष्ठतम शक्ति है, उससे आप ऐसे काम ले रहे हैं, जिनको कि सुई से कर सकते थे, उनका काम आप तलवार से ले रहे हैं। तलवार से लेने की वजह से सुई से जो हो सकता था, वह भी नही हो पाता। और तलवार जो कर सकती थी, उसका कोई सवाल ही नही है, वह सुई के काम मे उलझी हुई होती है।

वृत्ति-सक्षेप का अर्थ है—प्रत्येक वृत्ति को उसके अपने केन्द्र पर सक्षिप्त करो। उसे फैलने मत दो। भूख लगे तो पेट से लगने दो भूख, बुद्धि से मत लगने दो।

है। तू अपनी मर्जी मे जैसा भी बटवारा करना चाहे कर देना। तो बडे भाई ने बटवारा कर दिया। निन्यानवे घोडे उसने रख लिए, एक घोडा छोटे भाई को दे दिया। आस-पास के लोग चौंके भी। पडोसियो ने कहा भी कि यह तुम क्या कर रहे हो ? तो बडे भाई ने कहा कि मामला ऐसा है, यह अभी छोटा है, समझ कम है। निन्यानवे कैसे सम्भालेगा ? और मैं निन्यानवे ले लेता हू, एक उसे दे देता हू।

ठीक छोटा भी थोडे दिन मे बडा हो गया, लेकिन वह एक से काफी प्रसन्न था एक से काम चल जाता था। वह खुद ही—नौकर नहीं रखने पडते थे, अलग इतजाम नही करना पडता था—वह खुद ही सईस की तरह चला जाता था। यात्रा करवा आता था लोगो के लिए। उसका भोजन का काम चल जाता था। लेकिन बडा भाई बडा परेशान था। निन्यानवे घोडे थे, निन्यानवे चक्कर थे। नौकर रखने पडते। अस्तबल बनाना पडता। कभी कोई घोडा बीमार हो जाता, कभी कुछ हो जाता। कभी कोई घोडा भाग जाता, कभी कोई नौकर न लौटता। रात हो जाती, देर हो जाती। वह जागता, वह बहुत परेशान था।

एक दिन आकर उसने अपने छोटे भाई को कहा कि तुझसे मेरी एक प्रार्थना है कि तेरा जो एक घोडा है वह भी मुझे दे दे। उसने कहा—क्यो ? तो उस बडे भाई ने कहा—तेरे पास एक ही घोडा है, नही भी रहा तो कुछ ज्यादा नही खो जाएगा। मेरे पास निन्यानवे है, अगर एक मुझे और मिल जाए तो सौ हो जाएगे। और तेरा तो कुछ खास बिगडेगा नही क्योकि एक ही—हुआ कि न हुआ। पर मेरे लिए बडा सवाल है। क्योकि मेरे पास निन्यानवे है। एक मिलते ही पूरी सेंचुरी, पूरे सौ हो जाएगे। तो मेरी प्रतिष्ठा और इज्जत का सवाल है। अपने बाप के पास सौ घोडे थे कम-से-कम बाप की इज्जत का भी इसमे सवाल जुडा हुआ है। छोटे भाई ने कहा—आप यह घोडा भी ले जाए। क्योकि मेरा अनुभव यह है कि निन्यानवे मे आपको मैं बडी तकलीफ मे देखता हू, तो मैं सोचता हू, एक मे भी निन्यानवे बटे सही, लेकिन थोडी बहुत तकलीफ तो होगी ही। यह भी आप ले जाए।

तो वह छोटा उस दिन से इतने आनन्द मे हो गया क्योकि अब वह खुद ही घोडे का काम करने लगा। अब तक कभी घोडा बीमार पडता था, कभी दवा लानी पडती थी, कभी घोडा राजी नही होता था जाने को, कभी थक कर बैठ जाता था। हजार पचायतें होती थी। वह बात खत्म हो गयी। अब तक घोडे की नौकरी करनी पडती थी उसकी लगाम पकड कर चलनी पडती थी, वह बात भी खत्म हो गयी। अपना मालिक हो गया। अब वह खुद ही बोझ ले लेता, लोगो को कधे पर बिठा लेता और यात्रा कराता। लेकिन बडा बहुत परेशान हो गया। वह बीमार ही रहने लगा। क्योकि सौ मे से अब कही एकाध कम न

सौ साडी पूरी हो गयी । आपकी वुद्धि आपको कहेगी—पाच सौ साडी पहनिएगा कव ?

मैंने सुना है कि दो सेलसमैन आपस मे एक दिन वात कर रहे थे । एक सेलसमैन वडी वातें कर रहा था कि आज मैंने इतनी विक्री की । एक आदमी एक ही टाई खरीदने आया था, मैंने उसको छ टाई वेच दी। दूसरे ने कहा—दिस इज नथिंग यह कुछ भी नही है । एक औरत अपने मरे हुए पति के लिए सूट खरीदने आयी थी, मैंने उसे दो सूट वेच दिए । एक औरत अपने मरे हुए पति के लिए कपडे खरीदने आयी थी, मैंने उसे दो जोडे कपडे वेच दिए मैंने कहा—यह दूसरा और भी ज्यादा जचता है और कभी-कभी वदलने के लिए विल्कुल ठीक लगेगी ।

कोई औरत ले जा सकती है दो जोडे, क्योकि जिन्दगी हमारी कीमत से जीती है, वुद्धि से नही जीती हैं । वह पति मर गया है, यह सवाल थोडे ही है । और पति को दूसरा जोडा पहनने का मौका कभी नही आएगा, यह भी सवाल नही है। लेकिन दूसरा जोडा भी जच रहा है, और दो जोडे—मन का एक रस है । करीव-करीव हम सव यही कर रहे है । कौन पहनेगा, कव पहनेगा इसका सवाल नही है। कितना ? वह महत्वपूर्ण है । कौन खाएगा, कव खाएगा, इसका सवाल नही है । कितना ? मात्रा ही अपने आप मे मूल्यवान हो गयी है । उपयोग जैसे कुछ भी नही है, सख्या ही उपयोगी हो गयी । कितनी सख्या हम वता सकते हैं, उसका उपयोग है ।

मै घरो मे जाता हू, देखता हूं कोई आदमी सौ जूते के जोडे रखे हुए है । इससे तो वेहतर यही है, आदमी चमार हो जाए। गिनती का मजा लेता रहे। यह नाहक, अकारण चमार वना हुआ है मुफ्त । गिनती ही करनी हैं न ! तो चमार हो जाए, जोडे गिनता रहे । नए-नए जोडे रोज आते जाएगे उसको वडी तृप्ति मिलेगी । अव यह आदमी वुद्धि से चमार हैं । सौ जोडे का क्या करिएगा ? नही, लेकिन सौ जोडे की प्रतिष्ठा है । जिसके पास है उसके मन मे तो है ही, जिसके पास नही हैं वह पीडित है कि हमारे पास सौ जोडे जूते नही है । चमारी मे ही प्रतियोगिता है । वह दूसरा हमसे ज्यादा चमार हुआ जा रहा है, हम विल्कुल पिछडे जा रहे हैं । अभागे है । सौ जोडे जूते हम पर कव होंगे ? अक्सर ऐसा होता है कि जोडे जूते तो इकट्टे हो जाते हैं, लेकिन जोडे जूते इकट्ठा करने मे पैर इस योग्य नही रह जाते कि चल भी पाएं । और सौ पर कोई सख्या रुकती नही है ।

तिव्वत मे एक पुरानी कथा है । दो भाई है । पिता मर गया है, तो उनके पास सौ घोडे थे । घोडे का काम था । सवारियों को लाने-ले जाने का काम था । तो पिता मरते वक्त वडे भाई को कह गया कि तू वुद्धिमान है, छोटा तो अभी छोटा

नही हो सकता वही हम सबकी भी बुद्धि है।

एसेंशियल चीज वस्तुए है। पहले इकट्ठी करो, फिर त्याग करो। अगर त्याग न करोगे तो मोक्ष कैसे जाओगे? लेकिन त्याग करोगे कैसे, अगर इकट्ठी न करोगे? तो पहले इकट्ठी करो, फिर त्याग करो, फिर मोक्ष जाओ। मगर जाओगे वस्तुओ से ही मोक्ष। वस्तुओ पर ही चढकर मोक्ष जाना होगा। तो फिर मोक्ष कम कीमती हो गया और वस्तुए ही ज्यादा कीमती हो गयी। क्योकि जो पहुचा दे, उसी की कीमत है।

कबीर ने कहा—गुरु गोविंद दोउ खडे, काके लागू पाय। गुरु और गोविद दोनो ही एक दिन सामने खडे हो गए है, अब किसके पैर लगू? तो फिर कबीर ने सोचा कि गुरु के ही पैर लगना ठीक है क्योकि उन्ही से गोविद का पता चलेगा।

तो अगर वस्तुओ से मोक्ष जाना है तो वस्तुओं की ही शरणागति जाना पडेगा, तो उनके ही पैर पडो क्योकि उनसे ही मोक्ष मिलेगा। न करोगे त्याग, न मिलेगा मोक्ष। त्याग क्या करोगे? कुछ होना चाहिए, तब त्याग करोगे। तब फिर वस्तुओ का मूल्य थिर है, अपनी जगह। भोगी के लिए भी, त्यागी के लिए भी।

महावीर का यह अर्थ नही है। महावीर वस्तु को मूल्य नहीं दे सकते। इसलिए मैं कहता हू कि महावीर का यह अर्थ नही है कि वस्तुओ के त्याग का नाम वृत्ति-सक्षेप है। महावीर वस्तुओ को मूल्य दे ही नही सकते। इतना भी मूल्य नहीं दे सकते कि उनके त्याग का कोई अर्थ है। नही, महावीर का आन्तरिक प्रयोग है। भीतर वृत्ति-केन्द्र पर ठहर जाए तो बाहर फैलाव अपने आप बन्द हो जाता है। वैसे ही, जैसे हमने एक दीया जलाया हो और हम उसकी बाती को भीतर नीचे की तरफ कम कर दें तो बाहर प्रकाश का घेरा कम हो जाता है। यहा दीये की बाती छोटी होती जाती है वहा प्रकाश का घेरा कम होता जाता है। लेकिन आप सोचते हो कि प्रकाश का घेरा कम करके हम दीये की बाती छोटी कर लेंगे तो आप बडी गलती मे हैं। कभी नही होगा, आप धोखा दे सकते है। धोखा देने की तरकीब? तरकीब यह है कि आप अपनी आख बन्द करते चले जाए, दीया उतना ही जलता रहेगा, प्रकाश उतना ही पडता रहेगा। आप अपनी आख धीरे-धीरे बन्द करते चले जाए। आप बिल्कुल अधेरे मे बैठ सकते है, लेकिन वह धोखा है और आख खोलेंगे और पाएगे दीये का वर्तुल प्रकाश उतना का उतना है। क्योकि दीये का वर्तुल मूल नही है, मूल उसकी बाती है। उसकी बाती नीचे छोटी होती जाए तो बाहर प्रकाश का वर्तुल छोटा होता जाता है। बाती टूट जाए, शून्य हो जाए तो वर्तुल खो जाता है।

हम सबके भीतर—जो बाहर फैलाव दिखाई पडता है—हमारे भीतर उसकी

हो जाए, कोई घोडा मर न जाए, कोई घोडा खो न जाए, नही तो वडी मुश्किल हो जाएगी।

मारपा यह कहानी अक्सर कहा करता था—एक तिब्बती फकीर था—वह अक्सर यह कहानी कहा करता था। और वह कहता था—मैंने दो ही तरह के आदमी देखे—एक, वे जो वस्तुओ पर इतना भरोसा कर लेते है कि उनकी वजह से ही परेशान हो जाते है। और एक वे, जो अपने पर इतने भरोसे से भरे होते है कि वस्तुए उन्हे परेशान नही कर पाती। दो ही तरह के लोग है इस पृथ्वी पर। दूसरी तरह के लोग वहुत कम हे इसलिए पृथ्वी पर आनन्द वहुत कम है। पहले तरह के लोग हैं, इसलिए पृथ्वी पर दुख वहुत है। वृत्ति-सक्षेप का अर्थ सीधा नही हे यह कि आप अपने परिग्रह को कम करें। जव भीतर आपकी वृत्ति सक्षिप्त होती है तो वाहर परिग्रह कम होता है।

इसका यह अर्थ नही है कि आप सव छोड कर भाग जाए, तो आप वदल जाएगे। जरूरी नही है। क्योकि चीजें छोडने से अगर आप वदल सकें तो चीजें वहुत कीमती हो जाती है। अगर चीजे छोडने से मैं वदल जाता हू तो चीजें वहुत कीमती हो जाती हैं। और अगर चीजें छोडने से मुझे मोक्ष मिलता हे तो ठीक हे, मोक्ष का भी सौदा हो जाता है। चीजो की ही कीमत चुका कर मोक्ष मिल जाता है। अगर एक मकान छोडने से, एक पत्नी और एक वेटे को छोड देने से मुझे मोक्ष मिल जाता हे, तो मोक्ष की कीमत कितनी हुई? इतनी ही कीमत हुई जितनी मकान की हो सकती है, एक पत्नी की, एक वेटे की हो सकती है। अगर मैं चीजें छोडने से त्यागी हो जाता हू तो ठीक हे। चीजे छोडने से लोग त्यागी हो जाते है, चीजे होने से भोगी हो जाते है। लेकिन चीजो का मूल्य, उसकी वेल्यू तो कायम रहती हे। फिर जिसके पास चीज नही हो, वह त्यागी कैसे होगा? जिसके पास छोडने का महल नही हो, वह महात्यागी कैसे होगा? वडी मुश्किल है, पहले महल होना चाहिए।

नसरूद्दीन से किसी ने पूछा है कि मोक्ष जाने का मार्ग क्या है? तो नसरूद्दीन ने कहा—यू मस्ट सिन फर्स्ट। पहले पाप करो।

उसने कहा—यह क्या पागलपन की बात है? तुम मोक्ष जाने का रास्ता वता रहे हो कि नर्क जाने का?

नसरूद्दीन ने कहा कि जव पाप नही करोगे तो पश्चात्ताप कैसे करोगे? और जव पश्चात्ताप नही करोगे तो मोक्ष जाओगे कैसे? और जव पाप नही करोगे तो भगवान तुम पर दया कैसे करेगा, और जव दया नही करेगा तो कुछ होगा ही नही बिना उसकी दया के। पहले पाप करो, तव पश्चात्ताप करो, तव भगवान दया करेगा, तव स्वर्ग का द्वार खुलेगा, तुम भीतर प्रवेश कर जाओगे। तो जो एसेंशियल चीज है, नसरूद्दीन ने कहा वह पाप है। उसके विना कुछ भी

आप किस चीज को साधन बनाकर जाना चाहते है स्वय तक ? वस्तुओ को ? अपरिग्रह को ? बाहर से रोक कर अपने को, सभालकर ? वह नही होगा। आप परेशान भला हो जाए, तप नही होगा। परेशानी तप नही है। तप तो बडा आनन्द है और तपस्वी के आनन्द का कोई हिसाब नही है। वस्तुए दुख हैं। लेकिन यह दुख तभी पता चलेगा आपको जब आपकी वृत्ति के केन्द्र पर आप अनुभव करेंगे और दुख पाएगे और सुख की कोई रेखा न दिखाई पडेगी। अन्धेरा ही अन्धेरा पाएगे, कोई प्रकाश की ज्योति न दिखाई पडेगी। काटे ही काटे पाएगे, कोई फूल खिलता न दिखाई पडेगा। भीतर-भीतर केन्द्र व्यर्थ हो जाएगा, बाहर से आभामण्डल तिरोहित हो जाएगा। अचानक आप पाएगे, बाहर जब कोई अर्थ नही रह गया। लोगो को दिखाई पडेगा आपने बाहर कुछ छोड दिया। आप बाहर कुछ भी न छोडेंगे, भीतर कुछ टूट गया। भीतर कोई ज्योति ही बुझ गई। तो एक-एक केन्द्र पर उसकी वृत्तियो को ठहरा देना और बुद्धि को सजग रखकर देखना कि वृत्ति के अनुभव क्या है।

आदमी के सम्बन्ध मे जो बडे से बडा आश्चर्य है वह यह है कि जिस चीज को आप आज कहते है कि कल मुझे मिल जाए तो सुख मिलेगा, कल जब वह चीज मिलती है तो आप कभी तौल नही करते कि कल मैने कितना सुख सोचा था, वह मिला या नही मिला ! बडा आश्चर्य है। यह भी बडा आश्चर्य है कि उससे दुख मिलता है, फिर भी दूसरे दिन आप फिर उसी की चाह करने लगते हैं और कभी नही सोचते कि कल पाकर इसे दुख पाया, अब मै फिर दुख की तलाश मे जाता हू। हम कभी तौलते ही नही, बुद्धि का वही काम है, वही हम नही लेते उससे। वही काम है कि जिस चीज मे सोचा था कि सुख मिलेगा, उसमे मिला ? जिस चीज मे सोचा था सुख मिलेगा उसमे दुख मिला, यह अनुभव मे आता है और इस अनुभव को हम याद नही रखते और जिसमें दुख मिला उसको फिर दुबारा चाहने लगते है।

ऐसे जिन्दगी सिर्फ एक कोल्हू के बैल जैसी हो जाती है। बस एक ही रास्ते पर घूमते रहते है। कोई गति नही, कही कोई पहुचना नही। घूमते-घूमते मर जाते हैं। जहा पैदा होते है, उसी जमीन पर खडे-खडे मर जाते है। कही एक इच आगे नही बढ पाते। बढ भी नही पाएगे। क्योकि बढने की जो सम्भावना थी वह आपकी बुद्धिमत्ता से थी, आपकी विसडम से थी, आपकी प्रज्ञा मे थी। वह तो प्रज्ञा कभी विकसित नही होती।

तो महावीर वृत्ति-सक्षेप पर जोर देते है ताकि प्रत्येक वृत्ति अपनी-अपनी निखार तीव्रता मे, अपनी प्योरिटी मे अनुभव मे आ जाए और अनुभव कह जाए दुख है, कि दुख है वहा, सुख नही। और बुद्धि इस अनुभव को सग्रहित करे, बुद्धि इस अनुभव को जिए और पिए और बुद्धि के रोए-रोए मे यह समा जाए तो आपके

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

भीतर वृत्तियो से ऊपर आपकी प्रज्ञा, आपकी बुद्धिमत्ता उठने लगेगी। और जैसे-जैसे बुद्धिमत्ता ऊपर उठती है, वैसे-वैसे वृत्तिया सिकुडती जाती है। इधर वृत्तिया सिकुडती है, इधर बुद्धिमत्ता ऊपर उठती है। और बाहर परिग्रह कम होता चला जाता है। जैसे बुद्धिमत्ता ऊपर उठती है वैसे ससार बाहर कम होता चला जाता है। जिस दिन आपकी समग्र शक्ति वृत्तियो से मुक्त होकर बुद्धि को मिल जाती है, उसी दिन आप मुक्त हो जाते हैं। जिस दिन आपकी सारी शक्ति वृत्तियो से मुक्त होकर प्रज्ञा के साथ खडी हो जाती है, उसी दिन आप मुक्त हो जाते है।

जिस दिन कामवासना की शक्ति भी बुद्धि को मिल जाती है, जिस दिन लोभ की शक्ति भी बुद्धि को मिल जाती है, जिस दिन क्रोध की शक्ति भी बुद्धि को मिल जाती है, जिस दिन मोह की शक्ति भी बुद्धि को मिल जाती है, जिस दिन समस्त शक्तिया बुद्धि की तरफ प्रवाहित होने लगती है, जैसे नदिया सागर की तरफ जा रही हो, उस दिन बुद्धि का महासागर आपके भीतर फलित होता है। उस महासागर का आनन्द, उस महासागर की प्रतिति और अनुभूति दुख की नही है, परेशानी की नही है वह परम आनन्द की है। वह परम प्रफुल्लता की है। वह किसी फूल के खिल जाने जैसी है। वह किसी दीये के जल जाने जैसी है। वह कही मृतक मे जैसे जीवन आ जाए, ऐसी है।

आज इतना ही। कल आगे हम बात करेंगे। लेकिन उठे न। जो कीर्तन के लिए आना चाहते है वे ऊपर आ जाए। पाच मिनट कीर्तन करें, फिर वापस लौट जाए।

मे असमर्थ है। जैसे आपको फ़ासी की सज़ा दी जा रही हो और आपको मिष्ठान खाने को दे दिया जाए, तो भी मीठा नही लगेगा। मिष्ठान अब भी मीठा ही है, और जो मीठे को भोग सकता था, वह एकदम अनुपस्थित हो गया है। स्वादेंद्रिय अब भी खबर देगी क्योकि स्वादेंद्रिय को कोई भी पता नही है कि फासी लग रही है, न पता हो सकता है। स्वादेंद्रिय के सवेदनशील तत्व अब भी भीतर खबर पहुचाएगे कि मीठा है—मिठाई मुह पर है, जीभ पर है। लेकिन मन उस खबर को लेने की तैयारी नही दिखाएगा। मन भी उस खबर को ले ले तो मन के पीछे जो चेतना है उस और मन के बीच का सेतु टूट गया है, सम्बन्ध टूट गया है। मृत्यु के क्षण मे वह सम्बन्ध नही रह जाता। इसलिए मन भी खबर ले लेगा कि जीभ ने क्या खबर दी है, तो भी चेतना को कोई पता नही चलेगा।

आपके व्यक्तित्व को बदलने के लिए हजारो वर्षो से, जब भी कोई बहुत उलझन होती है तो शाक ट्रीटमेट का उपयोग करते रहे है चिकित्सक—जब भी कोई उलझन होती है तो आपको इतना गहरा धक्का देने का प्रयोग करते रहे है, शाक का, और उससे कई बार बहुत गहरी उलझन सुलझ जाती है। और शाक ट्रीटमेट का कुल अर्थ इतना ही है कि आपकी चेतना और आपके मन का सेतु क्षण भर को टूट जाए। उस सेतु के टूटते ही आपके भीतर की सारी व्यवस्था जैसी कल तक थी रुग्ण, वह अव्यवस्थित हो जाती है, अराजक हो जाती है। और नयी व्यवस्था कोई भी रुग्ण नही बनाना चाहता। इसलिए शाक ट्रीटमेट का कुल भरोसा इतना है कि एक बार पुरानी व्यवस्था का ढाचा टूट जाए तो आप फिर शायद उस ढाचे को न बना सकेंगे।

सुना है मैंने कि एक बहुत बडे मनोचिकित्सक के पास एक रुग्ण कैथेलिक नन, कैथेलिक साध्वी को लाया गया था। छ महीने से निरन्तर उसे हिचकी आ रही थी वह बन्द नही होती थी। वह नीद मे भी चलती रहती थी। सारे चिकित्सा, सारे उपाय कर लिए गए थे, वह हिचकी बन्द नही हो रही थी। चिकित्सक थक गए थे और उन्होने कहा—अब हमारे पास कोई उपाय नही है। शायद मनस चिकित्सक कुछ कर सकें। तो मनस चिकित्सक के पास लाया गया। बहुत लोग उस साध्वी को मानने वाले थे। आदर करने वाले थे, वे सब उसके साथ आए थे। वह साध्वी प्रभु का भजन करती हुई भीतर प्रविष्ट हुई। वह निरन्तर प्रभु का स्मरण करती रहती थी। चिकित्सक ने पता नही उससे क्या कहा कि दो ही क्षण बाद वह रोती हुई बाहर वापस लौटी। उसके भक्त देखकर हैरान हुए कि वह एक क्षण मे ही रोती हुई वापस आ गई। रो रही है। भगवान का छ महीने का स्मरण जो नही कर सका था, वह हो गया है। रो तो जरूर रही है, लेकिन हिचकी बन्द हो गई है।

पीछे से चिकित्सक आया। वह तो साध्वी दौडकर बाहर निकल गई। उसके

रस-परित्याग और काया-क्लेश

बारहवा प्रवचन . दिनाक २६ अगस्त, १६७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, वम्बई

बाह्य-तप का चौथा चरण है—रस-परित्याग। परम्परा रस-परित्याग से अर्थ लेती रही है। किन्ही रसो का, किन्ही स्वादो का निषेध, नियन्त्रण। इतनी स्थूल वात रस-परित्याग नही है। वस्तुत साधना के जगत् मे स्थूल से स्थूल दिखाई पडने वाली बात भी स्थूल नही होती। कितने ही स्थूल शब्दो का प्रयोग किया जाए वात तो सूक्ष्म ही होती है। मजबूरी है कि स्थूल शब्दो का प्रयोग करना पडता है, क्योकि सूक्ष्म के लिए कोई शब्द नही है। वह जो अन्तर्जगत है, वहा इशारे करने वाले कोई शब्द हमारे पास नही है। अन्तर्जगत की कोई भाषा नही है। इसलिए वाह्य जगत् के ही शब्दो का प्रयोग करना मजबूरी है। उस मजबूरी से खतरा भी पैदा होता है क्योकि तव उन शब्दो का स्थूल अर्थ लिया जाना शुरु हो जाता है। रस-परित्याग से यही लगता है कि कभी खट्टे का त्याग कर दो, कभी मीठे का त्याग कर दो, कभी घी का त्याग कर दो, कभी कुछ और त्याग कर दो। रस-परित्याग से ऐसा प्रयोजन महावीर का नही है। महावीर का क्या प्रयोजन है वह दो-तीन हिस्सो मे समझ लेना जरूरी है।

पहली बात तो यह कि रस की पूरी प्रक्रिया क्या है? जब आप कोई स्वाद लेते है तो स्वाद वस्तु मे होता है या स्वाद आपकी स्वाद इन्द्रिय मे होता है? या स्वाद स्वादेंद्रिय के पीछे वह जो आपका अनुभव करने वाला मन है, उसमे होता है? या स्वाद उस मन के साथ आपकी चेतना का जो तादात्म्य है उसमे होता है? स्वाद कहा है? रस कहां है? तभी परित्याग ख्याल मे आ सकेगा। जो स्थूल देखते हैं उन्हे लगता है कि स्वाद या रस वस्तु मे होता है, इसलिए वस्तु को छोड दो। वस्तु मे स्वाद नही होता, न रस होता है, वस्तु केवल निमित्त बनती है। और अगर भीतर रस की पूरी प्रक्रिया काम न कर रही हो तो वस्तु निमित्त बनने

ढाक लो, आसपास जो बुद्धुओ की जमात है वह उघाडने को उत्सुक हो जाते है। उघाडने की कोशिश मे अर्थ आ जाता है। जितना उघाडने की कोशिश चलती है, उतनी ढाकने की कोशिश चलती है। इसलिए अर्थ वढता चला जाता है। चीजें अगर सीधी और साफ खुल जाए तो अर्थहीन हो जाती है।

अमरीका ने पहली दफा ममाज पैदा किया है जो समाज सेक्स से मुक्त एक अर्थ मे हो गया कि उसमे अर्थ नही दिखाई पड रहा। लेकिन इमसे वडी परेशानी पैदा हुई है, और इसलिए अव नए अर्थ खोजे जा रहे है। एल० एस० डी० मे, मारिज्युआना मे, और तरह के ड्रग्स मे अर्थ खोजे जा रहे है। क्योकि अव सेक्स से तो कोई तृप्ति होती नही, सेक्स मे तो कुछ मतलव ही नही रहा। वह तो वेमानी वात हो गयी। अव हमे और कोई सेंसेशन और कोई अनुभूतिया चाहिए। और अमरीका लाख उपाय करे ड्रग्स नही रोके जा सकते, कोई विज्ञापन नही होता है एल० एस० डी० का। लेकिन घर-घर मे पहुचा जा रहा है। कोई विज्ञापन नही है, कोई अखवारो मे खबर नही है कि आप एल० एस० डी० जरूर पियो। लेकिन एक-एक यूनिवर्सिटी के कैम्पस पर एक-एक विद्यार्थी के पास पहुचा जा रहा है। अमरिका तव तक सफल नही होगा—कानून वना डाले, विरोध किया है, अदालतें मुकदमे चला रही हैं, सजाए दी गयी है—एल० एस० डी० के प्रचार के लिए जो सवसे वडा पुरोहित था वहा, तिमोथी लेरी, उसको सजा दे दी आजीवन की—लेकिन इससे रुकेगा नही, जव तक आप सेक्स का मीनिंग वापस नही लौटा लेंगे अमरीका मे, तव तक ड्रग्स नही रुक सकते। क्योकि आदमी विना मीनिंग के नही जी सकता। और या फिर कोई आत्मा का, परमात्मा का मीनिंग खडा करे। कोई नया अर्थ, जिसकी खोज मे आदमी निकल जाए। कोई नए शिखर, जिन पर वह चढ जाए।

एक शिखर है आदमी के पास सभोग का, वह उसकी तलाश मे भटकता रहता है। और वह इतना सुरक्षित और व्यवस्थित है कि वह कभी भी यह अनुभव नही कर पाता कि वह व्यर्थ है। अगर उसकी पत्नी व्यर्थ हो जाती है, पति व्यर्थ हो जाता है तो भी और स्त्रिया है जो सार्थक वनी रहती है। पर्दे पर फिल्म की स्त्रिया हैं, जो सार्थक वनी रहती हैं। कोई न कोई है जहा अर्थ वना रहता है, वह उस अर्थ की तलाश मे लगा रहता है, उस खोज मे लगा रहता है, जिन्दगी खो देता है।

महावीर कहते हैं—वृत्ति-सक्षेप—यह वडी वैज्ञानिक वात है। इसका एक अर्थ तो यह है कि प्रत्येक, प्रत्येक वृत्ति उसकी टोटल इर्टेंसिटी मे जीयी जा सकेगी। और जिस वृत्ति को भी आप उसकी समग्रता मे जीते है, वह व्यर्थ हो जाती है। और वृत्तियो का व्यर्थ हो जाना जरूरी है आत्मदर्शन के पूर्व। दूसरी वात—सारी वृत्तिया मन को घेर लेती है क्योकि आप मन से ही सारा काम करते है। भोजन

भक्तो ने पूछा—आपने ऐसा क्या कहा कि उसको इतनी पीडा पहुची ? चिकित्सक ने कहा कि मैंने उससे कहा—हिचकी तो कुछ भी नही है, यू आर प्रेगनेंट, तुम गर्भवती हो। अब कैथेलिक नन, कैथेलिक साध्वी गर्भवती हो, इससे बडा शाक नही हो सकता। उसके भक्तो ने कहा—आप यह क्या कह रहे है ? उस चिकित्सक ने कहा—तुम घबराओ मत, इसके अतिरिक्त हिचकी बन्द नही हो सकती थी। बिजली के शाक को भी वह महिला झेल गयी। लेकिन अब हिचकी बन्द हो गयी। हुआ क्या ?

कैथेलिक नन, आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर प्रवेश करती है। वह गर्भिणी है, भारी धक्का लगा। मन और चेतना का जो सम्बन्ध था, चेतना और शरीर का जो सम्बन्ध सेतु था, वह एकदम टूट गया। एक क्षण को भी वह टूट गया तो हिचकी बन्द हो गयी, क्योकि हिचकी की अपनी व्यवस्था थी। सारी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी। हिचकी लेने के लिए भी सुविधा चाहिए, वह सुविधा न रही। हिचकी का जो पुराना जाल था, छ महीने से निश्चित, वह अब कारगर न रहा। शरीर वही हे, हिचकी कैसे खो गई ? कोई दवा नही दी गयी हे, कोई इलाज नही किया गया है, हिचकी कैसे खो गयी ? मनोचिकित्सक कहते है कि अगर चेतना और मन के सम्बन्ध मे कही भी, जरा-सा भेद पड जाए, एक क्षण के लिए भी तो आदमी का व्यक्तित्व दूसरा हो जाता है। वह पुराना ढाचा टूट जाता है। रस-परित्याग उस ढाचे को तोडने की प्रक्रिया है।

वस्तु मे रस नही होता, सिर्फ रस का निमित्त होता है। इसे हम ऐसा समझे तो आसानी हो जाएगी। आप इस कमरे मे आए है। दीवारे एक रग की हे, फर्श दूसरे रग का है, कुर्सिया तीसरे रग की हे, अलग-अलग लोग अलग-अलग रगो के कपडे पहने हुए है। स्वभावत आप सोचते होगे कि इन सब चीजो मे रग है। और जब हम कमरे के बाहर चले जाएगे तब भी कुर्सिया एक रग की रहेगी, दीवार दूसरे रग की रहेगी, फर्श तीसरे रग का रहेगा। अगर आप ऐसा सोचते है तो आप कोई आधुनिक विज्ञान की किसी भी कीमती खोज से परिचित नही हैं। जब इस कमरे मे कोई नही रह जाएगा तो वस्तुओ मे कोई रग नही रह जाता। यह बहुत मन को हैरान करता है। यह बात भरोसे की नही मालूम पडती। हमारा मन होगा कि हम किसी छेद से झाककर देख ले कि रग रह गया कि नही। लेकिन आपने झाककर देखा कि वस्तुओ मे रग शुरू हो जाता है। वैज्ञानिक कहते हैं—किसी वस्तु मे कोई रग नही होता, वस्तु केवल निमित्त होती है किसी रग को आपके भीतर पैदा करने के लिए। जब आप नही होते, जब आब्जर्वर नहीं होता, जब कोई देखने वाला नही होता, वस्तु रगहीन हो जाती हैं, कलरलैस हो जाती है।

असल मे प्रकाश की किरण जब किसी वस्तु पर पडती है तो वस्तु प्रकाश की

बुद्धि को कह दो—तू चुप रह। कितना बजा है, फिक्र छोड। पेट खबर देगा न कि भूख लगी है, तब हम सुन लेंगे। सोने का काम करना है तो बुद्धि को मत करने दो। नीद आएगी तो खुद ही खबर देगी, शरीर खबर देगा तब सो जाना। नीद तोडनी हो तो भी बुद्धि को काम मत दो कि वह अलार्म भर कर रख दें। जब नीद टूटेगी तब टूट जाएगी। उसको टूटने दो स्वय। नीद के यन्त्र को अपना काम करने दो; भोजन के यन्त्र को अपना काम करने दो, कामवासना के यन्त्र को अपना काम करने दो। शरीर के सारे काम स्पेशलाइज्ड हैं, उनको अपने-अपने मे चले जाने दो। उनको सबको इकट्ठा मत करो, अन्यथा वे सब विकृत हो जाएगे और उनको सम्भालना कठिन हो जाएगा।

और मजे की बात यह है कि जिस केन्द्र पर काम पहुच जाता है, बुद्धि का इतना काम है कि वह केन्द्र अपना काम समग्रता से करे ताकि उसका केन्द्र का काम किसी दूसरे केन्द्र पर न फैलने पाए। बुद्धि इतना देखे तो पर्याप्त है, तो बुद्धि नियता हो जाती है। वह कट्रोलर हो जाती है। वह मध्य मे बैठ जाती है और मालिक हो जाती है, उसकी नजर सब इद्रियों पर हो जाती है। और प्रत्येक इद्रिय अपना काम करे, यही उसकी दृष्टि हो जाती है। जैसे ही कोई इद्रिय अपना काम करती है, बुद्धि देख पाती कि उस काम मे कुछ रस मिलता है या नही मिलता है, तो जो व्यर्थ काम हैं वे बन्द होने शुरू हो जाते हैं। जो सार्थक काम हैं वे बढने शुरू हो जाते हैं। बहुत शीघ्र वह वक्त आ जाता है—जब आपके जीवन से व्यर्थ गिर जाता हैं और गिराना नही पडता है। और सार्थक बच रहता है, बचाना नही पडता। आपके जीवन से काटे गिर जाते है, फूल बच जाते हैं। इसके लिए कुछ करना नही पडता है। बुद्धि का सिर्फ देखना ही पर्याप्त होता हैं। उसका साक्षी होना पर्याप्त होता है। साक्षी होना ही बुद्धि का स्वभाव है। वही उसका काम है। बुद्धि किसी की मीन्स नही है, किसी का साधन नही है। वह स्वय साध्य है। सभी इद्रिया अपने अनुभव को बुद्धि को दे दे, लेकिन कोई इद्रिय अपने काम को बुद्धि से न ले पाए, यह वृत्ति-सक्षेप का अर्थ है।

निश्चित ही इसका परिणाम होगा। इसका परिणाम होगा कि जब प्रत्येक केन्द्र अपना काम करेगा तो आपके बहुत से काम जो बाहर के जगत् मे फैलाव लाते थे, वे गिरने शुरू हो जाएगे, वे सिकुडने शुरू हो जाएगे, बिना आपके प्रयत्न के। आपको धन की दौड छोडनी नही पडेगी, आप अचानक पाएगे, उसमे जो-जो व्यर्थ है वह छूट गया। आपको बडा मकान बनाने का पागलपन छोडना नहीं पडेगा, आपको दिख जाएगा कि कितना मकान आपके लिए जरूरी है। उससे ज्यादा व्यर्थ हो गया। आपको कपडो का ढेर लगाने का पागलपन नही हो जाएगा, आप्सेशन नही हो जाएगा, आप गिनती करके मजा न लेने लगेंगे कि अब तीन सौ साडी पूरी हो गयी, अब चार सौ साडी पूरी हुई है, अब पाच

भी मन से करना पडता है, सभोग भी मन से करना पडता है, कपडे भी मन से पहनने पडते हैं, कार भी मन से चलानी पडती है, दफ्तर भी मन से—सारा काम बुद्धि को घेर लेता है इसलिए बुद्धि निर्बल और निर्वीर्य हो जाती है। इतना काम उस पर हो जाता है। इतना वाहरी काम हो जाता है।

मुल्ला नसरूद्दीन की पत्नी ने उससे कहा है कि अपने मालिक से कहो कि कुछ तनख्वाह वढाए। वहुत दिन हो गए, कोई तनखवाह नही वढी। मुल्ला ने कहा—मैं कहता हू, लेकिन वह सुनकर टाल देता है। उसकी पत्नी ने कहा—तुम जाकर वताओ, उसको कि तुम्हारी मा बीमार है, उसके इलाज की जरूरत है। तुम्हारे पिता को लकवा लग गया हैं, उनकी सेवा की जरूरत है। तुम्हारी सास भी तुम्हारे पास रहती है। तुम्हारे इतने वच्चे हे, इनकी शिक्षा का सवाल है। तुम्हारे पास अपना मकान नही है, तुम्हे मकान वनाना हे। ऐसी उसने बडी फेहरिश्त वतायी।

मुल्ला दूसरे दिन वडा प्रसन्न लौटा दफ्तर से। उसकी पत्नी ने कहा—क्या तनख्वाह वढ गयी है ? मुल्ला ने कहा—नही, मेरे मालिक ने कहा—यू हेव टू मच आउटसाइड एक्टिविटीज। नौकरी खत्म कर दी। तुम दफ्तर का काम कव करोगे ? जब इतना तुम्हारा सब काम है—सास भी घर मे है तो दफ्तर का काम कव करोगे ? उसने छुट्टी दे दी।

बुद्धि के ऊपर इतना ज्यादा काम है कि बुद्धि अपना काम कव करेगी ? उसको सव तरफ से वोझिल किए हुए है, वह अपना काम कव करेगी ? तो आप बुद्धिमत्ता का कोई काम जीवन मे नही कर पाते। बुद्धि से आप नीद का ही काम लेते है। कभी धन कमाने का काम करते है, कभी शादी करने का काम करते हैं, कभी रेडियो सुनने का काम करते है। लेकिन वुद्धि की वुद्धिमत्ता, बुद्धि का अपना निजी काम क्या है ? वुद्धि का निजी काम ध्यान है। जव बुद्धि अपने मे ठहरती है, जव वुद्धि अपने मे रुकती है, तो विसडम, बुद्धिमत्ता आती है और पहली दफे जीवन को आप और ढग से देख पाते हे, एक बुद्धिमान की आखो से। लेकिन वह मौका नही आ पाता। वहुत ज्यादा काम है। वह उसी मे दवी-दवी नष्ट हो जाती है। जो आपके पास श्रेष्ठतम विन्दु है काम का, उससे आप वहुत निकृष्ट काम ले रहे है। जो आपके पास श्रेष्ठतम शक्ति है, उससे आप ऐसे काम ले रहे हैं, जिनको कि सुई से कर सकते थे, उनका काम आप तलवार से ले रहे हैं। तलवार से लेने की वजह से सुई से जो हो सकता था, वह भी नही हो पाता। और तलवार जो कर सकती थी, उसका कोई सवाल ही नही है, वह सुई के काम मे उलझी हुई होती है।

वृत्ति-सक्षेप का अर्थ है—प्रत्येक वृत्ति को उसके अपने केन्द्र पर सक्षिप्त करो। उसे फैलने मत दो। भूख लगे तो पेट से लगने दो भूख, वुद्धि से मत लगने दो।

है। तू अपनी मर्जी मे जैसा भी वटवारा करना चाहे कर देना। तो वडे भाई ने वटवारा कर दिया। निन्यानवे घोडे उसने रख लिए, एक घोडा छोटे भाई को दे दिया। आस-पास के लोग चौंके भी। पडोसियो ने कहा भी कि यह तुम क्या कर रहे हो ? तो वडे भाई ने कहा कि मामला ऐसा है, यह अभी छोटा है, समझ कम है। निन्यानवे कैसे सम्भालेगा ? और मैं निन्यानवे ले लेता हू, एक उसे दे देता हू।

ठीक छोटा भी थोडे दिन मे वडा हो गया, लेकिन वह एक से काफी प्रसन्न था एक से काम चल जाता था। वह खुद ही—नौकर नही रखने पडते थे, अलग इतजाम नही करना पडता था—वह खुद ही सईस की तरह चला जाता था। यात्रा करवा आता था लोगो के लिए। उसका भोजन का काम चल जाता था। लेकिन वडा भाई वडा परेशान था। निन्यानवे घोडे थे, निन्यानवे चक्कर थे। नौकर रखने पडते। अस्तवल वनाना पडता। कभी कोई घोडा वीमार हो जाता, कभी कुछ हो जाता। कभी कोई घोडा भाग जाता, कभी कोई नौकर न लौटता। रात हो जाती, देर हो जाती। वह जागता, वह वहुत परेशान था।

एक दिन आकर उसने अपने छोटे भाई को कहा कि तुझसे मेरी एक प्रार्थना है कि तेरा जो एक घोडा है वह भी मुझे दे दे। उसने कहा—क्यो ? तो उस वडे भाई ने कहा—तेरे पास एक ही घोडा है, नही भी रहा तो कुछ ज्यादा नही खो जाएगा। मेरे पास निन्यानवे हैं, अगर एक मुझे और मिल जाए तो सौ हो जाएगे। और तेरा तो कुछ खास विगडेगा नही क्योकि एक ही—हुआ कि न हुआ। पर मेरे लिए वडा सवाल है। क्योकि मेरे पास निन्यानवे हैं। एक मिलते ही पूरी सेंचुरी, पूरे सौ हो जाएगे। तो मेरी प्रतिष्ठा और इज्जत का सवाल है। अपने वाप के पास सौ घोडे थे कम-से-कम वाप की इज्जत का भी इसमे सवाल जुडा हुआ है। छोटे भाई ने कहा—आप यह घोडा भी ले जाए। क्योकि मेरा अनुभव यह हे कि निन्यानवे मे आपको मैं वडी तकलीफ मे देखता हू, तो मैं सोचता हू, एक मे भी निन्यानवे वटे सही, लेकिन थोडी वहुत तकलीफ तो होगी ही। यह भी आप ले जाए।

तो वह छोटा उस दिन से इतने आनन्द मे हो गया, क्योकि अव वह खुद ही घोडे का काम करने लगा। अव तक कभी घोडा वीमार पडता था, कभी दवा लानी पडती थी, कभी घोडा राजी नही होता था जाने को, कभी थक कर वैठ जाता था। हजार पचायतें होती थी। वह वात खत्म हो गयी। अव तक घोडे की नौकरी करनी पडती थी उसकी लगाम पकड कर चलनी पडती थी, वह वात भी खत्म हो गयी। अपना मालिक हो गया। अव वह खुद ही वोझ ले लेता, लोगो को कधे पर विठा लेता और यात्रा कराता। लेकिन वडा वहुत परेशान हो गया। वह वीमार ही रहने लगा। क्योकि सौ मे से अव कही एकाध कम न

सौ साडी पूरी हो गयी । आपकी वुद्धि आपको कहेगी—पाच सौ साडी पहनिएगा कव ?

मैंने सुना है कि दो सेल्समैन आपस मे एक दिन वात कर रहे थे । एक सेल्समैन वडी वातें कर रहा था कि आज मैंने इतनी विक्री की । एक आदमी एक ही टाई खरीदने आया था, मैंने उसको छ टाई वेच दी । दूसरे ने कहा—दिम इज नथिंग यह कुछ भी नही है । एक औरत अपने मरे हुए पति के लिए सूट खरीदने आयी थी, मैने उसे दो सूट वेच दिए । एक औरत अपने मरे हुए पति के लिए कपडे खरीदने आयी थी, मैंने उसे दो जोडे कपडे वेच दिए मैंने कहा—यह दूसरा और भी ज्यादा जचता है और कभी-कभी वदलने के लिए विल्कुल ठीक लगेगी ।

कोई औरत ले जा सकती है दो जोडे, क्योकि जिन्दगी हमारी कीमत से जीती है, वुद्धि से नही जीती है । वह पति मर गया है, यह सवाल थोडे ही है । और पति को दूसरा जोडा पहनने का मौका कभी नही आएगा, यह भी सवाल नही है । लेकिन दूसरा जोडा भी जच रहा है, और दो जोडे—मन का एक रस है । करीव-करीब हम सव यही कर रहे है । कौन पहनेगा, कव पहनेगा इसका सवाल नही है । कितना ? वह महत्वपूर्ण है । कौन खाएगा, कव खाएगा, इसका सवाल नही है । कितना ? मात्रा ही अपने आप मे मूल्यवान हो गयी है । उपयोग जैसे कुछ भी नही हे, सख्या ही उपयोगी हो गयी । कितनी सख्या हम वता सकते हैं, उसका उपयोग है ।

मै घरो मे जाता हू, देखता हू कोई आदमी सौ जूते के जोडे रखे हुए है । इससे तो वेहतर यही है, आदमी चमार हो जाए । गिनती का मजा लेता रहे । यह नाहक, अकारण चमार वना हुआ है मुफ्त । गिनती ही करनी है न ! तो चमार हो जाए, जोडे गिनता रहे । नए-नए जोडे रोज आते जाएगे उसको वड़ी तृप्ति मिलेगी । अव यह आदमी वुद्धि से चमार है । सौ जोडे का क्या करिएगा ? नही, लेकिन सौ जोडे की प्रतिष्ठा है । जिसके पास है उसके मन मे तो है ही, जिसके पास नही है वह पीडित है कि हमारे पास सौ जोडे जूते नही हे । चमारी मे ही प्रतियोगिता है । वह दूसरा हमसे ज्यादा चमार हुआ जा रहा है, हम विल्कुल पिछडे जा रहे है । अभागे है । सौ जोडे जूते हम पर कव होगे ? अक्सर ऐसा होता है कि जोडे जूते तो इकट्ठे हो जाते हैं, लेकिन जोडे जूते इकट्ठा करने मे पैर इस योग्य नही रह जाते कि चल भी पाए । और सौ पर कोई संख्या रुकती नही है ।

तिव्वत मे एक पुरानी कथा है । दो भाई है । पिता मर गया है, तो उनके पास सौ घोडे थे । घोडे का काम था । सवारियो को लाने-लेजाने का काम था । तो पिता मरते वक्त वडे भाई को कह गया कि तू वुद्धिमान है, छोटा तो अभी छोटा

नही हो सकता वही हम सबकी भी बुद्धि है।

एसेंशियल चीज वस्तुए है। पहले इकट्ठी करो, फिर त्याग करो। अगर त्याग न करोगे तो मोक्ष कैसे जाओगे ? लेकिन त्याग करोगे कैसे, अगर इकट्ठी न करोगे ? तो पहले इकट्ठी करो, फिर त्याग करो, फिर मोक्ष जाओ। मगर जाओगे वस्तुओ से ही मोक्ष। वस्तुओ पर ही चढकर मोक्ष जाना होगा। तो फिर मोक्ष कम कीमती हो गया और वस्तुए ही ज्यादा कीमती हो गयी। क्योकि जो पहुचा दे, उसी की कीमत है।

कबीर ने कहा—गुरु गोविंद दोउ खडे, काके लागू पाव। गुरु और गोविंद दोनो ही एक दिन सामने खडे हो गए हैं, अब किसके पैर लगू ? तो फिर कबीर ने सोचा कि गुरु के ही पैर लगना ठीक है क्योकि उसी से गोविंद का पता चलेगा।

तो अगर वस्तुओ से मोक्ष जाना है तो वस्तुओं की ही शरणागति जाना पडेगा, तो उनके ही पैर पडो क्योकि उनसे ही मोक्ष मिलेगा। न करोगे त्याग, न मिलेगा मोक्ष। त्याग क्या करोगे ? कुछ होना चाहिए, तब त्याग करोगे। तब फिर वस्तुओ का मूल्य थिर है, अपनी जगह। भोगी के लिए भी, त्यागी के लिए भी।

महावीर का यह अर्थ नही है। महावीर वस्तु को मूल्य नही दे सकते। इसलिए मै कहता हू कि महावीर का यह अर्थ नही है कि वस्तुओ के त्याग का नाम वृत्ति-सक्षेप है। महावीर वस्तुओ को मूल्य दे ही नही सकते। इतना भी मूल्य नही दे सकते कि उनके त्याग का कोई अर्थ है। नही, महावीर का आन्तरिक प्रयोग है। भीतर वृत्ति-केन्द्र पर ठहर जाए तो बाहर फैलाव अपने आप बन्द हो जाता है। वैसे ही, जैसे हमने एक दीया जलाया हो और हम उसकी बाती को भीतर नीचे की तरफ कम कर दें तो बाहर प्रकाश का घेरा कम हो जाता है। यहा दीये की बाती छोटी होती जाती है वहा प्रकाश का घेरा कम होता जाता है। लेकिन आप सोचते हो कि प्रकाश का घेरा कम करके हम दीये की बाती छोटी कर लेंगे तो आप बडी गलती मे है। कभी नही होगा, आप धोखा दे सकते है। धोखा देने की तरकीब ? तरकीब यह है कि आप अपनी आख बन्द करते चले जाए, दीया उतना ही जलता रहेगा, प्रकाश उतना ही पडता रहेगा। आप अपनी आख धीरे-धीरे बन्द करते चले जाए। आप बिलकुल अधेरे मे बैठ सकते है, लेकिन वह धोखा है और आख खोलेंगे और पाएगे दीये का वर्तुल प्रकाश उतना का उतना है। क्योकि दीये का वर्तुल मूल नही है, मूल उसकी बाती है। उसकी बाती नीचे छोटी होती जाए तो बाहर प्रकाश का वर्तुल छोटा होता जाता है। बाती टूट जाए, शून्य हो जाए तो वर्तुल खो जाता है।

हम सबके भीतर—जो बाहर फैलाव दिखाई पडता है—हमारे भीतर उसकी

हो जाए, कोई घोडा मर न जाए, कोई घोडा खो न जाए, नही तो वडी मुश्किल हो जाएगी।

मारपा यह कहानी अक्सर कहा करता था—एक तिब्बती फकीर था—वह अक्सर यह कहानी कहा करता था। और वह कहता था—मैंने दो ही तरह के आदमी देखे—एक, वे जो वस्तुओ पर इतना भरोसा कर लेते है कि उनकी वजह से ही परेशान हो जाते है। और एक वे, जो अपने पर इतने भरोसे से भरे होते हैं कि वस्तुए उन्हे परेशान नही कर पाती। दो ही तरह के लोग हैं इस पृथ्वी पर। दूसरी तरह के लोग वहुत कम हैं इसलिए पृथ्वी पर आनन्द वहुत कम है। पहले तरह के लोग हैं, इसलिए पृथ्वी पर दुख वहुत है। वृत्ति-सक्षेप का अर्थ सीधा नही है यह कि आप अपने परिग्रह को कम करें। जव भीतर आपकी वृत्ति सक्षिप्त होती है तो वाहर परिग्रह कम होता है।

इसका यह अर्थ नही है कि आप सव छोड कर भाग जाए, तो आप वदल जाएगे। जरूरी नही है। क्योकि चीजें छोडने से अगर आप बदल सकें तो चीजें बहुत कीमती हो जाती हैं। अगर चीजे छोडने से मै वदल जाता हू तो चीजें वहुत कीमती हो जाती है। और अगर चीजें छोडने से मुझे मोक्ष मिलता हे तो ठीक हे, मोक्ष का भी सौदा हो जाता है। चीजो की ही कीमत चुका कर मोक्ष मिल जाता है। अगर एक मकान छोडने से, एक पत्नी और एक वेटे को छोड देने से मुझे मोक्ष मिल जाता है, तो मोक्ष की कीमत कितनी हुई? इतनी ही कीमत हुई जितनी मकान की हो सकती है, एक पत्नी की, एक वेटे की हो सकती है। अगर मैं चीजें छोडने से त्यागी हो जाता हू तो ठीक है। चीजें छोडने से लोग त्यागी हो जाते हैं, चीजे होने से भोगी हो जाते हैं। लेकिन चीजो का मूल्य, उसकी वेल्यू तो कायम रहती है। फिर जिसके पास चीज नही हो, वह त्यागी कैसे होगा? जिसके पास छोडने का महल नही हो, वह महात्यागी कैसे होगा? बडी मुश्किल है, पहले महल होना चाहिए।

नसरूद्दीन से किसी ने पूछा है कि मोक्ष जाने का मार्ग क्या है? तो नसरूद्दीन ने कहा—यू मस्ट सिन फर्स्ट। पहले पाप करो।

उसने कहा—यह क्या पागलपन की वात है? तुम मोक्ष जाने का रास्ता वता रहे हो कि नर्क जाने का?

नसरूद्दीन ने कहा कि जव पाप नही करोगे तो पश्चात्ताप कैसे करोगे? और जव पश्चात्ताप नही करोगे तो मोक्ष जाओगे कैसे? और जव पाप नही करोगे तो भगवान तुम पर दया कैसे करेगा, और जव दया नही करेगा तो कुछ होगा ही नही विना उसकी दया के। पहले पाप करो, तव पश्चात्ताप करो, तव भगवान दया करेगा, तव स्वर्ग का द्वार खुलेगा, तुम भीतर प्रवेश कर जाओगे। तो जो एसेंशियल चीज हे, नसरूद्दीन ने कहा वह पाप है। उसके विना कुछ भी

आप किस चीज को साधन बनाकर जाना चाहते है स्वय तक ? वस्तुओ को ? अपरिग्रह को ? वाहर से रोक कर अपने को, संभालकर ? वह नही होगा। आप परेशान भला हो जाए, तप नही होगा। परेशानी तप नही है। तप तो वडा आनन्द है और तपस्वी के आनन्द का कोई हिसाव नही है। वस्तुए दुख है। लेकिन यह दुख तभी पता चलेगा आपको जब आपकी वृत्ति के केन्द्र पर आप अनुभव करेंगे और दुख पाएगे और सुख की कोई रेखा न दिखाई पड़ेगी। अन्धेरा ही अन्धेरा पाएगे, कोई प्रकाश की ज्योति न दिखाई पडेगी। काटे ही काटे पाएगे, कोई फूल खिलता न दिखाई पडेगा। भीतर-भीतर केन्द्र व्यर्थ हो जाएगा, वाहर से आभामण्डल तिरोहित हो जाएगा। अचानक आप पाएगे, वाहर जब कोई अर्थ नही रह गया। लोगो को दिखाई पडेगा आपने वाहर कुछ छोड दिया। आप वाहर कुछ भी न छोडेंगे, भीतर कुछ टूट गया। भीतर कोई ज्योति ही बुझ गई। तो एक-एक केन्द्र पर उसकी वृत्तियो को ठहरा देना और वुद्धि को सजग रखकर देखना कि वृत्ति के अनुभव क्या है।

आदमी के सम्बन्ध मे जो वडे मे वडा आश्चर्य है वह यह है कि जिस चीज को आप आज कहते है कि कल मुझे मिल जाए तो सुख मिलेगा, कल जब वह चीज मिलती है तो आप कभी तौल नही करते कि कल मैंने कितना सुख सोचा था, वह मिला या नही मिला ! वडा आश्चर्य है। यह भी वडा आश्चर्य है कि उससे दुख मिलता है, फिर भी दूसरे दिन आप फिर उसी की चाह करने लगते हैं और कभी नही सोचते कि कल पाकर इसे दुख पाया, अव मैं फिर दुख की तलाश मे जाता हू। हम कभी तौलते ही नही, वुद्धि का वही काम है, वही हम नही लेते उससे। वही काम है कि जिस चीज मे सोचा था कि सुख मिलेगा, उसमे मिला ? जिस चीज मे सोचा था सुख मिलेगा उसमे दुख मिला, यह अनुभव मे आता है और इस अनुभव को हम याद नही रखते और जिसमे दुख मिला उसको फिर दुवारा चाहने लगते हैं।

ऐसे जिन्दगी सिर्फ एक कोल्हू के वैल जैसी हो जाती है। बस एक ही रास्ते पर घूमते रहते है। कोई गति नही, कही कोई पहुचना नही। घूमते-घूमते मर जाते हैं। जहा पैदा होते हैं, उसी जमीन पर खडे-खडे मर जाते है। कही एक इच आगे नही वढ पाते। वढ भी नही पाएगे। क्योकि वढने की जो सम्भावना थी वह आपकी वुद्धिमत्ता से थी, आपकी विसडम से थी, आपकी प्रज्ञा मे थी। वह तो प्रज्ञा कभी विकसित नही होती।

तो महावीर वृत्ति-सक्षेप पर जोर देते है ताकि प्रत्येक वृत्ति अपनी-अपनी निखार तीव्रता मे, अपनी प्योरिटी मे अनुभव मे आ जाए और अनुभव कह जाए दुख है, कि दुख है वहा, सुख नही। और वुद्धि इस अनुभव को सग्रहित करे, वुद्धि इस अनुभव को जिए और पिए और वुद्धि के रोए-रोए मे यह समा जाए तो आपके

वाती है। प्रत्येक हमारे केन्द्र पर, वासना के केन्द्र पर हम कितना फैलाव कर रहे हैं, उससे वाहर फैलता है। वाहर तो सिर्फ प्रदर्शन है। असली बात तो भीतर है। भीतर सिकुडाव हो जाता है, वाहर सब सिकुड जाता है। ध्यान रहे, जो वाहर से सिकुडने मे लगता है वह विल्कुल गलत मार्ग से चल रहा है। वह परेशान होगा, पहुचेगा कही भी नही।

हालाकि कुछ लोग परेशानी को तप समझ लेते है। जो परेशानी को तप समझ लेते है, उनकी नासमझी का कोई हिसाव नही है। तप से ज्यादा आनन्द नही है, लेकिन तप को लोग परेशानी समझ लेते हैं क्योकि परेशानी यही है, उनको दस कपडे चाहिए थे उन्होने नौ रख लिया, वे वडे परेशान है। परेशानी उतनी ही है जितना दस मे मजा था। दस के मजे का अनुपात ही परेशानी बन जाएगा। दस मे कम हो गया तो परेशानी शुरू हो गयी। अव वह परेशानी को तप समझ रहे है। परेशानी तप नही है।

यह मैंने मुल्ला की पत्नी की वात आपसे की। यह उसने जानकर उस स्त्री से शादी की। गाव भर मे खवर थी कि वह वहुत दुष्ट है, कलहपूर्ण है। चालीस साल तक उससे कोई शादी करने वाला नही था। और जव नसरूद्दीन ने खबर की कि मैं उससे शादी करता हू, तो मित्रो ने कहा—तू पागल तो नही हो गया है? इस औरत को कोई शादी करने वाला नही मिला है। यह खतरनाक है, तेरी गर्दन दवा देगी। यह तेरे प्राण ले लेगी, यह तुझे जीने न देगी, तू बहुत मुश्किल मे पड जाएगा।

नसरूद्दीन ने कहा—मैं भी चालीस साल तक अविवाहित रहा। अविवाहित रहने मे मैंने वहुत पाप कर लिए। इससे शादी करके मैं प्रायश्चित करना चाहता हू। दिस इज गोइग टु वी एपिनास। यह एक तप है। जानकर कर रहा हू। नही तो पश्चात्ताप तो करना पडेगा न। स्त्रियो से इतना सुख पाया, जव इतना ही दुख पाऊगा, तव तो हल होगा न! और यह स्त्री जितना दुख दे सकती है, शायद दूसरी न दे सके। यह वडी अद्भुत है। नसरूद्दीन ने शादी कर ली। मित्रो ने वहुत समझाया न माना।

लेकिन नसरूद्दीन की पत्नी के पास खवर पहुच गयी कि नसरूद्दीन ने इसलिए शादी की है ताकि यह स्त्री उसको सताए और उसका तप हो जाए। और उसने कहा—भूल मे न रहो। तुम मेरे ऊपर चढकर स्वर्ग न जा सकोगे। मैं किसी का साधन नही वन सकती। आज से मैंने, कलह बन्द···। कहते हैं वह स्त्री नसरूद्दीन से जिन्दगी भर न लड़ी। उसको नर्क जाना ही पडा। नही लडी। उसने कहा—मुझे तुम साधन वनाना चाहते हो, स्वर्ग जाने का? यह नही होगा। यह कभी नही हो सकता, तुम नर्क ही जाकर रहोगे। वह इसी जमीन पर नर्क पैदा करती, उसने पैदा नही किया। उसने अगले का इन्तजाम कर दिया।

धम्मो मगलमुक्किट्ठं, अहिंसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

भीतर वृत्तियो से ऊपर आपकी प्रज्ञा, आपकी वुद्धिमत्ता उठने लगेगी। और जैसे-जैसे बुद्धिमत्ता ऊपर उठती है, वैसे-वैसे वृत्तिया सिकुडती जाती है। इधर वृत्तिया सिकुडती है, इधर बुद्धिमत्ता ऊपर उठती है। और बाहर परिग्रह कम होता चला जाता है। जैसे बुद्धिमत्ता ऊपर उठती है वैसे ससार बाहर कम होता चला जाता है। जिस दिन आपकी समग्र शक्ति वृत्तियो से मुक्त होकर बुद्धि को मिल जाती है, उसी दिन आप मुक्त हो जाते है। जिस दिन आपकी सारी शक्ति वृत्तियो से मुक्त होकर प्रज्ञा के साथ खडी हो जाती है, उसी दिन आप मुक्त हो जाते है।

जिस दिन कामवासना की शक्ति भी बुद्धि को मिल जाती है, जिस दिन लोभ की शक्ति भी बुद्धि को मिल जाती है, जिस दिन क्रोध की शक्ति भी बुद्धि को मिल जाती है; जिस दिन मोह की शक्ति भी बुद्धि को मिल जाती है, जिस दिन समस्त शक्तिया बुद्धि की तरफ प्रवाहित होने लगती है, जैसे नदिया सागर की तरफ जा रही हो, उस दिन बुद्धि का महासागर आपके भीतर फलित होता है। उस महासागर का आनन्द, उस महासागर की प्रतिति और अनुभूति दुख की नही है, परेशानी की नही है वह परम आनन्द की है। वह परम प्रफुल्लता की है। वह किसी फूल के खिल जाने जैसी है। वह किसी दीये के जल जाने जैसी है। वह कही मृतक मे जैसे जीवन आ जाए, ऐसी है।

आज इतना ही। कल आगे हम बात करेंगे। लेकिन उठे न। जो कीर्तन के लिए आना चाहते हैं वे ऊपर आ जाए। पाच मिनट कीर्तन करें, फिर वापस लौट जाए।

मे असमर्थ हैं। जैसे आपको फासी की सजा दी जा रही हो और आपको मिष्ठान खाने को दे दिया जाए, तो भी मीठा नही लगेगा। मिष्ठान अब भी मीठा ही है, और जो मीठे को भोग सकता था, वह एकदम अनुपस्थित हो गया है। स्वादेंद्रिय अब भी खबर देगी क्योकि स्वादेंद्रिय को कोई भी पता नही है कि फासी लग रही है, न पता हो सकता है। स्वादेंद्रिय के सवेदनशील तत्व अब भी भीतर खबर पहुचाएगे कि मीठा है—मिठाई मुह पर है, जीभ पर है। लेकिन मन उस खबर को लेने की तैयारी नही दिखाएगा। मन भी उस खबर को ले ले तो मन के पीछे जो चेतना है उस और मन के बीच का सेतु टूट गया है, सम्बन्ध टूट गया है। मृत्यु के क्षण मे वह सम्बन्ध नही रह जाता। इसलिए मन भी खबर ले लेगा कि जीभ ने क्या खबर दी है, तो भी चेतना को कोई पता नही चलेगा।

आपके व्यक्तित्व को बदलने के लिए हजारो वर्षो से, जब भी कोई बहुत उलझन होती है तो शाक ट्रीटमेट का उपयोग करते रहे हैं चिकित्सक—जब भी कोई उलझन होती है तो आपको इतना गहरा धक्का देने का प्रयोग करते रहे है, शाक का, और उससे कई बार बहुत गहरी उलझन सुलझ जाती है। और शाक ट्रीटमेट का कुल अर्थ इतना ही है कि आपकी चेतना और आपके मन का सेतु क्षण भर को टूट जाए। उस सेतु के टूटते ही आपके भीतर की सारी व्यवस्था जैसी कल तक थी रुग्ण, वह अव्यवस्थित हो जाती है, अराजक हो जाती है। और नयी व्यवस्था कोई भी रुग्ण नही बनाना चाहता। इसलिए शाक ट्रीटमेट का कुल भरोसा इतना है कि एक बार पुरानी व्यवस्था का ढाचा टूट जाए तो आप फिर शायद उस ढाचे को न बना सकेगे।

सुना है मैंने कि एक बहुत बडे मनोचिकित्सक के पास एक रुग्ण कैथेलिक नन, कैथेलिक साध्वी को लाया गया था। छ महीने से निरन्तर उसे हिचकी आ रही थी वह बन्द नही होती थी। वह नीद मे भी चलती रहती थी। सारे चिकित्सा, सारे उपाय कर लिए गए थे, वह हिचकी बन्द नही हो रही थी। चिकित्सक थक गए थे और उन्होने कहा—अब हमारे पास कोई उपाय नही है। शायद मनस चिकित्सक कुछ कर सकें। तो मनस चिकित्सक के पास लाया गया। बहुत लोग उस साध्वी को मानने वाले थे। आदर करने वाले थे, वे सब उसके साथ आए थे। वह साध्वी प्रभु का भजन करती हुई भीतर प्रविष्ट हुई। वह निरन्तर प्रभु का स्मरण करती रहती थी। चिकित्सक ने पता नही उससे क्या कहा कि दो ही क्षण बाद वह रोती हुई बाहर वापस लौटी। उसके भक्त देखकर हैरान हुए कि वह एक क्षण मे ही रोती हुई वापस आ गई। रो रही है! भगवान का छ महीने का स्मरण जो नही कर सका था, वह हो गया है। रो तो जरूर रही है, लेकिन हिचकी बन्द हो गई है।

पीछे से चिकित्सक आया। वह तो साध्वी दौड़कर बाहर निकल गई। उसके

किरण को पीती हैं। अगर वह सारी किरणो को पी जाती है तो काली दिखाई पडती है। अगर वह सारी किरणो को छोड देती हैं और नही पीती तो सफेद दिखाई पडती है। अगर वह लाल रग की किरण को छोड देती है और बाकी किरणो को पी लेती है तो लाल दिखाई पडती है। अब यह बहुत हैरानी होगी कि जो वस्तु लाल दिखाई पडती है वह लाल को छोडकर सब रगो को पीती है, सिर्फ लाल को छोड देती है। वह जो छूटी हुई लाल किरण है वह आपकी आख पर पडती है, और उस किरण की वजह से वस्तु लाल दिखाई पडती है, जहा से वह आती हुई मालूम पडती है। लेकिन अगर कोई आख ही नही है तो लाल किसको दिखाई पडेगी ? उस किरण को पकडने के लिए कोई आख चाहिए तब वह लाल दिखाई पडेगी। आपका बाहर जाना भी जरूरी नही है।

जब आप आख बन्द कर लेते है तो वस्तुए रगहीन हो जाती हैं, कलरलैस हो जाती हैं। कोई रग नही रह जाता। इसका यह भी मतलब नही है कि वे सब एक जैसी हो जाती हैं। क्योकि अगर वे सब एक जैसी हो जाए तो जब आप आख खोलेगे तो उनमे सब मे एक-सा रंग दिखाई पडना चाहिए। रगहीन हो जाती हैं, लेकिन उनके रगो की सम्भावना बनी रहती है, पोटेंशियेलिटी। जब आप आख खोलेगे तो लाल-लाल होगी, हरी-हरी होगी। जब आप आख बन्द कर लेंगे तो लाल-लाल न रह जाएगी, हरी-हरी न रह जाएगी। इसे ऐसा समझें कि लाल रग की वस्तु सिर्फ वस्तु का रग नही है, वस्तु और आपकी आख के बीच का सम्बन्ध है, रिलेशनशिप है। क्योकि आख बन्द हो गई, रिलेशनशिप टूट गई, सम्बन्ध टूट गया। लाल रग की कुर्सी नही है। आपकी आख और कुर्सी के बीच लाल रग का सम्बन्ध है। अगर आख नही है तो सम्बन्ध टूट गया।

जब आप किसी चीज को कहते है—मीठा, तब भी वस्तु और आपके स्वादेंद्रिय के बीच का सम्बन्ध है। वस्तु मीठी नही है। इसका यह मतलब नही है कि कडवी और मीठी वस्तु मे कोई फर्क नही है। पोटेंशियल फर्क है। बीज फर्क है, लेकिन अगर जीभ पर न रखा जाए तो कोई फर्क नही है। न कडवी कडवी है, आप कह नही सकते कि नीम कडवी है जब तक आप जीभ पर नही रखते। आप कहेगे—मैं रखू या न रखू, मेरे न रखने पर भी नीम कडवी तो होगी ही। तब आप भूल करते है। क्योकि कडवा होना आपकी जीभ और नीम के बीच का सम्बन्ध है। नीम का अपना स्वभाव नही है, सिर्फ सम्बन्ध है।

इसे ऐसा समझें कि एक बच्चा पैदा हुआ एक स्त्री को। जब बच्चा पैदा होता है तो बच्चा ही पैदा नहीं होता, मा भी पैदा होती है। क्योकि मा एक सम्बन्ध है। वह स्त्री बच्चा होने के पहले मा नही थी। और अगर बच्चा मर जाए तो फिर मा नही रह जाएगी। मा होना एक सम्बन्ध है। वह बच्चे और उस स्त्री के बीच जो सम्बन्ध हैं, उसका नाम है। बच्चे के बिना वह मा नही हो सकती।

भक्तों ने पूछा—आपने ऐसा क्या कहा कि उसको इतनी पीड़ा पहुंची? चिकित्सक ने कहा कि मैंने उससे कहा—हिचकी तो कुछ भी नहीं है, यू आर प्रेगनेंट, तुम गर्भवती हो। अब कैथेलिक नन, कैथेलिक साध्वी गर्भवती हो, इससे बड़ा शाक नहीं हो सकता। उसके भक्तों ने कहा—आप यह क्या कह रहे हैं? उस चिकित्सक ने कहा—तुम घबराओ मत, इसके अतिरिक्त हिचकी बन्द नहीं हो सकती थी। बिजली के शाक को भी वह महिला झेल गयी। लेकिन अब हिचकी बन्द हो गयी। हुआ क्या?

कैथेलिक नन, आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर प्रवेश करती है। वह गर्भिणी है, भारी धक्का लगा। मन और चेतना का जो सम्बन्ध था, चेतना और शरीर का जो सम्बन्ध सेतु था, वह एकदम टूट गया। एक क्षण को भी वह टूट गया तो हिचकी बन्द हो गयी, क्योंकि हिचकी की अपनी व्यवस्था थी। सारी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी। हिचकी लेने के लिए भी सुविधा चाहिए, वह सुविधा न रही। हिचकी का जो पुराना जाल था, छ महीने से निश्चित, वह अब कारगर न रहा। शरीर वही है, हिचकी कैसे खो गई? कोई दवा नहीं दी गयी है, कोई इलाज नहीं किया गया है, हिचकी कैसे खो गयी? मनोचिकित्सक कहते हैं कि अगर चेतना और मन के सम्बन्ध में कहीं भी, जरा-सा भेद पड़ जाए, एक क्षण के लिए भी तो आदमी का व्यक्तित्व दूसरा हो जाता है। वह पुराना ढांचा टूट जाता है। रस-परित्याग उस ढांचे को तोड़ने की प्रक्रिया है।

वस्तु में रस नहीं होता, सिर्फ रस का निमित्त होता है। इसे हम ऐसा समझें तो आसानी हो जाएगी। आप इस कमरे में आए हैं। दीवारें एक रंग की हैं, फर्श दूसरे रंग का है, कुर्सियां तीसरे रंग की हैं, अलग-अलग लोग अलग-अलग रंगों के कपड़े पहने हुए हैं। स्वभावतः आप सोचते होंगे कि इन सब चीजों में रंग है। और जब इस कमरे के बाहर चले जाएंगे तब भी कुर्सियां एक रंग की रहेंगी, दीवार दूसरे रंग की रहेंगी, फर्श तीसरे रंग का रहेगा। अगर आप ऐसा सोचते हैं तो आप कोई आधुनिक विज्ञान की किसी भी कीमती खोज से परिचित नहीं हैं। अब इस कमरे में कोई नहीं रह जाएगा तो वस्तुओं में कोई रंग नहीं रह जाता। यह बहुत मन को हैरान करता है। यह बात अभी भी नहीं मालूम पड़ती। हमारा मन होता कि हम किसी छेद से झांककर देख लें कि रंग रह गया कि नहीं। लेकिन आपने झांककर देखा कि वस्तुओं में रंग शुरू हो जाता है। वैज्ञानिक कहते हैं—किसी वस्तु में कोई रंग नहीं होता, वस्तु केवल निमित्त होती है किसी रंग को आपके भीतर पैदा करने के लिए। जब आप नहीं होंगे, तब आकाश नीला नहीं होगा, जब कोई देखने वाला नहीं होता, वस्तु रंगहीन हो जाती है, रंगहीन हो जाती है।

[illegible] में प्रयत्न की [illegible] वस्तु [illegible] है [illegible]

जाती है। आ ही जाएगी। इसलिए जो आदमी वस्तुए छोडने से शुरू करेगा वह वस्तुओ से भयभीत होने लगेगा। वह डरेगा कि कही वस्तु पास न आ जाए। अन्यथा रस पैदा हो सकता है।

एक दूसरा उपाय है कि आप इद्रिय को ही नष्ट कर लें। जीभ को जला डालें, जैसा कि वुखार मे हो जाता है, लम्बी बीमारी मे हो जाता है। इद्रिय के सवेदनशील जो ततु है वह रुग्ण हो जाते है, बीमार हो जाते है, सो जाते है। लेकिन तब भी रस का कोई अत नही होता। अगर मेरी आख फूट जाए तो भी रूप देखने की आकाक्षा नही चली जाती। अगर आख ही से रूप देखने की आकाक्षा जाती होती, तो बहुत आसान था। आख हट जाने से, टूट जाने से, फूट जाने से रूप की आकाक्षा नही टूटती। कान फूट जाए तो भी ध्वनि का रस नहीं छूट जाता। मेरे पैर टूट जाए, तो भी चलने का मन नष्ट नहीं हो जाता। जो जानते है वे तो कहते है—पूरा शरीर भी छूट जाए तो भी जीवेषणा नष्ट नही होती है। नही तो दोबारा जन्म होना असम्भव है। जब पूरा शरीर छूटकर भी नया जीवन हम फिर से पकड लेते है तो एक-एक इद्रिय को मारकर क्या होगा? मृत्यु तो सभी इद्रियो को मार डालती है। सभी इद्रिया मर जाती हैं, फिर सभी इद्रियो को हम पैदा कर लेते है, क्योकि इद्रिया मूल नही है। मूल कही इद्रियो से भी पीछे है। इसलिए जो आख-कान तोडने मे लगा हो, वह भी बचकानी बातो मे लगा है, वह नासमझी की बातो मे लगा है। उससे रस नष्ट नही होगा। इद्रिय के नष्ट होने से रस नष्ट नही होता। वस्तु के त्याग से रस नष्ट नही होता, इद्रिय के नष्ट होने से रस नष्ट नही होता।

तो क्या हम मन को मार डाले? मन को मारने मे भी लोग लगे है। सोचते हैं कि मन को दबा-दबा कर नष्ट कर डालें तो शायद.. । लेकिन मन बहुत उल्टा है। मन का नियम यही है कि जिस बात को हम मन से नष्ट करना चाहते है, मन उसी बात मे ज्यादा रसपूर्ण हो जाता है।

एक सुबह मुल्ला के गाव मे उसके मकान के सामने बडी भीड है। वह अपनी पाचवे मजिल पर चढा हुआ कूदने को तत्पर है। पुलिस भी आ गयी है, लेकिन उसने सब सीढियो पर ताले डाल रखे है। कोई ऊपर चढ नही पा रहा है। गाव का मेयर भी आ गया है। सारा गाव नीचे धीरे-धीरे इकट्ठा हो गया है, और मुल्ला ऊपर खडा है। वह कहता है—मैं कूदकर मरूगा। आखिर मेयर ने उसे समझाया कि तू कुछ तो सोच! अपने मा-बाप के सम्बन्ध मे सोच! मुल्ला ने कहा—मेरे मा-बाप मर चुके। उनके सम्बन्ध मे सोचता हू तो और होता है, जल्दी मर जाऊ। मेयर ने चिल्ला के कहा—अपनी पत्नी के सम्बन्ध मे तो सोच! उसने कहा—वह याद ही मत दिलाना, नही तो और जल्दी कूद जाऊगा। मेयर ने कहा—कानून के सम्बन्ध मे सोच, अगर आत्महत्या की कोशिश की, फसेगा।

बच्चा भी मा के बिना नही हो सकता ।

इस बात को ख्याल मे ले लें कि हमारे सब रस सम्बन्ध हैं वस्तुओ और हमारी जीभ के बीच । लेकिन अगर बात इतनी ही होती तो सम्बन्ध दो तरह से टूट सकता था—या तो हम जीभ को सवेदनहीन कर ले, उसकी सेंसटीविटी को मार डाले, जीभ को जला ले तो रस नष्ट हो जाएगा । या हम वस्तु का त्याग कर दे तो रस नष्ट हो जाएगा । अगर बात इतनी ही आसान होती तो दो तरफ से सम्बन्ध तोडे जा सकते है—या तो हम वस्तु को छोड दे जैसा कि साधारणत महावीर की परम्परा मे चलने वाला साधु करता है । वस्तु को छोड दे । तब सोचता है कि रस से मुक्ति हो गई । रस से मुक्ति नही हुई । वस्तु मे अभी भी पोटेंशियल रस है और जीभ मे अभी भी पोटेंशियल सेंसटीविटी है । अभी भी जीभ अनुभव करने मे क्षम है और अभी भी वस्तु अनुभव देने मे क्षम है । सिर्फ बीच का सम्बन्ध टूट गया है इसलिए बात अप्रगट हो गई है । कभी भी प्रगट हो सकती है। अप्रगट हो जाने का अर्थ नष्ट हो जाना नही है । फिर दोनो को जोड दिया जाए, फिर प्रगट हो जाएगी । हमने बिजली का बटन बन्द कर दिया है इसलिए बिजली नष्ट नही हो गयी है। सिर्फ बिजली की धारा मे और बल्ब के बीच का सम्बन्ध टूट गया है । बल्ब भी समर्थ है और बिजली प्रगट करने मे । बिजली की धारा भी समर्थ है अभी बल्ब से प्रगट होने मे । सिर्फ सम्बन्ध टूट गया है, बिजली नष्ट नही हो गयी । फिर बटन आप ऑन कर देते है, बिजली जल जाती है ।

जो आदमी वस्तुओ को छोडकर सोच रहा है, रस का परित्याग हो गया, वह सिर्फ रस को अप्रगट कर रहा है, परित्याग नही । महावीर ने रस अप्रगट करने को नही कहा है, रस-परित्याग को कहा है। सिर्फ अनमैनिफेस्ट हो गया, अप्रगट नही हो रहा है । इसका यह मतलब नही कि नष्ट हो गया । बहुत-सी चीजे आप मे प्रगट नही होती हैं, बहुत मौको पर । जब कोई आदमी आपकी छाती पर छुरा रख देता है तब कामवासना प्रगट नही होती, लेकिन मुक्त नही हो गए हैं आप, छिप जाती है । कितनी ही भूख लगी हो और एक आदमी बदूक लेकर आपके पीछे लग जाए, भूख मिट जाती है । इसका यह मतलब नही कि भूख मिट गयी, सिर्फ छिप गयी । अभी अवसर नही है प्रगट होने का । अभी निमित्त नही हैं प्रगट होने का इसलिए छिप गयी । छिप जाने को त्याग मत समझ लेना ।

और अक्सर तो बात ऐसी है कि जो-जो छिप जाता है वह छिपकर और प्रबल और सशक्त हो जाता है । इसलिए जो आदमी रोज मिठाई खा रहा है, उसको मीठे का जितना अनुभव होता है, जिस आदमी ने बहुत दिन तक मिठाई नही खायी, वह जब मिठाई खाता है तो उसका अनुभव और भी तीव्र होता है । उसका अनुभव और भी तीव्र होता है क्योकि इतने दिनो तक रुका हुआ रस का जो अप्रगट रूप है, वह एकदम से प्रगट होता है, वह फ्लडेड, उसमे बाढ आ

दुनिया मे। वे किसी प्रेमी को भुला देना चाहते हैं। जितना भुलाते हैं उतनी मुश्किल मे पड जाते हैं। भुलाने की ज्यादा बेहतर तरकीब वह शादी कर ले और प्रेमी को घर मे ले आए। फिर बिल्कुल याद नही आती। मन का यह नियम ठीक से ख्याल मे ले ले, अन्यथा बडी कठिनाई होती है। तथाकथित साधु, तपस्वी इसी मन के गहरे नियम को न समझने के कारण बहुत उलझाव मे पड जाते हैं। भुलाने मे लगे हैं। स्त्री न दिखाई पडे, इसलिए आख बन्द करने मे लगे हैं। भोजन न दिखाई पडे, इसलिए इन्द्रियो को सिकोडने मे लगे हैं। कही कोई रस न आ जाए, मन को वहा से विपरीत किसी दूसरी दिशा मे उलझाने मे लगे हैं। लेकिन इस सबसे जहा-जहा से वे अपने को हटा रहे हैं वही-वही मन और गहरी रेखाए स्मृति की निर्मित कर लेता है।

नही, मन को दबाने, समझाने, भुलाने की कोई व्यवस्था रस-परित्याग नही लाती। फिर रस-परित्याग कैसे फलित होता है ? रस-परित्याग का जो वास्तविक रूपातरण है, वह मन और चेतना के बीच सम्बन्ध टूटने से घटित होता है। मन और चेतना के बीच ही असली घटना घटती है। इसे थोडा समझ लें तो ख्याल मे आ जाए।

मन उसी बात मे रस ले पाता है जिसमे चेतना का सहयोग हो, कोआप्रेशन हो। जिस बात मे चेतना का सहयोग न हो, उसमे मन रस नही ले पाता। असमर्थ है। एक आदमी रास्ते से भागा जा रहा है। आज भी रास्ते की दुकानो के विडो केसेज मे वे ही चीजे सजी है जो कल तक सजी थी, लेकिन आज उसे दिखाई नही पडता। रास्ते पर अब भी सुन्दर शरीर निकल रहे है लेकिन आज उसे दिखाई नही पडते। रास्ते पर अब भी सुन्दर कारें भागी जा रही है, लेकिन आज उसे दिखाई नही पडती। उसके घर मे आग लगी है, वह भागा चला जा रहा है। क्या हुआ ? घर मे आग लगी है तो हो क्या गया ? चीजें तो अब भी गुजर रही है। मन वही है, इन्द्रिया वही है, उन पर सघात वही पड रहे हैं, सवेदनाए वही हैं, लेकिन आज उसकी चेतना कही और है। आज उसकी चेतना अपने मन के, अपनी इन्द्रियो के साथ नही है। आज उसकी चेतना भाग गई है। वह वहा है जहा मकान मे आग लगी है। लेकिन घर जाकर पहुचे और पता चले कि किसी और के मकान मे आग लगी है। गलत खबर मिली थी। सब वापस लौट आएगा।

दोस्तोवस्की को फासी की सजा दी गयी थी—रूस के एक चिंतक, विचारक लेखक को। लेकिन ऐन वक्त पर माफ कर दिया गया। ठीक छ बजे जीवन नष्ट होने को था, और छ बजने के पाच मिनट पहले खबर आयी जार की कि वह क्षमा कर दिया गया है। दोस्तोवस्की ने बाद मे निरन्तर कहता था—उस क्षण जब छ बजने के करीब आ रहे थे तब मेरे मन मे न कोई वासना थी, न कोई

मुल्ला ने कहा—जब मर ही जाऊगा तो कौन फसेगा! यह देखते है, बडी मुश्किल थी। मेयर न समझा पाया। आखिर गुस्से मे उसने कहा कि तेरी मर्जी तो कूद, इसी वक्त कूद और मर जा। मुल्ला ने कहा तू कौन है मुझे सलाह देने वाला कि मैं मर जाऊ! नही मरूगा।

आदमी का मन ऐसा चलता है। अगर कोई आपको समझाए कि मर जाओ, जीने का मन पैदा होता है। कोई आपको समझाए कि जियो, तो मरने का मन पैदा होता है। मन विपरीत मे रस लेता है। इसलिए जो लोग मन को मारने मे लगते है उनका मन और रसपूर्ण होता चला जाता है। न वस्तु को छोडने से रस का परित्याग होता है, न इन्द्रिय को मारने से रस का परित्याग होता है, न मन से लडने से रस का परित्याग होता है। हम सभी तो मन से लडते हैं, लेकिन कौन-सा रस का परित्याग हो जाता है! मात्राओ के भेद होगे, लेकिन हम सभी मन से लडने वाले हैं। हम मन को कितना दबाते है, कितना समझाते हैं! इससे कोई फर्क नही पडता। जिस चीज के लिए आप मन को समझाते है, मन उसी की माग वढाता चला जाता है। असल मे आप जब समझाते हैं, तभी आप स्वीकार कर लेते है कि आप कमजोर हैं, और मन ताकतवर है। और जब एक बार आपने अपने मन के सामने अपनी कमजोरी स्वीकार कर ली तो मन फिर आपकी गर्दन को दबाता चला जाता है। आप मन से कहते है—यह मत माग, यह मत माग, यह मत मांग। लेकिन आपको ख्याल है कि नियम क्या है? जितना ही आप कहते हैं, मत माग, मागने मे रस आ जाता है। लगता है, जरूर कुछ मागने जैसी चीज है। जरूर कुछ पाने जैसी चीज है। मन को जितना रोकते है, उसकी उत्सुकता वढती है और गहन होती है। मन के जितने द्वार वन्द करते है, उसकी जिज्ञासा उतनी वढती है, उतना लगता है कि कोई द्वार खोल के झाक लू और देख लू।

तो जो भी मन के साथ लडने मे लगेगा, वह रस को जगाने मे लगेगा। यह भी ध्यान रखे कि मन से हम जिस चीज को भुलाने की कोशिश करते है वहा हम एक बहुत ही अमनोवैज्ञानिक काम कर रहे है। क्योकि भुलाने की हर कोशिश याद करने की व्यवस्था है। इसलिए कोई आदमी किसी को भुला नही सकता। भूल सकता है, भुला नही सकता। अगर आप किसी को भुलाना चाहते हैं तो आप कभी न भुला पाएगे। क्योकि जब भी आप भुलाते है, तभी आप फिर से याद करते है। आखिर भुलाने के लिए भी याद तो करना पड़ेगा, और तब याद करने का क्रम सघन होता जाता है, और याद की रेखा मजबूत और गहरी होती चली जाती है।

तो जिसे आपको याद रखना हो, उसे भुलाने की कोशिश करना और जिसे आपको भुला देना हो, उसे कभी भी भुलाने की कोशिश मत करना, तो वह भूला जा सकता है। क्योकि पुनरुक्ति याद बनती है, प्रेमियो का यही कष्ट है सारी

नही पडा । मन वही है, वह उतना ही सवेदनशील है, उतना ही सजग, जीवत है, लेकिन रस का जो आकर्षण था वह खो गया । रस जो बुलाता था, पुकारता था, रस की जो पुनरावृत्ति की इच्छा थी—रस का आकर्षण है कि उसे फिर से दोहराओ; उसे फिर से दोहराओ, उसे दोहराओ बार-बार, उसके चक्कर मे घूमो—वह खो गयी है । वह बिल्कुल खो गयी है । उसकी पुनरुक्ति की कोई आकाक्षा नही रही । और हम ऐसे रसो तक की पुनरुक्ति करने लगते है जो चाहे जीवन को नष्ट करने वाले क्यो न हो । अब एक आदमी शराब पी रहा है । वह जानता है सुनता है पढता है कि जहर है, पर उसकी भी पुनरुक्ति की माग है । मन कहता है दोहराओ । एक आदमी धूम्रपान कर रहा है । वह जानता है कि वह निमन्त्रण दे रहा है न मालूम कितनी बीमारियो को—वह भली-भाति जानता है । अगर किसी और को समझाना हो तो वह समझाता है । अगर अपने बेटे को रोकना हो तो वह कहता है—भूलकर कभी धूम्रपान मत करना । लेकिन वह खुद करता है । पुनरुक्ति की आकाक्षा है । विकृत रस भी और सयुक्त हो जाए, और विकृत रस भी सयुक्त हो जाते है, एसोसिएशन से ।

शिलर एक जर्मन लेखक हुआ । जब उसने अपनी पहली कविता लिखी थी तो वृक्षो पर सेव पक गए थे, नीचे गिर रहे थे । वह उस बगीचे मे बैठा था । कुछ सेव नीचे गिरकर सड गए थे, और सडे हुए सेवो की गन्ध पूरी हवाओ मे तैर रही थी । तभी उसने पहली कविता लिखी । यह पहली कविता का जन्म और सडे हुए सेवो की गन्ध एसोसिएटेड हो गए, सयुक्त हो गए । इसके बाद शिलर जिन्दगी भर कुछ भी न लिख सका जब तक अपनी टेबल के आसपास वह सडे हुए सेव न रख ले । बिल्कुल पागलपन था । वह खुद कहता था कि बिल्कुल पागलपन है । लेकिन जब तक सडे हुए सेवो की गन्ध नही आती, मेरे भीतर काव्य सक्रिय नही होता । उसमे गति नही पकडती । मैं साधारण आदमी बना रहता हू, शिलर नही हो पाता । जैसे ही सडे हुए सेवो की गन्ध चारो तरफ से मेरे नासापुटो को घेर लेती है, मैं बदल जाता हू । मैं दूसरा आदमी हो जाता हू । वह कहता था कि माना कि बडा रुग्ण मामला है कि सडे हुए सेव, और भी गन्धें हो सकती हैं, फूल रखे जा सकते है । लेकिन नही, यह सयुक्त हो गया ।

अगर एक आदमी सिगरेट पी रहा है तो सिगरेट का पहला अनुभव सुखद नही है, दुखद है । लेकिन यह दुखद अनुभव भी निरन्तर दोहराने से किसी क्षण की अनुभूति से अगर सयुक्त हो गया, तो फिर जिन्दगी भर पुनरुक्ति मागता रहेगा । और हो सकता है सयुक्त । जब आप सिगरेट पीते है तब एक अर्थो मे सारी दुनिया से टूट जाते है । सिगरेट पीना एक अर्थ मे मैस्टरबेटरी है, वह हस्तमैथुन जैसी चीज है । मनोवैज्ञानिक ऐसा कहते है—आप अपने मे ही बन्द हो जाते हैं, दुनिया से कोई लेना-देना नही, अपना धुआ है, उडा रहे हैं, बैठे हैं । दुनिया टूट

इच्छा थी, न कोई रस था, कुछ भी न था। मैं इतना शान्त हो गया था, और मैं उतना शून्य हो गया था कि मैंने उस क्षण मे जाना कि साधु, सन्त जिस समाधि की बात करते हैं वह क्या है। लेकिन जैसे ही जार का आदेश पहुंचा और मुझे सुनाया गया कि मैं छोड दिया जा रहा हू, मेरी फासी की सजा माफ कर दी गई। अचानक, जैसे मैं किसी शिखर से नीचे गिर गया। बस वापस लौट आया। सब इच्छाए, सब क्षुद्रतम इच्छाए, जिनका कोई मूल्य नही था क्षण भर पहले, वे सब वापस लौट आयी। पैर मे जूता काट रहा था, उसका फिर पता चलने लगा। जूता काट रहा था पैर मे, उसका फिर पता चलने लगा। नया जूता लेना है, उसकी योजना चल रही थी। सब वापस। दोस्तोवस्की कहता था—उस शिखर को मैं दुबारा नही छू पाया। जो उस दिन आसन्न मृत्यु के निकट अचानक घटित हुआ था।

हुआ क्या था? जब मृत्यु इतनी सुनिश्चित हो तो चेतना सब सम्बन्ध छोड देती है। इसलिए समस्त साधको ने मृत्यु के सुनिश्चय के अनुभव पर बहुत जोर दिया है। बुद्ध तो भिक्षुओं को मरघट मे भेज देते थे कि तुम तीन महीने लोगो को मरते, जलते, मिटते, राख होते देखो। ताकि तुम्हे अपनी मृत्यु बहुत सुनिश्चित हो जाए। और जब तीन महीने बाद कोई साधक मृत्यु पर ध्यान करके लौटता था तो जो पहली घटना उसके मित्रो को दिखाई पड़ती थी, वह थी रस-परित्याग। रस चला गया। रस के जाने का मूल है—चेतना और मन का सम्बन्ध टूट जाए। वह सम्बन्ध कैसे टूटेगा और सम्बन्ध कैसे निर्मित हुआ है? जब तक मैं सोचता हू—मैं मन हू, तब तक सम्बन्ध है। यह आइडेंटिटी, यह तादात्म्य कि मैं मन हू, तब तक सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध का टूट जाना यह जानना कि मैं मन नहीं हू, रस छिन्न-भिन्न हो जाता है। खो जाता है।

रस-परित्याग की प्रक्रिया है—मन के प्रति साक्षीभाव, विटनेसिंग। जब आप भोजन कर रहे है तो मैं नही कहूगा आपको कि यह भोजन मत करें, यह रसपूर्ण है। मैं आपसे यह भी नही कहूगा कि आप जीभ को जला ले क्योंकि जीभ रस देती है। मैं आपसे यह भी नही कहूगा कि मन मे आप अनुभव न करें कि यह खट्टा है या मीठा है। मैं आपसे कहूगा—भोजन करे जीभ को स्वाद लेने दें; मन को पूरी खबर होने दें पूरी संवेदना होने दें कि बहुत स्वादिष्ट है। सिर्फ भीतर इस सारी प्रक्रिया के साक्षी बनकर खड़े रहें। देखते रहें कि मैं देखने वाला हू। मन को स्वाद मिल रहा; जीभ को रस आ रहा, बहुत प्रीतिकर मालूम पड़ रही; लेकिन मैं पीछे खड़ा देख रहा हू। [illegible]—[illegible] भी पार खड़े होकर देख रहा हू। मैं देख रहा हू; मैं द्रष्टा हू; मैं साक्षी हू।

रस के अनुभव मे सिर्फ इतना भाव सतत रहे आए, तो आप अचानक पाएंगे कि [illegible] नहीं है, [illegible] रस नही रहा। [illegible] भी है, [illegible] भावना

क्या कहेंगे ! इसलिए उसने एक परिपूरक इन्तजाम कर लिया है। अब लोग कुछ भी न कहेंगे। ज्यादा से ज्यादा इतना ही कहेंगे कि सिगरेट पीने से नुकसान होता है। अगूठा पीने से कोई भी न कहेगा कि नुकसान होता है, लेकिन अगूठा पीते देखकर आदमी चौक जाएगे कि यह क्या कर रहे हो ! सिगरेट पीने से इतना ही कहेंगे कि नुकसान होता है। वह कहेगा—क्या करें मजबूरी है, यह तो मैं भी जानता हू, लेकिन आदत पड गयी है। अगूठे मे वह बुद्धू मालूम पडेगा, सिगरेट में वह समझदार मालूम पडेगा।

सब्स्टीट्यूट सिर्फ धोखा देते हैं। लेकिन, अगर एक बार रस आ जाए तो गलत से गलत चीज सयुक्त हो जाती है।

मुल्ला की पत्नी एक दिन उसके काफी हाउस मे पहुच गयी जहा वह शराब पीता रहता था बैठकर। मुल्ला अपना टेबल पर गिलास और बोतल लिए बैठा था। पत्नी आ गयी तो घबराया तो बहुत, लेकिन उसने पत्नी आ गयी थी तो एक प्याली मे उसको भी डालकर शराब दी। पत्नी भी आयी थी आज जाचने कि यह क्या करता रहता है ! शराब उसने एक घूट पिया, नितान्त तिक्त और बेस्वाद था, उसने नीचे रख दिया और मुंह बिगाडा, और उसने कहा कि मुल्ला, तुम यह पीते रहते हो। मुल्ला ने कहा—सोचो, तू सोचती थी मैं बडा आनन्द मनाता रहता हू। यही दुख भोगने के लिए हम यहा आते है। समझ गयी, अब दुबारा भूलकर मत कहना कि वहा तुम बडा आनन्द करने जाते हो।

शराब का पहला अनुभव तो दुखद ही है, लेकिन शराब के गहरे अनुभव धीरे-धीरे सुखद होने शुरू हो जाते हैं क्योंकि शराब आपको जगत् से तोड देती है, जगत् की चिन्ताओ से तोड देती है। जगत् मिट जाता है, आप ही रह जाते हैं। यह बहुत ही मजे की बात है कि ध्यान और शराब मे थोडा सम्बन्ध है। इसलिए विलियम जेम्स ने, जिसने कि इस सदी मे धर्म और नशे के बीच सम्बन्ध खोजने मे सर्वाधिक शोध कार्य किया, विलियम जेम्स ने कहा कि शराब का इतना आकर्षण गहरे मे कही न कही धर्म से सम्बन्धित है, अन्यथा इतना आकर्षण हो नहीं सकता। कही न कही शराब कुछ ऐसा करती होगी जो मनुष्य की गहरी धार्मिक आकाक्षा को तृप्त करता है। है सम्बन्ध। और इसलिए वेद के सोमरस से लेकर एलडूअस हक्सले तक, एल० एस० डी० तक धार्मिक आदमी का बडा हिस्सा नशों का उपयोग करता रहा है—बडा हिस्सा। और नशे के उपयोग मे कही न कहीं कोई तालमेल है। वह तालमेल इतना ही है कि शराब आपको जगत् से तोड देती है इस बुरी तरह कि आप बिल्कुल अकेले हो जाते है। अकेले होने मे एक रस है। ससार की सारी चिन्ताए भूल जाती है। आप एक गहरे अर्थ मे निश्चित मालूम पडते हैं। हो तो नही जाते। शराब तो थोड़ी देर बाद बिदा हो जाएगी, चिन्ता वापस लौट आएगी, लेकिन शराब के साथ इस निश्चितता का रस जुड जाएगा।

गयी, आपके और दुनिया के बीच एक स्मोक करटेन आ गया। पत्नी होगी घर मे, मतलब नही। दुकान चलती है नही चलती, मतलब नही। कहा क्या हो रहा है, मतलब नही। आपको इतना मतलब है—आप धुआ भीतर खीच रहे है, बाहर छोड रहे है। आप सारे जगत् से टूट गए, आइसोलेट हो गए। अकेले हो गए। अकेले मे एक तरह का रस आता है, आइसोलेशन मे रस है। वही तो एकान्त के साधक को आता है। अब आप यह जानकर हैरान होगे कि एकान्त के साधक को जो आता है, अगर वह किसी क्षण मे सिगरेट पीने मे आ गया, और आ सकता है, और आ जाता है, क्योकि सिगरेट भी तोडती है। इसलिए अकेला आदमी बैठा रहे तो थोडी देर मे सिगरेट पीना शुरू कर देता है। ख्याल मिट जाता है सब चारो तरफ का। अपने मे बन्द हो जाता है, क्लोजिग हो जाती है।

यह वैसा ही है जैसे छोटा बच्चा अकेला पडा हुआ अपना अगूठा पीता रहे। जब छोटा बच्चा अपना अगूठा पीता है, ही इज डिसकनेक्टेड, उसका दुनिया से कोई सम्बन्ध नही रहा। दुनिया से उसे कोई मतलब नही, उसे अपनी मा से भी अब मतलब नही है। इसलिए मनोवैज्ञानिक कहते है—बच्चे को बहुत ज्यादा अगूठा मत पीने देना। अन्यथा उसकी जिन्दगी मे सामाजिकता कम हो जाएगी। अगर कोई बच्चा बहुत दिनो तक अगूठा पीता रहे तो वह एकांगी और अकेला हो जाएगा। वह दूसरो से मित्रता नही बना सकेगा। मित्रता की जरूरत नही। अपना अगूठा ही मित्रता का काम देता है। किसी से कुछ मतलब नही। जो बच्चा अगूठा पीने लगेगा, उसका मा से प्रेम निर्मित नही हो पाएगा, क्योकि मा से जो प्रेम निर्मित होता है वह उसके स्तन के माध्यम से ही होता है, और कोई माध्यम नही है। अगर वह अपने अगूठे से इतना रस लेने लगा जितना मा के स्तन से मिलता रहा है, तो वह मा से इनडिपेडेंट हो गया। अब उसकी कोई डिपेंडेस नही मालूम होती उसको। अब वह निर्भर नही है। और जो बच्चा अपनी मा से प्रेम नही कर पाएगा, इस दुनिया मे वह फिर किसी से प्रेम नही कर पाएगा, क्योकि प्रेम का पहला पार्ट ही नही हो पाया। वह बच्चा अपने मे बन्द हो गया। एक अर्थ मे वह बच्चा अब समाज का हिस्सा नही रह गया।

और जानकर आप हैरान होगे कि जो बच्चे बचपन मे ज्यादा अगूठा पीते हैं, वे ही बच्चे बडे होकर सिगरेट पीते है। जिन बच्चो ने बचपन मे अगूठा कम पिया है या नही पिया है उनके जीवन मे सिगरेट पीने की सम्भावना ना के बराबर हो जाती है। क्योकि सिगरेट जो है वह अगूठे का सब्स्टीट्यूट है, वह उसका परिपूरक है। बडा आदमी अगूठा पीए तो जरा बेहूदा मालूम पडेगा। तो उसने सिगरेट ईजाद की है, चुरुट ईजाद किया है। उसने ईजाद की है चीजे, उसने हुक्का ईजाद किया है, लेकिन पी रहा है वह अगूठा। वह कुछ और नही पी रहा है। लेकिन बडा है तो एकदम सीधा-सीधा अगूठा पिएगा तो जरा बेहूदा लगेगा। लोग

दुख नही है तो छाती पीटकर रो सकता है। भीतर अन्यथा भी हो सकता है। कितनी ही गलत चीज मे अगर रस आ जाए तो उसकी पुनरुक्ति शुरू हो जाती है। गलत से गलत चीज मे शुरू हो जाती है, तो सही चीज मे तो कोई कठिनाई नही है।

पर यह जोड कब पैदा होता है? यह लिंक कब बनती है? यह लिंक, यह जोड, यह सम्बन्ध तब बनता है जब व्यक्ति अपने मन से अपने को दूर नही पाता, एक पाता है। वही उसके जुडने का ढग है, जब हम पाते है कि मैं मन हू। अब आपको क्रोध आता है और आप कहते हैं कि मै क्रोधी हो गया, तो आपको पता नही, आप मन के साथ जोड बना रहे है। जब आपके जीवन मे दुख आता है और आप कहते हैं—मैं दुखी हो गया, तो आपको पता नही, आप मन के साथ अपने को एक समझने की भ्राति मे पड रहे हैं। जब सुख आता है तो आप कहते हैं—मैं सुखी हो गया, तब आप फिर मन के साथ तादात्म्य कर रहे है।

अगर रस-परित्याग साधना है तो जब क्रोध आए तब कहना कि क्रोध आया, ऐसा मैं देखता हू—ऐसा नही कि क्रोध मुझे आ ही नही रहा है—तब आप फिर सम्बन्धित हो गए। ध्यान रहे अगर आपने कहा—नही, क्रोध मुझे आ ही नही रहा, और क्रोध आ रहा है तो आप क्रोध से सम्बन्धित हो या अक्रोध से सम्बन्धित हो, दोनो हालत मे रस-परित्याग नही होगा। जब क्रोध आए तब रस-परित्याग की साधना करने वाला व्यक्ति कहेगा, क्रोध आ रहा है, क्रोध जल रहा है, लेकिन मै देख रहा हू।

और सच यही है कि आप देखते है, आप कभी क्रोधी होते नहीं। वह भ्राति है कि क्रोधी होते हैं। आप सदा देखने वाले बने रहते है। जब पेट मे भूख लगती है तब आप भूखे नही हो जाते, आप सिर्फ जानने वाले होते है कि भूख लगी है। जब पैर में काटा गडता है तो आप दर्द नही हो जाते, तब आप जानते है कि पैर मे दर्द हो रहा है, ऐसा मैं जानता हू।

लेकिन इस जानने का बोध आपका प्रगाढ नही है, बहुत फीका है। वह इतना फीका है कि जब पैर का काटा जोर से चुभता है तो भूल जाता है उस बोध को प्रगाढ करने का नाम रस-परित्याग है। वह बोध जितना प्रगाढ होता जाए, तब जीभ आपकी कहेगी—बहुत स्वादिष्ट है। आप कहेगे कि ठीक है, जीभ कहती है कि स्वादिष्ट है—ऐसा मैं सुनता हू, ऐसा मैं देखता हू, ऐसा मैं समझता हू, लेकिन मैं अलग हू। रसानुभव के बीच मे साक्षी हू। कोई सम्मान कर रहा है, फूल मालाए डाल रहा है, तब आप जानते हैं कि फूलमालाए डाली जा रही है, कोई सम्मान कर रहा है, मैं देख रहा हू। कोई पत्थर मार रहा है, कोई गालिया दे रहा है, तब आप जानते है कि गालिया दी जा रही है, पत्थर मारे जा रहे हैं, मैं देख रहा हू।

बस वह एक दफा रस जुड गया, फिर आप शराब के नाम से जहर पीते रहेगे। वह कितना ही तिक्त मालूम पडे, वह रस जो सयुक्त हो गया। हम विकृत रसो से भी जुड जा सकते हे, और फिर उनकी पुनरुक्ति की माग शुरू हो जाती है।

मुल्ला एक दिन अपने मकान के दरवाजे पर उदास बैठा है। पडोसी बहुत हैरान हुआ क्योकि दो सप्ताह से वह बहुत प्रसन्न मालूम पड रहा था, इतना जितना कभी नही मालूम पडा था। उदास देखकर पडोसी ने पूछा कि आज नसरुद्दीन बहुत उदास मालूम पडते हो, बात क्या है? नसरुद्दीन ने कहा—बात! बात बहुत कुछ हे। इस महीने के पहले सप्ताह मेरे दादा मर गए और मेरे नाम पचास हजार रुपए छोड गए। दूसरे सप्ताह मेरे चाचा मर गए और मेरे नाम तीस हजार रुपए छोड गए और तीसरा सप्ताह पूरा होने को है, अभी तक कुछ नही हुआ।

मन पुनरुक्ति मागता हे। इसका सवाल नही है कि कोई मरेगा तब कुछ होगा। मरने का दुख एक तरफ रह गया। वह पचास हजार रुपए मिलने का सुख हे। इसलिए मनसविद् कहते है कि सिर्फ गरीब बाप के मरने से बेटे दुखी होते हैं, अमीर बाप के मरने से केवल दुख प्रगट करते है। इसमे सच्चाई है। क्योकि मृत्यु से भी ज्यादा कुछ और साथ मे अमीर बाप के साथ घटता है। उसका धन भी बेटे के हाथ मे आ जाता है। दुख वह प्रगट करता है, लेकिन वह दुख ऊपरी हो जाता है। भीतर एक रस भी आ जाता है। और अगर उसे पता चले कि बाप पुन जिन्दा हो गया, तो आप समझ सकते है, मुसीबत कैसी मालूम पडे। वह नही होता कभी जिन्दा, यह दूसरी बात है।

मुल्ला की जिन्दगी मे ऐसी तकलीफ हो गयी थी। उसकी पत्नी मर गयी, बामुश्किल मरी। अर्थी को उठा कर ले जा रहे थे कि अर्थी सामने लगे हुए नीम के वृक्ष से टकरा गयी। अन्दर से आवाज आयी हलन-चलन की। लोगो ने अर्थी उतारी, पत्नी मरी नही थी, सिर्फ बेहोश थी। मुल्ला बडा छाती पीटकर रो रहा था। पत्नी को जिन्दा देखकर बडा दुखी हो गया—छाती पीटकर रो रहा था, पत्नी को जिन्दा देखकर वह बडा दुखी हो गया। फिर पत्नी तीन साल और जिन्दा रही, फिर मरी, और जब अर्थी उठाकर लोग चलने लगे तो मुल्ला फिर छाती पीटकर रो रहा था। जब नीम के पास पहुचे, तो उसने कहा—भाइयो, जरा सम्भालकर। फिर से मत टकरा देना।

आदमी, जो प्रगट करता है, वही उसके भीतर है, ऐसा जरूरी नही है। ज्यादा सम्भावना तो यह है कि वह जो प्रगट करता है, उससे विपरीत उसके भीतर होता है। शायद वह प्रगट ही इसलिए करता है कि वह जो विपरीत भीतर है वह छिपा रहे, वह प्रगट न हो जाए। अगर ज्यादा जोर से छाती पीटकर रो रहा हे तो जरूरी नही कि इतना दुख हो। लेकिन कही किसी को पता न चल जाए कि

रस-परित्याग के वाद महावीर ने कहा हे—काया-क्लेश । यह महावीर के साधना सूत्रो मे सवसे ज्यादा गलत समझा गया साधना सूत्र है । काया-क्लेश शब्द साफ है । लगता है—शरीर को कष्ट दो, काया को क्लेश दो, काया को सताओ, लेकिन महावीर सताने की किसी भी वात मे गवाही नही हो सकते । क्योकि सब सताना हिंसा है । अपना ही शरीर सताना भी हिंसा है, क्योकि महावीर कहते ह—वह भी तुम्हारा ह । सच तुम्हारा है जो तुम उसे सता सकोगे ? पदार्थ पर हे । मेरे शरीर मे जो खून की धारा दौड रही हे वह उतनी ही मुझसे दूर हे जितनी आपके शरीर मे खून की धारा दौड रही हे । मेरे शरीर मे जो हड्डी है, वह भी मैं नही हू । उतना ही मैं नही हू जितना आपके शरीर की हड्डी मैं नही हू । और जव मेरे शरीर की हड्डी निकाल कर और आपके शरीर की हड्डी निकाल कर रख दी जाए तो मैं पता भी न लगा पाऊगा कि कौन-सी मेरी हड्डी हें—कि लगा पाऊगा ? कोई पता न लगेगा । हड्डी सिर्फ हड्डी है । वह मेरी-तेरी नही हे । और मेरी हड्डी जिस नियम से वनती है उसी नियम से आपकी हड्डी भी वनती हे । वह सव वाहर की ही व्यवस्था है ।

तो महावीर अपने शरीर को भी सताने की वात नही कह सकते क्योकि महावीर भलीभाति जानते हैं कि अपना वहा क्या है ? वहा भी सव पराया है । सिर्फ डिसटेंस का फासला है । मेरा शरीर मुझसे थोडा कम दूरी पर, आपका शरीर मुझसे थोडी ज्यादा दूरी पर है, वस इतना ही फासला है । और तो कोई फासला नही है । पर महावीर की परम्परा ने ऐसा ही समझा कि काया को सताओ, और इसलिए मेसोचिस्ट का, आत्मपीडको का वडा वर्ग महावीर की धारा मे सम्मिलित हुआ । जिन-जिन को लगता था कि अपने को सताने मे मजा आ सकता है वे सम्मिलित हुए ।

अव ध्यान रहे, महावीर ने अपने वालो का लोच किया, अपने वाल उखाड कर फेंक दिए । क्योकि महावीर कहते थे—अव वालो को उखाडने के लिए भी कोई साधन पास मे रखना पडे, कोई रेजर साथ रखो या किसी नाई पर निर्भर रहो, या नाई के यहा क्यू लगा कर खडे हो, महावीर ने कहा, फिजूल—फिजूल समय इसमे खोना जरूरी नही है । महावीर अपने वाल उखाड देते थे । लेकिन महावीर उखाडते थे इसलिए नही कि वाल उखाडने मे जो पीडा होती थी, उस पीडा मे उन्हे कोई रस था । सच तो यह है कि महावीर को वाल उखाडने मे पीडा नही होती थी । यह थोडा समझने जैसा है । आपके शरीर मे वाल और नाखून डैडपार्ट्स है, जिन्दा हिस्से नही हैं । नाखून और वाल मरे हुए हिस्से है इसीलिए तो कैंची से काटकर दर्द नही होता । उगली काटिए, वाल कैंची से कटता ह, आपको दर्द क्यो नही होता ? इफ इट इज ए पार्ट । अगर आपका ही हिस्सा है तो दर्द होना चाहिए, यदि वह जिन्दा है तो दर्द होना चाहिए । लेकिन आपके वाल कटते रहते हैं, आपको पता

और एक बार इस द्रष्टा के साथ सम्बन्ध बन जाए और इस मन के सम्बन्ध शिथिल हो जाए तो आप पाएगे, सब रस खो गए। न वस्तुए छोडनी पडती, न आखें फोडनी पडती, न तथाकथित आरोपण अपने ऊपर करना पडता, लेकिन रस खो जाते है। और जब रस खो जाते है तो वस्तुएं अपने आप छूट जाती है। और जब रस खो जाते है तो इद्रिया अपने आप शात हो जाती है। और जब रस खो जाते है तो मन पुनरुक्ति की माग बन्द कर देता है। क्योकि वह करता ही इसलिए था कि रस मिलता था। अब जब मालिक को ही रस नही मिलता तो बात समाप्त हो गयी। मन हमारा नौकर है, छाया की तरह हमारे पीछे चलता है। हम जो कहते है वह मन दोहरा देता है। मन जो दोहराता है इद्रिया वही मागने लगती है। इद्रिया जो मागने लगती है, हम उन्ही के पदार्थों को इकट्ठा करने मे जुट जाते है। ऐसा चक्कर है।

इसे आप पहले केन्द्र से ही तोडे। फिर भी महावीर इसे कहते है यह बाह्य-तप है। यह बडे मजे की बात है। इसे तोडना पडेगा भीतर, लेकिन फिर भी यह बाह्य-तप है। क्योकि जिससे आप तोड रहे हैं वह बाहर की ही चीज है, फिर भी बाहर की चीज है। अगर मैं साक्षी हो रहा हू तो भी तो बाहर का हो रहा हू, वस्तु का ही हो रहा हू, इद्रियो का हो रहा हूं, मन का हो रहा हू। वे सब पराए हैं, वे सब बाहर है।

ध्यान रहे, महावीर कहते है साक्षी होना भी बाहर है। इसलिए जब केवली होता है कोई तब वह साक्षी भी नही होता। किसका साक्षी होना है? वह सिर्फ होता है—जस्ट बीइग, सिर्फ होता है। साक्षी भी नही होता क्योकि साक्षी मे भी द्वैत है। कोई है जिसका मै साक्षी हू। अभी वह कोई मौजूद है। इसलिए केवली साक्षी भी नही होता। जब तक मैं ज्ञाता हू तब तक कोई ज्ञेय मौजूद है, इसलिए केवली ज्ञाता भी नही होता, मात्र ज्ञान रह जाता है।

इसलिए महावीर इसे भी बाह्य कहेगे। यह भी बाहर है। लेकिन बाहर का यह मतलब नही है कि आप बाहर की वस्तु को छोडने से शुरू करे। बाहर की वस्तु छूटना शुरू होगी, यह परिणाम होगा। अगर किसी व्यक्ति ने बाहर की वस्तु छोड़ने से शुरू किया तो वह मुश्किलो मे पड जाएगा, उलझ जाएगा। वह जिस वस्तु को छोडेगा उसमें आकर्षण बढ जाएगा। वह जिससे भागेगा उसका निमत्रण मिलने लगेगा। वह जिसका निषेध करेगा उसकी पुकार बढ जाएगी। जोर से लडेगा, आंख से लड़ेगा तो मन और भी ज्यादा प्रताड़ित करने लगेगा। रस कायम है और इंद्रिय पास मे नही तो मन और भी ज्यादा प्रताडित करेगा। अगर मन को दबाएगा, हटाएगा, समझाएगा, बुझाएगा तो मन उल्टी माग करता है। सिर्फ एक ही जगह है जहा से रस टूट जाता है, वह है साक्षीभाव। रस-परित्याग की प्रक्रिया है साक्षीभाव।

लोरेंजो कहता है—यह पेन सिर्फ मा पैदा करवाती है। यह सजेशन है उसका, ख्याल है। पेन होने की जरूरत ही नही। किसी जानवर को नही होता है, जगली आदिवासियो को नही होता है। आदिवासी स्त्री वच्चा पैदा हो जाता है जगल मे उसको टोकरी मे रखकर अपने घर चल पडती है। उसे विश्राम की भी कोई जरूरत नही रहती क्योकि जव दर्द ही नही हुआ तो विश्राम की क्या जरूरत ? दर्द हुआ तो फिर महीने भर विश्राम की जरूरत है। यह सारा का सारा मानसिक है लोरेंजो कहता है। और अव तो लोरेंजो की व्यवस्था रूस और अमरीका सव तरफ फैलती जा रही है। और वह सिर्फ मा को इतना समझाता है कि तू खीच मत अपनी मास-पेशियो को, रिलेक्स रख। वच्चे को कोआप्रेट कर वाहर आने मे। तू सोच कि वच्चा वाहर जा रहा है। इसलिए आप देखेंगे कि कोई पिचहत्तर प्रतिशत वच्चे रात मे पैदा होते है। उनको रात मे पैदा होना पडता है। क्योकि नीद मे मा लडाई नही करती। नही तो हिसाव से पचास परसेंट रात मे हो, चलेगा। पचास परसेंट दिन मे हो, चलेगा। इससे ज्यादा—इससे ज्यादा का मतलव है कि मा कुछ गडवड करती है। या वच्चे रात मे जगत् मे उतरने को ज्यादा आतुर है। कुल कारण इतना है कि मा जव तक जगी रहती है, वह ज्यादा सख्ती से अपनी मास-पेशियो को खीचे रहती है। वह सो जाती है तो शिथिल हो जाती है। सम्मोहन मे वच्चे विना दर्द के पैदा हो जाते है क्योकि मा नीद मे—गहरी नीद मे सम्मोहित हो जाती है। वच्चा पैदा हो जाता है।

लेकिन लोरेंजो कहता है—कोआप्रेट विद दि चाइल्ड। और लोरेंजो यह भी कहता है कि जिस मा ने वच्चे पैदा होने मे सहयोग नही दिया वह वाद मे भी नही दे पाएगी। और जिस वच्चे के साथ पहला अनुभव दुख का हो गया उस वच्चे के साथ सुख का अनुभव होना वहुत मुश्किल हो जाएगा। क्योकि पहला अनुभव एक्सपोजर है, गहरा। वह गहरे मे उतर जाता है। जिस वच्चे ने पहले ही दिन पीडा दे दी, अव वह पीडा ही देगा। यह प्रतीति गहन हो गयी। तो इसलिए मा वुढापे तक कहती रहती है कि मैंने तुझे नौ महीने पेट मे रखकर दुख झेला। वह भूलती नही। मैंने कितनी-कितनी तकलीफे झेली। वच्चे के साथ सुख का अनुभव मा कम ही कभी कहती सुनी जाती है। दुख के अनुभव ही कहती सुनी जाती है। शायद ही कोई मा यह कहती हो कि मैंने तुझे नौ महीने रखकर कितना सुख पाया। और जो मा ऐसा कह सकेगी, उसके आनन्द की कोई सीमा नही रहेगी, लेकिन कहने का सवाल नही है, अनुभव की वात है। और जो मा वच्चे को पेट मे नौ महीने रखकर आनद नही पा सकी, वह मा होने का हक खो दी। दुख पाया तो दुश्मन हो गया। और जिसके साथ इतना दुख पाया अव उसके साथ दुख की ही सम्भावना का सूत्र गहन हो गया। अव जव वह दुख देगा, तभी ख्याल मे आएगा, जव वह सुख देगा तो ख्याल मे नही आएगा। क्योंकि हमारी

भी नही चलता। वाल मरा हुआ हिस्सा है। असल मे शरीर मे जो जीव कोप मर जाते है उन कोपो को वाहर निकालने की तरकीव है—वाल और नाखून और अनेक तरह से, पसीने से, और सब तरह से। शरीर के मरे हुए कोप शरीर वाहर फेंक देता है। तो बाल आपके शरीर के मरे हुए कोप है। अगर मरे हुए कोपो को भी खीचने से पीडा होती है तो वह भ्राति है। वह सिर्फ ख्याल है कि पीडा होगी, इसलिए होती है।

आप कहेगे क्या सारे लोग भ्राति मे है ? तो मैं आपको एक छोटी-सी वैज्ञानिक घटना कहू जिससे ख्याल मे आ जाए। फ्रास मे एक आदमी है लोरेंजो। उसने पीडारहित प्रसव के हजारो प्रयोग किए। कोई अव तक वह एक लाख स्त्रियो को विना दर्द के प्रसव करवाया है। विना कोई दवा दिए, विना कोई अनस्थेसिया दिए, विना वेहोश किए। जैसी स्त्री है वैसी ही उसे लिटाकर विना दर्द के बच्चे को पैदा करवा देता है। वह कहता हे—सिर्फ यह भ्राति है कि वच्चे के पैदा होने मे दर्द होता है, यह सिर्फ खयाल है। और चूकि यह खयाल है इसलिए जव मा को वच्चा होने के करीव आता है तब वह भयभीत होनी शुरू हो जाती है कि अव दर्द होने वाला है। अव दर्द होगा। और चूकि दर्द जव भी ख्याल मे आता है तो वह अपनी पूरी मास-पेशियो को भीतर सिकोडने लगती है।

दर्द सिकोडता है—ध्यान रहे, सुख फैलाता है, दुख सिकोडता है। जव आप दुख मे होते है तो तो सिकुडते है। अगर एक आदमी आपकी छाती पर छुरा लेकर खडा हो जाए, आपकी सव मास-पेशिया भीतर सिकुड जाती है। कोई आप के गले मे फूलमाला डाल दे, आपका सव फैल जाता है। फूलमाला डलवा कर कभी वजन मत तुलवाना, ज्यादा निकल सकता हे। आप हैरान होगे, यह वैज्ञानिक निरीक्षित तथ्य है कि भगतसिह का वजन फासी पर वढ गया। जेल मे तौला गया और जेल से ले जाकर फासी के तख्ते पर तौला गया, फासी लगने वाली थी तो भगतसिह का वजन कोई डेढ पौंड वढ गया। यह कैसे वढ गया ? भगतसिह इतना आनदित था कि फैल सकता है। जव आप दुख मे होते है तो तो अपने को आप सिकोडते है रक्षा के लिए।

तो जव मा को डर लगता है कि अव पीडा आने वाली है, अव वच्चा होने वाला है और उसने देखी हे चीखें, कराहे सुनी हैं अस्पतालो मे, घर मे। सव उसे पता है। वह अपनी मास-पेशियो को भीतर सिकोडने लगती है। जव वह मास-पेशियो को भीतर सिकोडती है और वच्चा वाहर निकलने के लिए धक्का देता है, पीडा शुरू होती है, दर्द शुरू हो जाता है। दर्द शुरू होना है, मा का भरोसा पक्का हो जाता है कि दर्द होने लगा। वह और जोर से सिकोडती है। वह जितने जोर से सिकोडती है, वच्चा उतने जोर से धक्के देता है। उसे वाहर निकलना है। दोनो के सघर्ष मे पीडा और पेन पैदा होता है।

जब सभा समाप्त हो गयी, उसने मुल्ला को पकडा और कोने मे ले गया। पूछा कि राज क्या है तुम्हारा? जब मैंने कहा—चोरी मत करना तो तुम बहुत परेशान थे। तुम्हारे माथे पर पसीना आ गया। और जब मैंने कहा—व्यभिचार मत करना तो तुम बडे आनदित हो गए।

मुल्ला ने कहा कि जब आप नही मानते तो बताए देता हू। जब आपने कहा चोरी मत करना तब मुझे ख्याल आया कि मेरा छाता कोई चुरा ले गया। छाता दिखाई नही पड रहा तो मैं मुसीबत मे पड गया कि जरूर कोई चोर—मुझे गुस्सा भी बहुत आया कि यह कैसा चर्च है जहा चोर इकट्ठे है। लेकिन जब आपने कहा कि व्यभिचार मत करना, तब मुझे फौरन ख्याल आ गया कि रात मे मैं छाता कहा छोड आया हू। कोई हर्जा नही, कोई हर्जा नही।

आदमी के भीतर क्या हो रहा है, वह उसके बाहर देखकर पता लगाना बहुत मुश्किल है। आदमी के भीतर सूक्ष्म मे वह जो घटित होता है वह बाहर के प्रतीको से पकडना अत्यन्त कठिन है। अक्सर ऐसा हुआ है कि महावीर के पास वे लोग भी इकट्ठे हो जाएगे और जैसे-जैसे महावीर से फासला बढता जाएगा। उनकी सख्या बढती जाएगी। और एक वक्त आएगा कि महावीर के पीछे चलने वाली भीड मे अधिक लोग वे होगे जो उन बातो से उत्सुक हुए जिन बातो से उत्सुक नही होना चाहिए था। और जिन बातो से उत्सुक होना चाहिए था, उनका ख्याल ही मिट जाएगा। क्योकि जिन बातो से उत्सुक होना चाहिए वे गहन है, और जिन बातो से हम उत्सुक होते है वे ऊपरी है, बाहरी है। अब महावीर को लोगो ने देखा है कि अपने बाल उखाड रहे है, भूखे खडे है, नग्न खडे है, धूप, सर्दी, वर्षा मे खडे है, तो जिन लोगो को भी अपने को सताना है, महावीर की आड मे वे बडी आसानी से कर सकते है। लेकिन महावीर अपने को सता नही रहे। काया-क्लेश का अर्थ महावीर के लिए सताना नही है।

पर यह शब्द क्यो प्रयोग किया? महावीर का जो अर्थ है वह यह है कि काया-क्लेश ह। इसे थोडा समझें। शरीर दुख है, शरीर ही दुख है। शरीर के साथ सुख मिलता ही नही कभी, दुख ही मिलता है। शरीर के साथ कभी सुख मिलता ही नही, शरीर दुख ही देगा। इसलिए साधक जैसे ही आगे बढेगा उसे शरीर से बहुत से दुख दिखाई पडने शुरू हो जाएगे जो कल तक दिखाई नही पडते थे। क्योकि वह अपने मोह और भ्रमो मे जी रहा था। डिसइलूजनमेंट होगा। मेरे पास लोग आते है, वे कहते है—जब से ध्यान शुरू किया तब से मन मे बडी अशाति मालूम पडती है। ध्यान से अशाति नही हो सकती। अगर ध्यान से अशाति होती तो फिर शाति किस चीज से होगी? मैं जानता हू, अशाति मालूम पडती है ज्यादा ध्यान करने पर। क्योकि जो अशाति आपने कभी नही देखी थी अपने भीतर, वह ध्यान के साथ दिखाई पडनी शुरू होगी। दिखती नही थी, इसलिए

ख्वाइस शुरू हो गयी, हमारा चुनाव शुरू हो गया।

लोरेंजो ने लाखो स्त्रियो को बिना दर्द के, प्रसव करवा कर यह प्रमाणित कर दिया, कि दर्द हमारा ख्याल है। अगर प्रसव बिना दर्द के हो सकता हे तो आप सोचते है, बाल बिना दर्द के नही निकल सकते ! बहुत आसान-सी बात है। महावीर अपने बाल उखाड कर फेंक देते हैं।

लेकिन पागलो की एक जमात है और मनोवैज्ञानिक कहते है कि पागलो का एक खास वर्ग है जो वाल नोचने मे रस लेता है। जिसको वाल नोचने मे रस आता है, अगर वह ऐसा ही वाजार मे खडे होकर बाल नोचे, तो आप उसको पागलखाने भेज देंगे। अगर वह महावीर का अनुयायी होकर लौटे तो आप उसके पैर छुएगे। अब यह आदमी अगर थोडी भी इसमे वुद्धि है और पागलो मे काफी होती—काफी होती। इसलिए काफी वुद्धि वाले लोग भी कभी-कभी पागल होते है। पागलो में काफी वुद्धि होती है। और जहा तक उनका पागलपन है वह अपनी वुद्धि का उसमे पूरा प्रयोग करते है। तो जो वाल नोचने वाले पागल है वे महावीर मे उत्सुक होकर साथ खडे हो जाएगे। कुछ पागल है, जिनको नग्न होने मे रस आता है। उनको मनोवैज्ञानिक एक्जीबीनिस्ट कहते हैं। अगर वे ऐसे ही नग्न होकर खडे हो तो पुलिस पकडकर ले जाएगी। लेकिन महावीर को नग्न देख कर उनको वडा मजा आ जाएगा। वे नग्न खडे हो जाएगे। और तब आप उनके पैर छूने पहुच जाएगे। पता लगाना वहुत मुश्किल है कि वह नग्नता की वजह से महावीर के अनुयायी हो गए, या महावीर के अनुयायी होने की वजह से वे नग्न हुए है। वाल नोचने मे उनको मजा आता है इसलिए महावीर के साथ चले गए, या महावीर के साथ चले गए और उस राज को पा गए जहा वाल नोचने मे कोई दर्द नही होता। यह तय करना वहुत मुश्किल है। आदमी के भीतर क्या हो रहा है, यह वाहर से जाच वडी कठिन है।

मुल्ला एक दिन चर्च मे गया है सुनने। कोई वडा पादरी वोलने आया है। चला गया। एक ईसाई मित्र ने कहा, जाकर बैठ गया। आगे ही बैठा है। प्रभावशाली आदमी है। पादरी की भी नजर उस पर वार-वार जाती है। जव पादरी ने टेन कमाडमेंट्स पर वोलना शुरू किया, दस आज्ञाओ पर और जव उसने एक आज्ञा पर काफी वातें समझायी—दाउ शैल्ट नाट स्टील, चोरी नही करना तुम। तो मुल्ला वडा वेचैन हो गया। उसके माथे पर पसीना आ गया। पादरी को ख्याल भी आया कि वहुत वेचैन है यह आदमी, क्या वात है ! इतना वेचैन है कि लगता है कि वह उठकर न चला जाए। हाथ पैर उसके सीधे नही है। फिर पादरी दूसरी आज्ञा पर आया—दाउ शैल्ट नाट कमिट एडल्टरी, व्यभिचार मत करना तुम। मुल्ला हसने लगा। वडा प्रसन्न हुआ। वडा शात और आनन्दित दिखाई पडने लगा। पादरी और भी हैरान हुआ कि इसको हो क्या रहा है !

महावीर जानते हैं कि जैसे साधना मे भीतर प्रवेश होगा, कल टूटने लगेगा, आज ही जीना होगा। और सारे दुख प्रगाढ होकर चुभेंगे, सब तरफ से दुख खडे हो जाएगे। सब तरफ बुढापा और मौत दिखाई पडने लगेगी, कही सुख का कोई सहारा न रहेगा। जो कागज की नाव आप सोचते थे पार कर देगी, वह डूब जाएगी। जो आप सोचते थे सहारा है, वह खो जाएगा। जिन भ्रमो के आसरे आप जीते थे वे मिट जाएगे। जब बिल्कुल भ्रम शून्य, डिसइलूजड आप सागर मे खडे होगे, डूबते होगे, न नाव होगी, न सहारा होगा, न किनारा दिखाई पडता होगा तब बडा क्लेश होगा। उस क्लेश को सहना। उस क्लेश को स्वीकार करना। जानना कि वह जीवन की नियति है। जानना कि वह प्रकृति का स्वभाव है। जानना कि ऐसा है।

काया-क्लेश का अर्थ है—जो भी क्लेश आए, उसे स्वीकार करना, जानना कि ऐसा है। उससे बचने की कोशिश मत करना। उससे बचने की कोशिश ही भविष्य के स्वप्न मे ले जाती है। उसके विपरीत सुख बनाने की चिन्ता मे मत पडना। क्योकि वह सुख बनाने की चिन्ता उसे देखने नही देती, जानने नही देती, पहचानने नही देती। और ध्यान रहे, इस जगत् मे जिसे मुक्त होना है, सुख से मुक्त कोई नही हो सकता, दुख से ही मुक्त होना होता है। सुख है ही नही, उससे मुक्त क्या होइएगा, वह भ्रम है। दुख से मुक्त होना होता है और दुख से मुक्ति दुख की स्वीकृति मे छिपी है—एक्सेप्टिबिलिटी मे छिपी है, टोटल एक्सेप्टिबिलिटी, समग्र स्वीकार। काया-क्लेश का अर्थ है—काया दुख है, उसका समग्र स्वीकार। वह स्वीकार इतना हो जाना चाहिए कि आपके मन मे यह सवाल भी न उठे कि काया दुख है। यह दूसरा हिस्सा काया-क्लेश का आपसे कहता हू।

क्योकि जब तक आपको लगता है, काया दुख है आपको काया से सुख की आकाक्षा है। अगर मैं मानता हू कि मेरा मित्र मुझे दुख दे रहा है, उसका कुल मतलब इतना है कि मैं अभी भी सोचता हू कि मेरे मित्र से मुझे सुख मिलना चाहिए। अगर मैं कहता हू कि मेरा शरीर दुख देता है तो उसका मतलब यह है कि मेरे शरीर से सुख की आकाक्षा कही है। काया-क्लेश का अर्थ है कि स्वीकार कर लो दुख को, इतना स्वीकार कर लो कि तुम्हें क्लेश का भी बोध मिट जाए। क्लेश का बोध उसी दिन मिट जाएगा जिस दिन पूर्ण स्वीकृति होगी। इसलिए महावीर सब दुखो के बीच आनन्द से भरे घूमते रहते है। वे जब वर्षा मे खडे हैं, या धूप मे पडे है, या नग्न है, या बाल उखाड रहे हैं, या भोजन नही कर रहे हैं तो किसी दुख मे नही है। उन्हे दुख का अब पता ही नही है। काया-क्लेश की स्वीकृति इतनी गहन हो गई है कि अब दुख का कोई पता भी नही चलता अब वह कैसे कहे कि यह दुख है।

अगर मैं अपेक्षा करता हू कि जब रास्ते से मैं गुजरू तो आप मुझे नमस्कार

आप सोचते थे हे नही। जव दिखती तव पता चलता है कि है। इसलिए ध्यान के पहले अनुभव तो अशाति के वढने के अनुभव है। जैसे-जैसे ध्यान वढता है, अशाति पूरी प्रगट होती है। एक घडी आएगी कि भय लगने लगेगा कि मैं पागल तो नही हो जाऊगा! अगर आप उस घडी को पार कर गए तो अशाति समाप्त हो जाएगी। अगर आप उस घडी को पार नही किए तो आप वापस अपनी अशाति की दुनिया मे फिर लौट जाएगे, सोए हुए।

एक आदमी सोया है। उसे पता नही चलता कि पैर मे दर्द है। जागता है तो पता चलता है। जागने से दर्द नही होता, जागने से पता चलता है। प्रत्यभिज्ञा होती है। महावीर जानते है कि काया-क्लेश वढेगा। जैसे ही कोई व्यक्ति साधना मे उतरेगा, उसकी काया उसे और ज्यादा दुख देती हुई मालूम पडेगी। क्योकि सुख तो देना वन्द हो जाएगा। सुख उसने कभी दिया नही था, सिर्फ हमने सोचा था कि देगी। वह हमारा भ्रम था, वह हमारा ख्याल था, वह तो पर्दा उठ जाएगा, दुख ही दुख दिखाई पडेगा। उसे देखकर लौट मत जाना। महावीर कहते है—इस काया-क्लेश को सहना। यह काया-क्लेश देना नही है अपने को। काया-क्लेश वढेगा। काया के दुख दिखाई पडने शुरू होगे। उसकी वीमारिया दिखाई पडेगी, तनाव दिखाई पड़ेंगे, असुविधाए दिखाई पडेगी, रुग्णता, वुढापा आएगा, मौत आएगी, यह सव दिखाई पडेगा। जन्म से लेकर मृत्यु तक दुख की लम्वी यात्रा दिखाई पडेगी। घवरा मत जाना। उस काया-क्लेश को सहना, उसको देखना, उससे राजी रहना, भागना मत।

तो काया-क्लेश का यह अर्थ नही हे कि दुख देना। काया-क्लेश का अर्थ है—दुख आएगा, दुख प्रतीत होगा, दुख अनुभव मे उतरेगा, तव तुम वचाव मत करना, स्वीकार करना। अव यह वहुत अलग अर्थ है। और ऐसा देखेंगे तो महावीर की पूरी वात वहुत और दिखाई पडेगी। तव महावीर यह नही कह रहे कि तुम सताना, क्योकि महावीर कह रहे है—सताने की जरूरत नही है। काया खुद ही इतना सताती है कि अव तुम और क्या सताओगे? काया के अपने ही दुख इतने पर्याप्त हैं कि तुम्हे और दुख ईजाद करने की कोई जरूरत नही है। लेकिन काया के दुख पता न चलें, इसलिए हम सुख ईजाद करते है, ताकि काया के दुख पता न चले। सुख का हम आयोजन करते है। कल हो जाएगा आयोजन, परसो हो जाएगा आयोजन। किसी न किसी दिन तो सुख मिलेगा ही। आज नही मिला, कल मिलेगा, परसो मिलेगा। तो कल पर टालते जाते हैं, स्थगित करते जाते है। आज का दुख भुलाने के लिए कल का सुख निर्मित करते रहते हैं। आज पर पर्दा पड जाए इसलिए कल को रगीन वनाए रहते है। इसलिए कोई आदमी आज मे नही जीना चाहता। आज वडा दुखद है। सव कल पर टालते रहते है—आज वडा दुखद है—अभी अगर हम जाग जाएं तो सुख का सव भ्रम टूट जाए।

मैंने ऐसा जान ही लिया कि शरीर के साथ मौत अनिवार्य है तो मौत का दुख नष्ट हो गया। मौत आएगी, मौत नष्ट नही हो गई—मौत आएगी। लेकिन अब मुझे नही छू पाएगी।

काया-क्लेश की साधना दुख की स्वीकृति से दुख की मुक्ति का उपाय है। लेकिन भूलकर भी काया को कष्ट देने की कोशिश काया-क्लेश की साधना नही है। क्योकि जो आदमी काया को दुख देने मे लगा है, वह आदमी फिर किसी सुख की आकाक्षा मे पडा। प्रयत्न हम सुख के लिए ही करते हैं। ध्यान रहे प्रयत्न मात्र सुख के लिए है। जब तक हम कोई प्रयत्न करते है, तब तक हम सुख की ही आकाक्षा से करते हैं। एक आदमी अपने शरीर को भी सता सकता है, सिर्फ इस आशा मे कि इससे मोक्ष मिलेगा, आनन्द मिलेगा, आत्मा मिलेगी, परमात्मा मिलेगा। तो सुख की आकाक्षा जारी है।

महावीर की काया-क्लेश की धारणा किसी सुख के लिए शरीर को दुख देने की नही है। परम्परागत व्याख्याकार कहते है कि जैसे आदमी धन कमाने के लिए दुख उठाता है, ऐसा ही मोक्ष पाने के लिए दुख उठाना पडेगा। गलत कहते हैं—बिल्कुल ही गलत कहते है। जैसे कोई आदमी व्यायाम करता है तो शरीर को कष्ट देता है ताकि स्वास्थ्य ठीक हो जाए, ऐसा ही काया-क्लेश करना पडेगा। गलत कहते है—बिल्कुल गलत कहते हैं। काया तो क्लेश ही है अब और क्लेश आप उसमे जोड नही सकते। आपके हाथ के बाहर है क्लेश जोडना। अगर आपके हाथ के भीतर हो क्लेश जोडना, तब तो क्लेश कम करना भी आपके हाथ के भीतर हो जाएगा। यह समझ लें। अगर आप शरीर मे दुख जोड सकते है तो घटा क्यो नही सकते। फिर वह सासारिक कौन-सी गलती कर रहा हैं, वह कह रहा है—तुम जोडने की कोशिश मे लगे हो। अगर जोडने मे सफल हो जाओगे—पाच दुख की जगह अगर तुम दस कर सकते हो तो मैं पाच की जगह शून्य क्यो नही कर सकता।

अगर दुख जुड सकते हैं तो दुख घट भी सकते हैं। जहा जोड हो सकता है, वहा घटाना भी हो सकता है। तो यह तथाकथित धार्मिक आदमी जो शरीर को दुख दे रहा है इसमे, और भोगी जो शरीर के दुख करने मे लगा है, कोई भेद नही है। इनका तर्क एक ही है। इनकी निष्ठा भी एक है। इनकी श्रद्धा मे भेद नही है। एक कह रहा है—हम जोड लेंगे, एक कह रहा है—हम घटा लेंगे। इनके गणित मे फर्क नही है। इनके गणित का हिसाब एक ही है।

महावीर कहते हैं—न तुम जोड सकते, न तुम घटा सकते। जो है उसे चाहो तो स्वीकार कर लो, चाहो तो अस्वीकार कर दो। इतना तुम कर सकते हो। जो अल्टरनेटिव है, जो विकल्प है वह स्वीकार और अस्वीकार मे है। वह घटाने और बढाने मे नही है। तुम चाहो तो स्वीकार कर लो, तुम चाहो तो अस्वीकार कर

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मंगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, संयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा संलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

दो। ध्यान रहे, स्वीकार कर लोगे तो दुख शून्य हो जाएगा। अस्वीकार कर दोगे तो दुख जितना अस्वीकार करोगे, उतना गुना ज्यादा हो जाएगा। काया-क्लेश का अर्थ है, पूर्ण स्वीकृति, जो है उसकी वैसी ही स्वीकृति।

महावीर के कानो मे जिस दिन खीलें ठोंके गए, तो कथा कहती है, इन्द्र ने आकर महावीर को कहा कि आप मुझे आज्ञा दें। हमे वडी पीडा होती है। आप जैसे निस्पृह व्यक्ति के लोग आकर कानो मे खीले ठोक दे, सतायें, परेशान करें—हमे पीडा होती है।

तो महावीर ने कहा कि मेरे शरीर मे ठोके जाने से तुम्हे इतनी पीडा होती है तो तुम्हारा शरीर मे ठोके जाने से तुम्हे कितनी न होगी!

इन्द्र ने कुछ भी न समझा। उसने कहा कि निश्चित होती हे। तो मैं आपकी रक्षा करने लगू?

महावीर ने कहा—तुम भरोसा देते हो कि तुम्हारी रक्षा से मेरे दुख कम हो जाएगे?

इन्द्र ने कहा—कोशिश कर सकता हू। कम होगे कि नही, मैं नही कह सकता।

महावीर ने कहा—मैंने भी जन्मो-जन्मो तक कोशिश करके देखी, कम नही हुए। अव मैंने कोशिश छोड दी। अब मैं इतनी कोशिश भी न करूगा कि तुमको मैं रक्षा के लिए रखू। नही, तुम जाओ। तुम्हारी भी भूल वही है जो उस कान मे खीले ठोकने वाले की भूल थी। वह सोचता था खीलें ठोककर मेरे दुख वढा देगा, तुम सोचते हो मेरे साथ रहकर मेरे दुख घटा दोगे। गणित तुम्हारा एक है। मुझे छोड दो, जो है मुझे स्वीकार है। उसने खीले जरूर ठोके। मुझ तक नही पहुंचे उसके खीलें, मैं वहुत दूर खडा हू। मैंने स्वीकार कर लिया है, मैं दूर खडा हू। एक्सेप्टेंस इज ट्रासेडेंस। जैसे ही किसी ने स्वीकार किया, अतिक्रमण हो जाता है। जिस स्थिति को आप स्वीकार करते है आप उसके ऊपर उठ जाते है—तत्क्षण।

काया-क्लेश का यही अर्थ है। छठवा महावीर का वाह्य तप है—सलीनता। उस पर हम कल वात करेंगे। अभी बैठेंगे।

के अभ्यास मे जिसे उतरना हो उसे पहले तो अपनी शरीर की गतिविधियो का निरीक्षण करना होता है। यह पहला हिस्सा है।

क्या कभी आपने ख्याल किया है कि जब आप क्रोध मे होते है तो और ढग से चलते है? जब आप क्रोध मे होते है तब आपके चेहरे की रेखाए और हो जाती है, आपकी आख पर अलग रग फैल जाते है, आपके दातो मे कोई गति हो जाती है। आपकी अगुलिया किसी भार से, शक्ति से भर जाती है। आपके समस्त स्नायु मडल मे परिवर्तन हो जाता है। जब आप उदास होते है तब आप और ढग से चलते हैं, आपके पैर भारी हो गए होते है, उठाने का मन भी नही होता, कही जाने का भी मन नही होता। आपके प्राण पर जैसे पत्थर रख दिया हो, ऐसी आपकी सारी इद्रिया पत्थर से दब जाती है। जब आप उदास होते है तब आपके चेहरे का रग बदल जाता हे, रेखा बदल जाती है। जब आप प्रेम मे होते है तब, जब आप शात होते है तब, तब सब फर्क पडते है। लेकिन आपने निरीक्षण न किया होगा। सलीनता का प्रयोग समझना हो तो जब आप क्रोध मे हो तो भागें और दर्पण के सामने पहुच जाए। और देखे कि चेहरे मे कैसी स्थिति है क्योकि आपका क्रोध से भरा चेहरा दूसरो ने देखा है, आपने नही देखा। देखें कि आपका चेहरा कैसा हे। जब आप उदास हो तब आईने के सामने पहुच जाए और देखे कि आखें कैसी हैं। जब आप चल रहे हो उदास, तब ख्याल करें कि पैर कैसे पडते है, शरीर झुका हुआ है, उठा हुआ है।

हिटलर ने एक मनस्विद को फ्रास पर हमला करने के पहले फ्रास भेजा था और पूछा था कि जरा फ्रास की सडको पर देखो कि युवक कैसे चलते है, उनकी रीढ सीधी है या झुकी हुई हे? उस मनस्विद ने खबर दी कि फ्रास मे लोग झुके-झुके चलते है। हिटलर ने कहा—फिर उनको जीतने मे कोई कठिनाई न पडेगी। हिटलर का सैनिक देखा है आपने? पूरा जर्मनी रीढ सीधी करके चल रहा है। जब कोई आशा से भरा होता हे तो रीढ सीधी हो जाती है। जब कोई निराशा से भरा होता है तो रीढ झुक जाती है। बुढापे मे सिर्फ इसलिए रीढ नही झुक जाती कि शरीर कमजोर हो जाता है। इससे भी ज्यादा इसलिए झुक जाती है कि जीवन निराशा से भर जाता है। मौत सामने दिखाई पडने लगती है, भविष्य नही रह जाता। महावीर जैसे व्यक्ति की रीढ बुढापे मे भी नही झुकेगी क्योकि मौत नही है असली सवाल बुढापे मे, मोक्ष का द्वार है, परम आनन्द है। रीढ नही झुकेगी।

आप भी जब स्वस्थ चित्त, प्रसन्न चित्त होते है तो और ढग से खडे होते हैं। अगर मैं बोल रहा हू और आपको उसमे कोई रस नही आ रहा है तो आप कुर्सी से टिक जाते हैं। अगर आपको कोई रस आ रहा है तो आपकी रीढ कुर्सी छोड देती हे। और सीधे हो जाते है। अगर कोई बहुत सवेदनशील हिस्सा आ गया है

संलीनता : अंतर-तप का प्रवेश-द्वार

तेरहवा प्रवचन . दिनाक ३० अगस्त, १९७१ पर्युपण व्याख्यान-माला, बम्बई

बाह्य तप का अन्तिम सूत्र, अन्तिम अग है—सलीनता। सलीनता सेतू है बाह्य तप और अतर्तप के वीच। सलीनता के विना कोई वाह्य-तप से अतर्तप की सीमा मे प्रवेश नही कर सकता। इसलिए सलीनता को वहुत ध्यानपूर्वक समझ लेना जरूरी है। सलीनता सीमात है, वहा से वाह्य-तप समाप्त होते और अतर्तप शुरू होते है।

सलीनता का अर्थ और सलीनता का प्रयोग वहुत अद्‌भुत है। परम्परा जितना कहती है, वह तो इतना ही कहती है कि अपने शरीर के अगो को व्यर्थ सचालित न करना सलीनता है। अकारण शरीर न हिले डुले, सयत हो, तो सलीनता है। इतनी ही वात नही, यह तो कुछ भी नही है। यह तो सलीनता का वाहर रूपरेखा को भी स्पर्श करना नही है। सलीनता के गहरे अर्थ है। तीन हिस्सो मे हम इसे समझें—पहला तो आपके शरीर मे, आपके मन मे, आपके प्राण मे कोई भी हलन-चलन नही होता है जव तक आपकी चेतना न कपे। अगुली भी हिलती है तो भीतर आत्मा मे कपन पैदा होता है। दिखाई तो अगुली पडती है कि हिली, लेकिन कपन भीतर से आता है, सूक्ष्म से आता है और स्थूल तक फैल जाता है। इतना ही सवाल नही है कि अगुली न हिले क्योकि यह हो सकता है—अगुली न हिले लेकिन भीतर कपन हो। तो कोई अपने शरीर को सलीन करके वैठ जा सकता है, योगासन लगाकर बैठ जा सकता है, अभ्यास कर ले सकता है और शरीर पर कोई भी कपन दिखाई न पडे और भीतर तूफान चले, और ज्वालामुखी का लावा उवलता रहे और आग जले।

सलीनता वस्तुत तो तव घटित होती है, जव भीतर सव इतना शात हो जाता है कि भीतर से कोई तरग नही आती जो शरीर पर कपन वने, लहर वने। पर हमे शरीर से ही शुरू करना पड़ेगा क्योकि हम शरीर पर ही खडे हैं। तो सलीनता

शान्ति के आप जितने ही निरीक्षक वनते हैं उतने ही आपका और निरीक्षण के लिए जो शान्ति जरूरी है वह भी जुड जाती है। अध्ययन के लिए जो शान्ति जरूरी है वह भी जुड जाती है। तटस्थ होना जरूरी है, वह भी मुड जाता है। शान्ति और गहरी हो जाती है। सच तो यह है कि निरीक्षण करने से जो गहरा हो जाए, वही वास्तविक जीवन है। निरीक्षण करने से जो गिर जाए, वह धोखा है। या ऐसा कहे कि निरीक्षण करने से जो वचा रहे वही पुण्य है, और निरीक्षण करने से जो तत्काल विलीन हो जाए वही पाप है। सलीनता का पहला प्रयोग है, राइट-आवजर्वेशन, सम्यक् निरीक्षण। आप वहुत हैरान होगे कि आप कितनी तस्वीरे हैं—एक साथ।

महावीर ने पृथ्वी पर पहली दफा एक शब्द का प्रयोग किया है जो पश्चिम मे अव पुन पुनरुज्जीवित हो गया है। महावीर ने पहली दफा एक शब्द का प्रयोग किया है—वहुचित्तता—पहली वार। आज पश्चिम मे इस शब्द का वडा मूल्य है। उनको पता भी नही है कि महावीर ने पच्चीस सौ साल पहले इसका प्रयोग किया था—पॉलिसाइकिक। पश्चिम मे आज इस शब्द का वडा मूल्य है। क्योकि जैसे ही पश्चिम मन को समझने गया, उसने कहा—मन मॉनोसाइकिक नही है, एक मन नही है आदमी के भीतर—अनन्त मन है, पॉलिसाइकिक है, वहुत मन है। महावीर ने ढाई हजार साल पहले कहा कि आदमी वहुचित्तवान है, एक चित्त नही है, जैसा हम सोचते है। हम निरन्तर कहते हैं—मेरा मन। हमे कहना चाहिए—मेरे मन। माई माइड नही, माई माइड्स।

तो क्या आपके पास एक मन एक ही मन हो तो जीवन और हो जाए, वहुत मन हैं। और ये मन भी ऐसे नही है कि सिर्फ वहुत है, ये विरोधी भी है। ये एक दूसरे के दुश्मन भी हैं। इसलिए आप सुबह कुछ, दोपहर कुछ, शाम कुछ हो जाते है। आपको खुद ही समझ मे नही आता कि यह क्या हो रहा है। जव आप प्रेम मे होते हैं तव आप दूसरे ही आदमी होते है, और जव आप घृणा मे होते हैं तो आप दूसरे ही आदमी होते हैं। इन दोनो के वीच कोई सगति नही होती, कोई सम्बन्ध नही होता। जिसने आपको घृणा मे देखा है वह अगर आपको प्रेम मे देखे तो भरोसा न कर पाएगा कि आप वही आदमी हैं। और ध्यान रहे यह सिर्फ घृणा की वजह से नही, आपके चेहरे की सव रूप रेखा, आपके शरीर का ढग, आपका आभामण्डल, आपका सव वदल गया होगा।

तो पहला तो निरीक्षण करे, ठीक से पहचानें कि आपके पास कितने चित्त है। और प्रत्येक चित्त की आपके शरीर पर क्या प्रतिक्रिया है। आपका शरीर प्रत्येक चित्त दशा के साथ कैसा वदलता है। जव आप शान्त होते हैं तो शरीर को हिलाने का भी मन नही होता। श्वास भी जोर से नही चलती। खून की रफ्तार भी कम हो जाती है। हृदय की धडकनें भी शान्त हो जाती है। जव आप अशात

फिल्म मे देखते समय, कोई वहुत थ्रीलिंग कोई कपा देने वाला हिस्सा हो गया है तो आपकी रीढ सीधी ही नही होती, वहा भी झुक जाती है। श्वास रुक जाती है। आपके चित्त मे पडे हुए छोटे-छोटे परिवर्तनो की लहरें आपके शरीर की परिधि तक फैल जाती है। ज्योतिपी या हस्तरेखाविद्, या मुखाकृति को पढने वाले लोग नब्बे प्रतिशत तो आप पर ही निर्भर होते है। आप कैसे उठते, कैसे चलते, कैसे बैठते, आपके चेहरे पर क्या भाव है। आपको भी पता नही है, वह सव आपके वावत वहुत-सी खवरें दे जाती है।

आदमी एक किताव है, उसे पढा जा सकता है। और जिसे साधना मे उतरना हो उसे खुद अपनी किताव पढनी शुरू करनी पडती है। सवसे पहले तो पहचान लेना होगा कि मैं किस तरह का आदमी हू। तो जब क्रोध मे आप आईने के सामने खडे हो जाए, और देखे, कैसा है चेहरा, क्या है रग, आख पर कैसी रेखाए फैल गयी है? जब शात हो, मन प्रसन्न हो तब भी आईने के सामने खडे हो जाए। तब आप अपनी वहुत-सी तस्वीरें देखने मे समर्थ हो जाएगे और एक और मजेदार घटना घटेगी, वह सलीनता के प्रयोग का दूसरा हिस्सा है। जब आप आईने के सामने खडे होकर अपने क्रोधित चित्त का अध्ययन कर रहे होगे तब आप अचानक पाएगे कि क्रोध खिमकता चला गया, शात होता चला गया। क्योकि जो क्रोध का अध्ययन करने मे लग गया, उनका क्रोध से सम्वन्ध टूट जाता है, अध्ययन से सम्वन्ध जुड जाता है। उसकी चेतना का तादात्म्य, मैं क्रोध हू मे टूट गया, मैं अध्ययन कर रहा हू, इससे जुड गया। और जिससे हमारा सम्वन्ध टूट गया वह वृत्ति तत्काल क्षीण हो जाती है।

तो आईने के सामने खडे होकर एक और रहस्य आपको पता चलेगा कि अगर आप क्रोध का निरीक्षण करे तो क्रोध जिन्दा नही रह सकता। तत्काल विलीन हो जाता है। और भी एक मजेदार अनुभव होगा कि जव आप वहुत शात हो और जीवन एक आनन्द के फूल की तरह मालूम हो रहा हो किसी क्षण मे, कभी सूरज निकला हो सुवह का और उसे देखकर मन प्रफुल्लित हुआ हो, या रात चाद-तारे देखे हो और उनकी छाया और उनकी शाति मन मे प्रवेश कर गयी हो, या एक फूल को खिलते देखा हो और उसके भीतर की वन्द शाति आपके प्राणो तक विखर गयी हो, तब आईने के सामने खडे हो जाए तव एक और नया अनुभव होगा, और वह अनुभव यह होगा कि जब कोई शाति का निरीक्षण करता है, तो क्रोध तो निरीक्षण करने से विलीन हो जाता है, शाति निरीक्षण करने मे बढ जाती है। गहरी हो जाती है। क्रोध इसलिए विलीन हो जाता है कि आपका क्रोध से सम्वन्ध टूट जाता है। क्रोध से सम्वन्धित होने के लिए बेचैन होना जरूरी है, परेशान होना जरूरी है, उद्विग्न होना जरूरी है। अध्ययन के लिए शात होना जरूरी है। निरीक्षण के लिए मौन होना जरूरी है। तटस्थ होना जरूरी है। तो सम्वन्ध टूट जाता है।

जाए और अपने तरफ से शरीर के अंगो को वैसा करने की कोशिश करें जैसा शान्ति मे होता है। आईने के सामने खड़े हो जाए। आपको भली-भाति याद है कि शान्ति मे चेहरा कैसा होता है। अव क्रोध की स्थिति है। चेहरा क्रोध की धारा में वह रहा है। आप आईने के सामने खडे होकर उस चेहरे को याद करें जो शान्ति में होता है, और चेहरे को शान्ति की तरफ ले जाने लगता है। वहुत ही थोड़े दिनो मे आप हैरान होगे कि आप चेहरे को शान्ति की तरफ ले जाने मे समर्थ हो गए हैं। सारी अभिनय की कला, सारी एक्टिंग इस अभ्यास पर निर्भर करती है। जन्मजात किसी को यह प्रतिभा होती है तो वह अभिनय में कुशल मालूम पडता है।

लेकिन यह प्रतिभा विकसित की जा सकती है और यह इतनी विकसित की जा सकती है कि जिसका कोई हिसाव लगाना कठिन है। आईने के सामने खडे होकर, क्रोध भीतर है और आप चेहरे पर शान्ति की धारा वहा रहे हैं। थोडे ही दिन मे आप समर्थ हो जाएगे और तव आप एक और नया अनुभव कर पाएगे और वह यह होगा कि क्रोध मन मे दौडता, शान्ति शरीर मे दौड सकती है। और जव आप इन दोनो मे समर्थ हो जाते हैं तो आप तीसरे हो जाते हैं—न तो आप क्रोध में रह जाते, न आप मन रह जाते और न आप शरीर रह जाते। क्योकि मन क्रोध मे है, वह क्रोध से जल रहा है। लेकिन शरीर पर आपने शान्ति की धारा वहा दी है, वह शान्त आकृति से भर गया है। निश्चित ही आप दोनो से अलग और पृथक् हो गए। न तो अव आप अपने को आइडेंटिफाई कर सकते हैं क्रोध से, और न शान्ति से। दोनो तादात्म्य नही कर सकते। आप दोनो को देखने वाले हो गए।

और जिस दिन आप दो पैदा कर लेते है एक साथ, उस दिन आपको पहली दफा एक मुक्ति अनुभव होती है। आप दोनो के वाहर हो जाते है। एक के साथ तादात्म्य आसान है, दो के साथ तादात्म्य आसान नही है। एक के साथ जुड जाना आसान है, दो विपरीत चीजो के साथ एक साथ जुड जाना वहुत कठिन है, असम्भव है। हा, अलग-अलग समय मे हो सकता है कि सुवह आप क्रोध के साथ जुडें, दोपहर आप शान्ति के साथ जुडें, यह हो सकता है, अलग-अलग समय मे। लेकिन साइमल्टेनियसली आप क्रोध और शान्ति के साथ जुड नही सकते। वडी मुश्किल होगी। कैसे जुडेगे ? जोड मुश्किल हो जाएगा।

मुल्ला नसरुद्दीन मर रहा है। आखिरी क्षण उसके करीव हैं। वह अपने वेटे को वुलाकर सलाह देता है। वह कहता है—मैं जानता हू कि मैं कितना ही कहू कि तू धूम्रपान मत करना, लेकिन तू करेगा क्योकि मेरे पिता ने भी मुझसे कहा था, लेकिन मैंने किया। इसलिए यह सलाह मैं तुझे नही दूगा। मैं जानता हू कि समझाना चाहता हू तुझे, अनुभव से कहना चाहता हू कि शराव मत छूना। लेकिन

होते है तो अकारण शरीर मे गति होती है। अशान्त आदमी कुर्सी पर बैठा होगा तो पैर हिलाता होगा। कोई उससे पूछे कि क्या कर रहे हो? कुर्सी पर बैठकर चलने की कोशिश कर रहे हो? वह पैर हिलाता है। आदमी थोडी देर बैठा रहे तो करवटें बदलता रहता है, बैठे-बैठे।

क्या हो रहा है उसके भीतर? उसके भीतर चित्त इतना बेचैन है कि वह बेचैनी वह शरीर से रिलीज कर रहा है। अगर वह रिलीज न करे तो पागल हो जाएगा। वह रिलीज उसे करनी पडेगी। अगर वह शाम घण्टे पर जाकर खेल के मैदान पर दौड लेता है, खेल लेता है, घण्टे भर घूम आता है, फिर आता है तो ठीक, नही तो वह बैठे-बैठे, लेटे-लेटे अपने शरीर को गति देगा और वहा से शक्ति को मुक्त करेगा।

लेकिन यह शक्ति व्यर्थ व्यय हो रही है। सलीनता शक्ति संग्रह है, शक्ति संचयन है। और हम कोई सलीनता मे नही जीते तो अपनी शक्ति को ऐसे ही लुटाए चले जाते हैं। ऐसे ही, व्यर्थ ही, जिसका कोई परिणाम नही होने वाला है, जिससे कुछ उपलब्ध होने वाला नही है, जिससे कही पहुचेगे नही। कुर्सी पर बैठकर पैर हिलाते रहते है। कोई मंजिल इससे हल नही होती। उतनी शक्ति से कही पहुचा जा सकता था, कुछ पाया जा सकता था। चौबीस घण्टे हम शक्ति को अपने अंगो से बाहर फेंक रहे है। लेकिन इसका अध्ययन करना पहले, व्यय को पहचानना पडेगा और बहुत हैरान होंगे, आपकी जिन्दगी की किताब जब आपके सामने खुलनी शुरू होगी तो आप हैरान होंगे कि कोई रहस्यपूर्ण से रहस्यपूर्ण उपन्यास इतना रहस्यपूर्ण नही और अनूठे से अनूठी कथा इतनी स्ट्रेंज, इतनी अजनबी नही, जितने आप है।

और ऐसा ही नही है कि क्रोध और अक्रोध मे आप अलग स्थिति पाएंगे। आप पाएंगे कि क्रोध के भी स्टेप्स है। क्रोध के भी बहुत रंग है। कभी आप एक ढंग से क्रोधित होते है, कभी दूसरे ढंग से क्रोधित होते है, कभी तीसरे ढंग से क्रोधित होते है। और तब तीनो ढंग के क्रोध मे आपके शरीर की आकृति अलग-अलग होती है। और जब पर्त-पर्त अपने को आप देखेंगे तो चकित हो जाएंगे कि कितना आपके भीतर छिपा है। यह पहला प्रयोग है—निरीक्षण। इससे आप पहचान पाएंगे कि आपके भीतर क्या हो रहा है? आप जो शक्ति के पुंज है, उस शक्ति का आप क्या उपयोग कर रहे है?

दूसरी बात—जैसे ही आप समर्थ हो जाएं कि आप क्रोध को देख पाएं, तो आप आईने के सामने पाएंगे कि अपने-आप भी क्रोध शांत होगा, और एक दूसरा प्रयोग जोड़ें, वह सलीनता का दूसरा प्रयोग है। जब किसी क्रोध से भरा हो, तब आप आईने के सामने खड़े हो जाएं। निरीक्षण इसके बाद ही शुरू किया जा सकता है। क्योंकि निरीक्षण के बाद ही यह हो सकेगा। आईने के सामने खड़े हो

वहुत प्रभावित हुआ। पत्नी भी वहुत प्रभावित हुई है। वह जो नायक है उस नाटक मे वह इतना प्रेम प्रगट कर रहा है अपनी प्रेयसी के लिए कि पत्नी ने नसरूद्दीन से कहा कि नसरूद्दीन, इतना प्रेम तुम मेरे प्रति कभी प्रगट नही करते। नसरूद्दीन ने कहा कि मैं भी हैरान हू। और हैरान इसलिए हू कि वह जो जिसके प्रति प्रेम प्रगट कर रहा है, वस्तुत उसकी पत्नी है वीस साल से। इतना प्रेम प्रगट किसी और के लिए कर रहा होता तो भी ठीक था। वह उसकी पत्नी है बीस साल से। चकित तो मैं भी हू। ही इज ए रियल एक्टर, वास्तविक, प्रामाणिक अभिनेता है क्योकि पत्नी के प्रति—वीस साल से जो उसकी पत्नी है, उसके प्रति वह इतना प्रेम प्रगट कर रहा है! गजब का एक्टर है।

हमारा चित्त · लेकिन अभ्यास से सम्भव है। शरीर कुछ और प्रगट करने लगता है, मन कुछ और। तव दो धाराए टूट जाती है। और ध्यान रहे राजनीति का ही नियम नही है, डिवाइड एड रूल, साधना का भी नियम है। विभाजित करो और मालिक हो जाओ। अगर आप शरीर और मन को विभाजित कर सकते है तो आप मालिक हो सकते है आसानी से। क्योकि तव सघर्ष शरीर और मन के बीच खडा हो जाता है और आप अछूते अलग खडे हो जाते है।

इसलिए सलीनता का दूसरा अभ्यास है, मन मे कुछ, शरीर मे कुछ को आईने के सामने खडे होकर अभ्यास करे। आईने के सामने इसलिए कह रहा हू कि आपको आसानी पडेगी। एक दफा आसानी हो जाए, फिर तो विना आईने के भी आप अनुभव कर सकते है। जव आपको क्रोध आए—फिर धीरे-धीरे आईने को छोड दें—जव आपको क्रोध आए तव उसको अवसर वनाए, मेक इट ए अपरचुनिटी। और जव क्रोध आए तव आनद को प्रगट करें। और जव घृणा आए तव प्रेम को प्रगट करें। और जव किसी का सिर तोड देने का मन हो, तव उसके गले मे फूलमाला डाल दें। और देखें अपने भीतर, ये दो धाराए विभाजित—मन को और शरीर को दो हिस्सो मे जाने दें, और आप अचानक ट्रासडेंस मे, अतिक्रमण मे प्रवेश कर जाएगे, आप पार हो जाएगे। न आप क्रोध रह जाएगे, न आप क्षमा रह जाएगे। न आप प्रेम रह जाएगे न आप घृणा रह जाएगे। और जैसे ही कोई दोनो के पार होता है, सलीन हो जाता है।

अव इस सलीन का अर्थ समझ लें—एक शव्द हम सुनते है तल्लीन। यह सलीन शव्द वहुत कम प्रयोग मे आता है। तल्लीनता हमने सुना है, सलीनता वहुत कम। और अगर भाषा कोश मे जाएगे तो एक ही अर्थ पाएगे। नही एक ही अर्थ नही है। महावीर ने तल्लीनता का उपयोग नही किया है। तल्लीनता सदा दूसरे मे लीन होना है और सलीनता अपने मे लीन होना है। तल्लीन का अर्थ है जो किसी और मे लीन है—चाहे भक्त भगवान मे हो, वह तल्लीन है, सलीन नही। जैसा मीरा कृष्ण मे—वह तल्लीन है। वह इतनी मिट गयी है कि

मेरे पिता ने ही मुझे समझाया था, लेकिन मैने शराव पी। और मैं जानता हू कि तू कितना ही कहे कि नही, नही पिऊगा, तू पिएगा। मैं कितना कहू कि स्त्रियो के पीछे मत दौडना, मत भागना, लेकिन यह नही हो सकता। मैं खुद ही भागता रहा हू। लेकिन एक वात ख्याल रखना, एक स्त्री के पीछे एक ही समय मे भागना, दो स्त्रियो के पीछे एक साथ मत भागना। इतनी तू मेरी सलाह मानना। वन एट ए टाइम, एक स्त्री के पीछे एक ही समय मे भागना। एक ही समय मे दो स्त्रियो के पीछे मत भागना।

लडके ने पूछा—क्या यह सम्भव हो सकता है, एक ही समय मे दो स्त्रियो के पीछे भागना ?

नसरूद्दीन ने कहा—सम्भव हो सकता है, मै अनुभव से कहता हू। लेकिन नर्क निर्मित हो जाता हे। ऐसे तो एक ही स्त्री नर्क निर्मित करने मे समर्थ है। इसको उल्टा कर पुरुष भी कहा जा सकता, स्त्री को सलाह दी जा रही है, तो इससे कोई फर्क नही पडता। लेकिन दो, फिर तो नर्क सुनिश्चित है।

लेकिन उसके वेटे ने कहा—आप कहते है तो मेरा मन होता है कि दो के पीछे दौडकर देख लू।

नसरूद्दीन ने कहा—यह भी मैं जानता हू, यह भी तू सुनेगा नही क्योकि मैने भी नही सुना था। अच्छा है, दौड।

उसका वेटा पूछने लगा—आप अभी मना करते थे, अव कहते है दौड!

तो नसरूद्दीन ने कहा—दो स्त्रियो के पीछे एक ही समय मे दौडने से जितनी आसानी से स्त्रियो से मुक्ति मिल जाती है, उतनी एक-एक के पीछे अलग-अलग दौडने से नही मिलती।

चित्त मे भी अगर दो वृत्तियो के पीछे एक साथ आप दौड पैदा कर दे तो आप चित्त की वृत्ति से जितनी आसानी से मुक्त हो जाते है उतनी एक वृत्ति के साथ नही हो पाते। एक वृत्ति पूरा ही घेर लेती है। दो वृत्तिया कम्पटीटिव हो जाती है आपस मे। आप पर उनका जोर कम हो जाता है क्योकि उनका आपस का सघर्ष गहन हो जाता है। क्रोध कहता है कि मैं पूरे पर हावी हो जाऊ, शान्ति कहती है—मैं पूरे पर हावी हो जाऊ, और आपने दोनो एक साथ पैदा कर दिए। वह दोनो आप पर हावी होने की कोशिश छोडकर एक दूसरे से सघर्ष मे रत हो जाती हैं। और जव क्रोध और शाति आपस मे लड रहे हो, तव आपको दूर खड़े होकर देखना वहुत आसान हो जाता है।

सलीनता का दूसरा अभ्यास है, विपरीत वृत्ति को शरीर पर पैदा करना। इसमे कोई कठिनाई नही है। अभिनेता इसे रोज कर रहा है। जिस स्त्री से उसे प्रेम नही है, उसको भी वह प्रेम प्रगट कर रहा है।

नसरूद्दीन देखने गया एक दिन नाटक। उसकी पत्नी उसके पास है। नसरूद्दीन

मसल्स तो गति के प्रतीक होते हैं, क्रिया के प्रतीक होते है । तो महावीर की वाहे ऐसी है जैसे स्त्रेण है । आपने ख्याल नही किया होगा । किसी जैन तीर्थंकर की वाहो पर कोई मसल्स नही है । मसल तो क्रिया की सूचक हो जाते हैं । शरीर को जिस ढग से विठाया है, वह ऐसा है जैसे कि फूल अपने मे वद हो जाए, सव पखुडिया वद हो गयी । फूल की सुगन्ध अव वाहर नही जाती, अपने भीतर रमती है । इसलिए महावीर का वहुत प्यारा शब्द है—आत्म-रमण—अपने मे ही रमना । कही नही जाना, कही नही जाना । सव पखुडिया वद है ।

तो अगर महावीर के चित्र को देखे, एक फूल की तरह ख्याल करे तो फौरन महावीर की प्रतिमा मे दिखाई पडेगा कि सव पखुडियां बद हो गयी है । महावीर अपने भीतर, जैसे फूल के भीतर कोई भवरा वद हो गया हो । ऐसी महावीर की सारी चेतना सलीन हो गयी है अपने मे । सब सुगन्ध भीतर । अव कही कोई वाहर नही जा रहा है । कुछ वाहर नही जा रहा है । वाहर और भीतर के वीच सव लेन-देन वद हो गया है । कोई हस्तातरण नही होता है । न कुछ वाहर से भीतर आता है, न कुछ भीतर से वाहर जाता है । जव शरीर इतनी थिरता मे आ जाता है, मन इतनी थिरता मे आ जाता है तो श्वास भी वाहर-भीतर नही होती, ठहर जाती है—श्वास भी । इस क्षण को महावीर कहते है—समाधि उत्पन्न होती है, इस सलीन क्षण मे अतर्यात्रा शुरू होती है ।

लेकिन सलीनता का अभ्यास करना पडे । हमारा अभ्यास है वाहर जाने का । भीतर जाने का हमारा कोई अभ्यास नही है । हम वाहर जाने मे इतने ज्यादा कुशल हैं कि हमे पता ही नही चलता और हम वाहर चले जाते है । कुशलता का मतलव ही यही होता है कि पता न चले और काम हो जाए । हम इतने कुशल हैं वाहर जाने मे । अब एक ड्राइवर है । अगर वह कुशल है तो वह गपशप करता रहेगा और गाडी चलाता रहेगा । कुशलता का मतलव ही यही है कि गाडी चलाने पर ध्यान भी न देना पडे । अगर ध्यान देना पडे तो वह अकुशल है । रेडियो सुनता रहेगा, गाडी चलाता रहेगा । मन मे हजार वातें सोचता रहेगा, गाडी चलाता रहेगा । गाडी चलाना सचेतन क्रिया नही है ।

कॉलिन विल्सन ने—एक पश्चिम के वहुत योग्य और विचारशील व्यक्ति ने कहा है कि हम उन्ही चीजो मे कुशल होते हैं. और जव कुशल हो जाते हैं तव . हमारे भीतर एक रोवोट, हमारे भीतर एक यत्र-मानव है—सवके भीतर हैं । कुशलता का अर्थ है कि हमारी चेतना ने वह काम यत्र-मानव को दे दिया, हमारे भीतर वह जो रोवोट है, वह करने लगता है, फिर हमे जरूरत नही रहती । तो ड्राइवर जव ठीक कुशल हो जाता है तो उसे कार चलानी नही पडती, उसके भीतर जो रोवोट, जो यत्र-मानव है वह कार चलाने लगता है । वह तो कभी-कभी वीच मे आता है, जव कोई खतरा आ जाता है और रोवोट कुछ नही कर पाता है ।

शून्य हो गयी है, कृष्ण ही रह गए। पर कोई और, कोई दूसरा विन्दु, उस पर स्वय को सब भाति समर्पित कर दे। वह एक मार्ग है, उस मार्ग के अपनी विधिया है। महावीर का वह मार्ग नही है। उस मार्ग से भी पहुंचा जाता है। उससे पहुंचने का रास्ता अलग है। महावीर का वह रास्ता नही है। महावीर कहते है—तल्लीन तो विल्कुल मत होना, किसी मे तल्लीन मत होना, इसलिए महावीर परमात्मा को भी हटा देते है, नही तो तल्लीन होने की सुविधा बनी रहेगी।

महावीर कहते है—सलीन हो जाना, अपने मे लीन हो जाना। अपने मे इतना लीन हो जाना कि दूसरा बचे ही नही। तल्लीन का सूत्र है—दूसरे मे इतना लीन हो जाना कि स्वय बचो ही न। सलीन होने का सूत्र है—इतने अपने मे लीन हो जाना कि दूसरा बचे ही न। दोनो से ही एक की उपलब्धि होती है। एक ही बच रहता है। तल्लीन वाला कहेगा—परमात्मा बच रहता है; सलीन वाला कहेगा—आत्मा बच रहती है। वह सिर्फ शब्दो के भेद है और विवाद सिर्फ शाब्दिक और व्यर्थ और पडितो का है। जिन्हे अनुभूति है वे कहेगे वह एक ही बच रहता है। लेकिन सलीन वाला उसे परमात्मा नाम नही दे सकता, क्योकि दूसरे का उपाय नही है। तल्लीनता वाला उसे आत्मा नही कह सकता, क्योकि स्वय के बचने का कोई उपाय नही। लेकिन जो बच रहता है, उसे कोई नाम देना पडेगा, अन्यथा अभिव्यक्ति असम्भव है। इसलिए सलीन वाला कहता है—आत्मा बच रहती है, तल्लीन वाला कहता है—परमात्मा बच रहता है। जो बच रहता है, वह एक ही है। यह नामो का फर्क है और विधियो के कारण नामो का फर्क है। यह पहुचने के मार्ग की वजह से नाम का फर्क है।

सलीन का अर्थ है—अपने मे लीन हो जाना। कोई अपने मे है पूरा, जरा भी वाहर नही जाता है। कही कोई गति नही रही। क्योकि गति तो दूसरे तक जाने के लिऐ होती है। अगति हो जाएगी। अपने तक आने के लिए किसी गति की कोई जरूरत नही है। वहा तो हम है ही। क्रिया नही रही, अक्रिया हो गयी क्योकि क्रिया तो किसी और के साथ कुछ करना हो तो करनी होती है। अपने ही साथ करने के लिए कोई क्रिया नही रह जाती। अक्रिया हो जाएगी, अगति हो जाएगी, अचलता आ जाएगी। और जब भीतर यह घटना घटती है तो शरीर पर भी यह भाव फैल जाता है, मन पर भी यह भाव फैल जाता हे। यह अतिक्रमण जव होता है, मन और शरीर के पार जब स्वय की प्रतीति होती है तो सब ठहर जाता है। सब ठहर जाता है—मन ठहर जाता है, शरीर ठहर जाता है। यह महावीर की प्रतिमा सलीनता की प्रतिमा है, सब ठहरा हुआ है। कुछ गति नही मालूम पडती।

अगर महावीर के हाथ को देखे तो ऐसा लगता है कि बिल्कुल ठहरा हुआ है। इसलिए महावीर के हाथ मे मसल्स नही बनाए गए किसी प्रतिमा मे, क्योकि

जिन्दगी भर कोई पिचहत्तर प्रतिशत हमारा पीछा करता है । उससे छुटकारा नही है । वह हमारी पहली पर्त वन जाता है ।

इसलिए अगर सत्तर साल का बूढा भी क्रोध मे आ जाए तो वह सात साल के वच्चे जैसा व्यवहार करने लगता है क्योकि रोवोट रिग्रेस कर जाता है । इस लिए क्रोध मे आप वचकाना व्यवहार करते हैं । प्रेम मे भी करते हैं, वह भी ध्यान रखना । जव कोई आदमी एक दूसरे के प्रति प्रेम से भर जाते हैं तो वहुत वचकाना व्यवहार करते है । उनकी वातचीत भी वचकानी हो जाती है । एक दूसरे के नाम भी वचकाने रखते हैं । प्रेमी एक दूसरे के नाम वचकाने रखते है । रिग्रेस हो गया । क्योकि प्रेम का जो पहला अनुभव है वह सात साल मे सीख लिया गया । अव उसकी पुनरुक्ति होगी । यह जो मैं कह रहा हू कि हमारा वाहर जाने का व्यवहार इतना प्राचीन है—जन्मो-जन्मो का है कि हमे पता ही नही चलता कि हम वाहर जा रहे है, और हम वाहर चले जाते है । आप अकेले वैठे है, कोई अखवार खीचकर उठा लेते हैं । आपको पता नही चलता, आपका रोवोट आपका यन्त्र मानव कह रहा है—खाली कैसे वैठ सकते हैं, अखवार खीचो । उस अखवार को आप सात दफा पढ चुके हैं सुवह से, फिर आठवी दफे पढ रहे हैं, इसका विना ख्याल किए अव आप क्या पढ रहे हैं ! वह रोवोट भीतर नही ले जाता, वह तत्काल वाहर ले जाता है । रेडियो खोलो, वातचीत करो, कही भी वाहर जाओ, किसी दूसरे से सम्वन्धित होओ । क्योकि रोवोट को एक ही वात पता है—दूसरे से सम्वन्धित होना, उसको अपने से सम्वन्धित होना पता ही नही । तो इसका जरा ध्यान रखना पडे, क्योकि अति ध्यान रखे तो ही इसके वाहर हो सकेंगे ।

और रोवोट ट्रेनिंग से चलता है, उसका प्रशिक्षण हे । आपको पता नही कि आप अपने रोवोट से कितना काम ले सकते है । आपने अगर जैन मुनियो का अवधान करते देखा है तो आप समझते होगे, यह वहुत वडी प्रतिभा की वात है सिर्फ रोबोट की ट्रेनिंग है । आप कर सकते हैं—छोटी-सी ट्रेनिंग । रोवोट से आप कितने ही काम ले सकते है, सिर्फ एक दफा उसे सिखा दे । हम केवल एक ट्रैक पर काम करते है । आप टेप रेकार्डर को जानते है । टेप रेकार्डर एक ट्रैक का भी हो सकता है, दो ट्रैक का भी हो सकता है, चार ट्रैक का भी हो सकता है । आपके पास चार ट्रैक का टेप रेकार्डर हो जो एक ही पट्टी पर चार ट्रैक पर रिकार्ड करता है, और आपको पता न हो, आप एक पर ही करते रहे, तो आप जिन्दगी भर एक पर ही करते रहेगे, वाकी तीन ट्रैक खाली पडे रहेगे । आपके मन के रोवोट के हजारो ट्रैक हैं । आप एक ही साथ हजारो ट्रैक पर काम कर सकते है । इसका थोडा प्रयोग मे आपको ख्याल दिला दू, तो आपको वहुत आसानी हो जाएगी ।

थोड़े दिन एक छोटा-सा अभ्यास करके देखें । घडी रख ले अपने हाथ की खोल

एक्सीडेंट का वक्त आया तो वह एकदम मौजूद हो जाता है। रोबोट से काम अपने हाथ मे ले लेता है। वह जो भीतर यत्नवत हमारा मन है उससे काम झटके से हाथ मे लेना पडता है। जब एक्सीडेंट का मौका आ जाए, कोई गड्ढे मे गिरने का वक्त आ जाए, अन्यथा वह रोबोट चलाए रखता है। मनोवैज्ञानिको ने हजारो परीक्षण से तय किया है कि सभी ड्राइवर रात को अगर बहुत देर तक जागकर गाडी चलाते रहे हो, तो नीद भी ले लेते है क्षण दो क्षण को, और गाडी चलाते रहते है। नीद भी ले लेते है। इसलिए रात को जो एक्सीडेंट होते है, कोई दो बजे और चार बजे के बीच होते है। ड्राइवर को पता भी नही चलता कि उसने झपकी ले ली। एक सेकेंड को वह डूब जाता है लेकिन उतनी देर को रोबोट काम को सम्भालता है। वह जो यत्नवत हमारा चित्त है, वह काम को सम्भालता है।

जितनी रोबोट के भीतर प्रवेश कर जाए कोई चीज, उतनी कुशल हो जाती है। और हम जन्मो-जन्मो से बाहर जाने के आदी है। वह हमारे यत्न मे समाविष्ट हो गयी है। बाहर जाना हमे ऐसा ही है जैसे पानी का नीचे बहना। उसके लिए हमे कुछ करना नही पडता। भीतर आना बडी यात्रा मालूम पडेगी। क्योकि हमारे यत्र मानव को कोई पता ही नही है कि भीतर कैसे आना है। हम इतने कुशल है बाहर जाने मे कि हम बाहर ही खडे है। हम भूल ही गए है कि भीतर आने की भी कोई बात हो सकती है। रोबोट की पर्ते है, इस यत्र मानव की पर्ते है।

आबरी मैनन ने.. एक भारतीय बाप और आग्ल मा का बेटा है आबरी मैनन। उसका पिता सारी जिन्दगी इगलैड मे रहा। कोई बीस वर्ष की उम्र का था तब इगलैड चला गया। वही शादी की, वही बच्चा पैदा हुआ। लेकिन आबरी मैनन ने लिखा है कि मेरी मा सदा मेरे पिता की इस आदत से परेशान रही—वह दिन भर अग्रेजी बोलता था, लेकिन रात सपने मे मलयालम—वह रात सपने मे अपनी मातृभाषा ही बोलता था। साठ साल का हो गया है, तब भी। चालीस साल निरन्तर होश मे अग्रेजी बोलने पर भी, रात सपना तो वह अपनी मातृभाषा मे ही देखता था। जैसे कि स्वभावतः स्त्रिया परेशान होती है क्योकि वह पति सपने मे भी क्या सोचता है, इसका भी पता लगाना चाहती है। तो आबरी मैनन ने लिखा है कि मेरी मा सदा चिंतित थी कि पता नही क्या सपने मे बोलता है। कही किसी दूसरी स्त्री का नाम तो नही लेता मलयालम मे ? कही किसी दूसरी स्त्री मे उत्सुकता तो नही दिखलाता ? लेकिन इसका कोई उपाय नही था।

सच यह है कि बचपन मे हम जो भाषा सीख लेते है, फिर दूसरी भाषा उतनी गहरी रोबोट मे कभी नहीं पहुच पाती—कभी नही पहुच पाती। क्योकि उसकी पहली पर्त बन जाती है। दूसरी भाषा अब कितनी ही गहरी जाए, उसकी पर्त दूसरी ही होगी, पहली नही हो सकती। उसका कोई उपाय नही है। इस-लिए मनसविद् कहते है कि हम सात साल मे जो सीख लेते है, वह हमारी

आपका यन्त्र-मानव कहता है—कैसे अपने मे सन्नीन वैठे हो ? अखवार पढो ! यह हाथ विल्कुल नीद मे जाता है, अखवार उठाता है, ये आखें नीद मे पढना शुरू कर देती हैं। यह मन नीद मे ग्रहण करना शुरू कर देता है। कचरा आप डाल रहे हैं। न डालते तो कुछ हर्ज न था, फायदा हो सकता था। क्योकि कचरे के डालने मे भी शक्ति व्यय होगी। कचरे को सम्भालने मे भी शक्ति व्यय होगी। कचरे को भरने मे भी मन का रिक्त स्थान भरेगा और व्यर्थ भर जाएगा। यह वैसे ही है जैसे कोई आदमी सडक पर कचरा उठाकर घर मे ला रहा हो। वह कहे—कुछ तो करेगे, विना किए कैसे रह सकते है। पर घर मे लाए गए कचरे को वाहर फेंक देने मे वहुत कठिनाई नही है, मन मे लाए गए कचरे को फिर वाहर फेंकने मे वहुत कठिनाई है।

इसलिए पहला ध्यान तो पहला पहरा यही रखना पडेगा कि मन जव वाहर जाए तो आप सचेत हो जाए, और होशपूर्वक वाहर जाए। अगर अखवार पढना है तो जानकर कि मेरा यन्त्र अखवार पढना चाहता है। मैं अखवार पढता हू, अव मैं अखवार पढूगा। अखवार पढें होशपूर्वक। तव आप पाएगे कि अखवार पढने मे कोई रस नही आ रहा है, क्योकि रस सिर्फ वेहोशी मे आता है। यह वहुत मजा है कि व्यर्थ की चीज मे रस सिर्फ वेहोशी मे आता है, होश मे नही आता। आप किसी भी व्यर्थ की चीज मे होशपूर्वक रस नही ले सकते हैं। वेहोशी मे ले सकते है। इसलिए जिन लोगो को रस लेने का पागलपन सवार हो जाता है वे नशा करने लगते है क्योकि नशे मे रस ज्यादा लिया जा सकता है। नही तो रस नही लिया जा सकता।

होशपूर्वक, यन्त्र-मानव को वाहर जाने की जो चेष्टा है उसे होशपूर्वक देखते रहे और होशपूर्वक ही काम करे। अगर यन्त्र-मानव कहता है कि क्या अकेले बैठे है, चलें मित्र के घर, तो उससे कहे कि ठीक है, चलते है—होशपूर्वक चलते हैं। तेरी माग है, हम देखते हुए चलते है। सम्भावना यह है कि आप वीच रास्ते से घर वापस लौट आए। क्योकि कहे कि क्या—क्योकि वडा मजा यह है उस मित्र के पास रोज वैठकर वोर होते है और कुछ नही होता है। वह वही वातें फिर से कहता है कि मौसम कैसा है, कि स्वास्थ्य कैसा है ! दो तीन मिनट मे वातें चुक जाती हैं। फिर वह वे ही कहानिया सुनाता है जो वहुत वार सुना चुका। फिर वह वे ही घटनाए वताता है जो वहुत वार वता चुका है, और आप सिर्फ वोर होते है। रोज यही ख्याल लेकर लौटते हैं कि इस आदमी ने वुरी तरह उवा दिया। लेकिन कल रोवोट कहता है कि मित्र के घर चलो और आपको ख्याल नही आता कि आप फिर वोर होने चले। अपनी वोर्डम खुद ही खोजते है। अगर आप होशपूर्वक जाएगे तो रास्ते मे आपको स्मरण आ जाएगा कि आप कहा जा रहे हैं, क्यो जा रहे हैं, क्या मिलेगा ? पैर शिथिल पड जाएगे। सम्भावना यह

के सामने। उसका जो सेकेंड का काटा है, उस पर ध्यान रखे। बाकी पूरी घडी को भूल जाए, सिर्फ सेकेंड के काटे को घूमते हुए देखे। वह एक मिनट मे, या साठ सेकेंड मे एक चक्कर पूरा करेगा। एक मिनट का अभ्यास करें, कोई तीन सप्ताह मे अभ्यास आपका हो जाएगा कि आपको घडी के और काटे ख्याल मे नही आएगे, और आकडे ख्याल मे नही आएगे, अक ख्याल मे नही आएगे। डायल धीरे-धीरे भूल जाएगा, सिर्फ वह सेकेंड का भागता हुआ काटा आपको याद रह जाएगा। जिस दिन आपको ऐसा अनुभव हो कि अव मैं एक मिनट सेकेंड के काटे पर ध्यान रख सकता हू, आपने वडी कुशलता पायी जिसकी आपको कल्पना भी नही हो सकती।

अब आप दूसरा प्रयोग शुरू करें। ध्यान सेकेंड के काटे पर रखे और भीतर एक से लेकर साठ तक की गिनती बोले—ध्यान काटे पर रखें, और एक, दो, तीन चार से साठ या जितना हो सके, एक मिनट मे—सौ हो सके तो सौ। तीन सप्ताह मे आप कुशल हो जाएगे, दोनो काम एक साथ डबल ट्रैक पर शुरू हो जाएगा। ध्यान काटे पर भी रहेगा और ध्यान संख्या पर भी रहेगा। अव आप तीसरा काम शुरू करे। ध्यान काटे पर रखें, भीतर एक सौ तक गिनती बोलते रहे और कोई गीत की कडी गुनगुनाने लगे, भीतर।

तीन सप्ताह मे आप पाएगे, तीन ट्रैक पर काम शुरू हो गया। ध्यान काटे पर भी रहेगा, ध्यान आकडो पर भी रहेगा, ध्यान सख्या पर भी रहेगा, गीत की कडी पर भी रहेगा। जव आप जितने चाहे उतने ट्रैक पर धीरे-धीरे अभ्यास कर सकते हैं। आप सौ ट्रैक पर एक साथ अभ्यास कर सकते है। और सौ काम एक साथ चलते रहेगे। पर्त-पर्त। यही अवधान है। इसका अभ्यास कर लेने पर आप मदारी-गिरी कर सकते हैं। जैन साधु करते है, वह सिर्फ मदारीगिरी है। उसका कोई मूल्य नही है। लेकिन रोवोट को एक दफा आप सिखा दें तो रोवोट करने लगता है।

और एक खतरा यह है कि रोबेट जव करने लगता है तो सिखाना जितना आसान है, उतना आसान भुलाना नही है। सिखाना वहुत आसान है, ध्यान रखना। स्मरण वहुत आसान है, विस्मरण वहुत कठिन है। लेकिन असम्भव नही हैं। वाश आउट किया जा सकता है जैसा टेप पर किया जा सकता है। मिटाया जा सकता है। पर मिटाना वहुत कठिन हे। और उससे भी ज्यादा कठिन विपरीत का अभ्यास है। हमारे यन्त्र-चित्त का अभ्यास है वाहर जाने के लिए। तो पहले तो यह वाहर जाने का अभ्यास मिटाना पडता है, और फिर भीतर जाने का अभ्यास पैदा करना पड़ता है।

तो इसके लिए—और यह सलीनता मे जाने के लिए आवश्यक होगा कि जव भी आपका यन्त्र-मानव आपसे कहे—वाहर जाओ, आप अगर ध्यान रखेंगे तो आपको पता चलने लगेगा। कार मे आप बैठे है, विल्कुल सोये हुए आदमी की तरह, अखवार उठा लेते है और पढना शुरू कर देते है। आपको ख्याल नही,

नही।

मुल्ला नसरूद्दीन मरा तो उसने अपनी वसीयत लिखी—उसने वसीयत लिखवायी, वडी भीडभाड इकट्ठी थी, सारा गाव इकट्ठा हुआ, फिर उसने गाव के पचायत-प्रमुख से कहा—वसीयत लिखो। थोडे लोग चकित थे। ऐसा कुछ ज्यादा उसके पास दिखाई नही पडता था जिसके लिए वह इतना शोरगुल मचाए है। उसने वसीयत लिखवायी तो उसने लिखवाया कि आधा तो मेरे मरने के बाद मेरी सम्पत्ति मे से पत्नी को मिल जाए। फिर इतना हिस्सा मेरे लडके को मिल जाए, इतना हिस्सा मेरी लडकी को मिल जाए, इतना हिस्सा मेरे मित्र को मिल जाए, इतना हिस्सा मेरे नौकर को मिल जाए। वह सव उसने हिस्से लिखवा दिया। तो पच प्रमुख वार-वार कहता था कि ठहरो, वह पूछना चाहता था कि है कितना तुम्हारे पास? और आखिर मे उसने कहा कि सबको वाट देने के वाद जो वच जाए वह गाव की मस्जिद को दे दिया जाए।

तो पच-प्रमुख ने फिर पूछा कि मैं तुमसे वार-वार पूछ रहा हू कि तुम्हारे पास है कितना?

उसने कहा—है तो मेरे पास कुछ भी नही, लेकिन नियमानुसार वसीयत तो लिखानी चाहिए। नही तो लोग क्या कहेगे कि विना वसीयत लिखाए मर गए!

है कुछ भी नही। उस पर भी वह कह रहा है कि सवको वाटने के वाद जो वच जाए वह मस्जिद को दे दिया जाए। हम भी करीव-करीव दिवालिया मरते है। जहा तक अन्त सम्पत्ति का सम्वन्ध है, हम सव दिवालिया मरते हैं। नसरूद्दीन जैसे ही मरते है, वह व्यग्य हम पर भी है।

कुछ नही होता पास—कुछ भी नही होता। क्योकि सव मे व्यर्थ खोया होता है, और व्यर्थ भी ऐसा खोया होता है जैसे कि आपने वाथरूम का नल खुला छोड दिया हो और पानी वह रहा हो। इस तरह व्यर्थ होता है। आपके सव व्यक्तित्व के द्वार खुले हुए है वाहर की तरफ और शक्ति व्यर्थ खोती चली जाती है। डिस्टीपेट होती है। जो थोडी वहुत वचती है, उससे आप सिर्फ बेचैन होते है और उससे भी कुछ नही करते है, उसको बेचैनी मे नष्ट करते है, परेशानी मे नष्ट करते है।

महावीर ने पहले जो अग कहे वे शक्ति सरक्षण के है। यह जो छठवा अग कहा, यह सरक्षित शक्ति का अन्तर्प्रवाह है। जैसे कोई नदी अपने मूल-उद्‌गम की तरफ वापस लौटने लगे। मूल-स्रोत की तरफ शक्ति का आगमन शुरू हो। वाहर की तरफ नही, कुछ पाने के लिए नही, वहा हम चलें जहा हम है। जहा से हम आए हैं वहा हम चलें। जहा से हमारे यह जीवन का फैलाव हुआ है, वहा हम चलें। टु वी रूट, जडो की तरफ चलें। उस जगह पहुंच जाए जो हमारा

है कि आप वापस लौट आए।

इस तरह आपके यन्त्र चित्त की बाहर जाने की प्रत्येक क्रिया पर जागरूक पहरा रखें। एक-एक क्रिया छूटने लगेगी। फिर जो बहुत नेसेसरी है, जीवन के लिए अनिवार्य है, उतनी ही क्रियाए रह जाएगी। गैर अनिवार्य क्रियाए छूट जाएगी और तब आप पाएगे कि शरीर सलीन होने लगा। आप बैठेंगे ऐसे जैसे अपने मे ठहरे हुए है। जैसे कोई झील शात है, लहर भी नही उठती। एक रिपेल भी नही जैसे आकाश खाली, एक बदली भी नही भटकती। जैसे कभी देखा हो तो आकाश मे किसी चील को पखो को रोककर उडते हुए—सलीन। पख भी नही हिलता। चील सिर्फ अपने मे ठहरी हैं, तिरती, तैरती भी नही, तिरती है। जैसे देखा हो किसी बत्तख को कभी किसी झील मे, पख भी न मारते हुए। ठहरे हुए। ऐसा सब आपके शरीर मे भी ठहर जाएगा, मन मे भी। क्योकि जैसे शरीर बाहर जाता है ऐसे ही मन भी बाहर जाता है। जब शरीर बाहर नही जा सकता तो मन और ज्यादा बाहर जाता है। क्योकि पूर्ति करनी पडती है। अगर आप मित्र से नही मिल सकते तो फिर आख बन्द करके मित्र से मिलने लगते है, दिवा स्वप्न देखने लगते हैं कि मित्र मिल गया, बातचीत हो रही है। तो फिर धीरे-धीरे मन की भी बाहर जाने की आतरिक कोशिशें है उन पर भी सजग हो जाए। और जिस दिन शरीर और मन दोनो के प्रति सजगता होती है, वह जो रोबोट, यत्र है हमारे भीतर, वह बाहर जाने मे धीरे-धीरे रस खो देता है। तब भीतर जाया जा सकता है।

और भीतर जाने मे किस चीज मे रस लेना पडेगा? भीतर जाने मे उन चीजो मे रस लेना पडेगा जिनमे सलीनता स्वाभाविक है। जैसे कि शाति का भाव है तो सलीनता स्वाभाविक है। जैसे सारे जगत् के प्रति करुणा का भाव, उसमे सलीनता स्वाभाविक है। क्रोध बाहर ले जाता है, करुणा बाहर नही ले जाती। शत्रुता बाहर ले जाती है, मैत्री का भाव बाहर नही ले जाता। तो उन भावो मे ठहरने से भीतर यात्रा शुरू होती है। तब सलीनता सिर्फ द्वार है। इन सारी बातो का विचार हम अन्तर्तप की छ प्रक्रियाओ मे करेंगे। सलीनता तो उन छ के लिए द्वार है, पर सलीन हुए बिना उनमे कोई प्रवेश न हो सकेगा। ये सब इटीग्रेटेड है, ये सब सयुक्त है। हमारा मन करता है कि इसको छोड दें और उसको कर लें। ऐसा नही हो सकेगा। ये बारह अग आर्गनिक हैं। ये एक दूसरे से सयुक्त है। इनमे से एक भी छोडा तो दूसरा नही हो सकेगा। महावीर ने इसके पहले जो पाच अग कहे वे सब अग शक्ति सरक्षण के है, और छठवा अग सलीनता का है। जब शक्ति बचेगी तभी तो भीतर जा सकेगी! शक्ति बचेगी ही नही तो भीतर क्या जाएगा। हम करीब-करीब रिक्त और दिवालिए, बैंकरेप्ट है। बाहर ही शक्ति गवा देते है। भीतर जाने के लिए कोई शक्ति बचती ही नही। कुछ बचता ही

मृत्यु से भी यह अनुभव कठिन होगा क्योकि मृत्यु तो परवशता मे होती है। आप कुछ कर नही सकते, छूट रहे होते है सहारे। इसमे आप कुछ कर सकते है। आप जव चाहें, तव वाहर आ सकते है। यह तो इटेंशनल है, यह तो आपका सकल्प है भीतर जाने का। मृत्यु मे तो आपका सकल्प नही होता। मृत्यु मे कोई चुनाव नही होता। आप मारे जा रहे होते हैं। आप मर नही रहे होते। यह स्वेच्छा से मृत्यु का वरण है। यह अपने ही हाथ से मर कर देखना है। यह एक वार भय को छोडकर, भय के साक्षी होकर, जो हो रहा है, उसकी स्वीकृति को मानकर अगर आप डूव जाए तो आप मृत्यु के भय के सदा के लिए पार हो जाएगे। फिर मृत्यु भी आपको भयभीत नही करेगी। एक वार आपको अन्तर्मुखी ऊर्जा की यात्रा भी मैं हू, ऐसा अनुभव हो जाए तो फिर मृत्यु का कोई भय नही है। फिर आप जानते है—मृत्यु है ही नही। फिर मृत्यु है ही नही।

मृत्यु सिर्फ अन्तर्यात्रा की अपरिचय के कारण प्रतीत होती है। वहिर्यात्रा के साथ तादात्म्य, अन्तर्यात्रा के साथ कोई सम्वन्ध नहीं, इसलिए मृत्यु प्रतीत होती है। यह सम्वन्ध सलीनता से निर्मित हो जाता है। कहे, आप स्वेच्छा से मर कर देख लेते है और पाते है कि नहीं मरता। आप स्वेच्छा से मृत्यु मे प्रवेश कर जाते है और पाते है, मैं तो हू। मृत्यु घटित हो जाती है, सव वाह्य छूट जाता है। जो मृत्यु मे छूटेगा वह सव छूट जाता है। सव जगत् मिट जाता है, शरीर भूल जाता है, मन भूल जाता है फिर भी चैतन्य का दीया भीतर जलता रहता है।

सलीनता के इस प्रयोग को कोई ठीक से करे तो शरीर के वाहर एस्ट्रल प्रोजोक्शन या एस्ट्रल ट्रेवलिंग सरलता से हो जाती है। जव आपका शरीर भी मिट गया, मन भी मिट गया, सिर्फ आप ही रह गए, सिर्फ होना ही रह गया तव आप जरा-सा ख्याल करे, शरीर के वाहर तो आप शरीर के वाहर हो जाएगे। शरीर आपको सामने पडा हुआ दिखाई पडने लगेगा।

कभी-कभी अपने आप घट जाता है, वह भी मैं आपसे कह दू, क्योकि जो प्रयोग करें उनको अपने आप भी कभी घट जाता है। आपके विना ख्याल, अचानक आप पाते है आप शरीर के वाहर हो गए। तव वडी वेचैनी होगी। और लगता है डरकर वापस शरीर मे लौट सकेंगे कि नही लौट सकेंगे। आप अपने पूरे शरीर को पडा हुआ देख पाते है। पहली दफा आप अपने शरीर को पूरा देख पाते हैं। आईने मे तो प्रतिछवि दिखाई पडती हे, आप पहली दफा अपने पूरे शरीर को देख पाते है वाहर।

और एक वार जिसने वाहर से अपने शरीर को देख लिया, वह शरीर के भीतर होकर भी फिर कभी भीतर नही हो पाता है। वह फिर वाहर ही रह जाता है। फिर वह सदा वाहर ही होता है। फिर कोई उपाय ही नही है उसके भीतर होने का। भीतर हो जाए तो भी उसका वाहर होना वना रहता है। वह पृथक् ही वना

अन्तिम हिस्सा है। जिसके पीछे हम नही हैं—आखिरी और पीछे। क्योंकि वही हमारा राज है, रहस्य है, वही हम हैं। और उससे हम कितने ही बाहर जाए, हम चांद-तारों पर पहुंच जाएं, तो भी न पा सकेंगे। उसके लिए तो हमें भीतर ही जाना पडेगा। उसके लिए तो हमे सलीन ही होना पडेगा।

शक्ति बचे, शक्ति भीतर लौटे—पर इस शक्ति को भीतर लौटने के लिए आपको तीन प्रयोग करने पडें—अपनी शरीर की गतिविधियो को देखना पड़े, शरीर की गतिविधियो और मन की गतिविधियो को तोडना पडे, शरीर की गतिविधियो और मन की गतिविधियो के पार होना पडे। और तब आप अचानक पाएंगे कि आप सलीन होने शुरू हो गए। अपने मे डूबने लगे, अपने मे डूबने लगे, अपने मे उतरने लगे। अपने भीतर, और भीतर, और भीतर, और गहरे मे जाने लगे।

इसमे एक ही बात आखिरी आपसे कहू जो कि अभ्यास करेगा कोई, उसके काम की है। क्योंकि जैसे ही सलीनता शुरू होगी, बडा भय पकडता है, बहुत भय पकडता है। ऐसा लगता है जैसे सफोकेट हो रहे है हम, जैसे कोई गर्दन दबा रहा है, या पानी मे डूब रहे है। सलीन होने का जो भी प्रयोग करेगा वह बहुत भय से भर जाएगा। जैसे ही शक्ति भीतर जानी शुरू होगी, भय पकड़ेगा। क्योंकि यह अनुभव करीब-करीब वैसा ही होगा जैसा मृत्यु का होता है। मृत्यु मे भी शक्ति सलीन होती है। और कुछ नही होता। शरीर को छोडती है, मन को छोडती है, भीतर चलती है, उद्गम की तरफ, तब आप तडफडाते है कि अब मैं मरा। क्योंकि आप अपने को समझते थे वही जो बाहर जा रहा था। आपने कभी उसको तो जाना नही जो भीतर जा सकता है। उससे आपका कोई सम्बन्ध नही, कोई पहचान नही। आप तो अपना एक चेहरा जानते थे बहिर्गामी, अन्तर्गामी तो आपको कोई अनुभव नही था।

आप कहते है—मरा, क्योंकि वह सब बाहर जो जा रहा था, वह बाहर नही जा रहा, भीतर लौट रहा है। शरीर मे शक्ति डूब रही है भीतर, बाहर नही जा रही है। मन अब बाहर नही जा रहा है, भीतर डूब रहा है। अब सब भीतर सिकुड रहा है, सब भीतर सकुचित हो रहा है केन्द्र पर लौट रहा है। गगा अपने को पहचानती थी सागर की तरफ बहती हुई। उसने कभी जाना भी न था कि गगोत्री की तरफ बहना भी मैं ही हू। वह उसे पहचान नही है। वह उसका कोई रेकग्नीशन नही है। तो मृत्यु मे जो घबराहट पकडती है, वही घबराहट आपको सलीनता मे पकडेगी—वही घबराहट। मृत्यु का ही अनुभव होगा यह। मर रहे हैं। मन होगा कि दौडो बाहर। कोई भी सहारा पकडो और बाहर निकल आओ। अगर बाहर निकल आते है तो सलीन न हो पाएगे।

तो जब भय पकडे, तब भय के भी साक्षी बने रहना। देखते रहना कि डर है।

मुल्ला वडा उत्सुक हो गया, कुर्सी से आगे झुक पाया। उसने कहा कि डाक्टर ऐनी चास आफ माई कैंचिंग दैट डिजीज साइकोपैथी ? कोई मौका है कि मुझे वह बीमारी लग जाए ? जिसको आप साइकोपैथी कह रहे हैं ? मैं भी घर जाऊ और लट्ठ उठा कर सिर खोल दू उसका ? मन तो मेरा भी यही करता है। लेकिन उसके सामने जाकर मेरे सब मसूबे गडवड हो जाते है। और दिन की तो वात दूर, वर्षो से मैं एक दु स्वप्न एक नाइट मेयर देख रहा हू। वह मैं आपसे कह देना चाहता हू। कुछ इलाज है ?

मनोवैज्ञानिक ने कहा—कौन-सा दु स्वप्न ?

तो उसने कहा—मैं रात निरन्तर अपनी पत्नी को देखता हू, और उसके पीछे खडे एक वडे राक्षस को देखता हू।

मनोवैज्ञानिक उत्सुक हुआ। उसने कहा—इटरेस्टिंग। और जरा विस्तार से कहो।

तो नसरुद्दीन ने कहा कि लाल आखें, जिनसे लपटें निकल रही है, तीर वडे-वडे, लगता है कि छाती मे भोक दिए जाएगे। हाथो मे नाखून ऐसे हैं जैसे खजर हो। वडी घवराहट पैदा होती है।

मनोवैज्ञानिक ने कहा— घवराने वाला है, भयकर है।

नसरुद्दीन ने कहा—दिस इज नथिंग, वेट, टिल आई टैल यू अवाउट दी मान्सटर। जरा रुको, जब तक मैं राक्षस के सम्बन्ध मे न बताऊ तव तक कुछ मत कहो। यह तो मेरी पत्नी है। उसके पीछे जो राक्षस खडा रहता है अभी उसका तो मैंने वर्णन ही नही किया। उसने उसका भी वर्णन किया। उसके भयकर दात लगता है कि चपेट डालेंगे, पीस डालेंगे। उसका विशालकाय शरीर, उसके सामने विल्कुल कीडा-मकोडा हो जाता हू। और उसकी घिनौनी वात और उसके शरीर से झरती हुई घिनौनी चीजें और रस ऐसी घवराहट भर देते है कि दिन भर वह मेरा पीछा करता है।

मनोवैज्ञानिक ने कहा—वहुत भयकर, वहुत घवराने वाला।

नसरुद्दीन ने कहा कि वेट, टिल आई टैल यू दैट दि मान्सटर इज नो वन एल्स दैन मी। जरा रुको, वह राक्षस और कोई नही, और घवराने वाली वात यह है कि जव मैं गौर से देखता हू तो पाता हू, मैं ही हू।

और यह दु स्वप्न वर्षों से चल रहा है। जव चित आक्रमक है, तव तक दूसरे मे भी राक्षस दिखाई पडेगा। और अगर गौर से देखेंगे तो आक्रमक चित्त अपने को भी राक्षस ही पाएगा। और हम सव आक्रमक हैं। हम सव दु स्वप्न मे जीते हैं। हमारी जिन्दगी एक नाइट मेयर है, एक लम्वी सडाध है, एक लम्वा रक्त-पात से भरा हुआ नाटक, एक लम्वा नारकीय दृश्य।

मुल्ला मर कर जब स्वर्ग के द्वार पर पहुचा तो स्वर्ग के पहरेदार ने पूछा—

रहता है । फिर शरीर पर आए दुख उसके दुख नही हैं । फिर शरीर पर घटी हुई घटनाए उस पर घटी घटनाए नही है । फिर शरीर का जन्म उसका जन्म नही है, फिर शरीर की मृत्यु उसकी मृत्यु नही है । फिर शरीर का पूरा जगत् उसका जगत् नही है और हमारा सारा जगत् शरीर का जगत् है । इतिहास समाप्त हो गया उसके लिए, जीवन कथा समाप्त हो गई उसके लिए । अब तो एक शून्य मे ठहराव है, और समस्त आनन्द शून्य मे ठहरने का परिणाम है । समस्त मुक्ति शून्य मे उतर जाने की मुक्ति है । समस्त मोक्ष ।

लेकिन हम निरन्तर बाहर भाग रहे है । यह हमारा बाहर भागना आक्रमण है । महावीर ने शब्द बहुत अच्छा प्रयोग किया है—प्रतिक्रमण । प्रतिक्रमण का अर्थ है—भीतर लौटना, आक्रमण का अर्थ है—बाहर जाना । प्रतिक्रमण का अर्थ है—कमिंग बैक टु द होम, घर वापस लौटना । इसलिए महावीर अहिसा पर इतना आग्रह करते हैं क्योकि आक्रमण न घटे चित्त का, तो प्रतिक्रमण नही हो पाएगा । सलीनता फलित नही हो पाएगी । ये सब सूत्र सयुक्त है । यह मैं कह रहा हू इसलिए अलग-अलग कहने पड रहे है । जीवन मे जब यह घटना मे उतरने शुरू होते है तो ये सब सयुक्त हैं । अनाक्रमण—लेकिन हम सोचते है—जब हम किसी की छाती पर छुरा भोकते है तभी आक्रमण होता है । नही, जब हम दूसरे का विचार भी करते है तब भी आक्रमण हो जाता है । दूसरे का ख्याल भी दूसरे पर आक्रमण है । दूसरे का मेरे चित्त मे उपस्थित हो जाना भी आक्रमण है । आक्रमण का मतलब ही यह है कि मै दूसरे की तरफ बहा । छुरे के साथ गया दूसरे की तरफ, कि आलिंगन के साथ गया दूसरे की तरफ, कि सद्भाव से गया कि असद्भाव से गया । दूसरे की तरफ जाती हुई चेतना आक्रमक है । मैं दूसरे की तरफ जा रहा हू यही आक्रमण है । हम सब जाना चाहते हैं । जाना इसलिए चाहते है कि हमारा अपने पर तो कोई मालकियत नहीं है । किसी दूसरे पर मालकियत हो जाए तो थोडा मालकियत का सुख मिले । थोडा सही, कोई दूसरा मालिक होता है ।

मुल्ला नसरूद्दीन गया है एक मनोचिकित्सक के पास और उसने कहा कि मैं बडा परेशान हू—पत्नी से बहुत भयभीत हू । डरता हू, मेरे हाथ पैर कपते हैं । मुह मे मेरा थूक सूक जाता है जैसे ही मैं उसे देखता हू ।

मनोवैज्ञानिक ने कहा—यह कुछ ज्यादा चिन्ता की बात नही है । ज्यादा चिन्ता की बात तो इससे उल्टी बीमारी है । वह उल्टी बीमारी के लोग पत्नी को देखकर ही हमला करने को उत्सुक हो जाते हैं, सिर तोडने को उत्सुक हो जाते है, घसीटने को उत्सुक हो जाते है, मारने को उत्सुक हो जाते है, आक्रमक हो जाते है, वे ही असलोसाइकोपैथ हैं, साइकोपैथिक है । यह तो कुछ भी नही, यह तो ठीक है । इसमे कुछ घबराने की बात नही । यह तो अधिक लोगो के लिए यही है ।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ।।१।।

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिसा, सयम और तपरूप धर्म । जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते है।

कहा से आ रहे हो ? उसने कहा—मैं पृथ्वी से आ रहा हू। उस द्वारपाल ने कहा—वैसे तो नियम यही था कि तुम्हे नर्क भेजा जाए, लेकिन चूकि तुम पृथ्वी से आ रहे हो, नर्क तुम्हे काफी सुखद मालूम होगा। नर्क तुम्हे काफी सुखद मालूम होगा इसलिए कुछ दिन स्वर्ग मे रुक जाओ, फिर तुम्हे नर्क भेजेंगे ताकि नर्क तुम्हे दुखद मालूम हो सके। तो मुल्ला को कुछ दिनो के लिए स्वर्ग मे रोक लिया गया। क्योकि सब सुख-दुख रिलेटिव है। मुल्ला ने बहुत कहा कि मुझे सीधे जाने दो। उस द्वारपाल ने कहा—यह नही हो सकता, क्योकि नर्क तो अभी तुम्हे स्वर्ग मालूम होगा। तुम पृथ्वी से आ रहे हो सीधे। अभी कुछ दिन स्वर्ग मे रह लो। जरा सुख अनुभव हो जाए, फिर तुम्हे नर्क मे डालेगे। तव तुम्हे सताया जा सकेगा।

हम जिसे जिन्दगी कह रहे हे वह एक लम्बी नर्क यात्रा है। और वह नर्क यात्रा का कारण कुल इतना है कि हमारा चित्त आक्रमक है। पर-केद्रित चित्त आक्रमक होता है, स्व-केन्द्रित चित्त अनाक्रमक हो जाता है, प्रतिक्रमण को उपलब्ध हो जाता है। यह प्रतिक्रमण की यात्रा ही सलीनता मे डुवा देती है।

आज वाह्य तप पूरे हुए, कल से हम अतर्तप को समझने की कोशिश करेंगे। रुकें पाच मिनट।

है जिसके लिए कल पछताए थे। पश्चात्ताप आपके वीइंग, आपके अन्तरात्मा मे कोई अन्तर नही लाता, सिर्फ आपके कृत्यो मे कही भूल थी, और भूल भी इस-लिए मालूम पडती है कि उससे आप अपनी इमेज को, अपनी प्रतिमा को जो आपने समझ रखी है, वनाने मे असमर्थ हो जाते है।

मैं एक अच्छा आदमी हू, ऐसी मैं अपनी प्रतिमा वनाता हू। फिर इस अच्छे आदमी के मुह से एक गाली निकल जाती है, तो मेरे ही सामने मेरी प्रतिमा खडित होती है। मैं पछताना शुरू करता हू कि यह कैसे हुआ कि मैंने गाली दी। मैं कहना शुरू करता हू कि मेरे वावजूद ये हो गए है, इन्सपाइट आफ मी। यह मैं चाहता नही था और हो गया। ऐसा मैं कर नही सकता हू और हो गया—किसी परिस्थिति के दवाव मे, किसी क्षण के आवेश मे। ऐसा मैं हू नही कि जिससे गाली निकले, और गाली निकल गयी। मैं पछता लेता हू। गाली का जो क्षोभ था वह विदा हो जाता है। मैं अपनी जगह वापस लौट आता हू जहा मैं गाली के पहले था। पश्चात्ताप वही ला देता है वापस जहा मैं गाली के पहले था। लेकिन ध्यान रखें, जहा मैं गाली के पहले था, उसी मे से गाली निकली थी। मैं फिर उसी जगह वापस लौट आया। उससे फिर गाली निकलेगी।

पी० डी० आस्पेंस्की ने एक वहुत अद्भुत किताव लिखी है—दि स्ट्रेंज लाइफ आफ इवान ओसोकिन, इवान ओसोकिन का विचित्र जीवन। इवान ओसोकिन एक जादूगर फ़क़ीर के पास गया और इवान ओसोकिन ने कहा कि मैं आदमी तो अच्छा हू। मैंने अपने भीतर आज तक एक भी वुराई न पायी। लेकिन फिर भी मुझ से कुछ भूलें हो गयी है। वे भूलें अज्ञानवश हुई। नही जानता था कोई चीज, और भूल हो गयी। रास्ते पर जा रहा हू, गड्ढे मे गिर पडा क्योकि रास्ता अप-रिचित था। मैं गिरने वाला व्यक्ति नही हू। अज्ञान की भूल का मतलव यह होता है परिस्थिति अज्ञात थी। कोई घटना घट गयी, वह मैं घटाना नही चाहता था। कौन गड्ढे मे गिरना चाहता है? मैं गिरने वाला आदमी नही हू। गड्ढा था, अधेरा था, रास्ता अपरिचित था, या किसी ने धक्का दे दिया, मैं गिर गया। अगर मुझे दुवारा उसी रास्ते पर चलने का मौका मिले तो मैं तुम्हे वता सकता हू कि मैं उस रास्ते पर चलूगा और गड्ढे मे नही गिरूगा।

उस फकीर ने कहा कि एक मौका मैं तुम्हारी वारह वर्ष उम्र कम किए देता हू। अब तुम वारह वर्ष वाद आना। और उसने ओसोकिन की उम्र वारह वर्ष कम कर दी। वह एक जादूगर है, उसने उसकी उम्र वारह वर्ष कम कर दी। ओसोकिन उससे वायदा करके गया है कि तुम देखोगे कि वारह वर्ष वाद मैं दूसरा ही आदमी हू। यही मैं चाहता था कि मुझे एक अवसर और मिल जाए, इसलिए ताकि जो भूले मुझसे अज्ञान मे हो गयी है, वे दुवारा न हो।

वारह वर्ष वाद ओसोकिन रोता हुआ उस फ़क़ीर के पास आया और उसने

प्रायश्चित : पहला अंतर-तप

चौदहवा प्रवचन दिनाक ३१ अगस्त, १६७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

तप के छ. बाह्य अगो की हमने चर्चा की है, आज से अतर-तपो के सम्बन्ध मे बात करेंगे। महावीर ने पहला अतर-तप कहा है—प्रायश्चित। पहले तो हम समझ ले कि प्रायश्चित क्या नही है तो आसान होगा समझना कि प्रायश्चित क्या है। अब कठिनाई और भी बढ गयी है क्योकि प्रायश्चित जो नही है वही हम समझते रहे हैं कि प्रायश्चित है। शब्दकोषों मे खोजने जाएगे तो लिखा है कि प्रायश्चित का अर्थ है—पश्चात्ताप, रिपेंटेंस। प्रायश्चित का वह अर्थ नही है। पश्चात्ताप और प्रायश्चित मे इतना अन्तर है जितना जमीन और आसमान मे।

पश्चात्ताप का अर्थ है—जो आपने किया है उसके लिए पछतावा, लेकिन जो आप है उसके लिए पछतावा नही, जो आपने किया हे उसके लिए पछतावा। आपने चोरी की है तो आप पछता लेते है चोरी के लिए। आपने हिंसा की है तो आप पछता लेते हैं हिंसा के लिए। आपने बेईमानी की है तो पछता लेते है बेईमानी के लिए। आपके लिए नही, आप तो ठीक हैं। आप ठीक आदमी से एक छोटी-सी भूल हो गयी थी कर्म मे, उसे आपने पश्चात्ताप करके पोछ दिया।

इसलिए पश्चात्ताप अहकार को बचाने की प्रक्रिया हे। क्योकि अगर भूलें आपके पास बहुत इकट्ठी हो जाए तो आपके अहकार को चोट लगनी शुरू होगी—कि मैं बुरा आदमी हू, कि मैंने गाली दी। कि मैं बुरा आदमी हू, कि मैंने क्रोध किया। आप है बहुत अच्छे आदमी—गाली आप दे नही सकते हैं, किसी परि-स्थिति मे निकल गयी होगी। आप पछता लेते है और फिर से अच्छे आदमी हो जाते है। पश्चात्ताप आपको बदलता नही, जो आप हैं वही रखने की व्यवस्था है। इसलिए रोज आप पश्चात्ताप करेंगे और रोज आप पाएंगे कि आप वही कर रहे

वर्ष भी मागा था, उससे पहले भी क्षमा मागी। कल वह दिन आएगा जब कि क्षमा मागने का अवसर न रह जाए। कि मागते ही नही। और जानते हैं भली-भाति कि जहा से क्षमा मागी जा रही है वहा कोई रूपातरण नहीं है। वह आदमी वही है जो पिछले वर्ष था।

एक मित्र पिछले पूरे वर्ष से मेरे सम्बन्ध मे अनूठी कहानिया प्रचारित करते है। अब यह पर्युषण पूरे हुए तो उनका कल पत्र आया कि मुझे क्षमा कर दें। ऐसा नही कि मैंने जाने अनजाने अपराध किए हो, उनके लिए क्षमा कर दें—पत्र मे लिखा है मैंने अपराध किए है, उनके लिए क्षमा कर दे, और मै हृदय की गहराई से क्षमा मागता हू। लेकिन मैं जानता हू कि पत्र लिखने के बाद उन्होंने वही काम पुन जारी कर दिया होगा। क्योकि पत्र लिखने से वह रूपान्तरण नही हो जाने वाला हे। क्षमा माग लेने से आप नही बदल जाएगे, आप फिर वही होगे। सच तो यह है—जो क्षमा माग रहा है वही आदमी है जिसने अपराध किया है। प्राय-श्चित्त वाला तो हो सकता है क्षमा न भी मागे, क्योकि वह अनुभव करे, अब मैं वह आदमी ही नही हू कि जिसने अपराध किया था, अब मैं दूसरा आदमी हू। वह जाकर इतनी खबर दे दे कि वह आदमी जो तुम्हे गाली दे गया था, मर गया है। मैं दूसरा आदमी हू। अगर आपके मन को अच्छा लगे तो मै उसकी तरफ से आपसे क्षमा माग लू, क्योकि मै उसकी जगह हू। अन्यथा मेरा कोई लेना देना नही है, वह आदमी मर चुका है।

प्रायश्चित्त का अर्थ है—मृत्यु उस आदमी की जो भूल कर रहा था, उस चेतना की जिससे भूल हो रही थी। पश्चात्ताप का अर्थ है—उस चेतना को पुर्नजीवन जिससे भूल हो रही है। फिर से रास्ता साफ करना, फिर से पुनर वही पहुच जाना जहा हम खडे थे और जहा से भूल होती थी—उसी जगह फिर खडे हो जाना। पैर थोडे डगमगा जाते हैं अपराध करके, भूल करके। फिर उन पैरो को मजबूत करने हो तो क्षमा सहयोगी होती है। ध्यान रहे, लोग इसलिए क्षमा नही मागते कि वे समझ गए है कि उनसे अपराध हो गया, वे इसलिए क्षमा मागते हैं कि यह अपराध का भाव उनकी प्रतिमा को खडित करता है। वे इसलिए क्षमा नही मागते हैं कि आपको चोट पहुची है, क्योकि वे कल फिर चोट पहुचाना जारी रखते हैं। वे इसलिए क्षमा मागते हैं कि अपराध के भाव से उनकी प्रतिमा को चोट पहुची है। वे उसे सुधार लेते है। हम सब का एक सेल्फ इमेज है। सच नही है वह जरा भी, लेकिन वही हमारा असली है।

सुना है मैंने कि मुल्ला नसरुद्दीन अपने बेटे को कधे पर लेकर सुबह घूमने निकला है। सुन्दर है उसका बेटा। जो भी रास्ते पर देखता है वह रुक कर ठहर जाता है और कहता है सुन्दर है। नसरुद्दीन कहता है—दिस इज नथिंग। यू मस्ट सी हिज पिक्चर। यह कुछ नही है, इसका चित्र देखो, तब तुम्हे पता चलेगा।

कहा—क्षमा करना। वह गलती रास्ते की नही थी, मेरी ही थी क्योकि मैंने फिर वही भूले दोहराई है मैंने फिर वही किया है जो मैंने पहले किया था। आश्चर्य ! मैं फिर वही जिया हू जो पहले जिया था।

उस फकीर ने कहा—मैं जानता था, यही होगा। क्योकि भूलें कर्म मे नही होती—प्राणो की गहराई मे, अस्तित्व मे होती है। उम्र बदल दो तो कर्म फिर से तुम कर लोगे, लेकिन तुम ही करोगे न ! यू विल डू इट अगेन एंड यू वीइंग द सेम। तुम वही होओगे, तुम्ही वही करोगे फिर से; फिर वही हो जाएगा, जो पहले हुआ था।

ईवान ओसोकिन की जिन्दगी ही विचित्र नही है, इस अर्थ मे हम सबकी जिन्दगी विचित्र है। हालाकि कोई जादूगर हमारी उम्र कम नही करता, लेकिन जिन्दगी हर बार हमे न मालूम कितनी बार मौका देती है। ऐसा नही है कि क्रोध का मौका आपको एक ही बार आता है और परिस्थिति एक ही बार आती है। नही, इसी जिन्दगी मे हजार बार आती है, वही होती हैं और फिर आप वही करते है। इससे बचने के लिए आप अपने को धोखा देते है कि परिस्थिति हर बार भिन्न है। क्योकि एक बात तो पक्की है, आप वही है। अगर परिस्थिति भिन्न नही है तो दोष स्वय पर आ जाएगा। इसलिए आप हर बार कहते हैं—परिस्थिति भिन्न है, इसलिए फिर करना पडा। लेकिन जो जानते है, वे कहते है कि परिस्थिति का सवाल नही है, सवाल आप ही है—यू आर द प्राब्लम। और एक जिन्दगी नही अनेक जिन्दगी मिलती हैं, और हम फिर वही दोहराते हैं, फिर वही दोहराते है, फिर वही दोहराते है।

महावीर के पास कोई साधक आता था तो वे उसे पिछले जन्म के स्मरण मे ले जाते थे, सिर्फ इसीलिए ताकि वह देख ले कि वह कितनी बार यही सब दोहरा चुका है और यह कहना बन्द कर दे कि मेरे कर्म की भूल है और यह जान ले कि भूल मेरी है। पश्चात्ताप, कर्म गलत हुआ, इससे सम्बन्धित है। प्रायश्चित, मैं गलत हूं, इस बोध से सम्बन्धित है। और ये दोनो बाते बहुत भिन्न हैं, इसमे जमीन आसमान का फर्क है। पश्चात्ताप करने वाला वही का वही बना रहता है और प्रायश्चित करने वाले को अपनी जीवन चेतना रूपातरित कर देनी होती है। सवाल यह नही है कि मैंने क्रोध किया तो मैं पछता लूं। सवाल यह है कि मुझसे क्रोध हो सका तो मैं दूसरा आदमी हो जाऊ, ऐसा आदमी जिससे क्रोध न हो सके—प्रायश्चित का यह अर्थ है। ट्रासफर्मेशन आफ द लेवल आफ द बीइंग। यह सवाल नही है कि मैंने कल क्रोध किया था, आज मैं नही करूंगा। सवाल यह है—कल मुझसे क्रोध हुआ था, मैं कल के ही जीवन तल पर आज भी हू। वही चेतना मेरी आज भी है। पश्चात्ताप करने वाला कल के लिए क्षमा माग लेगा। हर वर्ष हम मागते हैं मिच्छामि हर वर्ष दुक्कडम हम मागते हैं, क्षमा। पिछले

आपका किसी से प्रेम है तो आप उस आदमी मे चुनाव करते है और वही-वही देखते है जो प्रेम को मजबूत करे—सेलेक्टिव। कोई आदमी किसी आदमी को पूरा नही देखता। देख ले तो जिन्दगी बदल जाए, उसकी खुद की भी बदल जाए। हम सब चुनाव करते है। जिसे मैं प्रेम करता हू उसमे मैं वे वे हिस्से देखता हू जो मेरे प्रेम को मजबूत करते हैं और कहते ह कि मैंने चुनाव ठीक किया है। आदमी प्रेम के योग्य है। प्रेम किया ही जाता ऐसे आदमी से, ऐसा आदमी है। लेकिन यह पूरा आदमी नही है। यह मन अपने को चुनाव कर रहा है। जैसे मैं किसी कमरे मे जाऊ और सफेद रगो को चुन लू और काले रगो को छोड दू। आज नही कल मैं सफेद रगो से ऊब जाऊगा क्योकि मन जिस चीज से भी परिचित होता जाता है, ऊब जाता है। आज नही कल मैं ऊब जाऊगा इस सौन्दर्य की, सेलेक्टिव, एक चुनाव की गयी प्रतिमा से। और जैसे मै ऊबने लगूगा वैसे ही वह जो असुन्दर मैंने छोड दिया था, दिखाई पडना शुरू हो जाएगा। वह तभी तक नही दिखता था, वह तो है ही।

सुन्दरतम् व्यक्ति मे भी असुन्दर हिस्से है। असुन्दरतम् व्यक्ति में भी सौन्दर्य छिपा हैं। जीवन बनता ही विरोध से, जीवन की सारी व्यवस्था ही विरोध पर खडी होती हैं। काले बादलो मे ही बिजली नही छिपी होती, हर बिजली की चमक के पीछे काला बादल भी होता है। और हर अधेरी रात के बाद ही सुबह पैदा नही होती, हर सुबह के बाद काली रात आ जाती है। हर दुख मे खुशी ही नही छिपी है, हर खुशी के भीतर से दुख का अकुर भी निकलेगा। जीवन ऐसे ही बहता है जैसे नदी दो किनारो के बीच बहती है। और एक किनारे के साथ नही बह सकती। भला दूसरा किनारा आपको न दिखाई पडता हो, या आप न देखना चाहते हो, लेकिन जब इस किनारे से ऊब जाएगे तो दूसरा किनारा ही आपका डेरा बनेगा।

तो जब आप एक व्यक्ति मे सौन्दर्य देखना शुरू करते है तो आप चुनाव कर लेते हैं एक किनारे का। भूल जाते है—नदी दो किनारो मे बहती है। दूसरा किनारा भी है। उस दूसरे के किनारे के बिना न तो नदी हो सकती है, न यह किनारा हो सकता है। अकेला किनारा कही होता है? किनारे का मतलब यह होता है कि वह दूसरे का जोड है। पर आप चुनाव कर लेते हैं। फिर आज नही कल सौन्दर्य से थक जाएगे। सब चीजें थका देती हैं, सब चीजें उबा देती हैं। मन चाहता है—रोज नया, रोज नया। फिर पुराना उबाने लगता है। फिर जब पुराना उबा देता है तो जो हिस्से आपने छोड दिए थे पहले चुनाव मे वे प्रगट होने लगते है। दूसरा किनारा दिखाई पडता है और जिसके प्रति आप प्रेम से भरे थे, उसी के प्रति घृणा से भर जाते है। जिसके प्रति आप श्रद्धा से भरे थे, उसके प्रति अश्रद्धा से भर जाते हैं। जिसको आप भगवान कहने गए थे उसी को आप

जो भी नसरूद्दीन से कहता है—सुन्दर है यह तुम्हारा वेटा, वह कहता है—दिस इज नथिंग। यू मस्ट सी हिज पिक्चर। यह तो कुछ भी नही है। इसकी पिक्चर देखो घर आकर अलवम मे, तव तुमको पता चलेगा।

वह ठीक कह रहा है। हम सब भी जानते है कि हम तो कुछ भी नही है, लेकिन हमारी तस्वीर, वह जो हमारे चित्त का अलवम है, उसको देखो। उसको ही हम दिखाने की कोशिश मे लगे रहते है। उनको ही हम दिखाने की कोशिश मे लगे रहते है। वह तस्वीर बडी और है। वह वही नही है जो हम हैं। इसलिए जव उस तस्वीर पर कोई दाग पड जाता है और हमे लगता हे कि दाग पड रहा है तो दाग को हम पोछ लेते है। पश्चात्ताप स्याही सोख का काम करता है। वह प्रायश्चित नही है, प्रायश्चित तो तस्वीर को फाडकर फेंक देगा और कहेगा—यह मैं हू ही नही, जिसको मैं थोप रहा हू निरन्तर। पश्चात्ताप सिर्फ स्याही के धब्वे को अलग कर देगा। और अगर आप कुशल हुए तो स्याही के धब्वे को इस ढग से वना देंगे कि वह तस्वीर का हिस्सा और शृगार बन जाए। न कुशल हुए तो पोछने की कोशिश करेंगे, इसमे थोडी-वहुत तस्वीर खराव भी हो सकती है।

अगर रवीन्द्रनाथ की हाथ की लिखी, हस्तलिखित प्रतिलिपिया, उनकी हस्त-लिखित पाडुलिपिया देखी है तो आप वहुत चकित होगे। रवीन्द्रनाथ से कही अगर कोई भूल अक्षर हो जाए तो वे उसको ऐसे नही काटते थे, वे उसे काटकर वहा एक चित्र वना देते और कागज को सजा देते। तो उनकी पाडुलिपिया सजी पडी हैं। जहा उन्होने काटा है, वहा सजा दिया है। अच्छा है, पाडुलिपि मे करना बुरा नही है, आख को सोहता है। लेकिन आदमी जिन्दगी मे भी यही करता है। वह पश्चात्ताप धब्वो को चित्र बनाने की कोशिश या धब्वो को पोछ डालने की कोशिश है। पश्चात्ताप प्रायश्चित नही है, लेकिन हम सब तो पश्चात्ताप को ही प्रायश्चित समझते है।

पश्चात्ताप वहुत साधारण-सी घटना है, जो मन का नियम है। मन के नियम को थोडा समझ ले कि पश्चात्ताप पैदा सवको होता है। यह मन का सामान्य नियम हे। प्रायश्चित साधना हे। अगर महावीर प्रायश्चित का अर्थ पश्चात्ताप करते हो तो यह तो कोई वात ही न हुई। यह तो सभी को होता है। ऐमा आदमी खोजना कठिन हे जो पछताता न हो। अगर आप खोज कर ले आए, तो वह आदमी ऐसे ही हो सकता है जैसा महावीर। वाकी आदमी मिलना मुश्किल है जो पछताता न हो। पश्चात्ताप तो जीवन का सहज क्रम हे। हर आदमी पश्चात्ताप करता है। तो इसको साधना मे गिनाने की क्या जरूरत है? पश्चात्ताप साधना नही, मन का नियम है। मन का यह नियम है कि मन एक अति से दूसरी अति की तरफ डोल जाता है। तो मन के इस नियम मे थोडे गहरे प्रवेश कर जाए तो पश्चात्ताप समझ मे आ जाए। फिर प्रायश्चित की तरफ ध्यान उठ सकता है।

है। पश्चात्ताप देख लेता है कर्म की कोई भूल है। प्रायश्चित देखता है मैं गलत हू। कर्म नही, क्योकि कर्म क्या गलत होगा! गलत आदमी से गलत कर्म निकलते है, कर्म कभी गलत नही होते। गलत आदमी से गलत कर्म निकलते है। बबूल के काटे गलत नही होते, वे बबूल की आत्मा से निकलते है। काटे क्या गलत होगे! वे बबूल की आत्मा से निकलते है। लेकिन बबूल जब अपने काटो को देखता है तो कहता है कि दुखी हू। वृक्ष तो मैं ऐसा नही हू कि मुझसे काटे निकलें। परिस्थिति ने निकाल दिए है। या अपने को समझाए कि हो सकता है कि कुछ लोगो के भोजन के लिए मैंने ये काटे निकाले हो—कि ऊट है, बकरिया है, वे भोजन कर सके, नही तो भूखे मर जाएगे। ऐसे मुझमे काटे का क्या सवाल है? काटे भी निकलते है तो किसी की करुणा से निकलते है।

क्रोध भी आता है आपको तो किसी को बदलने के लिए आता है। कि उस आदमी को बदलना पडेगा न! दया के कारण आप क्रोध करते है। बाप कर रहा है बेटे पर, मा कर रही बेटी पर—दया के कारण, करुणा के कारण कि इसको बदलना है नही तो बिगड जाएगा। और मजा यह है कि सब क्रोध के बाद कही कोई सुधार दिखाई नही पडता। सारी दुनिया क्रोध करती आ रही है। सब इस ख्याल मे क्रोध कर रहे है कि नही तो लोग बिगड जाएगे, और लोग है कि बिगडते ही चले जा रहे है। कोई किसी मे अन्तर नही दिखाई पडता है। नही, मालूम ऐसा होता है कि क्रोध का सम्बन्ध दूसरे को सुधारना कम, यह दूसरे को सुधारना अपने क्रोध के लिए तर्क खोजना ज्यादा है। यह दूसरा भी कल बडे होकर यही तर्क खोजेगा और रेशनलाइज करेगा। यह भी अपने बच्चो को ऐसे ही सुधारेगा।

ये जो कर्म है, इन पर जिनका ध्यान है वह पश्चात्ताप से आगे नही बढेंगे और पश्चात्ताप आगे बढना ही नही है—पीछे लौटना है एक कदम, फिर एक कदम आगे, फिर एक कदम आगे, फिर एक कदम पीछे। फिर क्रोध किया, फिर पैर उठाकर पीछे रख लिया, फिर क्रोध किया, फिर पैर उठाकर पीछे रख लिया। यह एक ही जगह दौडने जैसी क्रिया है, कही जाती नही। पश्चात्ताप से सजग हो, पश्चात्ताप आपको बदलेगा नही, बदलने का धोखा देता है। क्योकि जब पश्चात्ताप के क्षण मे आप होते है तो आप अपने सारे अच्छे गुण चुन लेते है। जब आप कहते हैं—मिच्छामि दुक्कडम, तब आप एक प्रतिमा होते है साक्षात क्षमा की। मगर आप बाइलिंग्वॅल है, द्विभाषी है। वह दूसरी भाषा भीतर छिपी बैठी है। वह अगर दूसरा आदमी कह देगा कि अच्छा आप तो मानते हो लेकिन मैं नही मानता-क्योकि मैंने कोई अपराध आपकी तरह किया नही, तो उसी वक्त दूसरी भाषा आपके भीतर सक्रिय हो जाए कि यह आदमी दुष्ट है। मैंने क्षमा मागी और इसने क्षमा भी नही मागी। या आप किसी से कहे कि मैं क्षमा मागता हू और वह कह दे कि किया क्षमा। तो पीडा शुरू हो जाएगी तत्काल। दूसरी

शैतान कहने जा सकते हैं। इसमे कोई अडचन नही है। जिससे कहा था—तेरे विना जी न सकेंगे, उससे ही आप कह सकते है—अव तेरे साथ न जी सकेंगे।

मन द्वन्द्व मे चलता है, क्योकि चुनाव करता है। इसलिए जिसे द्वन्द्व के वाहर होना है उसे चुनाव रहित होना पडे, च्वाइसलैस होना पडे। चुनता ही नही है काला है तो उसे भी देखता है, सफेद है तो उसे भी देखता है और मान लेता है कि काला हो नही सकता सफेद के विना, सफेद हो नही सकता काले के विना। फिर उस आदमी की दृष्टि मे कभी परिवर्तन नही होता। मैं चकित होता हू। सव सम्वन्ध परिवर्तित होते है। एक आदमी मेरे पास आता है, इतनी श्रद्धा और इतनी भक्ति से भर कर आता है कि कभी सोचा भी नही जा सकता कि यह आदमी कभी विपरीत चला जाएगा। लेकिन मै जानता हू कि इसकी श्रद्धा और भक्ति चुनाव है। यह विपरीत जा सकता है। जव वह विपरीत जाने लगता है तो दूसरे लोग मेरे पास आकर कहते है कि यह कैसे सम्भव है। आपके जो इतना निकट है, आपको जो इतनी भक्ति देता है वह आपके विपरीत जा रहा है। उनको पता नही कि यह विल्कुल नियमानुसार हो रहा है। यह विल्कुल नियमानुसार हो रहा है। एक किनारा उसने चुना था, अव वह उस किनारे को छोड कर दूसरा चुनेगा। और पहले किनारे को जव चुना था तव भी आपने अपने को तर्क दे लिए थे कि मैं सही हू और दूसरे किनारे को चुनते वक्त भी आप अपने को तर्क दे लेंगे कि आप सही है।

और मैं आपसे कहता हू कि एक किनारे को चुनना गलत है। वह किनारा कौन-सा है, यह सवाल नही है। वह तर्क क्या है, यह सवाल नही है। जव कोई आकर मुझे भगवान मानने लगता है तव भी मैं जानता हू, वह एक किनारे को चुन रहा है। वह चुनाव गलत है। एक किनारे को चुन लेना गलत है। यह सवाल नही है कि वह क्या तर्क अपने को दे रहा है। वही आदमी कल मुझे शैतान मान लेगा और तव भी तर्क खोज लेगा। मैं नही कहता कि उसका शैतान ही मान लेना गलत है। मैं कहता हू उसका चुनाव गलत है। वह पूरे को नहीं देखता।

चुनेगा तो वदलेगा। जहा तक चुनाव है वहा तक परिवर्तन होगा। जव आप क्रोध मे होते है तव आप एक हिस्सा चुन लेते है अपने व्यक्तित्व का—वह जो क्रोध करने वाला है। जव क्रोध निकल जाता है विदा हो जाता है तव आप अपने व्यक्तित्व का दूसरा हिस्सा चुनते है जो पश्चात्ताप करने वाला है। क्रोध कर लेते है एक हिस्से मे, वह एक चुनाव था, आपकी प्रतिमा एक रूप था। फिर पश्चात्ताप कर लेते है, वह आपकी प्रतिमा का दूसरा चुनाव है। किनारे के वीच नाव वहती रहती है। आपकी नदी वहती रहती है। आप यात्रा करते रहते है। कभी इस किनारे लगा देते है नाव को, कभी उस किनारे लगा देते है।

प्रायश्चित दो किनारो के वीच चुनाव नही है। प्रायश्चित वहुत अद्भुत घटना

डन को अनडन किया जा सकता है। किए के लिए माफी मागी जा सकती है। किए के विपरीत किया जा सकता है। कर्म के ऊपर दोष देने मे कोई कठिनाई नही है। लेकिन वही आदमी प्रायश्चित को उपलब्ध होता है। जो कहता—गलत कोट मैं नही पहन रहा, मैं गलत आदमी हू। लेकिन तब प्राणो मे बडा मथन होता है।

तब सवाल यह नही है कि मैंने कौन-कौन-से काम गलत किए; तब सवाल यह है कि चूकि मैं गलत हू इसलिए मैंने जो भी किया होगा, वह गलत होगा। तब चुनाव भी नही है कि कौन-सा गलत किया और मैंने कौन-सा ठीक किया। जब मैं गलत हू तो मैंने जो भी किया होगा वह गलत किया होगा। बेहोश आदमी शराब पिए हुए रास्ते पर लडखडाता है। वह यह नही कहता कि मेरे कौन-कौन-से पैर लडखडाए, या कहेगा ? और कौन-से पैर मेरे ठीक पडे और कौन-से पैर मेरे लडखडाए ? जब वह होश मे आएगा तब वह कहेगा कि मैं बेहोश था, मेरे सभी पैर लडखडाए। वे जो ठीक पडते मालूम पडते थे वे भी गलती से ही ठीक पडे होगे क्योकि ठीक पडने का तो कोई उपाय नही, क्योकि मैं शराब पिए था। हम भीतर एक गहरे नशे मे होते है, और वह गहरा नशा यह है कि हम एक अर्थ मे हम हैं ही नही, बिल्कुल सोए हुए हैं।

प्रायश्चित को महावीर ने क्यो अतर-तप का पहला हिस्सा बनाया ? क्योकि वही व्यक्ति अतर्यात्रा पर निकल सकेगा जो कर्म की गलती को छोडकर स्वय की गलती देखना शुरू करेगा। देखिए, तीन तरह के लोग हैं—एक वे लोग हैं जो दूसरे की गलती देखते हैं, एक वे लोग हैं जो कर्म की गलती देखते है, एक वे लोग है जो स्वय की गलती देखते है। जो दूसरे की गलती देखते है वे तो पश्चात्ताप भी नही करते। जो कर्म की गलती देखते है वे पश्चात्ताप करते हैं। जो स्वय की गलती देखते हैं, वे प्रायश्चित मे उतरते हैं। जब दूसरा ही गलत है तब तो पश्चात्ताप का कोई सवाल ही नही है।

लेकिन ध्यान रहे, दूसरा कभी भी गलत नही होता। किस अर्थ मे कभी गलत नही होता। इसे बडा कठिन होगा समझना कि दूसरा कभी भी गलत नही होता। अतर्यात्रा के पथिक को यह समझ लेना होगा कि दूसरा कभी भी गलत नही होता है। आप कहेगे—आप कैसी बात कर रहे है क्योकि मैं गलत होता हू तो मैं दूसरे के लिए तो दूसरा हू ही ! और अगर दूसरा गलत नही होता तो फिर तो मैं कैसे गलत होऊगा ? जब मै कह रहा हू—दूसरा कभी गलत नही होता तो इसलिए कह रहा हू. इसलिए नही कि दूसरा गलत नही होता, दूसरा गलत होता है, लेकिन स्वय के लिए, आप गलत होते है स्वय के लिए ..दूसरे के लिए आप गलत नही हो सकते।

आप महावीर के पास जाए तब आपको तत्काल पता चल जाएगा। आप

भापा आ जाएगी ।

सुना है मैंने कि एक चूहा अपने विल के वाहर घूम रहा था। अचानक पैरो की आवाज सुनी—परिचित थी, विल्ली की मालूम पडती थी—घवराकर अपने विल के भीतर चला गया। लेकिन जैसे ही भीतर गया चकित हुआ। वाहर तो कुत्ता भोक रहा था—भो-भो। चूहा वाहर आया। तत्काल विल्ली के मुह मे चला गया। चारो तरफ देखा, कुत्ता कही भी नही था। चूहे ने पूछा कि मार तू मुझे डाल, उसमे कोई हर्जा नही, लेकिन एक वात और मरते हुए प्राणी की एक जिज्ञासा को पूरा कर दे। वह कुत्ता कहा गया ? विल्ली ने कहा—यहा कोई कुत्ता नही है। यू नोट इट पेज टू वी वाइलिंग्वॉल। मैं कुत्ते की आवाज करती हू, हू विल्ली ऐण्ड इट पेज। तुम फस गए मेरे चक्कर मे, नही तो तुम फसते नही। द्विभाषी हू, कुत्ते की भाषा वोलती हूं, हू विल्ली। इससे चूहे वडी आसानी से फसते हैं।

हम सव वाइलिंग्वॉल है, द्विभापी हैं, दो-दो भापा जानते है। वोलने की भापा और है, होने की भापा और हे। पूरे वक्त दो किनारो के वीच चलता रहता है। पश्चात्ताप करके आप वडे प्रसन्न होते हैं, जैसा क्रोध करके दुख और विषाद को उपलब्ध होते हे। क्रोध करके विषाद आता है कि ऐसा वुरा आदमी मै नही था। पश्चात्ताप करके चित्त प्रफुल्ल होता है, देखो कितना अच्छा आदमी है। अहकार पुर्नप्रतिष्ठित हुआ। नही, प्रायश्चित का अर्थ हे भूल कर्म मे नही है, भूल मुझमे हे, गलत मै हू।

मुल्ला नसरूद्दीन अपने क्लव के वाहर निकल रहा हे। एक आदमी एक कोट को पहनने की कोशिश कर रहा है। क्लॉक रूम से मुल्ला उससे कहता है कि आप वडे गलत आदमी है। मुल्ला से उसने कहा—मैंने तो कुछ किया ही नही ! मैं अपना कोट पहन रहा हू। मुल्ला ने कहा—इसीलिए तो मैं कहता हू कि आप गलत आदमी है। यह कोट मुल्ला नसरूद्दीन का है। उस आदमी ने कहा—यह मुल्ला नसरूद्दीन कौन है ? मुल्ला ने कहा—मुल्ला नसरूद्दीन मै हू, आप मेरा कोट पहन रहे है। उस आदमी ने कहा कि नासमझ ! ऐसा क्यो नही कहता कि मैं गलत कोट पहन रहा हू, ऐसा क्यो कहता है कि मैं गलत आदमी हू। मुल्ला ने कहा—गलत आदमी ही गलत कोट पहनते है।

जव आप कोई गलत काम करते है तो आप चाहते है कोई ज्यादा से ज्यादा इतना कहे कि आपसे गलत काम हो गया। वह यह न कहे कि आप गलत आदमी है क्योकि काम की तो वडी छोटी सीमा है, एक क्षण मे निपट जाएगा। आप ! आप तो पूरे जीवन पर आरोपित है। अगर कोई कहे—आप गलत है, तो यह जीवन भर के लिए निन्दा हो गयी। अगर कर्म गलत है, एक क्षण की वात है, फिर विपरीत कर्म किया जा सकता है। किए को अनकिया किया जा सकता है,

पर ज्यादा निर्भर है। हमें लगता ऐसा ही है कि दूसरे पर निर्भर है, वही हमारी भ्रांति है, वह हम पर ही निर्भर है। हम ही उसे उकसाते हैं जाने अनजाने। और जब दूसरा उसे करने लगता है तो लगता है वह दूसरे से आ रहा है। जिस कालेज में हरेक लड़का अपने को भगवान समझता है, उस कालेज में कोई दिक्कत नहीं है प्रिंसिपल को। वह कहता है—कोई अड़चन न आएगी। लेकिन जिस कालेज में ऐसा नहीं है, उसका प्रिंसिपल भयभीत हो रहा है कि इससे अड़चन खड़ी होगी। आसान नहीं होगा यह, कृष्णमूर्ति का यहां रहना। यह अड़चन बनेगी।

महावीर के पास आप जाएंगे तो आपको कठिनाई आएगी, अगर महावीर आपके साथ समानता का व्यवहार करेंगे तो कठिनाई न आएगी। आप गाली दें महावीर को और महावीर भी आपको गाली दे दें तो आप ज्यादा प्रसन्न घर लौटेंगे क्योंकि बराबरी सिद्ध हुए। अगर महावीर गाली न दें और मुस्कुरा दें तो आप रात भर बेचैन रहेंगे घर कि यह आदमी कुछ ऊपर मालूम पड़ता है, इसको नीचे लाना पड़ेगा। तो इसलिए कई बार तो ऐसा हुआ है कि बहुत साधुओं ने सिर्फ इसलिए गाली दी कि आपको उनको नीचे लाने की व्यर्थ कोशिश न करनी पड़े। आप हैरान होंगे, यह जगत् बहुत अजीब है। कई साधुओं को इसलिए आपके साथ दुर्व्यवहार करना पड़ा ताकि आपको उनके साथ दुर्व्यवहार न करना पड़े। रामकृष्ण गाली देते थे, ठीक मा-बहन की गाली देते थे। और ढेर फक्कड़ साधु गालियां देते रहे, पत्थर मारते रहे, और सिर्फ इसलिए कि आपको कष्ट न उठाना पड़े उनको फांसी वगैरह देने का। आप पर दया करके यही समझकर।

और यह बड़े मजे की बात है अब तक ऐसे किसी साधु को फांसी नहीं दी गयी, जिसने गाली दी हो और पत्थर फेंके हो। यह आपको पता है? पूरे इतिहास मे मनुष्य जाति के! सुकरात को जहर पिला देते हैं, महावीर को पत्थर मारते हैं, बुद्ध को परेशान करते है। हत्या की अनेक कोशिश की जाती है बुद्ध की—चट्टान सरका दी जाती है, पागल हाथी छोड़ दिया जाता है। जीसस को सूली पर लटकाते हैं, मसूर को काट डालते है। लेकिन ऐसा एक भी उल्लेख नहीं है कि आपने उस साधु के साथ दुर्व्यवहार किया हो जिसने आपके साथ दुर्व्यवहार किया हो। यह बड़े मजे की बात है। यह बड़ा ऐतिहासिक तथ्य है। बात क्या है? असल मे जो आपको गाली देता है, यू ट्रीट हिम इक्वल। बात खत्म हो गयी। वह आदमी इतना ऊपर नहीं, जिसको फांसी-वासी लगानी पड़े, नीचे लाना पड़े। अपने ही जैसा है चलेगा। तो कई कुशल साधु सिर्फ इसलिए गाली देने को मजबूर हुए कि आपको नाहक परेशानी मे न पड़ना पड़े, क्योंकि फांसी लगाने मे परेशानी साधु को कम होती है, आपको ज्यादा होती है। बड़ा इंतजाम करना पड़ता है।

दूसरा गलत नहीं है इस स्मरण से ही अंतर्यात्रा शुरू होती है। अगर दूसरा

गाली दें, महावीर मे गाली ऐसे गूंजेगी जैसे किसी घाटी मे गूजे और विलीन हो जाए। आप महावीर को क्रोधित न करवा पाएगे। और तव बडे हैरानी की वात है कि अगर आप क्रोधी आदमी है तो आपको और ज्यादा क्रोध आएगा कि दूसरा आदमी क्रोधित तक नही हुआ। तो और क्रोध आएगा। जीसस को सूली पर लटकाना पडा क्योकि यह आदमी उन लोगो के सामने अपना दूसरा गाल करता रहा, जो चाटा मारने आए थे। उनका क्रोध भयकर होता चला गया। अगर यह भी उनको एक चाटा मार देता तो जीसस को सूली पर लटकाने की कोई जरूरत न पडती। बात निपट गयी होती। समान तल पर आ गए होते। फिर तो कोई कठिनाई न थी।

एनी वीसेंट जे० कृष्णमूर्ति को कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के अलग-अलग कालेजो मे भर्ती कराने के लिए घूम रही थी, पढने के लिए। लेकिन कोई कालेज का प्रिंसिपल कृष्णमूर्ति को लेने को राजी नही हुआ। जिस कालेज मे भी एनी वीसेंट गयी, एनी बीसेंट ने कहा कि यह साक्षात भगवान का अवतार है, यह दिव्य पुरुष है। इनमे वर्ल्ड टीचर, जगत्-गुरू का जन्म होने को है।

उन प्रिंसिपल्स ने कहा कि क्षमा करे, इतनी विशिष्टता आप उन्हे दे रही है कि हम कालेज मे भर्ती नही कर सकेंगे। एनी वीसेंट ने कहा—क्यो? तो उन्होने कहा—इसलिए भर्ती न कर सकेंगे कि एक तो इस बच्चे को परेशानी होगी इतनी महत्ता का वोझ लेकर चलने मे, और दूसरे लडके भी इसको परेशान करेंगे। इसको कठिनाई पडेगी इतनी गरिमा लेकर चलने मे, और दूसरे लडके इसको परेशान करेंगे। यह शाति से न पढ पाएगा, शाति से न जी पाएगा। इसलिए हम इसे न लेंगे।

लेकिन सभी प्रिंसिपलो ने एक खास कालेज का नाम बताया कि आप वहा चली जाओ, वह कालेज भर्ती कर लेगा।

एनी बीसेंट वहुत हैरान थी, फिर आखिर जव कोई कालेज मे जगह नही मिली...क्योकि वह कालेज अच्छा कालेज नही था जिसका लोग नाम लेते थे, उसकी प्रतिष्ठा नही थी। एनी वीसेट को जव कोई उपाय न रहा तो वह कृष्णमूर्ति को लेकर उस कालेज मे गयी। उस कालेज के प्रिंसिपल ने कहा—खुशी से भर्ती हो जाओ, मजे से भर्ती हो जाओ, विकाज इन अवर कालेज एवरीवन इज ए गाड। एवरीवन विल ट्रीट यू इक्वली। कोई दिक्कत न आएगी। इधर सभी लडके भगवान है हमारे कालेज मे। कोई कठिनाई न आएगी बल्कि तुमको दिक्कत यही हो सकती कि इसमे बिगर गाड्स है, वे तुमको दबाएगे, तुमको छोटा गाड सिद्ध करेंगे। तुम जरा इसके लिए सावधान रहना। बाकी और कोई अडचन नही है। दे विल ट्रीट यू इक्वली। समान व्यवहार करेंगे।

यह जो हम जो व्यवहार कर रहे है दूसरे से, वह दूसरे पर कम निर्भर है हम

रहे।

एक वृद्ध साधक—सरल, सीधे आदमी हैं। कोई सोच भी नही सकता कि उनमे कही कोई पर्तें दबी होगी, सबके भीतर पर्तें दबी है। वे गहरे ध्यान मे अभी आश्रम आजोल मे थे। एक दिन ध्यान मे अच्छी गहराई मे गए, और गहराई मे गए इसीलिए यह घटना घटी नही तो घटती नहीं, अन्यथा सीधा-सादापन था। उन्होंने आनन्द मधु को बाहर निकलकर सुबह कहा कि मैं इसी वक्त बम्बई जा रहा हू। मुझे रजनीश की आज ही हत्या कर देनी है। मेरा उनसे इस जन्म मे कोई सम्बन्ध नही, सिवाय इसके कि उन्होंने मुझसे सन्यास लिया है। वह भी एक क्षण भर का मिलना हुआ, इससे ज्यादा कोई सम्बन्ध नही। पिछले जन्मो को याद करने की मैने बहुत कोशिश की, कोई याद नहीं पडता है कि उनसे मेरा कोई सम्बन्ध रहा हो। शात, सीधे आदमी है। समस्त जीवन को छोडकर साधना की दिशा मे गए, और गहरे गए, इसलिए यह घटना घटी। नही तो ऊपर से तो शांत, सीधे है। तो क्या हुआ ? मधु परेशान हुई। वे एकदम तैयार है, हत्या करने जाना है। सामने ही मेरा चित्र रखा था, वह चित्र उसने सामने रख दिया और कहा—पहले इसे फाड डाले, पहले इस चित्र की हत्या कर दें फिर आप जाए। चित्त दूसरे किनारे पर तत्काल चला गया, वे बेहोश होकर गिर पडे। रोए, पछ-ताए। कुछ किया नही है अभी, वह चित्र भी नही फाडा।

गहरे तल पर कही हिसा का कोई आवरण सबके भीतर है। तो जितने गहरे जाएगे, उतना हिसा का आवरण मिलेगा। और हिसा जब शुद्ध प्रगट होती है तो अकारण प्रगट होती है। अशुद्ध हिसा है जो कारण खोदकर प्रगट होती है। अकारण मैं कहता हू 'जब आप कारण खोजकर क्रोधित होते है, तो उसका मत-लब है क्रोध अभी बहुत गहरे तल पर नही है आपके। जब गहरे तल पर क्रोध होता है, तब आप अकारण क्रोधित होते है। अभी तो कारण मिलता है तब क्रोधित होते है, तब आप क्रोधित होते है इसलिए फौरन कारण खोजते हैं। गहरी पर्तें हैं।

अभी एक युवक मेरे पास अपनी हिसा पर प्रयोग कर रहा था। अब हर भाव की सात पर्तें होती हैं मनुष्य के भीतर। जैसे हर मनुष्य के भीतर सात शरीरो की पर्तें होती है—सेवन बाडीज की, वैसे हर भाव की सात पर्तें होती है। ऊपर से गाली दे लेते हैं, ऊपर से पश्चात्ताप कर लेते है इससे कुछ नही हो जाता है। भीतर की पर्तें वैसी की वैसी बनी रहती है—सुरक्षित। और जितने गहरे उतरते हैं उतने अकारण भाव प्रगट होने शुरू होते है। जब गहरी सातवी पर्त पर पहुंचते हैं तो कोई कारण नही रह जाता।

उस युवक को हिसा की तकलीफ थी। अपने पिता की हत्या करने का ख्याल है, अपनी मा की हत्या करने का ख्याल है। अब मैं जानता था जो अपनी मा और

गलत है, तब तो अतर्यात्रा शुरू ही नही होगी। दूसरा है या नही गलत, यह सवाल नही है; दूसरा गलत है यह दृष्टि गलत है। दूसरा गलत है या नही, इस मे आप पडेंगे तो कभी दूसरा सही मालूम पडेगा, कभी गलत मालूम पडेगा। चुनाव शुरू हो जाएगा। दूसरा सही है या गलत है, यह साधक की दृष्टि नही है। दूसरे को गलत ठहराना गलत है, यह साधक की दृष्टि है। मैं गलत हू या नही, यह ठहराना साधक की दृष्टि नही है। मैं गलत हू, यह सुनिश्चित मानकर चल पडना साधक की दृष्टि है। प्रायश्चित तब शुरू होता है जब मैं मानता हू मैं गलत हू। सच तो यह है कि जब तक मैं हू तब तक मै गलत होऊगा ही। होना ही गलत है, वह जो अस्मिता है, वह जो इगो—'मैं हू'—वही मेरी गलती है। मेरा होना ही मेरी गलती है। जब तक मैं न न हो जाऊ तब तक प्रायश्चित फलित नही होगा। और जिस दिन मैं नही हो जाता हू, शून्यवत हो जाता हू उसी दिन मेरी चेतना रूपातरित होती है और नए लोक मे प्रवेश करती है।

फिर भी ऐसा नही है कि ऐसी रूपातरित चेतना मे आपको गलतिया न मिल जाए। क्योकि गलतिया आप अपने कारण खोजते है। एक बात पक्की है कि ऐसी चेतना को आप मे गलतिया मिलनी बद हो जाएगी। इसलिए तो ऐसी चेतनाए आपसे कह सकी कि आप परमात्मा है, आप शुद्ध आत्मा है, आपके भीतर मोक्ष छिपा है। द किंगडम आफ गाड इज विदिन यू। इसलिए जीसस जुदास के पैर पड सके। इससे कोई फर्क नही पडता कि जुदास ने जीसस को तीस रुपये मे बेच दिया है सूली पर लटकाने के लिए, इससे कोई फर्क नही पडता। इससे कोई अतर ही नही पड़ता क्योकि जिस आदमी ने अपने को बदला हुआ पाया, उसको फिर किसी मे कही कोई गलती नही दिखाई पडती। और ज्यादा से ज्यादा अगर उसे कुछ दिखाई पडता है तो इतना ही दिखाई पडता है कि आप बेहोश हो, और बेहोश आदमी को क्या गलत ठहराना। बेहोश आदमी जो भी करता है गलत होता है, लेकिन होश वाला आदमी बेहोश आदमी को क्या गलत ठहराए !

बहुत मजेदार घटनाए घटती है, और होश वाले आदमियो ने अपने ससमरण नहीं लिखे, वे लिखें तो बडे अद्भुत होगे। बेहोश आदमियो के बीच जीना होश वाले आदमी को इतना स्ट्रेंज मामला है, इतना विचित्र है, लेकिन किसी ने अपना सस्मरण लिखाया नही क्योकि आप उस पर भरोसा न कर सकेंगे कि ऐसा हो सकता है। ऐसे ही जैसे आपको एक पागलखाने मे बद कर दिया जाए और आप पागल न हो, तब जो जो घटनाए आपके जीवन मे घटेगी उनसे विचित्र घटनाएं कहीं भी नहीं घट सकती। और अगर आप बाहर आकर कहेंगे तो कोई भरोसा नहीं कर सकता कि ऐसा हो सकता है। पागल भरोसा नहीं करेंगे क्योंकि वे पागल है। गैर पागल भरोसा नही करेंगे क्योकि उन्हे पागलो का कोई पता नही। और आप दोनो हालत मे रह लिए, आप पागल नहीं थे और पागलो के बीच मे

उसने कहा—मैंने उसे समझाया, लेकिन वह मानने को राजी नही है । वह कहती है मुझे पक्का भरोसा है, मुझे स्मरण है । मैंने उसे बहुत समझाया, उस दूसरी स्त्री ने मुझे कहा—लेकिन वह मानने को राजी नही है । लेकिन यह बात गलत है, यह प्रचलित नही होनी चाहिए । भूल से मैंने एक बात पूछ ली उससे, तो बडी मुश्किल हो गयी । भूल से मैंने उस स्त्री से पूछा कि मान लो वह मानने को राजी नही होती तो तेरा क्या पक्का प्रमाण है कि वह गलत कहती है । वह बोली—इसलिए कि पिछले जन्म मे तो मैं आपकी औरत थी । इसलिए दो दो कैसे हो सकती है । अब कुछ कहने का मामला ही न रहा, अब बात ही खत्म हो गयी । अब इससे बडा प्रमाण हो भी क्या सकता है ? पागलो के बीच बडा मुश्किल है, बडा मुश्किल है, अत्यत कठिन है ।

तो मैंने कहा—वह स्त्री तो दिल्ली मे है, इसलिए कोई दिक्कत नही है । अभी एक अमरीकन लडकी मेरे पास ध्यान कर रही थी दो दिन से । उसने मुझे चार-छ महीने के बाद कहा कि जब आपके पास आकर बैठती हू आखें बद करती हू तो मुझे ऐसा लगता है कि आप मुझसे सभोग कर रहे हैं । मैंने कहा—कोई फिक्र न करो, सभोग का जो भाव आए, उसको भी भीतर ले जाने की कोशिश करो । वह जो ऊर्जा उठे, उसको भी ऊपर की यात्रा पर ले जाओ । तो उसने मुझसे कहा कि आप हर दो दिन मे कम-से-कम दस दस मिनट पास बैठने का मौका दे दें, क्योकि यह इतना रसपूर्ण है कि सभोग मे भी मुझे रस चला गया ।

मेरे सामने दो ही विकल्प हैं, या तो मैं उसको इन्कार कर दू, क्योकि यह खतरा मोल लेना है । लेकिन यह भी मैं देख रहा हू कि इसे इन्कार करना भी गलत है क्योकि उसे सच मे ही परिवर्तन हो रहा है । और अगर सभोग अतर्मुखी हो जाए तो बडी क्रांति घटित होती है ।

वह दो महीने मेरे पास प्रयोग करती थी, लेकिन मैंने उससे कहा ध्यान रखना, इन दो महीने मे भूलकर भी शारीरिक सभोग मत करना । वह अपने पति के साथ है । मैंने पूछा की कितने सभोग करती हो ? उसने कहा—सप्ताह मे कम-से-कम दो तीन, इससे कम मे तो नही चल सकता । वह पति तो मानने को राजी नहीं है । तो मैंने कहा कि सभोग चल रहा है, वहा तक तो ठीक है, कल तू गर्भवती हो जाए तो मैं जिम्मेवार न हो जाऊ ! यह होने वाला है । उसने कहा—नहीं, यह कैसी बात ?

और यही हुआ । अभी कल मुझे किसी ने आकर खबर दी कि उसका पति कहता है कि वह मुझसे गर्भवती हो गयी है । ये बडे मजे की बातें हैं । लेकिन पागलों के बीच जीना भी बडा कठिन है । उनके बीच जीना अति कठिन है । इतनी भीड है उनकी । पर उनको मैं गलत नही कहता । उनको मैं गलत नही कहता ।

पिता की हत्या करने के ख्याल से भरा है, अगर वह मेरा शिष्य बना तो मैं फादर इमेज हो जाऊगा। आज नही कल वह मेरी हत्या के ख्याल से भरेगा। क्योकि गुरु को भक्तो ने जब कहा है कि गुरु पिता है और गुरु माता है और गुरु ब्रह्म है, अकारण नही कहा है। फादर इमेज, गुरु जो है। जब एक व्यक्ति किसी के चरणो मे सिर रखता है और उसे गुरु मान लेता है, तो वही पिता हो गया, वही मा हो गया। लेकिन ध्यान रहे, पिता के प्रति उसके जो ख्याल थे वही अब इस पर आरोपित होगे। उसका, जिन्होने कहा है—तुम पिता हो, तुम माता हो उन्हे कुछ पता नही। जब एक आदमी मुझसे आकर कहता है कि आप ही माता, आप ही पिता, आप ही ब्रह्म, आप ही सब कुछ, तब मैं जानता हू, अब मैं फसा।

फसा इसलिए कि अब तक इसकी जितनी भी धारणाएं थी, अब मेरी तरफ होगी। इसको कोई भी पता नही है। इसलिए मैं कहता हू—पागलखाने मे होने का अनुभव कैसा होता है, इसको कुछ भी पता नही। यह तो बहुत सद्भाव से कह रहा है, बहुत आनन्द भाव से, अहोभाव से। इसमे क्या बुराई हो सकती है। कितनी श्रद्धा से साष्टाग वह युवक मेरे चरणो मे पडा है और कहता है कि आप ही सब कुछ है। लेकिन कल ही वह मुझे सब बता के गया है कि वह पिता की हत्या करना चाहता है। मैं जानता हू आज नही कल ··। अभी कल मुझे एक मित्र ने आकर खबर दी कि वह कहता है कि मेरी हत्या कर देगा। तो वे घबरा गए—जिनको खबर मिली वे। उन्होने कहा कि यह क्या मामला है ? पागलो के बीच रहने का।

एक और मजेदार घटना अभी घट रही है, तो आपको कहू। एक युवती मेरे पास ध्यान कर रही थी—और यह घटना इतनी महिलाओ को घटी है कि कह देना अच्छा होगा क्योकि कही न कही इस सम्बन्ध मे खबर पहुचेगी। और पागल आपको कोई खबर दे तो आप भी उतने ही पागल होने से जल्दी भरोसा कर लेते है, पकड लेते है अब एक महिला दिल्ली मे रहती है, वह मुझे वहा से लिखती है कि रात दो बजे रात आप सशरीर मुझसे सभोग करते हैं दिल्ली मे आकर ठीक है। दिल्ली मे रहती है, इसलिए कोई झझट नही है, इसलिए कोई अडचन नही है।

एक महिला ने मुझे आकर कहा कि मुझे पक्का स्मरण आने लगा है कि मैं पिछले जन्म की आपकी पत्नी हू। मैंने कहा—होगा, अब इसमे छिपाने जैसी बात नही है, बडे गौरव की बात है। तो जाकर उसने और को बताया उसने दूसरी महिला को बताया। यह महिला तो ग्रामीण है, ज्यादा समझदार नही है, भोली-भाली है। जिसको बताया वह तो यूनिवर्सिटी की ग्रेजुएट है, पढी लिखी महिला है, बड़े परिवार की है। वह महिला मेरे पास आयी और उसने कहा कि यह क्या नासमझी की बात कर रही है वह औरत। यह नही हो सकता, यह बिल्कुल गलत है। तो मैंने कहा कि तुमने ठीक सोचा, उसे समझा देना।

की वृत्ति, कभी घृणा की, कभी प्रेम की, और हम दोनो हालत मे सोए हुए आदमी है। इससे कोई फर्क नही पडता है।

एक रात जोर से शरावघर के मालिक की टेलोफोन की घटी वजने लगी—दो वजे रात, गुस्से मे परेशान, नीद टूट गयी। घटी उठायी, फोन उठाया। पूछा—कौन है ? उसने कहा—मुल्ला नसरुद्दीन। क्या चाहते हो दो वजे रात ? उसने कहा—मैं यही पूछना चाहता हू कि शराव घर खुलेगा कव ? ह्वेन डू यू ओपेन। उसने कहा—यह भी कोई वात है, तू रोज का ग्राहक। दस वजे सुवह खुलता है, यह भी दो वजे रात फोन करके पूछने की कोई जरूरत है। उसने गुस्से मे फोन पटक कर फिर सो गया।

चार वजे फिर फोन की घटी वजी। उठाया। कौन है ? उसने कहा—मुल्ला नसरुद्दीन। कव तक खोलोगे दरवाजे ? मालिक ने कहा—मालूम होता है तू ज्यादा पी गया है या पागल हो गया है। अभी चार ही वजे हैं, दस वजे खुलने वाला है। अगर तू दस वजे आया भी तो तुझे घुसने नही दूगा। आई विल नाट अलाऊ यू इन। मुल्ला ने कहा—हू वाट्स टु कम इन। आइ वाट टु गो आउट। मैं तो भीतर वन्द हू। और खोलो जल्दी, नही तो मैं पीता चला जा रहा हू। अभी तो मुझे पता चल रहा है कि वाहर भीतर मे फर्क है। थोडी देर मे वह भी पता नही चलेगा। अभी तो मुझे फोन नम्वर याद है। थोडी देर मे वह भी नही रहेगा। अभी तो मैं वता सकता हू, मैं मुल्ला नसरुद्दीन हू। थोडी देर मे वह भी नही वता सकूगा। जल्दी खोलो।

हम सव ऐसी तद्रा मे हैं, जहा पता भी नही चलता कि वाहर क्या है, भीतर क्या हे। मैं कौन हू, यह भी पता नही चलता। कहा जाना चाह रहे है, यह भी पता नही चलता। कहा से आ रहे है, यह भी पता नही चलता। क्या प्रयोजन है, किसलिए जी रहे हैं ? कुछ पता नही चलता है। एक वेहोशी है—एक गहरी वेहोशी। उस वेहोशी मे हाथ पैर मारे चले जाते हैं। उस हाथ पैर मारने को हम कर्म कहते है। कभी किसी को गलत लग जाता है तो माफी माग लेते है, कभी किसी को लगने से कोई प्रसन्न हो जाता है तो कहते हैं—प्रेम कर रहे हैं। कभी लग जाता है, चोट खा जाता है, वह आदमी नाराज हो जाता है तो कह देते हैं—माफ करना गलती हो गयी। हाथ वही है, अधेरे मे मारे जा रहे हैं। कभी ठीक, कभी गलत, ऐसा लगता मालूम पडता है, लेकिन हाथ वेहोश है, वे सदा ही गलत है।

प्रायश्चित मे उतरना हो तो जान लेना कि मैं गलत हू, मैं सोया हुआ हू। गलत का मतलब, सोया हुआ हू, वेहोश हू। मुझे कुछ भी पता नही है कि मेरे पैर कहा पड रहे है, क्यो पड रहे हैं। आपको पता है, आप क्या कर रहे हैं ? कभी एक दफा झकझोर अपने को खड़े होकर आपने सोचा है दो मिनट कि क्या कर

गलत वे नही हैं, सिर्फ बेहोश हे। वे क्या कर रहे है, उन्हे पता नही हे वे क्या कह रहे है, उन्हे पता नही। क्या हो रहा है, वह उन्हे पता नही। वे क्या प्रोजेक्ट कर रहे हैं, क्या सोच रहे है, क्या मान रहे है, इसका उन्हे कोई पता नही है। वे बिल्कुल बेहोश हैं। वह युवती मेरे एक मित्र के घर मे ठहरी तो मुझे दूसरे मित्रो ने कहा कि निकलवाओ वहा से। मैंने कहा—यह तो सवाल ही नही है। अभी तो वह और मुसीवत मे है, उसे वहा से निकलवाना ठीक नही है, उसे वहा रहने दो। तकलीफ होगी। उसे वहा रहने दो। किसी ने कहा—पुलिस को दे देना चाहिए। मैंने कहा—यह बिल्कुल पागलपन की बात है। पुलिस क्या करेगी? पुलिस का क्या लेना-देना है उस बात से? अब वह जो युवक कहता फिरता है कि मेरी हत्या कर दे, अगर वह कल मेरी हत्या कर दे तो भी गलत नही है। तो भी गलत नही है। सिर्फ बेहोश है सोया हुआ है। और वह सोने मे जो भी कर सकता था, कर रहा है।

ध्यान रहे, हमारे चित्त की दो दशाए है—एक सोयी हुई चेतना है हमारी और एक जाग्रत चेतना है। प्रायश्चित जाग्रत चेतना का लक्षण है, पश्चात्ताप सोयी हुई चेतना का लक्षण है। यह युवक कल आकर मुझसे माफी माग जाएगा, इसका कोई मतलब नही है। आज जो कह रहा है उसका भी कोई मतलब नही है, कल यह माफी माग जाएगा उसका भी कोई मतलब नही है। इससे कोई सम्बन्ध नही है। यह माफी मागना भी उसी नीद से आ रहा है, यह क्रोध भी उसी नीद से आ रहा है। यह स्त्री गर्भवती समझ रही है मेरे द्वारा हो गयी। यह जिस नीद से आ रहा है, कल उसी नीद से कुछ और भी आ सकता है। उससे कोई फर्क नही पडता है। गलत सही इसमे चुनाव नही है, ये सिर्फ सोए हुए लोग है। और सोया हुआ आदमी जो कर सकता है, वह कर रहा है।

अभी सोए हुए आदमी के प्रति पश्चात्ताप की शिक्षा से कुछ भी न होगा। इसे स्मरण दिलाना जरूरी है कि यह सवाल नही हैं कि तुम क्या कर रहे हो, सवाल यह है कि तुम क्या हो? तुम भीतर क्या हो, तुम उसी को बाहर फैलाए चले जाते हो। और वही तुम देखने लगते हो। और जितना कोई गहरा उतरेगा उतना ही अकारण भावनाए प्रक्षिप्त होती है और सजीव और साकार मालूम होने लगती है। और जब वह साकार मालूम होने लगती है तो फिर ठीक है, जो हम देखना चाहते हैं वह हम देख लेते हैं। ध्यान रहे, हम वह नही देखते जो है, हम वह देख लेते हैं जो हम देखना चाहते है, या देख सकते है। ध्यान रहे, हम वह नही सुन सकते जो कहा जाता हे, हम वह सुन लेते है जो हम सुनना चाहते है, या जो हम सुन सकते है। हम चुनाव कर रहे हैं। जिंदगी अनन्त है, उसमे से हम चुनाव कर रहे है। हम भी अनन्त है, उसमे से भी हम चुनाव कर रहे है। कभी हम चुन लेते हैं क्रोध करने की वृत्ति, कभी चुन लेते है पश्चात्ताप

दुनिया तब मरेगी, जब मैं मरूगा। प्रलय तो हो गयी असली, जिस दिन मैं मर गया।

हम सब जो कर रहे है, सोच रहे है, उस करने मे कोई बडा भारी प्राण है, कोई बहुत बडा अर्थ है—पानी पर लकीरे खीच रहे है और सोच रहे हैं, रेत पर नाम लिख रहे है और सोच रहे है, कागजो के महल बना रहे हैं और सोच रहे है। खो जाते है आप किसी को पता भी नही चलता कि कब खो गए। मिट जाते है आप किसी को पता भी नही चलता कि कब मिट गए। सलीनता के बाद साधक अपने भीतर रुककर पूछे कि मैं जो कर रहा हू इसका कोई भी अर्थ है? मैं जो हू इसका कोई अर्थ है? मैं कल मिट जाऊगा, एवरीवन विल वी कम्पलीटली सैटिस्फाइड, सब लोग सतुष्ट होगे।

एक दफा दिल्ली मे एक सर्कस के दो शेर छूट गए। भागे तो रास्ते पर साथ छूट गया। सात दिन बाद मिले तो एक तो सात दिन से भूखा था, बहुत परेशान था, एक पुलिया के नीचे छिपा रहा था। कुछ नही मिला उसको, खाने को भी कुछ नही मिला, परेशान हो गया। और छिपे-छिपे जान निकल गयी। दूसरा लेकिन तगडा, स्वस्थ दिखाई पड रहा था, मजबूत दिखाई पड रहा था। पहले सिंह ने पूछा कि मैं तो बडी मुसीबत मे दिन गुजार रहा हू। किसी तरह सर्कस वापस पहुच जाऊ, इसका ही रास्ता खोज रहा हू। वह रास्ता भी नही मिल रहा है। मर गए, सात दिन भूखे रहे। तुम तो बडे प्रसन्न, ताजे और स्वस्थ दिखाई पड रहे हो। कहा छिपे रहे।

उसने कहा—मैं तो पार्लियामेट हाउस मे छिपा था।

खतरनाक जगह तुम गए? वहा इतना पुलिस का पहरा है, वहा भोजन कैसे मिला?

उसने कहा—मैं रोज एक मिनिस्टर को प्राप्त करता रहा।

यह तो बहुत डेंजरस काम है। फस जाओगे।

तो उसने कहा कि नही, जैसे ही मिनिस्टर नदारद होता है, एवरीवन कपलीटली सैटिस्फाइड। कोई भी झझट नही है। नो वन लिसेन्स हिम। कोई कभी भी अनुभव नही करता। वह जगह इतनी बढिया है कि वहा जितने लोग हैं, किसी को भी प्राप्त कर जाओ, बाकी लोग प्रसन्न होते हैं। तुम तो वही चले चलो। वहा अपने दो क्या, पूरे सर्कस के सब शेर आ जाए तो भी भोजन है और काफी दिन तक रहेगा क्योकि भोजन खुद पार्लियामेट हाउस मे आने को उत्सुक है, पूरे मुल्क से भोजन आता ही रहेगा। इधर हम कितना ही कम करे, भोजन खुद उत्सुक है। खर्च करके परेशानी उठाकर आता रहेगा। भोजन, उनके लिए भोजन ही है जिनको आप एम० पी० वगैरह कहते हैं। भोजन है। पार्लियामेट हाउस मे तस्वीरें लटक रही है उन सब लोगो की जो सोचते है उनके बिना दुनिया रुक

रहे हैं इस जिन्दगी मे आप ? यह क्या हो रहा है आपसे ? इसीलिए आए है ? यही है अर्थ ? अगर जोर से झकझोरा तो एक सेकेंड के लिए आपको लगेगा कि सारी जिन्दगी व्यर्थ मालूम पडती है ।

प्रायश्चित मे वही उतर सकता है जो अपने को झकझोर कर पूछ सके कि क्या है अर्थ ? इस जिन्दगी का मतलब क्या है जो मैं जी रहा हू ? यह सुबह से शाम तक का चक्कर, यह क्रोध और घृणा का चक्कर, यह प्रेम और घृणा का चक्कर, यह क्षमा और दुश्मनी का चक्कर यह सब क्या है ? यह धन और यह यश और यह अहकार और यह पद और मर्यादा, यह सब क्या है ? इसमे कोई अर्थ है ? कि मैंने जो कुछ भी किया है इसमे मैं किसी तरफ बढ रहा हू, कही पहुच रहा हू ? कोई यात्रा हो रही है ? कोई मजिल करीब आती मालूम पड रही है ? या मैं चक्कर की तरफ घूम रहा हू ? इन छ बाह्य तपो के बाद यह आसान हो जाएगा। सलीनता के बाद यह आसान हो जाता है कि अब आपकी शक्ति आपके भीतर बैठ गयी है, तब आप झकझोर सकते है और पूछ सकते है उसको जगाकर कि यह मैं क्या कर रहा हू ? यह ठीक है ? यही है ? यह कर लेने से मैं तृप्त हो जाऊगा, सतुष्ट हो जाऊंगा ।

आप मर जाएगे, आपको लगता है—जब तक जीते है—बडी जगह खाली हो जाएगी । कितने काम बन्द हो जाएगे ! कितना विराट चक्कर आप चला रहे थे, लेकिन कब्रिस्तान भरे पडे हुए है ऐसे लोगो से जो सोचते थे कि उनके बिना दुनिया न चलेगी । दुनिया ही न चलेगी, सब शात, चाद सूरज सब रुक जाएगे ।

मुल्ला नसरुद्दीन को किसी ने पूछा है कि अगर दुनिया मिट जाए तो तुम्हारा क्या ख्याल है ? तो उसने पूछा कि कौन-सी दुनिया ? दो तरह से दुनिया मिटती है । उस आदमी ने कहा—दो ! यह कोई नया सिद्धान्त निकाला है तुमने ? दुनिया एक ही तरह से मिट सकती है । नसरुद्दीन ने कहा—दो तरह से मिटेगी—एक दिन, जिस दिन मैं मरूगा, दुनिया मिटेगी । और एक दुनिया मिट जाए, वह दूसरा ढग है ।

हम सब यही सोच रहे है कि जिस दिन मैं मरूगा दुनिया मिट जाएगी ।

मुल्ला मर गया, उसे लोग कब्र मे विदा करके वापस लौट रहे है । तो रास्ते पर एक अजनबी मिला है और उस अजनबी ने पूछा कि ह्वाट वाज द कम्प्लेंट ? मर गया नसरुद्दीन, तकलीफ क्या थी ? शिकायत क्या थी ? जिस आदमी से पूछा, उसने कहा—देयर वाज नो कम्पलेंट, देयर इज नो कम्पलेंट । एवरीवन इज कम्पलीटली, थारोली सैटिस्फाइड । कोई शिकायत नही है । सब सतुष्ट है । मर गया, अच्छा हुआ । नाहक का उपद्रव छूटा ।

नसरुद्दीन ऐसा नही सोच सकता था कभी । मर रहा था, एक दफा

साल भर मे मुल्ला ठीक हो गया। जिस दिन मुल्ला ठीक हुआ मनोचिकित्सक ने बडी खुशी मनायी। और उसने कहा—आज तुम ठीक हो गए हो, यह मेरी बडी सफलता है क्योकि तुम जैसे आदमी को ठीक करना असम्भव कार्य था। इस जिंदगी मे किसी को ठीक न किया तो चलेगा। चलो इस खुशी मे हम बाहर चलें—फूल खिले है, पक्षी गीत गा रहे है, सूरज निकला है, सुबह सुन्दर है—इस खुशी मे हम थोडा पहाड की तरफ चलें।

वे दोनो पहाड की तरफ गए। मुल्ला हाफने लगा, और चिकित्सक है कि भागा चला जा रहा है तेजी से। आखिर मुल्ला ने कहा कि रुको भई। बहुत हो गया। अगर हमारा दिमाग खराब होता तो हम तुम्हारे साथ दौड भी लेते। लेकिन अब ठीक हो गया हू—तुम्ही कहते हो, तो अब इतना ज्यादा नही। तो उस चिकित्सक ने कहा—मील के पत्थर को देखो, कितने दूर आए। अभी कोई ज्यादा दूर नही आए। मुल्ला ने देखा और कहा—दस मील। उस चिकित्सक ने कहा—इट इज नाट सो बैड। टु ईच इट कम्स टु ओनली फाइव माइल्स। पाच मील हमको, पाच मील तुमको। लौटने मे ज्यादा दिक्कत नही है। मतलब यह है कि नसरूद्दीन तो ठीक हो गए, साल भर मे चिकित्सक पागल हो गया। दस मील है लौटना, कोई हर्जा नही, पाच-पाच मील पडता है एक-एक के हिस्से मे। ज्यादा बुरा नही है।

पागल को राजी करना मुश्किल है। सम्भावना यही है कि पागल आपको राजी कर ले। क्योकि पागल पूरा अपनी तरफ तर्क का जाल बनाकर रखता है। रीजन नही है वह, रेशनलाइजेशन है, तर्काभास है। तर्क नही है वे, तर्काभास है। लेकिन वह बनाकर रखता है।

रूजवेल्ट की पत्नी ने सस्मरण लिखा है, इलनोर रूजवेल्ट ने। रूजवेल्ट राष्ट्रपति हुआ उसके पहले गवर्नर था अमरीका के एक राज्य मे। गवर्नर की पत्नी होने की हैसियत से इलनोर रूजवेल्ट एक दिन पागलखाने के निरीक्षण को गयी। एक आदमी ने दरवाजे पर उसका स्वागत किया। उसने समझा वह सुपरिन्टेंडेंट है। वह आदमी उसे ले गया। उसने तीन घण्टे पागलखाने के एक-एक पागल के सम्बन्ध मे जो केस, हिस्ट्री, जो ब्यौरा दिया, विवरण दिया, इलनौर हैरान हो गयी। उसने चलते वक्त उससे कहा कि तुम आश्चर्यजनक हो—तुम्हारी जानकारी, पागलपन के सम्बन्ध मे तुम्हारा अनुभव, तुम्हारा अध्ययन। तुम जितने बुद्धिमान आदमी से मैं कभी मिली नही।

उस आदमी ने कहा—माफ करिए, आप कुछ गलती मे हैं। आई एम नॉट ए सुपरिन्टेंडेंट, आई ऐम वन आफ इन्मेट्स। मैं कोई सुपरिन्टेंडेंट नही। सुपरिन्टेंडेंट आज बाहर गया है। मैं तो इसी पागलखाने मे एक पागल हू।

इलनौर ने कहा—तुम और पागल ! तुम जैसा स्वस्थ आदमी मैंने नही देखा।

जाएगी, चाद-तारे गति बद कर देंगे। कुछ नही रुकता। कुछ पता ही नही चलता इस जगत् मे आप सब खो जाते हैं।

निश्चित ही आपके किए हुए का कोई भी मूल्य नही है, जिसका पता चलता हो। पर दूसरे के लिए मूल्य हो या न हो, यह पूछना साधक के लिए जरूरी है कि मेरे लिए कोई मूल्य है? यह जो कुछ भी कर रहा हू, इसकी क्या आन्तरिक अर्थवत्ता है? ह्वाट इज द इनर सिग्नीफिकेंस? इसकी महत्ता और गरिमा क्या है भीतर? यह ख्याल आ जाए तो आप प्रायश्चित की दुनिया मे प्रवेश करेंगे।

प्रायश्चित की दुनिया क्या है, यह मैं आपसे कहू। प्रायश्चित की दुनिया यह है कि मैं जैसा भी हू, सोया हुआ हू, मै अपने को जगाने का निर्णय लेता हू। प्रायश्चित जागरण का सकल्प हे। पश्चात्ताप, सोए हुए मे की गयी गलतियो का सोए मे ही क्षमा याचना है, क्षमा मागना है। प्रायश्चित सोए हुए व्यक्तित्व को जगाने का निर्णय हे, सकल्प है। यानी जो भी किया है आज तक, वह गलत था क्योकि मैं गलत हू। अब मै अपने को बदलता हू—कर्मो को नही, एक्शन को नही, वीइग को। अब मै अपने को वदलता हू, अव मैं दूसरा होने की कोशिश करता हू। क्या प्रायश्चित का यह अर्थ आपके ख्याल मे आता है? यह ख्याल मे आए तो आप साधक वन जाएगे। यह ख्याल मे न आए तो आप साधारण गृहस्थ होगे। पश्चात्ताप करते रहेगे और वही काम दोहराते रहेगे।

मुल्ला नसरूद्दीन के घर के लोगो ने यह देखकर कि इसके तर्क वडे पागल होते जा रहे हैं, कुछ अजीब बातें करता है। कहता है लाजिकल, कहता तर्कयुक्त है। पागल का भी अपना लाजिक होता है। ध्यान रहे, कई दफे तो पागल बडे लाजीशियन होते है। वडे तर्कयुक्त होते है। अगर आपने किसी पागल से तर्क किया है तो एक वात पक्की है—एक बात पक्की है कि आप उसे कन्विन्स न कर पाएगे। इस वात की सम्भावना हे कि वह आपको कन्विन्स कर ले। मगर इसकी कोई सम्भावना नही कि आप उसको कन्विन्स कर पाए। क्योकि पागल का तर्क एब्सल्यूट होता हे, पूर्ण होता हे।

मुल्ला के तर्क ऐसे होते जा रहे हैं कि घर के लोग, मित्र, परेशान हो गए हैं। एक दिन मुल्ला गाव के धर्मशास्त्री से वात कर रहा है। धर्मशास्त्री ने कहा—कोई सत्य ऐसा नही हे जिसे हम पूर्णता से घोपणा कर सकें। मुल्ला नसरूद्दीन से कहा कि जो आप कह रहे हैं क्या यह पूर्ण सत्य है? उसने कहा—निश्चित, डेफिनेटिली। मुल्ला ने कहा—यह तो वडा गडवड हो गया। आप यह कह रहे है—'किसी सत्य को हम पूर्णता से घोपित नही कर सकते और अव आप कह रहे हैं—'यह सत्य पूर्ण हैं'।'

मुल्ला को मनोचिकित्सक के पास ले जाया गया क्योकि गाव भर परेशान हो गया है उसके तर्कों से। मनोचिकित्सक ने साल भर इलाज किया। कहते हे कि

नियति है। वह उससे प्रगट होगा ही। क्षण दो क्षण रोक सकता है, इधर-उधर डावाडोल कर सकता है, लेकिन वह उससे प्रगट होगा ही।

क्या आपको पता है कि आप अपने को पूरे वक्त सभाल कर चलते है? जो आपके भीतर है उसको दवाकर चलते है? जो आप कहना चाहते है वह नही कहते, कुछ और कहते है। जो आप वताना चाहते है नही वताते, कुछ और वताते हैं। लेकिन कभी-कभी वह उभर जाता है। हवा का कोई झोका और कपडा उठ जाता है और भीतर जो है वह दिख जाता है, कोई परिस्थिति। तव आप कहते है—यह कर्म की भूल है, परिस्थिति की नही। परिस्थिति ने तो केवल अवसर दिया है कि आपके भीतर जो आप छिपा-छिपा कर चल रहे थे वह प्रगट हो गया।

प्रायश्चित तव शुरू होगा जव आप जैसे हैं, अपने को वंसा जानें। छिपाए मत, ढाकें मत, तो आप पाएगे, आप उवलते हुए लावा है, ज्वालामुखी है। ये सव वहाने हैं आपके, ये टीम-टाम है। ये ऊपर से चिपकाए हुए पलस्तर है, ये वहुत पतले हैं। यह सिर्फ दिखावा है। इस दिखावे के भीतर जो आप है, उसको आप स्वीकार करें।

प्रायश्चित का पहला सूत्र है—जो आप है—वुरे भले, निन्दा, योग्य, पापी, वेईमान—एक्सेप्ट इट। आप ऐसे है। तथ्य की स्वीकृति प्रायश्चित है। तथ्य गलती से हो गया, इसको पोछ देना पश्चात्ताप है। तथ्य हुआ, होता ही है मुझसे; जैसा मैं आदमी हू, यही मुझसे होता—इसकी स्वीकृति प्रायश्चित का प्रारम्भ है। स्वीकार, और पूर्ण स्वीकार, कही भी कोई चुनाव नही। क्योकि चुनाव आपने किया तो आप वदलते रहेगे। आज यह, कल वह, परसो वह, आपकी वदलाहट जारी रहेगी। प्रायश्चित पूर्ण स्वीकार है, मै ऐसा हू। मैं चोर हू, तो मैं चोर हू। मैं वेईमान हू, तो मैं वेईमान हू। नही जरूरत है कि आप घोषणा करने जाए कि मैं बेईमान हू क्योकि अक्सर ऐसा होता है कि अगर आप घोषणा करें कि मैं वेईमान हू तो लोग समझेंगे कि वडे ईमानदार हैं। मुझे लोगो ने भगवान कहना शुरू किया। मै चुप रहा वहुत दिन तक, मैंने सोचा कि मैं कहू कि भगवान नही हू तो उनका और पक्का भरोसा बैठ जाएगा कि यही तो लक्षण है भगवान का, कि वह इन्कार करे। वह इन्कार करे कि मैं नही हू।

हमारा मन वडा अजीव है। अगर आपको किसी को सच मे ही वेईमानी करके धोखा देना हो तो आप पहले उसको वता दें कि मैं वहुत वुरा आदमी हू, मैं वहुत बेईमान हू। वह आप पर ज्यादा भरोसा करेगा, आप वेईमानी ज्यादा आसानी से कर सकेंगे। और जव आप घोपणा करते है कि वेईमान हू तव देखना कि इसमे कोई रस तो नही आ रहा है, क्योकि दूसरे के सामने घोपणा मे इसमे भी रस आ सकता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि लियो टाल्स्टाय ने अपनी आत्मकथा

किसने तुम्हे पागल किया है ?

उसने कहा—यही तो मै समझा रहा हू, आज सात साल हो गए समझाते, लेकिन कोई सुनता नही। कोई मानने को राजी नही। अब कोई पागल कहे मै पागल नही, कौन मानने को राजी है ! सुपरिन्टेंडेंट कहता है कि सभी पागल यह कहते है कि हम पागल नही है। इसमे क्या खास बात है ?

रूजवेल्ट की पत्नी ने कहा—यह तो बहुत बुरा मामला है। तुम घबराओ मत, मै जाकर गवर्नर को आज ही कहूंगी, कल ही तुम्हारी छुट्टी हो जाएगी। तुम एकदम स्वस्थ आदमी हो। साधारण नही, असाधारण रूप से बुद्धिमान आदमी हो। तुमको कौन पागल कहता है ? अगर तुम पागल हो तो हम सब पागल हैं।

पागल नें कहा—यही तो मैं समझाता हू, लेकिन कोई मानता नहीं।

इलनौर ने कहा कि तुम बिल्कुल वेफिक्र रहो। मैं आज ही जाकर बात करती हू। कल सुबह ही तुम मुक्त हो जाओगे। नमस्कार करके, धन्यवाद देकर इलनौर मुडी, उस पागल ने उचक कर जोर से लात मारी इलनौर की पीठ पर। सात-आठ सीढिया वह नीचे धडाम से जाकर गिरी। बहुत घबराकर उठी।

उसने कहा—तुमने यह क्या किया ? यह तुमने क्या किया ?

उस पागल ने कहा—जस्ट टु रिमाइंड यू। भूल मत जाना। गवर्नर को कह देना कि कल सुबह ··जस्ट टु रिमाइंड यू।

मगर वह तीन घण्टे पर पानी फिर गया। तो तीन घण्टे जो वह बोल रहा था, उसमे क्या वह ठीक बोल सकता है ? सवाल यह है। क्या उस तीन घण्टे मे वह ठीक बोल सकता हे ? नही, वह ठीक बोलने का सिर्फ आभास पैदा कर सकता है—आभास। तर्काभास पैदा कर सकता हे। लेकिन असलियत नही यह हो सकती कि जो वह बोल रहा है वह ठीक हो। ऐसा दिखाई पड सकता है कि बिल्कुल ठीक है। आप पकड न पाए कि उसमे गलती कहा है, यह दूसरी बात है। लेकिन कोई न कोई घडी वह प्रगट कर देगा।

सोया हुआ आदमी भी इसी तरह कर रहा है। दिन भर बिल्कुल ठीक है, जरा क्रोध नही कर रहा है। अचानक एक रसीद कर देता है चाटा अपने लडके को कि तू देर से क्यो आया ? आप नही समझते, आप कहते हैं यह आदमी बिल्कुल ठीक है, बाकी वक्त तो ठीक ही रहता है। यह इसका चाटा बताता है कि बाकी वक्त यह सिर्फ तर्काभास पैदा करता है। यह ठीक रह नही सकता। क्योकि उस ठीक आदमी से जो यह निकल रहा है, यह निकल नही सकता। एक आदमी को वह छाती मे छुरा मार देता है, हम कहते है कल तक बिल्कुल भला आदमी था—एकदम भला आदमी था। माना कि बिल्कुल भला था, लेकिन वह आभास था। सोया हुआ आदमी अच्छे का सिर्फ आभास पैदा करता है। बुरा होना उसकी

कि मैं पापी हू। क्योंकि घोषणा मे भी खतरा है। नही, प्रायश्चित करने वाला अपने ही समक्ष स्वीकार करे कि मैं ऐसा हू। किसी के सामने कहने की जरूरत नही। इसलिए दूसरा फर्क आपको बताता हू।

पश्चात्ताप दूसरे के सामने प्रगट करना पडता है, प्रायश्चित स्वय के समक्ष। पश्चात्ताप स्वय के समक्ष करने का तो कोई मतलब नही। क्योकि किसी को गाली तो दी दूसरे के समक्ष और क्षमा माग लिया अपने मन मे। इसका क्या मतलब है। जब गाली देने दूसरे के पास गए थे तो क्षमा मागने दूसरे के पास जाना पडेगा। कर्म तो दूसरे से सम्बन्धित होता है इसलिए पश्चात्ताप दूसरे से सम्बन्धित होगा। लेकिन आपकी सत्ता तो किसी से सम्बन्धित नही, आपसे ही सम्बन्धित है। उसकी घोषणा दूसरे के सामने करना अनावश्यक है। और उसमे रस लें तो खतरा है। अपने ही समक्ष—प्रायश्चित अपने समक्ष। अपने ही समक्ष उघाड कर देख ले अपनी पूरी नग्नता को कि मैं क्या हू।

और ध्यान रखें, दूसरे के समक्ष सदा डर है बदलाहट करने का, कुछ और बता देने का। इसलिए कोई भी आदमी सच्ची डायरी नही लिख पाता। भला वह दूसरे को पढने के लिए न लिख रहा हो, लेकिन फिर भी कोई आदमी सच्ची डायरी नही लिख पाता, क्योंकि दूसरा पढ सकता है, इसकी सम्भावना तो सदा ही बनी रहती है। इसलिए सब डायरीज फाल्स होती हैं, झूठ होती हैं। अगर आपने डायरी लिखी है तो आप भलीभाति जानते हैं उसमे आप कितना छोड देते है जो लिखा जाना चाहिए था, कितना जोड देते है, जो नही था, कितना सभाल देते है, जैसी कि बात नही थी। लेकिन यह भी हो सकता है, इससे उल्टा भी हो सकता है कि जो पाप बहुत छोटा था, उसको आप बहुत बडा करके लिखें। अगर आपको पाप की घोषणा करनी है। तो वह भी हो सकता है।

अगस्टीन की किताब 'कनफेसस' सदिग्ध है कि उसमे उसने जो लिखा है, सब हुआ हो। पाप की भी सीमा है। पाप भी आप असीम नहीं कर सकते, पाप की भी सीमा है। और आदमी की सामर्थ्य है पाप करने की। यह आदमी पाप से भी ऊब जाता है और उसका भी सेच्युरेशन प्वाइट है। वहा भी शक्ति रिक्त हो जाती है और आदमी लौट पडता है। लेकिन दूसरे का ख्याल हो अगर मन मे तो रद्दोबदल का डर है, वह आपका सोया हुआ मन कुछ कर सकता है। इसलिए प्रायश्चित है स्वय के समक्ष। इसका दूसरे से कोई भी लेना-देना नही है।

और ध्यान रहे, महावीर प्रायश्चित को इतना मूल्य दे पाए, क्योकि परमात्मा को उन्होने कोई जगह नही दी, नही तो पश्चात्ताप ही रह जाता, प्रायश्चित नही हो सकता था। क्योकि जब परमात्मा देखने वाला मौजूद है—देन इट इज आलवेज फॉर सम वन एल्स। चाहे आदमी के लिए न भी हो, लेकिन जब एक ईसाई फकीर एकात मे भी कह रहा है कि हे प्रभु! मेरे पाप हैं ये, तो दूसरा

मे जितने पाप लिखे है, उतने उसने किए नही थे। उसमे बहुत से पाप कल्पित है जो उसने घोषणा करने के लिए लिखे। किए नही थे, आप सोच सकते है ? पुण्यो की कोई घोषणा करे कि मैंने इतना दान किया तो आप कहेगे कि यह घोषणा हो सकती है। लेकिन कोई कहे कि मैंने इतनी चोरी की, यह भी घोषणा हो सकती है ? कोई ऐसा करेगा ? आपने कभी सोचा है कि कोई अपने पाप की भी चर्चा करेगा, इतने जोर से ? नही, पापी करते है। लेकिन टाल्स्टाय जैसे लोग नही करते। जेलखाने मे आप जाइए, जिसने दस रुपए की चोरी की है, वह कहता है दस लाख का डाका डाला। क्योकि दस की भी कोई चोरी करने का मतलब है ? तो दस के ही चोर है ! यह कोई मतलब नही है।

एक कैदी कारागृह मे प्रविष्ट हुआ। दूसरे कैदी ने, जो वहा सीखचो से टिक कर बैठा था, उसने कहा—'कितने दिन की सजा ?' उसने कहा कि 'चालीस साल की सजा।' तो उसने कहा कि 'तू दरवाजे के पास बैठ। हम दीवार के पास रहेगे।' पहले आदमी ने पूछा—'क्यो ?' उसने कहा—हमको पिचहत्तर साल की सजा मिली है। तो तेरा मौका पहले आएगा निकलने का। सिक्खड मालूम पडता है। चालीस साल की कुल ! छोटा-मोटा काम किया ! हमको पिचहत्तर साल की सजा है। हम दीवार के पास रहेगे, तू दरवाजे के पास। तेरा मौका निकलने का पहले आएगा। चालीस साल का तो मामला है। हमको और आगे पैंतीस साल रहना है। इसका मतलब है कि उन्होने मास्टरी सिद्ध कर दी कि अब तू इस कमरे मे शिष्य बनकर रह।

तो जेलखानो मे तो घोषणा चलती है। लेकिन यह कभी ख्याल नही आता साधारणत. कि साधु-सन्तो ने भी जितने पापो की चर्चा की है, उतने वस्तुत: किए हैं। या पाप की घोषणा मे भी रस हो सकता है ?

मनोवैज्ञानिक कहते हैं—रस हो सकता है। इस हिसाब से हिसाब नही लगाए गए हैं कभी। गाधी की आत्मकथा का कभी न कभी मनोविश्लेषण होना चाहिए कि उन्होने जितने पापो की अपने बचपन मे बात की है उतने किए ? या उसमे कुछ कल्पित है। जरूरी नही है कि वे झूठ बोल रहे हो। आदमी का मन ऐसा है कि वह मान रहा हो कि जो वह कर रहा है, उसने किया, यह जरूरी नही है। तो वह जानकर लिख रहे हो कि यह मैंने किया नही और लिख रहा हू। नही बहुत बार दोहरा-तेहरा कर उनको भी रस आ गया हो और लगता हो किया है। आप बहुत-सी ऐसी स्मृतिया बनाए हुए है जो आपने कभी की नही, जो कभी हुआ नही। लेकिन आपने भरोसा कर लिया है, मान कर बैठ गए है और धीरे-धीरे राजी हो गए है। लियो टाल्स्टाय ने इतने पाप नही किए ऐसा मनस्विदो का कहना है, और उसने घोषणा की है।

नही तो मैं यह नही कह रहा कि प्रायश्चित करने वाला घोषणा करे जाकर

मुल्ला के खुद के जीवन मे ऐसा घटा कि वह वेहोश हो गया और लोगो ने समझा कि मर गया। उसकी अर्थी वाध ही रहे थे कि वह होश मे आ गया। लोगो ने कहा—अरे, तुम मरे नही! मुल्ला ने कहा—मैं मरा नही, और जितनी देर तुम समझ रहे थे कि मैं मर गया, उतनी देर भी मैं मरा हुआ नही था। मुझे पता था कि मैं जिन्दा हू। तो उन्होने कहा—तुम विल्कुल वेहोश थे, तुम्हे पता कैसे हो सकता हे। क्या तुम्हे पता है? क्या प्रमाण तुम्हारे भीतर था कि तुम जिन्दा हो? उसने कहा—प्रमाण यह था कि मैं भूखा था, मुझे भूख लगी थी। अगर स्वर्ग मे पहुच गया होता तो कल्पवृक्ष के नीचे भूख खत्म हो गई होती। और पैर मे मुझे ठडक लग रही थी। अगर नर्क मे पहुच गया होता तो वहा ठडक कहा है, और दो ही जगहे हैं जाने को। मुझे पता था कि मैं जिन्दा हू।

मुल्ला के गाव का एक नास्तिक मर गया—वह अकेला नास्तिक था। वह मर गया तो मुल्ला उसको विदा करने गया। वह लेटा हुआ हैं। सूट सुन्दर उसे पहना दिया गया था टाई वाध दी गयी थी। सव विल्कुल तैयार। मुल्ला ने वडे दुख से कहा—पुअर मैन! थारोली ड्रेस्ड ऐंड नो व्हेअर टु गो? नास्तिक था, न नर्क जा सकता था, न स्वर्ग। क्योकि मानता ही नही। तो मुल्ला ने कहा—इतने विल्कुल तैयार लेटे हो, गरीव वेचारा और जाना कही भी नही है।

वह जो हमारे भीतर है—आग है, नर्क है, जहा हम खडे ही हैं। नर्क जाने को जगह नही है कोई, वहा हम खडे हुए है, वह हमारी स्थिति है। स्वर्ग कोई स्थान नही है। इसलिए महावीर पहले आदमी है इस पृथ्वी पर जिन्होने कहा कि स्वर्ग और नर्क मनोदशाए हैं, माइड स्टेट्स है, चित्तदशाए है। मोक्ष कोई स्थान नही है इसलिए महावीर ने कहा कि वह स्थान के वाहर है—वियोंड स्पेस। वह कोई स्थान नही है, वह सिर्फ एक अवस्था हे। लेकिन जहा हम खडे है, वह नर्क है। इस नर्क की प्रतीति जितनी स्पष्ट हो जाए उतने आप प्रायश्चित मे उतरेंगे। और जितनी प्रगाढ इनटेंस हो जाए, कि आग जलने लगे आपके चारो तरफ तो छलाग लग जाएगी। और रूपातरण शुरू हो जाएगा।

उस छलाग के पाच सूत्र हम कल से धीरे-धीरे शुरू करेंगे। यह पहला सूत्र है और ठीक से समझ लेना जरूरी हैं। सलीनता जैसे अन्तिम सूत्र है वाह्य-तप का, और कीमती है, उसके वाद ही प्रायश्चित हो सकता है। प्रायश्चित वहुत कीमती है क्योंकि वह पहला सूत्र है अन्तर-तप का। अगर आप प्रायश्चित नहीं कर सकते तो अन्तर-तप मे कोई प्रवेश नही है, वह द्वार है।

आज इतना ही। रुकें पाच मिनट, कीर्तन करें।

मौजूद है, दी अदर इज प्रेजेंट। वह परमात्मा ही सही, लेकिन दूसरे की मौजूदगी है। महावीर कहते है—कोई परमात्मा नही है जिसके समक्ष तुम प्रगट कर रहे हो, तुम ही हो। महावीर ने व्यक्ति को इतना ज्यादा स्वय की नियति निर्णीत किया है, जिसका हिसाब नही। तुम ही हो, कोई नही कोई आकाश मे सुनने वाला नही जिससे तुम कहो कि मेरे पाप क्षमा कर देना। कोई क्षमा करेगा नही, कोई है नही। चिल्लाना मत, घोषणा से कुछ भी न होगा। दया की भिक्षा मत मागना, क्योकि कोई दया नही हो सकती। कोई दया करने वाला नहीं है।

प्रायश्चित—नही, दूसरे के समक्ष नही, अपने ही समक्ष अपने नर्क की स्वीकृति है। और जब पूर्ण स्वीकृति होती हे भीतर, तो उस पूर्ण स्वीकृति से ही रूपातरण शुरू होता है। यह बहुत कठिन मालूम पडेगा कि पूर्ण स्वीकृति से रूपातरण क्यो शुरू हो जाता है! जैसे ही कोई व्यक्ति अपने को पूरा स्वीकार करता है उसकी पुरानी इमेज, उसकी पुरानी प्रतिमा खण्ड-खण्ड होकर गिर जाती है, राख हो जाती है। और अब वह जैसा अपने को पाता है, ऐसा अपने को क्षण भर भी देख नही सकता, बदलेगा ही और उपाय नही है। जैसे घर मे आग लग गई हो और पता चल गया कि आग लग गई, तब आप यह न कहेगे कि अब हम सोचेंगे, बाहर निकलना है कि नही। तब आप यह न कहेगे कि गुरु खोजेंगे, कि मार्ग क्या है? तब आप यह न कहेगे कि पहले बाहर कुछ हे भी पाने योग्य कि हम घर छोडकर निकल जाए और बाहर भी कुछ न मिले। ये सब उस आदमी की बातें हैं जिसके मन मे कही-न-कही ख्याल बना है कि घर मे कोई आग नही लगी। एक बार दिख जाए लपटे चारो तरफ, आदमी बाहर हो जाता है। जम्प, छलाग लग जाती है।

मुल्ला नसरूद्दीन की पत्नी का आपरेशन हुआ। तो जब उसे आपरेशन की टेबल पर लिटाया गया तो खिडकियो के बाहर वृक्षो मे फूल खिले हुए हैं, इन्द्रधनुष फैला हुआ है। जब उसका आपरेशन हो गया और उसके मुह से कपडा उठाया गया तो उसने देखा कि सब पर्दे बन्द है, खिडकिया, द्वार-दरवाजे बन्द हैं, तो उसने मुल्ला से पूछा कि सुन्दर सुबह थी, क्या साझ हो गई या रात हो गई! इतनी देर लग गई! मुल्ला ने कहा—रात नही हुई है, पाच मिनट हुआ। तो उसने कहा—ये दरवाजे क्यो बन्द है? तो मुल्ला ने कहा—बाहर के मकान मे आग लग गई है। और हम डरे कि अगर कही तू होश मे आए और एकदम देखे आग लगी, तो समझे कि नर्क मे पहुच गए है। इसलिए हमने खिडकिया बन्द कर दी कि नर्क मे आग जलती रहती है तो तू कही यह न सोच ले कि मर गए, खत्म। कभी ऐसा हो जाता है कि सोच लिया कि मर गए तो आदमी मर भी जाता है। तो मुल्ला ने कहा—यह मैंने बन्द की हैं खिडकिया, और मकान मे आग लग गयी है बाहर।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो।
देवा वि त नमंसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

दूसरे को दोषी देखने का जो आन्तरिक रस है वह स्वय को निर्दोष सिद्ध करने की असफल चेष्टा है, क्योकि निर्दोष कोई अपने को सिद्ध नही कर सकता। निर्दोष कोई हो सकता है, सिद्ध नही कर सकता। सच तो यह है कि सिद्ध करने की कोशिश मे ही निर्दोष न होना छिपा है। निर्दोषता सिद्ध करने की कोशिश भी ठीक नही है। कोई यदि आपको किसी के सम्बन्ध मे कोई पुण्य खबर दे तो मानने का मन नही होता। कोई आपसे कहे कि दूसरा व्यक्ति बहुत सज्जन, भला, साधु है तो मानने का मन नही होता। मन एक भीतरी रेसिस्टेंस एक भीतरी प्रतिरोध करता है। मन भीतर से कहता है—ऐसा हो नहीं सकता। इस भीतर की लहर पर थोडा ध्यान करें, अन्यथा विनय की उपलब्ध न होगी।

जब कोई किसी दूसरे की शुभ चर्चा करता है तो मन मानने को नहीं होता। भीतर एक लहर कपित होती है और कहती है कि प्रमाण क्या है कि दूसरा सज्जन है, साधु है ? वह प्रमाण की तलाश इसीलिए है ताकि अप्रमाणित किया जा सके कि दूसरा साधु नही, सज्जन नही। लेकिन कभी आपने इसके विपरीत बात देखी है ? अगर कोई किसी के सम्बन्ध मे निंदा करे तो आपका मन एकदम मानने को आतुर होता है। आप निंदा के लिए प्रमाण नही पूछते है। अगर कोई आदमी कहे कि फला आदमी ब्रह्मचारी है, तो आप पूछते हैं—प्रमाण क्या है ? लेकिन कोई आदमी कहे फला आदमी व्यभिचारी है, आपने प्रमाण पूछा है ? नही, फिर तो कोई जरूरत नही रह जाती प्रमाण की। कहना पर्याप्त है। किसी ने कहा,तो पर्याप्त है।

और ध्यान रहे, अगर कोई कहे कि दूसरा आदमी ब्रह्मचर्य को उपलब्ध है तो आप बडे मन को मसोस कर मान सकते हैं, प्रफुल्लता से नही। और जब आप दूसरे को कहेगे, तो जितने जोर से उसने कहा था उस जोर मे कमी आ जाएगी। तीन चार आदमियो मे यात्रा करते-करते वह ब्रह्मचर्य खो जाएगा। लेकिन अगर किसी ने कहा—फला आदमी व्यभिचारी है तो जब आप दूसरे से कहते है, आपने ख्याल किया है—आप कितना गुणित करते है उसे ? कितना मल्टीप्लाय करते हैं ? जितना रस उसने लिया था, उससे दुगुना रस आप दूसरे को सुना कर लेते हैं। पाच आदमियो तक पहुचते-पहुचते पता चलेगा कि उससे ज्यादा व्यभिचारी आदमी दुनिया मे कभी पैदा नही हुआ था। पाच आदमियो के बीच पाप इतनी बडी यात्रा कर लेगा।

इस मन के आन्तरिक रस को देखना, समझना जरूरी है। तो विनय की साधना का पहला सूत्र तो है कि हमारे अहकार के सहारे क्या है ? हम किस सहारे से अविनीत बने रहते है ? वे सहारे न गिरे तो विनय उत्पन्न नही होगा। निन्दा मे रस मालूम होता है, स्तुति मे पीडा मालूम होती है। और इसलिए अगर आपको किसी मजबूरी मे किसी की स्तुति करनी पडती है तो आप बहुत शीघ्र उसके सामने

विनय : परिणति निरअहंकारिता की

पन्द्रहवां प्रवचन : दिनांक १ सितम्बर, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

अंतर-तप की दूसरी सीढी है विनय। प्रायश्चित के बाद ही विनय के पैदा होने की सम्भावना है। क्योंकि जब तक मन देखता रहा है दूसरे के दोष, तब तक विनय पैदा नही हो सकती। जब तक मनुष्य सोचता है कि मुझे छोडकर शेष सब गलत हैं, तब तक विनय पैदा नही हो सकती। विनय तो पैदा तभी हो सकती है जब अहकार दूसरो के दोष देखकर अपने को भरना बन्द कर दे। इसे हम ऐसा समझें कि अहंकार का भोजन है दूसरो के दोष देखना। वह अहकार का भोजन है। इसलिए यह नही हो सकता है कि आप दूसरो के दोष देखते चले जाएं और अहकार विसर्जित हो जाए। क्योंकि एक तरफ आप भोजन दिए चले जाते हैं और दूसरी तरफ अहकार को विसर्जित करना चाहते हैं, न हो सकेगा। इसलिए महावीर ने बहुत वैज्ञानिक क्रम रखा है—प्रायश्चित पहले, क्योंकि प्रायश्चित के साथ ही अहकार को भोजन मिलना बन्द हो जाता है।

परन्तु, हम दूसरे के दोष देखते ही क्यो हैं ? शायद इसे आपने कभी ठीक से न सोचा होगा कि हमें दूसरो के दोष देखने मे इतना रस क्यो है ? असल मे दूसरो का दोष हम देखते ही इसलिए हैं कि दूसरो का दोष जितना दिखाई पडे, हम उतने ही निर्दोष मालूम पडते हैं। ज्यादा दिखाई पडे दूसरे का दोष तो हम ज्यादा निर्दोष मालूम पडते है। उस पृष्ठभूमि मे, जहा दूसरे दोषी होते हैं हम अपने को निर्दोष देख पाते हैं। अगर दूसरे निर्दोष दिखाई पड़ें तो हम दोषी दिखाई पड़ने लगेंगे। तो हम दूसरो को जितने काले रंग सकते हैं, उतने रग देते हैं। उनकी काली रंगी शक्लो के बीच हम गोर वर्ण मालूम पडते हैं। और दूसरे के पास हम गोर वर्ण नही हो सकते क्योंकि हम सहज ही काले दिखाई पडने लगेंगे।

उसने सौ रुपए फीस बताए।

मुल्ला ने खीसे में हाथ डाला, नोट गिने, दिए।

मनोवैज्ञानिक ने कहा—लेकिन हाथ में कुछ भी नहीं है।

मुल्ला ने कहा—यह अदृश्य नोट है। ये दिखाई नहीं पड़ते। घूर-घूर कर देखो तो दिखाई पड़ सकते हैं।

आदमी खुद नग्न घूमता हो बाजार में तो भी शक होता है कि दूसरे लोग घूर-घूर कर क्यों देखते हैं? और अपने घर में वह दूरबीन लगा कर आधा मील दूर किसी की खिड़की में देख सकता है और कह सकता है कि वह स्त्री मुझे प्रलोभित कर रही है। हम सब ऐसे ही हैं। हम सबका ताल-मेल ऐसा ही है व्यक्तित्व का। तो विनय तो कैसे पैदा होगी? विनय के पैदा होने का कोई उपाय नहीं है। अहंकार ही पैदा होगा। जब कोई किसी की हत्या भी कर देता है तो वह यह नहीं मानता कि हत्या में मैं अपराधी हूं। वह मानता है कि उस आदमी ने ऐसा काम ही किया था कि हत्या करनी पड़ी। दोषी वही है।

मुल्ला ने तीसरी शादी की थी। तीसरी पत्नी घर में आयी तो दो बड़ी-बड़ी तस्वीरें देख कर उसने पूछा कि ये तस्वीरें किसकी हैं? मुल्ला ने कहा—मेरी पिछली दो पत्नियों की। मुसलमान घर में तो चार पत्नियां तो हो ही सकती हैं। उसने पूछा—लेकिन वे हैं कहां? मुल्ला ने कहा—अब वे कहां? पहली मर गयी मसरूम पायजनिंग से। उसने कुकुरमुत्ते खा लिए जो जहरीले थे। उसने पूछा—और दूसरी कहां है? मुल्ला ने कहा—वह भी मर गयी। फ्रैक्चर आफ द स्कल, खोपड़ी के टूट जाने से। बट द फाल्ट वाज हर। शी वुड नाट ईट मसरूम्स। भूल उसकी ही थी। मैं कितना ही कहूं वह मसरूम खाने को, कुकुरमुत्ते खाने को राजी नहीं होती थी। तो खोपड़ी के टूटने से मर गयी। खोपड़ी मुल्ला ने तोड़ी, क्योंकि वह मसरूम नहीं खाती थी। मगर दोष उसका ही था, भूल उसकी ही थी।

भूल सदा दूसरे की है। भूल शब्द ही दूसरे की तरफ तीर बनाकर चलता है। वह कभी अपनी होती ही नहीं। और जब अपनी नहीं होती तो विनय का कोई भी कारण नहीं है। अहंकार, यह दूसरे की तरफ जाते हुए तीरों के बीच में निश्चित खड़ा होता है, बलशाली होता है। इसलिए महावीर ने प्रायश्चित को पहला अंतर-तप कहा है कि पहले तो यह जान लेना जरूरी होगा कि न केवल मेरे कृत्य गलत हैं बल्कि मैं ही गलत हूं। तीर सब बदल गए, रुख बदल गया। वे दूसरे की तरफ नहीं जाते, अपनी तरफ मुड़ गए। ऐसी स्थिति में ह्म्बलनेस, विनय को साधा जा सकता है। फिर भी महावीर ने निरअहंकारिता नहीं कही। महावीर कह सकते थे निरअहंकार, लेकिन महावीर ने इगोलैसनैस नहीं कही, कहा विनय। क्योंकि निरअहंकार नकारात्मक है और उसमें अहंकार की स्वी-

से हटकर, तत्काल कही जाकर उसकी निंदा करके वैक वैलेस वरावर कर देते हैं। देर नही लगती। सन्तुलन पर ला देते है तराजू को वहुत शीघ्र। जव तक सन्तुलन न आ जाए तव तक मन को चैन नही पडता। लेकिन इससे उल्टा इतने आसानी से नही होता। जव आप किसी को गालिया देकर जाते हैं तो तत्काल आप सतुलन स्थापित नही करते कि कही जाकर उसके गुणो की भी चर्चा कर लें। मन की सहज इच्छा यह है कि दूसरे निंदित हो। तो दूसरो को दोप तो हम हजारो मील से देख पाते है, अपना दोप इतने निकट रहकर भी नही देख पाते।

मुल्ला नसरूद्दीन ने अपने गाव के मेयर को कई वार फोन किया कि एक स्त्री वहुत अभद्र व्यवहार कर रही है मेरे साथ। अपनी खिडकी मे इस भाति खडी होती है कि उसकी मुद्राए आमत्रण देती है, और कभी-कभी अर्धनग्न भी वह खिडकी से दिखाई पडती है। इसे रोका जाना चाहिए। यह समाज की नीति पर हमला है। कई वार फोन किया तो मेयर मुल्ला के घर आया। मुल्ला अपनी चौथी मजिल पर ले गया, खिडकी के पास कहा—देखिए वह सामने का मकान, उसी मे वह स्त्री रहती है। मकान नदी के उस पार कोई आधा मील दूर था। मेयर ने कहा—वह स्त्री उस मकान मे रहती है और उस मकान की खिडकियो से आपको टेम्पटेशस पैदा करती है? उधर से आपको उकसाती है? यहा से तो खिडकी भी ठीक से नही दिखाई पड रही, वह स्त्री कैसे दिखाई पडती होगी? मुल्ला ने कहा—ठहरो—उसके देखने का ढग—स्टूल पर चढो, यह दूरवीन हाथ मे लो, तव दिखाई पडेगी। लेकिन दोष उस स्त्री का ही है जो आधा मील दूर है!

और फिर एक दिन ऐसा भी हुआ कि मुल्ला ने अपने गाव के मनोचिकित्सक के दरवाजे को खटखटाया। भीतर गया, पूरा नग्न था।

मनोचिकित्सक भी चौका। नीचे से ऊपर तक देखा।

मुल्ला ने कहा कि मैं यही पूछने आया हू और वही भूल आप कर रहे हैं। मै सडको पर से निकलता हू तो लोग न मालूम पागल हो गए हे, मुझे घूर-घूर कर देखते हैं। ऐसी क्या मुझमे कमी है या ऐसी क्या मुझमे भूल है कि लोग मुझे घूर-घूर कर देखते हैं। मनोवैज्ञानिक खुद ही घूर-घूर कर देख रहा था, क्योकि मुल्ला निपट नग्न खडा था। मुल्ला ने कहा—यह पूरा गाव पागल हो गया हैं, मालूम पडता हैं। जहा से भी निकलता हू, वही लोग घूर-घूर कर देखते है। आपका विश्लेपण क्या है?

मनोवैज्ञानिक ने कहा—ऐसा मालूम पडता है कि आप अदृश्य वस्त्र पहने हुए है, दिखाई न पडने वाले वस्त्र पहने हुए है। शायद उन्ही वस्त्रो को देखने के लिए लोग घूर-घूर कर देखते होगे।

मुल्ला ने कहा—विल्कुल ठीक है। तुम्हारी फीस क्या हैं?

उस मनोवैज्ञानिक ने सोचा ऐसा आदमी, इससे फीस ठीक से ले लेनी चाहिए।

कि तथाकथित जिन्हे हम पापी कहते है वे ज्यादा सहृदय होते है। और जिन्हे हम महात्मा कहते है, वे इतने सहृदय नही होते। महात्माओं मे ऐसी दुष्टता का और ऐसी कठोरता का छिपा हुआ जहर मिलेगा, जैसा कि पापियो मे खोजना कठिन है।

यह बहुत उल्टा दिखाई पडता है, लेकिन इसके पीछे कारण है। यह उल्टा नही है। पापी दूसरे पापियो के प्रति सदय हो जाता है क्योकि वह जानता है—मैं ही कमजोर हू तो मैं किसकी कमजोरी की निन्दा करने जाऊ! इसलिए किसी पापी ने दूसरे पापी के लिए नर्क का आयोजन नही किया। पुण्यात्मा करते है। उनका मन नही मानता कि उनको छोडा जा सके। और इस बात की पूरी सम्भावना है कि उनके पुण्य करने मे रस केवल इतना ही हो कि वे पापियो को नीचा दिखा सकते है। अहकार ऐसे रस लेता है।

तो एक तो जैसे ही तीर अपनी तरफ मुड जाते है चेतना के, और अपनी भूलें, सहज भूलें दिखाई पडनी शुरू हो जाती है, वैसे ही दूसरे की भूलो के प्रति एक अत्यन्त सदय भाव आ जाता है। तब हम जानते हैं कि दूसरे को दोषी कहना व्यर्थ है। इसलिए नही कि वह दोषी न होगा या होगा, इसलिए कि दोष इतने स्वाभाविक हैं। मुझमे भी है। और जब स्वय मे दोष दिखाई पड़ने शुरू होते हैं तो दूसरो से अपने को श्रेष्ठ मानने का कोई कारण नही रह जाता।

लेकिन जैन शास्त्र जो परिभाषा करते है विनय की वह बडी और है। वे कहते है—जो अपने से श्रेष्ठ है, उनका आदर विनय है। गुरुजनो का आदर, माता-पिता का आदर, श्रेष्ठ-जनो का आदर, साधुओ का आदर, महाजनों का आदर, लोकमान्य पुरुषो का आदर—इनका आदर विनय है। यह बिलकुल ही गलत है, यह आमूल गलत है। यह जड से गलत है। यह बात ठीक नही है। यह इसलिए ठीक नही है कि जो व्यक्ति दूसरे को श्रेष्ठ देखेगा वह किसी को अपने से निकृष्ट देखता ही रहेगा। यह असम्भव है कि आपको कोई व्यक्ति श्रेष्ठ मालूम पडे और कोई व्यक्ति ऐसा न मालूम पडे जो आपसे निकृष्ट है क्योकि तराजू मे एक पलडा नही होता है।

आप दूसरे को जब तक श्रेष्ठ देख सकते हैं, यू कैन कम्पेयर, आप तुलना कर सकते है। आप कहते है कि यह आदमी श्रेष्ठ है क्योकि मैं चोरी करता हू, यह आदमी चोरी नही करता। लेकिन तब आप इस बात को देखने से कैसे बचेंगे कि कोई आदमी आपसे भी ज्यादा चोर हो। आप कह सकते हैं—यह आदमी साधु है, लेकिन तब आप यह देखने से कैसे बचेंगे कि दूसरा आदमी असाधु है। जब तक आप साधु को देख सकते है, तब तक असाधु को देखना पडेगा। और जब तक आप श्रेष्ठ को देख सकते हैं तब तक अश्रेष्ठ आपकी आखो मे मौजूद रहेगा। तुलना के दो पलडे होते है।

कृति है। अहकार को इन्कार करने के लिए भी उसका स्वीकार है। और जिसे हम इन्कार करने के लिए भी स्वीकार करना पडे, उसका इन्कार किया नही जा सकता। जैसे कोई आदमी यह नही कह सकता कि मै मर गया हू क्योकि मै मर गया हू, यह कहने के लिए मैं हू जिन्दा, इसे स्वीकार करना पडेगा। जैसे कोई आदमी यह नही कह सकता कि मैं घर के भीतर नही हू क्योकि मै घर के भीतर नही हू, यह कहने के लिए भी मुझे घर के भीतर होना पडेगा।

निरअहकार की साधना मे यही भूल होती है कि अहकारी मैं हू, यह स्वीकार करना पडता है और इस अहकार को निरअहकार मे बदलने की कोशिश करनी पडती है। बहुत डर तो यह है कि वह अहकार ही अपने ऊपर निरअहकार के वस्त्र ओढ लेगा और कहेगा—देखो, मैं निरअहकारी हू। अहकार है ही कहा मुझमे। अहकार यह भी कह सकता है कि अहकार मुझमे नही है। तब वह विनय नही रह जाती, वह अहकार का ही एक रूप है—प्रच्छन्न, छिपा हुआ, गुप्त, और पहले प्रगट रूप से ज्यादा खतरनाक है। इसलिए निरअहकार नही कहा है जानकर; क्योकि कोई भी अतर-तप अगर निषेधात्मक रूप से पकडा जाए तो सूक्ष्म हो जाएगी वह बीमारी जिसको आप हटाने चले थे, मिटाना कठिन होगा। हा, विनय आ जाए तो आप निरअहकारी हो जाएंगे। लेकिन निरअहकारी होने की कोशिश अहकार को नष्ट नही कर पाती। अहकार इतने विनम्र रूप ले सकता है जिसका हिसाब लगाना कठिन है। अहकार कह सकता है—मैं तो कुछ भी नही, आपके पैरो की धूल हू। और तब भी इस घोषणा मे बच सकता है। इसलिए बहुत बारीक और बहुत सूक्ष्म भेद है।

विनय है पाजिटिव। महावीर विधायक जोर दे रहे है कि आपके भीतर वह अवस्था जन्मे जहा दूसरा दोषी नही रह जाता। और जिस क्षण मुझे अपने दोष दिखाई पडने शुरू होते हैं, उस क्षण विनय बहुत-बहुत रूपो मे बरसती है। एक तो जो व्यक्ति अपने दोष नही देखता वह दूसरे के दोष बहुत कठोरता से देखता है। जिस व्यक्ति को अपने दोष दिखाई पडने शुरू होते हैं वह दूसरे के दोषो के प्रति बहुत सदय हो जाता है, क्योकि वह जानता है, मेरे भीतर भी यही है।

सच तो यह है कि जिस आदमी ने चोरी न की हो उस आदमी को चोरी के सम्बन्ध मे निर्णय का अधिकार नही होना चाहिए। क्योकि वह समझ ही नही पाएगा कि चोरी मनुष्य कैसी स्थितियो मे कर लेता है। लेकिन हम चोर को कभी चोर का निर्णय करने को न बैठाएंगे। हम उसको बिठाएगे जिसने कभी चोरी नही की है। उससे जो भी होगा वह अन्याय होगा। अन्याय इसलिए होगा कि वह अति कठोर होगा। वह जो सदयता आनी चाहिए—अपने भीतर की कमजोरी को जान कर दूसरे की कमजोरी भी स्वाभाविक है—ऐसा जो सहृदय भाव आना चाहिए वह उसके भीतर नही होगा। इसलिए जानकर आप हैरान होगे

अन्यथा बेचैनी पैदा हो जाती है। तो जब आप एक साधु खोजेंगे, तो निश्चित रूप से आप एक असाधु को खोजेंगे, और तुलना बराबर हो जाएगी। जब भी आप एक भगवान खोजेंगे, तब आप एक भगवान खोजेंगे जिसकी निन्दा आपको अनिवार्य होगी। जो लोग महावीर को भगवान मानते हैं, वे बुद्ध को भगवान नही मान सकते, वे कृष्ण को भगवान नही मान सकते। जो लोग कृष्ण को भगवान मानते हैं, वे लोग महावीर को, बुद्ध को भगवान नहीं मान सकते। क्यो नही मान सकते ? नही मान सकते इसलिए कि सतुलन करना पडता है जिन्दगी मे। एक को पल्ले पर भगवान रख दिया तो दूसरे को रखना पडेगा जो भगवान नही हैं—दूसरे पल्ले पर। तभी सतुलन पूरा होगा।

जैन अगर किताबें भी लिखते हैं बुद्ध के बाबत—क्योकि बुद्ध और महावीर समकालीन थे और उनकी शिक्षाए कई अर्थों मे समान मालूम पडती है—तो मैंने अब तक एक हिम्मतवर जैन नही देखा जिसने बुद्ध को भगवान लिखने की हिम्मत की हो। अगर साथ-साथ लिखते भी हैं तो वे लिखते हैं—भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध। बडे मजे की बात है। बहुत हिम्मतवर हैं ये लोग जो महात्मा बुद्ध लिखते है। लेकिन उनकी भी हिम्मत नही जुट पाती कि वे भगवान बुद्ध कह सकें। भगवान कृष्ण कहना तो बहुत ही मुश्किल मामला है, क्योकि शिक्षाए बहुत विपरीत हैं। तो कृष्ण को तो जैनो ने नर्क मे डाल रखा है। उनके हिसाब से इस समय कृष्ण नर्क मे हैं। क्योकि युद्ध इसी आदमी ने करवाया।

और हिन्दुओ ने तो महावीर की कोई गणना ही नहीं की, एक किताब मे उल्लेख नही किया महावीर का। यानी नर्क मे डालने योग्य भी नहीं माना। आप ही समझना। कोई हिसाब ही नही रखा। अगर बौद्धो के ग्रथ नष्ट हो जाए तो जैनो के पास अपने ही ग्रन्थो के सिवाय महावीर का हिन्दुस्तान मे कोई उल्लेख नही होगा। हिन्दुओ ने तो गणना भी नहीं की कि यह आदमी कभी हुआ भी है। इस भाति महावीर जैसा आदमी पैदा हो, हिन्दुस्तान मे पैदा हो, चारो तरफ हिन्दुओ से भरे समाज मे पैदा हो और हिन्दुओ का एक शास्त्र उल्लेख न कर पाए, यह जरा सोचने जैसा मामला है।

इसलिए जब पहली दफा पाश्चात्य विद्वानो ने महावीर पर काम शुरू किया तो उन्हे शक हुआ कि यह आदमी कभी हुआ नही होगा। क्योकि हिन्दुओ के ग्रथो मे कोई उल्लेख न हो, यह असम्भव है। तो उन्होने सोचा कि शायद यह बुद्ध का ही ख्याल है जैनो का। यह बुद्ध को ही मानने वाले दो तरह के लोग है, और बुद्ध और महावीर की वह जो विशेषण दिए गए वह कई जगह समान हैं। जैसे बुद्ध को भी जिन कहा गया है, महावीर को भी जिन—जिसने अपने को जीत लिया। महावीर को भी बुद्ध पुरुष कहा गया है, बुद्ध को भी बुद्ध कहा गया है। तो शायद, यह बुद्ध का ही भ्रम है। इसलिए पश्चिम के विद्वानो ने तो महावीर

इसलिए मै नही मानता हू कि महावीर का यह अर्थ है कि अपने से श्रेष्ठजनो को आदर···क्योंकि फिर निकृष्ट जनो को अनादर देना ही पड़ेगा। यह बहुत मजेदार बात है। यह हमने कभी नही सोचा। हम इस तरह सोचते नही। और जीवन बहुत जटिल है और हमारा सोचना बहुत बचकाना है। हम कहते है श्रेष्ठजनो को आदर। लेकिन निकृष्ट जन फिर दिखाई पडेगे। जब आप सीढियो पर खडे हो गए तब पक्का मानना, कि आपको जब आपसे आगे कोई सीढी पर दिखाई पडेगा तो जो पीछे है वह कैसे दिखाई न पडेगा। और अगर पीछे का दिखाई पडना बन्द हो जाएगा तो जो आपके आगे है, वह आपसे आगे है यह आपको कैसे मालूम पडेगा? वह पीछे की तुलना मे ही आगे मालूम पडता है। अगर दो ही आदमी खडे है तो कौन आगे है, कौन है आगे?

मुल्ला के जीवन मे बडी प्रीतिकर एक घटना है। कुछ विद्यार्थियो ने आकर मुल्ला से कहा कि कभी चलकर हमारे विद्यापीठ मे हमे प्रवचन दो।

मुल्ला ने कहा—चलो अभी चलता हू, क्योकि कल का क्या भरोसा? और शिष्य बडी मुश्किल से मिलते है। मुल्ला ने अपना गधा निकाला, जिस पर वह सवारी करता था, लेकिन गधे पर उल्टा बैठ गया। बाजार से यह अद्भुत शोभा यात्रा निकली। मुल्ला गधे पर उल्टा बैठा, विद्यार्थी पीछे। थोडी देर मे विद्यार्थी बेचैन होने लगे। क्योकि सडक के लोग उत्सुक होने लगे और मुल्ला के साथ विद्यार्थी भी फस गए। लोग कहने लगे—यह क्या मामला है? यह किस पागल के पीछे जा रहे हो? तुम्हारा दिमाग खराब है?

आखिर एक विद्यार्थी ने हिम्मत जुटाकर कहा कि मुल्ला, यह क्या ढग है बैठने का? आप कृपा करके सीधे बैठ जाए। तुम्हारे साथ हमारी भी बदनामी हो रही है।

मुल्ला ने कहा—लेकिन मैं सीधा बैठूगा तो बडी अविनय हो जाएगी।

उसने कहा—कैसे अविनय?

मुल्ला ने कहा—अगर मैं तुम्हारी तरफ पीठ करके बैठू तो तुम्हारा अपमान होगा, और अगर मै तुम्हारी तरफ पीठ करके न बैठू तो तुम मेरे आगे चलो और मेरा गधा पीछे चले तो मेरा अपमान होगा। दिस इज द ओनली वे टु कम्प्रोमाइज। कि मै गधे पर उल्टा बैठू, तुम्हारे आगे चलू, हम दोनो के मुह आमने-सामने रहे। इसमे दोनो की इज्जत की रक्षा है। और लोगो को कहने दो जो कह रहे है। हम अपनी इज्जत बचा रहे है दोनो।

ये जो हमारी विनय की धारणाए है, श्रेष्ठजन कौन है, आगे कौन चल रहा है, यह निश्चित ही निर्भर करेंगी कि पीछे कौन चल रहा है। और जितना आप अपने श्रेष्ठजन को आदर देगे, उसी मात्रा मे आप अपने से निकृष्ट जन को अनादर देगे। मात्रा बराबर होगी, क्योकि जिन्दगी प्रति वक्त सतुलन करती है।

आदर देना पडता है। वह मजबूरी बन जाती है। वह आपका गुण नही है। आपका गुण न हो अगर, तो आपका अतर-तप कैसे होगा ? अतर-तप तो आपके भीतरी गुणो को जगाने की बात है।

अगर मुझे कोहिनूर सुन्दर लगता है, तो वह कोहिनूर का सौन्दर्य होगा। लेकिन जिस दिन मुझे सौन्दर्य ककड-पत्थर मे भी दिखाई पडने लगे उतना ही, जितना कोहिनूर मे दिखता है। सडक पर पडे हुए पत्थर मे भी दिखाई पडने लगे, उस दिन अब कोहिनूर का गुण न रहा, अब मेरा गुण हुआ। जिस दिन मुझे सबके प्रति विनय मालूम होने लगे, बिना तौल के, उस दिन गुण मेरा है। और जब तक मैं तौल-तौल कर आदर देता हू, तब तक मेरा गुण नही है, मजबूरी है। जो श्रेष्ठ है उसे आदर देना पडता है। श्रेष्ठ को आदर देने के लिए आपको कुछ प्रयास, कोई श्रम, कोई परिवर्तन नही करना होता है। वह आपका तप कैसे हुआ ? वह श्रेष्ठ व्यक्ति का भला तप रहा हो कि वह श्रेष्ठ कैसे हुआ, लेकिन आप उसको आदर देते है तो वह आपका तप कैसे हुआ, आपकी साधना कैसे हुई ? सूरज निकलता है तो आप नमस्कार कर लेते हैं। फूल खिलता है तो आप गीत गा देते है। आप इसमे कहा आते है ! आपके बिना भी फूल खिल जाता और आपके गीत से कुछ फूल ज्यादा नही खिलता। और आपके बिना भी सूरज निकल जाता, और आपके नमस्कार से सूरज की चमक नही बढती। आपका कहा इसमे मूल्य है ? आप इसमे कहा आते हे ? आप इसमे कही भी नही आते।

मुल्ला नसरुद्दीन मनोवैज्ञानिक से सलाह लेता था, निरन्तर। क्योकि उसे निरन्तर चिन्ताए, तकलीफें, मन मे न मालूम कैसे जाल खडे हो जाते थे। सबके होते हैं। उसने मनोवैज्ञानिक को जाकर कहा कि मैं बहुत परेशान हू, मुझे इनफिरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स हैं, हीनता की ग्रन्थि सताती है। सुल्तान निकलता है रास्ते से तो मुझे लगता है कि मैं हीन हू। एक महाकवि गाव मे आकर गीत गाता हे तो मुझे लगता है कि मैं हीन हू। नगर सेठ की हवेली ऊची उठती चली जाती है तो मुझे लगता है मैं हीन हू। एक तार्किक तर्क करने लगता है तो मुझे लगता है मैं हीन हू। इस हीनता की ग्रन्थि से मुक्त कैसे होऊ ? उस मनोवैज्ञानिक ने कहा—डोट सफर अननेसेसरिली। यू आर नाट सफरिंग फ्रॉम इनफिरियारिटी कॉम्प्लेक्स, यू आर इनफिरियर। उस मनोवैज्ञानिक ने कहा—आपको हीनता की ग्रन्थि से परेशानी हो रही है, आप हीन है। इसमे कोई बीमारी नही है, यह तथ्य है।

ध्यान रहे, जब आप किसी के सामने तथ्य की तरह हीन होते हैं, तो आपको आदर देना पडता है। यह कोई आप देते नही है। अब एक कालिदास शाकुतल पढता हो और आपको आदर देना पडे, और एक तानसेन सितार बजाता हो और आपका सिर झुक जाए तो आप इस भूल मे मत पडना कि आपने आदर

बुरे लोगो ने जहर नही दिया था। अच्छे लोगो ने जहर दिया था। और इसीलिए दिया था कि सुकरात की मौजूदगी समाज की नैतिकता को नष्ट करने का कारण वन सकती है। क्योकि सुकरात सन्देह पैदा कर रहा था। तो जो भले जन थे वे चिंतित हुए। वे चिंतित हुए कि इससे कही नयी पीढी नष्ट न हो जाए। तो सुकरात को जहर देने के पहले उन्होंने एक विकल्प दिया था कि सुकरात अगर तुम एथेंस छोडकर चले जाओ और व्रत लो कि अव दुवारा एथेंस मे प्रवेश नही करोगे तो हम तुम्हे मुक्त छोड दे सकते हे। लेकिन हम तुम्हे एथेंस के समाज को नष्ट नही करने देंगे। या तुम यह वायदा करो कि तुम अव एथेंस मे शिक्षा नही दोगे, तो हम तुम्हे एथेंस मे ही रहने देंगे। लेकिन तुम अव जवान वन्द रखोगे क्योकि तुम्हारे शव्द नयी पीढी को नष्ट कर रहे हैं। जो लोग थे, वे भले थे। स्वभावत' वे नयी पीढी के लिए चिंतित थे। सव भले लोग नयी पीढी के लिए चिंतित होते हैं। और उनकी चिंता से नयी पीढी रुकती नही, विगडती ही चली जाती है।

धनी कौन है, श्रेष्ठ कौन है ? धन है जिसके पास वह ? पाडित्य है जिसके पास वह ? यश है जिसके पास वह ? तो फिर यश जिस रास्तो से यात्रा करता है उन रास्तो को देखें तो पता चलेगा, यश वहुत अश्रेष्ठ रास्तो से उपलव्ध होता है। लेकिन सफलता सभी अश्रेष्ठताओ को पोछ डालती है। धन कोई साधु मार्गो से उपलव्ध नही होता है। लेकिन उपलव्धि पुराने इतिहास को नया रग दे देती है। कौन है श्रेष्ठ ? समाज उसे श्रेष्ठ कहता है जो समाज के रीति, नियम मानता है। लेकिन इस जगत मे जिन लोगो को हम पीछे श्रेष्ठ कहते हैं वे वे ही लोग हैं जो समाज के रीति नियम तोडते हैं। वुद्ध आज श्रेष्ठ है, महावीर आज श्रेष्ठ हैं, नानक आज श्रेष्ठ हैं, कवीर आज श्रेष्ठ है। लेकिन अपने समाज मे नही थे। क्योकि वे समाज के रीति-नियम तोड रहे थे, वे वगावती थे, वे दुश्मन थे समाज के।

और आज भी जो महावीर को श्रेष्ठ कहता है, अगर कोई वगावती होगा खडा तो उसको कहेगा यह आदमी खतरनाक हे। इसलिए मरे हुए तीर्थंकर ही आदृत होते है, जीवित तीर्थंकर को आदृत होना वहुत मुश्किल है। क्योकि जीवित तीर्थंकर वगावती होता है। मरा हुआ तीर्थंकर मरने की वजह से धीरे-धीरे स्वीकृत हो जाता हैं। इस्टाव्लिशमेट का, स्यापित, न्यस्त मूल्यो का, हिस्सा हो जाता है। फिर कोई कठिनाई नही रह जाती। अव महावीर से क्या कठिनाई है ? महावीर से जरा भी कठिनाई नही हैं।

महावीर नग्न खडे थे और महावीर के शिष्य कपडे की दुकानें कर रहे हैं पूरे मुल्क मे। कोई कठिनाई नही है। महावीर के शिष्य जितना कपडा वेचते हैं कोई और नही वेचता। मेरे तो एक निकट सम्वन्धी हैं, उनकी दुकान का नाम

दिया है। आपको आदर देना पडा है। लेकिन हमारा मन, जहा हमे देना पडता है वहा यह मानता है कि हमने दिया है, यह भी अपने अहकार की पुष्टि है, मैंने दिया है आदर।

तो महावीर यह नही कह सकते कि श्रेष्ठजनो के प्रति आदर, क्योकि वह होता ही है। उसका कोई मूल्य ही नही। बिना किसी भेदभाव के आदर, तब विनय पैदा होती है। श्रेष्ठ अश्रेष्ठ का सवाल नही है—जीवन के प्रति आदर, अस्तित्व के प्रति आदर, जो है उसके प्रति आदर। वह है यही क्या कम है! एक पत्थर है, एक फूल है, एक सूरज है, एक आदमी है, एक चोर है, एक साधु है, एक बेई-मान है—ये है। इनका होना ही पर्याप्त है। और इनके प्रति जो आदर है, अगर यह आदर सम्भव हो जाए तो आपका अन्तर-तप है। तब यह गुण आपका है। तब आप परिवर्तित होते है।

फिर दूसरी बात यह कैसे तय करेगे कि कौन श्रेष्ठ है। अगर यह जो शास्त्र कहते है—श्रेष्ठ, महाजन, गुरुजन श्रेष्ठ कैसे कहेगे? कौन है गुरु? कौन है गुरु? क्या है उपाय जांचने का आपके पास? कैसे तोलिएगा? क्योकि अनेक लोग महावीर के पास आकर लौट जाते है और कह जाते है कि ये गुरु नही है। अनेक लोग क्राइस्ट को सूली पर लटका देते है यह मानकर कि आवारा, लफगा है। इसको हटाना दुनिया से जरूरी है, नुकसान पहुचा रहा है।

और ध्यान रहे, जिन लोगो ने जीसस को सूली दी थी वे उस समय के भले और श्रेष्ठजन थे—अच्छे लोग थे, न्यायाधीश थे, धर्मगुरु थे, धनपति थे, राजनेता थे। उस समय के जो भले लोग थे उन्होने ही जीसस को सूली दी थी। और उनकी सूली देना, देने मे अगर हम तौलने चले तो वे ठीक ही मालूम पडते है, क्योकि जीसस वेश्याओ के घर मे ठहर गए थे। अब जो आदमी वेश्याओ के घर मे ठहर गया हो वह आदमी श्रेष्ठ कैसे हो सकता है। क्योकि जीसस शराबघरो मे बैठकर शराबियो से दोस्ती कर लेते थे और जो शराबघरो मे बैठता हो, उसका क्या भरोसा? क्योकि जीसस उन लोगो के घरो मे ठहर जाते थे जो बद-नाम थे, तो बदनाम आदमियो से जिसकी दोस्ती हो, वह आदमी तो अपने सग-साथ से पहचाना जाता है। जो अत्यज थे, समाज से बाह्य कर दिए गए थे, उनके बीच भी जीसस की मैत्री थी, निकटता थी। तो यह आदमी भला कैसे था? फिर यह आदमी आती हुई परम्परा का विरोध करता था, मन्दिर के पुरोहितो का विरोध करता था। यह कहता था कि जो साधु दिखाई पड रहे हैं, वे साधु नही हैं। तो यह आदमी भला कैसे था? तो उस समाज के भले लोगो ने इस आदमी को सूली पर लटका दिया, और आज हम जानते है कि कुछ बात गडबड हो गयी।

सुकरात को जिन लोगो ने जहर दिया था वे समाज के श्रेष्ठजन थे। कोई

मुझे तौलना ही नही पडता। अब जन्म तो हो गया, वह नियति बन गयी। उससे तुल जाती है बात कि श्रेष्ठ कौन है। आप सब इसी तरह तौल रहे हैं कि कौन श्रेष्ठ है, किसको आदर देना है! जब आप जैन साधु को आदर देते हैं तो आप यह जानकर आदर देते हैं कि वह साधु है या यह जानकर आदर देते हैं कि वह जैन है।

साधु को तौलने का उपाय कहा है? कैसे तौलिएगा? एक मुह पट्टी निकाल कर अलग कर दे और आदर खत्म हो जाएगा। तो आप किसको आदर दे रहे थे? मुह पट्टी को या इस आदमी को? मुह पट्टी वापस लगा ले, पैर आप छूने लगेंगे। मुह पट्टी नीचे रख दे, आप पछताएगे कि इस आदमी का पैर क्यो छुआ? मुह पट्टी नीचे रख दे—अपने मदिर मे, अपने स्थानक मे ठहरने न देंगे। मुह पट्टी लगा ले—स्वागत! आप मुह पट्टी को देख रहे है कि आदमी को? लगता ऐसा है कि मुह पट्टी ही असली चीज है। यानी ऐसा नही कहना चाहिए आदमी मुह पट्टी लगाए हुए है, ऐसा कहना चाहिए कि मुह पट्टी आदमी को लगाए हुए है। क्योंकि असली चीज मुह पट्टी है। आखिर मे निर्णय वही करती है। आदमी तो निर्णायक है नही। अगर बुद्ध भी आ जाए आपके मदिर मे तो आप उनको उतना आदर नही देंगे जितना मुह पट्टी लगाए हुए एक बुद्धू को देंगे। क्योकि मुह पट्टी कहा है?

यह तरकीबें हमने क्यो खोजी है? इसका कारण है। क्योकि कोई मापदड का उपाय नही है। इनसे हम रास्ता बना लेते हैं। तौलने का कोई उपाय नहीं है, यह आपकी मजबूरी है। यह आदमी की मजबूरी है कि श्रेष्ठ कौन है, इसके लिए कोई तराजू नही है। तो हम फिर ऊपरी चिन्ह बना लेते हैं, उनसे तौलने मे आसानी हो जाती है। पीछे के आदमी की हम बकवास छोड देते हैं। हमारे लिए तो निपटारा हो गया कि यह आदमी साधु है, पैर छुओ, घर जाओ, विनय करो।

लेकिन, महावीर इस तरह की बचकानी बात नही कह सकते। यह चाइल्डिश है। महावीर यह नही कह सकते है कि तुम श्रेष्ठ को आदर देना, क्योकि श्रेष्ठ को आदर कैसे दोगे? श्रेष्ठ कौन है, तुम कैसे जानोगे? और जब तुम श्रेष्ठ को जान जाओगे तो तुम्हें निकृष्ट को जानना पडेगा। और जब तुम श्रेष्ठ की परीक्षा करोगे तो तुम कैसे परीक्षा करोगे? उसके सब पापो का हिसाब-किताब रखना पडेगा कि रात मे पानी तो नही पी लेता, कि छिपा के कुछ खा तो नहीं लेता, कि साबुन की बटिया तो नही अपने झोले मे दबाए हुए है, टूथपेस्ट तो नही करता है; यह सब रखना पडेगा पता! यह सब पता रखना पडेगा और यह सब पता वही रख सकता है जिसका निन्दा मे रस हो, जो दूसरे को निकृष्ट सिद्ध करने चला हो। यह वह आदमी नही कर सकता जो विनयपूर्ण है। इससे क्या

है दिगम्बर क्लॉथ शॉप । दिगम्बर कलॉथ शॉप ? नगो की कपडो की दुकान ? महावीर सुने तो बड़े हैरान हो कि और कोई नाम नही मिला तुम्हे ? अब कोई दिक्कत नही, इससे दिक्कत ही नही आती कि दिगम्बर और क्लॉथ शॉप मे कोई विरोध है । लेकिन अगर महावीर नगे दुकान के सामने खडे हो जाए तो विरोध साफ दिखाई पड़ेगा कि यह आदमी नगा खडा है, हम कपडे बेच रहे है । हम इसके शिष्य है, बात क्या है ? अगर नग्न होना पुण्य है तो कपडे बेचना पाप हो जाएगा, क्योकि दूसरो को कपडे पहनाना अच्छी बात नही है । फिर नाहक उनको पाप मे ढकेलना है । नही, लेकिन मरे हुए महावीर से बाधा नही आती । ख्याल ही नही आता । जब मैंने उन्हे यह याद दिलाया, उन्होने कहा—आश्चर्य हम तो तीस साल से बोर्ड लगाए हुए है और हमे कभी ख्याल ही नही आया कि दिगम्बर मे और कपडे मे कोई विरोध है ।

नही, ख्याल ही नही आता । मुर्दा तीर्थंकर हमारी व्यवस्था मे सम्मिलित हो जाता है । हम उसको, उसकी नोको को झाड देते हैं, उसकी बगावत को गिरा देते हैं, शब्दो पर नया रग पालिश कर देते है, फिर वह ठीक है । लेकिन जिसको इतिहास पीछे से श्रेष्ठ कहता है उसका अपना समय उसे हमेशा उपद्रवी कहता है । किसको आदर ? फिर श्रेष्ठ को जाचने का मार्ग भी तो कोई नही है । महाजन कौन है ! महाजनो येन गत. स पथा—जिस मार्ग पर महाजन जाते है वही मार्ग है ।

लेकिन महाजन कौन है ? मुहम्मद महाजन है ? महावीर को मानने वाला कभी नही मान पाएगा कि यह आप क्या बात कर रहे है । तलवार लिए हुए जो आदमी हाथ मे खडा है, वह महाजन है ? कौन है महाजन ? मुहम्मद को मानने वाला कभी न मान पाएगा कि महावीर महाजन है । क्योकि वह कहता है—जो आदमी बुराई के खिलाफ तलवार भी नही उठाता, वह आदमी नपुसक है, क्लीब है । जब इतनी बुराई चलती है तो तलवार उठनी चाहिए । नही तो तुम क्या हो, तुम मुर्दे हो । धर्म तो जीवत होना चाहिए । धर्म के हाथ मे तो तलवार होगी, इसलिए मुहम्मद के हाथ मे तलवार है । हालाकि तलवार पर लिखा है 'शाति मेरा सदेश है ।' इस्लाम का मतलब शाति होता है । इस्लाम शब्द का मतलब शाति होता है । जैनी यह कभी सोच ही नही सकता कि इस्लाम और शाति, इनका कोई सम्बन्ध है ? लेकिन मुहम्मद कहते है—जो शाति तलवार की धार नही बन सकती, वह बच नही सकती । बचेगी कैसे ?

कौन है श्रेष्ठ ? कैसे तौलिएगा ? इसलिए हमने तौलने का एक सरल रास्ता निकाला है, जिसमे तौलना नही पडता । हम जन्म से तौलते है । अगर मैं जैन घर मे पैदा हुआ तो महावीर श्रेष्ठ; मुसलमान घर मे पैदा हुआ तो मुहम्मद श्रेष्ठ । यह तौलने से बचने की तरकीब है । यह ऐसा उपाय खोजना है जिसमे

जिऊगा जो मुझे ठीक लगता है। तव उसका ठीक लगना किसी पुराने धर्म को ठीक नही लगेगा क्योकि पुराने धर्म किन्ही और लोगो के आसपास निर्मित हुए है, उनके ठीक होने का ढग और था।

अव मुसलमान सोच ही नही सकते कि नानक मे भी कोई समझ हो सकती है। वे मर्दाना को वगल लिए गाव-गाव गीत गाते फिरते है। सगीत की दुश्मनी है इस्लाम मे। मस्जिद मे सगीत प्रवेश नही कर सकता। मस्जिद के सामने से नही निकल सकता। और यह आदमी मर्दाना को लिए हुए है—और जगह-जगह। मर्दाना मुसलमान था जो नानक के साथ साज बजाता था तो मुसलमानो ने उसको भी डिसओन कर दिया क्योकि यह आदमी कैसा है! यह मुसलमान हो ही नही सकता। सगीत से तो दुश्मनी है।

मुहम्मद के लिए सगीत मे कोई रस न रहा होगा। इसमे कोई कठिनाई नही है। यह भी हो सकता है कि मुहम्मद को सगीत के माध्यम से निम्न वासनाए जगती हुई मालूम हुई होगी और उन्होने इन्कार कर दिया। लेकिन सभी को ऐसा होता है, यह जरूरी नही है। किन्ही के भीतर सगीत से श्रेष्ठतम का जन्म होना शुरू होता है।

तो मुहम्मद का अपना अनुभव आधार वनेगा। मुहम्मद को सुगध वहुत पसन्द थी। इसलिए मुसलमान अभी भी ईद के दिन विचारे इत्र एक दूसरे को लगाते देखेंगे। अभी भी सुगन्ध से मुसलमानो को प्रेम है। वह प्रेम सिर्फ परम्परा है। मुहम्मद को वहुत पसन्द है। असल मे मुहम्मद, ऐसा मालूम पडता है कि सुगन्ध मुहम्मद को वही ले जाती थी, जहा कुछ लोगो को सगीत ले जाता है। सुगन्ध भी एक इद्रिय है, जैसा सगीत कान का रस है, वैसे सुगन्ध नाक का रस है। लेकिन मालूम होता है कि मुहम्मद सुगन्ध से वडी ऊचाइयो पर उड जाते थे। और उनके लिए सुगन्ध का कोई एसोसिएशन गहरा वन गया होगा।

सम्भव है, जव पहली दफा उन्हे इलहाम हुआ, जव उन्हे पहली दफा प्रभु की प्रतीति हुई, या प्रभु का सदेश उतरा तव पहाड के आसपास फूल खिले होंगे। सुगन्ध उसके साथ जुड गयी होगी। जरूर कोई ऐसी घटना—फिर सुगन्ध उनके लिए द्वार वन गयी। जव वे सुगन्ध मे होगे, तव वह द्वार खुल जाएगा। लेकिन यही वात सगीत मे हो सकती है, लेकिन यही वात नृत्य मे हो सकती है, यही वात अनेक-अनेक रूपो मे हो सकती है। पर, मुहम्मद हो तो शायद समझ भी जाए, मुहम्मद तो हैं नही, वह तो पीछे चलने वाला आदमी है वह कहता है कि सगीत नही वजने देंगे, क्योकि सगीत इन्कार है।

तो फिर नानक को मुसलमान कैसे स्वीकार करें? हिन्दू भी स्वीकार नही कर सकते नानक को। क्योकि नानक गृहस्थ है। वे सन्यासी नही है। पत्नी है, घर है, कपडे भी साधारण पहनते हैं—गृहस्थ। गृहस्थ को हिन्दू कैसे स्वीकार करें? ज्ञानी

प्रयोजन है उसे कि कौन आदमी टूथपेस्ट रखता है कि नही रखता है। इसका चिंतन ही बताता है कि यह जो आदमी सोच रहा है उसमे विनय नही है। महावीर यह नही कहते।

महावीर यह कहते है कि विनय एक आतरिक गुण है। बाहर से उसका कोई सम्बन्ध नही है। अनकडीशनल है, बेशर्त है। वह यह नही कहता कि तुम ऐसे होओगे तो मैं आदर दूगा। वह यह कहता है कि तुम हो, पर्याप्त है। मैं तुम्हे आदर दूगा क्योकि आदर आतरिक गुण है और आदर मनुष्य को अन्तरात्मा की तरफ ले जाता है। मै तुम्हे आदर दूगा बेशर्त। तुम शराब पीते हो कि नही पीते हो, यह सवाल नही है, तुम जीवन हो, यह काफी है। और यह पूरा अस्तित्व तुम्हे जिला रहा है। सूरज तुम्हे रोशनी दे रहा है, वह इन्कार नही करता कि तुम शराब पीते हो। हवाए आक्सीजन देने से मुकरती नही कि तुम बेईमान हो। आकाश कहता नही कि हम तुम्हे जगह नही देंगे क्योकि तुम आदमी अच्छे नही हो। जब यह पूरा अस्तित्व तुम्हे स्वीकार करता है तो मै कौन हू जो तुम्हे अस्वीकार करू! तुम हो, इतना काफी है। मैं तुम्हे आदर देता हू। मैं तुम्हे सम्मान देता हू।

यह जीवन के प्रति सहज सम्मान का नाम विनय है—अकारण, खोजबीन के बिना, क्योकि खोजबीन हो नही सकती। वह जो करता है, वह आदमी विनीत नही होता। बेशर्त। अगर मैं कहू कि तुम मेरी शर्तें पूरी करो इतनी, तब मैं तुम्हे आदर दूगा, तो मैं उस आदमी को आदर नही दे रहा हू। मैं अपनी शर्तों को आदर दे रहा हू। और जो आदमी मेरी शर्तें पूरी करने को राजी हो जाता है वह आदर योग्य नही है, वह गुलाम है। वह आदर पाने के लिए ही बिचारा शर्तें पूरी करने को राजी है। हम अपने साधुओ से कहते है, तुम ऐसा करो, पैदल चलो, इधर मत जाओ, उधर मत जाओ तो हम तुम्हे आदर देंगे—ये सब अनकही शर्तें है। अगर वह उनमे गडबड करता है, आदर विलीन हो जाता है। अगर इनको मानकर चलता है, आदर जारी रहता है। और इसलिए एक दुर्घटना घटती है कि साधुओ मे जो प्रतिभा होनी चाहिए वह धीरे-धीरे खो जाती है। और साधुओ की तरफ सिर्फ जड बुद्धि लोग उत्सुक हो पाते है। क्योकि जड बुद्धि ही आपके इतने नियमो को मान सकते है, बुद्धिमान आपके इतने नियमो को नही मान सकता।

इसीलिए यह दुर्घटना घटती है कि जब भी सच मे कोई साधु पुरुष पैदा होता है तो उसे नया धर्म खडा करना पडता है क्योकि कोई पुराने धर्म मे उसके लिए जगह नही होती। इसका कारण है। अब एक नानक पैदा हो जाए तो उसका नया धर्म अनिवार्यतया खडा हो जाता है, क्योकि कोई पुराना धर्म उसको जगह न देगा, क्योकि वह कोई के नियम जबर्दस्ती इसलिए मानने को राजी न होगा कि आप आदर देंगे। वह कहता है—आदर की क्या जरूरत है? मैं अपने ढंग से

हम मानते हैं कि उसे कुछ और करना चाहिए था जो उसने नही किया।

विनीत आदमी मानता है, वही होता है जो हो रहा है। वही हो सकता है जो हो रहा है—स्वीकार है वह। पर इससे कोई अतर नही पडता। जीसस जुदास के पैर पड लेते हैं उसी रात, जिस रात पकडे जाते है। जुदास के पैर पडना, जुदास का हाथ लेकर चूमना। कोई पूछता है कि आप यह क्या कर रहे हैं? और आपको पता है और हमे भी थोडी-थोडी खबर है कि यह आदमी दुश्मनो के साथ मिला है। जीसस कहते हैं—इससे क्या फर्क पडता है! यह क्या करेगा और क्या करता है, यह सवाल नहीं है। यह है, यही काफी आनन्द है। फिर शायद दुबारा इससे मिलने का मौका न भी मिले। मैं बच जाऊ तो भी न मिले क्योकि यह आदमी शायद फिर निकट आने का साहस न जुटा पाए। मैं न बचू, तब तो सवाल नही। मैं कल मर जाऊ तो मेरा यह सम्बन्ध, और मेरा इसका पैर को छूना इसे याद रहेगा। वह शायद इसके किसी काम पड जाए। पर इससे कोई फर्क नही पडता कि यह क्या करेगा। यह इर्रेलेवेंट है।

विनय के लिए यह बात असगत है कि आप क्या करते है, आप है इतना काफी है। विनय बेशर्त सम्मान है। श्वीत्जर ने ठीक शब्द उपयोग किया है महावीर के विनय का। अगर ठीक शब्द हम पकडें इस सदी मे तो श्वीत्जर से मिलेगा। श्वीत्जर ने एक किताब लिखी है—'रेव्हरेंस फॉर लाइफ', जीवन के प्रति सम्मान। तो यह नही है कि एक तितली को बचा लेगे और एक बिच्छू को न बचाएगे। श्वीत्जर दोनो को बचाने की कोशिश करेगा। माना कि बिच्छू को बचाने मे बिच्छू डक मार सकता है, यह उसका स्वभाव है। इसके कारण सम्मान मे कोई अन्तर नही पडता। हम बिच्छू से यह नही कहते कि तुम डक न मारोगे तो ही हम सम्मान देंगे। हम जानते है कि बिच्छू का डक मारना स्वभाव है। वह डक मार सकता है। श्वीत्जर उसको भी बचाने की कोशिश करेगा, क्योकि जीवन के प्रति एक सम्मान का भाव है। और जीवन के प्रति सम्मान हो तो आपके दुख असम्भव है, क्योकि सब दुख आप शर्तो के कारण लेते है। ध्यान रहे सब दुख सशर्त है। आपकी कोई शर्त है इसलिए दुख पाते है। जिसकी कोई शर्त नही है वह दुख नही पाता। दुख का कोई कारण नही रह जाता। और जब आप दुख नही पाते तो जो आप पाते है वही आनन्द है।

जीसस ने कहा—अपने शत्रुओ को भी प्रेम करो। नीत्शे ने जीसस के इस वक्तव्य पर आलोचना करते हुए लिखा है कि इसका तो मतलब यह हुआ कि आप शत्रु मे शत्रु को तो देखते ही है, शत्रु को प्रेम करो, शत्रुता तो दिखाई ही पडती है शत्रु मे। और जब शत्रुता दिखाई पडती है तो प्रेम कैसे करोगे? उसका वक्तव्य तर्कपूर्ण है, लेकिन सम्यक् नही है। नीत्शे जो कह रहा है वह तर्कयुक्त है, फिर भी सत्य नही। जीसस अगर उत्तर दे सकें तो वे यही कहेगे कि माना कि शत्रुता

तो संन्यासी होता है ।

फिर नानक और भी गडबड करते है । सभी जानने वाले लोग एक अर्थ मे डिस्टर्बिग होते है, क्योकि पुरानी सब व्यवस्था से वे फिर नए होते है । वे गडबड यह करते है कि वे काबा भी चले जाते है, वे मस्जिद मे भी ठहर जाते है । तो हिन्दू कैसे मानें कि जो आदमी मस्जिद मे भी ठहर जाता है । वह आदमी धार्मिक हो सकता है । मन्दिर मे ही ठहरना चाहिए ।

जो विनय श्रेष्ठ की किन्हीं धारणाओ को मानकर चलती है वह सिर्फ अधी होगी, परम्परागत होगी, रूढिगत होगी, वह क्रातिकारी नही होती है । उससे अतर-आविर्भाव नही होता है । अतर-आविर्भाव जब होता है तो आदर सहज होता है—वह पत्थर के प्रति भी होता है, पौधे के प्रति भी होता है, अस्तित्व के प्रति भी होता है । इससे कोई सम्बन्ध नही कि वह कौन है और क्या है कोई शर्त नही है । वह है, बस इतना काफी है ।

ऐसी विनय की जो स्थिति है वह प्रायश्चित के बाद ही सध सकती है । और सध जाए तो जीवन मे आनन्द का हिसाब नही रह जाता । क्यो ? क्योकि जितना दूसरो का दोप देखते हैं, मन को उतना ही दुख होता है । और जितने दूसरो के दोप देखते हैं उतने ही अपने दोष नही दिखते और नही दिखने वाले दुश्मन भीतर छिपकर काम तो चौबीस घण्टे करते हैं, बहुत दुख पैदा करवाते हैं । जब दूसरे मे कोई दोप नही दिखता तो दूसरे से दुख आना बन्द हो जाता है । जब कोई आदमी मुझ पर क्रोध करता है तो अगर मैं यह नही मानता कि यह उसका दोष है, या बुराई है; इतना मानता हू कि ऐसा उससे घटित हो रहा है, तो फिर मैं उसके क्रोध से दुखी नही होता । अगर मैं जा रहा हू और एक वृक्ष की शाखा मेरे ऊपर गिर जाए तो खडे होकर वृक्ष को गाली नही देता—हालाकि कुछ लोग देते है । बिना गाली दिए वे मान ही नही सकते, वृक्ष को भी गाली दे देते है । पर वे भी मानेंगे गाली देने के बाद कि बेकार थी बात, सिर्फ आदतवश थी । क्योंकि वृक्ष को क्या पता कि मै निकल रहा हू, क्या प्रयोजन, मुझे मारने का, चोट पहुचाने का क्या अर्थ हे !

वृक्ष को हम गाली नही देते क्योकि हम मान लेते है कि वृक्ष को हमसे कोई प्रयोजन नही है । शाखा टूटनी थी, हवा का झोका भारी था, तूफान तेज था, वृक्ष जरा-जीर्ण था, गिर गया, सयोग की बात कि हम नीचे थे । जो आदमी विनय-पूर्ण होता है जब आप उसको गाली देते है तब भी वह ऐसा ही मानता है कि मन मे उसके क्रोध भरा होगा, परेशान होगा चित्त, जरा-जीर्ण होगा, गाली निकल गयी, सयोग की बात कि हम पास थे । और कोई पास होता, किसी और पर निकलती । मगर इससे विनय मे कोई बाधा नही पडती । इससे दुख भी नही आता । इससे यह भी नही होता कि ऐसा उसने क्यो किया ? ऐसा तो तभी होता है जब

मन यह कहेगा कि अगर कोई गाली दे, तुम आदर करो तो तुम उसको गाली देने के लिए और निमत्रण दे रहे हो। अगर कोई गाली दे और हम उसे आदर करें तो हम उसको और प्रोत्साहन दे रहे है। तर्क निरन्तर यह कहता है कि हम प्रोत्साहन दे रहे है। इससे तो वह और गाली देगा। और यह भी हम मान लें कि हमे गाली देगा तो कोई हर्ज नही, लेकिन हमारे प्रोत्साहन से वह दूसरो को भी गाली देगा। क्योकि आदमी को रस लग जाए और उसे पता चल जाए कि गाली देने से आदर मिलता है तो हमे दे तब तक भी ठीक, लेकिन वह दूसरो को भी देगा। अगर किसी आदमी को यह पता चल जाए कि यहा मारपीट करने से लोग सम्मान देते है, साष्टाग दडवत करते हैं तो वह औरो को भी मारेगा तो उसका जिम्मा भी हम पर आएगा, क्योकि हम न आदर देते उसे, न वह मारने के लिए उत्सुक होता।

इसलिए तो मुहम्मद कहते हैं कि उसको वही ठीक कर दो जो गडबड करे। नही तो अगर तुमने उसको आदर दिया, दूसरा चाटा—गाल उसके सामने कर दिया, वह अपना चाटा कही भी घुमाने लगेगा, किसी को भी लगाने लगेगा इसी आशा मे कि अब दूसरा चाटा और कही मिलने का मौका मिलेगा। दूसरा गाल सामने आता होगा। लेकिन कर्म दूसरी तरह से भी जोडा जा सकता है, जो न इस्लाम जोड सका, न ईसाइयत जोड सकी। इसलिए इस्लाम और ईसाइयत मे एक बहुत मौलिक आधार की कमी है। बहुत मौलिक आधार की कमी है। और वह कमी है कर्म के विचार की।

इसलिए जीसस ने इतने प्रेम की बाते कही, और इतना अहिंसात्मक उपदेश दिया, लेकिन ईसाइयत ने सिर्फ तलवार चलायी और खून बहाया। खैर, मुहम्मद के मामले मे तो यह भी हम कह सकते है कि तलवार उनके खुद के हाथ मे थी, इसलिए अगर मुसलमानो ने तलवार उठायी तो उसमे एक सगीत है। लेकिन जीसस के मामले मे तो यह भी नही कहा जा सकता। उस आदमी के हाथ मे तो कोई तलवार न थी। लेकिन ईसाइयत ने इस्लाम से कम हत्या नही की। इस सारी दुनिया को, पृथ्वी को रग देने वाले लोग खून से, ईसाइयत और इस्लाम से आए।

बात क्या होगी? भूल क्या होगी? क्या कारण होगा? जीसस जैसा आदमी जिसने इतने प्रेम की बाते कही, उसकी भी परम्परा इतनी उपद्रवी सिद्ध हुई, इसका कारण क्या है? इसका कारण है न तो जीसस और न मुहम्मद, दोनो मे से कोई भी कर्म को व्यक्ति की स्वय की अतर-शृखला से नही जोड पाया। वही भूल हो गयी। वह भूल गहरी हो गयी। और जितनी दुनिया वैज्ञानिक होती जाएगी उतनी वह भूल साफ दिखाई पडेगी।

इसे ऐसा सोचें कि जब भी आप क्रोध करते है तो असल मे आप दूसरे पर क्रोध

दिखती है, लेकिन फिर भी प्रेम करो क्योकि शत्रुता जहा दिखती हे वह उसका व्यवहार है और जो उसके भीतर छिपा है वह उसका अस्तित्व है। हमारा सम्मान अस्तित्व के लिए है। वह बेशर्त है। माना कि वह गाली दे रहा हे, पत्थर मार रहा है, हत्या करने की कोशिश कर रहा है, वह सब ठीक है। यह वह कर रहा है, यह वह जाने।

इस सम्बन्ध मे यह भी आपको याद दिला दू, उपयोगी होगा कि महावीर, बुद्ध या कृष्ण इन सबकी चिन्तना मे बहुत-बहुत फासले है, बहुत भेद है। होगे ही। जब भी किसी व्यक्ति से सत्य उतरेगा तो वह नए आकार लेता है, उस व्यक्ति के आकार लेता है। निराकार सत्य तो उतर नही सकता। जब किसी से उतरता है तो उस व्यक्ति का आकार ले लेता है। लेकिन एक बहुत अद्‌भुत बात है, इस पृथ्वी पर भारत मे पैदा हुए समस्त धर्म एक सिद्धान्त के मानने मे सहमत है, वह है कर्म। बाकी सब मामले मे भेद है। बडे-बडे मामलो मे भेद है। परमात्मा है या नही ? हिन्दू कहेगे है, जैन कहेगे नही है। आत्मा है या नही ? तो जैन और हिन्दू कहते हैं है, बुद्ध कहते है नही है। इतने बडे मामलो मे फासला है। लेकिन एक मामले मे, जो हमारी नजर मे भी नही आता और जो इन सबसे ज्यादा कीमती है, इसीलिए उसमे फासला नही है। वह सेंट्रल है, केन्द्रीय है। परिधि पर झगडे हो सकते हैं। वह है कर्म का विचार। उसमे कोई फर्क नही है। ये सारे धर्म इस देश मे पैदा हुए हैं, कर्म के विचार से राजी है। बुद्ध जो आत्मा से नही मानते, परमात्मा को नही मानते, वे भी कहते है कर्म है। महावीर परमात्मा को नहीं मानते, वे भी कहते हैं कर्म है। हिन्दू परमात्मा को भी मानते है, आत्मा को भी मानते है, वे भी कहते है कर्म है।

यह कर्म की, इस विनय के सदर्भ मे एक बात आपको याद दिला देनी जरूरी है कि जब भी कोई कुछ कर रहा हे तो वह अपने कर्मों के कारण कर रहा है, आपके कारण नही। और जो आप कर रहे है वह अपने कर्मों के कारण कर रहे है, उसके कारण नही। अगर यह ख्याल मे आ जाए तो वह विनय सहज ही उतर आएगी। एक आदमी गाली दे रहा है, तो दो वजह हो सकती हैं इसके विश्लेपण मे। एक आदमी मेरे पास आता है और मुझे गाली देता है तो इसे मै दो तरह से जोड सकता हू कि या तो वह इसलिए गाली देता है कि वह मुझे गाली देने योग्य आदमी मानता है। गाली को मैं अपने से जोड़ू। और एक रास्ता यह है कि वह आदमी इसलिए गाली देता है कि उसके अतीत के सब कर्मों ने वह स्थिति पैदा कर दी है कि उसमे गाली पैदा होती है। तब मैं अपने से नही जोडता, उसके कर्मो से जोडता हू।

अगर मै अपने से जोडता हू तो बहुत मुश्किल हे विनय को साधना। कैसे सधेगी ? यह आदमी सामने गाली दे रहा है, इसके प्रति मैं कैसे आदर करू ?

मकान मे हैं, एक आदमी बीमार पड जाता है, उसे फ्लू पकड लेती है। चिकित्सक उससे कहता है कि वायरस हैं। लेकिन दस आदमी भी घर मे है, उनमे से नौ को नही पकडा है। तो चिकित्सक की कही तो बुनियादी भूल तो मालूम पडती है। वायरस इसी आदमी को खोजता है, इसका मतलब केवल इतना है कि वायरस निमित्त बन सके, लेकिन इस आदमी के भीतर बीमारी सग्रहीत है। नहीं तो बाकी नौ लोगो को वायरस क्यो नही पकड रहा है? कोई दोस्ती है, कोई दुश्मनी है! बाकी नौ लोगो को नही, इस आदमी को क्यो पकड लिया? इस आदमी को इसलिए पकड लिया है कि इस आदमी के भीतर वह स्थिति है जिसमे वायरस निमित्त बनकर और फ्लू को पैदा कर सकता है। बाकी नौ के भीतर वह स्थिति नही है। तो वायरस जाता है, चला जाता है। वह उनके भीतर फ्लू पैदा नही कर पाता।

तो अब सवाल यह है—फ्लू वायरस पैदा करता है? अगर ऐसा आप देखते है तो आप महावीर को कभी न समझ पाएगे। महावीर कहते है—फ्लू की तैयारी आप करते है, वायरस केवल मेनिफैस्ट करता है, प्रगट करता है। तैयारी आप करते है, जिम्मेवार आप है। जिम्मेवारी सदा मेरी है। आसपास जो घटित होकर प्रगट होता है वह सिर्फ निमित्त है, उससे क्रोध का कोई कारण नही होता। धन्यवाद दिया भी जा सकता है, अनुग्रह माना भी जा सकता है, क्रोध का कोई कारण नही रह जाता। और तब आप मे अहकार के खडे होने की कोई जगह नही रह जाती।

ध्यान रहे, जहा क्रोध है, वहा भीतर अहकार है। और जहा क्रोध नही, वहा भीतर अहकार नही है। क्योकि क्रोध सिर्फ अहकार के बीच डाली गयी बाधाओ से पैदा होता है, और किसी कारण पैदा नही होता। अगर आपके अहकार को तृप्ति मिलती जाए, आप कभी क्रोधी नही होते। अगर सारी दुनिया आपके अहकार को तृप्त करने को राजी हो जाए तो आप कभी क्रोधी न होगे। आपको पता ही नही चलेगा कि क्रोध भी कोई चीज थी। लेकिन अभी कोई आपके मार्ग मे बाधा डालने को खड़ा हो जाए, आपको क्रोध प्रगट होने लगेगा। क्रोध जो है, अहकार अवरुद्ध जब होता है तब पैदा होता है।

लेकिन अब तो क्रोध का कोई कारण ही न रहा। अगर मैं यह मानता हू कि आप अपने कर्मो से चलते हैं, मैं अपने कर्मो से चलता हू, हम राह पर कही-कही मिलते हैं—किसी क्रास, किसी चौरस्ते पर मुलाकात हो जाती है, लेकिन फिर भी आप अपने से ही बोलते है, मैं अपने से ही बोलता हू। मैं अपने से ही व्यवहार करता है, आप अपने से ही व्यवहार करते हैं। कही प्रगट जगत् मे हमारे व्यवहार एक दूसरे से तालमेल खा जाते है। पर वह सिर्फ निमित्त है। उसके लिए किसी को जिम्मेवार ठहराने का कोई कारण नही, तो फिर क्रोध का भी कोई कारण

नही करते। दूसरा सिर्फ निमित्त होता है। आप क्रोध को सग्रहित किए होते है अपने ही कर्मो मे, अपने ही कल की यात्रा से। वह क्रोध आपके भीतर भरा होता है जैसे कि कुएँ मे पानी भरा होता है और कोई बाल्टी डालकर खीच लेता है। कोई गाली डालकर आपके क्रोध को वाहर निकाल लेता हे वस। वह निमित्त ही वनता है। तो निमित्त पर इतना क्या क्रोध ? कुआ क्यो बाल्टी को गाली दे कि तुझमे पानी है। पानी तो कुएँ से ही आता है, बाल्टी सिर्फ लेकर वाहर दिखा देती है। तो विनयपूर्ण आदमी धन्यवाद देगा उसको जिसने गाली दी। क्योकि अगर वह गाली न देता तो अपने भीतर के क्रोध का दर्शन न होता। वह बाल्टी वन गया। उसने कोध वाहर निकाल कर बता दिया।

इसलिए कवीर कहते है—निन्दक नियरे राखिए, आगन कुटी छवाय। वह जो तुम्हारी निन्दा करता हो, उसको तो अपने घर के वगल मे ठहरा लेना, क्योकि वह बाल्टी डालता रहेगा और तुम्हारे भीतर की चीजें निकाल कर तुम्हे वताता रहेगा। अकेले पड गए पता नही कुऐ मे पानी भरा रहे और भूल जाए कुआ कि इसमे पानी है क्योकि कुएँ को भी पता तभी चलता है जव बाल्टी कुऐ से पानी खीचती है। और अगर फूटी बाल्टी हो तो और ज्यादा पता चलता है। निन्दक, सब फूटी बाल्टी जैसे ही होते है। भयकर पानी की बौछार कुएँ मे होने लगती है। तो कुएँ को पहली दफा नीद टूटती है और पता चलता है कि क्या हो रहा है। कुआ खुद सोया रहेगा अगर बाल्टी न हो, पता भी न चलेगा।

इसलिए लोग जगल भागते रहे हैं। वह वाल्टियो से वचने की कोशिश है। लेकिन उससे पानी नष्ट नही हो जाएगा, जगल आप कितना ही भाग जाए। जगल के कुऐ को कम पता चलता होगा क्योकि कभी-कभी कोई यात्री वाल्टी डालता होगा। या अगर रास्ता निर्जन हो और कोई न चलता हो तो कुएँ को पता ही नही चलता होगा कि मेरे भीतर पानी है। ऐसे ही जगल मे बैठे साधु को हो जाता है। कभी कोई निकलने वाला कुछ गलत सही बातें कर दे, तो शायद वाल्टी पडती है। अगर रास्ता विल्कुल निर्जन हो···इसलिए साधु निर्जन रास्ता खोजता है, निर्जन स्थान खोज लेता है। अगर इसीलिए खोज रहा है तो गलती कर रहा है। अगर यही कारण है कि मेरे भीतर जो भरा है वह दिखाई न पडे किसी के कारण, तो गलती कर रहा है, भयकर गलती कर रहा है।

महावीर कहते हैं कि दूसरा अपने कर्मो की शृखला मे नया कर्म करता है। तुमसे उसका कोई सम्वन्ध नही है। इतना ही सम्वन्ध है कि तुम मौके पर उपस्थित थे और उसके भीतर विस्फोट के लिए निमित्त वने। इस बात को दूसरी तरह भी सोच लेना है कि तुम भी जव किसी के लिए विस्फोट करते हो तव वह भी निमित्त ही है। तुम ही अपनी शृंखला मे जीते और चलते हो।

इसे हम ऐसा समझे तो शायद समझना आसान पड जाए। दस आदमी एक ही

अभाव है। जो अहकार का डायल्यूट फार्म नही है, जो अहकार का तरल, बिखरा हुआ, फैला हुआ आकार नही है। अहकार का अभाव है।

तो यह आखिरी वात ख्याल मे ले ले। विनम्रता यदि साधी जाएगी—जैसा हम साधते हैं कि इसको आदर दो, उसको आदर दो, उसको मत दो, उसको मत दो; आदर का भाव जन्माओ, विनम्र रहो; अहकारी मत वनो, निरअहकारी रहो—तो जो विनम्रता पैदा होगी, इट विल वी ए फ़ॉर्म ऑफ इगो, अहकार का ही एक रूप होगी। उससे समाज को थोडा फायदा होगा। क्योकि आपका अहकार कम प्रगट होगा, दवा हुआ प्रगट होगा, ढग से प्रगट होगा, सुसस्कृत होगा, कल्चर्ड होगा। लेकिन आपको कोई फायदा नही होगा।

इसलिए समाज की उत्सुकता इतनी ही है कि आप विनम्रता का आवरण ओढे रहे। वस समाज को इससे कोई मतलव नही है। समाज की औपचारिक व्यवस्था इतने से चल जाती है कि आप विनम्रता ओढे रहे। रहे भीतर अहकारी, समाज का कोई मतलव नही है। लेकिन धर्म को इससे कोई प्रयोजन नही है कि आप वाहर क्या ओढे हुए हैं। धर्म को प्रयोजन है, आप भीतर क्या है? ह्वाट यू आर?

तो महावीर की जो विनय है वह समाज की व्यवस्था की विनय नही है—कि पिता को, कि गुरु को, कि शिक्षक को, कि वृद्ध को आदर दो। महावीर यह भी नही कहते कि मत दो। मैं भी नही कह रहा हू कि आप मत दो। वरावर दो। वही समाज का खेल है, जस्ट ए गेम, और जितना समझदार आदमी, उसको उतना ही खेल है।

एक मित्र अभी परसो ही आए और कहने लगे लडके का यज्ञोपवीत होना है। और जब से आपको सुना तो लगता है यह तो विल्कुल वेकार है। लेकिन पत्नी जिद्द पर है, पिता जिद्द पर हैं, पूरा परिवार जिद्द पर है कि यह होकर रहेगा। तो मैं वाधा डालू कि न डालू?

तो मैने कहा कि अगर विल्कुल वेकार है तो वाधा क्या डालती! अगर कुछ थोडा सार्थक लगता है तो वाधा डालो। अगर तुम्हें लगता है, कि यज्ञोपवीत का यह जो सस्कार-विधि होगी, यह विल्कुल वेकार है, इतनी वेकार अगर लगने लगी है तो ठीक है। जैसे घर के लोग सिनेमा देखने चले जाते है वैसे ही यज्ञोपवीत का समारोह हो जाने दो। जस्ट मेक इट ए गेम। है भी वह खेल। अब अगर पिता को मजा आ रहा है, मा को मजा आ रहा है, पत्नी मजा ले रही है, तो हर्जा क्या है इस खेल के चलने मे? चलने दो। इस खेल को खेलो। अगर तुम जिद्द करते हो कि नही चलने देंगे तो तुम भी इसको खेल नही मानते, तुम भी समझते हो वडी कीमती चीज है। तुम भी सीरियस हो, तुम भी गम्भीर हो कि अगर नही होगा तो कुछ फायदा होगा। जिस चीज के होने से फ़ायदा नही हो रहा है, उसके न होने से क्या खास फायदा होगा। जिसके होने तक से फायदा नही

नही । और क्रोध का कोई कारण न हो तो अहकार विखर जाता है, सघन नही पाता है ।

विनय-वडी वैज्ञानिक प्रक्रिया है। दोप दूसरे मे नही है, दूसरा मेरे दुख का कारण नही है। दूसरा श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ नही है। दूसरे से मैं कोई तुलना नही करता। दूसरे पर मैं कोई शर्त नही बाधता कि इस शर्त को पूरा करोगे तो मेरा आदर, मेरा प्रेम तुम्हे मिलेगा, सम्मान मिलेगा। मैं वेशर्त जीवन को सम्मान देता हू। और प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म से चल रहा है। तो अगर मुझसे कोई भूल होती है तो मैं अपने भीतर अपने कर्म की शृखला मे खोजू। अगर दूसरे से कोई भूल होती है तो यह उसका काम है इससे मेरा कोई भी सम्वन्ध नही है। अगर एक आदमी मेरी छाती मे आकर छुरा भोक जाता है, तो भी यह कर्म उसका है इससे मेरा कोई सम्वन्ध नही है। छाती मे छुरा जरूर मेरे भुक जाता है लेकिन इससे मेरा फिर भी कोई सम्वन्ध नही है। यह काम उसका ही है, वही जाने। वही इसके फल पाएगा, नही पाएगा, यह उसकी वात है। यह मेरा काम ही नही है, इससे मेरा कोई सम्वन्ध नही है।

महावीर इतना जरूर कहते है कि अगर मेरी छाती मे छुरा भुकता है, तो इससे मेरा इतना ही सम्वन्ध हो सकता है कि मेरी पिछली यात्रा मे मैंने यह तैयारी करवायी हो कि मेरी छाती मे छुरा भुके। इसका मेरी छाती मे जाना मेरे पिछले कर्मों की कुछ तैयारी होगी। वस, उससे मेरा सम्बन्ध है। लेकिन उस आदमी को मेरी छाती मे भोकना इससे मेरा कोई सम्वन्ध नही है। इससे उसकी अपनी अतर्यात्रा का सम्वन्ध है। यह बात साफ-साफ दिखाई पड जाए कि हम पैरेलल अन्तर्धाराए है कर्मो की, समातर दौड रहे है। और प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर से जी रहा है। लेकिन जव-जब हम जोड लेते है अपने से दूसरे की धारा को, तभी कष्ट शुरू होता है।

विनय केवल इस बात की सूचना है कि मैं अपने से अव किसी को जोडता नही। इसलिए विनय को महावीर ने अतर-तप कहा है। क्योकि वह स्वय को दूसरो से तोड लेना है। विना पता चले चीजें टूट जाती है। और जव मेरे और आपके बीच कोई सम्बन्ध नही रह जाता—प्रेम का नही, घृणा का नही—सम्वन्ध ही नही रह जाता, सिर्फ निमित्त के सम्वन्ध रह जाते है, तव न कोई श्रेष्ठ है, न कोई अश्रेष्ठ है। न कोई मित्र है, न कोई शत्रु है। न कोई मेरा बुरा करने की कोशिश कर सकता है, न कोई मेरा भला करने की कोशिश कर रहा है।

महावीर कहते हैं कि जो कुछ मैं अपने लिए कर रहा हू, मैं ही कर रहा हू—भला तो भला, बुरा तो बुरा; मैं ही अपना नर्क हू, मै ही अपना स्वर्ग हू, मैं ही अपनी मुक्ति हू। मेरे अतिरिक्त कोई भी निर्णायक नही है मेरे लिए। तव एक हम्वलनेस, एक विनम्र भाव पैदा होता है जो अहकार का रूप नही, अहकार का

है। आपने सब खेल छीन लिए तो उनको नए खेल ईजाद करने पड रहे हैं और वे नए खेल महगे पड रहे हैं। वे बच्चो के खेल अच्छे हैं। बच्चे एक दूसरे को मार डालते थे, मुकदमा चला देते थे, कोई न्यायाधीश बन जाता था। वे सब खेल हमने छीन लिए। सब बच्चे हमारे बच्चे होने के समय ही गम्भीर और बूटे होने लगे। लेकिन खेल तो उनके भीतर जो ऊर्जा है, वह खेल माग रही है।

पश्चिम मे यह दिक्कत खडी हुई, सारी फेस्टिविटी नष्ट कर दी है। तो वोल्तेयर से लेकर बर्ट्रेंड रसेल तक के बीच पश्चिम मे सारे उत्सव का भाव चला गया। सब चीज बेकार—यह भी नहीं हो सकता, यह भी नही हो सकता, और जिन्दगी वही की वही। अब बडी मुश्किल हो गई, शादी का उत्सव बेकार। इसमे क्या फायदा है, यह तो रजिस्ट्री के आफिस मे हो सकता है, यह बैंड बाजा क्यो बजाना? लेकिन आपको पता नही, वह जो आदमी बैंड बाजा बजा रहा, उसे खेल मे रस था। अब यह आदमी जब रजिस्ट्री के आफिस मे जाकर शादी करवा आएगा तो घर आकर पाएगा—कुछ भी नहीं हुआ। यह तो बिलकुल बेकार निकल गया मामला। सिर्फ दस्तखत ही करके आ गए रजिस्टर पर, यह शादी है! तो जो शादी सिर्फ दस्तखत करने से बन सकती है वह दस्तखत करने से किसी दिन टूट जाएगी। उसमे कोई मूल्य नही है।

वह शादी एक खेल था जिसमे हम बच्चो को दिखाते थे कि भारी मामला है। कोई छोटा-मामला नही, तोडा नही जा सकता। इतना बडा मामला है। उसमे इतना शोरगुल मचाते थे, उसको घोडे पर बिठाते, उसको राजा बना देते, छुरे लटका देते, बैंड बाजा बजा देते, भारी उत्सव मचता। उसको भी लगता कि कुछ हो रहा है। कुछ ऐसा हो रहा है जिसको वापस लौटाना मुश्किल है। फिर इस सबके पीछे होता तो वही जो रजिस्ट्री के आफिस मे होता है। लेकिन इस सबके पहले जो हो गया है वह एक रूप, एक खेल—वह खेल इतना भारी था कि उसको लौटाना मुश्किल था। और उसकी जिन्दगी मे याद रहती। शादी चाहे कुछ भी बन जाए बाद मे, लेकिन वह जो शादी के पहले हुआ था वह उसे याद रहेगा। वह बार-बार सपने उसके देखता, वही घोडे पर बैठना, वही राजा की पोशाक। और अब आज लडका कहता है, इससे क्या होगा? यह पगडी मैं क्यो बाधू? मत बाधो, लेकिन पत्नी जो हाथ लगेगी, वह छोटी लगेगी, क्योकि खेल उसके पहले का पूरा नही हो पाया, बिना खेल के मिल गई है।

नसरुद्दीन की जब पहली दफा शादी हुई, वह सुहागरात को गया। रात आ गई, चाद निकल आया, पूर्णिमा की चाद। नसरुद्दीन खिडकी पर बैठा है। दस बज गए, ग्यारह बज गए, बारह बज गए। पत्नी बिस्तर मे लेट गई। उसने एक दफे कहा—अब सो भी जाओ, सो भी जाओ।

नसरुद्दीन ने बारह बजे कहा कि बकवास बन्द। मेरी मा कहा करती थी कि

हो रहा है, उसके न होने से क्या फायदा हो सकता है ? तो मैंने उनसे कहा, चीज इतनी बेकार है कि तुम बाधा मत डालो।

बोले, आप और यह कहते है ! मैं तो यही समझा कि आप कहेंगे कि टूट पडो, बिल्कुल होने ही मत देना।

मैं क्यो कहूंगा, ऐसा फिजूल काम, और इतना रस आ रहा हो घर के लोगों को तो, सो इनोसेंट गेम। इतना सरल और सीधा खेल कि एक लडके के गले मे माला-वाला डालनी है, सिर घुटाना—तो खेलने दें, इसमे क्या हर्ज है ? और आदमी बच्चो जैसे हैं, उनको खेल चाहिए ही। अगर खेल न हो तो जिन्दगी उदास हो जाती है। इसलिए हम जन्म को भी खेल बनाते; फिर यज्ञोपवीत का खेल खेलते; फिर शादी आती है, उसका खेल चलता। मर जाता है आदमी, तब भी हम खेल बन्द नही करते। अर्थी निकालते, वह भी उत्सव है, समारोह है, बैंड बाजा आदमी को आखिर तक पहुंचा आता है। बस एक लम्बा खेल है। पर आदमी बिना खेल के नही जी सकता है। इसलिए जिन समाजो मे खेल कम हो गए है वहा जीना मुश्किल हो गया है, क्योकि आदमी तो वही का वही है। तो महावीर जैसा आदमी बिना खेल के जी सकता है। लेकिन बिना खेल के कोई तभी जी सकता है जब उसे वास्तविक जीवन का पता चल जाए। वास्तविक जीवन का पता न हो तो इस जीवन को—जिसे हम जीवन कह रहे हैं—बिना खेल के नही जिया जा सकता है। इसमे खेल रखने ही पडेंगे।

पश्चिम मे यह दिक्कत खडी हो गयी, तीन सौ साल मे पश्चिम के विचारक लोगो ने, जिनको मैं बहुत विचारशील नही कहूंगा चाहे वोल्तेयर हो और चाहे बर्ट्रेंड रसेल हो, उन सबने पश्चिम के सब खेल निन्दित कर दिए और कहा कि सब खेल बेकार हैं। यह क्या कर रहे हो ? यह सब गड़बड है। इनमें क्या फायदा है ? फायदा कोई बता न सका। अगर आप बच्चो से पूछें कि तुम यह जो खेल खेल रहे हो, उससे क्या फायदा है ? अगर आप बच्चो से पूछें कि तुम गेंद इस कोने से उस कोने फेंकते हो, उस कोने से इस कोने मे फेंकते हो, इससे क्या फायदा है ? क्या फायदा है ! तो मुश्किल मे पड जाएंगे, फायदा तो बता नहीं सकेंगे। फायदा नही बता सकेंगे तो आप कहेंगे बन्द करो। क्योकि जब फायदा ही नही तो क्यो खेलना है।

बच्चे बन्द कर देंगे, लेकिन मुश्किल मे पड जाएंगे, क्योकि बच्चे क्या करेंगे ? यह जो शक्ति बचेगी, उसका क्या होगा ? वह जो खेलने मे निकल जाता था, वह सब उपद्रव मे निकलेगा। सारी दुनिया मे बच्चों ने जितने खेल कम कर दिए हैं—सब स्कूलो मे बच्चो के खेल छीन लिए। अब बच्चों ने नए खेल निकाले है। आप समझते है यह उपद्रव है। ये सिर्फ खेल है। वे गेंद फेंक कर मजा ले लेते है, अब नही फेंकने देंगे तो वे पत्थर फेंक कर शीशे तोड रहे है। वह मामला वही

यह पूरी हो तो ही आविर्भाव होता है। हां, आप अपने को जो विनीत करने की कोशिश कर रहे हैं, वह जारी रखें। वह एक खेल है, वह अच्छा खेल है। उससे जिन्दगी सुविधा से चलती है, कन्वीनियटली। बाकी उससे कोई आप जीवन के सत्य को उपलब्ध नही होते।

आज इतना ही। फिर कल आगे सूत्र पर बात करेंगे। लेकिन बैठें।

सुहागरात की रात इतनी आनन्द की रात है कि चूकना मत, तो मैं तो इधर खिडकी पर बैठकर एक क्षण भी चूकना नही चाहता हू। तू सो जा। कही नीद लग गयी और चूक गए! तो मैं तो पूरी रात जगूगा इसी खिडकी पर बैठा हुआ। मुझे तो यह पता लगाना है जो मा ने कहा कि सुहागरात की रात बडी आनन्द की होती है। तो आज की रात मैं फालतू बातो मे नही खो सकता। तुझे अगर बातचीत करनी है तो कल।

इसके मन मे सुहागरात की एक धारणा थी। आज ठीक उल्टी हालत है। आज सुहागरात जैसी कोई चीज हो ही नही सकती।

मैंने सुना है—एक युवक अपनी सुहागरात से, हनीमून से वापस लौटा। मित्रो ने पूछा कि कैसी थी सुहागरात? उसने कहा—जस्ट लाइक बिफोर। अब तो सुहागरात का अनुभव पहले ही उपलब्ध है। उसने कहा—जस्ट लाइक बिफोर, नथिंग न्यू! कुछ नया नही है।

पुरानी बुद्धिमत्ता महत्वपूर्ण थी। वह बच्चो जैसे आदमियो के लिए बनाए खेलो का इन्तजाम था। उन खेलो के बीच आदमी जी लेता था। मै नही कहता खेल तोड दें। खेल जारी रखे। बडे बूढो को आदर देना जारी रखें, गुरुजनो को आदर दें, साधुओ को आदर दे। खेल जारी रखे। इससे कुछ नुकसान नही हो रहा है किसी का। लेकिन उसको विनय मत समझ ले। वह विनय नही है। मैं नही कहता नसरूद्दीन से कि तू खिडकी पर मत बैठ और चाद को मत देख। लेकिन मै उससे यह कहता हू कि इसे सुहागरात मत समझ। सुहागरात नही है। तू चाद देख। विनय बहुत और बात है।

लेकिन हम ऐसे जिद्दी है जिसका कोई हिसाब नही। जैसे नसरूद्दीन था। दूसरी शादी की उसने। गया सुहागरात पर। बडा इठलाकर, अकड कर चल रहा है। फिर पूर्णिमा है। बडा आनदित है वह। रास्ते पर कोई मित्र मिल गया, उसने कहा—बडे आनदित हो। नसरूद्दीन ने कहा कि मेरी सुहागरात है। उस आदमी ने चारो तरफ देखा। लेकिन तुम्हारी पत्नी दिखाई नही पडती। उसने कहा—आर यू मैड? पहली दफे उसको लेकर आया, उसने सब रात खराब कर दी। इस बार उसको घर ही छोड आया हू। रात-भर बकवास करती रही—सो जाओ, यह करो, वह करो। पता नही रात कब चुक गई। और मेरी मा कहती थी कि सुहाग-रात···। इस बार तो उसको घर ही छोड आया हू, अकेले आया हू। सुहागरात चुकनी नही है।

कभी-कभी सब ··मा ने जरूर कहा था और ठीक ही कहा था। लेकिन नसरूद्दीन जो समझे है, वह नही कहा था। परम्परा जो समझती है ··शब्द वही हैं जो महावीर ने कहे थे, लेकिन परम्परा जो समझ लेती है, वह नही कहा था। विनय आविर्भाव होता है अन्तर का और उसकी मैंने यह वैज्ञानिक प्रक्रिया आपसे कही।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिसा, सयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते है।

गया अर्थ है। और भारत मे विवेकानन्द से लेकर गाधी तक ने जो भी सेवा का अर्थ किया है, वह ईसाइयत की सेवा है। और अव जो लोग थोडे अपने को नयी समझ का मानते है वे महावीर की सेवा से भी वैसा अर्थ निकालने की कोशिश करते है।

पडित वेचरदास दोशी ने महावीर-वाणी पर जो टिप्पणिया की है, उनमे उन्होने सेवा से वही अर्थ निकालने की कोशिश की है, जो ईसाइयत का है। उन्होने अर्थ निकालने की कोशिश की है, जो ईसाइयत का है। असल मे ईसाइयत अकेला धर्म है जिसने सेवा को केन्द्रीय स्थान दिया है। और इसलिए सारी दुनिया मे सेवा के सव अर्थ ईसाइयत के अर्थ हो गए। और विवेकानन्द कितना पश्चिम को प्रभावित कर पाए, इसमे सदेह है, लेकिन विवेकानन्द ईसाइयत से अत्यधिक प्रभावित हुए, यह असदिग्ध है। विवेकानन्द से कितने लोग प्रभावित हुए इसका कोई वहुत निश्चित मामला नही है। वे एक सेंसेशन की तरह अमरीका मे उठे और खो गए। लेकिन विवेकानन्द स्थायी रूप से ईसाइयत से प्रभावित होकर भारत वापस लौटे। और विवेकानन्द ने जो रामकृष्ण मिशन को गति दी, वह ठीक ईसाई मिशनरी की नकल है। उसमे हिन्दू विचारणा नही है।

और फिर विवेकानन्द से गाधी तक या विनोवा तक जिन लोगो ने भी सेवा पर विचार किया है, वे सभी ईसाइयत से प्रभावित है। असल मे गाधी हिन्दू घर मे पैदा हुए तो मन होता है मानने का कि वे हिन्दू थे। लेकिन उनके सारे सस्कार—नव्वे प्रतिशत सस्कार जैनो से मिले थे। इसलिए मानने को मन होता है कि वे मूलत जैन थे। लेकिन उनके मस्तिष्क का सारा परिष्कार ईसाइयत ने किया। गाधी पश्चिम से जव लौटे तो यह सोचते हुए लौटे कि क्या उन्हे हिन्दू धर्म बदल कर ईसाई हो जाना चाहिए। और उन पर जिन लोगो का सर्वाधिक प्रभाव पडा है—इमर्सन का, थोरो का, या रस्किन का—ईसाइयत की धारा से सेवा का विचार उनका केन्द्र था—उन सवका। तो इसलिए वैयावृत्य पर थोडा ठीक से सोच लेना जरूरी है, क्योकि ईसाइयत की सेवा की धारणा ने और सेवा की सब धारणाओ को डुवा दिया है।

दो तीन वातें—एक तो ईसाइयत की जो सेवा की धारणा है और वही इस वक्त सारी दुनिया मे सवकी धारणा है। वह धारणा फ्यूचर ओरिएटेड है, वह भविष्य उन्मुख है। ईसाइयत मानती है कि सेवा के द्वारा ही परमात्मा को पाया जा सकता है। सेवा के द्वारा ही मुक्ति होगी। सेवा एक साधन है, साध्य मुक्ति है। तो सेवा का जो ऐसा अर्थ है वह सप्रयोजन है, विद परपज है। वह परपजलैस नहीं है, वह निष्प्रयोजन नही है। चाहे मैं सेवा कर रहा हू धन पाने के लिए, चाहे यश पाने के लिए और चाहे मोक्ष पाने के लिए, इससे कोई फर्क नही पडता। मैं कुछ पाने के लिए सेवा कर रहा हू। वह पाना बुरा भी हो सकता है, अच्छा

वैयावृत्य और स्वाध्याय

सोलहवा प्रवचन दिनाक २ सितम्बर, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

तीसरा अतर-तप महावीर ने कहा है वैयावृत्य। वैयावृत्य का अर्थ होता है—सेवा। लेकिन महावीर सेवा से वहुत दूसरे अर्थ लेते है। सेवा का एक अर्थ है मसीही, क्रिश्चियन अर्थ है। और शायद पृथ्वी पर ईसाइयत ने, अकेले धर्म ने सेवा को प्रार्थना और साधना के रूप मे विकसित किया। लेकिन महावीर का सेवा से वैसा अर्थ नही है। ईसाइयत का जो अर्थ है, वही हम सबको ज्ञात है। महावीर का जो अर्थ है, वह हमे ज्ञात नही है। और महावीर के अनुयायियो ने जो अर्थ कर रखा है वह अति सीमित, अति सकीर्ण है।

परम्परा वैयावृत्य से इतना ही अर्थ लेती रही है, वह सुविधापूर्ण है इसलिए। वृद्ध साधुओ की सेवा, रुग्ण साधुओ की सेवा—ऐसा परम्परा अर्थ लेती रही है। ऐसा अर्थ लेने के कारण हैं, क्योकि साधु यह सोच ही नही सकता कि वह असाधु की सेवा करे। जो साधु नही है, वे ही साधु की सेवा करने आते है। जैनो मे तो प्रचलित है कि जब वे साधु का दर्शन करने जाते है तो उनको आप पूछें—कहा जा रहे है? तो वे कहते है—सेवा के लिए जा रहे है। धीरे-धीरे साधु का दर्शन करना भी सेवा के लिए जाना ही हो गया। इसलिए गृहस्थ साधु से जाकर पूछेगा—कुशल तो है, मगल तो है, कोई तकलीफ तो नही? वह इसीलिए पूछ रहा है कि कोई सेवा का अवसर मुझे दें तो मैं सेवा करू।

साधु की सेवा, ऐसा वैयावृत्य का अर्थ ले लिया गया। निश्चित ही साधु, तथाकथित साधु का इस अर्थ मे हाथ है। क्योकि महावीर ने, किसकी सेवा? यह नही कहा है। तो यह अर्थ महावीर का नही है। जो अर्थ है उसमे वृद्ध साधु और रुग्ण साधु और साधु की सेवा भी आ जाएगा। लेकिन यही इसका अर्थ नही है। दूसरा सेवा का जो प्रचलित रूप है आज, वह ईसाइयत के द्वारा दिया

हू तो मै कुछ विशेष कार्य कर रहा हू, मैं कुछ पुण्य अर्जन कर रहा हू। महावीर कहते हैं—कुछ पुण्य अर्जन नही कर रहे हो, इस आदमी को तुम किसी गड्ढे में किसी दिन गिराए होओगे, सिर्फ पूरा कर रहे हो अस्पताल पहुचाकर। इसे तुमने कभी चोट पहुचायी होगी, अब तुम मल्हम पट्टी कर रहे हो। यह पास्ट ओरिएटेड हैं। यह तुम्हारा किया हुआ ही, तुम पश्चात्ताप कर रहे हो, प्रायश्चित कर रहे हो, उसे पोछ रहे हो। लिखे हुए को पोछ रहे हो, नया नहीं लिख रहे हो। इसमे कुछ गौरव का कारण नहीं है।

निश्चित ही ऐसी सेवा करने वाला अपने को सेवक न मान पाएगा। तो महावीर कहते हैं—जिस सेवा मे सेवक आ जाए वह सेवा नही हैं। विना सेवक वने अगर सेवा हो जाए, तो ही सेवा है। यह जरा कठिन पडेगा हमे समझना। क्योकि रस तो सेवक का हैं, रस सेवा का नही है। अगर कोढी के पैर दावते वक्त आसपास के लोग कहे—अच्छा, तो किसी पाप का प्रक्षालन कर रहे हो। तो कोढी के पैर दावने का सव मजा चला जाए। हम चाहते हैं कि लोग तस्वीर निकालें, अखवारो मे छापें और कहे कि महासेवक है यह आदमी। यह कोढियो के पैर दाव रहा है।

नीत्शे ने सत फ्रासिस की एक जगह वहुत गहरी मजाक की हैं। सत फ्रासिस ईसाई सेवा के साकार प्रतीक है। सत फ्रासिस को कोई कोढी मिल जाता तो न केवल उसे गले लगाते, वल्कि उसके कोढो से भरे हुए ओठो को चूमते भी। फ्रेडरिक नीत्शे ने कहा है कि सत फ्रासिस, अगर मेरे वश मे होता तो मैं तुमसे पूछता कि कोढी के ओठ चूमते वक्त तुम्हारे मन को क्या हो रहा है? और मैं कोढियो को कहता कि वजाय सत फ्रासिस को मौका देने के कि वे तुम्हे चूमे, जहा वे तुम्हे मिल जाए, तुम उन्हे चूमो। कोढियो से कहता कि जहा भी सत फ्रासिस मिल जाए, छोडो मत। उन्हे पकडो, गले लगाओ और चूमो। और तव देखो कि सत फ्रासिस के चेहरे पर क्या परिणाम होते है।

जरूरी नही है कि नीत्शे जैसा सोचता है वैसा सत फ्रासिस के चेहरे पर परिणाम हो, क्योकि वह आदमी गहरा था। लेकिन यह वात वहुत दूर तक सच है कि जो आदमी कोढी के पास उसको चूमने जाता है वह किसी वहुत गरिमा के भाव से भर कर जा रहा है, वह कोई काम कर रहा है जो वडा कठिन है, असम्भव है। असल मे वह वासना के विपरीत काम करके दिखा रहा है। कोढी के ओठ से दूर हटने का मन होगा, चूमने का मन नही होगा। और वह चूमकर दिखा रहा है। वह कुछ कर रहा है, कोई कृत्य।

महावीर कहेगे—अगर इस करने मे थोडी भी वासना है—इस करने मे अगर थोडी भी वासना है, अगर उस करने मे इतना भी मजा आ रहा है कि मैं कोई विशेष कार्य कर रहा हू, कोई असाधारण कार्य कर रहा हू तो मैं फिर नए कर्मों

भी हो सकता है यह दूसरी बात है। नैतिक हो सकता है, अनैतिक हो सकता है यह दूसरी बात है। एक बात निश्चित है कि वैसी सेवा की धारणा वासना-प्रेरित है।

इसलिए ईसाइयत की जो सेवा है वह बहुत पैशोनेट है। इसलिए ईसाइयत के प्रचारक के सामने दुनिया के धर्म का कोई प्रचारक टिक नही सकता। नही टिक सकता इसलिए कि ईसाई प्रचारक एक पैशन, एक तीव्र वासना से भरा हुआ है। उसने सारी वासना को सेवा बना दिया है। इसलिए नकल करने की कोशिश चलती है। दूसरे धर्मों के लोग ईसाइयत की नकल करते है, पोच निकल जाती है वह नकल, उसमे से कुछ निकलता नही। लेकिन कम-से-कम कोई भारतीय धर्म ईसाइयत की धारणा को नही पकड सकता। उसका कारण यह है कि भारतीय मन सोचता ही ऐसा है कि जिस सेवा मे प्रयोजन है वह सेवा ही न रही। महावीर कहते है—जिस सेवा मे प्रयोजन है, वह सेवा ही न रही। सेवा होनी चाहिए निष्प्रयोजन। उससे कुछ पाना नही है।

लेकिन अगर कुछ भी न पाना हो तो करने की सारी प्रेरणा खो जाती है। नही, महावीर बहुत उल्टी बात कहते है। महावीर कहते है—सेवा जो है, वह पास्ट ओरिएटेड है, अतीत से जन्मी है, भविष्य के लिए नही है। महावीर कहते है—अतीत मे जो कर्म हमने किए हैं, उनके विसर्जन के लिए सेवा है। इसका कोई प्रयोजन नही है आगे। उससे कुछ मिलेगा नही। वल्कि कुछ गलत इकट्ठा हो गया है, उसकी निर्जरा होगी, उसका विसर्जन होगा। यह दृष्टि वहुत उल्टी है। महावीर कहते है कि अगर मै आपके पैर दाव रहा हू या गाधी जी, परचुरे शास्त्री कोढी के पैर दाव रहे है—गाधी भला सोचते हो कि वे सेवा कर रहे है, महावीर सोचते है कि वे अपने किसी पाप का प्रक्षालन कर रहे है। यह वडी उल्टी बात है। गाधी भला सोचते हो कि वे कोई पुण्य कार्य कर रहे है, महावीर सोचते हैं कि वे अपने किए पाप का प्रायश्चित कर रहे है। यह परचुरे शास्त्री को उन्होने कभी सताया होगा किसी जन्म की किसी यात्रा में। यह उसका प्रतिफल है। सिर्फ किए को अनकिया कर रहे हैं, अनडन करते है।

इसमे कोई गौरव नही हो सकता। ध्यान रहे, ईसाइयत की सेवा गौरव वन जाती है और इसलिए अहकार को पुष्ट करती है। महावीर की सेवा गौरव नही है क्योकि गौरव का क्या कारण है, वह सिर्फ पाप का प्रायश्चित्त है। इसलिए अहकार को तृप्त नही करती है, अहकार को भर नही सकती। सच तो यह है कि महावीर ने जो सेवा की धारणा दी है, वहुत अनूठी है। उसमे अहकार को खडे होने का उपाय नही है।

नही तो मैं कोढी के पैर दाव रहा हू तो मै कोई विशेप कार्य कर रहा हू—अकड भीतर पैदा होती है। मै वीमार को कधे पर टाग कर अस्पताल ले जा रहा

इसका मतलब ? इसका मतलब यह हुआ कि तुम अपने को सेवा के लिए खुला रखा, पैशोनेट सेवा नही। निकलो मत झूठा लेकर सुबह कि मैं सेवा करके लौटूगा ऐसा नही। घोषणा करके मत तय कर रखो कि सेवा करनी ही है। जिद्द मत करो राह चलते हो, कोई अवसर आ जाए तो खुला रखो। अगर सेवा हो सकती हो तो अपने को रोको मत।

इसमे फर्क है। एक तो सेवा करने जाओ प्रयोजन से, सक्रिय हो जाओ, सेवक बनो, धर्म समझो सेवा को। महावीर कहते है—खुला रखो, कही सेवा का अवसर हो, और सेवा भीतर उठती हो तो रोको मत, हो जाने दो। और चुपचाप विदा हो जाओ। पता भी न चले किसी को कि तुमने सेवा की। तुमको स्वय भी पता न चले कि तुमने सेवा की, तो वैयावृत्य है।

वैयावृत्य का अर्थ है—उत्तम सेवा। साधारण सेवा नही। ऐसी सेवा जिसमे पता भी नही चलता कि मैने कुछ किया। ऐसी सेवा जिसमे बोध है कि मैंने कुछ किया हुआ अनकिया, अनडन कुछ था जो बाधे था, उसे मैंने छोडा। इस आदमी से कोई सम्बन्ध थे जो मैंने तोडे। लेकिन अगर इसमे रस ले लिया तो फिर सम्बन्ध निर्मित होते है—फिर सम्बन्ध निर्मित होते है। और रस एक तरह का शोषण है—यह भी समझ लेना चाहिए—महावीर की दृष्टि मे अगर एक आदमी दुखी है और पीडित है और मैं उसकी सेवा करके स्वर्ग जाने की चेष्टा कर रहा हू तो मैं उसके दुख का शोषण कर रहा हू। मैं उसके दुख को साधन बना रहा हू। अगर वह दुखी न होता तो मै स्वर्ग न जा पाता। इसे ऐसा सोचें थोडा। तब इसका मतलब यह हुआ कि जिसके दुख के माध्यम से आप स्वर्ग खोज रहे है, यह तो बहुत मजेदार मामला है। इस गणित मे थोडे गहरे उतरना जरूरी है।

एक आदमी दुखी है और आप सेवा करके अपना सुख खोज रहे है, तो आप उसके दुख को साधन बना रहे है। यही तो सारी दुनिया कर रही है। यह तो सारी दुनिया कर रही है। एक धनपति अगर धन चूस रहा है तो आप उससे कहते है कि दूसरे लोग दुखी हो रहे है। आप उनके दुख पर सुख इकट्ठा कर रहे है। लेकिन एक पुण्यात्मा, दीन की, दुखी की सेवा कर रहा है और अपना स्वर्ग खोज रहा है, तब आपको ख्याल नही आता कि वह भी गहरे अर्थों मे यही कर रहा है। सिक्के अलग है, इस जमीन के नही—परलोक के, पुण्य के। बैंक-बैलेंस वह यहा नही खोल पाएगा, लेकिन कही खोल रहा है। कही किसी बैंक मे जमा होता चला जाएगा।

नही, महावीर कहते है—दूसरे के दुख का शोषण नही, क्योकि शोषण कैसे सेवा हो सकता है ? दूसरा दुखी है तो उसके दुख मे मेरा हाथ हो सकता है। उस हाथ को मुझे खीच लेना है, उसी का नाम सेवा है। वह मेरे कारण दुखी न हो, इतना हाथ मुझे खीच लेना है। इसके दो अर्थ हुए—मेरे कारण कोई दुखी न

'का सग्रह कर रहा हू । फिर सेवा भी पाप वन जाएगी, क्योकि वह भी कर्म वन्धन लाएगी। अगर मैं कुछ कर रहा हू, किए हुए को अनकिया कर रहा हू तो फिर भविष्य मे कोई कर्म वन्धन नही है । अगर मैं कोई फ्रेश ऐक्ट, कोई नया कृत्य कर रहा हू कि कोढी को चूम रहा हू तो फिर मैं भविष्य के लिए पुन आयोजन कर रहा हू, कर्म की शृखला का ।

महावीर कहते है—पुण्य भी अगर भविष्य-उन्मुख है तो पाप बन जाता है । यह बडा मुश्किल होगा समझना । पुण्य भी अगर भविष्य उन्मुख है तो पाप वन जाता है, क्यो ? क्योकि वह भी बधन वन जाता है । महावीर कहते है—पुण्य भी पिछले किए गए पापो का विसर्जन है । तो महावीर एक मेटा मैथाफिजिक्स या मैटा-मैथमेटिक्स की वात कर रहे है, परा गणित की । वे यह कह रहे है जो मैंने किया है उसे मुझे सतुलन करना पडेगा । मैंने एक चाटा आपको मार दिया है तो मुझे आपके पैर दबा देने पडेंगे । तो वह जो विश्व का जागतिक गणित है उससे सतुलन हो जाएगा । ऐसा नही कि पैर दवाने से मुझे कुछ नया मिलेगा, सिर्फ पुराना कट जाएगा । और जब मेरा सब पुराना कट जाए, मैं शून्यवत हो जाऊं, कोई जोड मेरे हिसाब मे न रहे, मेरे खाते मे दोनो तरफ बराबर हो जाए आकडे, जो मैंने किया वह सब अनकिया हो जाए; जो मैंने लिया वह सब दिया हो जाए, ऋण और धन बराबर हो जाए और मेरे हाथ मे शून्य बच रहे तो महावीर कहते है—वह शून्य अवस्था ही मुक्ति है ।

अगर ईसातयत की धारणा हम समझे तो सेवा शून्य मे नही ले जाती, धन मे ले जाती है, प्लस मे । आपका प्लस बढता चला जाता है, आपका धन बढता चला जाता है । आप जितनी सेवा करते है उतने धनी होते चले जाते हैं । उतना आपके पास पुण्य सग्रहीत होता है । और इस पुण्य का प्रतिफल आपको स्वर्ग मे, मुक्ति मे, ईश्वर के द्वारा मिलेगा । जितना आप पाप करते है, आपके पास ऋण इकट्ठा होता है और इसका प्रतिफल आपको नर्क मे, दुख मे, पीडा मे मिलेगा । महावीर कहते है—मोक्ष तो तब तक नही हो सकता जब तक ऋण या धन कोई भी ज्यादा है । जब दोनो बराबर है और शून्य हो गए । एक दूसरे को काट गए, तभी आदमी मुक्त होता है । क्योकि मुक्ति का अर्थ ही यही है कि अब न मुझे कुछ लेना है और न मुझे कुछ देना है। इसको महावीर ने निर्जरा कहा है ।

और निर्जरा के सूत्रों मे वैयावृत्य बहुत कीमती है । तो महावीर इसलिए नही कहते कि दया करके सेवा करो क्योकि दया ही बधन वनेगा । कुछ भी किया हुआ बधन वनता है । महावीर यह नही कहते कि करुणा करके सेवा करो कि देखो यह आदमी कितना दुखी है, इसकी सेवा करो । महावीर यह नही कहते कि यह इतना दुखी है इसलिए सेवा करो। महावीर कहते है कि अगर तुम्हारा कोई पिछला कर्म तुम्हारा पीछा कर रहा हो तो सेवा करो और छुटकारा पा लो।

कटेगी, मिलेगा कुछ नही ।

यह भेद इतना गहरा है, और इस भेद के कारण ही जैन परम्परा को जन्मा त पायी । नही तो जीसस से पाच सौ वर्ष पहले महावीर ने सेवा की बात की थी और उसे अतर-तप कहा था जो जैन परम्परा उसे जगा न पायी, जरा भी न जगा पायी । क्योकि कोई पैशन न था, उसमे कोई त्वरा नही पैदा होती थी । फिर कुछ कटेगा, कुछ मिटेगा, कुछ छूटेगा, कुछ कमी ही हो जाएगी उल्टी । पापी के भी पाप का ढेर थोडा कम हो तो उसको भी लगता है कुछ कम हो रहा है । समथिग इज मीसिंग । मेरे पास जो था उसमे कमी हो गयी । बीमारी भी लम्बे दिनो की बीमारी के बाद जब स्वस्थ होता है तो लगता है समथिंग इज मीसिंग, कुछ खो रहा है । इसलिए जो लम्बे दिनो तक बीमारी रह जाए और बीमारी मे रस ले ले, वह कितना ही कहे, स्वस्थ होना चाहता है, भीतर कही कोई हिस्सा कहता है मत होओ ।

मनोवैज्ञानिक कहते है—सत्तर प्रतिशत बीमार इसलिए बीमार बने रहते है कि बीमारी मे उन्हे रस पैदा हो गया है, वे बीमारी को बचाना चाहते है । आप कहते है—अगर बीमारी को बचाना चाहते है तो चिकित्सक के पास क्यो जाते है, दवा क्यो लेते है ? यही तो मनुष्य का द्वन्द्व है कि वह दोहरे काम एक साथ कर सकता है । इधर दवा ले सकता है, उधर बीमारी को बचा सकता है । क्योकि बीमारी के भी रस है और कई बार स्वास्थ्य से ज्यादा रसपूर्ण है । जब आप बीमार पडते है तो सारा जगत् आपके प्रति सहानुभूतिपूर्ण हो जाता है । कितना चाहा कि जब आप स्वस्थ होते है तब जगत् सहानुभूतिपूर्ण हो जाए, लेकिन कोई सहानुभूतिपूर्ण नही होता है । जब आप बीमार होते है तो घर के लोग प्रेम का व्यवहार करते हुए मालूम पडते है । जब आप बीमार नही होते, तब नही व्यवहार करते मालूम पडते । जब आप बीमार होते है तो ऐसा मालूम होता है कि आप सेंटर हो गए सारी दुनिया के । सारी दुनिया परिधि पर है, आप केन्द्र पर है । नर्से घूम रही है, डाक्टर चक्कर लगा रहे है, परिवार आपके इर्द-गिर्द घूम रहा है, मित्र आ रहे है, देखने वाले आ रहे है । आप ध्यान रखते है कि कौन देखने नही आया ।

मेरे एक मित्र का लडका मर गया । जवान लडका मर गया । उनकी उम्र तो सत्तर वर्ष है । छाती पीट कर रो रहे थे । जब मैं पहुचा तो पास में उन्होने टेलि-ग्राम का ढेर लगा रखा था । जल्दी से मैंने उनसे एक-दो मिनट बात की । लेकिन मैंने देखा उनकी उत्सुकता बात मे नही है, टेलीग्राम मैं देख जाऊ, इसमे है । तो उन्होंने वे टेलीग्राम मेरी तरफ सरकाए और कहा कि प्रधानमत्री ने भी भेजा है और राष्ट्रपति ने भी भेजा है । जब तक मैंने टेलीग्राम सब न देख लिए तब तक उनको तृप्ति न हुई । बडे दुख मे है । लेकिन दुख मे भी रस लिया जाता है । ये टेलीग्राम वे फाडकर न फेंक सके, ये टेलीग्राम वे भूल न सके, इनका वे ढेर लगाए

हो, ऐसा मैं जियू । और अगर मुझे कोई दुखी मिल जाता है तो मेरे कारण अतीत मे वह दुख पैदा न हुआ हो, ऐसा मै व्यवहार करू कि अगर मेरा कोई भी हाथ हो तो हट जाए । इसमे कोई पैशन नही हो सकता, इसमे कोई त्वरा और तीव्रता नही हो सकती, इसमे कोई रस नही हो सकता करने का क्योकि यह सिर्फ न करना है, यह सिर्फ मिटाना और पोछना है ।

इसलिए महावीर की सेवा समझी नही जा सकी क्योकि हम सब पैशोनेट है। अगर धर्म भी हमको पागलपन न बन जाए तो हम धर्म भी नही कर सकते। अगर मोक्ष भी हमारी जिद्द न बन जाए तो हम मोक्ष भी नही जा सकते। अगर पुण्य भी किसी अर्थ मे शोषण न हो तो हम पुण्य भी नही कर सकते, क्योकि शोषण हमारी आदत है, शोषण हमारे जीवन का ढग है । व्यवस्था है हमारी। और वासना हमारा व्यवहार है । जिस चीज मे हम वासना जोड दे वही हम कर सकते है, अन्यथा हम कर नही सकते । तो अगर सेवा वासना हो जाए तो हम सेवा भी कर सकते है । इसलिए सेवा के लिए आपको उन्मुख करने वाले लोग कहते हैं कि सेवा से क्या-क्या मिलेगा, दान से क्या-क्या मिलेगा । सवाल यह नही है कि दान क्या है, सेवा यह है । सवाल क्या है कि आपको क्या-क्या मिलेगा, आप क्या-क्या पा सकोगे । वे आपको स्वर्ग की पूरी झलक दिखाते है । आपसे कुछ भी करवाना हो तो आपकी वासना को प्रज्जवलित करना पडता है । आपकी वासना प्रज्जवलित न हो तो आप कुछ भी नही करने को राजी है ।

जीसस से मरने के पहले जीसस के एक शिष्य ने पूछा कि घडी आ गयी पास, सुनते है हम कि आप नही बच सकेंगे। एक बात तो बता दे । यह तो पक्का है कि आप ईश्वर के पास सिंहासन पर बैठेंगे। हम लोगो की जगह क्या होगी ? हम कहां बैठेंगे ? वह जो ईश्वर का राज्य होगा, सिंहासन होगा, आप तो पडौस मे बैठेंगे यह पक्का है । हम लोगो की क्रम सख्या क्या होगी ? कौन कहा बैठेगा, किस नम्बर से बैठेगा ? जब भी आदमी कोई त्याग करता है तो पहले पूछ लेता है कि कल क्या होगा ? इतना छोडता हू, मिलेगा कितना ? और ध्यान रहे, जब छोडने मे मिलने का ख्याल हो, तो वह छोडना है ? वह बार्गेनिंग है, वह सौदा है । इससे क्या फर्क पडता है कि आपको क्या मिलेगा—मोक्ष मिलेगा, स्वर्ग मिलेगा, धन मिलेगा, प्रेम मिलेगा, आदर मिलेगा इससे कोई सवाल नही पडता । मिलेगा कुछ ।

महावीर कहते है—सेवा से मिलेगा कुछ भी नही, कुछ कटेगा । कुछ मिलेगा नही, कुछ कटेगा । कुछ छूटेगा, कुछ हटेगा । सेवा को अगर हम महावीर की तरह समझें तो वह मेडीसनल है, दवाई की तरह है । दवाई से कुछ मिलेगा नही, सिर्फ बीमारी कटेगी । ईसाइयत की सेवा टानिक की तरह है, उसमे कुछ मिलेगा। उसका भविष्य है । महावीर की सेवा मेडीसन की तरह है, उससे बीमारी भर

खुद भी कहा सो पा रहे है ' वह भी नही सो पा रही है। क्योकि वे झूठे दात सोने कैसे देंगे ?

हम सब एक दूसरे के सामने चेहरे बनाए हुए हैं, जो झूठे हैं। लेकिन रिलैक्स कैसे करें। सत्य रिलैक्स कर जाता है, लेकिन सत्य में जीना कठिन पडता है। इसलिए दोहरा हम जीते है। एक कोने मे कुछ, एक कोने मे कुछ, और सब चलाते है। बीमारी मे रस है, यह कोई बीमार स्वीकार करने को राजी नही होता, लेकिन बीमारी मे रस है। इतना रस स्वास्थ्य मे भी नही आता है जितना बीमारी मे आता है। इसलिए स्वास्थ्य को कोई बढा-चढाकर नही बताता, बीमारी को सब लोग बढा-चढाकर बताते हैं।

यह जो हमारा चित्त है, यह द्वन्द्व से भरा है। इसलिए हम करते कुछ मालूम पडते है, कर कुछ और रहे होते है। कहते है—गरीब पर बडी दया आ रही है, लेकिन उस दया मे भी रस लेते मालूम पडते हैं। अगर दुनिया मे कोई गरीब न रह जाए तो सबसे ज्यादा तकलीफ उन लोगो को होगी जो गरीब की सेवा करने मे पैशोनेट रस ले रहे है। वे क्या करेंगे ? अगर दुनिया नैतिक हो जाए तो साधु जो समाज को नैतिकता समझाते फिरते है, ये ऐसे उदास हो जाएगे जिसका हिसाब लगाना मुश्किल है। ऐसा कभी होता नही है इसलिए मौका नही आता। एक दफा आप मौका दें और नैतिक हो जाए, और जब साधु कहे कि आप चोरी मत करो, आप कहें हम करते ही नही। कहे झूठ मत बोलो, आप कहे हम बोलते हीं नही। कहे वेईमानी मत करों, आप कहे हम करते ही नही। वह कहे दूसरे की स्त्री की तरफ देखो मत, आप कहे बिल्कुल अन्धे है। देखने का सवाल ही नही है। तो आप साधु के हाथ से उसका सारा काम छीने ले रहे है। पूरी जडें उखाड ले रहे है। अब साधु क्या करेगा ?

साधु क्या करेगा ? यह कठिन होगा समझना, लेकिन साधु-असाधु के रोगो पर जीता है। वह पैरासाइट है। वह जो असाधु चारो तरफ दिखाई पडते है, उन पर ही साधु जीता है। वह पैरासाइट है। अगर दुनिया सच मे साधु हो जाए तो साधु एकदम काम के बाहर हो जाए। उसको कोई काम नही बचता। और कुछ आश्चर्य न होगा जो साधु आप को समझा रहे थे अगर समझाने मे उनको रस है यही कि समझाते वक्त आदमी गुरु हो जाता है, ऊपर हो जाता है, सुपीरियर हो जाता है उससे जिसे समझाता है। इसलिए समझाने का रस है। अगर समझाने मे रस था, अगर समझाने मे आपके अज्ञान का शोषण था, अगर समझाने मे आप सीढी थे उसके ज्ञान की तरफ बढने के, तो इसमे कोई हैरानी न होगी कि जिस दिन सारे लोग साधु हो जाए, उस दिन जो साधुता की समझा रहा था, ईमानदारी की समझा रहा था, वह बेईमानी के राज बताने लगे कि बेईमानी के बिना जीना मुश्किल है। चोरी करनी ही पडेगी, असत्य बोलना ही पडेगा, नही तो मर

रहे ।

पन्द्रह दिन वाद जव मै गया तव वह ढेर और बडा हो गया था । ढेर लगाए हुए थे । कहते थे आत्महत्या कर लूगा, क्योकि अव क्या जीना । जवान लडका मर गया, मरना मुझे चाहिए था । कहते थे आत्महत्या कर लूगा, वह तारो का ढेर बढाते जाते थे । मैंने कहा—कव करिएगा ? पन्द्रह दिन हो गए है । जितने दिन वीत जाएगे उतना मुश्किल होगा करना । तो उन्होने मुझे ऐसा देखा जैसे कोई दुश्मन को देखे । उन्होने कहा—आप क्या कहते है, आप और ऐसे ! ऐसी बात कहते है ! क्योकि वह आत्महत्या करने के लिए इसलिए कह रहे थे पन्द्रह दिन से निरन्तर कि जव आत्महत्या की कोई भी सुनता था तो वहुत सहानुभूति प्रगट करता था । मैंने कहा—मै सहानुभूति प्रगट न करूगा । इसमे आप रस ले रहे है । उसी दिन से वे मेरे दुश्मन हो गए ।

इस दुनिया मे सच कहना दुश्मन बनाना है । इस दुनिया मे किसी से भी सच कहना दुश्मन बनाना है । झूठ वडी मित्रताए स्थापित करता है । कभी एक दफे देखें, चौबीस घण्टे तय कर ले सच ही वोलेंगे! आप पाएगे सब मित्र विदा हो गए । चौबीस घण्टा, इससे ज्यादा नहीं । पत्नी अपना सामान बाध रही है, लडके बच्चे कह रहे है नमस्कार—मित्र कह रहे है कि तुम ऐसे आदमी थे ! सारा जगत् शत्रु हो जाएगा ।

मुल्ला नसरूद्दीन एक दिन सुवह बैठकर अपना अखवार पढ रहा है । और जैसा अखवार पर सभी पत्निया नाराज होती है, ऐसा उसकी पत्नी भी नाराज हो रही थी कि क्या सुवह से तुम अखबार लेकर वैठ जाते हो ! एक जमाना था कि तुम सुवह से मेरी सूरत की बाते करते थे और अव तुम कुछ बात नही करते हो । एक वक्त था कि तुम कहते थे कि तेरी वाणी कोयल जैसी मधुर है, अब तुम कुछ भी नही कहते । मुल्ला ने कहा—है तेरी वाणी मधुर, मगर वकवास बन्द कर, मुझे अखबार पढने दे । है तेरी वाणी मधुर, पर वकवास बन्द कर मुझे अखबार पढने दो ।

दोहरा है आदमी । मजबूरी है उसकी क्योकि सीधा और सच्चा होने नही देता समाज । महगा पड जाएगा । इसलिए झूठ को पोछता चला जाता है ।

मुल्ला ने जब तीसरी शादी की, तो तीसरे दिन रात को पत्नी ने कहा कि अगर तुम वुरा न मानो तो मै अपने नकली दात निकाल कर रख दू, क्योकि रात मुझे इनमे नीद नही आती । मुल्ला ने कहा—थैंक्स, गुडनेस । नाउ आई कैन पुट आफ माई फाल्स लैग, माई विग, माई ग्लास आय इन रिलैक्स । तो मै अब अपनी लकडी की टाग अलग कर सकता हू, और अपते झूठे वाल अलग कर सकता है और काच की आख रख सकता हू और विश्राम कर सकता हू । धन्य भाग, हे परमात्मा ! तूने अच्छा वता दिया । नही तो हम भी तने थे, तीन दिन से हम

गाधी तो कभी भूल नही करते हैं इसलिए किसी की भूल वर्दाश्त नही कर सकते। वापस जाओ, वह पत्थर लेकर आओ। नोआखाली, चारो तरफ आगें जल रही है, लाशें विछी है। वह अकेली लडकी, रोती, घवराती, छाती धडकती वापस लौटी।

उस पत्थर मे कुछ भी न था। वैसे पचास पत्थर उसी गाव से उठाए जा सकते थे। लेकिन डिसीप्लेनेरियन, अनुशासन! जो आदमी अपने घर पर पक्का अनुशासन रखता है वह दूसरो की गर्दन दवा लेता है। क्योंकि खुद नही भूलते कोई चीज। दूसरा कैसे भूल सकता है? तव दिखने वाला ऊपर से जो अनुशासन है, गहरे मे हिंसा हो जाता है। यह भी कोई वात थी! आदमी भूल सकता है, भूलना स्वाभाविक है। और कोई वडा कोहिनूर हीरा नही भूल गया है। पैर घिसने का पत्थर भूल गया है। लेकिन सवाल पत्थर का नही है, सवाल सख्ती है, सवाल नियम का है। नियम का पालन होना चाहिए।

अगर आप अनुशासन, सेवा, नियम, मर्यादा, इस तरह की वातें मानने वाले लोगो के पास जाकर देखें तो आपको दूसरा पहलू भी वहुत शीघ्र दिखाई पडना शुरू हो जाएगा। जितने सख्त वे अपने पर है उससे कम सख्त वे दूसरे पर नही हैं। जव आप किसी के पैर दाव रहे हैं, तव आप किसी दिन पैर दवाए जाने का इन्तजाम भी कर रहे हैं मन के किसी कोने मे। और अगर आपके पैर न दावे गए उस दिन, तव आपकी पीडा का अन्त नही होगा।

लेकिन महावीर की सेवा का इससे कोई सम्वन्ध नही है। महावीर तो कहते हैं कि अगर मेरी कोई सेवा करेगा तो भी वह इसलिए कर रहा है कि उसके किसी पाप का प्रक्षालन है। अगर नही है कोई पाप का प्रक्षालन तो वात समाप्त हो गयी। कोई मेरी सेवा नही कर रहा है। इसमे दूसरे को गौरव दिया जाए तो फिर दूसरे को निन्दा भी दी जा सकती है। लेकिन न कोई गौरव है, न कोई निन्दा है। वैयावृत्य का ऐसा अर्थ है।

तो आप जव भी सेवा कर रहे है तव ध्यान रखे, वह भविष्य-उन्मुख न हो। तो आप अन्तर-तप कर रहे है। जव आप सेवा कर रहे हो तो वह निष्प्रयोजन हो, अन्यथा आप अन्तर-तप नही कर रहे हैं। जव आप सेवा कर रहे है तव उससे किसी तरह की गौरव की, गरिमा की, अस्मिता की कोई भावना भीतर गहन न हो, अन्यथा आप सेवा नही कर रहे है, वैयावृत्य नही कर रहे है। वह सिर्फ किए गए पाप का, किए गए कर्म का अनकिया करना हो, वस इतना—तो तप है।

और क्यो इसको अन्तर-तप कहते है महावीर! इसलिए अन्तर-तप कहते हैं, कि यह करना कठिन है। वह सेवा सरल है जिसमे कोई रस आ रहा हो। इस सेवा मे कोई भी रस नही है, सिर्फ लेना-देना ठीक करना है। इसलिए तप है और वडा आन्तरिक तप है। क्योंकि हम कुछ करें और कर्ता न वनें, इससे वडा

जाओगे। जीवन मे सब रस ही खो जाएगा।

अगर उसको समझाने मे ही रस आ रहा था तब अगर वह सच मे ही साधु था, समझाना उसका रस न था, शोपण न था। तो वह प्रसन्न होगा, आनन्दित होगा। वह कहेगा—समझाने की झझट भी मिटी। लोग साधु हो गए अब बात ही खत्म हो गयी। अब मुझे समझाने का उपद्रव भी न रहा। अगर सेवा मे आपको रस आ रहा था कि आप कही जा रहे थे—स्वर्ग, सुख मे, आदर मे, प्रतिष्ठा मे, सम्मान मे—अगर सेवा करवाने को कोई भी न मिले तो आप बडे उदास और दुखी हो जाएगे। लेकिन अगर सेवा वैयावृत्य थी, जैसा महावीर मानते है तो आप प्रसन्न होगे कि अब आपका ऐसा कोई भी कर्म नही बचा है कि जिसके कारण आपको किसी की सेवा करनी पडे। आप प्रसन्न होगे, प्रफुल्लित होगे, प्रमुदित होगे, आनन्दित होगे। आप कहेगे धन्यभाग, निर्जरा हुई।

यह भेद है। सेवा मे कोई रस नही है। सेवा केवल मेडिसनल है। जो किया है उसे पोछ डालना है, मिटा देना है। ध्यान रहे, जो व्यक्ति सेवा करेगा दूसरे की, कहेगा वह बीमार है इसलिए सेवा करता हू, वृद्ध है इसलिए सेवा करता हू। वह बीमार होने पर सेवा मागेगा, वृद्ध होने पर सेवा मागेगा। क्योकि ये एक ही तर्क के दो हिस्से है। लेकिन महावीर की सेवा करने की जो धारणा है, उसमे सेवा मागी नही जाएगी। क्योकि सेवा कभी इस दृष्टि से की नही गयी, मागी भी नही जाएगी। मागने का कोई कारण नही है। और अगर कोई सेवा न करेगा तो उससे क्रोध भी पैदा नही होगा, उससे कष्ट भी मन मे नही आएगा। उसे ऐसा भी नही लगेगा कि इस आदमी ने सेवा क्यो नही की।

इसलिए जो लोग भी सेवा करते है वे बडे टार्चर मास्टर्स होते है। अगर आप सेवको के आश्रम मे जाकर देखे, जो कि सेवा करते है, तो आप एक और मजेदार बात देखेगे कि वह सेवा लेते भी हैं, उतनी ही मात्रा मे। और उतनी ही सख्ती से। सख्ती उनकी भयकर होती है। जरा-सी बात चूक नही सकते। और कभी-कभी अत्यन्त हिंसात्मक हो जाते है। यह बहुत मजे की बात है कि आप जितने सख्त अपने पर होते हैं उससे कम सख्त आप किसी पर नही होते। आप ज्यादा ही सख्त होगे। कभी-कभी बहुत छोटी-छोटी बातो मे बडी अजीब घटना घटती है।

गाधीजी नोआखाली मे यात्रा पर थे। कठिन था वह हिस्सा, एक-एक गाव खून और लाशो से पटा था। एक युवती उनकी सेवा मे है, वह उनके साथ चल रही है। एक गाव से अड्डा उखडा है, दोपहर वहा से चले है, साझ दूसरे गाव पहुचे है। लेकिन गाधीजी स्नान करने बैठे है। देखा तो उनको पत्थर, जिससे वे पैर घिसते थे, वह पीछे छूट गया पिछले गाव मे। रात उतर रही है, अन्धेरा उतर रहा है। उन्होने उस लडकी को बुलाया और कहा कि यह भूल कैसे हुई ? क्योकि

है, लेकिन स्वाध्याय के लिए पंडित होना काफी नही है। क्योंकि स्वाध्याय बहुत जटिल मामला है। आप बहुत कम्प्लेक्स हैं, आप बहुत उलझे हुए हैं। आप एक ग्रन्थियो का जाल हैं। आप एक पूरी दुनिया हैं, हजार तरह के उपद्रव हैं वहा। उस सबके अध्ययन का नाम स्वाध्याय है। तो अगर आप अपने क्रोध का अध्ययन कर रहे हैं तो स्वाध्याय कर रहे हैं। हा, क्रोध के सम्बन्ध मे शास्त्र में क्या लिखा है, उसका अध्ययन कर रहे हैं तो स्वाध्याय नही कर रहे हैं। अगर आप अपने राग का अध्ययन कर रहे हैं तो स्वाध्याय कर रहे हैं। राग के सम्बन्ध में शास्त्र मे क्या लिखा है, उसका अध्ययन कर रहे हैं तो स्वाध्याय नही कर रहे हैं। और आपके भीतर सब मौजूद है, जो भी किसी शास्त्र मे लिखा है वह सब आपके भीतर मौजूद है। इस जगत् मे जितना भी जाना गया है, वह प्रत्येक आदमी के भीतर मौजूद है। और इस जगत् मे जो भी कभी जाना जाएगा वह प्रत्येक आदमी के भीतर आज भी मौजूद है। आदमी एक शास्त्र है—परम शास्त्र है, द अल्टीमेट स्क्रिप्चर। इस बात को समझें तो महावीर का स्वाध्याय समझ मे आएगा।

मनुष्य परम शास्त्र है। क्योंकि जो भी जाना गया है, वह मनुष्य ने जाना। जो भी जाना जाएगा वह मनुष्य जानेगा। काश, मनुष्य स्वय को ही जान ले, तो जो भी जाना गया है और जो भी जाना जा सकता है वह सब जान लिया जाता है। इसलिए महावीर ने कहा है—एक को जानने से सब जान लिया जाता है। स्वय को जानने से सर्व जान लिया जाता है। इसके कई आयाम है। पहली तो बात यह है कि जानने योग्य जो भी है उसके हम दो हिस्से कर सकते है—एक तो आब्जेक्टिव, वस्तुगत, दूसरा सब्जेक्टिव, आत्मगत। जानने मे दो घटनाए घटती हैं—जानने वाला होता है और जानी जाने वाली चीज होती है। विषय होता है जिसे हम जानते हैं, और जानने वाला होता है जो जानता है। विज्ञान का सम्बन्ध विषय से है, आब्जेक्ट से है, वस्तु से है। जिसे हम जानते है उसे जानने से है। धर्म का सम्बन्ध जानने से है जिससे हम जानते हैं, जो जानता है उसे जानने से है।

ज्ञाता को जानना धर्म है और ज्ञेय को जानना विज्ञान है। ज्ञेय को हम कितना ही जान लें तो ज्ञाता के सम्बन्ध मे तो भी पता नही चलता। कितना ही हम जान लें चाद-तारे, सूरजो के सम्बन्ध मे तो भी अपने सम्बन्ध मे कुछ पता नही चलता। बल्कि एक बडे मजे की बात है कि जितना हम वस्तुओ के सम्बन्ध मे ज्यादा जान लेते है उतना ही हमें वह भूल जाता है, जो जानता है। क्योकि जानकारी बहुत इकट्ठी हो जाए तो ज्ञाता छिप जाता है। आप इतनी चीजो के सम्बन्ध मे जानते हैं कि आपको ख्याल ही नही रहता कि अभी जानने को कुछ शेष बच रहा है इसलिए विज्ञान बढता जाता रोज, जानता जाता रोज। कितने प्रकार के मच्छर हैं, विज्ञान जानता है। प्रत्येक प्रकार के मच्छर की क्या खूबिया है, विज्ञान जानता है। कितने प्रकार की वनस्पतियो है, विज्ञान जानता है।

तप क्या होगा ? हम कुछ करे और कर्ता न वने, इससे वडा तप क्या होगा ? सेवा जैसी चीज करे जो कोई करने को राजी नही है—कोढी के पैर दबाए और फिर भी मन मे कर्ता न बनें तो तप हो जाएगा और वहुत आन्तरिक तप हो जाएगा।

आन्तरिक क्यो कहते है ? आन्तरिक इसलिए कहते है कि सिवाय आपके और कोई न पहचान सकेगा। वात भीतरी है। आप ही जा सकेगे; लेकिन आप विल्कुल जाच लेगे, कठिनाई नही होगी। जो व्यक्ति भी भीतर की जाच मे सलग्न हो जाता है वह ऐसे ही जान लेता है। जव आपके पैर मे काटा गडता है तो आप कैसे जानते है कि दुख रहा है ! और जब कोई आलिंगन से आपको अपने गले लगा लेता है तो आप कैसे जानते है कि हृदय प्रफुल्लित हो रहा है ! और जब कोई आपके चरणो मे सिर रख देता है तो आपके भीतर जो लहर दौड जाती है वह आप कैसे जान लेते है ? नही, उसके लिए वाहर कोई खोजने की जरूरत नही, आन्तरिक मापदण्ड आपके पास है।

तो जव सेवा करते वक्त आपको किसी भी तरह की भविष्य उन्मुखता मालूम पडे, तो समझना कि महावीर ने उस सेवा के लिए नही कहा है। अगर कोई पुण्य का भाव पैदा हो तो कहना तो जानना कि महावीर ने उस सेवा के लिए नही कहा है। अगर ऐसा लगे कि मैं कुछ कर रहा हू, कुछ विशिष्ट, तो समझना कि महावीर ने उस सेवा के लिए नही कहा है। अगर यह कुछ भी पैदा न हो और सेवा सिर्फ ऐसे हो जैसे तख्ते पर लिखी हुई चीज को किसी ने पोछकर मिटा दिया है। तख्ता खाली हो गया है और भीतर खाली हो गए, आप अन्तर-तप मे प्रवेश करते है।

महावीर ने वैयावृत्य के वाद ही जो तप कहा है, वह है स्वाध्याय—चौथा तप। निश्चित ही, अगर सेवा का आप ऐसा प्रयोग करें तो आप स्वाध्याय मे उतर जाएगे, स्वय के अध्ययन मे उतर जाएगे। लेकिन स्वाध्याय से वडा गौण अर्थ लिया जाता रहा है—वह है शास्त्रो का अध्ययन, पठन, मनन। महावीर अध्ययन भी कह सकते थे, स्वाध्याय कहने की क्या जरूरत थी ? उसमे स्व जोडने का क्या प्रयोजन था ? अध्ययन काफी था। स्वय का अध्ययन स्वाध्याय का अर्थ होता है। शास्त्र का अध्ययन नही। लेकिन साधु शास्त्र खोल बैठे है सुवह से, उनसे पूछिए—क्या कर रहे है ? वे कहते है—स्वाध्याय करते है। शास्त्र निश्चित ही किसी और का होगा। स्वाध्याय शास्त्र नही बन सकता। अगर खुद का ही शास्त्र पढ रहे है तो विल्कुल वेकार पढ रहे है। क्योकि, खुद का ही लिखा हुआ है, अव उसमे और पढने को क्या बचा होगा ? जानने को क्या है ?

स्वाध्याय का अर्थ है—स्वय का अध्ययन। वडा कठिन है। शास्त्र पढना तो वडा सरल है। जो भी पढ सकता है, वह शास्त्र पढ सकता है। पठित होना काफी

जिससे वह कह सके कि यह ज्ञान है, जिससे प्रकाश हो गया हो। सब अंधेरा भरा है और फिर भी वह जानता है कि सब जानता हूं। इसे महावीर मिथ्या ज्ञान कहते हैं।

शास्त्र से जो मिलता है वह सत्य नही हो सकता, स्वय से जो मिलता है वही सत्य होता है। यद्यपि स्वय से मिला गया शास्त्र मे लिखा जाता है—स्वय से मिला गया शास्त्र मे लिखा जाता है, लेकिन शास्त्र से जो मिलता है वह स्वय का नही होता। शास्त्र कोई और लिखता है। वह किसी और की खबर है जो आकाश मे उडा। वह किसी और की खबर है जिसने प्रकाश के दर्शन किए। वह किसी और की खबर है जिसने सागर मे डुबकी लगाई। लेकिन आप किनारे पर बैठकर पढ रहे है। इसको मत भूल जाना कि किनारे पर बैठकर आप कितना ही पढें सागर मे डुबकी लगाने वाले का वक्तव्य से आपकी डुबकी नही लग सकती। मगर डर यह है कि शास्त्र मे डुबकी लगा लेते है लोग। और जो शास्त्र मे डुबकी लगा लेते है वे भूल ही जाते हैं कि सागर अभी बाकी है। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि शास्त्र मे डुबकी ऐसी लग जाती है कि भूल ही जाता है कि सागर भी आगे है। तो शास्त्र सागर की तरफ ले जाने वाला कम ही सिद्ध होता है, सागर की तरफ जाने मे रुकावट वाला ज्यादा सिद्ध होता है। इसलिए महावीर शास्त्राध्ययन को स्वाध्याय नही कहते।

इसका यह मतलब नही है कि महावीर शास्त्र के अध्ययन को इन्कार कर रहे है। लेकिन वह स्वाध्याय नही है। इसको अगर ख्याल मे रखा जाए तो शास्त्र का अध्ययन भी उपयोगी हो सकता है। उपयोगी हो सकता है। अगर यह ख्याल मे रहे कि शास्त्र का सागर सागर नही, और शास्त्र का प्रकाश प्रकाश नही, और शास्त्र का आकाश आकाश नही; और शास्त्र का परमात्मा परमात्मा नही, और शास्त्र का मोक्ष मोक्ष नही। अगर यह स्मरण रहे, और यह स्मरण रहे कि किसी ने जाना होगा, उसने शब्दो मे कहा है। लेकिन शब्दो मे कहते ही सत्य खो जाता है, केवल छाया रह जाती है। यह स्मरण रहे तो शास्त्र को फेंक कर किसी दिन सागर मे छलाग लगाने का मन आ जाएगा। अगर यह स्मरण न रहे, सागर ही बन जाए शास्त्र, सत्य ही बन जाए शास्त्र मे ही सब भटकाव हो जाए तो सागर को छिपा लेगा शास्त्र।

और इसलिए कई बार अज्ञानी कूद जाते है परमात्मा मे और ज्ञानी वचित रह जाते है। तथाकथित ज्ञानी, द सो काल्ड नोअर्स, वे वचित रह जाते हैं। इसलिए उपनिषद् कहते है कि अज्ञानी अधकार मे भटकते ही है, ज्ञानी महा अधकार में भटक जाते हैं। स्वाध्याय का अर्थ है—स्वय मे उतरो और अध्ययन करो। पूरा जगत् भीतर है। वह सब्जेक्टिव, वह आत्मगत जगत् पूरा भीतर है। उसे जानने चलो, लेकिन रुख बदलना पडेगा। इसलिए स्वाध्याय का पहला सूत्र है—रुख।

प्रत्येक वनस्पति मे क्या-क्या छिपा है, विज्ञान जानता है। कितने सूरज हैं, कितने तारे है, कितने चाद हैं, विज्ञान जानता है।

आइस्टीन ने मरते वक्त कहा कि अगर मुझे दुबारा जीवन मिले तो मैं एक सत होना चाहूगा। क्यो ? जो खाट के आसपास इकट्ठे थे उन्होने पूछा—क्यो ? तो आइस्टीन ने कहा—जानने योग्य तो अब एक ही बात मालूम पडती है कि वह जो जान रहा था, वह कौन है ? जिसने जान लिया कि चाद-तारे कितने है, लेकिन होगा क्या ? दस हैं कि दस हजार है, कि दस करोड है कि दस अरब है, इससे होगा क्या। दस है ऐसा जानने वाला भी वही खडा रहता है, दस करोड है ऐसा जानने वाला भी वही खडा रहता है, दस अरब है ऐसा जानने वाला भी वही खडा रहता है। जानकारी से जानने वाले मे कोई भी परिवर्तन नही होता। लेकिन एक भ्रम जरूर पैदा होता है कि मैं जानने वाला हू।

महावीर ऐसे जानने वाले को मिथ्या ज्ञानी कहते है। कहते है—जानने वाला जरूर है, लेकिन मिथ्या जानने वाला है। ऐसी चीजे जानने वाला है जिसके बिना ज़ाने भी चल सकता था, और ऐसी चीज को छोड देने वाला है जिसके बिना जाने नही चल सकता। जो कीमती है, वह छोड देते है हम और जो ग़ैर-कीमती है वह जान लेते है हम। आखिर मे जानना इकट्ठा हो जाता है और जानने वाला खो जाता है। मरते वक्त हम बहुत कुछ जानते हैं, सिर्फ उसे ही नही जानते जो मर रहा है। अद्भुत है यह बात कि आदमी अपने को नही जानता। इसलिए महावीर ने स्वाध्याय को कीमती अन्तर-तपो मे गिना है।

स्वाध्याय चौथा अन्तर-तप है। इसके बाद दो ही तप बच जाएगे और उन दो तपो के बाद एक्सप्लोजन, विस्फोट घटित होता है। तो स्वाध्याय बहुत निकट की सीढी है विस्फोट के। जहा क्राति घटित होती है, जहा जीवन नया हो जाता है, जहा आपका पुनर्जन्म होता है, नया आदमी आपके भीतर पैदा होता है, पुराना समाप्त होता है। स्वाध्याय बहुत करीब आ गया। अब दो ही सीढी बचती हैं और। इसलिए शास्त्र-अध्ययन स्वाध्याय का अर्थ नही हो सकता। शास्त्र-अध्ययन कितना कर रहे हैं लोग, लेकिन कही कोई क्राति घटित नही मालूम होती। कही कोई विस्फोट नही होता है। सच तो यह है कि जितना आदमी शास्त्र को जानता है, उतना ही स्वय को जानने की जरूरत कम मालूम पडती है। क्योकि उसे लगता है कि सब जो भी जाना जा सकता है मुझे मालूम है। महावीर क्या कहते है; बुद्ध क्या कहते है, क्राइस्ट क्या कहते है, वह जानता है। आत्म क्या है, परमात्मा क्या है, वह जानता है—विना जाने। यह मिरेकल है ! बिना जाने। उसे कुछ भी पता नही है कि आत्मा क्या है ! उसे कोई स्वाद नही मिला कभी आत्मा का। उसने परमात्मा की कभी कोई झलक नही पायी। उसने मुक्ति के आकाश मे कभी एक पख नही मारा। उसके जीवन मे कोई किरण नही उतरी

कोई फिक्र नही कि उसके स्मरण करने मे अगर मेरी कोई बात चूक भी जाए, क्योकि मेरी इतनी बाते सुन ली उनसे कुछ भी नही हुआ, और चूक जाएगा तो कोई हर्ज होने वाला नही है। लेकिन उसका स्मरण रखे, वह जो भीतर बैठा है, सुन रहा है, देख रहा है, मौजूद है। उसकी प्रेजेंस अनुभव करें। हड्डी, मास, कान, आख के भीतर जो छिपा है, वह अनुभव करें, वह मालूम पडे। ध्यान उस पर जाए तो आप हैरान होगे, तब आपको जो मैं कह रहा हू वह सुखद नही, सत्य मालूम पडना शुरू होगा।

और तब जो मैं कह रहा हू वह आपके लिए मनोरजन नही आत्म-क्राति बन जाएगा। और तब जो मैं कह रहा हू, आपने सिर्फ सुना ही नही, जिया भी, जाना भी। क्योकि जब आप भीतर की तरफ उन्मुख होकर खडे होगे तो आपको पता लगेगा कि जो मैं कह रहा हू वह आपके भीतर छिपा पडा है। उससे ताल-मेल बैठना शुरू हो जाएगा। जो मैं आपको कह रहा हू वह आपको दिखाई भी पडने लगेगा कि ऐसा है। अगर मैं कह रहा हू कि क्रोध जहर है, तो मेरे सुनने से वह जहर नही हो जाएगा, लेकिन अगर अपने प्रति जाग गए उसी क्षण और आपके भीतर झाका, तो आपके भीतर काफी जहर इकट्ठा है क्रोध का। रिजर्वायर है, वह दिखाई पडेगा। अगर वह दिख जाए मेरे बोलते वक्त तो मैंने जो कहा वह सत्य हो गया। क्योकि उसका पैरलल, वास्तविक सत्य मेरे शब्द के पास जो होना चाहिए था, वह आपके अनुभव मे आ गया। तब शब्द कोरा शब्द न रहा, तब आपके भीतर सत्य की प्रतीति भी हुई।

सुनते वक्त बोलने वाले पर कम ध्यान रखें, सुनने वाले पर ज्यादा ध्यान रखें—सुनने वालो पर नही, सुनने वाले पर। सुनने वालो पर भी लोग ध्यान रख लेते हैं। देख लेते है आस-पास कि किस-किस को जच रहा है। मुझे वैसे लोग भी आकर कहते है आज बहुत ठीक हुआ। मैं उनसे पूछता हू—क्या बात हुई ? वे कहते है—कई लोगो को जचा। वे आसपास देख रहे है कि किस किसको जच रहा है। और कई लोग ऐसे हैं, जब तक दूसरो को न जचे, उनको नही जचता। बडा म्यूचुअल, नानसेंस। पारस्परिक मूर्खता चलती है। देख लेते है आसपास कि जच रहा है तो उनको भी जचता है। और उनको पता नही है कि बगल वाला उनको देखकर, उसको भी जचता है।

हिटलर अपनी सभाओ मे दस आदमी बिठा देता था जो वक्त पर ताली बजाते थे, और दस हजार आदमी साथ बजाते थे। जब हिटलर ने पहली दफा अपने दस मित्रो को कहा कि तुम भीड मे दूर-दूर खडे होकर ताली बजाना तो उन्होंने कहा—हम बजाएगे तो बडे बेहूदे लगेंगे। दस आदमी ताली बजाएगे, दस हजार मे और कोई नही बजाएगा ! हिटलर ने कहा कि मैं आदमियो को जानता हू। पडोस के आदमी को देखकर वे बजाते हैं। तुम फिक्र छोडो। तुम सिर्फ जस्ट

वस्तु के अध्ययन को छोडो, अध्ययन करने वाले का अध्ययन करो।

जैसे उदाहरण के लिए, आप मुझे सुन रहे है। जब आप मुझे सुन रहे है तो आपने कभी ख्याल किया है कि जितनी तल्लीनता से आप मुझे सुनेगे उतना ही आपको भूल जाएगा कि आप सुनने वाले है। जितनी तल्लीनता से आप मुझे सुनेंगे उतना ही आपके स्मरण के बाहर हो जाएगा कि आप भी यहा मौजूद है जो सुन रहा है। बोलने वाला प्रगाढ हो जाएगा, सुनने वाला भूल जाएगा। हालाकि आप बोलने वाले नही सुनने वाले है। जब आप सुन रहे है तब दो घटनाए घट रही है। शब्द जो आपके पास आ रहे है, आपसे बाहर हैं, और आप जो भीतर है। शब्द महत्वपूर्ण हो जाएगे सुनते वक्त और सुनने वाला गौण हो जाएगा। और अगर आप पूरी तरह तल्लीन हो गए तो बिल्कुल भूल जाएगा। सेल्फ फार्गेटफुलनैस हो जाएगी, आत्मविस्मरण हो जाएगा।

मेरे पास लोग आते है। जब कोई मेरे पास आता है और वह कहता है—आज आप बहुत अच्छा बोले, तो मैं जानता हू कि आज क्या हुआ। आज यह हुआ कि वह अपने को भूल गए, और कुछ नही हुआ। आत्म-विस्मरण हुआ। आज घण्टे भर उनको अपनी याद न रही इसलिए वे कह रहे कि बहुत अच्छा बोले। घण्टे भर उनका मनोरजन इतना हुआ कि उनको अपना पता भी न रहा। पन्द्रह वर्ष से निरन्तर सुबह-साझ मैं बोलता रहा हू। एक भी आदमी नही है वह जो आकर कहता हो—बहुत ठीक बोले। वह कहता है—बहुत अच्छा बोले है। क्योकि अगर ठीक बोले तो कुछ करना पडेगा। अच्छा बोले तो हो चुकी है बात। नही कहता कोई आदमी मुझसे कि सत्य बोले, सुखद बोले। सत्य बोले, तो बेचैनी पैदा होगी। सुखद बोले, बात खत्म हो गई। सुख मिल चुका। लेकिन सुख आपको कब मिलता है वह मै जानता हू। जब भी आप अपने को भूलते है तभी सुख मिलता है—चाहे सिनेमा मे भूलते हो, चाहे सगीत मे भूलते हो, चाहे कही सुनकर भूलते हो, चाहे पढकर भूलते हो, चाहे सेक्स मे भूलते हो, चाहे शराब में भूलते हो। आपका सुख मुझे भलीभाति पता है कि कब मिलता है—जब आप अपने को भूलते हैं, तभी मिलता है।

लेकिन जब आप अपने को भूलते हैं तभी स्वाध्याय बन्द होता है, जब आप अपने को स्मरण करते हैं तब स्वाध्याय शुरू होता है। तो जब मै बोल रहा हू—एक प्रयोग करें, यही और अभी सिर्फ बोलने वाले पर ही ध्यान मत रखे, ध्यान को दोहरा कर दें, डबल एरोड, दोहरे तीर लगा दें ध्यान मे—एक मेरी तरफ और एक अपनी तरफ। सुनने वाले का भी स्मरण रहे, वह जो कुर्सी पर बैठा है, वह जो आपकी हड्डी-मास-मज्जा के भीतर छिपा हैं, जो कान के पीछे खडा है, जो आख के पीछे देख रहा है, उसका भी स्मरण रहे। रिमेम्बर, उसको स्मरण रखें।

रहना है, लेकिन पीना तो जारी रख सकते है ! मैं आपसे यह कह रहा हू कि अगर शराब पीते वक्त आप मौजूद रहे तो हाथ से गिलास छूटकर गिर जाएगा, शराब पीना असम्भव है, क्योकि जहर सिर्फ बेहोशी मे ही पिए जा सकते है।

जब मै आपसे कहता हू—क्रोध करते वक्त मौजूद रहो तो मैं यह नही कह रहा हू कि मजे से करो क्रोध और मौजूद रहो। बस शर्त इतनी है कि मौजूद रहो, और क्रोध करो, फिर कोई हर्ज नही है। मैं आपसे यह कह रहा हू कि क्रोध करते वक्त अगर आप मौजूद रहे तो दो मे से एक ही हो सकता है, या तो क्रोध होगा या आप होगे। दोनो मौजूद साथ नही हो सकते। जब आप क्रोध करते वक्त मौजूद होगे तो क्रोध खो जाएगा, आप होगे। क्योकि आपकी मौजूदगी मे क्रोध जैसी रद्दी चीजें नही आ सकती। जब घर का मालिक जगा हो तो चोर प्रवेश नही करते। जब आप जगे हो तब क्रोध घुस जाए, यह हिम्मत क्रोध कर सकता है ! आप जब सोए होते है तभी क्रोध प्रवेश कर सकता है। वह आपके उस कमजोर क्षण का ही उपयोग कर सकता है, जब आप बेहोश है। जब आप होश मे है तो क्रोध नही होगा।

इसलिए महावीर जब कहते है कि होशपूर्वक जियो, अप्रमाद से जियो, जागते हुए जियो, तो मतलब केवल इतना ही है कि जाकर जीने मे जो-जो गलत है वह अपने आप गिर जाएगा। और यह अनुभव आपको होगा स्वाध्याय से कि गलत इसलिए हो रहा था कि मै सोया हुआ था। गलत के होने का और कोई कारण नही है, नो रीजन एट आल। सिर्फ एक ही कारण है कि आप सोए हुए है।

इसलिए महावीर ने कहा—क्षण मे भी मुक्ति हो सकती है। इसी क्षण भी मुक्ति हो सकती है। अगर कोई पूरा जाग जाए, तो गलत इसी वक्त गिर जाता है। तो महावीर यह भी नहीं कहते कि कल के लिए भी रुकना जरूरी है। यह बात है कि आप न जाग पाए तो कल के लिए रुकना पडे अगर समग्रता से क्रोध इसी क्षण मे जाग आए तो सब गिर गया कचरा। जिससे हमे लगता था कि हम बधे हैं, जिससे लगता था जन्मो-जन्मो का कर्म और पाप—वह सब गिर गया।

स्वाध्याय से यह पता चलेगा कि एक ही पाप है—मूर्च्छा, और एक ही पुण्य है—जाग्रत। और स्वाध्याय से यह पता चलेगा कि जब भी हम सोए होते हैं तो जो भी हम करते हैं, वह गलत होता है—ऐसा नही कि कुछ गलत होता है, कुछ ठीक होता है—जो भी हम करते है वह गलत होता है। और जब हम आगे होते है तो ऐसा नही कि कुछ गलत और कुछ सही हो सकता है—जो भी होता है वह सही होता है। तो महावीर ने यह नही कहा है कि तुम सही करो, महावीर ने कहा है जाग कर करो, होशपूर्वक करो, स्मृतिपूर्वक करो। क्योकि स्मृतिपूर्वक गलत होता ही नही, ऐसे ही जैसे अधेरे मे मैं टटोलू और दीवार से सिर टकरा जाए और दरवाजा न मिले और प्रकाश हो जाए तो दरवाजा मिल जाए, दीवार से टकराना

स्टार्ट, वजेगी ताली। हिटलर के इशारे पर वे ताली वजाते थे। वे चकित हुए कि दस हजार आदमी ताली वजा रहे है। क्यो? क्या हो गया? इन्फेक्शन है। पडोस का वजा रहा है, जरूर कोई बात होगी। और जब आप वजाते है, तो आपका पडोस वाला सोचता है कि जरूर कोई वात कीमती होगी। लोग ऐसा न समझें—बुद्धू है, अपनी समझ मे नही आया। वे भी वजा रहे हैं। दस आदमी दस हजार लोगो को ताली वजवा लेते है।

कभी ख्याल मे नही आता कि आप क्या कर रहे है? आप जो कपडे पहने हुए है, वे किसी दूसरे आदमी ने आपको पहनवा दिए है, क्योकि उसने पहने हुए थे। नही, सुनने वालो पर ध्यान नही, सुनने वाले पर ध्यान, स्वय पर ध्यान। भूल जाए सुनने वालो को। उनकी कोई जरूरत नही है बीच मे आकर खडे होने की। रास्ते पर चल रहे है तो भीड दिखाई पडती है, दुकाने दिखाई पडती है, एक आदमी भर नही दिखाई पडता है, वह जो चल रहा है। वह भर नही होता मौजूद। उसका आपको पता ही नही होता जो चल रहा है। और सब होते है। वडी अद्‌भुत अनुपस्थिति है! हम अपने से अनुपस्थित है। यह अनुपस्थिति को तोडने का नाम ही स्वाध्याय है। टु बी प्रेजेंट टु वनसेल्फ।

गुरुजिएफ ने इसे सेल्फ रिमेम्वरिंग कहा है, स्व-स्मृति कहा है—स्वय का स्मरण। कोई भी काम ऐसा न हो पाए, कोई भी बात ऐसी न हो पाए, कोई भी घटना ऐसी न घटे जिसमे मेरे भीतर जो चेतना है वह विस्मृत हो जाए। उसका होश मुझे वना रहे। तो फिर शराब भी कोई पी रहा हो और अगर होश बनाए रखे अपने भीतर कि मैं शराव पी रहा हू और मैं, मैं मौजूद हू, तो शराव भी बेहोश नही कर पाएगी, और नही तो पानी भी बेहोश कर देता है। अगर यह स्मरण बना रहे कि मैं हू तो शराव एक तरफ पड़ी रह जाएगी और वह चेतना निरन्तर अलग खडी रहेगी। यह अलग खडा रहना चेतना का हम पानी के साथ भी नही कर पाते, शराब के साथ तो वहुत दूर है। जब हम पीते है पानी तो प्यास होती है, पानी होता है, पीने वाला नही होता है। होना चाहिए। पीने वाला पहले, प्यास वाद मे, पानी और वाद मे, तो स्वाध्याय शुरू हो गया।

स्वाध्याय का अर्थ है—मेरे जीवन का कोई कृत्य, कोई विचार, कोई घटना मेरी अनुपस्थिति मे न घट जाए। मै मौजूद रहू—क्रोध हो तो मैं मौजूद रहू, घृणा हो तो मैं मौजूद रहू, काम हो तो मैं मौजूद रहू। कुछ भी हो तो मैं मौजूद रहू। मेरी मौजूदगी मे घटे।

और महावीर कहते हैं कि वडा अद्‌भुत है, जब तुम मौजूद होते हो तो जो गलत है वह नही घटता। स्वाध्याय मे गलत घटता ही नही। जब मैंने कहा—शराब पीते वक्त अगर आप मौजूद हो, तो आप यह मत समझना कि आपको शराब पीने की सलाह दे रहा हू कि मजे से पियो, मौजूद रहो। मौजूद किसको

ध्यान दूसरी ही चीजो को पकडेगा। आज मकान दिखाई पडेंगे जो लाख मे खरीदे जा सकते है। कार दिखाई पडेगी। दुकानो मे चीजें दिखाई पडेंगी जो आपको कभी नही दिखाई पडी थी। सदा थी, पर आपको कभी दिखाई नही पडी थी। बात क्या है ? आपको वही दिखाई पडता है जिस तरफ आपका ध्यान होता है। वह नही दिखाई पडता है जिस तरफ आपका ध्यान नही होता।

हमारा सारा ध्यान बाहर की तरफ है, इसलिए भीतर अंधेरा है। आता भीतर से ही है यह ध्यान, लेकिन भीतर अंधेरा है क्योंकि ध्यान वस्तुओ की तरफ है। स्वाध्याय का अर्थ है—इस रोशनी को भीतर की तरफ मोड लो। भीतर देखना शुरू करना। कैसे देखेंगे ? तो एक दो उदाहरण ध्यान मे ले लें। एक आदमी जाता है और आपको गाली देता है। जब वह गाली देता है तब दो घटनाए घट रही है। वह आदमी गाली दे रहा है यह घट रही है, आब्जेक्टिव है, बाहर है। वह आदमी बाहर है, उसकी गाली बाहर है। आपके भीतर क्रोध उठ रहा है, यह दूसरी घटना घट रही है। यह भीतर है, यह सब्जेक्टिव है। आप कहा ध्यान देते है ? उसकी गाली पर ध्यान देते है तो स्वाध्याय नही हो पाएगा। अपने क्रोध पर ध्यान देते हैं, स्वाध्याय हो जाएगा।

एक सुन्दर स्त्री रास्ते पर दिखाई पडी, कामवासना भीतर उठ गयी। आप उस स्त्री का पीछा करते है, ध्यान मे, तो स्वाध्याय नही हो पाएगा। आप उस स्त्री को छोडते हैं और भीतर जाते है और देखते है कि कामवासना किस तरह भीतर उठ रही है, तो स्वाध्याय शुरू हो जाएगा। जब भी कोई घटना घटती है उसके दो पहलू होते है—आब्जेक्टिव और सब्जेक्टिव, वस्तुगत और आत्मगत। जो आत्मगत पहलू है, उस पर ध्यान को ले जाने का नाम स्वाध्याय है। जो वस्तुगत पहलू है उस पर ध्यान को ले जाने का नाम मूर्च्छा है। लेकिन हम सदा बाहर ध्यान ले जाते हैं।

जब कोई हमे गाली देता है तो हम उसकी गाली को कई बार दोहराते है कि किस तरह दी, उसके चेहरे का ढग क्या था, क्यो दी, वह आदमी कैसा है, हम उसका पूरा इतिहास खोजते हैं। जो बातें हमने उस आदमी मे पहले कभी नही देखी थी, वह हम सब देखते है कि नही, वह आदमी ऐसा था ही पहले से ही पता था, अपनी भूल थी, ख्याल न किया। वह गाली कभी भी देता, वह औरो को भी गाली दिया है। फला आदमी ने यह कहा था कि वह आदमी गाली देता है। आप उस आदमी पर सारी चेतना को दौडा देंगे और जरा भी ख्याल न करेंगे कि आप आदमी कैसे है भीतर, भीतर क्या हो रहा है ? उसकी छोटी-सी गाली आपके भीतर क्या कर गयी है ? हो सकता है वह आदमी तो गाली देकर घर सो गया हो मजे मे। आप रात भर जग रहे है और सोच रहे हैं। हो सकता है उसने गाली यो ही दी हो, मजाक ही किया हो। कुछ लोग गाली मजाक तक

न पड़े।

तो महावीर यह नही कहते कि विना टकराए हुए निकलो। महावीर कहते है, रोशनी कर लो और निकल जाओ। क्योकि अधेरे मे टकराओगे ही। मोक्ष भी खोजोगे तो टकराओगे। परमात्मा को भी खोजोगे तो टकराओगे। अधेरे मे तो कुछ भी करोगे तो टकराओगे, क्योकि अधेरा है। और अधेरे का कोई और कारण नही है क्योकि हम आब्जेक्ट फोकस्ड है, हम वस्तुओ पर सारा ध्यान लगाए हुए हैं। वह ध्यान ही रोशनी है। वस्तुओ पर पडती है तो वस्तुए चमकने लगती हैं।

कभी आपने ख्याल किया, रोज रास्ते से निकलते है। आपके पास साइकिल भी नही है। तो कार देखकर आपके मन मे ऐसा ख्याल नही आता कि कार खरीद लें। इसलिए कार पर आपका बहुत ध्यान नही पडता। हा कभी-कभी पडता है जव कार बगल से कीचड उछाल देती है आपके ऊपर निकलते वक्त, तव ध्यान जाता है। ऐसे ध्यान नही जाता। आपका फोकस कार पर नही बैठता, और जब तक कार के ध्यान पर आपका फोकस नही बैठता, तब तक कार को लेने की वासना नही उठती।

लेकिन आज आपको लाटरी मिल गयी—लाख रुपए मिल गए। अब आप उसी सडक से गुजरिए, आप हैरान होगे, आपका फोकस बदल गया। आज आप वह चीजें देखते हैं जो कल आपने देखी नही थी। कल आपके पास साइकिल भी नही थी तो कभी-कभी साइकिल पर फोकस लगता था कि कभी दो सौ रुपए इकट्ठे हो जाए तो एक साइकिल खरीद लें। कभी-कभी रात सपने मे साइकिल पर बैठकर निकल जाते थे। कभी-कभी साइकिल पर बैठा हुआ आदमी ऐसा लगता था कि पता नही कैसा आनन्द ले रहा होगा। लेकिन फोकस की सीमा है। कार वाले आदमी से प्रतिस्पर्धा नही जगती थी, सिर्फ क्रोध जगता था। साइकिल वाले आदमी से प्रतिस्पर्धा जगती थी, क्रोध नही जगता था। ऐप्रोचेबल था। सीमा के भीतर था, हम भी हो सकते थे साइकिल पर। जरा वक्त की बात थी।

लेकिन आज आपको लाख रुपए मिल गए है, आज साइकिल पर आपका ध्यान ही नहीं जमता, आज साइकिल ख्याल मे नही आती कि साइकिल भी चल रही है। आज एकदम कारें दिखाई पडती है आज कारो मे पहली दफा फर्क मालूम पडते है कि कौन-सी कार वीस हजार की है, कौन-सी पचास हजार की है, कौन-सी लाख की है। यह फर्क कभी नही दिखाई पड़ा था, कार-कार थी। यह फर्क कभी नही दिखाई पडा था, यह फर्क आज दिखाई पडेगा फोकस मे। आज चेतना उस तरफ बह रही है, आज लाख रुपए जेब मे है। आज वे लाख रुपए उछलना चाहते हैं। आज वे लाख रुपए कहते है लगाओ ध्यान कही। ये लाख रुपए कैसे बैठे रहेगे, ये कही जाना चाहते हे। वे गति करना चाहते है। आज आपका

यह स्वाध्याय है, यह मैने उदाहरण के लिए कहा। आपके प्रत्येक जीवन के छोटे-से वृत्ति मे, छोटी-सी लहर मे इसका उपयोग करें। यह शास्त्र आपके भीतर का खुलना शुरू हो जाएगा। पहले इस शास्त्र मे गदगी ही गदगी मिलेगी, क्योकि वही हमने इकट्ठी की है, वही हमारा सग्रह है। लेकिन जितनी वह गदगी मिलेगी उतने आप स्वच्छ होते चले जाएगे। क्योकि गदगी वचाना हो तो गदगी को न जानना जरूरी है, और गदगी को मिटाना हो तो जानना ही एकमात्र सूत्र है। जितना आप छिपाए रखते है अपनी गदगी को, वह उतनी ही गहरी वनती जाती है, मजवूत होती चली जाती है। जव आप खुद ही उसको उखाडने लगते है और देखने लगते है तो उसकी पर्ते टूटने लगती है, उसकी जडें उखडने लगती है।

जाए भीतर और आप पाएगे कि वहुत गदगी है लेकिन जितनी गदगी आपको दिखाई पडेगी, एक और मजेदार और विपरीत घटना घटेगी और आपको लगेगा आप उतने ही स्वच्छ होते जा रहे है। जितने भीतर जाएगे, उतनी गदगी कम होती जाएगी। और इसलिए एक मजा और आने लगेगा कि भीतर गदगी कम होती जाती है तो और भीतर जाने का रस और आनन्द आने लगता है। भीतर ककड-पत्थर नही, हीरे-जवाहरात दिखाई पडने लगते है, तो दौड तेज हो जाती है। और एक घडी आएगी कि आप जव सच मे भीतर पहुचेंगे—सच मे भीतर, क्योकि यह जो भी है, यह भी वाहर और भीतर के वीच मे है। इसे हम भीतर कह रहे है इसलिए सिर्फ कि स्वाध्याय के लिए इसे भीतर समझना जरूरी है।

जितने आप भीतर जाएगे, जिस दिन आप सेन्टर पर पहुचेंगे, केन्द्र पर पहुचेंगे, उस दिन कोई गदगी नही रह जाएगी। उस दिन आप पाएगे कि जीवन मे उस स्वच्छता का अनुभव हुआ है जिसका अव कोई अन्त नही है। आपने वह ताजगी पा ली जो अव वूढी नही होगी। आपने उस निर्दोपता के तल को छू लिया जिसको कोई कालिमा स्पर्श नही कर सकती है। आप उस प्रकाश को पा लिए जहा कोई अधकार प्रवेश नही करता है।

लेकिन यह क्रमश भीतर उतरना इसलिए स्वाध्याय को महावीर ने अतिम नही कहा, चौथा तप कहा है। अभी और भी कुछ करने को भीतर शेप रह जाता है। उन दो तपो के सम्वन्ध मे हम आगे आने वाले दो दिनो मे वात करेंगे। पाचवा तप है ध्यान, छठवा तप है कायोत्सर्ग। पर स्वाध्याय के विना कोई ध्यान मे नही जा सकता। इसलिए महावीर ने जो सीढिया कही है, वे अति वैज्ञानिक है।

लोग मेरे पास आते है और कहते है—ध्यान मे जाना है। मैं उनकी कठिनाई जानता हू। वे स्वाध्याय मे नही जाना चाहते, क्योकि स्वाध्याय वहुत पीडादायी है। और ध्यान मे क्यो जाना चाहते है ? क्योकि किताबो मे पढ लिया है, गुरुओ को कहते सुन लिया है कि ध्यान मे जाने से वडा आनन्द आता है।

में दे रहे है। उसे ख्याल ही न हो कि उसने गाली दी है।

मेरे गाव मे, मेरे घर के सामने एक बूढा मिठाई वाला था। वह वहरा भी था, और गाली, तकियाकलाम थी। मतलव चीजें भी खरीदे तो विना गाली दिए नही खरीद सकता था किसी से। तो अक्सर यह हो जाता था कि वह घास वाली से घास खरीद रहा है और गाली दे रहा है। और वह घास वाली कह रही है कि लेता हो तो ले लो, मगर गाली तो मत दो! तो वह अपने को गाली देकर कहता है कि कौन साला गाली दे रहा है? उसको पता ही नही है कि वह गाली दे रहा है। वह कहता है—कौन साला गाली दे रहा है? गाली दे ही कौन रहा है? वह गाली दे रहा है, वह इसमे भी। अब वह अपने को ही गाली दे रहा हे। जव अपने को तो कोई गाली नही देना चाहता है!

नही, इसका कोई वोध नही है, गाली इतनी सहज हो गयी है कि जो आदमी आपको गाली दे गया, हो सकता है उसे पता ही न हो। आप जो व्याख्याए निकाल रहे हैं वह आप ही निकाल रहे है। भीतर जाएं कृपा करके, उस आदमी की फिक्र छोडें। भीतर देखे कि उस आदमी ने गाली दी तो मेरे भीतर क्या-क्या व्याख्या पैदा होती है। उसकी गाली की। वह व्याख्या उस आदमी के सम्वन्ध मे कुछ भी नही कहती सिर्फ आपके सम्वन्ध मे कुछ कहती है कि आप आदमी कैसे हैं।

अगर आपको गाली दी जाए तो आपके भीतर क्या-क्या होगा, इसको देखे। आप क्या-क्या व्याख्या करते हैं, आपके भीतर क्रोध कैसे उठता है, आप उससे क्या-क्या प्रतिकार लेना चाहते है? हत्या करना चाहते है, गाली देना चाहते हैं; गर्दन दवाना चाहते हैं, क्या करना चाहते है? इस पूरे को उतर जाए देखने। आप अनुभवी होकर वाहर लौटेंगे। आप इस स्वाध्याय से ज्ञानी होकर वाहर लौटेंगे।

इसके दो मजे होगे—एक तो आपकी अपने सम्वन्ध मे जानकारी वढ गयी होगी। और साथ ही आपको यह भी पता चल गया होगा कि महत्त्वपूर्ण यह नही है कि उसने गाली दी, महत्त्वपूर्ण यह है कि मैंने कैसा अनुभव किया। और मजा यह है कि आप उसका गाली का उत्तर देने अब कभी न पाएगे। क्योंकि आप वदल गए होगे इस ज्ञान से, इस स्वाध्याय से, आप वही आदमी नही रह गए जिसको गाली दी गयी थी। समथिंग हेज वीन एडेड, समथिंग हैज वीन रिलीव्ड। नया कुछ जुड गया। सुवह आप दूसरे आदमी होगे। हो सकता है, आप उससे क्षमा मांग आए। हो सकता है आप पाए कि उसने गाली ठीक ही दी। हो सकता है आप पाए कि उसकी गाली उतनी मजवूत न थी जितनी होनी चाहिए थी, जितना वुरा मैं आदमी हूं। हो सकता है कि आप उससे जाकर कहे कि तेरी गाली विल्कुल ठीक थी और अण्डर एस्टिमेटेड थी। यानी मैं आदमी जरा ज्यादा वुरा हूं। यह सव हो सकता है। या हो सकता है, सुवह आप पाएं कि उसकी गाली पर सिर्फ आपको हसी आ रही है, और कुछ भी नही हो रहा है।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो ।
देवा वि त नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ।।१।।

धर्म सर्वश्रेष्ठ मंगल है। (कौन-सा धर्म?) अहिंसा, संयम और तपरूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म में सदा संलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

लेकिन जो अपने अर्जित दुख मे जाने को तैयार नही है वह अपने स्वभाव के आनन्द मे जा नही सकता है। पहले तो दुख से गुजरना पडेगा, तभी, तभी सुख की झलक मिलेगी। नर्क से गुजरे बिना कोई स्वर्ग नही है। क्योकि हमने नर्क निर्मित कर लिया है, हम उसमे खडे है। प्रत्येक आदमी यह चाहता है कि नर्क मे से एकदम स्वर्ग मिल जाए, यही। इस नर्क को मिटाना न पडे और स्वर्ग मिल जाए। यह नही हो सकता। क्योकि स्वर्ग तो यही मौजूद है, लेकिन हमारे बनाए हुए नर्क मे छिप गया है, ढक गया है। ध्यान रहे, स्वर्ग स्वभाव है और नर्क हमारा एचीवमेंट, हमारी उपलब्धि है। बडी मेहनत करके हमने नर्क को बनाया है, बडा श्रम उठाया है। उसे गिराना पडेगा। स्वाध्याय उसे गिराने के लिए कुदाली का काम करता है। जैसे कोई मकान को खोदना शुरू कर दे।

आज इतना ही। पर पाच मिनट रुकें, धुन मे भागीदार हो और फिर जाए।

ठीक क्या है । गलत ध्यान मे भी हम अपने को रोक लेते हैं ।

महावीर ने दो तरह के गलत ध्यान भी कहे हैं । महावीर ने कहा है कि जो व्यक्ति तीव्र क्रोध मे आ जाता है वह एक तरह के गलत ध्यान मे आ जाता है। अगर आप कभी तीव्र क्रोध मे आए हैं तो एक प्रकार के गलत ध्यान में आपने प्रवेश किया है । लेकिन हम तीव्र क्रोध मे भी कभी नही आते । हम कुनकुने जीते है, लूकवार्म, कभी हम उबलती हालत मे नही आते । अगर आप गहरे क्रोध मे आ जाए, इतने गहरे क्रोध मे आ जाए कि क्रोध ही शेष रह जाए, क्रोध ही एकाग्र हो जाए, जीवन की सारी ऊर्जा क्रोध के बिन्दु पर ही दौडने लगे । सारी किरणे जीवन की शक्ति की क्रोध पर ही ठहर जाए, तो आपको गलत ध्यान का अनुभव होगा ।

महावीर ने कहा है कि अगर कोई गलत ध्यान मे भी उतरे तो उसे ठीक ध्यान मे लाना आसान है । इसलिए अक्सर ऐसा हुआ है कि परम क्रोधी क्षण भर मे परम क्षमा की मूर्ति बन गए । लेकिन धीमे-धीमे जलते हुए जो क्रोधी है उन्हे गलत ध्यान का भी कोई पता नही हे । अगर राग पूरी तरह हो, वासना पूरी तरह हो, पैशन पूरी तरह हो जैसा कि कोई मजनू या फरियाद जब अपने पूरे राग से पागल हो जाता है तब वह भी एक तरह के गलत ध्यान मे प्रवेश करता है । तब लैला के सिवाय मजनू को कुछ भी दिखाई नही पडता—राह चलते दूसरे लोगो मे भी वही दिखाई पडती है, खडे हुए वृक्षो मे भी वही दिखाई पडती है, चाद-तारो मे भी वही दिखाई पडती है । इसीलिए तो हम उसे पागल कहते है ।

और लैला उसे जैसी दिखाई पडती है वैसी हमको किसी को भी दिखाई नही पडती । उसके गाव के लोग उसे बहुत समझाते रहे कि बहुत साधारण-सी औरत है । तू पागल हो गया है । गाव के राजा ने मजनू को बुलाया और अपने परिचित मित्रो की बारह लडकियो को सामने खडा किया जो कि सुन्दरतम थी उस राज्य की । और राजा ने कहा—तू पागल न बन, तुझ पर दया आती हैं । तुझको सडको पर रोते देखकर पूरा गाव पीडित है । तू इन बारह सुन्दर लडकियो मे से जिसे चुन ले, मैं उसका विवाह तुझसे करवा दू ।

लेकिन मजनू ने कहा कि मुझे सिवाय लैला के कोई यहा दिखाई नही पडता ।

और उस राजा ने कहा—तू पागल हो गया है ? लैला बहुत साधारण लडकी है ।

तो मजनू ने कहा कि लैला को देखना हो तो मजनू की आख चाहिए । आपको लैला दिखाई नही पड सकती । और जिसे आप देख रहे हैं वह लैला नही है । उसे मैं देखता हू ।

अब यह जो मजनू कहता है कि मजनू की आख चाहिए, यह गलत ध्यान का

सामायिक : स्वभाव में ठहर जाना

सत्रहवा प्रवचन . दिनाक ३ सितम्बर, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

ग्यारहवा तप या पाचवा अतर-तप है ध्यान । जो दस तपो से गुजरते है उन्हे तो ध्यान को समझना कठिन नही होता । लेकिन जो केवल दस तपो को समझ से समझते है, उन्हे ध्यान को समझना वहुत कठिन होता है । फिर भी कुछ सकेत ध्यान के सम्बन्ध मे समझे जा सकते है । ध्यान को तो करके ही समझा जा सकता है, इशारे कुछ वाहर से ध्यान के सम्बन्ध मे समझे जा सकते है । ध्यान प्रेम जैसा है—जो करता है वही जानता है, या तैरने जैसा है—जो तैरता है वही जानता है ।

तैरने के सम्बन्ध मे कुछ वातें कही जा सकती है, और प्रेम के सम्बन्ध मे वहुत वाते कही जा सकती है । फिर भी प्रेम के सम्बन्ध मे कितना भी समझ लिया जाए तो भी प्रेम समझ मे नही आता । क्योकि प्रेम एक स्वाद है, एक अनुभव है एक अस्तित्वगत प्रतीति है । तैरना भी एक एक्जिस्टेंशियल, एक सत्तागत प्रतीति है । आप दूसरे व्यक्ति को तैरते हुए देखकर भी नही जान सकते कि वह कैसा अनुभव करता है, आप दूसरे व्यक्ति को प्रेम मे डूवा हुआ देखकर भी नही जान सकते कि उसे प्रेम किन-किन यात्राओ पर ले जाता है । ध्यान मे खडे महावीर को देखकर भी नही जान सकते कि ध्यान क्या है ।

ध्यान के सम्वन्ध मे महावीर स्वय भी कुछ कहे तो भी नही समझा पाते ठीक से कि ध्यान क्या है ? कठिनाई और भी वढ जाती है, प्रेम से भी ज्यादा, कि चाहे कितना ही कम जानते हो लेकिन प्रेम का कोई न कोई स्वाद हम सवको है । गलत ही सही, गलत प्रेम का ही सही, तो भी प्रेम का स्वाद है । गलत ध्यान का भी हमे कोई स्वाद नही हे, ठीक ध्यान की वात तो वहुत दूर है । गलत ध्यान का भी हमे कोई स्वाद नही है जिसके आधार पर समझाया जा सके कि

है शाति कैसे मिले । मेरे पास लोग आते है और वे कहते है और कहते हैं, सुनते है ध्यान से बडी शाति मिलती है तो हमे ध्यान का रास्ता बता दीजिए। और मजा यह है कि जो अशाति उन्होने पैदा की है उसमे से कुछ भी वे छोडने को तैयार नही है। अशाति उन्होने पैदा की है, पूरी मेहनत उठायी है, श्रम किया है ।

मुल्ला नसरूद्दीन एक दिन अपने गाव के फकीर के दरवाजे को रात दो बजे खटखटा रहा है। वह फकीर उठा, उससे कहा—भई इतनी रात ! और नीचे देखा तो नसरूद्दीन खडा है। तो उसने कहा—नसरूद्दीन कभी तुझे मस्जिद मे नही देखा, कभी तू मुझे सुनने-समझने नही आता । आज दो बजे रात ! फिर भी फकीर नीचे आया । कोई हर्ज नहीं, रात दो बजे आया। पास आया तो देखा कि शराब मे डोल रहा है, नशे मे खडा है। नसरूद्दीन ने पूछा कि, जरा ईश्वर के सम्बन्ध मे पूछने आया हू। उस फकीर ने कहा कि सुबह आना। व्हेन यू आर सोबर कम देन ओनली। जब होश मे रहो तब आओ। नसरूद्दीन ने कहा—वट द डिफिकल्टी इज व्हेन आइ एम सोबर, दैन आइ डाउट अबाउट योर गॉड। जब मैं होश मे होता हू तब तुम्हारे ईश्वर की मुझे चिन्ता ही नही होती है। यह तो मैं नशे मे हू इसीलिए आया हू। ईश्वर है या नही ?

हम सब ऐसी ही हालत मे पहुचते हैं। जब हम सुख मे होते है तब हमे ध्यान की जरा भी चिन्ता नही पैदा होती और जब हम दुख मे होते हैं तब हमे ध्यान की चिन्ता पैदा होती है । और कठिनाई यह है कि दुखी चित्त को ध्यान मे ले जाना बहुत कठिन है, क्योकि दुखी चित्त गलत ध्यान मे लगा हुआ होता है। दुख का मतलब ही गलत ध्यान है। जब आप पैर के बल खडे होते हैं तब आपकी चलने की कोई इच्छा नही होती। जब आप सिर के बल खडे होते हैं तब आप मुझसे पूछते है आकर कि चलने का कोई रास्ता है ? और अगर मैं आपसे कहूं कि जब आप पैर के बल खडे हो तब ही चलने का रास्ता काम कर सकता है, तो आप कहते है कि जब हम पैर के बल खडे होते है तब तो हमे चलने की इच्छा ही नही होती।

इसलिए महावीर ने पहले तो गलत ध्यान की बात की है ताकि आपको साफ हो जाए कि आप गलत ध्यान मे तो नही हैं। क्योकि गलत ध्यान मे जो है उसे ध्यान मे ले जाना अति कठिन हो जाता है। अति कठिन इसलिए नही कि नहीं जाएगा। अति कठिन इसलिए है कि वह गलत ध्यान का प्रयास जारी रखता है। जब आप कहते हैं मैं शात होना चाहता हू तब आप अशात होने की सारी चेष्टा जारी रखते है, और शात होना चाहते हैं। और अगर आपसे कहा जाए अशात होने की चेष्टा छोड दीजिए, तो आप कहते है वह तो हम समझते हैं, लेकिन शात होने का उपाय बताए ।

एक रूप है। इतना ज्यादा कामासक्त है, इतना राग से भर गया है कि नैरोडाउन, सारी चेतना एक विन्दु पर खडी हो गयी है। वह चेतना का विन्दु लैला बन गयी है। महावीर ने इन्हे गलत ध्यान कहा है।

यह वहुत मजे की बात है कि महावीर इस जमीन पर अकेले आदमी है जिन्होने गलत ध्यान की भी चर्चा की है। ठीक ध्यान की चर्चा वहुत लोगो ने की है। यह वडी विशिष्ट बात है कि महावीर कहते हैं कि है तो यह भी ध्यान—उल्टा है, शीर्पासन करता हुआ है। जितना ध्यान मजनू का लैला पर लगा है इतना मजनू का मजनूं पर लग जाए तो ठीक ध्यान हो जाए। शीर्पासन करती हुई चेतना है—'पर' पर लगी है, दूसरे पर लगी है। दूसरे पर जब इतनी सिकुड जाती है चेतना तब भी ध्यान ही फलित होता है, लेकिन उल्टा फलित होता हे, सिर के वल फलित होता है। अपनी ओर लग जाए उतनी ही चेतना तो ध्यान पैर पर खडा हो जाता है। सिर के वल खडे हुए ध्यान से कोई गति नही हो सकती।

इसलिए सिर के वल खडे हुए सभी ध्यान सड जाते हैं। क्योकि गत्यात्मक नही हो सकते। सिर के बल चलिएगा कैसे? पैर के बल चला जा सकता है। यात्रा करनी हो तो पैर के वल। चेतना जव पैर के वल खडी होती है तो अपनी तरफ उन्मुख होती है, तव गति करती है। और ध्यान जो है, वह डायनेमिक फोर्स है। उसे सिर के बल खडे कर देने का मतलव है, उसकी हत्या कर देना। इस-लिए जो लोग भी गलत ध्यान करते हैं वे आत्मघात मे लगते है, रुक जाते हैं, ठहर जाते है। मजनू ठहरा हुआ है लैला पर और इस बुरी तरह ठहरा हुआ है कि जैसे तालाव वन गया है। अव वह एक सरिता न रहा जो सागर तक पहुच जाए। और लैला कभी मिल नही सकती।

यह दूसरी कठिनाई है गलत ध्यान की कि जिस पर आप लगाते हैं उसकी उपलब्धि नही हो सकती। क्योकि दूसरे को पाया ही नही जा सकता, वह असम्भव है, दूसरे को पाने का कोई उपाय ही नही है। इस अस्तित्व मे सिर्फ एक ही चीज पायी जा सकती है, और वह मैं हू, वह मैं स्वय हू, उसको ही मैं पा सकता हू। शेप सारी चीजो पर मैं पाने की कितनी ही कोशिश करू, वे सारी कोशिश असफल होगी। क्योकि जो मेरा स्वभाव है वही केवल मेरा हो सकता है, जो मेरा स्वभाव नही है वह कभी भी मेरा नही हो सकता है। मेरे होने की भ्रातिया हो सकती हैं, लेकिन भ्रातिया टूटेंगी और पीड़ा और दुख लाएगी।

इसलिए गलत ध्यान नर्क मे ले जाता है। सिर के बल खडी हुई चेतना अपने ही हाथ से अपना नर्क खडा कर लेती है। और हम वडे मजेदार लोग हैं। हम जव नर्क मे होते है, तव हम ध्यान वगैरह के वावत सोचने लगते हैं। जब आदमी दुख मे होता है तो वह पूछता है शाति कैसे मिले। अशाति मे होता है तो पूछता

उसके मिटने का कोई डर नही है। वही तुम्हारा हो सकता है, वही शाश्वत् सम्पदा है।

इसलिए महावीर को जो लोग नही समझ सके, उन्होने कहा नास्तिक है यह आदमी। और उन्हें ऐसा भी लगा कि अब तक जो नास्तिक हुए है उनसे भी गहन नास्तिक हैं वे। क्योकि वे नास्तिक कम-से-कम इतना तो कहते हैं कि ईश्वर के लिए प्रमाण दो तो हम मान लें। महावीर कहते हैं—ईश्वर हो या न हो, इससे धर्म का कोई सम्बन्ध नही है, क्योकि दूसरे को जब भी मैं ध्यान मे लेता हू तो गलत ध्यान हो जाता है। इसलिए महावीर इसकी भी चिन्ता नही करते कि ईश्वर है या नही, इसके लिए कोई प्रमाण जुटाए। निश्चित ही ईश्वरवादियो को महावीर गहन नास्तिक मालूम पडे, नास्तिको से भी ज्यादा।

इसलिए तथाकथित आस्तिको ने चार्वाक से भी ज्यादा निंदा महावीर की की है। और भी खतरा था, क्योकि चार्वाक की निन्दा करनी आसान थी क्योकि वह कह रहा था—खाओ, पियो, मौज करो। महावीर की निंदा और मुश्किल पड गई। क्योकि वे जो नास्तिक थे वे खा, पी और मौज कर रहे थे। यह महावीर तो बिल्कुल ही नास्तिक जैसे नही थे। ये तो भोग मे जरा भी रसातुर नही थे। इसलिए इनकी निंदा और भी कठिन, और भी मुश्किल पड गई। आदमी तो ये इतने बेहतर थे, जैसा कि बडे से बडा आस्तिक हो पाया है। शायद हालत उससे भी ज्यादा बेहतर है। क्योकि बडे से बडा आस्तिक भी दूसरे पर निर्भर रहता है। ऐसी स्वतन्त्रता जैसी महावीर की है, आस्तिक की नही हो पाती। या उस दिन हो पाती है जिस दिन या तो भक्त बिल्कुल मिट जाता है और भगवान रह जाता है या भगवान बिल्कुल मिट जाता है और भक्त रहता है। जिस दिन एक ही बचता है, उस दिन हो पाती है।

महावीर प्रार्थना के पक्षपाती नही हैं। महावीर दूसरे के ध्यान करने के पक्षपाती नही हैं। फिर महावीर का ध्यान से क्या अर्थ है ? वह अर्थ हम समझ लें, और महावीर उस ध्यान तक कैसे आपको पहुचा सकते है, उसे हम समझ लें।

महावीर का ध्यान से अर्थ है स्वभाव मे ठहर जाना। टु बी इन वनसेल्फ। ध्यान से अर्थ है—स्वभाव। जो मैं हू, जैसा मैं हू वही ठहर जाना। उसी मे जीना, उसके बाहर न जाना। अर्थ तो है ध्यान का स्वभाव में ठहर जाना। इसलिए महावीर ने ध्यान शब्द का कम प्रयोग किया, क्योकि ध्यान शब्द—शब्द ही दूसरे का इशारा करता है। जब भी हम कहते हैं, टु बी अटेंटिव, तभी यह मतलब होता हे किसी और पर। जब भी हम कहते है ध्यान, तो उसका मतलब होता है—कहा, किस पर ? लोग आते है, पूछने, वे कहते है हम ध्यान करना चाहते है, किस पर करें ? ध्यान शब्द मे ही आब्जेक्ट का ख्याल, विषय का ख्याल छिपा हुआ है। इसलिए महावीर ने ध्यान शब्द का उतना प्रयोग नही किया। ध्यान

और आपको पता ही नही है कि शात होने के लिए कुछ भी नही करना पडता है। सिर्फ अशांत होने की चेष्टा जो छोड देता है वह शात हो जाता है। शाति कोई उपलब्धि नही है, अशाति उपलब्धि है। शाति को पाना नही है, अशाति को पा लिया है। अशाति का अभाव शाति वन जाता है। गलत ध्यान का अभाव कि ध्यान की शुरुआत हो जाती है।

तो गलत ध्यान का अर्थ है—अपने से वाहर किसी भी चीज पर एकाग्र हो जाना। दि अदर ओरिएटेड कांशसनैस, दूसरे की तरफ वहती हुई चेतना गलत ध्यान है। और इसलिए महावीर ने परमात्मा को कोई जगह नही दी है। क्योकि परमात्मा की तरफ वहती हुई चेतना को भी महावीर कहते है गलत ध्यान। क्योकि परमात्मा आप दूसरे की तरह ही सोच सकते है और अगर स्वय की तरह सोचेंगे तो वडी हिम्मत चाहिए। अगर आप यह सोचेंगे कि मैं परमात्मा हू तो वडा साहस चाहिए। एक तो आप न सोच पाएगे और आपके आसपास के लोग भी न सोचने देंगे कि आप परमात्मा है। और जव कोई सोचेगा कि मैं परमात्मा हू तो फिर परमात्मा की तरह जीना भी पडेगा। क्योकि सोचना खडा नही हो सकता जव तक आप जिए न। सोचने मे खून न आएगा जव तक आप जिएगे नही। हड्डी-मास-मज्जा नही वनेगी जव तक आप जिएगे नही।

तो परमात्मा की तरह जीना हो अगर तव तो ध्यान की कोई जरूरत नही रह जाती। इसलिए महावीर कहते है—परमात्मा को तो आप सदा दूसरे की तरह ही सोचेंगे। और इसलिए जितने धर्म परमात्मा को मान कर होते हैं, उनमे ध्यान विकसित नही होता है, प्रार्थना विकसित होती है। और प्रार्थना और ध्यान के मार्ग विल्कुल अलग-अलग है।

प्रार्थना का अर्थ है दूसरे के प्रति निवेदन, ध्यान मे कोई निवेदन नही है। प्रार्थना का अर्थ है दूसरे की सहायता की माग; ध्यान मे कोई सहायता की माग नही है। क्योकि महावीर कहते है—दूसरे से जो मिलेगा वह मेरा कभी भी नही हो सकता, मिल भी जाए तो भी। पहले तो वह मिलेगा नही, मैं मान ही लूगा कि मिला। और दूसरे से मिला हुआ, माना हुआ कि मिला हुआ है, तो आज नही कल छूटेगा और दुख लाएगा, पीड़ा लाएगा।

इसलिए महावीर कहते हैं—अगर पीडा के विल्कुल पार हो जाना है तो दूसरे से ही छूट जाना पडेगा। दूसरे के साथ जो भी सम्वन्ध है वह टूट सकता है, परमात्मा के साथ सम्वन्ध भी टूट सकता है। सम्वन्ध का अर्थ ही होता है कि जो टूट भी सकता है। रिलेशनशिप का मतलव ही यह होता है कि जो वन सकती है और टूट सकती है। महावीर कहते है—जो वन सकता है, वह विगड़ सकता है। इसलिए वनाने की कोशिश ही मत करो। तुम तो उसे जान लो जो अनवना है, अनक्रिएटेड है। जो तुम्हारे भीतर है, कभी वना नही है, इसलिए

क्योंकि चेतना की जो गति है, वह स्थान में नहीं है, समय में है। चेतना की जो गति है, वह स्पेस में नहीं है, वह स्थान में नहीं है, वह स्पेस में नहीं है—वह टाइम में है, समय में है। जब आप यहां उठकर आते हैं अपने घर से, तो आपका शरीर यात्रा करता है, वह यात्रा होती है स्थान में। आप घर से निकले, और कार में बैठे, बस में बैठे, ट्रेन में बैठे, चले; यह यात्रा स्थान में है। आपकी जगह एक पत्थर भी रख देते तो वह भी कार में बैठकर यहां तक आ जाता। लेकिन कार में बैठे हुए आपका मन एक और गति भी करता है जिसका कार से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह गति समय में है। हो सकता आप जब घर में हों, और जब कार में बैठे हों, तभी आप समय में इस हाल में आ गए हों, मन से इस हाल में आ गए हों। लेकिन कार अभी घर के सामने खड़ी है। सच तो यह है कि आप कार में बैठे ही इसलिए हैं कि आपका मन कार के पहले इस हाल की तरफ गति करता है। इसलिए आप कार में बैठे हैं, नहीं तो आप कार में नहीं बैठेंगे।

पत्थर खुद कार में नहीं बैठेगा, उसे किसी को बिठाना पड़ेगा। बैठकर भी वह वैसा ही रहेगा जैसा अनबैठा था। बैठकर उसे आप यहां उतार लेंगे, लेकिन उस पत्थर के भीतर कुछ भी न होगा। जब आप कार में बैठे हुए हैं तो दो गतियां हो रही हैं—एक तो आपका शरीर स्थान में यात्रा कर रहा है और एक आपका मन, आपका शरीर स्थान में यात्रा कर रहा है, और आपका मन समय में यात्रा कर रहा है। चेतना की गति समय में है।

महावीर ने चेतना को समय ही कहा है, और ध्यान को सामायिक कहा है। अगर चेतना की गति समय में है तो चेतना की गति के ठहर जाने का नाम सामायिक है। शरीर की सारी गति ठहर जाए उसका नाम आसन है, और चित्त की सारी गति ठहर जाए उसका नाम ध्यान है। अगर आप कार में ऐसे बैठकर आ जाएं जैसे पत्थर आता है तो आप ध्यान में थे। आपके भीतर कोई गति न हो सिर्फ स्वयं शरीर गति करे और आप कार में बैठकर ऐसे आ जाएं जैसे पत्थर आया है, तो आप ध्यान में थे। ध्यान का अर्थ है—चेतना, गति शून्य हो, मूवमेंट शून्य हो। यह ध्यान का अर्थ है महावीर का। अब इस ध्यान की तरफ जाने के लिए महावीर आपको क्या सलाह देते हैं, इसे हम दो-तीन हिस्सों में समझने की कोशिश करें।

कभी आपने छप्पर छाए हुए मकान के नीचे देखा होगा कि कोई रन्ध्र से प्रकाश की किरणें भीतर घुस आती हैं। प्रकाश का एक वल्लरी, एक धारा कमरे में गिरने लगती है। सारा कमरा अन्धेरा है। छप्पर से एक धारा प्रकाश की नीचे तक उतर रही है। तब आपने एक बात और भी देखी होगी कि उस प्रकाश की धारा के भीतर धूल के हजारों कण उड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं। अन्धेरे में वे दिखाई नहीं पड़ते, कमरे में वे सभी जगह उड़ रहे हैं। अंधेरे में दिखाई नहीं पड़ते, सभी

की जगह ज्यादा उन्होने प्रयोग किया—सामायिक। वह महावीर का अपना शब्द है सामायिक। महावीर आत्मा को समय कहते है और सामायिक उसे कहते हैं, जब कोई व्यक्ति अपनी आत्मा मे ही होता है, तब उसे सामायिक कहते है।

इधर एक बहुत अद्भुत काम चल रहा है वैज्ञानिको के द्वारा। अगर वह काम ठीक-ठीक हो सका तो शायद महावीर का शब्द सामायिक पुनरुज्जीवित हो जाए। वह काम यह चल रहा है कि आइन्स्टीन ने, प्लाक ने, और अन्य पिछले पचास वर्षों के वैज्ञानिको ने यह अनुभव किया है कि इस जगत् मे जो स्पेस है वह थ्री डायमेशनल है। जो स्थान है अवकाश है, आकाश है, वह तीन आयामो मे बटा है। हम किसी भी चीज को तीन आयामो मे देखते है, वह थ्री डायमेशनल है। लम्बाई है, चौडाई है, मोटाई है। वह तीन है, तीन आयाम मे स्थान है। और यह तीनो के साथ समय कायम है।

अब तक बडी कठिनाई थी कि यह समय को कैसे इन तीन आयामो से जोडा जाए। क्योकि जोड़ तो कही न कही होना ही चाहिए। समय और क्षेत्र, टाइम और स्पेस कही जुडे होने चाहिए, अन्यथा इस जगत् का अस्तित्व नही बन सकता। इसलिए आइन्स्टीन ने टाइम और स्पेस की अलग-अलग बात करनी बन्द कर दी, और 'स्पेसिओटाइम' एक शब्द बनाया, कि समय और क्षेत्र एक ही है। काल और क्षेत्र एक है। और आइस्टीन ने कहा कि समय जो है, वह स्पेस का ही फोर्थ डायमेशन है, वह क्षेत्र का ही चौथा आयाम है। वह अलग चीज नही है। और आइस्टीन के मरने के बाद इस पर और काम हुआ और पाया गया कि टाइम भी एक तरह की ऊर्जा, एनर्जी है, शक्ति है। और अब वैज्ञानिक ऐसा सोचते है कि मनुष्य का शरीर तो तीन आयामो से बना हे और मनुष्य की आत्मा चौथे आयाम से बनी है। अगर यह बात सही हो गयी तो चौथे आयाम का नाम टाइम होगा। और महावीर ने पच्चीस सौ साल पहले आत्मा को समय कहा है, टाइम कहा है।

कई बार विज्ञान जिन अनुभूतियो को बहुत बाद मे उपलब्ध कर पाता है, रहस्य मे डूबे हुए सन्त उसे हजारो साल पहले देख लेते हैं। दस-पन्द्रह वर्ष का वक्त है, इस बीच काम जोर से चल रहा है। बडा काम रूस के वैज्ञानिक कर रहे है। और वे निरन्तर इस बात के निकट पहुचते जा रहे है कि समय ही मनुष्य की चेतना है। इसे ऐसा समझें तो थोडा ख्याल मे आ जाए तो हमे फिर ध्यान की धारणा मे, महावीर की धारणा मे उतरना आसान हो जाए। इसे ऐसा समझे कि पदार्थ बिना समय के भी कल्पना की जा सकती है, कसीवेबल है। लेकिन चेतना बिना समय के कल्पना भी नही की जा सकती। सोच लें कि समय नही है जगत् में, तो पदार्थ तो हो सकता है, पत्थर हो सकता है, लेकिन चेतना नही हो सकेगी।

जब धक्का नही लगता है तो पता नही चलता है । जब कोई विचार आपको धक्का देता है तब आपको पता चलता है, अन्यथा आपको पता भी नही चलता। विचार बहते रहते है । आप अपने सौ विचारो मे से एक का भी मुश्किल से पता रखते है, बाकी निन्यानबे ऐसे ही बहते रहते है । और भी मजे की बात है कि हवा तो धक्का देती है तब पता भी चलता है, लेकिन आकाश का आपको कोई पता नही चलता क्योकि वह धक्का भी नही देता ।

तो आपकी चेतना मे जो विचार उडते रहते है उनका आपको पता चलता है और चेतना का कभी पता नही चलता, क्योकि उसका कोई धक्का नही है । दो उपाय है—या तो आप इन विचारो से बचना चाहे तो इस खपडे से जो छेद हो गया है उसे बन्द कर दे, तो आपको विचार दिखाई नही पडेंगे । नीद मे यही होता है । वह जो चेतना की थोडी-सी धारा आपको दिखाई पड़ती थी जागने मे आप उसको भी बन्द करके सो जाते है । फिर आपको कुछ दिखाई नही पडता । सब बन्द हो जाता है ।

गहरी बेहोशी मे भी यही होता है । हिप्नोसिस, सम्मोहन मे भी यही होता है । इसलिए विचार से जो लोग पीडित है, वे लोग अनेक बार आत्म-सम्मोहन की क्रियाएं करने लगते है और आत्म-सम्मोहन को ध्यान समझ लेते हैं । वह ध्यान नही है । वह सिर्फ अपनी चेतना को बुझा लेना है । अधेरे मे डूब जाना है । उसका भी सुख है । शराब मे उसी तरह का सुख मिलता है, गाजे मे, अफीम मे, सभी तरह का सुख मिलता है । चेतना का जो छोटी-सी धारा बह रही थी वह भी बन्द हो गयी, घुप्प अधेरे मे खो गए । बडी शाति मालूम पडती है । वह अशाति मालूम पडती थी प्रकाश की किरण । महावीर का ध्यान ऐसा नही है जिसमे प्रकाश प्रकाश की किरण को बुझा देना है । महावीर का ध्यान ऐसा है जिसमे सारे खपडो को अलग कर देना है, पूरे छप्पर को खुला छोड देना है ताकि पूरे कमरे मे प्रकाश भर जाए ।

यह भी बडे मजे की बात है, जब पूरे कमरे मे प्रकाश भर जाता है तब भी धूल-कण दिखाई पडना बन्द हो जाते है । जब पूरे कमरे मे प्रकाश भर जाता है तब भी धूलकण नही दिखाई पडते, जब पूरे कमरे मे अधेरा हो जाता है तब भी धूलकण दिखाई नही पडते । जब पूरे कमरे मे अधेरा होता है और जरा से स्थान मे रोशनी होती है तब धूल कण दिखाई पडते हैं । असल मे धूलकणो को दिखाई पडने के लिए प्रकाश की धारा भी चाहिए और अधेरे की पृष्ठभूमि भी चाहिए ।

तो दो उपाय है इन कणो को भूल जाने का । एक उपाय तो है कि पूरा अधेरा हो जाए तो इसलिए दिखाई नही पडते क्योकि प्रकाश ही नही है, दिखाई कैसे पडेगा । या पूरा प्रकाश हो जाए तो भी दिखाई नही पडते क्योकि इतना

अगह उड रहे है। उस प्रकाश की वल्लरी मे दिखाई पडते है। क्योकि दिखाई पडने के लिए प्रकाश होना जरूरी है। शायद आपको ख्याल आता होगा कि प्रकाश की वल्लरी मे ही वे उड रहे है तो आप गलती मे है। वे तो पूरे कमरे मे उड रहे है। लेकिन प्रकाश की वल्लरी मे दिखाई पडते है।

आपकी चेतना ऐसी ही स्थिति मे है। जितने हिस्से मे ध्यान पडता है, उतने हिस्से मे विचार के कण दिखाई पडते है। बाकी मे भी विचार उड़ते रहते हैं, वे आपको दिखाई नही पडते।

इसलिए मनोवैज्ञानिक मन को दो हिस्सो मे तोड देता है—एक को वह काशस कहता है, एक को अनकाशस कहता है। एक चेतन, एक को अचेतन। चेतन उस हिस्से को कहता है जिस पर ध्यान पड रहा है और अचेतन उस हिस्से को कहता है जिस पर ध्यान नही पड रहा है। चेतना उस हिस्से को कहेगे जिसमे कि प्रकाश की किरण पड रही है और धूल के कण दिखाई पड रहे हैं, और अचेतन उसको कहे ··बाकी कमरे को जहा अधेरा है, जहा प्रकाश नही पड रहा है, धूल कण तो वहा भी उड रहे हैं पर उनका कोई पता नही चलता है।

आपके चेतन मन मे आपको विचारो का उडना दिखाई पडता है, चौबीस घटे विचार चलते रहते है। कभी आपने ख्याल नही किया, कि जब प्रकाश की किरण उतरती है अन्धेरे कमरे मे तो धूल का कण उनमे उडता हुआ आता है, आपने ख्याल किया, वह आसपास के अन्धेरे से उडता हुआ आता है। फिर प्रकाश की किरण मे प्रवेश करता है, थोडी देर मे फिर अन्धेरे मे चला जाता है। शायद आपको यह भ्रान्ति हो कि वह जब प्रकाश मे होता है तभी उसका अस्तित्व है, तो आप गलती मे है। आने के पहले भी वह था, जाने के बाद भी वह है।

आपने कभी अपने विचारो का अध्ययन किया है कि वे कहा से आते हैं और कहा चले जाते हैं। शायद आप सोचते होगे कि इधर से प्रवेश करते है और नष्ट हो जाते है। पैदा होते है और नष्ट हो जाते हैं। पैदा और नष्ट नही होते। आपके अधेरे चित्त से आते है, आपके प्रकाश चित्त मे दिखाई पडते है, फिर अधेरे चित्त मे चले जाते है। अगर आप अपने विचारो को उठता देखने की कोशिश करे कि कहा से उठते हैं तो धीरे-धीरे आप पाएगे कि वे आपके ही भीतर अधेरे से आते हैं। और अगर आप उनके जन्म स्रोत पर ध्यान रखें तो धीरे-धीरे आप पाएगे कि वे आपको अधेरे मे भी दिखाई पडने लगे है, और जब वे चले जाते हैं तब भी आपके सामने से भरे जा रहे है, मिट नही रहे है। अगर आप उनका पीछा करेगे तो वे धीरे-धीरे आपको अधेरे मे भी जाते हुए दिखाई पडेगे। आप उनका अधेरे मे भी पीछा कर सकते है।

चेतना विचार से भरी है, जैसे आकाश वायु से भरा है वैसी चेतना विचार से भरी है। जब वायु का धक्का लगता है आपको वायु का पता चलता है, और

भूल गए है। उनको आर्टिफीशियल टेकनीक की जरूरत है जिससे वे सो सकें। लेकिन दो-तीन महीने से ज्यादा कोई उनके पास नही रहेगा, भाग जाएगा। क्योकि जब उसे नीद आने लगी तो बात खत्म हो गयी। तब वे कहेगा कि ध्यान चाहिए। नीद तो हो गयी ठीक है, लेकिन अब, आगे ? वह आगे खीचना मुश्किल है, क्योकि वह प्रयोग कुल जमा नीद का है।

महावीर मूर्च्छा विरोधी है, इसलिए महावीर ने ऐसी भी किसी पद्धति की सलाह नही दी जिससे मुर्च्छा के आने की जरा-सी भी सम्भावना हो। यही महावीर के और भारत के दूसरी पद्धतियो का भेद है। भारत मे दो पद्धतियां रही है। कहना चाहिए सारे जगत् मे दो ही पद्धतिया हैं ध्यान की। मूलत दो तरह की पद्धतिया हैं—एक पद्धति को हम ब्राह्मण पद्धति कहे और एक पद्धति को हम श्रमण पद्धति कहे। महावीर की जो पद्धति है उसका नाम श्रमण पद्धति है। दूसरी जो पद्धति है वह ब्राह्मण की पद्धति है। ब्राह्मण की पद्धति विश्राम की पद्धति है। वह इस बात की पद्धति है जिसे हम कहे—रिलैक्जेशन। परमात्मा मे अपने को विश्राम कर दें, छोड दो ब्रह्म मे अपने को विश्राम कर दें।

महावीर ने किसी ब्राह्मण पद्धति की सलाह नही दी। उन्होने कहा है कि विश्राम मे बहुत डर तो यह है, सौ मे निन्यानबे मौके पर डर यह है कि आप नीद मे चले जाए। सौ मे निन्यानवे मौके पर डर यह है कि आप नीद में चले जाए। क्योकि विश्राम और नीद का गहरा अन्तर-सम्बन्ध है और आपके जन्मो-जन्मो का एक ही अनुभव है कि जब भी आप विश्राम मे गए हैं तभी आप नीद मे गए है। तो आपके चित्त की एक सस्कारित व्यवस्था है कि जब भी आप विश्राम करेंगे नीद आ जाएगी। इसलिए जिनको नीद नही आती है उनको डाक्टर सलाह देता है रिलैक्जेशन की, शिथिलीकरण की, शवासन की कि तुम विश्राम करो। शिथिल हो जाओ तो नीद आ जाएगी। इससे उल्टा भी सही है अगर कोई विश्राम मे जाए तो बहुत डर यह है कि वह नीद मे न चला जाए। इसलिए जिसे विश्राम मे जाना है उसे बहुत दूसरी और प्रक्रियाओ का सहारा लेना पडेगा, जिससे नीद रुकती हो, अन्यथा विश्राम नीद बन जाती है।

महावीर ने उन पद्धतियो का उपयोग नहीं किया, महावीर ने जिन पद्धतियो का उपयोग किया वे विश्राम से उल्टी है। इसलिए उनकी पद्धति का नाम है श्रम, श्रमण। वे कहते है—श्रमपूर्वक विश्राम मे जाना है, विश्रामपूर्वक नहीं। और श्रमपूर्वक ध्यान मे जाना बिल्कुल उल्टा है विश्रामपूर्वक ध्यान मे जाने के। अगर किसी आदमी को हम कहते हैं कि विश्राम करो तो हम कहते है—हाथ-पैर ढीले छोड दो, सुस्त हो जाओ, शिथिल हो जाओ, ऐसे हो जाओ जैसे मुर्दा हो गए। श्रम की जो पद्धति है वह कहेगी इतना तनाव पैदा करो, इतना टैंशन पैदा करो जितना कि तुम कर सकते हो। जितना तनाव पैदा कर सको उतना अच्छा है।

ज्यादा प्रकाश है कि उतने छोटे-से धूल-कण दिखाई नही पड सकते, प्रकाश दिखाई पडने लगता है। पृष्ठभूमि न होने से धूलकण खो जाते है।

तो पहला तो यह फर्क समझ ले कि बहुत से प्रयोग है ध्यान के जो वस्तुत. मूर्च्छा के प्रयोग है, ध्यान के प्रयोग नही है। जिनमे आदमी अपने काशस को अनकाशस मे डुबा देता है। जिनमे वह गहरी नीद मे चला जाता है। उठने के बाद उसे शाति भी मालूम पडेगी, स्वस्थ भी मालूम पडेगा, ताजा भी मालूम पडेगा। लेकिन वे उपाय सिर्फ चेतना को डुबाने के थे। उससे कोई क्राति घटित नही होती।

श्री महेश योगी जो ध्यान की बात सारी दुनिया मे करते है, वह सिर्फ मूर्च्छा का प्रयोग है। जिसे वे ट्रासेंडेण्टल मेडिटेशन कहते है, जिसे भावातीत ध्यान कहते है वह ध्यान भी नही है, भावातीत तो बिलकुल नही है, न तो ट्रासेडेण्टल है, न मेडिटेशन है। ध्यान इसलिए नही है कि वह केवल एक मन्त्र के जाप से स्वय को सुला लेने का प्रयोग है। और किसी भी शब्द की पुनरुक्ति अगर आप करते जाए तो तन्द्रा आ जाती है—किसी भी शब्द की। शब्द की पुनरुक्ति से तन्द्रा पैदा होती है, हिप्नोसिस पैदा होती है। असल मे किसी भी शब्द की पुनरुक्ति से बोर्डम पैदा होती है, ऊब पैदा होती है। ऊब नीद ले आती है। तो किसी भी मन्त्र के प्रयोग का अगर आप इस तरह प्रयोग करे कि वह आपको ऊब मे ले जाए, उबा दे, घबरा दे, नाविन्य न रह जाए उसमे, तो मन ऊब कर पुराने से परेशान होकर तन्द्रा मे और निद्रा मे खो जाता है। जिन लोगो को नीद की तकलीफ है उनके लिए फायदे का है, लेकिन न तो यह ध्यान है, न भावातीत है। और नीद की बहुत लोगो को तकलीफ है, उनके लिए वह फायदा है, लेकिन इस फायदे से ध्यान का कोई सम्बन्ध नही है। वह फायदा गहरी नीद का ही फायदा है।

गहरी नीद अच्छी चीज है, बुरी चीज नही है। इसलिए मै नही कह रहा हूं कि महेश योगी जो कहते है वह बुरी चीज है। बडी अच्छी चीज है, लेकिन उसका उपयोग उतना ही है जितना किसी भी ट्रेक्वेलाइजर का है। ट्रेक्वेलाइजर से भी अच्छी है क्योकि किसी दवा पर निर्भर नही रहना पडता है, भीतरी तरकीब है। भीतरी तरकीब है। और इसलिए पूरब मे महेश योगी का कोई प्रभाव नही पडा, पश्चिम मे बहुत पडा। क्योकि पश्चिम अनिद्रा से पीडित है, पूरब अभी पीडित नही है। इसका बुनियादी कारण वही है। पश्चिम इसनोमिया से परेशान है, नीद बडी मुश्किल हो गयी है। नीद पश्चिम मे एक सुख अनुभव हो रहा है, क्योकि उसे पाना मुश्किल हो गया है। पूरब मे नीद का कोई सवाल नही है अभी भी। हा, पूरब जितना पश्चिम होता जाएगा उतना नीद का सवाल उठता जाएगा।

तो पश्चिम मे जो लोग महेश योगी के पास आए वे असल मे नीद की तकलीफ से परेशान लोग है, सो भी नही सकते। वे वह तरकीब भूल गए जो कि प्राकृतिक तरकीब थी वह भूल गए हैं, वह जो नेचुरल प्राइसेस थी सोने की वह

ध्यान की, वह मै आपसे कह दू ।

अभी पश्चिम मे एक बहुत विचारशील वैज्ञानिक ध्यान पर काम करता है। उसका नाम है रान हुब्बार्ड। उसने एक नए विज्ञान को जन्म दिया है, उसका नाम है सायटोलाजी। ध्यान की उसने जो-जो बाते खोज-बीन की है वे महावीर से बडी मेल खाती है। इस समय पृथ्वी पर महावीर के ध्यान के निकटतम कोई आदमी समझ सकता है तो वह रान हुब्बार्ड है। जैनो को तो उसके नाम का पता भी नही होगा। जैन साधुओ मे तो मैं पूरे मुल्क मे घूमकर देख लिया हू, एक आदमी भी नही है जो महावीर के ध्यान को समझ सकता हो, करने की बात तो बहुत दूर है। प्रवचन वे करते है रोज, लेकिन मैं चकित हुआ कि पाच-पाच सौ, सात-सात सौ साधुओ के गण का जो गणी हो, प्रमुख हो, आचार्य हो, वह भी एकान्त मे मुझसे पूछता है कि ध्यान कैसे करें ? यह सात सौ साधुओ को क्या करवाया जा रहा है। उनका गुरु पूछता है ध्यान कैसे करू ? निश्चित ही यह गुरु एकान्त मे पूछता है। इतना भी साहस नही है कि चार लोगो के सामने पूछ सके।

रान हुब्बार्ड ने तीन शब्दो का प्रयोग किया है ध्यान मे प्राथमिक प्रक्रिया मे प्रवेश के लिए। वे तीनो शब्द महावीर के है। रान हुब्बार्ड को महावीर के शब्दो का कोई पता नही है, क्योकि अंग्रेजी मे प्रयोग किया है। उसका एक शब्द है रिमेम्बरिंग, दूसरा शब्द है रिटर्निंग और तीसरा शब्द है रि-लिविंग। ये तीनो शब्द महावीर के है। रिटर्निंग से आप अच्छी तरह से परिचित है—प्रतिक्रमण। रीलिविंग से आप उतने परिचित नही है। महावीर का शब्द है—जाति-स्मरण। पुन. जीना उसको जो जिया जा चुका है। और रिमेम्बरिंग—महावीर ने, बुद्ध ने, दोनो ने स्मृति···वही शब्द विगड-विगड कर कबीर और नानक के पास आते-आते सुरति हो गया, वही शब्द—स्मृति।

रिमेम्बरिंग से हम सब परिचित है, स्मृति से। सुबह आपने भोजन किया था आपको याद है। लेकिन स्मृति सदा आशिक होती है। क्योकि जब आप भोजन की याद करते है शाम को कि सुबह आपने भोजन किया था, तो आप पूरी घटना को याद नही कर पाते, क्योकि भोजन करते वक्त बहुत कुछ घट रहा था। चौके मे बर्तन की आवाज आ रही थी, भोजन की सुगन्ध आ रही थी, पत्नी आस-पास घूम रही थी, उसकी दुश्मनी आपके आस-पास झलक रही थी। बच्चे उपद्रव कर रहे थे, उनका उपद्रव आपको मालूम पड रहा था। गर्मी थी कि सर्दी थी वह आपको छू रही थी, हवाओ के झोके आ रहे थे कि नही आ रहे थे—वह सारी स्थिति थी। भीतर भी आपको भूख कितनी लगी थी, मन मे कौन से विचार चल रहे थे, कहा भागने के लिए आप तैयारी कर रहे थे, यहा खाना खा रहे थे मन कहा जा चुका था। यह टोटल सिचुएशन है।

अपने को इतना खीचो, इतना खीचो, इतना खीचो जैसे कोई वीणा के तार को खीचता चला जाए और टकार पर छोड दे। खीचते चले जाओ, खीचते चले जाओ। तीव्रतम स्वर तक अपने तनाव को खीच लो। निश्चित ही एक सीमा आती है कि अगर आप सितार के तार को खीचते चले जाए तो तार टूट जाएगा। लेकिन चेतना के टूटने का कोई उपाय नही है। वह टूटता ही नही।

इसलिए आप खीचते चले जाए। महावीर कहते है—खीचते चले जाओ, एक सीमा आएगी जहा तार टूट जाता है, लेकिन चेतना नही टूटती। लेकिन चेतना भी अपनी अति पर आ जाती है, क्लाइमेक्स पर आ जाती है। चरम पर आ जाती है। और जव चरम पर आ जाती है तो अनजाने तुम्हारे विना कसे विश्राम को उपलव्ध हो जाती है। जैसा मैं इस मुट्ठी को वन्द करता जाऊ, वन्द करता जाऊ, जितनी मेरी ताकत है, सारी ताकत लगाकर उसे बन्द करता जाऊ तो एक घडी आएगी कि मेरी ताकत चरम पर पहुंच जाएगी। अचानक मैं पाऊगा कि मुट्ठी ने खुलना शुरू कर दिया क्योकि अव मेरे पास बन्द करने की और ताकत नही है। मुट्ठी को वन्द करके खोलने का भी उपाय है।

और ध्यान रहे जब मुट्ठी को पूरी तरह वन्द करके खोला जाता है तव जो विश्राम उपलव्ध होता है वह वहुत अनूठा है, वह नीद मे कभी नही ले जाता है। वह सीधा विश्राम मे ले जाता है। सौ मे निन्यानबे मौके विश्राम मे जाने के है, नीद मे, जाने का मौका नही है। क्योकि आदमी ने इतना श्रम किया है, इतना श्रम किया है, इतना खीचा है, इतना ताना है कि इस तनाव के लिए उसे इतने जागरण में जाना पडेगा कि वह उस जागरण से एकदम नीद मे नही जा सकता है, विश्राम मे चला जाएगा।

महावीर की पद्धति श्रम की पद्धति है, चित्त को इतने तनाव पर ले जाना है। तनाव दो तरह का हो सकता है एक तनाव किसी तीसरी चीज के लिए भी हो सकता है, उसके लिए महावीर कहते है गलत ध्यान है। एक तनाव स्वय के प्रति हो सकता है, उसे महावीर कहते है वह ठीक ध्यान है। इस ठीक ध्यान के लिए कुछ प्रारम्भिक बाते है, उनके विना इस ध्यान मे नही उतरा जा सकता है। उसके विना उतरिएगा तो विक्षिप्त हो सकते है। एक तो ये दस सूत्र जो मैंने कल तक कहे हैं वे अनिवार्य है। उनके विना इस प्रयोग को नही किया जा सकता। क्योकि उन दस सूत्रो के प्रयोग से आपके व्यक्तित्व मे वह स्थिति, वह ऊर्जा और वह स्थिति आ जाती है जिनसे आप चरम तक अपने को तनाव मे ले जाते है। इतनी सामर्थ्य और क्षमता आ जाती है कि आप विक्षिप्त नही हो सकते। अन्यथा अगर कोई महावीर के ध्यान को सीधा शुरू करे, तो वह विक्षिप्त हो सकता है, वह पागल हो सकता है। इसलिए भूलकर भी इस प्रयोग को सीधा नही करना है, वे दस हिस्से अनिवार्य हैं। और उसकी प्राथमिक भूमिकाए हैं

ज़रा भी फर्क नही होगा आप फिर से जिएगे। और बड़े मजे की बात यह है कि इस बार जब आप जिएगे तो वह ज्यादा जीवन हो गया बजाय इसके जो कि आप दिन मे जिए थे क्योकि उस वक्त और भी पच्चीस उलझाव थे। अब कोई उलझाव नही है। हुब्बार्ड कहता है कि यह ट्रैक पर वापस लौटकर फिर से यात्रा करनी है, उल्टी ट्रैक पर, जैसे कि टेप रिकार्ड को आपने सुन लिया दस मिनट, उल्टा और फिर दस मिनट वही सुना। या फिल्म आपने देखी, फिर से फिल्म देखी और मन के ट्रैक पर कुछ भी खोता नही। मन के पथ पर सब सुरक्षित है, खोता नही है।

रोज सोने से पहले, अगर महावीर के ध्यान मे, सामायिक मे प्रवेश करना हो तो कोई नौ महीने का—तीन-तीन महीने एक-एक प्रयोग पर बिताने जरूरी हैं। पहले स्मरण करना शुरू करे, पूरी तरह स्मरण करें सुबह से शाम तक क्या हुआ। फिर प्रतिक्रमण करें। पूरी स्थिति को याद करने की कोशिश करें कि किस-किस घटना मे कौन-कौन-सी पूरी स्थिति थी। आप बहुत हैरान होगे, और आपकी सवेदनशीलता बहुत बढ जाएगी और बहुत सैंसेटिव हो जाएगे और दूसरे दिन आपके जीने का रस भी बहुत बढ जाएगा, क्योकि दूसरे दिन धीरे-धीरे आप बहुत-सी चीजो के प्रति जागरूक हो जाएगे, जिनके प्रति आप कभी जागरूक न थे।

जब आप भोजन कर रहे हैं, तब बाहर वर्षा भी हो रही है, तब उसके बूदो की टाप भी आपके कान सुन रहे हैं, लेकिन आप इतने सवेदनहीन है कि आपके भोजन मे वह बूदो का स्वर जुड नही पाता है। तब बाहर की जमीन पर पडी हुई नयी बूदो की गन्ध भी आ रही है, लेकिन आप इतने सवेदनहीन हैं कि वह गन्ध आपके भोजन मे जुड नही पाती। तब खिडकी मे फूल भी खिले हुए हैं, लेकिन फूलो का सौन्दर्य आपके भोजन मे सयुक्त नही हो पाता है।

आप सवेदनहीन है, इसेंसिटिव हो गए हैं। अगर आप प्रतिक्रमण की पूरी यात्रा करते है तो आपके जीवन मे सौदर्य का और रस का और अनुभव का एक नया आयाम खुलना शुरू होगा। पूरी घटना आपको जीने को मिलेगी। और जब भी पूरी घटना जियी जाती है, जब भी पूरी घटना होती है, तो आप उस घटना को दोबारा जीने की आकाक्षा से मुक्त होने लगते है, वासना क्षीण होती है।

अगर कोई व्यक्ति एक बार भी किसी घटना से परिपूर्णतया बीत जाए, गुजर आए तो उसकी इच्छा उसे रिपीट करने की, दोहराने की फिर नही होती है। तो अतीत से छुटकारा होता है और भविष्य से भी छुटकारा होता है। प्रतिक्रमण अतीत और भविष्य से छुटकारे की विधि है। फिर इस प्रतिक्रमण को इतना गहरा करते जाए कि एक घडी ऐसी आ जाए कि अब आप याद न करें, री-लिव करें, पुनर्जीवित हो जाए, उस घटना को फिर से जिए। और आप हैरान होगे वह घटना फिर से जियी जा सकती है।

जब आप शाम को याद करते है तो सिर्फ इतना ही करते हैं कि सुबह बारह बजे भोजन किया था। यह आशिक है। जब आप भोजन कर रहे होते है तो भोजन की सुगन्ध भी होती है और स्वाद भी होता है। आपको पता नहीं होगा कि अगर आपकी नाक और आख बिल्कुल बन्द कर दी जाए तो आप प्याज मे और सेव मे कोई फर्क न बता सकेंगे स्वाद मे। आख पर पट्टी बाध दी जाए और नाक पर पट्टी बाध दी जाए और बन्द कर दी जाए, कहा जाए आपके होठ पर क्या रखा है और आप इसको चख कर बताइए, तो आप प्याज मे और सेव मे भी फर्क न बता सकेंगे। क्योकि प्याज और सेव का असली फर्क आपको स्वाद से नही चलता है, गन्ध से चलता है और आख से चलता है। स्वाद से पता नही चलता आपको।

तो बहुत घटनाए भोजन की सिचुएशन मे है, वे आपको याद नही आती। आशिक याद है कि बारह बजे भोजन किया था। रिटनिंग, दूसरा जो प्रतिक्रमण है उसका अर्थ है पूरी की पूरी स्थिति को याद करना—पूरी की पूरी स्थिति को याद करना। लेकिन पूरी स्थिति को भी याद करने मे आप बाहर बने रहते हैं। री-लिविंग का अर्थ है—पूरी स्थिति को पुन जीना।

अगर महावीर के ध्यान मे जाना है तो रात सोते समय एक प्राथमिक प्रयोग अनिवार्य है। सोते समय करीब-करीब वैसी ही घटनाए घटती है जैसा बहुत बड़े पैमाने पर मृत्यु के समय घटती है। आपने सुना होगा कि कभी पानी मे डूब जाने वाले लोग एक क्षण मे अपने पूरे जीवन को री-लिव कर लेते है। कभी-कभी पानी मे डूबा हुआ कोई आदमी बच जाता है तो वह कहता है कि जब मैं डूब रहा था, और बिल्कुल मरने के करीब निश्चित हो गया तो उस क्षण को जैसे पूरी जिन्दगी की फिल्म मेरे सामने से गुजर गयी—पूरी जिन्दगी की फिल्म एक क्षण मे मैने देख डाली। और ऐसी नही देखी कि स्मरण की हो, इस तरह से देखी कि जैसे मैंने फिर से जी लिया। मृत्यु के क्षण मे, आकस्मिक मृत्यु के क्षण मे जब कि मृत्यु आसन्न मालूम पडती है, आ गयी मालूम पड़ती है, बचने का कोई उपाय नही रह जाता है और मृत्यु साथ होती है, तब ऐसी घटना घटती है। महावीर के ध्यान मे अगर उतरना हो तो ऐसी घटना नीद के पहले रोज घटानी चाहिए। जब रात होने लगे और नीद करीब आने लगे तो—री-लिव, पहले तो स्मृति से शुरू करना पडेगा। सुबह से लेकर साझ सोने तक स्मरण करें।

एक तीन महीने गहरा प्रयोग किया जाए तो आपको पता चलेगा कि स्मृति धीरे-धीरे प्रतिक्रमण बन गयी। अब पूरी स्थिति याद आने लगी। और भी तीन महीने प्रयोग किया जाए, प्रतिक्रमण पर तब आप पाएगे कि वह प्रतिक्रमण पुनर्जीवन बन गया है। जब आप रि-लिव करने लगे। कोई नौ महीने के प्रयोग मे आप पाएगे कि आप सुबह से लेकर साझ तक फिर से जी सकते हैं—फिर से।

रोबोट; आपके भीतर जो यंत्र बन गया है वह काम कर लेता है। इतना होश है, बस। इसे महावीर होश नही कहते है।

रात जब स्वप्न पूरी तरह समाप्त हो जाते है। तब सुबह आप ऐसे उठते हैं कि उस उठने का आपको कोई भी पता नही है। वह उठने मे इतना ही फर्क है जैसे किसी एक मिट्टी के तेल मे जलती हुई बाती देखी हो—पीला, धुधला, धुए से भरा हुआ प्रकाश। और उस आदमी ने पहली दफे सूरज का जागना देखा हो, सूरज का उगना देखा हो, इतना ही फर्क है। अभी जिसे आप जागना कहते है वह ऐसा ही मरती-सी, पीली-सी, धीमी-सी लौ है। जब रात स्वप्न समाप्त हो जाते हैं, तब आप सुबह उठते है सूरज जगा—उस जागी हुई चेतना मे विचार आपके गुलाम हो जाते हैं। मालिक नही होते। और महावीर कहते हैं—जब तक विचार मालिक है, तब तक ध्यान कैसे हो पाएगा? विचार की मालकियत आपकी होनी चाहिए, तब ध्यान हो सकता है। तब आप जब चाहे विचार करें, जब चाहे तब न करें।

तो दूसरा प्रयोग—एक तो नीद के साथ—इसका प्रयोग सुबह जागने के साथ। जैसे ही जागें वैसे ही प्रतीक्षा करें उठ कर कि कब पहला विचार आता है। पहले विचार को पकडें, कब आता है। धीरे-धीरे आप हैरान होगे, बहुत हैरान होगे कि जितना आप जागकर पहले विचार को पकडने की कोशिश करते है, उतनी ही देर से आते है। कभी घंटो लग जाएगे और पहला विचार नही आता है। और यह घंटा जो है विचार रहित, यह आपकी चेतना को शीर्पासन से सीधा खडा करने मे सहयोगी बनेगा। आप पैर के बल खडे हो सकेंगे। क्योंकि अगर घंटा भर तो बहुत दूर होकर है अगर एक मिनट के लिए भी कोई विचार न आए तो आपको विचार नर्क है, यह अनुभव होना शुरू हो जाएगा। और निर्विचार होना आनन्द है, स्वर्ग है यह अनुभव होना शुरू हो जाएगा। एक मिनट को भी विचार न आए तो आपको अपने भीतर विचारो के अतिरिक्त जो है, उसका दर्शन शुरू हो जाएगा। तब धूल नही दिखाई पडेगी, प्रकाश की वल्लरी दिखाई पडेगी। तब आपका गेस्टाल्ट बदल जाएगा।

अगर आपने कभी कोई गेस्टाल्ट चित्र देखे हैं तो आप समझ पाएगे। मनोविज्ञान की किताबो मे गेस्टाल्ट के चित्र दिए होते है। कभी एक चित्र आप मे से बहुत लोगो ने देखा होगा, नही देखा होगा तो देखना चाहिए। एक बूढी का चित्र बना होता है, एक बूढी स्त्री का चित्र बना होता है। बहुत से गेस्टाल्ट चित्र बने है। बूढी का चित्र बना होता है, आप उसको गौर से देखें तो बूढी दिखाई पडती है। फिर आप देखते ही रहे, देखते ही रहे, देखते ही रहे, अचानक आप पाते हैं कि चित्र बदल गया। और एक जवान स्त्री दिखाई पडनी शुरू हो गयी। वह भी उन्ही रेखाओ मे छिपी हुई है। वह भी उन्ही रेखाओ मे छिपी हुई हैं, लेकिन एक

और जिस दिन आप उस घटना को फिर से जीने मे समर्थ हो जाएगे, उस दिन रात सपने बन्द हो जाएगे। क्योकि सपने मे वही घटनाए आप फिर से जीने की कोशिश करते है, और तो कुछ नही करते है। अगर आप होश-पूर्वक रात सोने के पहले पूरे दिन को पूरा जी लिए हो तो आपने निपटारा कर दिया, क्लोज्ड हो गया। अब कुछ याद करने की जरूरत न रही, पुन जीने की जरूरत न रही। जो-जो छूट गया था वह भी फिर से जी लिया गया है। जो-जो रस अधूरा रह गया था, जो-जो अनकम्प्लीट, अपूर्ण रह गया था, वह पूरा कर लिया गया।

जिस दिन आदमी री-लिव कर लेता हैं, उस दिन रात सपने बिदा हो जाते है। और निद्रा जितनी गहरी हो जाती है, सुबह जागरण उतना ही प्रगाढ हो जाता है। स्वप्न जव बिदा हो जाते है नीद मे तो दिन मे विचार कम हो जाते हैं। ये सव सयुक्त घटनाए है। जव रात स्वप्नरहित हो जाती है तो दिन विचार शून्य होने लगता है, विचारमुक्त होने लगता है।

इसका यह मतलव नही है कि आप फिर विचार नही कर सकते, इसका यह मतलव है कि फिर आप विचार कर सकते है, लेकिन करने का आप्सेशन नही रह जाता, जरूरी नही रह जाता कि करें ही। अभी तो आपको मजबूरी मे करना पडता है। आप चाहे तो भी, न करे तो भी करना पडता है। और जिस विचार को आप चाहते है न करें, उसे और भी करना पडता है। अभी आप बिल्कुल गुलाम है। अभी मन आपकी मानता नही।

महावीर से अगर पूछें तो विक्षिप्तता का यही लक्षण है—जिसका मन उसकी नही मानता है। विक्षिप्त का यही लक्षण है, पागल का यही लक्षण है। तो हममे पागलपन की मात्राए है। किसी का जरा कम मानता है, किसी का जरा ज्यादा मानता है, किसी का थोडा और ज्यादा मानता है। कोई अपने भीतर ही भीतर करता रहता है, कोई जरा वाहर करने लगता हे वही काम। बस इतनी मात्राओ के फर्क हैं—डिग्रीज आफ मैडनेस। क्योकि जब तक ध्यान न उपलब्ध हो तव तक आप विक्षिप्त होगे ही।

ध्यान का अभाव विक्षिप्तता है। ध्यान को उपलब्ध व्यक्ति के स्वप्न शून्य हो जाते है। ऐसी हो जाती है उसकी रात, जैसे प्रकाश की वल्लरी मे धूल के कण न रह गए। जब वह सुवह उठता हे तो सच पूछिए वही आदमी सुवह उठता है जिसने रात स्वप्न नही देखे। नही तो सिर्फ नीद की एक पर्त टूटती है और सपने भीतर दिन भर चलते रहते है। कभी भी आख वन्द करिए—दिवा-स्वप्न शुरू हो जाते हैं। सपना भीतर चलता ही रहता है। सिर्फ ऊपर की एक पर्त जाग जाती है। काम चलाऊ है वह पर्त। उससे आप सडक पर वचकर निकल जाते है, उसमे आप अपने दफ्तर पहुच जाते है। उममे अपने आप काम कर लेते हैं—आदत,

दुखी हो जाए, हाथ पैर कट जाए फिर भी भीतर चेतना है, इसकी स्पष्ट स्मृति वनी रहती है। और जव चाहे तव गेस्टाल्ट वदल सकते है। एक्सिडेंट हो रहा है और शरीर टूट कर गिर पडा, हाथ पैर अलग हो गए हैं। जरूरी नही है कि आप पैर को देख कर दुखी हो। आप गेस्टाल्ट वदल सकते हैं। आप चेतना को देखने लगे, शरीर गया। शरीर का कोई दुख नही है। आप शरीर नही रहे।

जव महावीर के कान मे खीलिया ठोकी जा रही है तो आप यह मत समझना कि महावीर आप ही जैसे शरीर है। आप ही जैसे शरीर होगे तो खीलियो का दर्द होगा। महावीर का गेस्टाल्ट वदल जाता है। अव महावीर शरीर को नही देख रहे हैं, वे चेतना को देख रहे है। तो शरीर मे खीलिया ठोकी जा रही हैं तो वे ऐसी ही मालूम पडती हैं, जैसे किसी और के शरीर मे खीलिया ठोकी जा रही है। जैसे कही और दूर डिस्टेंस पर खीलिया ठोकी जा रही हैं। महावीर दूर हो गए। महावीर मर रहे है तो आप ही जैसे नही मर रहे है। गेस्टाल्ट और है। महावीर चेतना को देख रहे हैं, जो नही मरती।

जव जीसस को सूली पर लटकाया जा रहा है तो गेस्टाल्ट और है। जीसस उस शरीर को नही देख रहे है, जो सूली पर लटकाया जा रहा है। जव मसूर को काटा जा रहा है तो गेस्टाइल्ट और है। मसूर उस शरीर को नही देख रहा है, जो काटा जा रहा है, इसलिए मसूर हस रहा है। और कोई पूछता है—मसूर, तुम काटे जा रहे हो और हस रहे हो ? तो मसूर ने कहा कि मैं इसलिए हसता हू कि जिसे तुम काट रहे हो वह मैं नही हू। और जो मैं हू तुम उसे छू भी नही पा रहे हो तो मुझे वडी हसी आ रही है। तुम्हारी तलवारें मेरे आसपास से गुजर जा रही हैं लेकिन मुझे स्पर्श नही कर पाती हैं। यह गेस्टाल्ट का परिवर्तन है, ध्यान का परिवर्तन है, ध्यान का फोकस वदल गया है, वह कुछ और देख रहा है।

तो रात्रि विचार के लिए तीन प्रक्रियाए—सुवह पहले विचार की प्रतिक्षा की एक प्रक्रिया और शेष सारे दिन साक्षी का भाव, विटनेस है। जो भी हो रहा है उसका मैं साक्षी हू, कर्त्ता नही। भोजन कर रहे है तो दो चीजें रह जाती है। दो भी नही रह जाती, साधारण आदमी को एक ही चीज रह जाती है—भोजन रह जाता हे। अगर थोडा वुद्धिमान आदमी है तो दो चीजें होती है—भोजन होता है, भोजन करने वाला होता है।

वुद्धिमान से मेरा मतलव है ? जो थोडा सोच-समझकर जीता है। जो विल्कुल ही गैर-सोच-समझकर जीता है भोजन ही रह जाता है, इसलिए वह ज्यादा भोजन कर जाता है, क्योकि भोजन करने वाला तो मौजूद नही था। कल उसने तय किया था कि इतना ज्यादा भोजन नही करना है। पच्चीस दफे तय कर चुका है कि इतना ज्यादा भोजन नही करना है। इससे यह वीमारी पकडती है, यह रोग आ जाता है। रोग से दुखी होता है तव कहता है—यह भोजन इतना नही करना।

बडे मजे की बात होगी कि जब तक आपको बूढी का चित्र दिखाई पडेगा, तब तक जवान स्त्री का चित्र नही दिखाई पडेगा। और जब आपको जवान स्त्री का चित्र दिखाई पडेगा तो बूढी खो जाएगी। दोनो आप एक साथ नही देख सकते, यह गेस्टाल्ट का मतलब है।

गेस्टाल्ट का मतलब है कि पैटर्न है देखने के, और विपरीत पैटर्न एक साथ नही देखे जा सकते। जब जवान स्त्री दिखाई पडेगी—चित्र वही है, रेखाएं वही है, आप वही हैं, कुछ बदला नही है। लेकिन आपका ध्यान बदल गया। आप बूढी को देखते-देखते ऊब गए, परेशान हो गए। ध्यान ने एक परिवर्तन ले लिया, उसने कुछ नया देखना शुरु किया। क्योकि ध्यान सदा नया देखना चाहता है। अब वह जवान स्त्री जो अभी तक आपको नही दिखाई पडी थी वह दिखाई पड गयी। बडा मजा यह होगा, आप दोनो को एक साथ नही देख सकते हैं, साइमल्टेनियसली, युगपत नही देख सकते है। अब आपको पता है—पहले तो आपको पता भी नही था कि इसमे एक जवान चेहरा भी छिपा हुआ है। अब आपको पता है कि दोनो चेहरे छिपे हैं अब भी आप नही देख सकते—अब आप जब तक जवान चेहरा देखते रहेंगे, बूढी का कोई पता नही चलेगा। जब आप बूढी को देखना शुरू करेंगे, जवान चेहरा खो जाएगा। गेस्टाल्ट है यह।

चेतना विपरीत को एक साथ नही देख सकती। जब तक आप धूल के कण देख रहे हैं, तब तक आप प्रकाश की वल्लरी नही देख सकते। और जब आप प्रकाश की वल्लरी देखने लगेंगे तब धूल के कण नही देख सकते। जब तक आप विचार को देख रहे हैं, तब तक आप चेतना को नही देख सकते। जब आप विचार को नही देखेंगे, तब आप चेतना को देखेंगे। और चेतना को एक दफे जो देख ले, उसके जीवन की सारी की सारी रूप-रेखा बदल जाती है। अभी हमारी सारी रूपरेखा विचार से निर्धारित होती है, धूल-कणो से। फिर हमारी सारी चेतना प्रकाश मे प्रवाहित होती है। फिर भी आप दोनो चीजो को एक साथ नही देख सकेंगे। जब आप विचार देखेंगे तब चेतना भूल जाएगी। जब आप चेतना देखेंगे तब विचार भूल जाएंगे। लेकिन फिर आपको याद तो रहेगा चाहे कि जवान चेहरा दिखाई पड रहा है, आपको याद तो रहेगा कि बूढा चेहरा छिपा हुआ है। फिर आप बूढा चेहरा देख रहे हैं तब भी आपको याद रहेगा कि जवान चेहरा भी कहीं मौजूद है, खोया हुआ है, छिपा हुआ है अप्रगट है।

जिस दिन कोई व्यक्ति निर्विचार हो जाता है उस दिन चेतना पर उसका ध्यान जाता है। तब तक ध्यान नही जाता। और एक बार चेतना पर ध्यान चला जाए तो फिर चेतना का विस्मरण नही होता है। चाहे आप विचार मे लगे रहे, दुकान पर लगे रहे, बाजार मे काम करते रहें, कुछ भी करते रहे, भीतर चेतना है, इसकी स्पष्ट प्रतीति बनी रहती है। बीमार हो जाएं, रुग्ण हो जाएं,

को प्रगट करने के लिए दोनो शब्दो का एक साथ उपयोग करने के अतिरिक्त और कोई रास्ता नही है। तब पैरॉडाविसकल हो जाता है। अगर हम ऐसा कह सकें, और कोई अर्थ साफ होता हो—ऐसी अगति जो पूर्ण गति है, ऐसा ठहराव जहा कोई ठहराव नही है, मूवमेंट, विदआउट मूवमेंट, तो शायद हम खबर दे पाए। क्योंकि हमारे पास दो शब्द है, और महावीर जैसे व्यक्ति तीसरे बिन्दु से जीते हैं। तीसरे बिन्दु की अब तक कोई भाषा पैदा नही हो सकी। शायद कभी हो भी नही सकेगी।

नही हो सकेगी, इसलिए कि भाषा के द्वन्द्व जरूरी हैं। आपको कभी ख्याल नही आता कि भाषा ऐसा खेल है। अगर आप डिक्शनरी मे देखने जाए तो वहा लिखा हुआ है—पदार्थ क्या है? जो मन नही है। और जब आप मन को देखने जाए तो वहा लिखा है—मन क्या है? जो पदार्थ नही है। कैसा पागलपन है! न पदार्थ का कोई पता है, न मन का कोई पता है। लेकिन व्याख्या बन जाती है दूसरे के इन्कार करने से व्याख्या बना लेते है! अब यह कोई बात हुई कि पुरुष कौन है? जो स्त्री नही! स्त्री कौन है? जो पुरुष नही! यह कोई बात हुई? यह कोई डेफिनेशन हुई? यह कोई परिभाषा हुई? अधेरा वह है जो प्रकाश नही, प्रकाश वह है जो अधेरा नही! समझ मे आता है कि बिल्कुल ठीक है, लेकिन बिल्कुल बेमानी है। इसका कोई मतलब ही न हुआ। अगर मैं पूछू दाया क्या है? आप कहते हैं, बाया नही है। मैं पूछू बाया क्या है? तो उसी दाए से व्याख्या करते है जिसकी व्याख्या बाए से की थी! यह व्हिसियस है, सर्कुलर है।

लेकिन आदमी का काम चल जाता है। सारी भाषा ऐसी है। डिक्शनरी से ज्यादा व्यर्थ की चीज जमीन पर खोजनी बहुत मुश्किल है—शब्दकोश से ज्यादा व्यर्थ की चीज। क्योकि शब्दकोश वाला कर क्या रहा है? वह पाचवें पेज से कहता है कि दसवा पेज देखो, और दसवें पेज से कहता है कि पाचवा देखो। अगर मैं आपके गाव मे जाऊ और आपसे पूछू कि रहमान कहा रहते है? आप कहे कि राम के पडोस मे? मैं पूछू राम कहा रहते है? आप कहे, रहमान के पडोस मे। इससे क्या अर्थ होता है? हमे अज्ञात की परिभाषा उससे करनी चाहिए जो ज्ञात हो। तब तो कोई मतलब होता है। हम एक अज्ञात की परिभाषा दूसरे अज्ञात से करते है। वन अननोन इज़ डिफाइन्डबाई एनअदर अननोन। हमे कुछ भी पता नही है, एक अज्ञात को हम दूसरे अज्ञात से व्याख्या कर देते है। और इस तरह ज्ञात का भ्रम पैदा कर लेते हैं।

नॉलेज, ज्ञान का जो हमारा भ्रम है वह इसी तरह खडा हुआ है। मगर इससे काम चल जाता है। इससे काम चल जाता है। काम चलाऊ है यह ज्ञान। पर इससे कोई सत्य का अनुभव नही होता। महावीर जैसे व्यक्ति की तकलीफ यह है कि वह तीसरे बिन्दु पर खडा होता है जहा चीजें तोडी नही जा सकती। जहा

तय कर लिया। कल जब फिर भोजन करने बैठता है तो ज्यादा भोजन करता है और वही चीजें खा लेता है जो नही खानी थी। क्यो ? भोजन करने वाला मौजूद ही नही रहता। सिर्फ भोजन रह जाता है। भोजन ने तो तय नही किया था, इसलिए भोजन को जितना करवाना है, करवा देता है।

जिसको हम थोडा बुद्धिमान आदमी कहे, वह दोनो का होश रखता है—भोजन का भी, भोजन करने वाले का भी। लेकिन महावीर जिसे साक्षी कहते हैं, वह तीसरा होश है। वह होश इस बात का है कि न तो मै भोजन हू और न मैं भोजन करने वाला हू। भोजन भोजन है, भोजन करने वाला शरीर है, मैं दोनो से अलग हू। एक ट्रासगल का निर्माण हे, एक त्रिकोण का, एक त्रिभुज का। तीसरे कोण पर मैं हू। इस तीसरे कोण पर, इस तीसरे बिन्दु पर चौबीस घण्टे रहने की कोशिश साक्षीभाव है। कुछ भी हो रहा है, तीन हिस्से सदा मौजूद है और मै तीसरा हू, मै दो नही हू। ज्यादा भोजन कर लेने वाला एक ही कोण देखता है। अगर कही प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध मे थोडी जानकारी बढ गयी तो दूसरा कोण भी देखने लगता है कि मैं करने वाला, ज्यादा न करू। पहले भोजन से एकात्म हो जाता था, अब करने वाले शरीर से एकात्म हो जाता है। लेकिन साक्षी नही होता। साक्षी तो तब होता है, जब दोनो के पार तीसरा हो जाता है। और जब वह देखता है कि यह रहा भोजन, यह रहा शरीर, यह रहा मैं—और मैं सदा अलग हू।

इसलिए महावीर ने कहा है—पृथकत्व। साक्षी भाव का उन्होने प्रयोग नही किया। उन्होंने पृथकत्व शब्द का प्रयोग किया है—अलगपन। इसको महावीर ने कहा है भेद विज्ञान, द साइस आफ डिवीजन। महावीर का अपना शब्द है भेद विज्ञान। द साइस टु डिवाइड। चीजो को अपने-अपने हिस्सो मे तोड देना है। भोजन वहा है, शरीर यहा है, मैं दोनो के पार हू—इतना भेद स्पष्ट हो जाए तो साक्षी जन्मता है।

तो तीन बातें स्मरण रखें—रात नीद के समय स्मरण, प्रतिक्रमण पुनर्जीवन। सुबह पहले विचार की प्रतीक्षा, ताकि अन्तराल दिखाई पडे और अन्तराल मे गेस्टाल्ट बदल जाए। धूल कण न दिखाई पडे, प्रकाश की धारा स्मरण मे आ जाए। और पूरे समय, चौबीस घण्टे, उठते-बैठते, सोते तीसरे बिन्दु पर ध्यान—तीसरे पर खड़े रहना। ये तीन बातें अगर पूरी हो जाए तो महावीर जिसे सामायिक कहते है। वह फलित होती है। तो हम आत्मा मे स्थिर होते है।

यह जो आत्मस्थिरता है यह कोई जड, स्टैगनेंट बात नही। शब्द हमारे पास नही है। शब्द हमारे पास दो है—चलना, ठहर जाना, गति, अगति, डायनेमिक, स्टैगनेट। तीसरा शब्द हमारे पास नही है। लेकिन महावीर जैसे लोग सदा ही जो बोलते हैं वह तीसरे की बात है, द थर्ड। और हमारी भाषा दो तरह के शब्द जानती है, तीसरे तरह के शब्द नही जानती। तो इसलिए महावीर जैसे लोगो के अनुभव

इसलिए बुद्ध के जीवन मे बडी अद्भुत घटना है। जब बुद्ध मरने लगे तो शिष्यो को बहुत दुख, पीडा ··। सारे रोते इकट्ठे हो गए, लाखो लोग इकट्ठे हुए और उन्होंने कहा—अब हमारा क्या होगा ? लेकिन बुद्ध ने कहा—पागलो, मैं तो चालीस साल पहले मर चुका था। वे कहने लगे कि माना कि यह शरीर है, लेकिन इस शरीर से भी हमे प्रेम हो गया। लेकिन बुद्ध ने कहा कि यह शरीर तो चालीस साल पहले विसर्जित हो चुका है।

जापान मे एक फकीर हुआ है लिंची। एक दिन अपने उपदेश मे उसने कहा कि यह बुद्ध से झूठा आदमी जमीन पर कभी नही हुआ। क्योकि जब तक यह बुद्ध नही था, तब तक था, और जिस दिन से बुद्ध हुआ, उस दिन से है ही नही। तो लिंची ने कहा—बुद्ध है, बुद्ध हुए हैं ये सब भाषा की भूलें है। बुद्ध कभी नही हुए थे। निश्चित ही लोग घबरा गए, क्योकि यह फकीर तो बुद्ध का ही था। पीछे बुद्ध की प्रतिमा रखी थी। अभी-अभी इसने उस पर दीप चढाया था। एक आदमी ने खडे होकर पूछा कि ऐसे शब्द तुम बोल रहे हो ? तुम कह रहे हो, बुद्ध कभी हुए नही ? ऐसी अधार्मिक बात ! तो लिंची ने कहा कि जिस दिन से मेरे भीतर काया खो गयी, उस दिन मुझे पता चला। तुम्हारे लिए मैं अभी भी हू, लेकिन जिस दिन से सच मे न हुआ, उस दिन से मैं बिलकुल नही हो गया हू।

यह नही हो जाने का अन्तिम चरण है। वह एक्सप्लोजन है। उसके बाद फिर कुछ भी नही है, या सब कुछ है। या शून्य है, या पूर्ण है।

कल हम आखिरी बारहवें तप की बात करेंगे। बैठें पाच मिनट।

द्वन्द्व नही रह जाता, जहा दो नही रह जाते। जहा अनुभूति एक बनती है और उस अनुभूति को वह किससे व्याख्या करे, क्योकि हमारी सारी भापा यह कहती है कि यह नही। तो किससे व्याख्या करे ? वह ज्यादा-से-ज्यादा इतना ही कह सकता है निषेधात्मक, लेकिन वह निषेधात्मक ठीक नही है। वह कह सकता है, वहा दुख नही, अशाति नही। लेकिन जब हम मतलब समझते है, तो हमारा क्या मतलब होता है ?

अशाति और शाति हमारे लिए द्वन्द्व है, महावीर के लिए द्वन्द्व से मुक्ति है। हमारे लिए शाति का वही मतलब है जहा अशाति नही है। महावीर के लिए शांति का वही मतलब है जहा शाति भी नही, अशाति भी नही। क्योकि जब तक शाति है तब तक थोडी बहुत अशाति मौजूद रहती है। नही तो शाति का पता नही चलता। अगर आप परिपूर्ण स्वस्थ हो जाए तो आपको स्वास्थ्य का पता नही चलेगा। थोडी वहुत वीमारी चाहिए स्वास्थ्य के पता होने को। या आप पूरे वीमार हो जाए, तो भी बीमारी का पता नही चलेगा। क्योकि वीमारी के लिए भी स्वास्थ्य का होना जरूरी है नही तो पता नही चलता।

तो वीमार से वीमार आदमी मे भी स्वास्थ्य होता है, इसलिए पता चलता है। और स्वस्थ से स्वस्थ आदमी मे भी वीमारी होती है इसीलिए स्वास्थ्य का पता चलता है। लेकिन हमारे पास कोई उपाय नही हे। हम वाहर से ही खोजते रहते है। और वाहर सव द्वन्द्व है। लक्षण वाहर से हम पकड़ लेते हैं और भीतर कोई लक्षण नही पकडे जा सकते, क्योकि कोई द्वन्द्व नही है। तो महावीर ने वह जो तीसरे विन्दु पर खड़ा हो जाएगा व्यक्ति ध्यान मे, उसे क्या होगा, इसे समझाने की कोशिश वारहवे तप मे की है। वह कोशिश विल्कुल वाहर से है, वाहर से ही हो सकती है। फिर भी वहुत आतरिक घटना है, इसलिए उस अतर-तप कहा और अंतिम तप रखा हे।

ध्यान के वाद महावीर का तप कायोत्सर्ग है। उसका अर्थ है—जहां काया का उत्सर्ग हो जाता है, जहां शरीर नही बचता, गेस्टाल्ट वदल जाता है पूरा। कायोत्सर्ग का मतलब काया को सताना नही है। कायोत्सर्ग का मतलव ऐसा नहीं है कि हाथ-पैर काट-काट कर चढाते जाना है कायोत्सर्ग का मतलव है ध्यान का परिपूर्ण शिखर पर पहुचता हैं तो गेस्टाल्ट वदल जाता है। काया का उत्सर्ग हो जाता है। काया रह नहीं जाती, उसका कहीं कोई पता नही रहता। निर्वाण या मोक्ष, संसार का खो जाना है, जस्ट डिसएपियरेन्स। आत्म-अनुभव, काया का खो जाना है। आप कहेंगे महावीर तो चालीस वर्ष जिए, वह ध्यान के अनुभव के वाद भी काया थी। वह आपको दिखाई पड रही है। वह आपको दिखाई पड़ रही है, महावीर की अव कोई काया नही है, अव कोई शरीर नहीं है। महावीर का काया-उत्सर्ग हो गया। लेकिन हमे तो दिखाई पड़ रही है।

धम्मो मगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो ।
देवा वि तं नमसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो ।।१।।

धर्म सर्वश्रेष्ठ मगल है। (कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म । जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म मे सदा सलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं ।

अपने स्रोत मे सिकुडती है। लेकिन चेतना सिकुडती है स्रोत मे फिर भी चित्त पकडे रखना चाहता है। जैसे किनारा कोई आपके हाथ से खिसका जाता हो, जैसे नाव कोई आपसे दूर हटी जाती हो। शरीर को हम जोर से पकड रखना चाहते हैं, और शरीर व्यर्थ हो गया, चुक गया, तो तनाव पैदा होता है। जो जा रहा है उसे रोकने की कोशिश से तनाव पैदा होता है। उसी तनाव के कारण मृत्यु मे मूर्च्छा आ जाती है। क्योकि नियम है, एक सीमा तक हम तनाव को सह सकते हैं, एक सीमा के बाहर तनाव बढ जाए तो चित्त मूर्छित हो जाता है, बेहोश हो जाता है।

मृत्यु में इसीलिए हर बार हम बेहोश मरते है। और इसलिए अनेक बार मर जाने के बाद भी हमे याद नही रहता कि हम पीछे भी मर चुके हैं। और इसलिए हर जन्म नया जन्म मालूम होता है। कोई जन्म नया जन्म नही है। सभी जन्मो के पीछे मौत की घटना छिपी है। लेकिन हम इतने बेहोश हो गए होते है कि हमारी स्मृति मे उसका कोई निशान नही छूट जाते। और यही कारण है कि हमे पिछले जन्म की स्मृति भी नही रह जाती, क्योकि मृत्यु की घटना मे हम इतने बेहोश हो जाते है, वही बेहोशी की पर्त हमारे पिछले जन्म की स्मृतियो को हमसे अलग कर देती है। एक दीवार खडी हो जाती है। हमे कुछ भी याद नही रह जाता। फिर हम वही शुरू कर देते है जो हम बार-बार शुरू कर चुके हैं।

ध्यान मे भी यही घटना घटती है, लेकिन शरीर के चुक जाने के कारण नही, मन की आकाक्षा के चुक जाने के कारण, यह फर्क होता है। शरीर तो अभी भी ठीक है लेकिन मन की शरीर को पकडने की जो वासना है वह चुक गयी। अब कोई मन पकडने का न रहा। तो शरीर और चेतना अलग हो जाते है, बीच का सेतु टूट जाता है। जोडने वाला हिस्सा है मन, आकाक्षा, वासना—वह टूट जाती है। जैसे कोई सेतु गिर जाए और नदी के किनारे अलग हो जाएं, ऐसे ही ध्यान में विचार और वासना के गिरते ही चेतना अलग और शरीर अलग हो जाता है। उस क्षण तत्काल हमे लगता है कि मृत्यु घटित हो रही है। और साधक का मन होता है—वापस लौट चलू, यह तो मौत आ गयी। और अगर साधक वापस लौट जाए तो बारहवा चरण घटित नही हो पाता। अगर साधक वापस लौट जाए तो ध्यान भी अपनी पूरी परिणति पर नही पहुच पाता। अगर साधक वापस लौट जाए भयभीत होकर इस बारहवें चरण से, तो सारी साधना व्यर्थ हो जाती है। इसलिए महावीर ने ध्यान के बाद कायोत्सर्ग को अतिम तप कहा है।

जब यह सेतु टूटे तो इसे खडे हुए देखते रहना कि सेतु टूट रहा है। और जब शरीर और चेतना अलग हो जाए ध्यान मे तो भयभीत न होना। अभय से साक्षी बने रहना। एक क्षण की ही बात है। एक क्षण ही अगर कोई ठहर गया कायोत्सर्ग मे, तो फिर तो कोई भय नही रह जाता। फिर तो मृत्यु भी नही रह जाती।

कायोत्सर्ग : शरीर से विदा लेने की क्षमता

अठारहवा प्रवचन दिनाक ४ सितम्बर, १९७१ पर्युषण व्याख्यान-माला, बम्बई

महावीर के साधना सूत्रो मे आज वारहवे और अतिम तप पर बात करेंगे। अतिम तप को महावीर ने कहा है—कायोत्सर्ग—शरीर का छूट जाना। मृत्यु मे तो सभी का शरीर छूट जाता है। शरीर तो छूट जाता है मृत्यु मे, लेकिन मन की आकाक्षा शरीर को पकडे रखने की नही छूटती। इसलिए जिसे हम मृत्यु कहते हैं वह वास्तविक मृत्यु नही है, केवल नए जन्म का सूत्रपात है। मरते क्षण मे भी मन शरीर को पकड रखना चाहता है। मरने की पीडा ही यही है कि जिसे हम नही छोडना चाहते है वह छूट रहा है। बेचैनी यही है कि जिसे हम पकड रखना चाहते हैं उसे नही पकड रख पा रहे है। दुख यही है कि जिसे समझा था कि मैं हू, वही नष्ट हो रहा है।

मृत्यु मे जो घटना सभी को घटती है वही घटना ध्यान मे उनको घटती है जो ग्यारहवें चरण तक की यात्रा कर लिए होते है। ठीक मृत्यु जैसी ही घटना घटती है। कायोत्सर्ग का अर्थ है उस मृत्यु के लिए सहज स्वीकृति का भाव। वह घटेगी। जब ध्यान प्रगाढ होगा तो ठीक मृत्यु जैसी ही घटना घटेगी। लगेगा साधक को कि मिटा, समाप्त हुआ। इस क्षण मे शरीर को पकडने का भाव न उठे, इसी की साधना का नाम कायोत्सर्ग है। ध्यान के क्षण मे जब मृत्यु जैसी प्रतीति होने लगे तब शरीर को पकडने की अभीप्सा, आकाक्षा न उठे, शरीर का छूटता हुआ रूप स्वीकृत हो जाए, सहर्ष, शाति से, अहोभाव से यह शरीर को विदा देने की क्षमता आ जाए, उस तप का नाम कायोत्सर्ग है।

मृत्यु और ध्यान की समानता को समझ लेना जरूरी है तभी कायोत्सर्ग समझ मे आएगा। मृत्यु मे यही होता है कि शरीर आपका चुक गया, अब और जीने, और काम करने मे असमर्थ हुआ; तो आपकी चेतना शरीर को छोडकर हटती है,

निन्यानवे डिग्री से भी पानी लौट सकता है भाप बने बिना। साढे निन्यानवे डिग्री से भी लौट सकता है। सौ डिग्री के पहले जरा-सा फासला रह जाए तो पानी वापस लौट सकता है, गर्मी खो जाएगी थोडी देर मे, पानी फिर ठण्डा हो जाएगा। ध्यान से भी वापस लौटा जा सकता है, जब तक कि कायोत्सर्ग घटित न हो जाए। आपने एक शब्द सुना होगा, भ्रष्ट योगी। पर कभी ख्याल न किया होगा कि भ्रष्ट योगी का क्या अर्थ होता है। शायद आप सोचते होंगे कि कोई भ्रष्ट काम करता है, ऐसा योगी। भ्रष्ट योगी का अर्थ होता है—जो कायोत्सर्ग के पहले ध्यान से वापस लौट आए। ध्यान तक चला गया, लेकिन ध्यान के बाद जो मौत की घबराहट पकडी तो वापस लौट आया। फिर उसका जन्म हो गया। इसे भ्रष्ट योगी कहेगे।

भ्रष्ट योगी का अर्थ यह है कि निन्यानवे डिग्री तक पहुचकर जो वापस लौट आया। सौ डिग्री तक पहुच जाता तो भाप बन जाता, तो रूपातरण हो जाता। तो नया जीवन शुरू हो जाता, तो नयी यात्रा प्रारम्भ हो जाती। ध्यान निन्यानवे डिग्री तक ले जाता है। सौवी डिग्री पर तो आखिरी छलाग पूरी करनी पडती है। वह है शरीर को उत्सर्ग कर देने की छलाग।

लेकिन हम अपनी तरफ से समझें, जहा हम खडे हैं। जहा हम खडे हैं वहां शरीर मालूम पडता है कि मेरा है। ऐसा भी नही, सच मे तो ऐसा मालूम पडता है कि मैं शरीर हू। हमे कभी कोई एहसास नही होता है कि शरीर से अलग भी हमारा कोई होना है। शरीर ही मैं हू। तो शरीर पर पीडा आती है तो मुझ पर पीडा आती है, शरीर को भूख लगती है तो मुझे भूख लगती है, शरीर को थकान होती है तो मैं थक जाता हू। शरीर और मेरे बीच एक तादात्म्य है, एक आइडेंटिटी है, हम जुडे है, सयुक्त है। हम भूल ही गए हैं कि मैं शरीर से पृथक् भी कुछ हू। एक इच भर भी हमारे भीतर ऐसा कोई हिस्सा नही है जिसे मैने शरीर से अन्य जाना हो।

इसलिए शरीर के सारे दुख हमारे दुख हो जाते हैं, शरीर के सारे सताप हमारे सताप हो जाते हैं शरीर का जन्म हमारा जन्म बन जाता है, शरीर का बुढापा हमारा बुढापा बन जाता है, शरीर की मृत्यु हमारी मृत्यु बन जाती है। शरीर पर जो घटित होता है, लगता है वह मुझ पर घटित हो रहा है। इससे बडी कोई भ्राति नही हो सकती। लेकिन हम बाहर से ही देखने के आदी हैं, शरीर से ही पहचानने के आदी हैं।

सुना है मैने कि मुल्ला नसरूद्दीन का पिता अपने जमाने का अच्छा वैद्य था। बूढा हो गया है बाप। तो नसरूद्दीन ने कहा—अपनी कुछ कला मुझे भी सिखा जाओ। कई दफे तो मैं चकित होता हू देखकर कि नाडी तुम बीमार की देखते हो और ऐसी बातें कहते हो जिनका नाडी से कोई सम्बन्ध नही मालूम पडता।

जैसे ही शरीर और चेतना एक क्षण को भी अलग होकर दिखाई पड गए, उसी दिन से मृत्यु का सारा भय समाप्त हो गया। क्योकि अब आप जानते है आप शरीर नही है, आप कोई और हैं। और जो आप है, शरीर नष्ट हो जाए तो भी वह नष्ट नही होता है। यह प्रतीति, यह अमृत का अनुभव, यह मृत्यु के जो अतीत है उस जगत् मे प्रवेश कायोत्सर्ग के बिना नही होता।

लेकिन परम्परा कायोत्सर्ग का कुछ और ही अर्थ करती रही है। परम्परा अर्थ कर रही है कि काया पर दुख आए, पीडाए आए, तो उन्हे सहज भाव से सहना। कोई सताए तो उसे सहज भाव से सहना। बीमारी आए तो उसे सहज भाव से सहना। कष्ट आए, कर्मों के फल आए तो उन्हे सहज भाव से सहना। यह कायोत्सर्ग का अर्थ नही है, क्योकि यह तो काया-क्लेश मे ही समाविष्ट हो जाता है। यह तो बाह्य-तप है। अगर यही कायोत्सर्ग का अर्थ है तो महावीर पुनरुक्ति कर रहे है, क्योकि काया-क्लेश मे, बाह्य-तप मे इसकी बात हो गयी है। महावीर जैसे व्यक्ति पुनरुक्ति नही करते। वे कुछ कहते हैं तभी जब कुछ कहना चाहते हैं। अकारण नही कहते। कायोत्सर्ग का यह अर्थ नही है। कायोत्सर्ग का तो अर्थ है काया को घटा देने की तैयारी, काया को छोड देने की तैयारी, काया से दूर हो जाने की तैयारी, काया से भिन्न हू ऐसा जान लेने की तैयारी, काया मरती हो तो भी देखता रहूगा, ऐसी जान लेने की तैयारी।

बुद्ध अपने भिक्षुओ को मरघट पर भेजते थे कि वे मरघट पर रहे और लोगो की लाशो को देखें—जलते, गडाये जाते, पक्षियो द्वारा चीरे-फाडे जाते, मिट्टी मे मिल जाते। भिक्षु बुद्ध से पूछते कि यह किसलिए? तो बुद्ध कहते—ताकि तुम जान सको कि काया मे क्या-क्या घटित हो सकता है। और जो-जो एक की काया मे घटित होता है वही-वही तुम्हारी काया मे भी घटित होगा। इसे देखकर तुम तैयार हो सको, मृत्यु को देखकर तुम तैयार हो सको कि मृत्यु घटित होगी। लेकिन कभी कोई भिक्षु कहता कि अभी तो मृत्यु को देर है, अभी मैं युवा हू। तो बुद्ध कहते—मैं उस मृत्यु की बात नही करता मै तो उस मृत्यु की तैयारी करवा रहा हू जो ध्यान मे घटित होती है। ध्यान महा-मृत्यु है—मृत्यु ही नही महामृत्यु। क्योकि ध्यान मे अगर मृत्यु घटित हो जाती है तो फिर कोई जन्म नहीं होता। साधारण मृत्यु के बाद जन्म की शृखला जारी रहती है। ध्यान की मृत्यु के बाद जन्म की शृखला नही रहती।

इसलिए महावीर इसे कायोत्सर्ग कहते है—काया का सदा के लिए बिछुडना हो जाता है। फिर दुबारा काया नहीं है, फिर दुबारा काया मे लौटना नहीं है। फिर शरीर मे पुनरागमन नहीं है, फिर संसार मे वापसी नही है। कायोत्सर्ग प्वाइंट आफ नो रिटर्न है, उसके बाद लौटना नही है।

लेकिन कायोत्सर्ग तक से हम लौट सकते है। जैसे पानी को हम गर्म करते हो

किसी मरीज को ठीक न कर पाया। नसरूद्दीन बुढापे मे कहता हुआ सुना गया है कि मेरा बाप मुझे धोखा दे गया। जरूर कोई भीतरी तरकीब रही होगी, वह सिर्फ मुझे बाहर के लक्षण बता दिए।

बाप ने बाहर के लक्षण सिर्फ भीतरी लक्षणो की खोज के लिए कहे थे। और सदा ऐसा होता है। महावीर ने बाहर के लक्षण कहे हैं भीतर की पकड के लिए। परम्परा बाहर के लक्षण पकड लेती है और फिर धीरे-धीरे बाहर के लक्षण ही हाथ मे रह जाते है। और फिर भीतर के सब सूत्र खो जाते हैं। नाडी से कोई मतलब ही नही रह जाता आखिर मे। तो नसरूद्दीन को यह भी पक्का पता नही रहता था कि नाडी अगुलियो के नीचे है भी या नही। वह तो आसपास देखकर निदान कर लेता था। सारी परम्पराए धीरे-धीरे बाह्य हो जाती है और नाडी से उनका हाथ छूट जाता है। कायोत्सर्ग का मतलब ही केवल इतना रह गया कि अपनी काया को जब भी कष्ट आए, तो उसे सह लेना। लेकिन ध्यान रहे, काया अपनी है, यह कायोत्सर्ग की परम्परा मे स्वीकृत है। यह जो झूठी बाह्य परम्परा है वह भी कहती है, अपनी काया पर कोई कष्ट आए तो सह लेना। वह यह भी कहती है कि अपनी काया को उत्सर्ग करने की तैयारी रखना, लेकिन अपनी वह काया है, यह बात नही छूटती।

महावीर का यह मतलब नहीं है कि अपनी काया को उत्सर्ग कर देना। क्योकि महावीर कहते हैं—जो अपनी नही है उसे तुम कैसे उत्सर्ग करोगे? तुम कैसे चढाओगे? अपने को उत्सर्ग किया जा सकता है, अपने को चढाया जा सकता है, लेकिन जो मेरा नही हे उसे मैं कैसे चढाऊगा। महावीर का कायोत्सर्ग से भीतरी अर्थ है कि काया तुम्हारी नही है, ऐसा जानना कायोत्सर्ग है। मैं काया को चढा दूगा, ऐसा भाव कायोत्सर्ग नही है क्योकि तब तो इस उत्सर्ग मे भी मेरे की, ममत्व की धारणा मौजूद है। और जब तक काया मेरी है तब तक मैं चाहे उत्सर्ग करू, चाहे भोग करू, चाहे बचाऊ और चाहे मिटाऊ।

आत्महत्या करने वाला भी काया को मिटा देता हैं, लेकिन वह कायोत्सर्ग नही है। क्योकि वह मानता है कि शरीर मेरा है। इसीलिए मिटाता है। एक शहीद सूली पर चढ जाता है, लेकिन वह कायोत्सर्ग नही है। क्योकि वह मानता है, शरीर मेरा है। एक तपस्वी आपके शरीर को नही सताता, अपने शरीर को सता लेता है, लेकिन मानता है कि शरीर मेरा है। तपस्वी आपके प्रति कठोर न हो, अपने प्रति बहुत कठोर होता है। क्योकि वह मानता है यह शरीर मेरा है। आपको भूखा न मार सके, अपने को भूखा मार सकता है क्योकि मानता है यह शरीर मेरा है। लेकिन जहा तक मेरा है वहा तक महावीर के कायोत्सर्ग की जो आतरिक नाडी है, उस पर आपको हाथ नही हे। महावीर कहते है—यह जानना कि शरीर मेरा नही है—कायोत्सर्ग है—यह जानना मात्र। यह जानना

यह कला थोडी, मुझे भी वता जाओ।

वाप को कोई आशा तो न थी कि नसरूद्दीन यह सीख पाएगा, लेकिन नसरूद्दीन को लेकर अपने मरीजो को देखने गया। एक मरीज को उसने नाडी पर हाथ रख के देखा और फिर कहा कि देखो, केले खाने वद कर दो। उसी से तुम्हे तकलीफ हो रही है। नसरूद्दीन वहुत हैरान हुआ। नाडी से केले की कोई खवर नही मिल सकती है। वाहर निकलते ही उसने वाप से पूछा, वाप ने कहा—तुमने ख्याल नही किया, मरीज को ही नही देखना पडता है, आसपास भी देखना पडता है। खाट के पास नीचे केले के छिलके पडे थे। उससे अन्दाज लगाया।

दूसरी वार नसरूद्दीन गया, वाप ने नाडी पकडी मरीज की और कहा कि देखो, वहुत ज्यादा श्रम मत उठाओ। मालूम होता है पैरो से ज्यादा चलते हो। उसी की थकान है। अव तुम्हारी उम्र इतने चलने लायक नही रही, थोडा कम चलो। नसरूद्दीन हैरान हुआ। चारो तरफ देखा, कही कोई छिलके भी नही है। वाहर आकर पूछा कि हद हो गयी, नाडी से चलता है आदमी ज्यादा। वाप ने कहा—तुमने देखा नही, उसके जूते के तल्ले विल्कुल घिसे हुए थे। उन्ही को देखकर...।

नसरूद्दीन ने कहा—अव अगली वार तीसरे मरीज को मैं ही देखता हू। अगर ऐसे ही पता लगाया जा रहा है तो हम भी कुछ पता लगा लेगे। तीसरे घर पहुचे, वीमार स्त्री का हाथ नसरूद्दीन ने अपने हाथ मे लिया। चारो तरफ नजर डाली, कुछ दिखाई न पडा। खाट के नीचे नजर डाली फिर मुस्कुराया। फिर स्त्री से कहा कि देखो, तुम्हारी वेचैनी का कुल कारण इतना है कि तुम जरा ज्यादा धार्मिक हो गयी हो। वह स्त्री वहुत घवराई। और चर्च जाना थोडा कम करो, वद कर सको तो वहुत अच्छा। वाप भी थोडा हेरान हुआ। लेकिन स्त्री राजी हुई। उसने कहा कि क्षमा करें हद हो गयी कि आप नाडी से पहचान गए। क्षमा करे, यह भूल अव दोवारा न करूगी।

तो वाप और हैरान हुआ। वाहर निकल कर वेटे को पूछा, कि हद्द कर दी तूने। तुम मुझसे आगे निकल गए हो। धर्म! थोडा धर्म मे कम रुचि लो, चर्च जाना कम करो, या वद कर दो तो अच्छा हो, और स्त्री राजी भी हो गयी! वात क्या थी? नसरूद्दीन ने कहा—मैंने चारो तरफ देखा, कही कुछ नजर न आया। खाट के नीचे देखा तो पादरी को छिपा हुआ पाया। इस स्त्री की यही वीमारी है। और देखा आपने कि आपके मरीज तो सुनते रहे, मेरा मरीज एकदम वोला कि क्षमा कर दो, अव ऐसी भूल कभी नही होगी।

लेकिन नसरूद्दीन वैद्य वन न पाया। वाप के मर जाने के वाद नसरूद्दीन दो चार मरीजों के पास भी गया तो मुसीवत मे पडा। जो भी मरीज उससे चिकित्सा करवाए, वे जल्दी ही मर गए। निदान तो उसने वहुत किए, लेकिन कोई निदान

छठवा शेष रह जाता है, जो अतिरिक्त शेष रह जाता है वही मैं हू। फिर क्या शेष रह जाता है ? अगर वायु भी मैं नही हू, अग्नि भी नही हू, आकाश भी नही, जल भी नही, पृथ्वी भी नही, फिर मेरे भीतर शेष क्या रह जाता है ? तो महावीर कहते हैं—सिर्फ जानने की क्षमता शेष रह जाती है, दी कैपेसिटी टु नो। सिर्फ जानना शेष रह जाता है। नोइग शेष रह जाता है।

तो महावीर कहते है—मैं तो सिर्फ जानना हू, जानना मात्र। इस स्थिति को महावीर ने केवल ज्ञान कहा है—जस्ट नोइग, सिर्फ जानना मात्र। मैं सिर्फ ज्ञाता ही रह जाता हू, द्रष्टा ही रह जाता हू, दृष्टि रह जाता हू, ज्ञान रह जाता हू। अस्तित्व का बोध, अवेयरनैस रह जाता हू। और तो सब खो जाता है। कायोत्सर्ग का अर्थ है—जो जिसका है वह उसका है, ऐसा जानना। अनधिकृत मालकियत न करना। लेकिन हम सब अनधिकृत मालकियत किए हुए हैं और जब हम भीतर अनधिकृत मालकियत करते है तो हम बाहर भी करते हैं। जो आदमी अपने शरीर को मानता है कि मेरा है, वह अपने मकान को कैसे नही मानेगा कि मेरा नही है।

पश्चिम मे इस समय एक बहुत कीमती विचारक है—मार्शल मैकलुहान। वह कहता है—मकान हमारे शरीर का ही विस्तार है, एक्सटेंशन आफ अवर बॉडीज। है भी। मकान हमारे शरीर का ही विस्तार है। दूरबीन हमारी आख का ही विस्तार है। बन्दूक हमारे नाखूनो का ही विस्तार है, एक्सटेंशन है बन्दूक। इसलिए जितना वैज्ञानिक युग होता जाता है उतना आपका बडा शरीर होता जाता है। अगर आज से पाच हजार साल पहले किसी आदमी को मारना होता तो बिल्कुल उसकी छाती के पास छुरा लेकर जाना पडता। अब जरूरत नही है। अब एक आदमी को यहा से बैठकर वाशिंगटन मे भी सारे लोगो की हत्या कर देनी हो तो एक मिसाइल, एक बम चलाएगा और सबको नष्ट कर देगा। आपका शरीर अब बहुत बडा है। आप बडे दूर से : अगर मुझे आपको मारना है तो पास आने की जरूरत नही है। पाच सौ फीट की दूरी से बन्दूक की गोली से आपको मार दूगा। लेकिन गोली सिर्फ एक्सटेंशन है।

वैज्ञानिक कहते है—आदमी के नाखून कमजोर है दूसरे जानवरो से, इसीलिए उसने अस्त्र-शस्त्रो का आविष्कार किया, वह सब्स्टीट्यूट है। नही तो आदमी जीत नही सकता जानवरो से। आपके नाखून बहुत कमजोर है जानवरो के मुकाबले मे। आपके दात भी बहुत कमजोर है जानवरो के मुकाबले मे। अगर आप जानवर से टक्कर लें तो आप गए। तो आपको जानवर से टक्कर लेने के लिए सब्स्टीट्यूट खोजना पडेगा। जानवर से ज्यादा मजबूत नाखून बनाने पडेंगे। वे नाखून आपके छुरे, तलवारे, खजर, भाले हैं। उससे ज्यादा मजबूत आपको दात बनाने पडे, जिनसे उसको आप पीस डालें।

वहुत कठिन है ।

इस कठिनाई से वचने के लिए आस्तिको ने एक उपाय निकाला है कि वह कहते है कि शरीर मेरा नही है, लेकिन परमात्मा का है । महावीर के लिए तो वह भी उपाय नही, क्योकि परमात्मा की कोई जगह नही है उनकी धारणा मे। यह वहुत चक्करदार वात है । आस्तिक, तथाकथित आस्तिक कहता है कि शरीर मेरा नही परमात्मा का है, और परमात्मा मेरा है । ऐसे घूम फिर कर सव अपना ही हो जाता है । महावीर के लिए परमात्मा भी नही हे । महावीर की धारणा वहुत अद्भुत है और शायद महावीर के अतिरिक्त किसी व्यक्ति ने कभी प्रतिपादित नही की । महावीर कहते हैं—तुम तुम्हारे हो, शरीर-शरीर का है ।

इसको समझ ले । शरीर परमात्मा का भी नही है, शरीर-शरीर का है । महावीर कहते है—प्रत्येक वस्तु अपनी है, अपने स्वभाव की है, किसी की नही है । मालकियत झूठ है इस जगत् मे । वह परमात्मा की भी मालकियत हो तो झूठ है । ओनरशिप झूठ है । शरीर-शरीर का है । इसको अगर हम विश्लेषण करें तो वात पूरी ख्याल मे आ जाएगी ।

शरीर में आप प्रतिपल श्वास ले रहे है । जो श्वास एक क्षण पहले आपकी थी, एक क्षण वाद वाहर हो गयी, किसी और की हो गयी होगी । जो श्वास अभी आपकी है, आपको पक्का है आपकी है ? क्षण भर पहले आपके पडोसी की थी। और अगर हम श्वास से पूछ सकें कि तू किसकी है, तो श्वास क्या कहेगी ? श्वास कहेगी—मैं मेरी हू । इस मेरे शरीर मे—जिसे हम कहते है मेरा शरीर—इस मेरे शरीर मे मिट्टी के कण है । कल वे जमीन मे थे, कभी वे किसी और के शरीर मे रहे होगे । कभी किसी वृक्ष मे रहे होगे, कभी किसी फल मे रहे होगे । न मालूम कितनी उनकी यात्रा है । अगर हम उन कणो से पूछे कि तुम किसके हो, तो वे कहेगे—हम अपने है । हम यात्रा करते है । तुम सिर्फ स्टेशनस् हो, जिनसे हम गुजरते है । हम वहुत स्टेशनो से गुजरते हैं । जव हम कहते हैं—शरीर मेरा है तो वैसी ही भूल करते है कि आप स्टेशन से उतरें और स्टेशन कहे कि यह आदमी मेरा है । आप कहेगे—तुझसे क्या लेना-देना है, हम वहुत स्टेशन से गुजर गए और गुजरते जाएंगे । स्टेशनें आती हैं और चली जाती है ।

शरीर जिन भूतो से मिल कर वना है, प्रत्येक भूत उसी भूत का है । शरीर जिन पदार्थों से वना है, प्रत्येक पदार्थ उसी पदार्थ का है । मेरे भीतर जो आकाश है वह आकाश का है; मेरे भीतर जो वायु है वह वायु की है; मेरे भीतर जो पृथ्वी है, वह पृथ्वी की है, मेरे भीतर जो अग्नि है वह अग्नि की है, मेरे भीतर जो जल है वह जल का है । यह कायोत्सर्ग है—यह जानना ।

और मेरे भीतर जल न रह जाए, वायु न रह जाए, आकाश न रह जाए, पृथ्वी न रह जाए, अग्नि न रह जाए, तव जो शेष रह जाता है वही मैं हू । तव जो

ध्यान के बाद इस चरण को रखने का प्रयोजन है, क्योंकि ध्यान आपके जानने की क्षमता का अनुभव है।

ध्यान का अर्थ ही है—वह जो मेरे भीतर ज्ञान है, उसको जानना। जितना ही मैं परिचित होता हू काशसनैस से, चेतना से उतना ही मेरा जड पदार्थों के साथ जो सम्बन्ध है वह विच्छिन्न होता जाता है और एक घडी आती है कि भीतर मैं सिर्फ एक ज्ञान की ज्योति रह जाता हू।

लेकिन अभी हमारा जोड दीये से है—मिट्टी के दीये से। उस ज्ञान की ज्योति से नही जो दीये मे जलती है। अभी हम समझते है कि मैं मिट्टी का दीया हू। मिट्टी का दीया फूट जाता है तो हम सोचते है—मैं मर गया। ऐसे ही घर मे अगर मिट्टी का दीया फूट जाए तो हम कहते है—ज्योति नष्ट हो गई। लेकिन ज्योति नष्ट नही होती सिर्फ विराट आकाश मे लीन हो जाती है।

कुछ भी नष्ट तो होता नही इस जगत् में। जिस दिन हमारे शरीर का दीया फूट जाता है, उस दिन भी जो चेतना की ज्योति है, वह फिर अपनी नयी यात्रा पर निकल जाती है। निश्चित ही वह अदृश्य हो जाती हे, क्योंकि उसके दृश्य होने के लिए माध्यम चाहिए। जैसे रेडियो आप अपने घर मे लगाए हुए है, जव आप वन्द कर देते है तव आप सोचते है क्या कि रेडियो मे जो आवाजें आ रही थी, उनका आना वन्द हो गया ? वे अव भी आपके कमरे से गुजर रही हैं, वन्द नही हो गईं। जव आप रेडियो ऑन करते है तभी वे आना शुरू नही हो जाती है। जव आप रेडियो ऑन करते है तव आप उनको पकडना शुरू करते है, वे दृश्य होती है। वे मौजूद है। जव आपका रेडियो वन्द पडा है तव आपके कमरे से उनकी ध्वनिया निकल रही है, लेकिन आपके पास उन्हे पकडने का, दृश्य वनाने का कोई उपाय नही है। रेडियो आप जैसे ही लगा देते है, रेडियो का यन्त्र उन्हें दृश्य कर देता है। श्रवण मे वे आपके पकड मे आ जाते है।

जैसे ही किसी व्यक्ति का शरीर छूटता है तो चेतना हमारी पकड के वाहर हो जाती हैं। लेकिन नष्ट नही हो जाती। अगर हम फिर से उसे शरीर दे सकें तो वह फिर प्रगट हो सकती है। इसलिए इसमे कोई हैरानी की वात नही है कि वैज्ञानिक आज नही कल मरे हुए आदमी को भी पुनरुज्जीवित कर सकेंगे। इसलिए नही कि उन्होने आत्मा को वनाने की कला पा ली है, वल्कि सिर्फ इसलिए कि वे रेडियो को सुधारने की तरकीव सीख गए है। इसलिए नही कि उन्होने आदमी की आत्मा को पकड लिया, वल्कि इसलिए कि उन्होने जो यन्त्र विगड गया था उसे फिर इस योग्य वना दिया कि आत्मा उससे प्रगट हो सके।

इसमे वहुत कठिनाई नही मालूम होती, यह जल्द ही सम्भव हो जाएगा। लेकिन जैसे-जैसे ये चीजे सम्भव होती जाती है, वैसे-वैसे हमारा काया का मोह वढता चला जाता है। अगर आपको मरने से भी वचाया जा सकता है तव तो

आदमी ने जो भी विकास किया है, जिसे हम आज प्रगति कहते है, वह उसके शरीर का विस्तार है। इसलिए जितना वैज्ञानिक युग सघन होता जाता है, उतना आत्मभाव कम होता जाता है। क्योकि वडा शरीर हमारे पास है जिससे हम अपने को एक कर लेते है। आपका मकान, आपके मकान की दीवारें आपके शरीर का हिस्सा है। आपकी कार आपके वढे हुए पैर है। आपका हवाई जहाज आपके वढे हुए पैर हैं। आपको पता हो या न पता हो, आपका रेडियो आपका वढा हुआ कान है। आपका टेलिविजन आपकी वढी हुई आख है। तो आज हमारे पास जितना वडा शरीर है। उतना महावीर के वक्त मे किसी के पास नही था। इसलिए आज हमारी मुसीवत भी ज्यादा है। तो जो आदमी अपने शरीर को अपना मानता है, वह अपने मकान को भी अपना मानेगा। दुख वढ जाएगे। जितना वडा शरीर होगा हमारा, उतने हमारे दुख वढ जाएगे क्योकि उतनी मुसीवतें वढ जाएगी।

कभी आपने ख्याल किया है, आपके कार को खरोच लग जाए तो करीब-करीब आपकी चमडी को लग जाती है। शायद एक दफे चमडी पर भी लग जाए तो उतनी तकलीफ नही होती जितनी कार को लग जाने से होती है। कार आपकी चमकदार चमडी वन गई है। वह आपका आवरण है, आपके वाहर। शरीर, महावीर कहते है इसकी जरा-सी भी मालकियत अगर हुई तो मालकियत वढती जाएगी। और मालकियत का कोई अन्त नही है। आज नही कल चाद पर झगडा खडा होने वाला है कि वह किसका है। अभी तो पहुचे है हम इसलिए कोई दिक्कत नही है। लेकिन आज नही कल झगडा खडा होने वाला है कि चाद किसका है? अगर रूस और अमरीका मे इतना सघर्ष था चाद पर पहले पहुचने के लिए तो वह सिर्फ वैज्ञानिक प्रतियोगिता ही नही थी; उसमे गहरी मालकियत है। पहला झडा अमरीका का गड गया है वहा पर। आज नही कल किसी दिन अतर्राष्ट्रीय अदालत मे यह मुकदमा होगा ही कि चाद किसका है। पहले कौन मालिक वना? इसलिए रूस के वैज्ञानिक चाद की चिंता कम कर रहे है और मगल पर पहुचने की कोशिश मे लग गए है। क्योकि चाद पर किसी भी दिन झगड़ा खडा होने ही वाला है, वह मालकियत अव उनकी है नही।

इस मालकियत का अन्त क्या है? इसका प्रारम्भ कहा से होता है? इसका प्रारम्भ होता है शरीर के पास हम जव मालकियत खडी करते है, तभी विस्तार शुरू हो जाता है। विस्तार का कोई अन्त नही है। और जितना विस्तार होता है उतने हमारे दुख वढ जाते है क्योकि महावीर कहते है—आनन्द को वही उपलब्ध होता है जो मालिक ही नही है। जो अपने शरीर का भी मालिक नही है। जो मालकियत करता ही नही। कायोत्सर्ग का अर्थ है—मैं उतने पर ही हू, जितने पर मेरी जानने की क्षमता का फैलाव है—वही मैं हू, वस जानने की क्षमता मैं हू।

मुल्ला ने कहा कि तुम समझ नही पा रहे हो। कठिनाई तो होगी, आई विल मिस हर व्हेरी मच, मैं पत्नी की बहुत ज्यादा कमी अनुभव करूगा उसके जाने से। मित्र ने कहा—मैं तो समझता था कि तुम शराव छोड दोगे और कठिनाई अनुभव करोगे। नसरूद्दीन ने कहा—मैंने बहुत सोचा, दो मे से कुछ एक ही हो सकता है—या तो शराव छोड के मैं कठिनाई अनुभव करू, या पत्नी को छोडकर कठिनाई अनुभव करू। फिर मैंने तय किया कि पत्नी को छोडकर ही कठिनाई अनुभव करना ठीक है, क्योकि पत्नी को छोडकर कठिनाई को शराव मे भुलाया जा सकता है, लेकिन शराव छोडकर पत्नी के साथ कुछ भुलावा नही, और शराव की ही याद आती है। तो दो मे से कुछ एक तय करना ही है।

और एक घटना उसके जीवन मे है कि अतत एक वार पत्नी उसे छोडकर ही चली गयी। मुल्ला शराव सामने लिए है, अपने घर मे बैठा है, अकेला है। एक मित्र आया। न तो शराव पीता है, ढालकर गिलास मे रखी है। बैठा। मित्र ने कहा—क्या पत्नी के चले जाने का दुख भुलाने की कोशिश कर रहे हो? मुल्ला ने कहा—मैं वडी परेशानी मे हू। दुख ही न वचा, भुलाऊं क्या! इसलिए शराव सामने रखे बैठा हू, पियू भी तो क्यो! दुख ही न वचा तो भूलाऊ क्या, यही परेशानी मे हू।

विकल्प हैं, आल्टरनेटिव्स हैं। जिंदगी मे प्रतिपल, प्रति कदम विकल्प हैं। क्योकि जिन्दगी वन्द है। हमने एक विकल्प चुना हुआ है—शरीर मैं हूं, तो आत्मा को भूलना ही पडेगा। अगर आत्मा को स्मरण करना हो तो शरीर मैं हू, यह विकल्प तोडना जरूरी है। और तोडने मे जरा भी कठिनाई नही है, सिर्फ स्मृति को गहरा करने की वात है। आप वही हो जाते हैं जो आप मानते हैं। वुद्ध ने कहा है—विचार ही वस्तुए वन जाते हैं। विचार ही सघन होकर वस्तुए वन जाते है। शायद आपको कई वार ऐसा अनुभव हुआ हो कि जरा से विचार के परिवर्तन से आपके भीतर सव परिवर्तित हो जाता है।

अमरीका की एक वहुत वडी अभिनेत्री थी ग्रेटा गारवो। उसने अपने जीवन सस्मरणो मे लिखा है कि एक छोटे से विचार ने मेरे सारे तादात्म्य को, मेरी इमेज को तोड दिया। ग्रेटा गारवो एक छोटे से नाईवाडे मे, सैलून मे, लोगो की दाढी, पर सावुन लगाने का काम ही करती थी—जव तक वह वाईस साल की हो गयी तव तक। उसे पता ही नही था कि वह कुछ और भी हो सकती है और यह तो वह सोच भी नही सकती थी कि अमरीका कि श्रेष्ठतम अभिनेत्री हो सकती है। और बाईस साल की उम्र तक जिस लडकी को अपने सौंदर्य का पता न चला हो, अव माना जा सकता है, कभी पता न चलेगा।

उसने अपनी आत्मकथा मे लिखा है। लेकिन एक दिन क्राति घटित हो गयी। एक आदमी आया और मैं उसकी दाढी पर सावुन लगा रही थी। उसे दो-चार

कि उनके कबीलो मे स्त्रियो को कभी दर्द हुआ ही नही। जब दर्द होता है पति को ही होता है, और डाक्टरो ने परीक्षा की और पाया कि वह काल्पनिक नही है, दर्द पेट मे हो रहा है। सारी अतडिया सिकुडी जा रही है। जैसा पत्नी के पेट मे होता है बच्चे के पैदा होते वक्त, वैसा पति को हो रहा है।

ये सब सम्मोहन है, जाति का सम्मोहन। जाति हजारो साल से ऐसा मानती रही, वही हो रहा है। वही हो रहा है। जो हम मानते है, वही हो जाता है। पति को दर्द हो सकता है अगर जाति की यह धारणा हो। इसमे कोई अडचन नही है। क्योकि हम जीते सम्मोहन मे हैं। हम जो मानकर जीते है वही सक्रिय हो जाता है। और हमारी चेतना की मानने की क्षमता अनन्त है। यही हमारी स्वतन्त्रता है, यही मनुष्य की गरिमा है। यही उसका गौरव है कि उसकी चेतना की क्षमता इतनी है कि वह जो मान ले वही घटित हो जाता है। अगर आपने मान लिया है कि आप शरीर है तो आप शरीर हो गए, और यह सिर्फ आपकी मान्यता है, जस्ट ए बिलीफ। यह सिर्फ आपका भरोसा है। यह सिर्फ आपका विश्वास है।

क्या आपको पता है कि ऐसे कबीले है जिनमे स्त्रिया ताकतवर हैं और पुरुष कमजोर है! क्योकि वे कबीले सदा से ऐसा मानते रहे है कि स्त्री ताकतवर है, पुरुष कमजोर है। तो जैसे अगर कोई आदमी कमजोरी दिखाए तो आप कहते हैं—कैसा नामर्द! ऐसा उस कबीले मे कोई नही कह सकता। क्योकि मर्द का लक्षण ही यह है कि वह कमजोरी दिखाए। उस कबीले मे अगर स्त्रिया कभी कमजोरी दिखाती हैं तो लोग कहते है कि कैसा मर्दों जैसा व्यवहार कर रही है। कमजोरी दिखाते है, तो मान्यता है।

आदमी मान्यता से जीने वाला प्राणी है। और हमारी मान्यता गहरी है कि हम शरीर हैं। यह इतनी गहरी है कि नीद मे भी हमे ख्याल रहता है कि हम शरीर है। बेहोशी मे भी हमे पता रहता है कि हम शरीर है। इस मान्यता को तोडना कायोत्सर्ग की साधना का पहला चरण है। जो लोग ध्यान तक आए है उन्हे तो कठिनाई नही पडेगी, लेकिन आपको तो बिना ध्यान के समझना पड रहा है, इसलिए थोडी कठिनाई पड सकती है। लेकिन फिर भी पहला सूत्र यह है कि मैं शरीर नही हू। इस सूत्र को अगर गहरा कर लें तो अद्भुत परिणाम होने शुरू हो जाते है।

१९०८ मे काशी के नरेश के अपेंडिक्स का ऑपरेशन हुआ। और नरेश ने कह दिया कि मै किसी तरह की बेहोशी की दवा नही लूगा। क्योकि मैं होश की साधना कर रहा हू, इसलिए मैं कोई बेहोशी की दवा नही ले सकता हू। ऑपरेशन जरूरी था, उसके बिना नरेश बच नही सकता था। चिकित्सक मुश्किल मे थे। बिना बेहोशी के इतना बडा ऑपरेशन करना उचित न था। लेकिन किसी भी हालत मे मौत होनी थी। नरेश मरेगा अगर ऑपरेशन न होगा इसलिए एक जोखिम

पैसे दाढी पर साबुन लगाने के मिल जाते थे। दिन भर वह लोगो की दाढ पर साबुन लगाती थी। उस आदमी ने आईने मे देखकर कहा—कितनी सुन्दर! और ग्रेटा गारबो ने लिखा है कि मैंने पहली दफा जिन्दगी मे किसी को कहते सुना—कितनी सुन्दर! नही तो किसी ने कहा ही नही था, नाईबाडे मे दाढी पर साबुन लगाने वाली लडकी, कौन फिक्र करता है!

और ग्रेटा गारबो ने लिखा है कि पहली दफा आईने मे गौर से देखा, और मेरे भीतर सब बदल गया। मैने उस आदमी से कहा कि तुम्हारा धन्यवाद, क्योकि मुझे मेरे सौदर्य का कोई पता ही न था। तुमने स्मृति दिला दी। उस आदमी ने दुबारा आईने मे देखा और ग्रेटा गारबो की तरफ देखा और कहा कि लेकिन, क्या हुआ! जब मैंने कहा तो तू इतनी सुन्दर न थी, मैंने तो सिर्फ एक औपचारिक शिष्टाचार के वश कहा, लेकिन अब मै देखता हू तू सुन्दर हो गयी। वह आदमी एक फिल्म डायरेक्टर था और ग्रेटा गारबो को अपने साथ लेकर गया। ग्रेटा गारबो श्रेष्ठतम सुन्दरियो मे एक बन गयी।

हो सकता था जिन्दगी भर दाढी पर साबुन लगाने का काम करती रहती। एक छोटा-सा विचार, इमेज, वह जो प्रतिमा थी उसकी अपने मन मे, वह बदल गयी। असली सवाल आपके भीतर आपके तादात्म्य और आपकी प्रतिमा के बदलने का है। आप जन्मो-जन्मो से मानकर बैठे हैं कि शरीर है। बचपन से आपको सिखाया जा रहा है कि आप शरीर है। सब तरफ से आपको बहुत भरोसा और विश्वास दिलाया जा रहा है कि आप शरीर है। यह आटोहिप्नोसिस है, यह सिर्फ सम्मोहन है। आप कहेगे कि सम्मोहन से कही इतनी बडी घटना घट सकती है? तो मैं आपको एक-दो घटनाए कहू तो शायद ख्याल मे आ जाए।

अमेजान मे कबीला है आदिवासियो का। जो बहुत अनूठा है। जैसा मैंने आपसे पीछे कहा है कि फ्रेच डा० लोरेंजो स्त्रियो को बिना दर्द के प्रसव करवा देता है सिर्फ धारणा बदलने से, सिर्फ यह कहने से कि दर्द तुम्हारा पैदा किया हुआ है। तुम शिथिल हो जाओ और बच्चा पैदा हो जाएगा बिना पीडा के। हम यह मान भी सकते हैं कि शायद समझाने-बुझाने से स्त्री के मन पर ऐसा भाव पड जाता होगा, लेकिन दर्द तो होता ही है। लेकिन क्या आपको कभी कल्पना हो सकती है कि पत्नी को जब बच्चा पैदा होता हो तो पति के पेट मे भी दर्द होता है? अमेजान मे होता है और अमेजान जब पत्नी को बच्चा होता है तो एक कोठरी मे पत्नी बन्द होती है, दूसरी कोठरी मे पति बन्द होता है। पत्नी नही रोती-चिल्लाती, पति रोता-चिल्लाता है! पत्नि को बच्चा होता है, पति को दर्द होता है!

यह हजारो साल से हो रहा है। और जब पहली दफा अमेजान के कबीले मे दूसरे जाति के लोग पहुचे तो वे चकित हो गए कि यह क्या हो रहा है। यह क्या हो रहा है! यह तो भरोसे की बात ही मालूम नही पडती। लेकिन पता चला

जब भी सूर्य डूबता है या उगता है तब आपके भीतर भी रूपांतरण होते हैं। अब तो वैज्ञानिक इस पर बहुत ज्यादा राजी हो गए हैं कि सुबह जब सूर्य उगता है तब सारी प्रकृति में ही रूपांतरण नहीं होता, आपके शरीर में भी.. क्योंकि आपका शरीर प्रकृति का एक हिस्सा है। तब आकाश ही नहीं बदलता; आपके भीतर का आकाश भी बदलता है। तब पक्षी ही गीत नहीं गाते, तब पृथ्वी ही प्रफुल्लित नहीं हो जाती, तब वृक्ष ही फूल नहीं खिलाते, आपके भीतर वह जो मिट्टी है वह भी प्रफुल्लित हो जाती है। क्योंकि वह उस मिट्टी का हिस्सा है, वह कोई अलग चीज नहीं है। तब सागर में ही आन्दोलन, फर्क नहीं पड़ते; आपके भीतर भी जो जल है, उसमें भी फर्क पड़ते हैं।

और आप जानकर हैरान होंगे कि आपके भीतर जो जल है वह ठीक वैसा है जैसा सागर मे है। उसमे नमक की उतनी ही मात्रा है जितनी सागर के जल मे है। और आपके शरीर मे थोडा बहुत जल नही है कोई पिच्चासी प्रतिशत पानी है। वैज्ञानिक अब कहते है—जब सागर के पास आपको अच्छा लगता है तो अच्छा लगने का कारण आपके भीतर पिच्चासी प्रतिशत सागर का होना है। और वह जो पिच्चासी प्रतिशत सागर है आपके भीतर, वह बाहर के विराट सागर से आन्दोलित हो जाता है। एक हार्मनी, एक रिजोनेंस, एक प्रतिध्वनि उसमे होनी शुरू हो जाती है।

जब आपको जगल मे जाकर हरियाली को देखकर बहुत अच्छा लगता है, तो उसका कारण आप नही हैं, आपके शरीर का कण-कण जगल की हरियाली रह चुका है। वह रेजोनेंट होता है। वह हरे वृक्ष के नीचे जाकर कपित होने लगता है। वह उससे सम्बन्धित है, वह उसका हिस्सा है। इसलिए प्रकृति के पास जाकर आपको जितना अच्छा लगता है, उतनी आदमी की बनायी हुई चीजो के पास जाकर आपको अच्छा नही लगता। क्योकि वहा कोई रिजोनेंस पैदा नही होता। बम्बई की सीमेंट की सडक पर उतना अच्छा नही लग सकता, जितना सोधी मिट्टी की गध आ रही हो और आप मिट्टी पर चल रहे हो और आपके पैर धूल को छू रहे हो। तब आपके शरीर और मिट्टी के बीच एक सगीत प्रवाहित होना शुरू हो जाता है।

जब सुबह सूरज निकलता है तो आपके भीतर भी बहुत कुछ घटित होता है, सक्रमण की वेला है। उसको भारत के लोगो ने सध्या कहा है। सध्या का अर्थ होता है—द पीरियड आफ ट्राजीशन, बदलाहट का वक्त। बदलाहट के वक्त मे आपके भीतर आपकी जो व्यवस्थित धारणाए है उनको बदलना आसान है। बदलाहट के वक्त मे व्यवस्थित धारणाओ को बदलना आसान है क्योकि सब अराजक हो जाता है। भीतर सब बदलाहट हो गयी होती है, सब अस्त-व्यस्त हो गया होता है। इसलिए हमने सध्या को स्मरण का क्षण बनाया है।

उठाना ठीक है कि होश मे ही ऑपरेशन किया जाए। नरेश ने कहा कि सिर्फ मुझे आज्ञा दी जाए कि जब आप ऑपरेशन करें, तब मैं गीता का पाठ करता रहू। नरेश गीता का पाठ करता रहा। बडा ऑपरेशन था, ऑपरेशन पूरा हो गया। नरेश हिला भी नही। दर्द का तो उसके चेहरे पर कोई पता न चला।

जिन छ डाक्टरो ने वह ऑपरेशन किया वे चकित हो गए। उन्होने अपनी रिपोर्ट मे लिखा है हम हैरान हो गए। और हमने नरेश से पूछा कि हुआ क्या ? तुम्हे दर्द पता नही चला। नरेश ने कहा कि जब मैं गीता पढता हू और जब उसमे मैं पढता हू—न हन्यते हन्यमाने शरीरे ''शरीर के मरने से तू नही मरता है। नैन छिदन्ति शस्त्राणि'''जब शस्त्र तुझे छेद दिए जाए तो तू नही छिदता। तब मेरे भीतर ऐसा भाव जग जाता है कि मैं शरीर नही हू। बस इतना काफी है। जब मैं गीता नही पढ रहा होता हू, तब मुझे शक पैदा होने लगता है। वह मेरी मान्यता कि मैं शरीर हू, पीछे से लौटने लगती है। लेकिन जब मैं गीता पढता होता हू तब मुझे पक्का ही भरोसा हो जाता है कि मैं शरीर नही हू। उस वक्त तुम मुझे काट डालो, पीट डालो, मुझे पता भी नही चलेगा। तुमने क्या किया है, मुझे पता नही चला। क्योकि मैं उस भाव मे डूबा था, जहा मैं जानता हू कि शरीर छेद डाला जाए तो मै नही छिदता, शरीर जला डाला जाए तो मैं नही जलता।

आपके भीतर भी भाव की स्थितिया है। आपका मन कोई एक फिक्स्ड, एक थिर चीज नही है। उसमे फ्लेक्चुएशस है, उसमे नीचे ऊपर ज्योति होती रहती है। किसी क्षण मे आप बहुत ज्यादा शरीर होते है, किसी क्षण मे बहुत कम शरीर होते हैं। आप चौबीस घण्टे आपके मन की भावदशा एक नही रहती। जब आप किसी एक सुन्दर स्त्री को या सुन्दर पुरुष को देखकर उसके पीछे चलने लगते है तो आप बहुत ज्यादा शरीर हो जाते हैं। तब आपका फ्लेक्चुएशन भारी होता है। आप बिल्कुल नीचे उतर आते है, 'जहा मैं शरीर हू'।

लेकिन जब आप मरघट पर किसी की लाश जलते देखते है तब आपका फ्लेक्चुएशन बदल जाता है। अचानक मन के किसी कोने मे शरीर को जलते देखकर शरीर की प्रतिमा खण्डित होती है टूटती है। उन क्षणो को पकडना जरूरी है, जब आप बहुत कम शरीर होते है। उन क्षणो मे यह स्मरण करना बहुत कीमती है कि मैं शरीर नही हू। क्योकि जब आप बहुत ज्यादा शरीर होते है तब यह स्मरण करना बहुत काम नही करेगा, क्योकि पर्त इतनी मोटी होती हे कि आपके भीतर प्रवेश नही कर पाएगी। यह आपको ही जाचना पडेगा कि किन क्षणो मे आप सबसे कम शरीर होते है—यद्यपि कुछ निश्चित क्षण है जिनमे सभी कम शरीर होते है। वह क्षण आपको कहू तो वह कायोत्सर्ग मे आपके लिए उपयोगी होगे।

हू, आप नही सोते हैं, आप शायद फिल्म की जो कहानी देख आए हैं, उसको दोहराते हुए सोते हैं। उस क्षण को भी आप दोहरा रहे हैं वह आपके भीतर गहरा चला जायेगा। तो अगर आप गलत दोहरा रहे है तो आप आत्महत्या कर रहे हैं। आपको पता नही कि आप क्या रहे हैं।

हिप्नोपीडिया मे रूस मे आज कोई लाखो विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। रेडियो स्टेशन से ठीक वक्त पर उन सबको सूचना मिलती है कि वे दस बजे सो जाए। जैसे ही वे दस बजे सो जाते हैं, दस बजकर पन्द्रह मिनट पर उनके कान के पास तकिये में लगा हुआ यन्त्र उन्हे सूचना देना शुरू कर देता है। जो भी उन्हे सिखाना है—अगर उन्हे फ्रेंच भाषा सीखनी है तो फ्रेंच भाषा की सूचनाए शुरू हो जाती हैं। और वैज्ञानिक चकित हुए हैं कि जागने मे हम जो चीज तीन साल मे सिखा सकते है वह सोने मे तीन सप्ताह मे सिखा सकते हैं।

और बहुत जल्द दुनिया मे क्रान्ति घटित हो जाएगी और बच्चे स्कूल मे दिन मे न पढकर रात मे ही जाकर सो जाया करेंगे। दिन भर खेल सकते है, एक अर्थ मे अच्छा होगा क्योकि बच्चो का खेल छिन जाने से भारी नुकसान हुए हैं। वे उनको वापस मिल जाएगे। या रात आपके घर मे भी वे सो सकते है, स्कूल मे जाने की कोई जरूरत न होगी। उनको वहा भी शिक्षा दी जा सकती है, वह कभी-कभी परीक्षा देने जा सकते हैं। अभी तक नीद मे परीक्षा लेने का कोई उपाय नही हैं, परीक्षा जागने मे लेनी पडेगी शायद। लेकिन नीद के क्षण बहुत ज्यादा सूक्ष्म रूप से ग्राहक और रिसेप्टिव है, इस बात को वैज्ञानिको ने स्वीकार कर लिया है।

इसमे भी सर्वाधिक ग्राहक क्षण वह है, जब आप जागने से नीद मे बदलते है। ठीक इसी तरह सुबह जब आप नीद से जागने मे बदलते हे तब फिर एक ग्राहक क्षण आता है। उस क्षण भी आप स्मरण करते हुए उठें। जब सुबह नीद खुले तब आप स्मरण—पहला स्मरण यह करें कि मैं शरीर नही हू। आख बाद मे खोलें। कुछ और बाद मे सोचे। जैसे ही पता चले कि नीद टूट गयी, पहला स्मरण कि मैं शरीर नही हू। और ध्यान रहे, अगर आप रात आखिरी स्मरण यही किए हैं कि मैं शरीर नही हू, तो सुबह अपने-आप यह पहला स्मरण बन जाएगा कि मैं शरीर नही हू।

क्योकि चित्त का जो लोग अध्ययन करते है वे कहते है—रात का आखिरी विचार सुबह का पहला विचार होता है। आप अपनी जाच करेंगे तो आपको पक्का पता चल जाएगा कि रात का आखिरी विचार सुबह का पहला विचार होता है। क्योकि जहा से आप विचार को छोडकर सो जाते है, विचार वही प्रतीक्षा करता है। सुबह जब आप जागते हैं वह फिर आप पर सवारी कर लेता है। जिस विचार को आप रात छोडकर सो गए हैं वह सुबह आपका पहला

सध्या—प्रार्थना, भजन, धुन, स्मरण, ध्यान का क्षण है। उस क्षण मे आसानी से आप स्मरण कर सकते है। सुबह और साझ कीमती वक्त है। रात्री बारह बजे, जब रात्री पूरी तरह सघन हो जाती है और सूर्य हमसे सर्वाधिक दूर होता है, तब भी एक बहुत उपयोगी क्षण है। तान्त्रिको ने उसका बहुत उपयोग किया है। महावीर रात-रात भर जाग कर खडे रहे। महावीर ने उसका बहुत उपयोग किया। आधी रात जब सूरज आपसे सर्वाधिक दूर होता है तब भी आपकी स्थिति बहुत अनूठी होती है। आपके भीतर सब शात हो गया होता है, जैसे प्रकृति मे सब शात हो गया होता है। वृक्ष झुक कर सो गए होते है, जमीन भी सो गयी होती है—सब सो गया होता है, आपके शरीर मे भी सब सो गया होता है। इस सोए हुए क्षण का भी आप उपयोग कर सकते हैं। शरीर जिद्द नही करेगा, आपके विरोध मे, राजी हो जाएगा। जैसे आप कहेगे—मै शरीर नही हूं तो शरीर नही कहेगा कि हू। शरीर सोया हुआ है। इस क्षण मे आप कहेगे कि मैं शरीर नही हूं तो शरीर कोई रेसिस्टेंस, कोई प्रतिरोध खडा नही करेगा। इसलिए आधी रात का क्षण कीमती रहा है।

या फिर आपके—जब आप रात सोते है—जागने से जब आप सोने मे जाते है, तब आपके भीतर गियर बदलता है। आपने कभी ख्याल किया है कार मे गियर बदलते हुए ? जब आप एक गियर से दूसरे गियर मे गाडी को डालते हैं तो बीच मे न्यूट्रल से गुजरते है, उस जगह से गुजरते है जहा कोई गियर नही होता है, क्योकि उसके बिना गुजरे आप दूसरे गियर मे गाडी को डाल नही सकते।

तो जब रात आप सोते हे, और जागने से नीद मे जाते है तो आपकी चेतना का पूरा गियर बदलता है और एक क्षण को आप न्यूट्रल मे, तटस्थ गियर मे होते हैं। जहा न आप शरीर होते है, न आत्मा। जहा आपकी कोई मान्यता काम नही करती। उस क्षण मे आप जो भी मान्यता दोहरा लेगे वह आप मे गहरे प्रवेश कर जाएगी। इसलिए रात सोते वक्त यह दोहराते हुए सोना कि मै शरीर नही हू, मैं शरीर नही हू, मैं शरीर नही हू। आप दोहराते रहे, आपको पता न चले कि कब नीद आ गयी। आपका दोहराना तभी बद हो जब अपने से बद हो जाए। तो शायद उस क्षण के साथ सम्बन्ध बैठ जाए, और उस क्षण मे, और वह क्षण बहुत छोटा है—उस क्षण मे अगर यह भाव प्रवेश कर जाए कि मै शरीर नही हू, जब आप चेतना रूपान्तरित कर रहे है तो आपके गहरे अचेतन मे चला जाएगा।

अभी रूस मे उन्होने एक शिक्षा की नयी पद्धति—हिप्नोपीडिया, नीद मे शिक्षा देना, शुरू की। उसमे वे इस बात का प्रयोग कर रहे हैं। इसलिए बहुत पुराने दिनो से लोग प्रभु-स्मरण करते हुए, आत्म-स्मरण करते हुए सोते है। मैं समझता

पता ही नही चलेगा। तो अक्सर लोग सम्भोग के वाद चुपचाप सो जाएगे। सोने के सिवाय उन्हे कुछ नही सूझेगा। लेकिन सम्भोग के वाद का क्षण वहुत कीमती हो सकता है। लेकिन हमे तो ख्याल भी नही रहता है कि हम भूल करते है, अपराध करते है।

मैंने सुना है कि वेटिकन के पोप ने अपने एक वक्तव्य मे कहा कि ईसाईयत मे एक सौ तैंतालीस पाप है—निंदित पाप। ऐसा माना है। हजारो पत्र वेटिकन के पोप के पास पहुचे कि हमे पता ही नही था कि इतने पाप है, कृपा करके पूरी सूची भेजे। वेटिकन का पोप वडा हैरान हुआ। इतने लोग क्यो उत्सुक हैं सूची के लिए? मुल्ला नसरूद्दीन ने भी उसको पत्र लिखा। उसने सच्ची वात लिख दी। उसने लिखा कि जव से तुम्हारा वक्तव्य पढा, तव से मुझे ऐसा लग रहा है कि कितना हम चूकते रहे। इतने पाप हमने किए ही नही। दो-चार पाप करके ही अपनी जिन्दगी गुजार दी। जल्दी से भेजो, जिन्दगी विल्कुल अर्थहीन मालूम पड रही है, जव से यह सुना कि एक सौ तैंतालीस पाप है। कितना हम मिस कर गए, कितना हम चूक गए, और जिन्दगी थोडी वची है।

आदमी का जो मन है, वह ऐसा ही है। आपको खबर लगे कि एक सौ तैंतालीस पाप है तो आप भी घर जाकर सोचेंगे, गिनती करेंगे। कितने दो-चार ही पाच गिनती मे आते है। वहुत वडे पापी हुए तो दस उगलिया काफी पडेंगी। एक सौ तैंतालीस! चूक गए, जिन्दगी वेकार गई खो गया मौका। इतने हो सकते थे और नही किए।

मुल्ला जिस दिन मर रहा था, पुरोहित ने उससे कहा कि अब क्षमा माग ले परमात्मा से, पश्चात्ताप कर। मुल्ला ने कहा—क्या खाक पश्चात्ताप करू! मैं पश्चात्ताप यह कर रहा हू कि जो पाप मैंने नही किए, कर ही लिए होते तो अच्छा था। क्योकि जव माफी ही मागनी थी तो एक के लिए मागी कि दस के लिए मागी, क्या फर्क पडता है! पर तुम कह रहे हो परमात्मा दयालु है। अगर वह दयालु है तो एक भी माफ कर देता, दस भी माफ कर देता। हम नाहक परेशान हुए। माफी मागनी ही पडेगी। वह दयालु भी है, निश्चित दयालु है। हम नाहक चूके। पूरे ही कर लेते। तो मैं पछता रहा हू—मुल्ला ने कहा—जरूर पछता रहा हू, लेकिन उन पापो के लिए, जो मैंने नही किए, उन पापो के लिए नही, जो मैंने किए।

मरते वक्त आदमी पछताता है उन पापो के लिए जो उसने नही किए। लेकिन किसी भी पाप को करने के वाद का जो क्षण है वह वडा उपयोगी है। अगर आपने क्रोध किया है, तो क्रोध के वाद का जो क्षण है उसका उपयोग करें कायोत्सर्ग के लिए। उस वक्त आसान होगा आपको मानना कि मैं आत्मा हू। उस क्षण शरीर से दूर हटना आसान होगा। अगर शराव पी ली है और सुवह

विचार बनेगा। अब अक्सर आप क्रोध, काम, लोभ के किसी विचार को रात छोडकर सो जाते है, सुबह से वह फिर आप पर सवारी कर लेता है।

यह बहुत ज्यादा सेंसेटिव, सवेदनशील क्षण है—सूर्य की बदलाहट या आपकी चेतना की बदलाहट। बीमारी से जब आप स्वस्थ हो रहे हो या स्वास्थ्य से जब आप अचानक बीमार हो गए हो, अगर रास्ते पर आप जा रहे हो और कार का एकदम से एक्सिडेंट हो जाए तो आप उस क्षण का उपयोग कर सकते है। अगर कार आपकी एकदम टकरा गयी हो अचानक, तो उस वक्त आपके भीतर इतना परिवर्तन होता है, चेतना इतने जोर से, झटके से बदलती है कि अगर आप उस वक्त स्मरण कर लें कि मै शरीर नही हू, तो वर्षों स्मरण करने से जो नही होगा, वह एक स्मरण करने से हो जाएगा। लेकिन जब आपकी कार टकराती है तब आपको एकदम ख्याल होता है कि मरा, मैं शरीर हू, मरे, गए। एक्सिडेंट्स को, दुर्घटनाओ को उपयोग किया जा सकता है। मैं शरीर नही हू यह आपके भीतर गहरा जिस भाति भी बैठ सके, वह सब प्रयोग करने जैसे है। तो कायोत्सर्ग की पहली घटना घटती है। लेकिन वह नकारात्मक है। इतना काफी नही है कि मैं शरीर नही हू।

दूसरा विधायक अनुभव भी जरूरी है कि मैं आत्मा हू। इस विधायक अनुभव को भी स्मरण रखना कीमती है। इसको स्मरण रखने के भी क्षण है। इस स्मरण को रखने के भी सक्रमण काल हैं। इस स्मरण को गहरा करने का भी आपके भीतर अवसर और मौका है। कब ? जैसे आप सम्भोग करने के बाद वापस लौट रहे हैं। जब आप सम्भोग के बाद वापस लौट रहे होते है—तो आप जानकर हैरान होगे—उस वक्त आप सबसे कम शरीर हो जाते है। और कामवासना के बाद वापस लौटते हैं, तब आप सिर्फ फ्रस्ट्रेशन और विषाद मे होते हैं। और ऐसा लगता है—व्यर्थ, भूल, गलती अपराध मे गए। न जाते तो बेहतर। यह ज्यादा देर नही टिकेगी बात। घडी-दो-घडी मे आप अपनी जगह वापस आ जाएगे। लेकिन सम्भोग के क्षण के बाद शरीर को इतने झटके लगते हैं कि उसके बाद आपको, शरीर नही हू यह प्रतीति, और मै आत्मा हू यह प्रतीति करने का अद्भुत मौका है।

तन्त्र ने इसका पूरा उपयोग किया है। इसलिए आप, अगर कोई तन्त्र से थोडा भी परिचित रहा है तो वह जानकर हैरान होगा कि तन्त्र ने सम्भोग का भी उपयोग किया है ध्यान के लिए। क्योकि सम्भोग के बाद जितने गहरे मे यह बात मन मे उठायी जा सकती है कि मै आत्मा हू, उतनी किसी और क्षण मे उठानी बहुत मुश्किल है। क्योकि उस वक्त शरीर टूट गया होता है, शरीर की आकाक्षा बुझ गयी होती है, शरीर के साथ तादात्म्य जोड़ने का भाव मर गया होता है। यह ज्यादा देर नही टिकेगा। और अगर आपकी आदत मजबूत हो गयी तो आपको

ही पक्ति पूरी हो पाई, उसकी दूसरी पक्ति बाकी है। लेकिन उसमे ज्यादा कहने को नही है। दूसरी पक्ति इसकी बाकी है। महावीर ने कहा है—'धर्म मगल है। कौन-सा धर्म ? अहिंसा, सयम, तप। और जो इस धर्म को उपलब्ध हो जाते है, जो इस धर्म मे लीन हो जाते है, उन्हे देवता भी नमस्कार करते है।' यह दूसरा हिस्सा इस सूत्र का है।

सुनते वक्त आपको ख्याल मे भी न आया होगा कि महावीर जब यह कह रहे है कि उसे देवता भी नमस्कार करते है, तो कोई बहुत बडी क्रातिकारी बात कह रहे है। महावीर के इस वक्तव्य के पहले आदमी देवताओ को नमस्कार करता रहा। इसके पहले कभी किसी देवता ने आदमी को नमस्कार नही किया था। यह पहला वक्तव्य है सगृहीत, जिसमे महावीर ने कहा है कि ऐसे मनुष्य को देवता भी नमस्कार करते है। सारा वैदिक धर्म देवताओ को नमस्कार करने वाला है। आपने सुनते वक्त रोज यह दोहराया गया है, आपको ख्याल मे न आया होगा कि इसमे कोई खास बात है, कोई बडा क्राति का सूत्र है। महावीर जिस समाज मे पैदा हुए थे, वह सब देवताओ को नमस्कार करने वाला समाज था। उस समाज मे महावीर का यह कहना कि ऐसे मनुष्य को देवता भी नमस्कार करते है, बडा क्रातिकारी वक्तव्य था। हम भी सोचेंगे कि देवता क्यो नमस्कार करेंगे मनुष्य को ! देवता तो मनुष्य से ऊपर है।

महावीर नही कहते। महावीर कहते है—मनुष्य से ऊपर कोई भी नही है। इसलिए मनुष्य की डिगनिटी और मनुष्य की गरिमा और गौरव का ऐसा वक्तव्य दूसरा नही है। महावीर कहते है—मनुष्य से ऊपर कुछ भी नही है, लेकिन साथ ही वे यह भी कहते है कि मनुष्य से नीचे जाने वाला भी और कोई नही है। मनुष्य इतने नीचे जा सकता है कि पशु उससे ऊपर पड जाए और मनुष्य इतने ऊपर जा सकता है कि देवता उससे नीचे पड जाए। मनुष्य इतना गहरा उतर सकता है पाप मे कि कोई पशु न कर सके। सच तो यह है कि पशु क्या पाप करते है ! आदमी को देखकर पशु के पाप का कोई अर्थ नही रह जाता। तो मनुष्य नर्क तक नीचे उतर सकता है और स्वर्ग तक ऊपर जा सकता है। देवता पीछे पड जाए, वह वहा खडा हो सकता है, पशु आगे निकल जाए वहा वह उतर सकता है। मनुष्य की यह जो सम्भावना है, यह सम्भावना विराट है। इस सम्भावना मे पाप भी आ जाते, पुण्य भी आ जाते, नर्क भी आ जाता, स्वर्ग भी आ जाता है।

लेकिन देवताओ के ऊपर क्या स्थिति बनती होगी ? तो महावीर ने कहा है—नर्क मनुष्य के दुखो का फल है, स्वर्ग मनुष्य के पुण्यो का फल है। लेकिन नर्क भी चुक जाता है, पाप का फल भी समाप्त हो जाता है, स्वर्ग भी चुक जाता है, पुण्य का फल भी समाप्त हो जाता है। सिर्फ एक जगह कभी समाप्त

हैंगओव्हर चल रहा है, तो उस वक्त आसान होगा मानना कि मै आत्मा हू। उस वक्त शरीर के प्रति एक तरह की ग्लानि का भाव, और शरीर अपराधो मे ले जाता है, इस तरह का भाव सहज, सरलता से पैदा हो जाता है। जब बीमारी से उठ रहे हैं तब बहुत आसान होगा मानना। अस्पताल मे जाकर खडे हो जाए, वहा मानना बहुत आसान होगा कि मैं शरीर नही हू वहा विचित्र-विचित्र प्रकार से लोग लटके हुए हैं, किसी की टागे बधी हुई है, किसी की गर्दन बधी हुई है। वहां खडे होकर पूछें कि मैं शरीर हू ? तो शरीर हू तो वह जो सामने लटके हुए रूप दिखाई पडेंगे वही हू। वहा आसान होगा। मरघट पर जाकर आसान होगा कि मैं शरीर नही हूं। जिन क्षणो मे भी आसानी लगे स्मरण करने की कि मैं आत्मा हू, उनको चूकें मत, स्मरण करें। दो स्मरण जारी रखे—निषेध रूप से—मैं शरीर नही हू, विधायक रूप से—मैं आत्मा हू।

और तीसरी आखिरी बात—शरीर का जो तत्व है, वह उसी तरह से सम्बन्धित है जो हमारे बाहर फैला हुआ है। मेरी आख मे जो प्रकाश है, वह सूरज का, मेरे हाथो मे जो मिट्टी है, वह पृथ्वी की, मेरे शरीर मे जो पानी है, वह पानी का; इसको स्मरण रखें। और निरन्तर समर्पित करते रहे जो जिसका है उसी का है। धीरे-धीरे-धीरे आपके भीतर वह चेतना अलग खडी होने लगेगी जो शरीर नहीं है। और वह चेतना खडी हो जाए और ध्यान के साथ उस चेतना का प्रयोग हो, तो आप कायोत्सर्ग कर पाएगे।

जब ध्यान अपनी प्रगाढता मे आएगा, परिपूर्णता मे, और शरीर लगेगा छूटता है, तब आपका मन पकडने का नही होगा। आप कहेगे—छूटता है तो धन्यवाद! जाता है तो धन्यवाद! जाए तो जाए, धन्यवाद! इतनी सरलता से जब आप ध्यान मे शरीर से अपने को छोडने मे समर्थ हो जाएगे, उसी दिन आप मृत्यु के पार और अमृत के अनुभव को उपलब्ध हो जाएगे। उसके बाद फिर कोई मृत्यु नही है। मृत्यु शरीर मोह का परिणाम है। अमृत्व का बोध शरीर मुक्ति का परिणाम है। इसे महावीर ने बारहवा तप कहा है और अन्तिम। क्योकि इसके बाद कुछ करने को शेष नही रह जाता। इसके बाद वह पा लिया जिसे पाने के लिए दौड थी, वह जान लिया जिसे जानने के लिए प्राण प्यासे थे। वह जगह मिल गई जिसके लिए इतने रास्तो पर यात्रा की थी। वह फूल खिल गया, वह सुगन्ध बिखर गयी, वह प्रकाश जल गया जिसके लिए अनत-अनत जन्मो तक का भटकाव था।

कायोत्सर्ग विस्फोट है, एक्सप्लोजन है। लेकिन उसके लिए भी तैयारी करनी पड़ेगी। उसके लिए यह तैयारी करनी पडे और ध्यान के साथ उस तैयारी को जोड़ देना पडेगा। ध्यान और कायोत्सर्ग जहा मिल जाते है, वही व्यक्ति अमृत्व को पा लेता है।

ये महावीर के बारह तप मैंने कहे। एक ही सूत्र पूरा हो पाया, कहू अभी एक

तो पशु भी उसको प्रणाम न करेंगे। महावीर तो आदमी की उस स्थिति की बात कर रहे है जैसा वह हो सकता हैं, जो उसकी अन्तिम सम्भावना है; जो उसमे प्रगट हो सकता हैं। जब उसका बीज पूरा खिल जाए और फूल बन जाए तो निश्चित ही देवता भी उसे नमस्कार करते हैं। इतना ही।

तीन सौ चौदह सूत्र हैं। एक सूत्र तो पूरा हुआ। लेकिन इस सूत्र को मैंने इस भाति बात की है कि अगर एक सूत्र भी आपकी जिन्दगी मे पूरा हो जाए तो बाकी तीन सौ तेरह की कोई जरूरत नही है। सागर की एक बूद भी हाथ में आ जाए तो सागर का सब राज हाथ मे आ जाता है और एक बूद के रहस्य को भी कोई समझ ले तो पूरे सागर का भी रहस्य समझ मे आ जाता है। दूसरी बूद को तो इसलिए समझना पडता है कि एक बूद से नही समझ पडा तो फिर दूसरी बूद को समझना पडता है, फिर तीसरी बूद को समझना पडता है। लेकिन एक बूद भी अगर पूरी समझ मे आ जाए तो सागर मे जो भी है वह एक बूद मे छिपा है।

इस एक सूत्र मे मैंने कोशिश की कि धर्म की पूरी बात आपके ख्याल मे आ जाए। ख्याल मे शायद आ भी जाए, लेकिन ख्याल कितनी देर टिकता है! धुए की तरह खो जाता है। ख्याल से काम नही चलेगा। जब बात ख्याल मे हो, तभी जल्दी करना कि किसी तरह वह कृत्य बन जाए, जीवन बन जाए—जल्दी करना। कहते हैं कि जब लोहा गर्म हो तभी चोट कर देना चाहिए। अगर थोडा भी लोहा गर्म हुआ हो, उस पर चोट करना शुरू कर देना चाहिए। समझने से कुछ समझ मे न आएगा, इतना ही समझ मे आ जाए कि समझने से करने की कोई दिशा खुलती है, तो पर्याप्त है।

अभी रुकेंगे पाच मिनट, आखिरी दिन का कीर्तन करेंगे।

नही होती, जब कोई आदमी पाप और पुण्य दोनो के पार उठ जाता है। पुण्य भी कर्म है। पाप से भी बन्धन लगता है—महावीर ने कहा है—वह बन्धन लोहे की जजीरो जैसा है। पुण्य से भी बन्धन लगता है, वह सोने के आभूषणो जैसा है। लेकिन दोनो मे बन्धन है। महावीर कहते हैं—वह मनुष्य जो पाप और पुण्य दोनो के पार उठ जाता है, जो कर्म के ही पार उठ जाता है और स्वभाव मे ठहर जाता है, वह देवताओ के भी ऊपर उठ जाता है। वह स्वर्ग के भी ऊपर उठ जाता है।

तो आपने दो शब्द सुने हैं महावीर तक, और अनेक धर्म दो शब्दो का उपयोग करते है—स्वर्ग और नर्क। महावीर एक नए शब्द का भी उपयोग करते हैं—मोक्ष। तीन शब्द उपयोग करते है महावीर। नर्क वे कहते है उस चित्त दशा को जहा पाप का फल मिलता, स्वर्ग वे कहते है उस चित्त दशा को जहा पुण्य का फल मिलता; मोक्ष वे कहते हैं उस चेतना की अवस्था को जहा सब कर्म समाप्त हो जाते और चेतना अपने स्वभाव मे लीन हो जाती है। निश्चित ही वैसी चित्त दशा मे देवता भी प्रणाम करें मनुष्य को, तो आश्चर्य नही। अभी तो पशु भी हसते है।

मैंने एक मजाक सुनी है। मैंने सुना है कि तीसरा महायुद्ध हो गया, सब समाप्त हो गया। कही कोई आवाज सुनायी नही पड़ती। एक घाटी मे एक गुफा से एक बन्दर बाहर निकला, उसके पीछे उसकी प्रेयसी बाहर निकली। बन्दर उदास बैठ गया और उसने अपनी प्रेयसी से कहा—क्या सोचती हो, शैल वी स्टार्ट इट आल ओव्हर अगेन ? क्या हम आदमी को अब फिर पैदा करें, फिर से दुनिया शुरू करें ? डार्विन कहता है आदमी बन्दरो से आया है। कही तीसरा महायुद्ध हो जाए तो बन्दरों को चिन्ता फिर होगी कि क्या करें ? लेकिन वह बन्दर कहता है, शैल वी स्टार्ट इट आल ओव्हर अगेन ? क्या फिर करने जैसा भी है या अब रहने दें ?

सुना है मैंने कि जब डार्विन ने कहा कि आदमी बन्दरो से पैदा हुआ है, तो आदमी ही नाराज नही हुए, बन्दर भी बहुत नाराज हुए। क्योकि बन्दर आदमी को सदा अपने अश की तरह देखते रहे है, जो रास्ते से भटक गया। लेकिन जब डार्विन ने कहा—यह इवलूशन है, विकास है, तो बन्दर नाराज हुए। उन्होने कहा—इसको हम विकास कभी नही मानते। यह आदमी हमारा पतन है। लेकिन बन्दरो की खबर हम तक नही पहुची। आदमी बहुत नाराज हुए, क्योकि आदमी मानते थे, हम ईश्वर से पैदा हुए है और डार्विन ने कहा बन्दर से, तो आदमी को बहुत दुख लगा। उसने कहा—यह कैसे हो सकता है, हम ईश्वर के बेटे ! लेकिन बन्दर भी बहुत नाराज हुए।

निश्चित ही आदमी को देखकर बन्दर भी हसते होंगे। आदमी जैसा है वैसा

महागीता	भाग—८	५०·००	—
महागीता	भाग—९	५०·००	—

महावीर

महावीर मेरी दृष्टि मे	—	४०·००
महावीर या महाविनाश	—	१५ ००

(३ भागो मे सम्पूर्ण)

महावीर-वाणी	भाग—३	८० ००	५०·००

(४ भागो मे सम्पूर्ण)

जिन-सूत्र	भाग—१	८० ००	५०·००
जिन-सूत्र	भाग—२	८० ००	५० ००
जिन-सूत्र	भाग—३	८० ००	५० ००
जिन-सूत्र	भाग—४	८० ००	—

बुद्ध (६ भागो मे सम्पूर्ण)

एस धम्मो सनतनो	भाग—१	८० ००	५० ००
एस धम्मो सनतनो	भाग—२	८० ००	५० ००
एस धम्मो सनतनो	भाग—३	८० ००	५० ००
एस धम्मो सनतनो	भाग—४	७५·००	—
एस धम्मो सनतनो	भाग—५	७५ ००	—
एस धम्मो सनतनो	भाग—६	७५ ००	—

लाओत्से (६ भागो मे सम्पूर्ण)

ताओ उपनिषद	भाग—१	५० ००	४० ००
ताओ उपनिषद	भाग—२	—	४० ००
ताओ उपनिषद	भाग—३	७५ ००	४५ ००
ताओ उपनिषद	भाग—४	७० ००	—
ताओ उपनिषद	भाग—५	७५ ००	—
ताओ उपनिषद	भाग—६	७५ ००	—

प्रश्नोत्तर

नहिं राम बिन ठाव	६० ००	४० ००

झेन, सूफी और उपनिषद की कहानिया

बिन बाती बिन तेल	७० ००	५०·००
सहज समाधि भली	७५ ००	५०·००
दिया तले अन्धेरा	७५ ००	५०·००

भगवान श्री रजनीश का उपलब्ध हिन्दी साहित्य

	मूल्य रुपयो मे (डीलक्स सस्करण)	मूल्य रुपयो मे (सामान्य सस्करण)
उपनिपद		
ईशावास्य उपनिपद	—	१५ ००
सर्वसार उपनिषद	६०·००	४० ००
कैवल्य उपनिपद	६० ००	४० ००
अध्यात्म उपनिषद	७५·००	५० ००
कठोपनिपद	७०·००	—
कृष्ण		
कृष्ण : मेरी दृष्टि मे (नया सस्करण)	६५·००	—
गीता-दर्शन अध्याय १,२	६५ ००	—
गीता-दर्शन अध्याय ३	५० ००	३०·००
गीता-दर्शन अध्याय ४, ५	६५·००	—
गीता-दर्शन अध्याय ६	६५·००	—
गीता-दर्शन अध्याय ७, ८	६५ ००	—
गीता-दर्शन अध्याय १०	५०·००	३५ ००
गीता-दर्शन अध्याय ११	—	२५ ००
गीता-दर्शन अध्याय १२	५० ००	३०·००
गीता-दर्शन अध्याय १३, १४	८० ००	५०·००
गीता-दर्शन अध्याय १५, १६	६० ००	४०·००
गीता-दर्शन अध्याय १७	६०·००	४०·००
गीता-दर्शन अध्याय १८	१०० ००	६०·००
अष्टावक्र (९ भागों मे सम्पूर्ण)		
महागीता भाग–१	६० ००	३५·००
महागीता भाग–२	६०·००	३५·००
महागीता भाग–३	६० ००	३५·००
महागीता भाग–४	६०·००	३५·००
महागीता भाग–५	६०·००	३५·००
महागीता भाग–६	५०·००	—
महागीता भाग–७	५०·००	—

दयावाई		
जगत तरैया भोर की	५०·००	३०·००
मीरावाई		
मैंने रामरतन धन पायो	५०·००	३०·००
झुक आई वदरिया सावन की	५० ००	—
मलूकदास		
कन थोरे काकर घने	५० ००	३० ००
दरिया		
कानो सुनी सो झूठ सब	५०·००	—
अमी झरत विगसत कमल	६०·००	—
पलटू		
अजहू चेत गवार	७०·००	—
वाजिद		
कहे वाजिद पुकार	५० ००	—
जगजीवन		
अरी, मैं तो नाम के रग छकी	५० ००	—
नाम सुमिर मन बावरे	५० ००	—
चरणदास		
नही साझ नही भोर	५० ००	—
शाडिल्य (२ भागो मे सम्पूर्ण)		
अथातो भक्तिजिज्ञासा भाग—१	७० ००	—
अथातो भक्तिजिज्ञासा भाग—२	७० ००	—
धरमदास		
जस पनिहार धरे सिर गागर	५० ००	—
का सोवै दिन रैन	५० ००	—
रज्जव		
सतो, मगन भया मन मेरा	६५ ००	—
सुन्दरदास		
हरि बोलो हरि बोल	५०·००	—
ज्योति से ज्योति जले	६५·००	—

मेबिल कॉलिन्स		
साधना-सूत्र	६०·००	४०·००
ब्लावट्स्की		
समाधि के सप्त द्वार	६०·००	४०·००
नारद (२ भागो मे सम्पूर्ण)		
भक्ति-सूत्र भाग—१	५०·००	३०·००
भक्ति-सूत्र भाग—२	५०·००	३०·००
सरहपा-तिलोपा		
सहज-योग	७५·००	—
गोरख		
मरो हे जोगी मरो	७५·००	—
शिव		
शिव-सूत्र प्रथम सस्करण	५०·००	—
द्वितीय सस्करण	४०·००	—
आदि शंकराचार्य		
भज गोविंदम्	५०·००	३०·००
नानक		
एक ओकार सतनाम	७५·००	५०·००
एक ओकार सतनाम (प्रथम प्रवचन)	—	१·५०
कबीर		
सुनो भाई साधो	५०·००	३०·००
गूगे केरी सरकरा	५०·००	३०·००
कस्तूरी कुण्डल वस	५०·००	३०·००
कहै कबीर दिवाना	५०·००	३०·००
मेरा मुझ मे कुछ नही	५०·००	३०·००
कहै कबीर मैं पूरा पाया	५०·००	३०·००
दादू		
पिव-पिव लागी प्यास	५०·००	३०·००
सबै सयाने एक मत	५०·००	३०·००
फरीद		
अकथ कहानी प्रेम की	५०·००	३०·००
सहजोबाई		
बिन घन परत फुहार	५०·००	३०·००

असतो मा सद्गमय (निर्वाण उपनिपद एव ईशावास्योपनिपद का नया सकलन पृष्ठ सख्या ५६०)	—	२५.००
मैं कहता आखन देखी ४३ प्रवचन, ६०० पेज मैं कहता आखन देखी, गहरे पानी पैठ, ज्योतिप अद्वैत का विज्ञान, ज्योतिप अर्थात् अध्यात्म, मैं कौन हू ?, अमृत-वाणी तथा नव-सन्यास क्या ? का नया सकलन	—	२५ ००

पूर्व-प्रकाशित साहित्य

जिन खोजा तिन पाइया	—	४०·००
तत्त्वमसि (५२० पत्रो का सकलन)	—	४०·००
मैं कहता आखन देखी	—	६·००
गाधीवाद एक और समीक्षा	—	५·५०
समाजवाद से सावधान	—	५·००
सत्य की पहली किरण	—	५·००
शाति की खोज	—	३·५०
विद्रोह क्या है ?	—	२·५०
सत्य के अज्ञात सागर का आमत्रण	—	२ ००
सूर्य की ओर उडान	—	२·००
प्रेम के स्वर	—	२ ००
जनसख्या विस्फोट	—	१ ५०

पत्र-पत्रिकायें

रजनीश फाउन्डेशन न्यूजलैटर . हिन्दी, अग्रेजी, गुजराती मे प्रकाशित
आवृत्ति : पाक्षिक (एक वर्ष मे २४ अक)
सामग्री . प्रत्येक अक मे एक नवीनतम प्रवचन, आश्रम की गतिविधियो एव रजनीश ध्यान केन्द्रों के समाचार।
हिन्दी, अग्रेजी एव गुजराती न्यूजलैटर मे भिन्न-भिन्न प्रवचन।
एक वर्ष की सदस्यता शुल्क : रुपये २४·०० (कोई भी एक भाषा मे).
नमूने के लिए एक अक का मूल्य . रुपये १ २५

दूलन
प्रेम-रग-रस ओढ चदरिया — ५०.०० —

यारी
बिरहिनि मदिर दियनावार — ५०.०० —

गोरख
मरो हे जोगी मरो — ७५.०० —

भगवान श्री की पूर्व प्रकाशित/अप्रकाशित पुस्तको/प्रवचनो के सकलित नए पेपर-बैक सस्ते सस्करण

साधना-पथ — — २०.००
३० प्रवचन, ४५४ पेज
साधना-पथ, पथ की खोज, (सिहनाद)
अन्तर्यात्रा, प्रभु की पगडडिया

नेति-नेति — — २०.००
२४ प्रवचन, ४७५ पेज
शून्य की नाव, सत्य की खोज, सम्भावनाओ की आहट, शून्य के पार, सूर्य की ओर उडान, सत्य के अज्ञात सागर का आमन्त्रण

सम्भोग से समाधि की ओर — — २०.००
१९ प्रवचन, ३९२ पेज
सम्भोग से समाधि की ओर, युवक और यौन, प्रेम और विवाह, जनसख्या विस्फोट, विद्रोह क्या है ? युवक कौन ? जीवन क्राति के सूत्र तथा चार अप्रकाशित प्रवचन

भारत के जलते प्रश्न — — २५.००
२४ प्रवचन, ५६४ पेज
समाजवाद से सावधान, समाजवाद अर्थात आत्मघात, क्राति की वैज्ञानिक प्रक्रिया, क्राति के बीच सबसे बड़ी दीवार, प्रगतिशील कौन ? धर्म और राजनीति तथा ग्यारह अप्रकाशित प्रवचन

योग-दर्शन भाग . १, २ — — २५.००
२० प्रवचन, ५६० पेज
पतजलि योग-सूत्र पर 'योगा . दी अल्फा एण्ड दी ओमेगा' के नाम से प्रकाशित प्रथम दो भागो का हिन्दी अनुवाद

५. पुस्तकें अनुरोध पर वी० पी० पी० द्वारा भेजी जाती हैं।

६. धनराशि "रजनीश फाउन्डेशन लिमिटेड" के नाम से रजनीश फाउन्डेशन, लिमिटेड, १७ कोरेगाव पार्क, पूना ४११००१ (महाराष्ट्र) को भेजें।

७ १५ से २५ पुस्तकें (लगभग १० किलो वजन की) या अधिक रेल अथवा ट्रान्सपोर्ट द्वारा भेजकर आर० आर० बैंक को भेजी जा सकती हैं।

८ ऑर्डर देते समय स्पष्ट लिखें कि पुस्तकें रेल अथवा ट्रान्सपोर्ट या डाक से भेजी जायें। रेलवे स्टेशन का नाम स्पष्ट लिखें।

निम्न ऑर्डर फॉर्म मे पुस्तक का नाम, सख्या और मूल्य साफ अक्षरों मे भरें—

ऑर्डर फॉर्म : कृपया भेजें

सन्यास (भाषा) वर्ष ( )
वार्षिक शुल्क (रुपये)
न्यूजलैटर (भाषा) वर्ष ( )
वार्षिक शुल्क (रुपये)

भेजने वाले का नाम.................................

केन्द्र का नाम.................................

पूरा पता.................................

....

पिन कोड....................

प्रतिया	पुस्तक का नाम	मूल्य
....	....	....
....	....	....
....	....	....
कुल पुस्तक सख्या		कुल धनराशि

धनराशि रुपये .. का मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट भेज रहे हैं, सलग्न है।

● सभी ऑर्डर्स का लेन-देन अब रजनीश फाउन्डेशन लिमिटेड द्वारा ही होता है। अत कृपया पत्र, बैंक ड्राफ्ट इत्यादि रजनीश फाउन्डेशन लिमिटेड के नाम पर ही भेजें।

सभी प्रकाशनों के लिए संपर्क-सूत्र :

रजनीश फाउडेशन लिमिटेड
श्री रजनीश आश्रम
१७, कोरेगाव पार्क
पूना—४११००१ महाराष्ट्र
फोन : २८१२७, २०६८१, २०६८२
टेलेक्स ०१४५—४२१ ताओ

सन्यास : हिन्दी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित

आवृत्ति · द्वैमासिक (एक वर्ष मे छ: अक)

सामग्री : भगवान श्री के महत्त्वपूर्ण प्रवचन, सुन्दर चित्र, दर्शन-सवाद, सन्यास के नये आयाम, ध्यान-विधिया, आश्रम एवं रजनीश ध्यान केन्द्रो के नवीनतम समाचार इत्यादि। हिन्दी एव अग्रेजी 'सन्यास' मे भिन्न-भिन्न सामग्री।

एक वर्ष का सदस्यता-शुल्क	नमूने के लिए एक अक का मूल्य
(हिन्दी) रुपये २४ ००	(हिन्दी) रुपये ५·००
(अग्रेजी) रुपये ६०·००	(अग्रेजी) रुपये १०·००

विशेष ·

(१) अर्ध-वार्षिक सदस्यता की सुविधा है।

(२) न्यूजलैटर या सन्यास की सदस्यता वी० पी० पी० द्वारा सम्भव नही है।

● रजनीश दर्शन, सन्यास एव न्यूजलैटर के पुराने अक निम्नलिखित घटे मूल्यो मे उपलब्ध (डाक-व्यय अतिरिक्त)

रजनीश-दर्शन	वर्ष १९७४ अक १, २	रुपये १·५०
,, ,,	वर्ष १९७६ अंक १ से ६	रुपये १·७५
सन्यास	वर्ष १९७७ अक १ से ३	रुपये २·००
,,	वर्ष १९७८ अक १ से ६	रुपये २·५०

● रजनीश फाउन्डेशन न्यूजलैटर (डाक-व्यय अतिरिक्त)

हिन्दी, अग्रेजी, गुजराती

वर्ष १९७५, १९७६, १९७७ एव १९७८ के उपलब्ध अक } प्रति अक ५० पैसे

● डायरी व कैलेन्डर

'माय कम्यून' डायरी १९७९ (अग्रेजी भाषा मे मुद्रित)	रुपये ४५·००
डायरी १९७८ (अग्रेजी भाषा मे मुद्रित)	रुपये १०·००
डायरी १९७७ राज सस्करण (अग्रेजी भाषा मे मुद्रित)	रुपये ५·००
डायरी १९७७ सामान्य सस्करण (अग्रेजी भाषा मे मुद्रित)	रुपये ३·००
कैलेन्डर १९७८	रुपये ५·००

विशेष :

१ पचास रुपये से अधिक का साहित्य मगाने पर डाक व पैकिंग व्यय मे छूट।

२ रजनीश ध्यान केन्द्रो और पुस्तक-विक्रेताओ को पेकिंग और डाक-व्यय अतिरिक्त लगेगा।

३. डीलक्स व सामान्य संस्करण पुस्तको मे सामग्री तो एक ही है, लेकिन कागज, बाइंडिग व कवर की क्वालिटी मे अन्तर है।

४ जिन पुस्तको के दो सस्करण है, उनका आर्डर देते समय स्पष्ट लिखें कि आप वह पुस्तक डीलक्स सस्करण मे चाहते है या कि सामान्य संस्करण मे।